यंत्र, मंत्र, तंत्र विद्या

संग्रहकर्ता ·

श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज

श्री १०५ गणनी आर्यिका श्री विजयमती माताजी

विदुषी रत्न, सम्यक्ज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद

शान्ति कुमार गंगवाल
प्रकाशन सयोजक

लल्लूलाल जैन गोधा
प्रबन्ध सम्पादक

●

प्रकाशक :

कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति

कार्यालय : १९३६, घी वालों का रास्ता,
कसेरों की गली, जौहरी बाजार,
जयपुर—३०२००३ (राजस्थान)

☐ प्रथम सस्करण १००० **प्रतियाँ**

☐ भगवान बाहुवली सहस्त्राब्दि महामस्तकाभिषेक
महोत्सव **दिनांक २२ फरवरी, १९८१**

☐ मूल्य : [illegible]) रु० मात्र
(डाक व्यय अतिरिक्त)

☐ मुद्रक : **राजस्थान प्रिंटिंग वर्क्स,**
किशनपोल बाजार,
जयपुर ।

☐ ब्लाक निर्माता : **जुब्ली ब्लाक वर्क्स,**
जौहरी बाजार, जयपुर, (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान :

☐ श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागरजी
महाराज सघ ।

☐ **शान्ति कुमार गंगवाल,**
१९३६, घी वालों का रास्ता,
कसेरो की गली, जौहरी बाजार,
जयपुर—३०२००३ (राजस्थान)

☐ **लल्लूलाल जैन गोधा**
सम्पादक, जयपुर जैन डायरेक्टरी,
४९९, पं० चैनसुखदास मार्ग,
किशनपोल बाजार, जयपुर—३ (राज०)

ॐ
पद्मावती पार्श्वनाथाय नमः
श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति
मंत्र
यंत्र
तंत्र
ग्रंथ
संग्रह कर्ता
श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथु सागर जी महाराज
श्री गणनी सि॰ वि॰ १०५ आर्यिका विजयमती माताजी
श्री णमोकार महामंत्र
णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं
एसो पञ्च णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंङ्गलाण च सव्वेसिं पढमं होई मंङ्गलम्॥

श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ

श्री धरणेन्द्र

श्री पद्मावती देवी
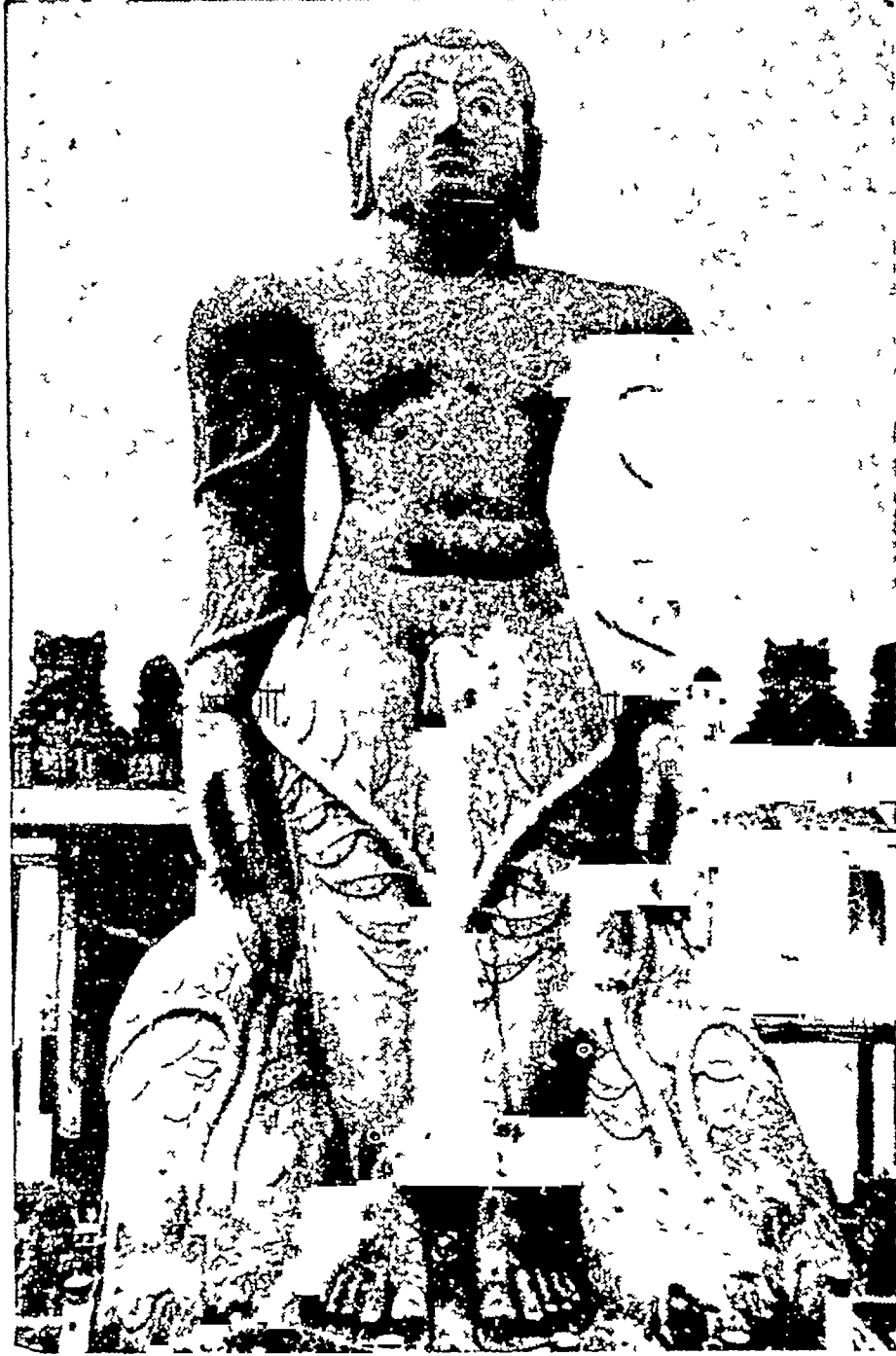
श्री बाहुबली स्वामी

श्रवण बेल गोला (मैसूर) मे ५७ फुट ऊची विशाल प्रतिमा

विश्व का आकर्षण एव आठवाँ आश्चर्य
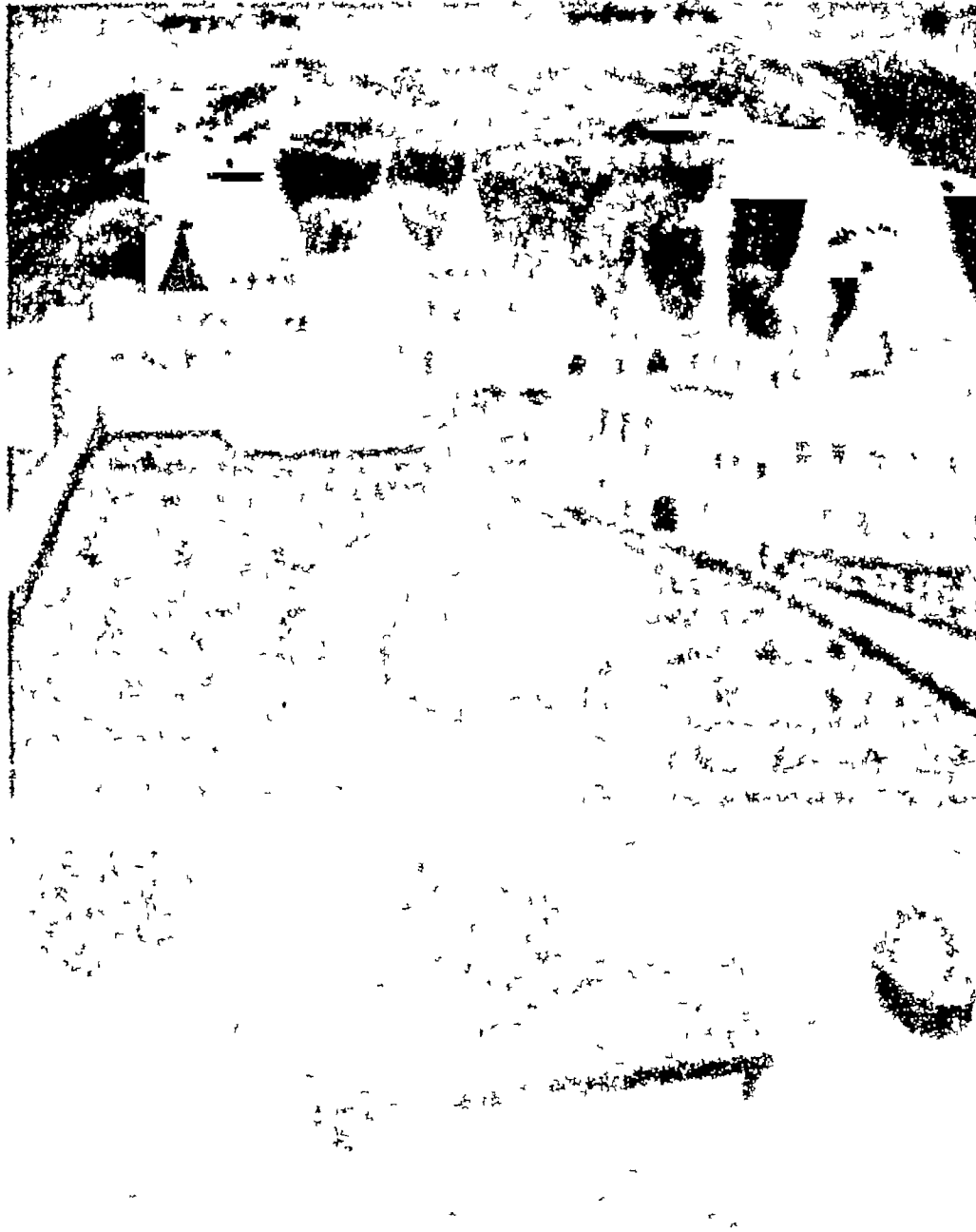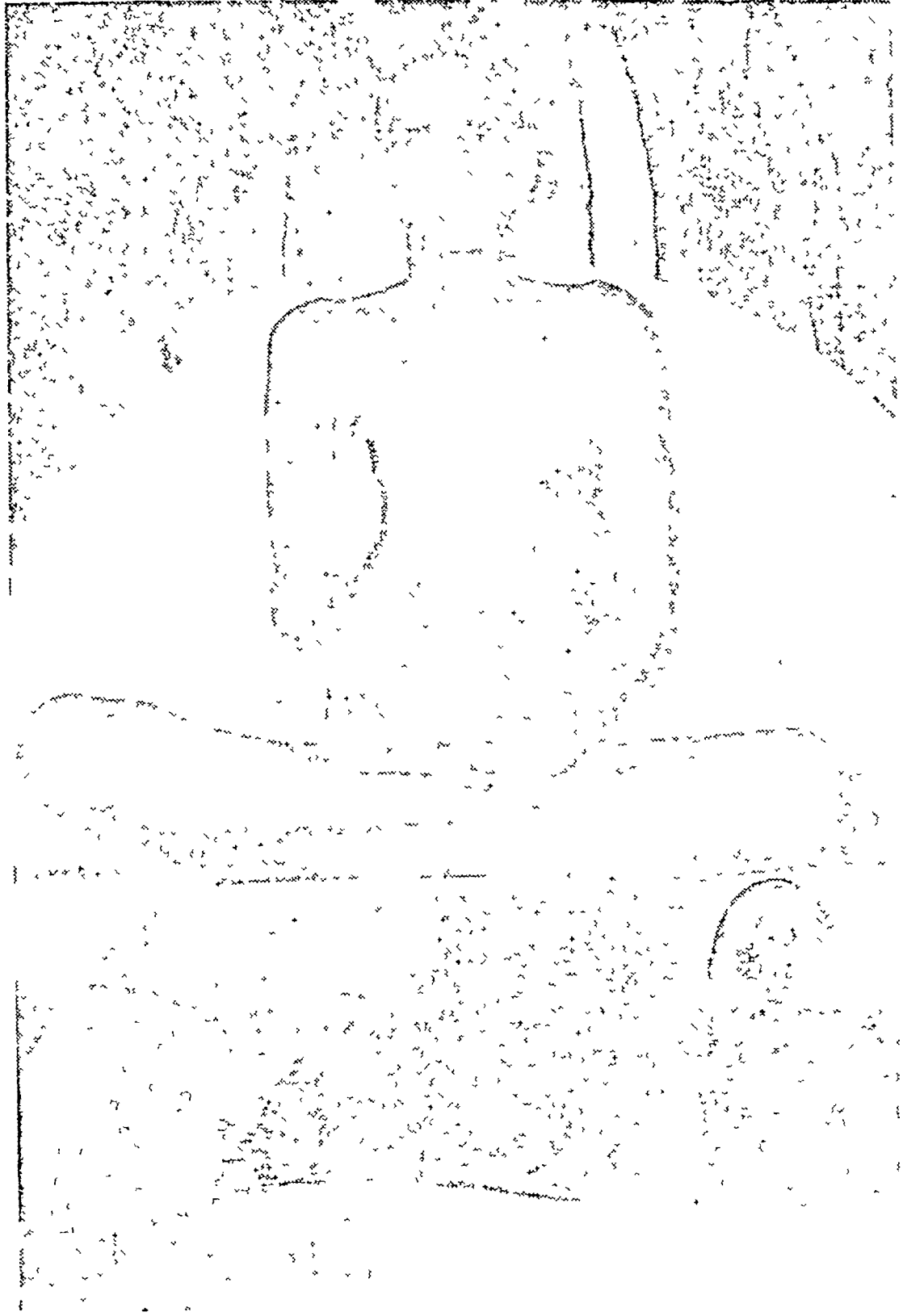
श्री दिगम्बर जैनाचार्य निमित्तज्ञान शिरोमणि
१०८ विमलसागर जी महाराज

श्री दिगम्बर जैनाचार्य १०८ सन्मतिसागरजी महाराज
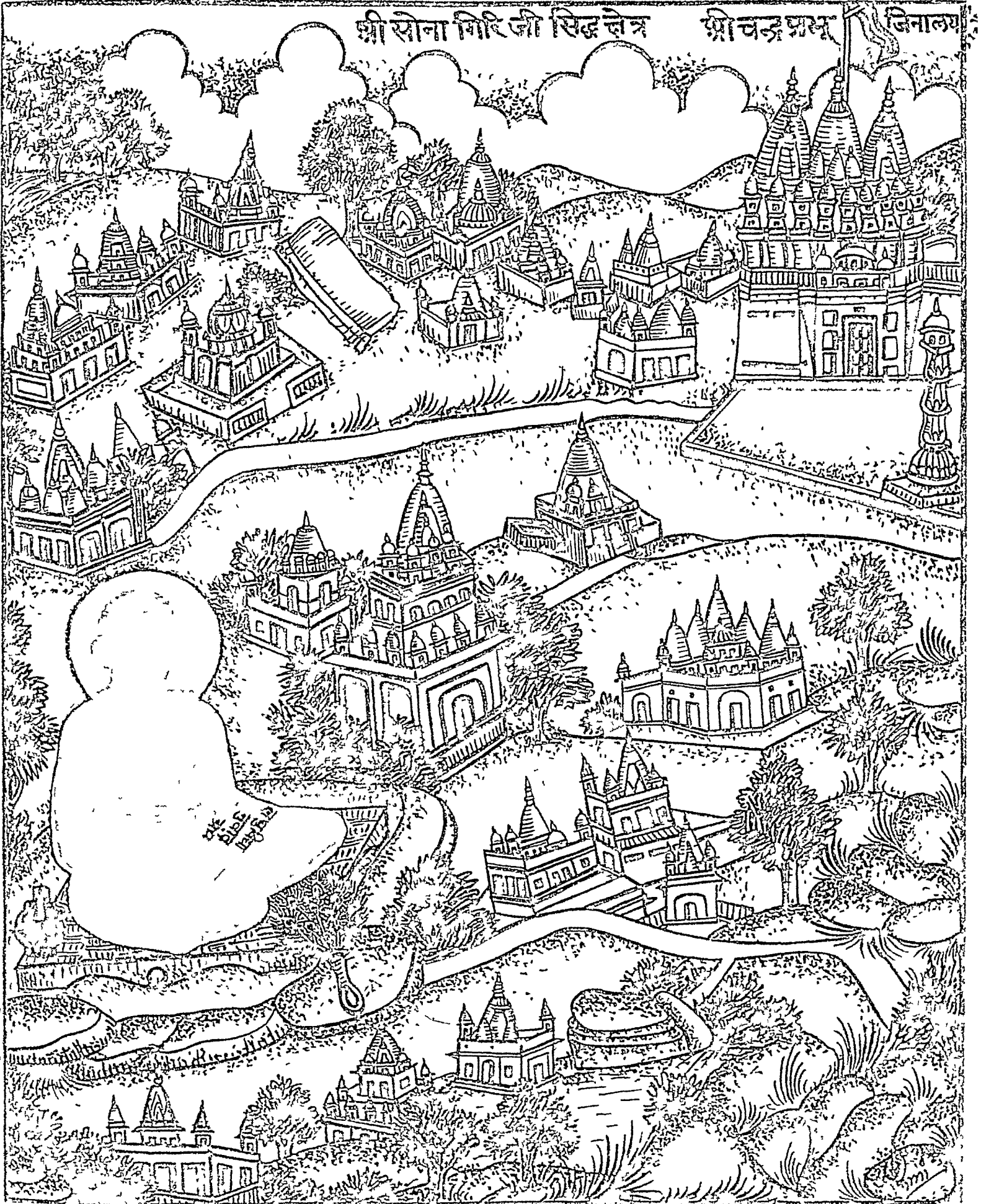
श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथु सागरजी महाराज लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का संग्रह करते हुए।

श्री गणनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न, सम्यकज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद
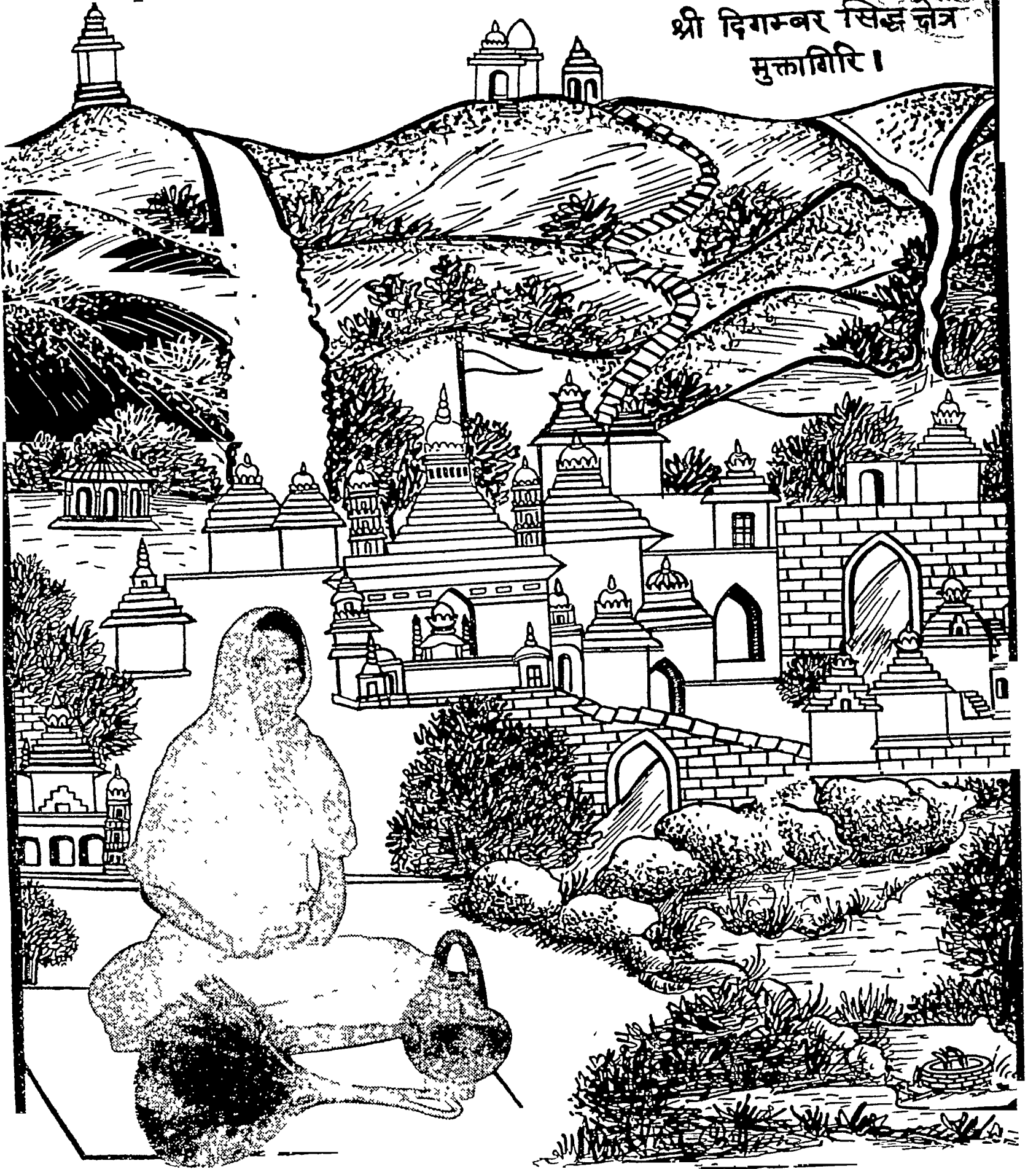
विजयमती माताजी

शुभाशीर्वाद एवं शुभ-कामनाएँ–

निमित्त ज्ञान शिरोमणी
श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज

"श्री लघु विद्यानुवाद" नामक ग्रन्थ श्री १०८ आचार्य कुन्थु सागरजी ने सकलन कर समाज के प्राणीमात्र को श्री १०८ श्री मन्त्रवादी विद्यानन्दजी की अक्कीवाट की कृति को संभाल कर लिखा है, वह समाज की निधि है। द्वादशांग का एक अंग है, जो लौकिक कार्य के साथ–साथ पारलोकिक, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान का कारण बने।
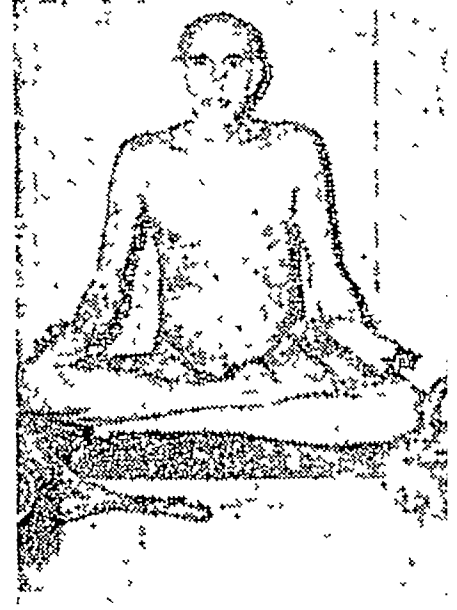
श्री १०८ आचार्य विमलसागर

श्री १०८ उपाध्याय मुनि
श्री भरतसागरजी महाराज

अनादिकाल से मानव जीवन विभिन्न शक्तियो के आधार पर टिका हुआ है। शारीरिक, मानसिक, मांत्रिक, तात्रिक यात्रिक और आध्यात्मिक आदि सभी शक्तियो की अपनी-अपनी विभिन्न सत्ता है। शारीरिक, मानसिक शक्ति के आधार पर यदि यह मानव अपने सासारिक जीवन को सुन्दर, उत्तम बना सकता है, तो मान्त्रिक, तान्त्रिक एवं यांत्रिक शक्ति के आधार पर यह स्व और पर का उपकार कर जीवन में नई शक्ति का सचार कर सकता है। इन सब मे महान शक्ति की दायिनी, अक्षुण्ण शाश्वत सुख की दायिनी आध्यात्मिक शक्ति है।
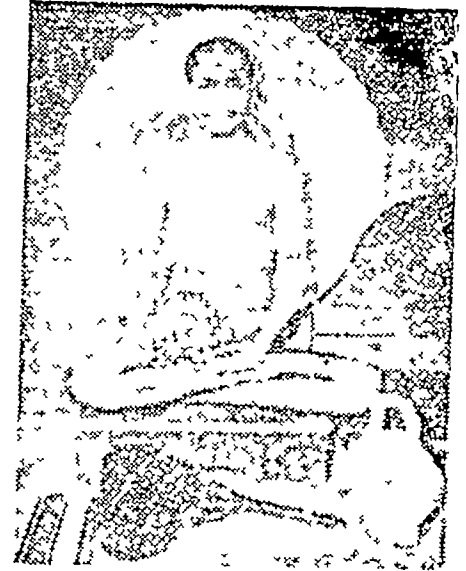
भारतीय इतिहास की खोज करने पर ज्ञात होता है, कि भारत के श्रमण महर्षियों ने जीवन मे सभी शक्तियो को पूर्ण स्थान दिया है। मांत्रिक, तांत्रिक, यांत्रिक शक्तियों को जहां आज का युग झूठा, मिथ्या एव पाखण्ड नाम से पुकारता है, वहाँ कुन्द कुन्दादि जैसे महान् अध्यात्म योगियो ने मांत्रिक शक्ति के बल पर "दिगम्बर धर्म को आदि धर्म घोषित करवाकर" श्रमण परम्परा की, श्रमण संस्कृति की रक्षा की है।

मन्त्र विद्या, तन्त्र विद्या, यन्त्र विद्या झूठ या मिथ्या नही हैं। मिथ्या है तो हमारा श्रद्धान है। पहले उसी मन्त्र से शीघ्र कार्य की सिद्धि देखी जाती थी, परन्तु आज तुरन्त या शीघ्रता से मन्त्र सिद्धि नही पायी जाती है, इसका दोष हम मन्त्रो को देते है, परन्तु क्या मन्त्र, तन्त्र गलत है, नही, मन्त्र भी गलत नही है, तन्त्र भी गलत नही है, गलत है, तो हम है और हमारा श्रद्धान है।

वर्तमान समय मे श्री १०८ आचार्य कुन्थुसागर जी महाराज ने लुप्त हुई इस मन्त्र, तन्त्र विद्या को पुन जीवन्त वनाने के लिए वहुत उत्तम प्रयास कर "लघु विद्यानुवाद" नामक पुस्तक का सृजन किया है। मेरी यही शुभ कामना है कि यह पुस्तक हम भूले मानवो को अपनी भूली हुई शक्तिओ का स्मरण कराकर सही मार्ग प्रशस्त करने मे पूर्ण सफल एव सक्षम सिद्ध होगी। और ग्रन्थ प्रकाशन मे जो श्री शान्तिकुमार जी गगवाल आदि कार्य कर्त्ता हैं उन सभी को हमारा आशीर्वाद है।

उपाध्याय मुनि श्री भरतसागर

क्षुल्लक श्री १०५ सिद्धसागर जी महाराज

परम पूज्य श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थु सागरजी महाराज ने 'लघुविद्यानुवाद' का सकलित करवा के व स्वतः परिश्रम द्वारा तैयार करके तथा आमुख (भूमिका) लिखकर इस ग्रन्थ को सपादन के योग्य बनाया है। उक्त ग्रन्थ श्री परम पूज्य १०८ आचार्यवर्य महावीर कीर्ति यन्त्र, तन्त्र, मन्त्रादि सग्रह अपर नाम लघु विद्यानुवाद का मैने अवलोकन किया है। यह ग्रन्थ समाज के लिये अनिषिद्ध विषयो मे बहुत उपयोगी रहेगा। महाराज को मै सभक्ति सादर त्रिवार नमोऽस्तु निवेदन करता हैं, तथा ग्रन्थ प्रकाशन मे तत्पर कार्यरत परम जिनभक्त परायण सगीतज्ञ कपूरचन्दजी पाण्ड्या, शातिकुमारजी गगवाल व अन्य इनके सहयोगी सज्जनवर्ग शुभाशीर्वाद के पात्र है। प्रेस कापी आदिक कार्यो मे इनको पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

क्षु० सिद्धसागर

मोजमावाद,
जयपुर (राजस्थान)

राजभवन,
जयपुर
जनवरी ३१, १९८१

सन्देश
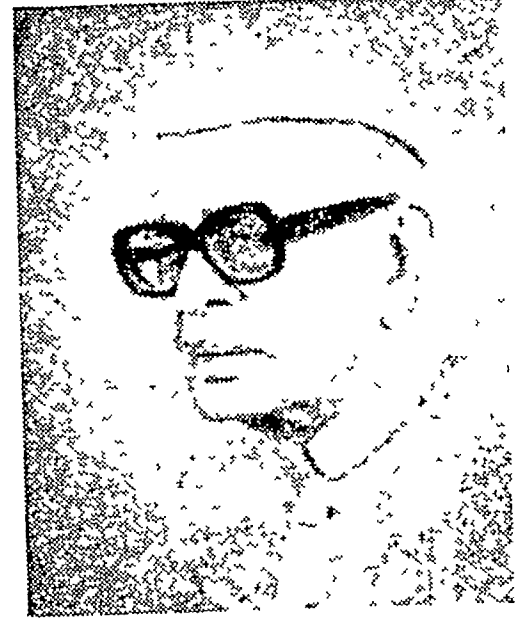
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दि० जैन कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति, जयपुर, आचार्य श्री कुन्थुसागर जी द्वारा सग्रहीत लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का वृहत प्रकाशन कर रही है।

जैन धर्म के अनुयायियो एव जनसाधारण के लिये इस ग्रन्थ का प्रकाशन, सग्रहीत, यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र विद्या की जानकारी के लिये, उपादेय होगा, ऐसी मै आशा करता हू और इस अभिनत प्रकाशन की सफलता के लिए मगलकामना करता हू।

(रघुकुल तिलक)

श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथु सागर जी महाराज

का

— आशीर्वादात्मक मंगल वचन :—

श्री १००८ भगवान अरहंत देव के शासन मे द्वादशाग रूप जिनवाणी कही है और द्वादशाग को धारण करने वाले भगवान महावीर की आचार्य परम्परा मे आने वाले अन्तिम श्रुत केवलि आचार्य भद्र बाहु हुये। वे आचार्य अष्टाग निमित्त ज्ञान के ज्ञाता थे। उसके वाद स्मरण शक्ति के कम हो जाने पर द्वादशाग रूप श्रुत ज्ञान को धारण करने वाले कम हो गये। यहा तक कि कम होते २ धरषेणाचार्य को अग रूप का ज्ञान का कुछ अश का ज्ञान था। उनकी महान् कृपा से आज जो श्रुत ज्ञान दृष्टि गोचर हो रहा है वह उन्ही की कृपा दृष्टि है। ग्यारह अग चौदह पूर्व रूप श्रुत ज्ञान है। तदन्तर्गत जिनागम मे विद्यानुवाद दशम पूर्व है। वह विद्यानुवाद पूर्व अनेक यन्त्र मन्त्रो रूप महासागर से भरा हुआ है। जिसको पार करने मे समर्थ केवली, श्रुत केवली ही होते है। उस
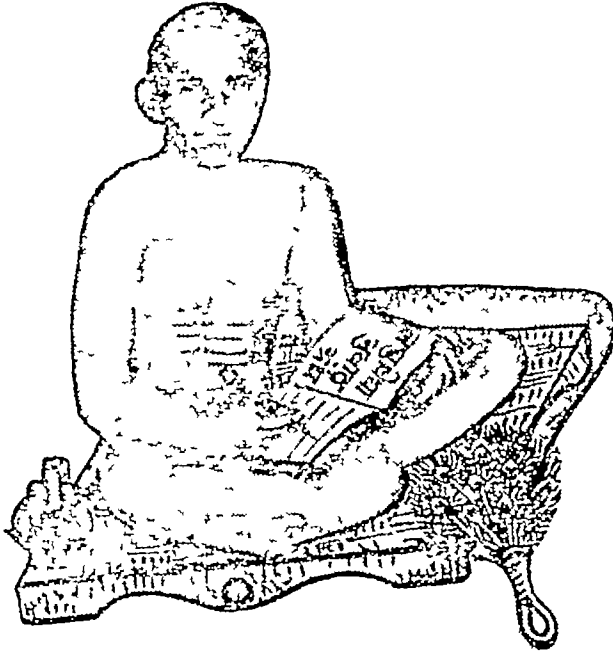
विद्यानुवाद पूर्व मे अनेक प्रकार की विद्याये है, वह १२०० सो लघु विद्या, ७०० महा विद्याओ से भरा हुआ है। नाना प्रकार के चमत्कारो से अलकृंत है। ऐसे विद्यानुवाद का वीतरागी निर्ग्रन्थ साधु राज मात्र श्रुत ज्ञान प्राप्ति के अर्थ एकाग्रता से इन्द्रिय विजयी होकर अध्ययन करते है। अध्ययन करने मात्र से नाना प्रकार की विद्याये सम्मुख आकर खडी हो जाती है। साधु राज से कहने लगती है, हमारे लिये क्या आज्ञा है ? "साधु भी सन्मुख हुई विद्याओ को कह देते है कि तुमसे हमारा कोई प्रयोजन नही है। ऐसे वीतरागी साधु ही विद्यानुवाद रूप समुद्र को पार करते है निस्पृही होकर। उनका मात्र उद्देश्य वस्तु स्वभाव की प्राप्ति का रहता है और जो शुभोपयोग मे ज्यादातर रहते है और शुद्धोपयोग मे कम रहते है वे भी विशेष धर्म प्रभाव नार्थ धार्मिक विद्याओ से काम लेते है। अन्यथा कभी भी उन विद्याओ

की तरफ दृष्टिपात भी नही करते। इस हुंडा वसर्पिणी पचम काल मे उस महान् सागर रूप विद्यानुवाद का लोप हो गया। क्योंकि वीतरागी साधुओ की दृष्टि वीतरागता की और रही और ये वीतरागता मे बाधक है। इसलिये केवली प्रणीत विद्यानुवाद प्राय नष्ट हो गया। आज समाज मे हस्त लिखित विद्यानुवाद की प्रतिया दृष्टि गोचर है। वे भी इस काल के लोगो के लिए महान् है। मुस्लिम काल मे एव अन्य आततताइयो के काल मे हमारे जैन गृहस्थाचार्य भट्टारको ने उस महान सागर रूप विद्यानुवाद के अश रूप पाठको को बचाया और उनमे विद्याये सिद्ध सिद्ध कर जैन धर्म का रक्षण किया। आज विद्यानुवाद की जो भी प्रतिया उपलब्ध है वे जगह जगह अशुद्ध एव जीर्ण हो गई है। वर्तमान साधु समाज व भट्टारक समाज मे कोई ऐसा नही जो चमत्क.रो द्वारा जैन धर्म को प्रभावना करे। आज जैन धर्मनुयायियो की भावनाओ मे विकार आ गया है, और समाज पतन की ओर जा रहा है। वीतराग धर्म की ओर लोगो की आस्था कम हो गई है और मिथ्या धर्मो की और समाज का झुकाव अधिक है। सामाजिक वातावरण अत्यन्त दयनीय है। सभी मिथ्या देव शास्त्र गुरु की पूजा मे मलग्न है। क्योकि लोगो में श्रद्धान पाया जाता है कि इनसे ही हमारा सकट टल जाता है, परन्तु ऐसा होता नही। ऐसे व्यक्तियो के लिये यह लघु विद्यानुवाद की रचना की है। इसमे नाना प्रकार के मन्त्र यन्त्र है। अनेक प्रकार के तन्त्र एव औषधिया है। आज के मिथ्याचरण युक्त समाज के लिये यह हस्तावलबन के समान है। यह ग्रन्थ लोगो को मिथ्यात्व से बचायेगा जो श्रद्धापूर्वक व विधि पूर्वक यन्त्रो मन्त्रो तन्त्रो का आश्रय लेगा उसके मनवाछित लोकिक कार्यो की सिद्धी होगी। आज कल वर्तमान शास्त्र भण्डारो मे मिलने वाले विद्यानुवाद की प्रतियो का लघु अश रूप ग्रन्थ सग्रहित किया है वह तो पूर्वाचार्य श्री मल्लिषेणाचार्य कृत है। उस विद्यानुवाद रूप लघु सागर को हम जैसे मद बुद्धि तैरने को समर्थ नही है। इसलिये सरल भापा मे लघु विद्यानु–वाद बनाया है। मै आशा करता हू कि हमारा जैन समाज इससे लाभान्वित होगा। तभी हमारा परिश्रम कार्यकारो होगा। इस विद्यानुवाद मे वर्णित शान्ति कर्म, पौष्टिक कर्म, वश्य कर्म आक-र्षण कर्म, स्तम्भन कर्म विद्वेषण कर्म, उच्चाटन कर्म के मन्त्र यन्त्र तन्त्र दिये हैं। अनेक जगह अशुद्ध द्रव्यो का प्रयोग भी आया है। लेकिन क्या करे यह मन्त्र शास्त्र है। इसमे मैने अपनी और से इस ग्रन्थ मे कुछ नही लिखा है जिस प्रकार हमको वर्णन मिला उन सवका उल्लेख करना पडा है। हमारा अपना कोई स्वतन्त्र भाव नही है। इस ग्रन्थ मे जो भी मन्त्र तन्त्र यन्त्र है वे हमारे गुरु विश्व वदनीय जैनाचार्य अध्यात्म योगी समाधि सम्राट श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के कई गुट के कापियो मे सग्रहित किये हैं। इसके अलावा और भी अनेक पूर्व हस्तलिखित मन्त्र शास्त्रो से सकलन किया है जो सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी की देन है। सोनागिरी पर्वत पर नं० २५ जिनालय श्री मल्लीनाथ प्रभु के

चरणो के सानिध्य मे बैठ कर संग्रह किया है। इस प्रकार का ग्रन्थ जैन परम्परा में आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है। हस्तलिखित तो पाया जाता है किन्तु वो भी प्रक्षेप रूप मे है इस एक ही ग्रन्थ मे गागर मे सागर भरने कहावन रूप प्रयास किया है। मुझे ग्रन्थ के सग्रह करने मे बहुत परिश्रम करना पडा है। लेकिन मुझे पदस्थ ध्यान का अपूर्व लाभ हुआ। पदस्थ ध्यान मन्त्रो की ध्यान साधना से होता है और इसमे मन एकाग्र होता है। मन की एकाग्रता से कर्म निर्जरा होती है। यह भी भगवान की वाणी है। विद्याधर मनुष्य नित्य ही इन मन्त्रो का ध्यान व साधना करते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र शास्त्र मे मारण उच्चाटन आदि हानि पहुचाने वाली क्रियाए भी वर्णित है उन क्रियाओ मे साधक किसी भी प्रकार हाथ न लगावे। हमारा वितराग धर्म अहिंसा मयी है। जो मारण कर्म उच्चाटन कर्म दूसरो को हानि पहुंचाने की क्रिया करता है। वह महान् पातकी कहलाता है, और सबसे अधिक हिसा के दोष का भागी होता है।

वीतराग धर्म या (हम) सग्रहकर्ता किसी भी प्रकार से इन क्रियाओ मे साधक को प्रवेश करने की आज्ञा नही देते। शान्ति कर्म पोष्टिक कर्म या दूसरो को हानि पहुचाने रूप क्रियाओ मे प्रवेश करने रूप भाव भी करेगा तो वह वीतराग धर्म के नष्ट करने रूप पाप का अधिकारी होगा। महान् हिंसक होगा। हाँ इन क्रियाओ मे कब प्रवेश करे, जबकि कही सच्चे देव शास्त्र गुरु पर उपसर्ग आया हो अथवा कोई धर्म सकट आया हो, किसी सती की रक्षा करना हो। धर्मात्मा के प्राण सकट मे हो। तब इन क्रियाओ को शुद्ध सम्यगदृष्टि श्रावक है वेही, करे। इस शास्त्र मे जो मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र है उनको मिथ्यादृष्टियो के हाथ मे न दे। जो भी ऐसा करेगा उसे बाल हत्या का पाप लगेगा। हमने इस शास्त्र का सग्रह मात्र जैन समाज के हितार्थ किया है। कही कही मन्त्रो की विधि समझ मे नही आने के कारण ज्यो की त्यो लिख दी है और लगभग सभी जगह मन्त्रो की विधि बुद्धि के अनुसार स्पष्ट की है। इस ग्रन्थ को सग्रहित करने मे मन्त्रो की विधि लिखने मे किसी प्रकार की त्रुटि रही हो तो उसे विशेष मन्त्र शास्त्र के जानने वाले शुद्ध करे हमने तो अपने अल्प ज्ञानानुसार शुद्ध कर सग्रह किया है।

इस ग्रन्थ के कार्य मे हर समय १०८ आचार्य सन्मार्ग दिवाकर विमलसागरजी महाराज का आशीर्वाद रहा है और श्री गणनी १०५ आर्यिका सिद्धान्त विशारद सम्यक ज्ञानशिरोमणि विजय मती माताजी का ग्रन्थ सग्रह मे कार्य पूर्ण सहयोग व दिग्दर्शन रहा है। माताजी को मेरा पूर्ण आशीर्वाद है।

विभिन्न मुद्राओं के नाम व लक्षण के साथ चित्र व २४ यक्ष यक्षणियों के चित्र भी दिये है। चित्रकार श्री गोतम जी गोधा लशकर वालो ने चित्रों का चित्रण करके ग्रन्थ के एक अंग की पूर्ति की है उनको भी हमारा आशीर्वाद है कि उनकी चित्रकला उत्तरोत्तर वृद्धि गत हो और धर्म प्रभावना करे। इस ग्रन्थ की प्रेस कापी करने मे दर्शना कुमारी पाटनी भोपाल, महावीर कुमार, आशा कुमारी जैन दतिया, हीरामणी जयपुर ने सहायता की है, उनको भी हमारा आशीर्वाद है।

ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे कार्य रत्त धर्म स्नेही सगीताचार्य श्री शान्ति कुमार जी गगवाल, श्री लल्लू लालजी गोधा, हीरा लाल जी सेठी, मोतीलाल जी हाडा, कपूरचन्द जी पाण्ड्या, सुशीलकुमार गगवाल, प्रदीपकुमार गगवाल श्रीमती कनक प्रभा जी हाडा, श्रीमती मेमदेवी गगवाल, श्री रमेश चन्द जी जैन को हमारा पूर्ण आशीर्वाद है। ऐसा ही धर्म कार्य आप लोग सदैव करते रहे।

१०८ आचार्य गणधर
कुंथुसागर
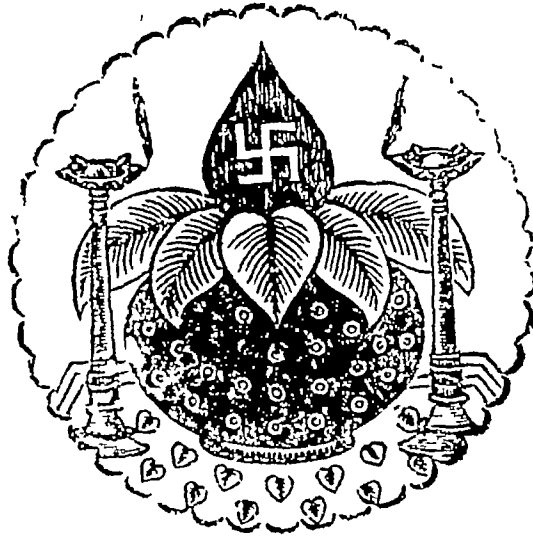
१०५ आर्यिका विजयमतीजी का ग्रंथ की उपयोगिता के बारे में प्रकाश एवं आशीर्वाद

परम पूज्य समाधि सम्राट १०८ आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज विश्व की अनुपम निधि थे। आपने न केवल जैन जाति, धर्म व सस्कृति का ही रक्षण किया, अपितु विश्व कल्याण लोक हित का भी सम्मान किया। मन्त्र तन्त्र विद्या पर आपका सर्वाधिक अधिपत्य रहा। और उससे लोक हित का कार्य भी किया। उनके शास्त्रो गुटको, डायरियो में य त्र त त्र विखरी मणियो को एक सूत्र मे पिरोकर कण्ठहार वनाने का प्रयत्न प्रस्तुत ग्रन्थ मे किया हैं। मेरे पास स्वय उनके द्वारा कराये गये नोट भी थे। उनको एवं अन्यत्व से भी चुन चुन कर सग्रह किया है। जिससे इस ग्रन्थ का महत्व न केवल व्यावहारिक जीवन मे ही उपयोगी है अपितु आध्यात्मिक जीवन मे भी लाभकारी, सहयोगी होगा। इसके प्रकाशन का कार्य "कुन्थु विजय ग्रन्थ माला" अत्यन्त लगन से कर रही है। श्री शान्ति कुमार जी गगवाल का पूर्ण सहयोग है। उन्ही के पुरुषार्थ और धैर्य से यह कार्य हो रहा है। यह महान गौरव का विपय है। मेरा उन्हे पूर्ण आशिर्वाद है। वे इस कार्य मे सफलता प्राप्त करे और जिनवाणी प्रचार से निर्मल ज्ञानी वनते हुए पूर्ण ज्ञानी वने। अन्य समस्त कार्य कर्त्ताओ को भी ज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम विशेष की प्राप्ति हो। मिथ्यात्व का नाश और सम्यक्त्व की प्राप्ति इस ग्रन्थ के माध्यम से पाठको को हो, यही मेरी सद्भावना, आशीर्वाद है।

गणनी १०५ आर्यिका

विजयमती

वयोवृद्ध तपस्विनी पूज्य १०५ आर्यिका श्री धर्ममती माताजी

श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथुसागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विजय मती माताजी ने कठोर श्रम कर के जन कल्याणार्थ लघु विधानुवाद ग्रन्थ का संग्रह किया है, जो कि यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र विद्या की प्रामाणिक सामग्री लिये हुये प्राचीन अद्‌भूत अलभ्य यन्त्रों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

उपरोक्त ग्रन्थराज के लिए मैं आशा करती हूँ कि समाज निश्चित रूप से लाभान्वित होगा। ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में संलग्न जयपुर निवासी श्री शान्ति कुमार जी गंगवाल, श्री लल्लूलाल जी जैन, गोधा व इनके सहयोगीगण जो अकथ परिश्रम कर के, लग्न व निष्ठा के साथ इसका प्रकाशन करवा रहे हैं, उन्हें आशीर्वाद देती हूँ कि इनको इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

—आर्यिका धर्ममती
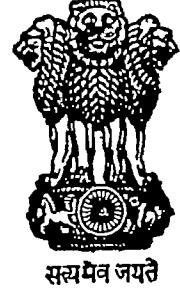
पैट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मन्त्री
भारत
Minister of Petroleum,
Chemicals & Fertilizers
India.
नई दिल्ली-११०००१, ६ फरवरी, १९८१

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दि० जैन कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति द्वारा गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली, श्रवणबेलगोला सहस्त्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पुण्य अवसर पर श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागर जी महाराज द्वारा सग्रहीत लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का प्रथम बार प्रकाशन किया जा रहा है। मै इस ग्रन्थ की सफलता की मंगल कामना करता हू।

—प्रकाश चन्द सेठी

आवरण पृष्ठ का मध्य चित्र परिचय

विक्रम सवत् १३७३ मे आलमशाह अलाउद्दीन देहली नगर में राज्य करता था। अपने धर्म का पक्का था, और अन्य धर्मावलबी लोगो को जबरन मुसलमान बनाता था। एक दिन नगर निवासियो में जो जैनी थे, उनको भी यह हुक्म सुनाया गया कि या तो मुसलमान बन जाओ या अपने किसी धर्म गुरू के द्वारा कोई चमत्कार दिखाओ। सब जैनी इस आपत्ति को देख कर घबराये और बादशाह से छः महीने की मोहलत मागी। बादशाह ने छः महीने की छूट दी, और सब जैन लोग अपने किसी चमत्कार दिखा सकने वाले दिगम्बर गुरू की खोज करने में लग गये। खोजते हुए दक्षिण भारत मे पहुचे। कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के निकट आचार्य दि. गुरू **विद्यासागर जी महाराज** तपस्या कर रहे थे। देहली से आने वाले श्रावको ने महाराज के दर्शन किये और उनसे अपने धर्म पर आये संकट को दूर करने की जानकारी दी, तथा उनसे प्रार्थना करके धर्म को बचाने की विनती की। विद्यासागरजी महाराज ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान की और तपस्या के लिये ध्यान मे बैठ गये। छ. महीने के समय मे जब सिर्फ तीन दिन बाकी रह गये तो श्रावको ने फिर महाराज से कहा कि वे देहली चलकर विपत्ति से छुटकारा दिलावे। महाराज ने कहा कि घबराइये नही सब अच्छा होगा और सब श्रावको को आज्ञा दी कि आज रात सब लोग यही सो जाऐ। गुरू आज्ञा के अनुसार सब श्रावक वही सो जाते है। रात्रि मे दि. आचार्य **विद्यासागरजी महाराज मन्त्र शक्ति** के प्रयोग द्वारा सोते हुये श्रावको सहित देहली पहुच जाते है। सुबह सब जागते है तो आश्चर्य से देखते है कि यह तो देहली की भूमि है। सब लोग अपने बादशाह को बताते है कि दि जैन धर्म के गुरू आ गये है, वे अपने धर्म का चमत्कार दिखावेगे। बादशाह के खचाखच भरे दरबार में जैन धर्म गुरू पहुचते है। बादशाह अलाउद्दीन का मोलवी बडा मन्त्र वादी था उसने महाराज के कमडल मे मन्त्र प्रभाव से मछलिया कर दी और बादशाह से कहने लगा कि बादशाह ये अहिंसावादी साधु है और अपने कमंडल मे मछलिया रखता है। बादशाह ने महाराज से कमडल दिखाने को कहा। महाराज विद्यासागर जी ने अपने ज्ञान से यह जान लिया कि इस कमडल मे मोलवी ने मछलिया पैदा कर दी है। महाराज ने अपने मन्त्र का प्रयोग किया और कमंडल मे मछलियो के स्थान पर कमल के फूल बना लिये। महाराज बादशाह से कहने लगे कि आपका मोलवी झूंठ बोलता है, मेरे कमडल मे मछलिया नही वरन्, कमल के फूल है। बादशाह ने कहा कि कमंडल उल्टा करके दिखाओ। **विद्यासागर जी महाराज** भरे दरबार मे अपना कमडल उल्टा करके दिखाते है। कमडल मे से कमल के फूल धडाधड जमीन पर गिरने लगते है, सब लोग जैन धर्म के चमत्कार को देखकर आश्चर्य करते है और धर्म की जय जयकार करते है। जैनी लोग महाराज विद्यासागर जी की जय जय कार करते है। बादशाह भी नत मस्तक होता है। धर्म की रक्षा होती है।

महाराज विद्यासागर जो **बड़े मन्त्रवादी थे,** इनकी समाधि अक्कीबाट स्व ग्राम मे हुई थी। अब भी इनके समाधि स्थान पर बडा चमत्कार है।

॥ इति ॥

आचार्य महावीर कीर्ति का जीवन परिचय

समाधि सम्राट श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति का जन्म वैशाख वदि ६ वि० स० १६६७ मे फिरोजावाद मे हुआ था। पिता का नाम रतनलाल जी माता का नाम बूदादेवी था। आपने २० वर्ष की अवस्था मे पिगासन अजमेर मे श्री १०८ चन्द्रसागर जी से सप्तम प्रतिमा ग्रहण की थी। सम्वत् १६६५ मे मेवाड के टाका टोका स्थान पर आचार्य श्री १०८ वीरसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की थी। ३२ वर्ष की अवस्था मे उदगाव (दक्षिण) मे श्री १०८ आचार्य आदीसागर जी सागली (महाराष्ट्र) के द्वारा नग्न दिगम्बर मुद्रा धारण की थी। अपने दीक्षा गुरु आदीसागर जी के स्वर्गारोहण के पश्चात् शेडवाल (कर्नाटक) मे एक लाख जन समुदाय के उपस्थिति मे आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया या।

आप अनेक विषयो तथा भाषाओ के उच्च कोटि के विद्वान थे। सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी और अग्रेजी भाषाओ के साथ ही गुजराती, कन्नडी, मराठी आदि प्रान्तीय भाषाओ का भी अध्ययन कर १८ भाषाओ के ज्ञाता हो गये थे। आपकी यह विशेषता थी कि जिस प्रदेश मे आपका विहार हो जाता था उसी प्रदेश की भाषा मे प्रवचन होता था।

आचार्य श्री ने जैन धर्म तथा सस्कृति की प्रभावना के लिये प्रायः सम्पूर्ण भारत मे विहार किया था। दक्षिण भारत मे अनेक वर्षों तक विहार करने के बाद उत्तर भारत के मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बगाल, बिहार आदि अनेक प्रमुख स्थानो में आपका विहार तथा चातुर्मास हुये। आपके चातुर्मास अधिकतर सिद्ध क्षेत्रो, अतिशय क्षेत्रो पर ही होते थे।

विहार के समय आपके ऊपर अनेक घातक हमले हुए। घोर उपसर्ग और शारीरिक पीडा भी कई बार सहन करनी पडी। किन्तु आपने समस्त उपद्रवो को बडी ही शाति और सयम के साथ सहन किया तथा अपने कर्त्तव्य से रचमात्र भी विचलित नही हुए। आप जैसे आचार्य तेजस्वी निर्भीक वक्ता अत्यात्मवेत्ता, मन्त्र, तन्त्र के ज्ञाता आत्मजयी पर दु ख कातर, स्वपर हितकारी, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान देखने मे कम ही आये हैं। इसी कारण आप अत्यधिक लोक प्रिय हुए। आपके द्वारा १६ मुनि, ६ आर्यिका, ७ क्षुल्लक, ५ क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की गई। इसके अलावा ८ लोगो को ब्रह्मचारी व ४ को ब्रह्मचारिणी व्रत दिये तथा १ से ७ प्रतिमा तक के अनेक श्रावक श्राविकाओ को व्रती वनाया गया।

आपके प्रमुख शिष्यो मे वर्तमान मे १०८ आचार्य श्री विमल सागर जी, १०८ आचार्य श्री सन्मति सागर जी, १०८ एलाचार्य श्री विद्यानन्द जी, १०८ आचार्य श्री सभव सागर जी, १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागर जी व श्री गणनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न, सिद्धान्त विशारद, विजयमती माताजी शामिल है, जिनके द्वारा सारे देश मे धर्म का प्रचार होते हुए, प्राणी मात्र इन गुरुओ के सानिध्य को पाकर मुक्ति मार्ग पर वढ रहे हैं।

❖ प्रस्तावना ❖
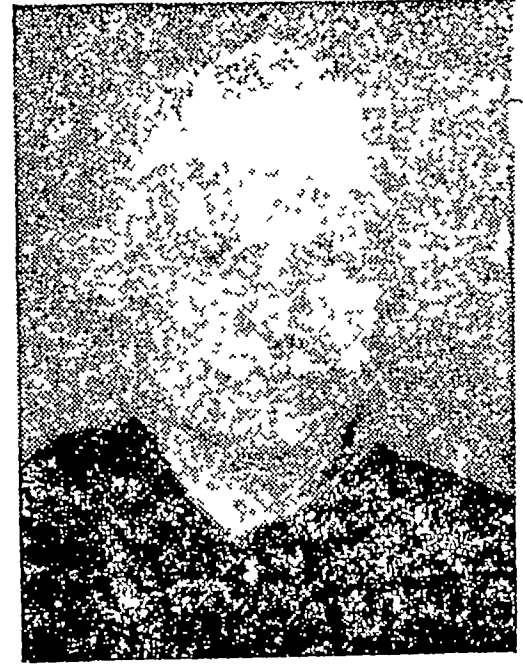
प्रस्तुत ग्रन्थ आचार्य प्रवर समाधि सम्राट, उग्र तपस्वी, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र क्रिया के पारगामी श्री १०८ महावीर कीर्ति जी महाराज के प्रवर शिष्य तपोनिधि प्रशात मूर्ति आचार्य गणधर श्री १०८ कुन्थुसागर जी महाराज व श्री गणनी, सिद्धान्त विशारद, सम्यक-ज्ञान शिरोमणि विजयमती माता जी ने अपने गुरू वर्य आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी एव प्राचीन गुटको मे से वडे परिश्रम से सचित कर लिखा है।

यन्त्र मन्त्र, तन्त्र विद्यानुवाद के अंग है। इनका महत्व आज के भौतिक युग में भी उतना ही है, जितना पूर्व युगो मे रहा है, लेकिन आज कल के युग मे इन महान प्रयोगों के जानकार नही है, और न इनके साधनो की प्रक्रिया से ही परिचित है। इसीलिये न इनके प्रति उनकी आस्था जागृत होती है, और न बिना आस्था व अध्य व्यवसाय के किसी कार्य की सिद्धि होती है। फलस्वरूप अज्ञानता प्रमाद के कारण उन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रों के स्वरूप जो फल स्वछेय सिद्धिया होती थी नही हो पाती है। विषय का ज्ञान नही होने से लोग फिर इन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र को ही गलत बताने लगते है।

मन्त्रो की साधना के लिए चाहे वह कोई मन्त्र हो, नव प्रकार की शुद्धियाँ आवश्यक है। इसके साथ ही मन्त्र के प्रति साधक की पूर्ण आस्था होना परमावश्क है। इसके बिना साधना की सिद्धि सम्भव नही है। नव शुद्धिया—(१) द्रव्य शुद्धि (२) क्षेत्र शुद्धि (३) काल शुद्धि (४) भाव शुद्धि (५) आसन शुद्धि (६) विनय शुद्धि (७) मन शुद्धि (८) वचन शुद्धि (९) काय शुद्धि होती है। साधक को माला (जो तीन तरह की होती है) कमल जाप्य, हस्तांगुली माला जाप्य, वस्त्र आसन और दिशा बोध भी होना आवश्यक है। किस साधना के लिए कैसे वस्त्र हो, कैसा आसन हो, कैसी मुद्रा हो और किस दिशा की ओर मुख करे, इन सब बातों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

साधक को अपनी शुद्धि करने के लिए सकलीकरण, निर्विघ्नता के लिए सरक्षीकरण भी करना पडता है। इसके बिना साधना में अनेक विघ्न आ जाते है, और इससे इष्ट सिद्धि नही हो पाती है। मन्त्रों द्वारा आत्म शान्ती जागृत की जाती है। मन्त्र की व्युत्पत्ति ही ऐसी है, मन्त्र शब्द मन धातु से ष्टन् प्रत्यय लगाने से बनता है। मन्यते आत्म देशोनन्

रति मन्त्र अर्थात् जिससे आत्मा का आदेश जाना जावे उसे मन्त्र कहते है। तन्त्र उन मन्त्रो की प्रक्रिया है और यन्त्रो का आकार अर्थात् मन्त्रो की आकृतिया सम्पूर्ण द्वादशाग जिन-वाणी को सुरक्षित रखने के चार्ट है, जिनके देखने मात्र से तत्सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। इन यन्त्रो का सीधा सम्बन्ध मन्त्रो और सिद्धियो से है। विधि श्रद्धा और विवेक के साथ इनकी साधना करने मे सिद्धियाँ निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती है। सग्राहक आचार्य श्री व माता जी ने इन सब बातो का इस ग्रथ मे सग्रह समन्वित किया है और उन्होने इसे पाच खडो मे विभाजित किया है।

साधको का लक्ष्य मन्त्रो की साधना प्रारम्भ करने से पूर्व, सकलीकरण, सरक्षीकरण और साधना करने की मुद्राये, विधिया, विविध सिद्धियो के लिये मन्त्रो का विधि सहित विवेचन यन्त्रो के आकार, चौबीस भगवान के यक्ष यक्षणियो के (चित्र सहित) वर्णन व आयुर्वेद का विषय विवेचन इन खन्डो मे किया गया है। इस तरह यह ग्रन्थ यन्त्र मन्त्र और तन्त्रो को विशेष विवेचना करने वाला एक महान् और अपूर्व ग्रन्थ (लघु विधानुवाद) बन गया है। इसके सग्रह करने मे पूज्य श्री १०८ आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज व श्री १०५ आर्यिका विजयमती माता जी ने अथक श्रम करके लुप्त एव सुप्त विद्या को प्रकाश मे लाये है, उसके लिये सम्पूर्ण मानव समाज आपका उपकृत व आभारी रहेगा और यावच्चन्द्र दिवाकर आपका नाम अमर रहेगा।

इस ग्रन्थ को प्रकाशन कराने मे धर्मोत्साही गुरु भक्त सगीताचार्य श्री शान्तिकुमार जी गगवाल, प्रकाशन सयोजक एव धर्म प्रेमी श्री लल्लूलाल जी जैन गोधा (सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी) जो कि इस ग्रन्थ के प्रबन्ध सम्पादक है व इनके सहयोगी कार्यकर्ताओ को मै धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता, क्योकि इन्ही लोगो के सहयोग व प्रेरणा से इतना बडा कार्य इतनी जल्दी सम्भव हो सका है। कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति के सभी सदस्यो का मै अभिनन्दन करता हूँ कि जिनके प्रयास से ही समिति का प्रथम प्रकाशन ही इतना प्रभावक प्रकाशित हुआ है कि जिसका प्रकाश देश के सभी क्षेत्रो मे दूर-दूर तक फैलेगा और चिरकाल तक रहेगा।

मुझे प्रकाशन सयोजक श्री शान्तिकुमार जी गगवाल ने बतलाया कि पडित जी ऐसे महान ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य करने की न हम मे शक्ति थी और न क्षमता, मगर फिर भी प्रकाशित हो रहा है, आश्चर्य है? मैने कहा कि इसमे आश्चर्य की कोई बात नही है, आपको सभी बडे आचार्यो के आशीर्वाद के साथ साथ श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न सम्यक्ज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद, विजयमती माता जी का पूर्ण आशीर्वाद है और साथ ही साधुओ के प्रति अटूट भक्ति ही कार्य कर रही है, भक्ति मे अपूर्व शक्ति है।

समाज रत्न पं० राजकुमार शास्त्री,
साहित्य तीर्थ, आयुर्वेदाचार्य
निवाई (टौक) राजस्थान
सचालक—अखिल विश्व जैन मिशन

प्रकाशन संयोजक के दो शब्द

समाधि सम्राट स्वर्गीय १०८ आचार्य श्री महावीर कीर्त्तिजी महाराज, निमित्त ज्ञान शिरोमणि, १०८ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज, १०८ आचार्य श्री सन्मति सागरजी महाराज, १०८ आचार्य गणधर श्री कुंथु सागर जी महाराज, श्री गणनी १०५ आर्यिका, विदुषी रत्न सम्यक ज्ञान शिरोमणि सिद्धान्त विशारद विजयमती माताजी व सभी साधुओ के चरण कमलो मे त्रिवार नमोस्तु अर्पित कर ग्रन्थ प्रकाशन के कार्य के बारे मे दो शब्द लिख रहा हू ।

१०८ आचार्य गणधर श्री कुंथुसागर जी महाराज एव १०५ गणनी आर्यिका श्री विजयमती माताजी के मैने प्रथम बार दर्शन, वर्ष १९७२ मे जयपुर में किये थे । उस समय आप श्री संघ सहित जयपुर स्थित राणाजी को नशिया (खानिया) मे पधारे हुए थे। आप श्री की तपोमयी त्याग प्रतिभा से मै बहुत प्रभावित हुआ और मेरे मानस मे यह भावना जाग्रत हुई कि ऐसे गुरुओ का पूरे चातुर्मास मे समागम मिले तो समग्र समाज लाभान्वित हों। जिस मनुष्य की जैसी सच्ची भावना होती है वैसा ही उसे फल मिलता है। कहा भी है "भावना भव नाशिनी", "भावना भव फासनी"। आखिरकार मेरी सच्ची भावना का फल मुझे मिला, और चातुर्मास स्थापना दिवस को मेरी यह भावना पूर्ण हुई, जब महाराजश्री व माताजी ने राणाजी की नशिया (खानियाँ) मे ही चातुर्मास स्थापित करने की उद्घोषणा की। मेरी भावना की सफलता को पाकर मै खुशी मे फूला नही समाया। महाराज श्री के साथ २२ साधुओ ने चातुर्मास किया था जिसमें ३ मुनि, ५ क्षुल्लक और १४ माताजी थे)।

आप श्री ने जैसे ही चातुर्मास स्थापना की घोषणा की, तत्काल ही वहाँ पर मुनि भक्तो, सुश्रावको और कतिपय युवकों ने सघ के चातुर्मास की व्यवस्थाओ के लिए एक चातुर्मास प्रबन्ध समिति का चयन किया। इस समिति का मत्री पद मुझे दिया गया । मेरे लिये इस पद का भार वहन करना बहुत ही कठिन था, क्योकि मुझे इससे पूर्व मुनि सघ की

व्यवस्थाओ का कोई अनुभव नही था। साथ ही बैंक सेवा मे होने से, समय की भी कमी थी। लेकिन महाराज श्री व माताजी के आशीर्वाद व, मार्ग दर्शन व वात्सल्य से, यह चातुर्मास कई विशेष कार्यक्रमो के साथ बहुत ही व्यवस्थित ढग से अत्यन्त आनन्द के साथ सम्पन्न हुआ, जिसे आज भी जयपुर निवासी याद करते रहते हैं।

चातुर्मास के बीच ही जयपुर स्थित महावीर पार्क मे अपार जन समूह के बीच १० अक्टूबर १९७२ को बडा बाठेडा (उदयपुर) निवासी ब्रह्मचारीजी श्री झमकलालजी की दीक्षा, आप श्री के कर कमलो से सम्पन्न हुई। दीक्षा के पश्चात् उन्हे १०५ क्षुल्लक श्री आदी सागरजी के नाम से सम्बोधित किया। वास्तव मे यह आप श्री व माताजी श्री के तप का ही प्रभाव था। यह इस चातुर्मास की सबसे उल्लेखनीय घटना थी। इस समय आपने सभी को वीतराग मार्ग पर बढने की प्रेरणा दी। आप श्री के कर कमलो द्वारा जयपुर से विहार के रोज गणनी १०५ आर्यिका विजयमती माताजी द्वारा लिखित समाधि सम्राट १०८ आचार्य महावीर कीर्तिजी के पावन जीवन चरित्र की पुस्तक का विमोचन समारोह भी हुआ।

धीरे-धीरे चातुर्मास का समय व्यतीत हो गया और आप श्री ने तीर्थराज सम्मेद शिखर की ओर विहार करने की घोषणा कर दी। जयपुर से विहार करते समय १९ नवम्बर १९७२ को महाराज श्री व माताजी ने मुझे आशीर्वाद प्रदान किया, और कहा कि आपने चातुर्मास के दौरान चतुर विध सघ की जो तन, मन, धन से सेवा की है। ऐसी सेवा मुनि सघो की आप सदैव करते रहे। देव–शास्त्र–गुरु की सेवा करके भक्ति का सदैव लाभ लेते रहे। महाराज व माताजी के श्री मुख से यह सुनकर मै धन्य हो गया। मेरा हृदय गद्‌गद् हो गया और खुशी से आखो से अश्रु धारा बहने लग गई। महाराज श्री व माताजी सघ सहित जयपुर निवासियो को भक्ति का मार्ग बतलाकर प्रस्थान कर गये। इस दुखद वियोग से मेरे मन मे रह रहकर प्रश्न उत्पन्न हो रहे थे कि न मालूम इन गुरुओ के चरणो के दर्शन करने का सौभाग्य फिर कब प्राप्त होगा। लेकिन महाराज श्री व माताजी का विशेष वात्सल्य व आशीर्वाद मुझे हमेशा मिलता रहा। आपके चातुर्मासो के दौरान मुझे विभिन्न स्थानो पर जाने का मौका मिला। इनमे तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी, श्री सिद्ध क्षेत्र सोना गिरिजी, आरा (विहार) शाहगढ मध्यप्रदेश) शामिल है। आप श्री व माताजी के साथ तीर्थराज सम्मेद शिखरजी व सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि जी की वन्दना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आपके चातुर्मासो के समय विभिन्न स्थानो पर भक्ति सगीत के विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र पर भक्ति सगीत का कार्यक्रम सुनकर महाराज श्री व माताजी ने मुझे सगीताचार्य व बहिन श्रीमती कनकप्रभा जी हाडा को आध्यात्मिक सगीत विदुषी का पद प्रदान किया। इन कार्यक्रमो मे जैन सगीत कोकिला रानी, एव आध्यात्मिक सगीत विदुषी श्रीमती कनक प्रभा जी हाडा व आदरणीय श्री मोतीलाल जी हाडा का विशेष सहयोग मिला है। श्री मोतीलालजी हाडा व बहिन श्रीमती कनक प्रभाजी हाडा भी महाराज श्री व माताजी के श्रद्धालु भक्त हैं। इस सहयोग के लिये मैं आपका विशेष आभारी हूँ और आशा करता हूँ कि आपका यह सहयोग हमेशा मिलता रहेगा।

अभी हाल ही में गत चातुर्मास में हम लोग महाराज श्री व माताजी के दर्शनार्थ अकलूज जिला शौलापुर (महाराष्ट्र) गये थे। महाराज श्री ने व माताजी ने वातचीत के दौरान मुझे यह आज्ञा प्रदान की, कि हमने सोनागिरि जी सिद्ध क्षेत्र पर "लघु विद्यानुवाद" का संग्रह किया है। यह ग्रन्थ यन्त्र मन्त्र पर प्रमाणिक सामग्री लिये हुए है। आप इस ग्रन्थ की प्रेस कापी को जयपुर ले जाये और इसे भगवान बाहुवली महा मस्तक-भिषेक के पावन महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित करवाने की व्यवस्था करो। साथ ही इस कार्य की सफलता के लिये महाराज श्री व माताजी ने आशीर्वाद भी प्रदान किया।

मैंने ग्रथ प्रकाशन कराने के कार्य को स्वीकार करते हुए महाराज श्री व माताजी से यह निवेदन किया कि यह कार्य मेरे लिये बहुत कठिन है। मैं इसे कैसे कर पाऊंगा। तव महाराज श्री ने प्रसन्न मुद्रा मे कहा, हम क्या कर सकते है, इसके प्रकाशन कराने का श्रेय आपको ही मिलने वाला है।

महाराज श्री व माताजी के सानिध्य मे भक्ति का लाभ लेकर हम लोग वाहुवली यात्रा करते हुए २-११-८० को जयपुर आने के पश्चात् इसका प्रकाशन कराने के कार्य को प्रारम्भ किया। महाराज श्री व माताजी द्वारा संग्रहित इस ग्रन्थ की प्रेस कापी मैंने १३ नवम्वर १९८० को श्री लल्लूलाल जी जैन (गोधा) सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी को दिखाकर विचार विमर्श किया। श्री गोधा ने जयपुर जैन डायरेक्टरी का प्रकाशन भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के अवसर पर किया था। उस समय श्री गोधा जी द्वारा सम्पादित व प्रकाशित इस डायरेक्टरी की सर्वत्र प्रशंसा व सराहना हुई थी।

श्री गोधा जी भी महाराज श्री व माताजी से प्रभावित थे। आप महाराज श्री व माताजी द्वारा सग्रहित प्रेस कापी को देखकर अत्यधिक प्रभावित हुए और मुझे इस ग्रन्थ को शीघ्र प्रकाशन मे पूर्ण सहयोग देने का विश्वास दिलाया और साथ ही मेरे अनुरोध पर ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे प्रवन्ध सम्पादक का पद भी स्वीकार किया।

श्री गोधा का महाराज श्री व माताजी से सर्वप्रथम सम्पर्क जयपुर स्थित राणाजी की नशिया (खानिया) जयपुर मे १८ जून १९७२ को हुआ था। आप महाराज श्री व माताजी को संघ सहित जयसिहपुरा खोर (कानी खोह) भी ले गये थे। महाराज श्री व माताजी ने आहार, सामायिक, प्रवचन आदि के पश्चात् श्री गोधाजी को साहित्यिक एव धार्मिक क्षेत्र मे आगे आने की प्रेरणा दी थी।

आप श्री के आशीर्वाद से कुछ माह पश्चात् ही श्री गोधाजी ने दिगम्बर जैन मन्दिर जयसिहपुरा खोर का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार करवाया। साहित्यिक क्षेत्र में जयपुर जैन डायरेक्टरी जैसे एकमात्र संदर्भ ग्रथ जो कि जयपुर जैन समाज के इतिहास में प्रथम वार प्रकाशित हुआ है उसे प्रकाशन एवं सम्पादन जैसे दुरह कार्य को सम्पन्न कर अपनी कार्यकुशलता, कार्यक्षमता एवं प्रतिभा का परिचय दिया है। यह सव महाराज श्री व माताजी के आशीर्वाद का ही फल

है। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष के दिगम्बर जैन धार्मिक तीर्थ स्थलो का सडक व रेलमार्गो से किलोमीटर की दूरी सहित मार्गदर्शन (नक्श) पृथक्-पृथक् बनाकर जैन समाज के लिये सराहनीय कार्य किया है। वैसे भी श्री गोधाजी जयपुर जैन समाज मे धार्मिक एव सामाजिक कर्मठ युवक कार्यकर्त्ताओ मे से एक है।

मै श्री गोधाजी का अत्यन्त आभारी हू कि जिन्होने व्यस्त कार्यक्रमो मे से समय निकाल कर ग्र थ प्रकाशन कार्य मे रुचि लेकर सहयोग प्रदान किया है।

मै १०५ क्षुल्लक श्री सिद्ध सागरजी महाराज, मोजमाबाद का भी बडा आभारी हू कि वृद्धा अवस्था मे भी आपने अमूल्य समय मे से समय निकालकर ग्रथ का अवलोकन करके समय समय पर मुझे मार्ग दर्शन दिया।

श्री हीरालालजी सेठी को भी धन्यवाद देता हू कि आपके अमूल्य समय मे से समय निकालकर ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे सहयोग दिया है। श्री सेठीजी महाराज व माताजी के श्रद्धालु भक्तो मे से है। आपकी धार्मिक प्रवृत्ति होने से आप मुनि सघो के कार्यो मे रुचि लेकर कार्य सम्पन्न कराने मे सहयोग देते रहते है। महाराज श्री के जयपुर चातुर्मास के समय आप चातुर्मास प्रबन्ध समिति मे व्यवस्थापक के पद पर कार्य करके मुझे काफी सहयोग दिया था। निर्वाण वर्ष मे २४ तीर्थ करो की जन्म जयन्तिया मनाने मे भी आपने मेरे साथ कार्य करके अपनी कार्य कुशलता का परिचय दिया था।

श्री कपूरचन्द जी पाण्डया (सचालक एव सस्थापक) श्री पूजा प्रचारक समिति जयपुर को भी धन्यवाद देता हू कि जिन्होने अपने अमूल्य समय मे से समय निकालकर ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे सहयोग दिया है।

श्री सुशील कुमार गगवाल (बी काम) द्वारा की गई सेवाओ को भी मै नही भूला सकता कि जिन्होने कार्यालय मे अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद भी कठोर परिश्रम करके अपने कर्त्तव्य को निभाया है।

ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे हमारे आर्टिस्ट श्री पुरुषोत्तमजी शर्मा को धन्यवाद देता हू कि जिन्होने अपनी कला से महाराज श्री व माताजी के चित्रो के बनाने के अलावा ग्रथ राज छपे सभी यन्त्रो को बनाने मे प्राथमिकता देकर ब्लाक बनाने योग्य बनाकर सहयोग प्रदान किया है।

श्री पुरुषोत्तमदासजी, अमोलकदासजी कोटावाला, जो कि मैसर्स राजस्थान प्रिन्टिग वर्क्स के मालिक है अत्यन्त आभारी हू कि जिन्होने प्रदेश मे बिजली सकट की घडी मे भी ग्रथ को छापने का कार्य समय पर करवाकर कार्य कुशलता का परिचय दिया है। साथ ही प्रेस के व्यवस्थापक, कम्पोजिटर्स, मशीनमेनो के सहयोग को भी कदापि नही भुलाया जा सकता, जिन्होने आस्था के साथ ग्र थ को पूर्ण करने मे दिन रात एक कर दिया।

मै श्री कन्हैयालालजी काला, श्री धनुपकरजी, श्री मोतीलाल जी हाडा, बहिन श्रीमती कनक प्रभाजी हाडा, श्री रमेशचन्दजी, जैन, श्री सतीशकुमार गगवाल, श्री पारसलाल जी पाटनी,

श्री बाबूलालजी गगवाल, श्री हरकचन्दजी गगवाल का भी आभारी हूं कि जिन्होने ग्रथ प्रकाशन के कार्य मे रुचि लेकर समय २ पर मेरा साथ दिया है। ग्रन्य जिन २ महानुभावो न सहयोग दिया है, उन सभी को धन्यवाद देता हूं।

मै पण्डित राजकुमारजी शास्त्री निवाई वालो का आभारी हूं जिन्होने ग्रन्थ राज की प्रस्तावना लिखने की कृपा की है।

ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे मेरी धर्म पत्नि श्रीमती मेमदेवी गगवाल व सुपुत्र प्रदीप कुमार गगवाल का भी बडा आभारी हूँ कि मुझे गृह कार्य से मुक्त रख कर तथा समय २ पर प्रेस कापी तैयार करने मे व अन्य सभी कार्यो मे सहयोग दिया है।

ग्रन्थ प्रकाशन कार्य मे सभी दातारो को भी मैं अपनी ओर से 'कुन्थु विजय ग्रथ माला' समिति की ओर से धन्यवाद देता हू और आशा करता हू कि समिति के भविष्य मे भी इस प्रकार के प्रकाशनो के लिये आप लोगो का सहयोग मिलता रहेगा।

ग्रन्थ राज के प्रकाशन मे सभी कार्यो को बहुत ही सावधानी पूर्वक देखा गया है ताकि ग्रन्थ राज अपने आप में उपयोगी साबित हो सके। इसकी भाषा प्राचीन गुटकों से सकलित की हुई है और वैसी ही प्रकाशित कराई गई है।

अन्त मे आचार्य श्री व माताजी के कर कमलो में यह ग्रन्थ समर्पित करते हुये मैं आज अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हू, कि आपकी आज्ञानुसार मैने इस कार्य को करके सफलता प्राप्त की है। मेरे लिये यह कार्य बहुत ही मुश्किल था, लेकिन आप श्री व माताजी के आशीर्वाद से अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार सभी कार्य सुन्दर से सुन्दर कराने का प्रयास किया है। इस तरह के कार्य का मेरा यह प्रथम प्रयास है। अतः इसमे कमियाँ रहना स्वाभाविक है। इसके लिये मै आपसे कर बद्ध क्षमा चाहता हू। आशा है आप क्षमा करेंगे और भविष्य मे इस प्रकार के कार्य मे पूर्ण सफलता प्राप्त हो, इसके लिये आशीर्वाद प्रदान करेगे।

साधु वर्ग, विद्वत जन, पाठकगण जो भी इसमे त्रुटियाँ रही हो, कृपया सग्रह कर्त्ता को सूचित कराने का कष्ट करे। जिससे आगामी प्रकाशन मे उनको दूर किया जा सके।

मै आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज, उपाध्याय मुनि श्री १०८ भरतसागर जी महाराज, १०५ क्षुल्लक श्री सिद्ध सागर जी महाराज का भी बहुत २ आभारी हूँ कि जिन्होने ग्रन्थ राज की उपयोगिता व कार्य की सफलता के लिए प्रकाशनार्थ दो शब्द लिखकर भिजवाने का कष्ट किया है।

श्री रघुकुलजी तिलक, राज्यपाल राजस्थान सरकार का भी आभार मानता हूँ कि जिन्होने ग्रन्थ की उपयोगिता के बारे मे प्रकाशनार्थ अपना शुभ सदेश भिजवाया है।

पुनः नमोस्तु,
एवं आशीर्वाद की भावना के साथ
गुरु भक्त, सगीताचार्य
शान्तिकुमार गंगवाल, बी. काम
जयपुर (राजस्थान)

प्रबन्ध सम्पादक के दो शब्द

श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी व श्री १०५ गणनि आर्यिका श्री विजयमती माताजी द्वारा सग्रहित 'लघु विद्यानुवाद' ग्रन्थ को मुद्रित करवाने के लिए सलाह करने हेतु श्री शान्तिकुमारजी गंगवाल मुझसे १३ नवम्बर १९८० को मिले । विचार विमर्श के दौरान इस ग्रन्थ को शीघ्र सुन्दर मुद्रित कराने हेतु प्रबन्ध सम्पादक के रूप मे दायित्व वहन करने का प्रस्ताव मेरे समक्ष रखा । ग्रन्थ का अवलोकन करने पर मुझे बडा आश्चर्य हुआ, क्योकि मैने इस प्रकार का ग्रथ पहिले कभी नही देखा था । यह कार्य काफी कठिन था कि इसको अल्प समय मे छपवाकर भगवान बाहुवली महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पुण्य अवसर पर प्रकाशित करके महाराज श्री की भावना को मूर्तरूप दिया जा सके । यह ग्रन्थ उन महाराज श्री व माताजी द्वारा सग्रहित था, जिनसे कि मैं भी परिचित था, व उनके सम्पर्क मे आने का मुझे भी सौभाग्य मिल चुका था । ग्रन्थ देखकर मै बडा प्रभावित हुआ तथा मैंने मेरे सारे व्यस्त कार्यक्रमो को छोडकर ग्रन्थ छपवाने का आश्वासन श्री गगवाल जी को देकर कार्य को शीघ्र कराने मे जुट गया ।

इस ग्रन्थ के मुद्रित कराने से पूर्व मैंने भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के अवसर पर जयपुर जैन डायरेक्टरी का सम्पादन कर प्रकाशित किया था, जो कि जयपुर जैन समाज के इतिहास मे मेरा प्रथम प्रयास था ।

ग्रन्थ मे सकलित सामग्री मेरे सामान्य ज्ञान की परिधि से बाहर है, तथा मै इस सामग्री के बारे मे बिल्कुल अनभिज्ञ था, लेकिन महाराज श्री के आदेशानुसार गगवाल जी को मैंने भी इस कार्य मे सहयोग देने का आश्वासन देकर प्रबन्ध सम्पादक के पद को स्वीकार करते हुये ग्रन्थ को प्रकाशन करने मे समय लगाया ।

ग्रन्थ के मुद्रण मे कई त्रुटियो का रहना स्वाभाविक है, और त्रुटिया रही भी होगी, वे सब मेरी अल्प बुद्धि के कारण है, अत साधु वर्ग, विद्वतजन, पाठकगण से क्षमा चाहता हू ।

वसन्तपचमी, दिनाक ९-२-१९८१
माध शुक्ल, ५ वि स. २०३७
जयपुर

लल्लूलाल जैन गोधा
सम्पादक,
जयपुर जैन डायरेक्टरी

जिनके प्रयत्नों से यह ग्रन्थ मुद्रित हो सका--

श्री शान्ति कुमार गंगवाल
प्रकाशन सयोजक
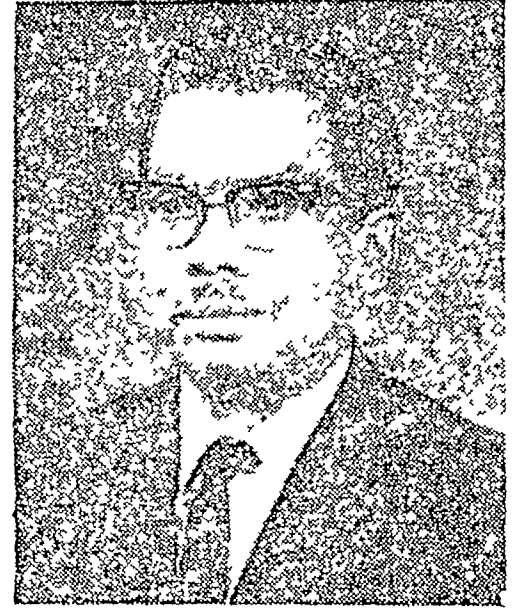
श्री लल्लूलाल जैन, गोधा
प्रबन्ध सम्पादक
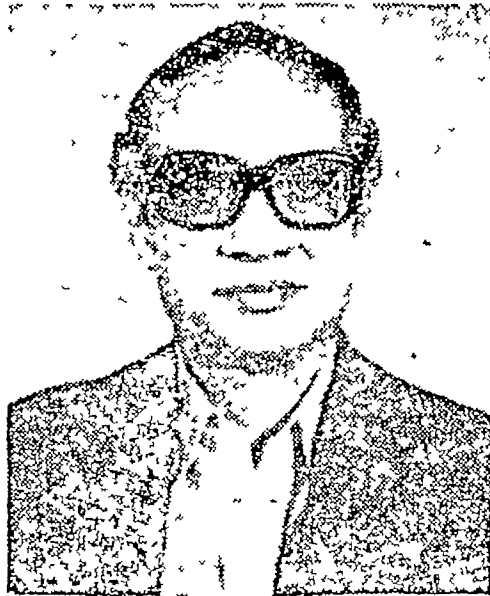
श्री मोतीलाल हाडा
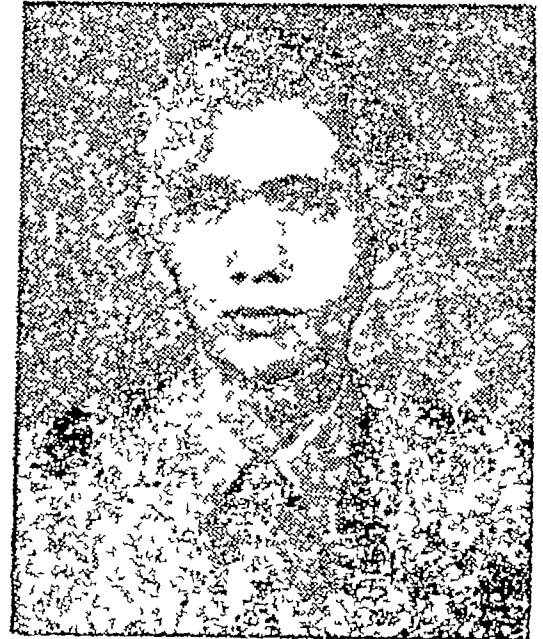
श्री सुशील कुमार गंगवाल
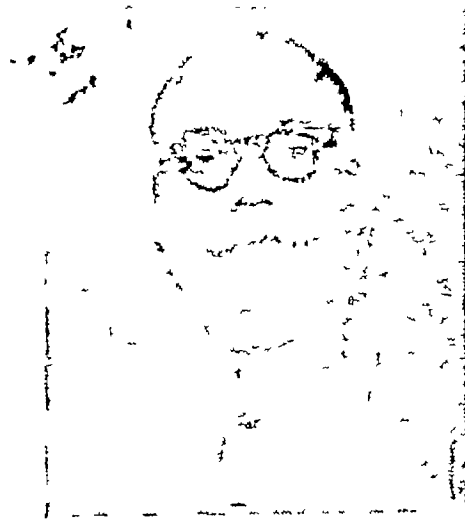
←श्री कपूरचन्द पांडया

श्री हीरालाल सेठी→

←श्री रमेशचन्द जैन

←श्रीमती कनक प्रभा हाडा

श्रीमती मेमदेवी गंगवाल→

लघु विद्यानुवाद

इस खण्ड में

(पृष्ठ १ से २४ तक)

ग्रन्थ--प्रशस्ति

आचार्य श्री शत-अठ "महावीर कीरति" हुये महान् ।
परम्परा में 'विमल' गुरु है, जैन जगत की शान ।।
इनके महा तपस्वी शिष्य है, आचार्य मुनि श्री कुन्थु ।
कठिन साधना से जिनकी, प्रस्तुत यह अद्भुत ग्रन्थ ।।
श्रेष्ठ तपस्विनी माताजी श्री विजय मतीजी साथ ।
ग्रन्थराज की तैयारी में, धन्य बटाया हाथ ।।
सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी पर यह, सिद्ध हुआ है काज ।
गुरु बाहुबल से बाहूबली को है अर्पित आज ।।
लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का नाम दिया है सुन्दर ।
अद्भुत ग्रन्थ बना गुणकारी, उपकारी और हितकर ।।
गोधा लल्लूलाल और श्री शान्तिकुमार गंगवाल ।
संपादन, संयोजन कीना, धन्य है दोनों लाल ।।
यन्त्र मन्त्र और तंत्र है विद्या क्या, और क्या उपयोग ।
ग्रन्थ में इस पर सुन्दर चित्रण, पढ़े कटे सब रोग ।।
और भी उपयोगी सामग्री, चित्र, भरे हैं इसमें ।
जीवन सुन्दर जीने का है, 'राज' भरा है जिनमें ।।
सम्वत् दो हजार सैंतीस में, फागुन माह महान् ।
अभिषेक बाहुबली महा मस्तक का, सुन्दर अवसर जान ।।
कर्नाटक की धन्य धरा पर, लाखों लोग है आये ।
इस अवसर पर ग्रन्थ राज को गुरु जग सम्मुख लाये ।।

रचयिता - (राजमल जैन, जयपुर)

卐 मंगला चरण 卐

वृषभादि जिनान् वन्दे, भव्य पंकज प्रफुल्लकान् ।
गौतमादिगणाधीशान्, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनान् ।। १ ।।
वन्दित्वा कुंदकुंदादीन्, महावीर कीर्ति तथा ।
लघुविद्यां प्रवक्षामि पूर्वाचार्या नुरूपतः ।। २ ।।

लघुविद्यानुवाद

अर्थ . मोक्ष लक्ष्मी के घर है ऐसे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लगाकर अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर प्रभु को नमस्कार करता हूँ ।

भव्य रूपी कमलो को प्रफुल्लित करने वाले, गौतमादि गण नायको को नमस्कार करता हूँ । आचार्य परम्परा मे आने वाले कुन्दकुन्दादिक आचार्य देव है, उनको नमस्कार करता हूँ और मेरे गुरुदेव श्री महावीर कीर्ति जी महाराज है उनको नमस्कार करके लघु-विद्यानुवाद को कहूँगा, जो पूर्वाचार्यो के द्वारा कहा गया है ।

मन्त्र साधन करने वाले के लक्षण

निर्जित मदनाटोपः प्रशमित कोपो विमुक्त विकथालापः ।
देव्यर्चनानुरक्तो जिनपद भक्तौ भवेन्मंत्री ।।

जिसने कामदेव को जीता है, और जिनके क्रोधादि कषाये शान्त है, जो विकथाओं से दूर रहने वाला है, देवियों की पूजा करने मे जिसका चित्त अनुरक्त है, और जिनेन्द्र प्रभु के चरण कमलो की भक्ति करने वाला है, वह मन्त्री हो सकता है याने मन्त्र साधन करने वाला हो सकता है ।

मंत्राराधन शूरः पाप विदूरो गुणेन गम्भीरः ।
मौनी महाभिमानी मन्त्री स्यानीदृशः पुरुषः ।।

जो मन्त्राराधना करने मे शूरवीर है, पाप क्रियाओं से दूर रहने वाला है, गुणों मे गम्भीर है, मौनी है, महान् स्वाभिमानी है, ऐसा पुरुष ही मन्त्रवादि हो सकता है ।

गुरुजन हितोपदेशो गततन्द्रो निद्रयापरित्यक्ताः ।
परिमित भोजनशीलः स स्यादाराधको मंत्राः ।।

जिसने गुरुजनो से उपदेश को प्राप्त किया है, तन्द्रा जिसकी खत्म हो चुकी है और जिसने निद्रा लेना छोड दिया है, जो परिमित भोजन करने वाला है, वही मन्त्रो का आराधक हो सकता है ।

निर्जित विषय कषायोधर्मामृत जनित हर्षगत कायः ।
गुरुतर गुण सम्पूर्णः समवेदाराधको देव्याः (मन्त्राः) ।।

जिसने सम्पूर्ण विषय कषायो को जीत लिया है, धर्मामृत का सेवन करने से जिसकी काय हर्षयुक्त है, उत्तम गुणो से सयुक्त है, ऐसा पुरुष ही मन्त्राराधना कर सकता है ।

शुचिः प्रसन्नोगुरुदेव भक्तो दृढ़ व्रतः सत्य दया समेतः ।
दक्षः पटुर्बीज पदावधारी मन्त्री भवेदीदृश एवलोके ।।
एते गुणायस्य न सन्ति पुंसः क्वचित् कदाचिन्न भवेत् स मन्त्री ।
करोति चेद्दर्प वशात् स जाप्यं प्राप्नोत्यनर्थंफणिशेखरायाः ।।

जिसका वाह्य और अभ्यन्तर से चित्त शुद्ध है, प्रसन्न है, देव शास्त्र गुरु का भक्त है, व्रतो को दृढता से पालन करने वाला है, सत्य बोलने वाला है, दया से युक्त है, चतुर है, मन्त्रों के वीज रूप पदो को धारण करने वाला है ऐसा व्यक्ति ही लोक मे मन्त्राराधना कर सकता है।

उपरोक्त गुणो से जो पुरुष युक्त नही है, वह मन्त्र साधन का अधिकारी किसी भी हालत मे नही होता है। अगर अभिमान से सयुक्त होकर मन्त्र साधना कोई करता है तो वह मन्त्रो के अधिष्ठाता देवो के द्वारा अनर्थ को प्राप्त होता है। ऐसी श्री मल्लिषेणाचार्य की आज्ञा है ।

अथ सकलीकरणम्

दृष्टे मृष्टे भुवि न्यस्ते, सन्निविष्टः सु विष्टरे ।
समीपस्थापना द्रव्यो, मौनमाकर्मिकं दधे ।।

ॐ क्ष्वी भू शुद्धयतु स्वाहा । ॐ ह्री अर्हं क्ष म ठ आसन निक्षिपामि स्वाहा । ॐ ह्री ह्यु ह्यू णिसिहि णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा । ॐ ह्री मौन स्थिताय मौनव्रत गृण्हामि स्वाहा ।

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः ।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम् ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धि करोमि स्वाहा ।

इस मन्त्र से हाथ मे पानी लेकर सर्व पूजा के बर्तनो की शुद्धि करे, पश्चात्

ओ३म् ह्रीं अर्हं झ्रो झ्रौ वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्त तीर्थ जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा ।

सर्व पूजा द्रव्यो का शोधन करे। पश्चात्—

मैं अग्नि मण्डल मे पर्यङ्कासन से बैठा हुआ हूँ और मेरे चारो ओर हवा से प्रज्वलित अग्नि से यह सप्त धातुमय शरीर जल रहा है, ऐसा चितवन करे । पश्चात्—

ॐ ॐ ॐ रं रं रं झ्रौं झ्रौ झ्रौ अ सि आ उ सा दर्भासने उपवेशनं करोमि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ कर दर्भ के आसन पर बैठे । पश्चात्—

ॐ ह्रीं ओं क्रों दर्भैराच्छादनं करोमि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवतो जिनभास्करस्य बोधसहस्त्र किरणैर्ममनोकर्मैधनद्रव्यं शोषयामि घे घे स्वाहा । नोकर्म शोषणम् ।

यह पढ कर ऐसी विचार करे कि मेरे कर्म शोषण हो रहे है । पश्चात्—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ ॐ रं रं र ह्म्ल्व्य्रूं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल संदह संदह कर्ममलंदह दह दुखं पच पच पापं हन हन ह्रूं फट् घे घे स्वाहा । इति कर्म दहन ध्यानम् ।

इस को पढ कर विचार करे कि हमारे सर्व कर्म जल गये है ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनप्रभंजन मम कर्मभस्म विधूननं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ कर यिचार करे कि कर्म जल कर उनकी राख उड़ गई है । इति भस्मापसरणम् ।

ॐ पंच ब्रह्ममुद्राग्रन्यस्तगुर्वमृताक्षरैः ।।
क्षरत्सुधौघैः सिंचामि सुधा मंत्रेण मूर्धनि ।।

अब यहाँ पर पच गुरु मुद्रा बनाकर और उसको मस्तक पर उल्टा रखकर अमृत बीज मत्र से अपनी शुद्धि करे। निम्नलिखित अमृत मंत्र से हाथ मे लिये हुए जल को मत्रित कर अपने शिर पर डाले—

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स स क्ली क्ली ब्लूं ब्लूं द्रा द्रां द्री द्री द्रावय द्रावय हं झ झ्वी क्ष्वी ह सः अ सि आ उ सा मम सर्वाङ्ग शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा । इति अमृत प्लावनम् ।

शून्याक्षरादि गुरु पंच पदान्कनीय ।
स्याद्यंगुली त्रितयपर्वसु चाग्र भागे ।।
अंगुष्ठ तर्जनीकया क्रमशः कराभ्याम् ।
विन्यस्य हस्तयुगलं मुकुली करोमि ।।

यहाँ पर दोनो हाथो को मिलाकर मुकुलित करे अर्थात् हाथ जोडे और हाथ जोडे जोड़े ही निम्नलिखित मत्र के अनुसार अङ्गन्यास (अङ्ग रक्षरा) करे अर्थात् जिस स्थान का नाम आया है उस स्थान का स्पर्श करे।

ॐ ह्राँ रामो अरहताए स्वाहा। ॐ ह्री णमो सिद्धाण स्वाहा ।
ॐ ह्रूँ रामो आयरियाए स्वाहा। ॐ ह्रौ णमो उवज्भायाए स्वाहा ।
ॐ ह्र: रामो लोए सव्व साहूरा स्वाहा। (करन्यास मत्र·)
ॐ ह्राँ ह्री ह्रूँ ह्रौ ह्रः व म ह स तं पं अ सि आ उ सा स्वाहा।

(हस्त द्वय मुकुलीकरण मत्र)

अर्हं नाथस्य मंत्र हृदय सर सिजे सिद्ध मंत्रं ललाटे ।
प्राच्यामाचार्य मंत्रं पुनर्वटुवटे पाठकाचार्य मंत्रं ।।
वामे साधो स्तुति मे शिरसि पुनरिमानं स योनीभिदेशे ।
पार्श्वाभ्यां पंच शून्यैः सह कवच शिरोऽङ्गन्यास रक्षा करोमि ।।

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (हृदय कवचं)
ॐ ह्री रामो सिद्धाण रक्ष रक्ष स्वाहा। (मुखम)
ॐ ह्रूँ रामो आइरियाण रक्ष रक्ष स्वाहा। (दक्षिणाग)
ॐ ह्रौ रामो उवज्भायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (पृष्ठागम्)
ॐ ह्रः रामो लोए सव्व साहूण रक्ष रक्ष स्वाहा। (वामाग)
ॐ ह्राँ रामो अरहताए रक्ष रक्ष स्वाहा। (ललाट भाग)
ॐ ह्री रामो सिद्धाए रक्ष रक्ष स्वाहा। (उर्ध्वभाग)
ॐ ह्रूँ रामो आइरियाए रक्ष रक्ष स्वाहा। (शिरो दक्षिरा भागं)
ॐ ह्रौं णमो उवज्भायाण रक्ष रक्ष स्वाहा। (शिरो अपर भाग)
ॐ ह्र णमो लोए सव्वसाहूण रक्ष रक्ष स्वाहा। (शिरो वाम भागं)
ॐ ह्राँ रामो अरहंताण रक्ष रक्ष स्वाहा। (दक्षिण कुक्षं)
ॐ ह्री रामो सिद्धाण रक्ष रक्ष स्वाहा। (वाम कुक्षं)
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाण रक्ष रक्ष स्वाहा (नाभि प्रदेश)
ॐ ह्रौ रामो उवज्भायाण रक्ष रक्ष स्वाहा (दक्षिरा पार्श्व)
ॐ ह्रः नमो लोए सव्व साहूण रक्ष रक्ष स्वाहा (वाम पार्श्व)

इति अङ्गन्यास

विन्यस्य करतर्जन्यां, पंच ब्रह्म पदावलि ।
बध्नाभि स्वात्मरक्षायै, कूट शून्याक्षरैर्दिशः ।।

नीचे लिखे मत्रो से दिशा बंधन करे ।

ॐ क्षा ह्ला पूर्वे । ॐ क्षी ह्ली अग्नौ । ॐ क्षी ह्ली दक्षिणे । ॐ क्षें ह्ले नैऋते । ॐ क्षै है पश्चिमे । ॐ क्षो ह्लो वायव्ये । ॐ क्षौं ह्लौं उत्तरे । ॐ क्ष ह्लं ईशाने । ॐ क्षः ह्लः भूतले । ॐ क्षी ह्ली उर्द्धे । ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त दिग्बधन करोमि स्वाहा ।

ऊपर लिखे मत्रो से क्रम क्रम पूर्वक एक-एक दिशा में तर्जनी अगुली घुमावे । तर्जनी अगुली पर अ सि आ उ सा केशर से लिखे, दाएं हाथ की तर्जनी पर लिखना चाहिए ।

ॐ ह्लाँ णमो अरहंताणं अर्हद्भ्यो नमः ।
ॐ ह्लीं णमो सिद्धाणं सिद्धेभ्यो नमः ।

परमात्म ध्यान मंत्र का यहाँ ध्यान करे ।

जिनेन्द्र पादार्चित सिद्ध शेषया ।
सिद्धार्थ दर्वायव चंदनाक्षतान् ।।
उपासकानामपि मूर्ध्नि निक्षिपन् ।
करोमि रक्षां मम शान्ति का नाम् ।।

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा ।

इस मत्र से पुष्प या पीली सरसों को ७ बार मत्रित करे और सर्व दिशा मे फेके । तथा मत्र बोलते हुए सब दिशाओ में ताली बजावे व तीन बार चुटकी बजावे ।

सिद्धार्थानभिमंत्रितान्सह्य वैरादाय यज्ञ क्षितौ ।
स्वां विद्यामभिरक्षणाय, जगतां शांत्यै सतां श्रेयसे ।।
सर्वासु प्रचुरान् दिशासु, पर विद्याछेदनार्थं ।
किराभ्यर्हत्याग विधि, प्रसिद्ध कलि कुंडाख्येन मंत्रेण च ।।

ॐ ह्ली अर्हं श्री कलि कुंड स्वामिन् स्फां स्फी स्फ्रूं स्फ्रें स्फ्रै स्फ्रों स्फ्रं स्फ्रं स्फ्रः ह्रू क्ष्रू फट् इतीन् घातय घातय विघ्नान् स्फोटय् स्फोटय् । पर विद्यां छिन्द छिन्द आत्म विद्यां रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र से जौ और सरसों मंत्रित कर दाहिनी दिशा में डाले ।

इत्थं सदैव सकलीकरणं यथाव ।
त्स सदैव सकलीकरणं यथाव ।

त्सं भावयतिमशेष मलंघ्य शक्तिः ।
भूतो रागादि विष किल्विष दुःख मुग्रं ।
निर्जित्य निश्चय सुखान्यनु भूयतेऽसौ ।।

।। इति सकलीकरण ।।

मन्त्र साधन की विधि

।। १ ।। जो पुरुष मन्त्र साधन के लिए जिस किसी स्थान मे जावे, प्रथम उस क्षेत्र के रक्षक देव से प्रार्थना करे कि मैं इस स्थान मे, इतने काल तक ठहरूँगा, तव तक के लिए आज्ञा प्रदान करो, और किसी प्रकार का उपसर्ग होवे तो निवारियो—क्योकि, हमारे जैन मुनि भी जव कही किसी स्थान मे जाकर ठहरते हैं तो उमके रक्षक देव को कहते हैं कि इतने दिन तक तेरे स्थान मे ठहरेंगे तू क्षमा भाव रखियो। इस वास्ते गृहस्थियो को अवश्य ही उपरोक्तानुसार रक्षक देव से आज्ञा लेनी चाहिये ।

।। २ ।। जव मन्त्र साधन करने के वास्ते जावो तब जहाँ तक हो ऐसे स्थान मे मन्त्र सिद्ध करो जहाँ मनुष्यो का गमनागमन न हो जैसे अपने जैन तीर्थ, मागी तुङ्गीजी, सिद्ध वर कूट, रेवा नदी के तट पर या सोनागिरीजी या और जो अपने जैन तीर्थ एकान्त स्थान मे हैं, या वगीचो के मकानो मे, पहाडो मे तथा नदी के किनारे पर या निर्जन स्थान मे, ऐसे स्थानो मे मन्त्र सिद्ध करने को जाना चाहिये। जब उस स्थान मे प्रवेश करो, वहाँ ठहरो तो मन, वचन, काय से उस स्थान का जो रक्षक देव या यक्ष आदि है उसका योग्य विनय मुख से यह उच्चारण करे कि हे इस स्थान के रक्षक देव मैं, अपने इस कार्य की सिद्धि के वास्ते तेरे स्थान मे रहने के लिये आया हूँ तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनो तक मैं तेरे स्थान मे रहने के लिये आया हूँ, तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनो तक निवास के लिये आज्ञा प्रदान कीजिये । अगर मेरे ऊपर किसी तरह का सकट, उपद्रव या भय आवे तो उसे निवारण कीजिये ।

।। ३ ।। जब मन्त्र साधन करने जावो तो एक नौकर साथ ले जाओ, जो रसोई की वस्तु लाकर, रसोई वनाकर तुमको भोजन करा दिया करे। तुम्हारा धोती–दुपट्टा धो दिया करे, जव तुम मन्त्र साधन करने बैठो, तव तुम्हारे सामान की चौकसी रखे ।

।। ४ ।। जो मन्त्र साधन करना हो पहले विधि पूर्वक जितना–जितना हर दिन जप सके उतना हर दिन जप कर सवा लाख पूरा कर मन्त्र साधना करे, फिर जहाँ काम पडे उसका जाप जितना कर सके १०८ वार या २१ वार या जैसा मन्त्र मे लिखा हो, उतनी वार जपने से कार्य सिद्ध होवे । मन्त्र शुद्ध अवस्था मे जपे। शुद्ध भोजन खाये । और मन्त्र मे जिस शव्द के दो–दो का अक हो उस शव्द का दो वार उच्चारण करे ।

१	शान्ति कर्म	पौष्टिक कर्म
२	पश्चिम वरुण दिशा	नैऋत्य दिशा
३	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल
४	ज्ञान मुद्रा	ज्ञान मुद्रा
५	पर्यङ्कासन	पंकजासन
६	स्वाहा पल्लव	स्वधापल्लव
७	श्वेत वस्त्र	श्वेत वस्त्र
८	श्वेत पुष्प	श्वेत पुष्प
९	श्वेत वर्ण	श्वेत वर्ण
१०	पूरक योग	पूरक योग
११	दीपन आदि नाम	दीपन आदि नाम
१२	स्फाटिक मणि	मुक्ता मणि
१३	मध्यमांगुली	मध्यमांगुली
१४	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त
१५	वाम वायु	वाम वायु
१६	शरद ऋतु	हेमन्त ऋतु
१७	जल मण्डल मध्य	जल मण्डल
१८	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल

नोट .—प्रत्येक दिन मे

हो वहा धूप के साथ जपे यानि धूप आगे रखे।

करे,
कर
छू
राने
—
या
न्त्र
]
रा
न
को
जप
ग्रह
त्र
गृह
।
की
नी
स
।
रे,
न
में

॥ ५ ॥ जब मन्त्र जपने बैठे, पहले रक्षा–मन्त्र सकलीकरण कर अपनी रक्षा कर लिया करे, ताकि कोई उपद्रव अपने जाप्य मे विघ्न न डाल सके। अगर रक्षा–मन्त्र जप कर मन्त्र जपने बैठे तो साँप, बिच्छू, भेडिया, रीछ, शेर, बकरा उसके बदन को न छू सके—दूर ही रुके। मन्त्र पूर्ण होने पर जो देव-देवी साप वगैरह बनकर उसको डराने आवे तो जो रक्षा मन्त्र जप कर जाप करने बैठे उसके अंग को वह छू नही सके—सामने से ही डरा सके। जब मन्त्र पूर्ण होने को आवे तब देव पूर्ण देवी विक्रिया से साँप वगैरह डराने आवे तो डरे नही। चाहे प्राण जावे तो डरे नही तो मन्त्र सिद्ध होय। मनोकामना पूर्ण होय। यदि बिना मन्त्र रक्षा के [रक्षा–मन्त्र के] जपने बैठे तो पागल हो जावे। इस वास्ते पहले रक्षा–मन्त्र जप कर, पश्चात् दूसरा मन्त्र जपना चाहिये।

॥ ६ ॥ मन्त्र जहाँ तक हो सके ग्रीष्म ऋतु मे करना चाहिये ताकि धोती दुपट्टा मे सर्दी न लगे। मन्त्र सिद्ध करने मे धोती दुपट्टा दो ही कपड़े रक्खे। वे कपडे शुद्ध हों, उनको पहने हुये पाखाने नही जावे, खाना नही खावे, पेशाब नही जावे, सोवे नही, जब जप कर चुके तो उन्हे अलग उतार कर रख देवे, दूसरे वस्त्र पहन लिया करे, यह वस्त्र नित्य हर दिन स्नान कर बदन पौछ कर पहना करे। यह वस्त्र सूत के पवित्र वस्तु के हो। ऊन, रेशम वगैरह अपवित्र वस्तु के न हो। स्त्री सेवन न करे। गृह कार्य छोड़कर एकान्त मे मन्त्र जप सिद्ध करे।

॥ ७ ॥ मन्त्र मे जिस रग को माला लिखी हो उसो रग का आसन यानि बिस्तर आदि। धोती दुपट्टा भी उसी रग का हो तो और भी श्रेष्ठ है, यदि माला उसी रग की न होवे तो सूत की माला उस रग की रग लेवे। जब मन्त्र जपने बैठे तो इतनी बातों का ध्यान रखे।

॥ ८ ॥ पहले सब काम ठीक करके मन्त्र जपे।

॥ ९ ॥ आसन सबसे अच्छा डाभ का लिखा है, या सफेद या पीला या लाल—जैसा जिस मन्त्र मे चाहिये वैसा बिछावे।

॥१०॥ ओढने की धोती–दुपट्टा सफेद उम्दा हो या जिस रग का जिस मन्त्र में चाहिये। वैसा हो।

॥११॥ शरीर की शुद्धि करके परिणाम ठीक करके धीरे–धीरे तसल्ली के साथ जाप्य करे, अक्षर शुद्ध पढे।

॥१२॥ मन्त्र पद्मासन मे बैठकर जपे। जिस प्रकार हमारी बैठी हुई प्रतिमाओं का आसन होता है, बाँया हाथ गोद मे रखकर दाहिने हाथ मे जपे। जो मन्त्र बायें हाथ में जपना लिखा हो तो वहाँ दाहिना हाथ (गोद) में रखकर बाये हाथ में जपे।

॥१३॥ जहां स्वाहा लिखा हो वहाँ धूप के साथ जपे यानि धूप आगे रखे।

॥१४॥ जहाँ दीपक लिखा हो, वहाँ घी का दीपक आगे जलाना चाहिये।

॥१५॥ जिस-जिस अँगुली से जाप्य लिखा हो उसी अँगुली और अँगूठे से जाप्य जपे। अँगुलियो के नाम आगे लिखें हैं—

अँगुलियों के नाम :—

अँगूठे को अँगुष्ठ कहते हैं।

अँगूठे के साथ की अगुलो को तर्जनी कहते हैं।

तीसरी बीच की अँगुलो को मध्यमा कहते हैं।

चौथी यानि मध्यमा के पास की अँगुली को [अँगुष्ठ से चौथी को] अनामिका कहते ।

पाँचवी सबसे छोटी अँगुली को कनिष्ठा कहते हैं।

अंगुष्ठेन तु मोक्षार्थ धर्मार्थं तर्जनी भवेत् ।
मध्यमा शान्तिकं ज्ञेया सिद्धिला भायऽनामिका ॥१॥

जाप्य विधि मे मोक्ष तथा धर्म के वास्ते अँगुष्ठ के साथ तर्जनी से, शान्ति के लिये मध्यमा तथा सिद्धि के लिये अनामिका अगुली से जाप्य करे।

कनिष्ठा सर्व सिद्धार्थ एतत् स्याज्जाप्य लक्षणाम् ।
असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥२॥

कनिष्ठा सर्व सिद्धि के वास्ते श्रेष्ठ है, ये जाप के लक्षण जाने बिना मर्यादा किया हुआ सब जाप्य निष्फल होता है अर्थात् किसी मन्त्र का २१ बार जाप्य लिखा है तो वहाँ २१ से कम या अधिक जाप्य नही करना, ऐसा करने से वह निष्फल होता है। मन्त्र सिद्ध नही होता।

अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलंघने ।
व्यग्रचित्तेन यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥३॥

अगुली के अग्र भाग से जो जाप किये जाये तथा माला के ऊपर जो तीन दाने मेरू के हैं, उनको उल्लघन करके जो जाप्य किया जाय तथा व्याकुल चित्त से जो जाप्य किया जाय वह सब निष्फल होता है।

माला सुपंचवर्णानां सुमाना सर्व कार्यदा ।
स्तम्भने दुष्टसंत्रासे जपेत् प्रस्तरकर्कशान् ॥४॥

सब कार्यो में पाँचो वर्णों के फूलो की माला श्रेष्ठ है, परन्तु दुष्टो को डराने मे तथा स्तम्भन करने व कीलने मे कठोर (सख्त) वस्तु के मणियो की माला से जाप्य करे।

धर्मार्थी काममोक्षार्थी जपेद वै पुत्र जोविकाम्। (स्त्रजम्)
शान्तये पुत्र लाभाय जपे दुत्तममालिकाम् ॥५॥

मन्त्र साधन करने वाला धर्म के लिये तथा काय और मोक्ष के लिये तथा शान्ति के लिये और पुत्र प्राप्ति के वास्ते मोती आदि की उत्तम माला से जाप्य करे। शान्ति से यह तात्पर्य है कि जैसे रोगी आदि के लिये रोग की शान्ति करना या दैवी वगैरह किसी का उपद्रव हो उसकी शान्ति करना। अन्य कामो मे नीवापोता को माला से जाप्य करे।

शान्ति अर्द्ध रात्रि वारुणि दिक् ज्ञानमुद्रापंकजासन।
मौक्तिकमालिका स्वच्छे स्वेते पू० चं० ऋां० ॥६॥ स्वरे

शान्ति के प्रयोग मे मन्त्र जाप्य करने वाला आधी रात के समय पश्चिम दिशा की ओर मुख करके ज्ञान-मुद्रा सहित कमला सन युक्त मोतियो की माला से स्वच्छ स्वेत बाएँ योग पूरक च० ऋा० का उच्चारण करता हुआ जाप्य करे।

स्तम्भनं पूर्वाह्णे वज्रासने पूर्वदिक् शंभुमुद्रा।
स्वर्णमणिमालिका पीताम्बर वर्ण ठः ठः ॥७॥

स्तम्भन [रोकना तथा कीलना] के प्रयोग मे पूर्वाह्ण अर्थात् दुपहर से पहले काल में वज्रासनयुक्त पूर्व दिशा की तरफ मुख करके स्वर्ण के मणियो की माला से पीले रग के वस्त्र पहने हुये ठः ठ पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करे।

शत्रूच्चाटने च रुद्राक्षा विद्वेषारिष्टजंप्नजा।
स्फाटिकी सूत्रजामाला मोक्षार्थानां (र्थीनां) तू निर्मला ॥८॥

दुश्मन का उच्चाटन करने के लिये रुद्राक्ष की माला, वैर मे जिया पोते की माला, मोक्षाभिलाषियो को स्फटिक मणि की तथा सूत्र की माला श्रेष्ठ है।

उच्चाटनं वायव्यदिक् अपराह्णकाल कुक्कुटासन।
प्रवालमालिका धूम्रा च फटित् तर्ज न्यगुष्ठयोगेन ॥९॥

उच्चाटन इसके प्रयोग मे वायव्य कोण [पश्चिम और उत्तर के बीच में] की तरफ मुख करके अपराह्ण [दुपहर के बाद] मे कुक्कुटासनयुक्त मूँगे की माला से धुँवे के रग व फट् पल्लव लगाकर अँगूठा और तर्जनी से जाप करे।

वशीकरणे पूर्वाह्णे स्वस्तिकासन उत्तरदिक् कमलमुद्रा।
विद्रुममालिका जपा कुसुम वर्ण वषट् ॥१०॥

वशीकरण अर्थात् वश मे करना [अपने अधीन करना] इसके प्रयोग मे पूर्वाह्न, दोपहर के पहले काल मे स्वस्तिकासन युक्त उत्तर दिशा की तरफ मुख करके कमल मुद्रा सहित मूँगे की माला से जपे । कुसुमवर्ण वषट्पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करें ।

आसन डाव रक्त वर्ण यन्त्रोद्धार ! रक्त पुष्प वाम हस्तने डाव के आसन पर बैठ कर लाल कपडे सहित यन्त्रोद्धार " ....लाल फूल रखता हुआ बाये हाथ से जाप्य करे ।

आकृष्टि पूर्वाह्न दण्डासनं अंकुश मुद्रा दक्षिणदिक् ।
प्रवालमाला उदयार्कवर्ण वौषट् स्फुट अंगुष्ठमध्यमाभ्यंतु ॥

आकृष्टि—बुलाना इसके प्रयोग मे पूर्वाह्न (दोपहर से पहले) काल मे दण्डासनयुक्त अंकुश मुद्रा-सहित दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके मूँगे की माला से उदयार्कवर्ण · ··· ···· वौषट उच्चारण करता हुआ अगूठे और बीच की अंगुली से जाप्य करे ।

निषिद्धसन्ध्यासमय भद्र पीठासन ईशानदिक् वज्रमुद्रा ।
जीवापोतामालिका धूम्र बहुभ कनिष्ठांगुष्ठयोगेन ॥

निषिद्ध कर्म या मारण कर्म समय मे भद्र पीठासन युक्त ईशान [उत्तर और पूर्व दिशा के वीच] की तरफ मुख करके वज्र-मुद्रा युक्त जीवापोता माला से धूप खेता हुआ या होम करता हुआ अगूठे और कनिष्ठा से जाप करे ।

नोट —जो वगैर रक्षा-मन्त्र जप के मन्त्र साधन करते है अक्सर व्यन्तरो से डराये जाकर अधबीच मे मन्त्र साधन छोड देने से पागल हो जाते है इसलिये जब कोई मन्त्र सिद्ध करने बैठे तो मन्त्र जपना आरम्भ करने से पूर्व इनमे से कोई रक्षा-मन्त्र जरूर जप लेना चाहिये । इससे मन्त्र साधन करने मे कोई उपद्रव नही हो सकेगा और कोई व्यन्तर वगैरह रूप बदल कर ध्यान मे विघ्न नही डाल सकेगा । कुण्डली के अन्दर आ नही सकेगा ।

इन मन्त्रो का जाप्य भगवान की वेदी के सामने करना चाहिए या देव स्थान मे जाप्य करना चाहिये या घर मे एकान्त स्थान मे जाप्य करे । किन्तु घर मे होम और पुण्याहवाचन करके णमोकार मन्त्र का चित्र और जिनेन्द्र भगवान का चित्र, दीप और धूपदानी समक्ष रख कर, आसन पर बैठकर और शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करे । उस स्थान पर बच्चो आदि का उपद्रव या शोर नही होना चाहिए । मन्त्र की जाप्य अत्यन्त शुद्ध, भक्ति के साथ करनी चाहिए । मन्त्र मे किसी प्रकार की आकुलता, चिन्ता, दुख, शोक आदि भावनाएँ नही रहनी चाहिए । जाप्य करते समय मन को स्थिर रखना चाहिए पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके जाप्य देनी चाहिए । जाप्य मे बैठने से पहले समय की मर्यादा कर लेनी चाहिए । पद्मासन से बैठना चाहिए, मौन रखना चाहिए । जितने दिन जाप्य कर, उतने दिन एकाशन, किसी रस का त्याग, वस्त्र आदि का परिमाण करे । जमीन, चटाई या तख्ते पर सोवे, जाप्य समाप्त होने

तक ब्रह्मचर्य व्रत रखे मन्त्र की जाप्य पुष्प हस्त और मल आदि शुभ नक्षत्रो मे आरम्भ करना चाहिये। सुबह दोपहर और शाम को जाप्य करे। सुबह ५ बजे उठकर स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर जाप्य दे। श्वेत वस्त्र पहने। यदि घर मे जाप्य करनी हो तो भगवान का दर्शन-पूजन करने के पश्चात् करनी चाहिए। दोपहर को शुद्ध वस्त्र पहनकर तथा सध्या को मन्दिर मे दर्शन करने के पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करे।

जाप्य तीन प्रकार का होता है

मानसिक, वाचनिक (उपाशुक) और कायिक।

मानसिक जाप : मन मे मन्त्र का जप करना यह कार्य सिद्धि के लिए होता है।

वाचनिक जाप .—उच्च स्वर मे मन्त्र पढना, यह पुत्र प्राप्ति के लिए होता है।

कायनिक जाप :—बिना बोले मन्त्र पढ़ना, जिसमे होठ हिलते रहे। यह धन प्राप्ति के लिए होता है या किया जाता है।

इन तीनो जाप्यो मे मानसिक जाप्य श्रेष्ठ है जाप उगलियो पर या माला द्वारा करना चाहिये। माला चाहे सूत को हो या स्फटिक, सोना, चाँदी या मोती आदि की हो सकती है।

विश्व शान्ति के लिए आठ करोड़ आठ लाख आठ हजार आठ सौ आठ जाप करे। कम से कम सात लाख जाप करे। यह जाप नियमबद्ध होकर निरन्तर करे, सूतक पातक मे भी छोड नही। विश्व शान्ति जाप के लिए दिनो का प्रमाण कर लेना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति, नवग्रह शान्ति, रोग-निवारण आदि कार्यो के लिए एक लाख जाप करे। आत्मिक शान्ति के लिए सदा जाप करे। दिनो का कोई नियम नही है. स्त्रियो को रजस्वला होने पर भी जाप करते रहना चाहिए, स्नान करने के पश्चात् मन्त्र का जाप्य मन मे करे, जोर से नही बोले और माला भी काम में न ले।

जप पूर्ण होने पर भगवान का अभिषेक करके यथा शक्ति दान पुण्य करे।

आसन-विधान

बाँस की चटाई पर बैठकर जाप करने से दरिद्र हो जाता है, पाषाण पर बैठकर जाप करने से व्याधि पीडित हो जाता है। भूमि पर जाप्य करने से दु.ख प्राप्त होता है, पट्टे पर बैठकर जाप करने से दुर्भाग्य प्राप्त होता है, घास की चटाई पर बैठकर जाप करने से अपयश प्राप्त होता है, पत्तों के आसन् पर बैठकर जाप करने से भ्रम हो जाता है, कथरी पर बैठकर जाप करने से मन चचल होता है, चमडे पर बैठकर जाप करने से ज्ञान नष्ट हो जाता है, कंबल पर बैठकर जाप करने से मान भंग हो जाता है। नीले रग के वस्त्र पहनकर जाप करने से बहुत दु.ख हो जाता है। हरे रग के वस्त्र पहनकर जाप करने से मान भग हो जाता है। श्वेत वस्त्र पहन कर जाप करने से यश की वृद्धि होती है। पीले रग के वस्त्र पहन कर जाप

करने से हर्ष वढता है। ध्यान मे लाल रग के वस्त्र श्रेष्ठ हैं। सर्व धर्म कार्य सिद्ध करने के लिए दर्भासन (डाब का ग्रासन) उत्तम है।

गृहे जपफलं प्रोक्त वने शत गुणं भवेत् ।
पुण्यारामे तथारण्ये सहस्र गुणितं मतम् ।
पर्वते दश सहस्रं च नद्यां लक्ष मुदाहृतम् ।
कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिन सन्निधौ ।।

अर्थात् घर मे जो जाप का फल होता है उससे सौ गुना फल वन मे जाप करने से होता है। पुण्य क्षेत्र तथा जगल मे जाप करने से हजार गुणा फल होता है। पर्वत पर जाप करने से दस हजार गुणा, नदी के किनारे जाप करने से एक लाख गुणा, देवालय (मन्दिर) मे जाप करने से करोड गुणा और भगवान के समीप जाप करने से अनन्त गुणा फल मिलता है।

अंगुली-विधान

अंगुष्ठ जपो मोक्षाय, उपचारे तु तर्जनी
मध्यमा धन सौख्याय, शान्त्यर्थं तु अनामिका ।
कनिष्ठा सर्व सिद्धि दा तर्जनी शत्रु नाशाय ।
इत्यपि पाठान्तरोऽस्ति हि ।

मोक्ष के लिए अगुठे से जाप करें, उपचार (व्यवहार) के लिए तर्जनी से, धन और सुख के लिये मध्यमा अगुलि से, शान्ति के लिए अनामिका से और सब कार्यो की सिद्धि के लिए कनिष्ठा से जाप करे। पाठान्तर से कही शत्रु नाश के लिए तर्जनी अगुली से जाप करे ।

माला-विधान

दुष्ट या व्यंतर देवो के उपद्रव दूर करने, स्तम्भन विधि के लिए, रोग शान्ति के लिए या पुत्र प्राप्ति के लिये मोती की माला या कमल बीज माला से जाप करने चाहिये। शत्रु उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला, सर्म कर्म के लिए या सर्व कार्य की सिद्धि के लिए पच वर्ण के पुष्पो से जाप करने चाहिये। हाथ की अगुलियो पर जाप करने से दस गुना फल मिलता आँवले की माला पर जप करने से सहस्र गुना फल मिलता है। लौग की माला से पाँच हजार गुणा, स्फटिक की माला पर दस हजार गुणा, मोतियो की माला पर लाख गुणा, कमल बीज पर दस लाख गुणा, सोने की माला पर जाप करने से करोड गुणा फल मिलता है। माला के साथ भाव शुद्धि विशेप होनी चाहिये।

मन्त्र शास्त्र में अकडम चक्र का प्रयोग

अथ अ क ड म चक्र प्रयोग—नाम पुरुष के नाम के पहले अक्षर से मन्त्र के नाम अक्षर तक गिनना। मन्त्र सिद्ध असिद्ध देखे।

अर्थ :—पुरुष के नामाक्षर तक गिणाई पहले सिद्ध, विजई साध्य, तीजई सु सिद्ध, चउ अरि शत्रुता इणी।

अनुक्रम से बारह स्थान कूं जो बारह कोठे है उनमे गिनकर शुभ अशुभ सिद्ध असिद्ध देखो। १–५–९ कोठा के अक्षर आवे तो देर से सिद्ध, २–६–१० कोठा के अक्षर सिद्ध हों या न भी हों, ३–७–११ कोठा के अक्षर जल्दी सिद्ध हों, ४–८–१२ कोठा के अक्षर शत्रुता कार्य न हो।

५ ८ ५ ८ ३ ४१ ७ ६ ७ ६ ४ १ १
पंच पाठा पचई ग्राठार तिन्ह चोरिका सत्व छक्का सतई छकाई चऊ रिक्का एकेन
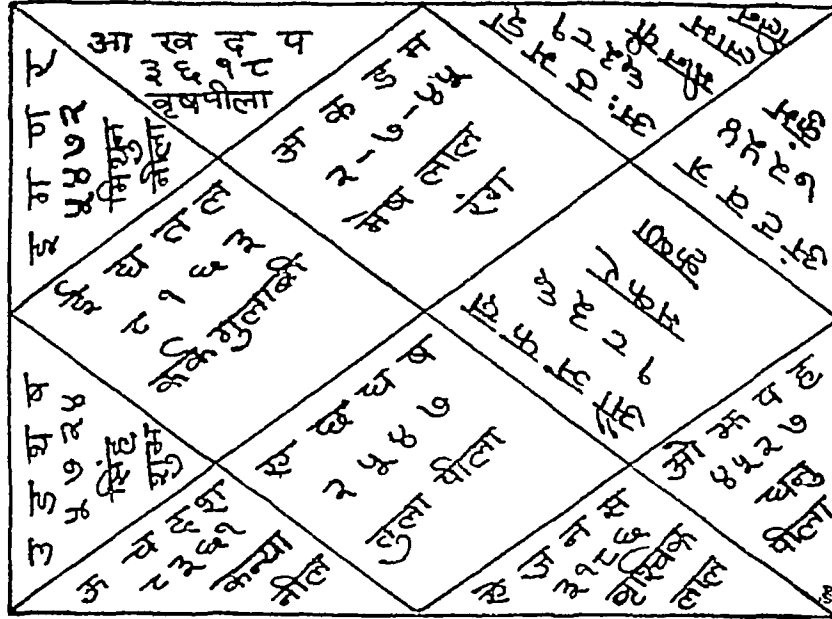
पुरुष द्वाम्या स्त्री शून्ये नपुंसक एकेन् जीवा द्वाम्या धातु शून्येन मूल ३ एकेन लाभः द्वाम्या न लाभ शून्येन हानि ४ एकेन ग्राकाश द्वाम्या पाताल शून्येन मत्यु लोक ।।

।। इति ।।

एक–एक कोठा मे ४–४ अक्षर १८ ग्रङ्क है। १२ कोठे १२ राशि रग का विवरण है।

ग्रकडम चक्रम्
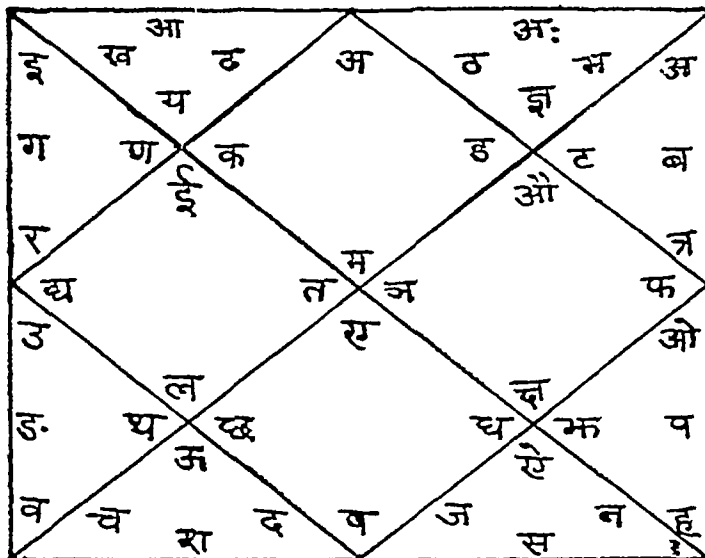
कोई पाठ मन्त्र किसी व्यक्ति को फलप्रद होगा कि नही यह जानने के लिए उस मन्त्र या पाठ का नाम का पहला अक्षर और व्यक्ति के नाम के पहले अक्षर का इस चक्र मे नीचे लिखे शब्द बोलकर मिलान करने पर मालूम हो जायेगा कि पहले व्यक्ति के नाम से कार्य के नाम के पहले अक्षर को गिनना तो मालूम होगा। सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, ग्ररि।

मन्त्र साधन मुहूर्त्त का कोष्टक

नक्षत्र	उत्तफा० ह० अश्वि० श्र० वि० मृ०
वार	र० सो० बु० गु० शु०
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१३।१५

इस कोष्टक को देखकर, पचाङ्ग से मिलान कर मन्त्र साधन करने का मुहूर्त्त देख लेना चाहिये, तब मन्त्र साधना की ओर अग्रसर हो, नही तो सफलता नही मिलेगी।

॥ ० ॥

मन्त्र सिद्ध होगा या नहीं उसको देखने की विधि

जिस मन्त्र की साधना करना हो उस मन्त्र के अक्षरो को ३ से गुणा करे, फिर अपने नाम के अक्षरो को और मिला देवे, उस सख्या में १२ का भाग देवे, शेष जो रहे, उसका फल निम्नानुसार जाने :—

५–६ बाकी बचे तो मन्त्र सिद्ध होगा।

६–१० बचे तो देर से सिद्ध होगा।

७–११ बचे तो अच्छा होगा।

८–१२ बचें तो सिद्ध नही होगा।

कोई मन्त्र अगर अपने नाम से मिलाने पर ऋणी या धनी आता हो, तो उस मन्त्र के आदि मे ॐ ह्री श्री क्ली इनमे से कोई भी बीज मन्त्र के साथ जोड़ देने पर मन्त्र अवश्य सिद्ध हो जायगा।

॥ ० ॥

मन्त्र जपने के लिये आसन

पर्यकासन :–इसे सुखासन भी कहते है। दोनो जघाओं के नीचे का भाग पाँव के ऊपर करके बैठे यानि पालथी मार कर बैठे और दाहिना व बायां हाथ नाभि कमल के पास ध्यान मुद्रा मे रखे।

वीरासन :—दाहिनॉ पैर बाँयी जघा पर व बायाँ पैर दाहिनी जंघा पर रख कर स्थिरता से बैठे।

वज्रासन :— वीरासन की मुद्रा मे पीठ की तरफ से लेकर दाहिने पैर का अ गूठा दाहिने हाथ से और वाँये पैर का अ'गूठा वाँये हाथ से पकडे तो वज्रासन होता है ।

पद्मासन दायाँ पैर वाँयी जघा पर रखे और वायाँ पैर दाँयी जघा पर, एडियाँ परस्पर मिली हो, दोनो घुटने जमीन से स्पर्श न करे तो पद्मासन होता है ।

भद्रासन —पुरुष चिह्न के आगे पाँव के दोनो तलुये मिलाकर उनके ऊपर दोनो हाथ की अ गुली परस्पर एक के साथ एक करने के वाद दोनो अ गुलियाँ ठोक तरह से दीखती रहे इस प्रकार हाथ जोडकर वैठना भद्रासन है ।

दण्डासन :—जिस आसन मे वैटने से अ'गुलियाँ, गुल्फ व जंघा भूमि से स्पर्श करे, इस प्रकार पाँवो को लम्वे कर वैठना दण्डासन कहा जाता है ।

उत्किटिकासन —गुदा और ऐडी के सयोग से दृढता पूर्वक वैठे तो उत्किटिकासन कहा जाता है ।

गो दोहिकासन —गाय दुहने को वैठते है, उस तरह वैठना, ध्यान करना गो-दोहिकासन है ।

कायोत्सर्गासन —खडे–खडे दोनो भुजाओ को लम्वी कर घुटने की तरफ वढाना या वैठे–वैठे काया की अपेक्षा नही रख कर ध्यान करना कायोत्सर्गासन कहलाता है ।

मन्त्र शास्त्र में मुद्राओं की विधि

(१) वाम हस्तस्योपरिदक्षिणकर कृत्वा कनिष्ठिकागुष्ठाभ्या मणिवध वेष्ट्य शेषागुलिर्ना विस्फारित वज्रमुद्रा । [चित्र स० १]

(२) पद्माकारो कृत्वा मध्ये अगुष्ठौ कर्णिकारो विन्यस्येदिति 'पद्ममुद्रा' । [चित्र सं० ५]

(३) वामहस्ततले दक्षिण हस्तमूल निवेश्य कर शाखा विरलीकृत्य प्रसारयेदिति 'चक्रमुद्रा' [चित्र स० ७]

(४) उत्तानहस्तद्वयेन वेणीवध विधाया गुष्टाभ्यां कनिष्ठ तर्जनीभ्यां मध्ये सगृह्य अनामिके समीकुर्यातामिति 'परमेष्ठीमुद्रा' ।

(५) यद्वा करागुली अर्द्धीकृत्य मध्यमा मध्ये कुर्यादिति 'द्वितीया परमेष्ठी मुद्रा' । [चित्र सं० २०]

(६) उत्तानो किचिदा कु'चित कर शाखौ पाणी विधाया धारये दिति 'अञ्जुलि मुद्रा' । अथवा पल्लव मुद्रा' । [चित्र स० ६]

(७) परस्पराभिमुखौ ग्र थितांगुलिकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यामनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्ये अंगुष्ठ द्वय निक्षिपेत् इति (सौमय मुद्रा) सौभाग्य मुद्रा ।। ७ ।।

(८) किंचिद्गर्भितौ हस्तौ समौ विधाय ललाट देशे योजनेन सुक्तासुक्ति मुद्रा ।

(९) मिथपराङ्ग मुखौ करौ सयोज्यांगुली विदूर्म्यात्म सम्मुख कर द्वयपरावर्तनेन 'मुद्गर मुद्रा' ।

(१०) वामकर सहितांगुलि हृदयाग्रे निवेश्य दक्षिण मुष्टिबद्ध तर्जनीमूर्द्धी कुर्यादिति तर्जनी मुद्रा ।।१०।।

(११) अंगुलीत्रिक सरलीकृत्य तर्जन्यं गुष्ठौमीलयित्वा हृदयाग्रे धार्येदिति प्रवचन मुद्रा ।

(१२) अन्योन्य ग्र थितांगुलिषु कनिष्ठानामिकयो मध्यमा तर्जन्योश्च सयोजनेन गोस्तनाकार-धेनुमुद्रा । [चित्र स० २१]

(१३) हस्त तलिकोपरि हस्तलिका कार्याइति आसन मुद्रा ।

(१४) दक्षिणांगुष्ठेन तर्जनीमध्यमे समाक्रम्यपुनर्मध्यमा मोक्षणेन नाराचमुद्रा ।।

(१५) करस्थापनेन जनमुद्रा ।

(१६) वामहस्तपृष्ठोपरि दक्षिण हस्त तले निवेशने अंगुष्ठ द्वय चालनेन 'मीन मुद्रा' ।

(१७) दक्षिणहतस्य तर्जनी प्रसार्य मध्यमा ईषद्वक्रीकरणे अंकुस मुद्रा । [चित्र स० ६]

(१८) बद्धमुष्टयो. करयो. संलग्न स मुखांगुष्ठयो हृदय मुद्रा । [चित्र स० १३]

(१९) तावेवमुष्टी समीकृत्वार्द्धागुष्ठ शिरसिविन्यस्येदिति 'शिरोमुद्रा' ।

(२०) मुष्टिबद्ध विधाय कनिष्ठमगुष्ठप्रसारयेत् इति 'शिखामुद्रा' ।

(२१) पूर्ववत् मुष्टि बध्वा तर्जन्यो प्रसारयेदिति 'कवचमुद्रा' ।

(२२) कनिष्ठा मंगुष्ठेन सपीड्यशेषांगुली प्रसारयेदिति 'क्षरमुद्रा' ।

(२३) तत्रदक्षिण करेण मुष्टि बध्वा तर्जनी मध्यमे प्रसारयेत् इति 'अस्त्र मुद्रा' ।

(२४) हृदयादीना विन्यास मुद्रा प्रसारितोन्मुखाभ्यां हस्ताभ्या पादागुलि तलान्मस्तकस्पर्शा-न्महामुद्रा' ।

(२५) हस्ताभ्यामजुलि कृत्वा नाभिकामूलं पर्वागुष्ठ सयोजनेन 'मावाहिनी मुद्रा' ।

(२६) इयमेवाधोमुखी 'स्थापनी मुद्रा' । [चित्र स० ११]

(२७) संलग्नमुष्ट्युछितांगुष्ठौ करौ 'सन्निधानी मुद्रा' । [चित्र स० १२]

(२८) तामेवंगुष्ठो 'निष्ठुरा मुद्रा' एतातिस्र 'अवगाहनादि मुद्रा' ।

(२९) अन्योन्यग्रथितांगुलीषु कनिष्ठानामिकयोर्मध्यमा तर्जन्यो विस्तारित तर्जन्या वामहस्त तलचालनेन त्रासनी नेत्रास्त्रयो 'पूज्यमुद्रा' ।

(३०) अंगुष्ठे तर्जनी सयोज्य शेषांगुली. प्रसारणेन 'पाशमुद्रा' । [चित्र स० ३]

(३१) स्वहस्तोर्द्धांगुली वामहस्त मूले तस्यैवांगुष्ठं तिर्यग् विधाय तर्जनी चालनेन 'ध्वजमुद्रा'।

(३२) दक्षिण हस्तमुत्तान विधायाधः कर शाखा प्रसारयेदिति 'वरमुद्रा'।

(३३) वामहस्तेन मुष्टि बध्वा कनिष्ठिकां प्रसार्य शेषांगुली रगुष्ठे न पीडयदिति 'शंखमुद्रा'।

(३४) परस्परभिमुख हस्ताभ्यां वेणी वध विधाय मध्यमे प्रसार्य सयोज्य च शेषांगुलिभि–र्मुष्टि विधाय 'शक्ति मुद्रा'।

(३५) हस्तद्वयेनागुष्ठ तर्जनीभ्यावलके विधायपरस्परांत प्रवेशनेन् 'शृंखला मुद्रा'।

(३६) मस्तकोपरीहस्तद्वयेन शिखराकार- कुड्मल क्रियतेस एव मदरमेरु मुद्रा (पचमेरु मुद्रा) [चित्र स० ४]

(३७) वामहस्तमुष्टेरुपरि दक्षिणमुष्टिं कृत्वागात्रेणसहकिञ्चिदुन्नामयेदिति 'गदा मुद्रा'।

(३८) अधोमुख वामहस्ताङ्गुलीर्घण्टाकाराः प्रसार्यदक्षिणेनमुष्ठि वध्वा तर्जनी मूर्ध्वा कृत्वा वामहस्ततलेनियोज्यघण्टावच्चालने न 'घण्टा मुद्रा'।

(३९) उन्नतपृष्ठ हस्ताभ्यां सपुट कृत्वा कनिष्ठिकेनिष्कास्ययोजयेदिति 'कमण्डलु मुद्रा'।

(४०) पत्ताकावत् हस्त प्रसार्य अङ्गुष्ठयोजनेन् 'परशु मुद्रा'।

(४१) ऊर्ध्वदण्डौ करौ कृत्वापद्मवत् करशाखा: प्रसारयेदिति 'वृक्ष मुद्रा'।

(४२) दक्षिण हस्त सहतागुलिमुन्नमय्य सर्पफणावत् किञ्चिदाकुञ्चयदिति 'सर्पमुद्रा'

(४३) दक्षिणकरेणमुष्टि वध्वा तर्जनी मध्यमे प्रसारय्येदिति खड्गमुद्रा।

(४४) हस्ताभ्या सपुट विधायांगुली- पद्मवद्विकास्य मध्यमे परस्पर सयोज्यातन्मूललग्नांगुष्ठौ कारयेदिति 'ज्वलनमुद्रा'

(४५) वद्धमुष्टेर्दक्षिण करस्यमध्यमांगुष्ठ तर्जन्यास्तन्मूलात्क्रमेण प्रसारयेदिति 'दण्ड मुद्रा'।
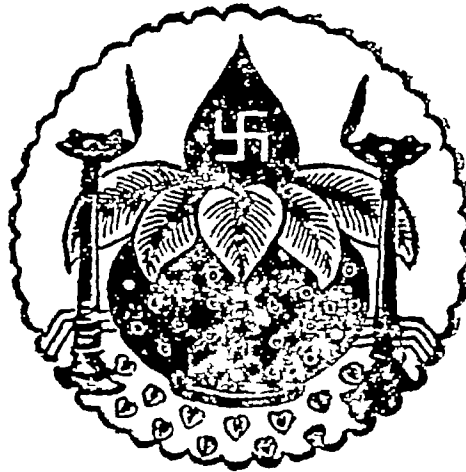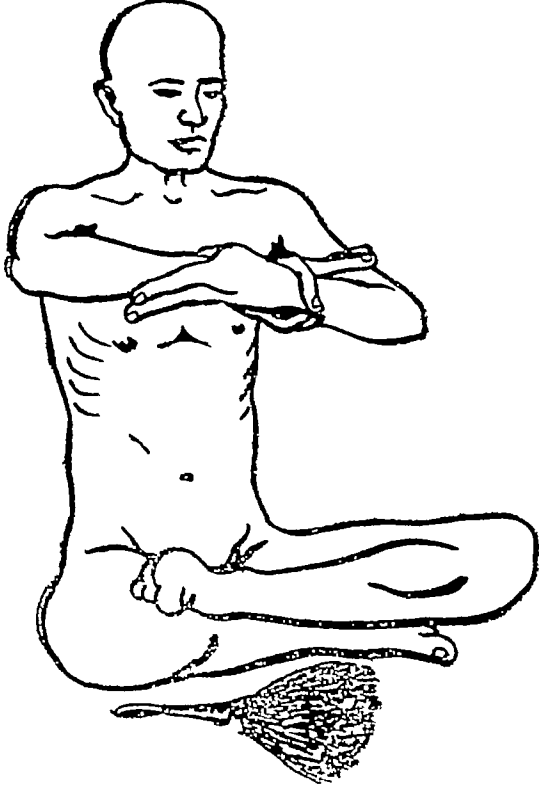
वज्र मुद्रा (चित्र स० १)

शङ्ख मुद्रा (चित्र स० २)

पास मुद्रा (चित्र सं० ३)
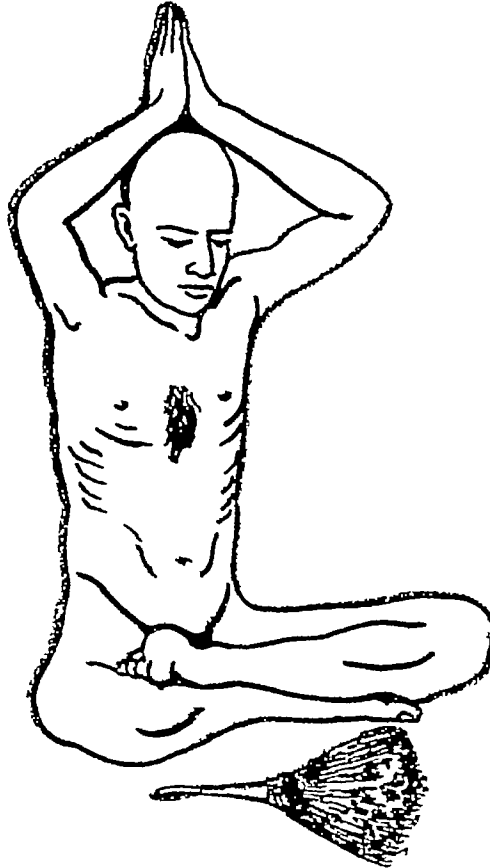
पचमेरु मुद्रा (चित्र सं० ४)

सरोज मुद्रा (चित्र स० ५)

अंकुश मुद्रा (चित्र सं० ६)

चक्र मुद्रा (चित्र स० ७)

(चित्र सं० ८)
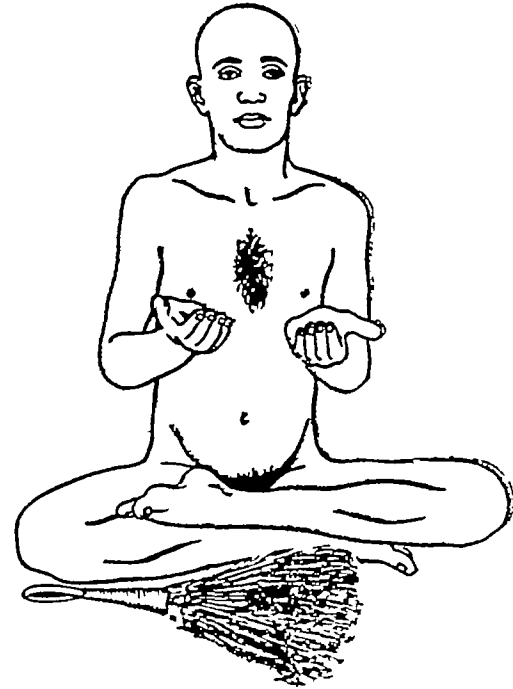
आवाहन मुद्रा सुखासन (पल्लव मुद्रा) (चित्र सं० ९)

स्थभन मुद्रा (शंख मुद्रा) द्वितीय (चित्र सं० १०)

स्थापन मुद्रा सुखासन (चित्र सं० ११)
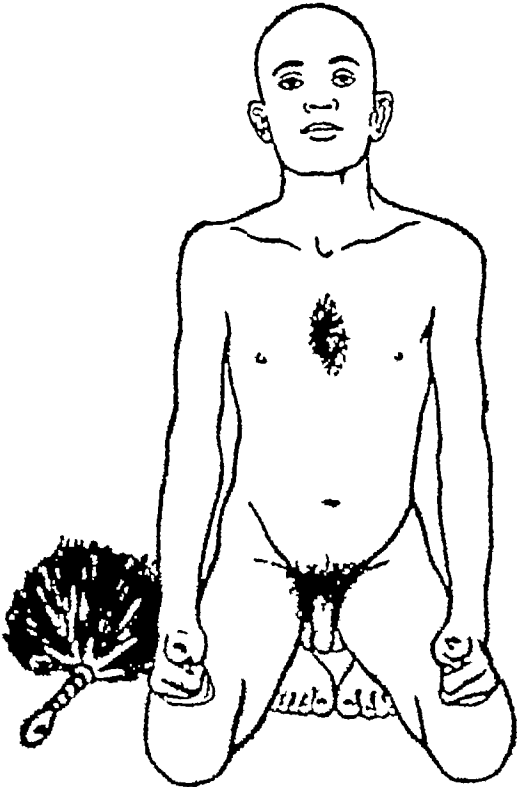
असंनीधिकरण मुद्रा (चित्र सं० १२)

हृदयमुद्रा (चित्र सं० १३)

द्वितीय अंकुश मुद्रा सुखासन उल्टा (चित्र सं० १४)

और भी अन्य मुद्रा (चित्र स० १५)

ज्ञानमुद्रा (चित्र सं० १६)
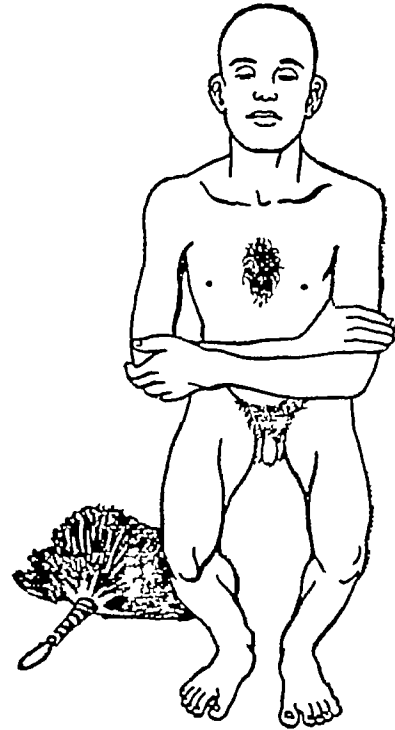
(चित्र सं० १७)

अस्त्र मुद्रा, सिद्धासुखासन (चित्र सं० १८)
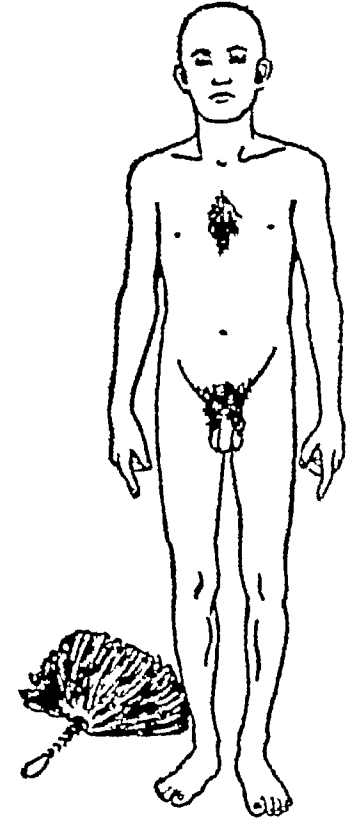
कायोत्सर्ग, अस्त्र मुद्रा (चित्र सं० १६)

परमेष्ठी मुद्रा (पंचगुरुमुद्रा) (चित्र नं. २०)

(धेनु) सुरभि मुद्रा, गोस्थानाकार मुद्रा (चित्र सं. २१)

मंत्र जाप के लिये मंडलों का ध्यान
मंडलों का नक्शा

इस खण्ड में

(पृष्ठ २५ से २४७)

अथ: द्वितीय मन्त्राधिकार

स्वर और व्यंजनों के स्वरूप

अ :—वृत्तासन, हाथी का वाहन, सुवर्ण के समान वर्ण, कुंकुम गंध, लवण का स्वादु, जम्बूद्वीप मे विस्तीर्ण, चार मुख वाला, अष्ट भुजा वाला, काली आँख वाला, जटा मुकुट से सहित, सितवर्ण, मोतियों के आभरण वाला अत्यन्त बलवान, गम्भीर, पुल्लिग, ऐसा 'अ' कार का लक्षण है।

आ :—पद्मासन, गज, व्याल, वाहन, सितवर्ण, शख, चक्र–कमल, अंकुश का आयुध है, दो मुख वाला, आठ हाथ वाला, सर्प का भूषण है, जिसको शोभनादि महाद्युति को धारण करने वाला, तीस हजार योजन, विस्तार वाला, स्त्रीलिग है, जिसका ऐसा 'आ' कार का लक्षण है।

इ :—कछुवे का वाहन, चतुरानन, सुवर्ण जैसा वर्ण, वज्र का आयुध वाला, एक योजन विस्तार वाला, द्विगुणा उत्सेध वाला, कषायला स्वाद वाला, वज्र, वैडूर्य वर्ण के अलकार को धारण करने वाला, मन्द स्वर वाला, और नपुंसक लिग वाला, और क्षत्रिय है। ये 'इ' कार का लक्षण है।

ई :—कुवलय का आसन, वराह का वाहन, मन्द गमन करने वाला, अमृत रस का स्वाद वाला, सुगन्धित, दो भुजा वाला, फल और कमल का आयुध वाला, श्वेत वर्ण वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणा उत्सेध वाला, दिव्य शक्ति का धारण करने वाला, स्त्रीलिग वाला। 'ई' कार का लक्षण है।

उ :—त्रिकोणा आसन वाला, कोक वाहन, ( ) दो भुजा वाला, मूसल गदा के आयुध वाला, धुआँ के वर्ण वाला, कठोर, कडवा स्वाद वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणीत उत्सेध वाला, कठोर, वश्याकर्षण वाला ऐसा 'उ' कार का लक्षण है।

ऊ :—त्रिकोण आसन वाला, ऊँट का वाहन वाला, लाल वर्ण वाला, कषायला रस वाला, निष्ठुर गध से सहित, दो भुजा वाला, फल और शूल के आयुध को धारण करने वाला, नपुंसक लिग वाला, सौ योजन विस्तार वाला है, ऐसा 'ऊ' कार का लक्षण है।

ऋ :—ऊँट के समान ऊँट के वर्ण वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित ऊँट के मुख का स्वाद वाला, नाग का आभरण वाला, सर्व विघ्न मय। ऐसा 'ऋ' कार का लक्षण है।

ॠ —पद्मासन मयूर का वाहन वाला, कपिल वर्ण माला, चार भुजा वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, मल्ल (चमेली) के गध जैसा मधुर स्वाद वाला, सुवर्ण के आभरण को धारण करने वाला, नपु सक लिग वाला। ऐसा 'ॠ' का लक्षण है।

ऌ —घोडे का स्वभाव वाला, घोडे जैसे स्वर वाला, घोडे के समान रस वाला सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणि आयाम वाला, शूर का वाहन वाला, चार भुजा वाला, मूसल, अकुस कमल, कोदण्ड, आयुध वाला, कुवलय का आसन वाला, नाग का आभरण वाला, सर्वविघ्नकारि नपु सक लिग वाला। ऐसा 'ऌ' कार का स्वरूप है।

ॡ :—मौलि (मुकुट) मुक्ताओ से सहित और यज्ञोपवित धारण किये हुये, कुण्डलाभरण सहित, दो भुजाओ वाला (कमल की माला से सहित) कमल कुत (माला) का आयुध से सहित, मल्लिका के गन्ध वाला, पचास योजन विस्तार वाला, द्विगुणा आयाम वाला, नपु सक, क्षत्रिय, उच्चाटन करने वाला। ऐसा 'ॡ' कार का लक्षण है।

ए :—जटा-मुकुट को धारण करने वाला, मोतियो के आभरण वाला यज्ञोपवित पहने हुये, चार भुजा वाला, शख, चक्र, फरसा, कमल के आयुध सहित, दिव्य स्वाद से सहित, सुगन्धित से युक्त, सर्व प्रिय शुभ लक्षण से सहित, वृत्तासन को धारण करने वाला, और नपुंसक है। इस प्रकार 'ए' का लक्षण हुआ।

ऐ .—त्रिकोणासन से सहित, गरुड वाहन, दो भुजाओ वाला, त्रिशूल, गदा का आयुध वाला, अग्नि के समान वर्ण वाला, निष्ठुर, गन्ध से सहित, क्षीर के स्वाद वाला, घर्घर स्वर वाला, दस योजन विस्तार वाला, द्विगुणित लम्बावश्य आकर्षण शक्ति वाला। ऐसा 'ऐ' कार का लक्षण है।

ओ .—बैल का वाहन, तपाया हुआ सोना के समान वर्ण वाला, सर्वायुध से सम्पन्न, लोकालोक मे व्याप्त, महाशक्ति का धारक, तीन नेत्र वाला, बारह हजार विस्तार वाला, पद्मासन वाला, महाप्रभु, सर्वदेवताओ से पूज्य, सर्व मन्त्र का साधन, सर्व लोक से पूजित, सर्व शान्ति करने वाला, सभी को पालन या नाश करने मे समर्थ, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि से सहित, यजमान, आकाश, सूर्य, चन्द्रादि के समान कार्य करने वाला, सम्पूर्ण आभरणो से भूषित, दिव्य स्वाद वाला, सुगन्धित, सबो का रक्षण करने वाला, शुभ देह से सयुक्त, स्थावर जगम आश्रय से सहित, सर्व जीव दया से सयुक्त (परम अव्यय) पाँच अक्षर से गर्भित। ऐसा 'ओ' कार का लक्षण है।

औ :—वृत्तासन वाला, कोक (चकवा) वाहन, कुंकुम गन्ध से सयुक्त पीले वर्ण वाला, चार भुजा वाला, वज्र, पाश के आयुध वाला, कषायला स्वाद वाला, श्वेत माल्यादि लेपन से सहित, स्तम्भन शक्ति युक्त सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला। ऐसा 'औ' कार का लक्षण है :

अ —पद्मासन, सितवर्ण, निलोत्पल (नीला कमल) गन्ध से सयुक्त कोस्तुभ के

के आभरण से सहित, दो भुजाओं वाला, कमल, पास के आयुध वाला, शुभ गन्ध से सयुक्त यज्ञोपवित को धारण करने वाला, प्रसन्न बुद्धि वाला, मधुर स्वाद वाला, सौ योजन विस्तार वाला, दो गुणित आयाम है जिसका ऐसा 'अ' कार का लक्षण है।

अः :—त्रिकोण आसन वाला, पीले वस्त्र वाला, कुंकुम के समान गन्ध वाला, धूम्र वर्ण वाला, कठोर स्वर वाला, निष्ठुर दृष्टि वाला, खारा स्वाद से सयुक्त, दो भुजाओ वाला शूल का आयुध धारण करने वाला, निष्ठुर गति वाला, अशोभन आकृति वाला, नपुसक शुभ कर्म है कार्य जिसका। ऐसा 'अः' कार का लक्षण है।

क :—चतुरस्रासन, चतुरादत्त भवाहन, पीले वर्ण का सुगन्ध माल्यादि लेपन सहित स्थिर गति वाला, प्रसन्न दृष्टि वाला, दो भुजा वाला, वज्र मूसल के आयुध सहित, जटा-मुकुट धारी सर्वाभरण से भूषित, हजार योजन विस्तार वाला, दस हजार योजन का उत्सेध पुल्लिग, क्षत्रिय, इन्द्रादि देवता का स्तम्भन करने वाला, शान्तिक, पौष्टिक वश्याकर्षण कर्म का नाश करने वाला। ऐसा 'क' कार का लक्षण है।

ख :—पिगल वाहन, मयूर के कण्ठ के समान वर्ण वाला, दो भुजा वाला, तोमर, शक्ति के आयुध से सहित, सुन्दर यज्ञोपवित को धारण करने वाला, सुस्वर वाला, तीस योजन विस्तार वाला, आकाश मे गमन करने वाला, क्षत्रिय, सुगन्ध माल्यादि लेपन से सहित, आग्नेय पुराकपन्न, चिन्तित मनोरथ की सिद्धि करने वाला, अणिमादि दैवत, पुल्लिग। ऐसा 'ख' कार का लक्षण है।

ग :—हस का वाहन, पद्मासन माणिक्या भरण से सहित, इंगिलीक वर्ण वाला, श्वेत वस्त्र वाला, सुगन्ध माल्यादि लेपन से सहित, कुंकुम चन्दनादिक है प्रिय जिसको क्षत्रिय, पुल्लिग, सर्व शान्ति करने वाला, सौ योजन विस्तार वाला, सर्वाभरण भूषित दो भुजा से सहित, फल और पास को धारण करने वाला, यक्षादि देवता, अमृत स्वाद वाला, प्रसन्न दृष्टि वाला। ऐसा 'ग' कार का लक्षण है।

घ :—ऊँट का वाहन, उल्लू का आसन, दो भुजा, वज्र, गदा, आयुध, धूम्र वर्ण, हजार योजन विस्तीर्ण हंस के समान स्वर वाला, कठोर, गन्ध वाला, खारा स्वाद वाला, महावलवान, उच्चाटन, छेदन, मोहन, स्तम्भनकारी, पचासत योजन विस्तिर्ण, नपुंसक, रौद्र शक्ति वाला, क्षत्रिय, सर्व शान्तिकर महावीर्य को धारण करने वाले देवता। ऐसा 'घ' कार का लक्षण है।

ङ :—रूपाशिन, दुष्ट स्वर वाला, दुर्दृष्टि, दुर्गन्ध, दुराचारी, कोटी योजन विस्तिर्ण हजार योजन उत्सेध, शासन को करने वाला, रात्रि प्रिय, छः भुजा वाला, मूसल, गदा, शक्ति मुष्टि, भुशुडि, परसा के आयुध को धारण करने वाला, नपुंसक यमादि देवतं। ऐसा 'ङ' कार का लक्षण है।

च :—शोभन, हंस वाहन, शुक्ल वर्ण, सौ करोड हजार योजन विस्तार वाला, वज्र

वैडुर्य मुक्ता भरण भूपित, चार भुजा वाला, शुभ चक्र फल, कमल के आयुध वाला, जटा मुकुट धारी, सुस्वर वाला, सुमन प्रिय ब्रह्माणि यक्षादि दैवत को प्राप्त। ऐसा 'च' कार का लक्षण है।

छ :— मगर का वाहन, पद्मासन, महाघण्टा के समान वाला, उगते हुये सूर्य के समान प्रभाव वाला, हजार योजन विस्तार वाला, आकर्षणादि रौद्र कर्म के करने वाला, सुमन के समान सुगन्ध वाला, काले वर्ण का, दिव्य आभरण से सहित चार भुजा वाला, चक्र, वज्र, शक्ति, गदा के आयुध से सहित सर्व कार्य की सिद्धि करने वाला गरुड देवता। ऐसा 'छ' कार का लक्षण है।

ज —शूद्र, पुल्लिग, चार भुजा वाला, परसु, पाश, कमल, वज्र के धारण करने वाला, अमृत का स्वाद वाला, जटा मुकुटधारी मौक्तिक वज्राभरण भूषित व श्याकर्षण शक्ति वाला, सत्यवादी, सुगन्ध प्रिय, सोदल कमल के समान वारुणादिदेव के समान। ऐसा 'ज' कार का लक्षण है।

झ :—पुरुष, वैश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, के समान वश्याकर्षण करने वाला कुबेरादि दैवत दो भुजाओ वाला, शख, चक्र के आयुध को धारण करने वाला मौक्तिक वज्राभरण भूपित सत्यवादी, पीला वर्ण का, पद्मासन, सुगन्धि अमृत स्वादु। ऐसा 'झ' कार का लक्षण है।

ञ :—कौवा के वाहन वाला, गन्धवान, काष्टासन वाला, काला वर्ण वाला दूत कर्म है, कार्य जिसका नपुसक सौ योजन विस्तिर्ण, चार भुजा वाला, त्रिशूल परसु के आयुधों के धारण करने वाला, निष्ठुर और गदा को धारण करने वाला महाक्रूर स्वर वाला, सर्व जीवो को भय पैदा करने वाला, शीघ्र गति वाला, व्यभिचार कर्म से संयुक्त, क्षार (खार) स्वाद वाला, शीघ्र गमन के स्वभाव वाला रौद्र दृष्टियम् दैवत। ऐसा 'ञ' कार का लक्षण है।

ट :—वृत्तासन, कबूतर के वाहन वाला, कपिल वर्ण वाला, दो भुजा वाला, वज्र, गदा, मन्द गति वाला, लवण के समान स्वाद वाला, शीतल स्वाद वाला, व्याल यज्ञोपवित को धारण करने वाला, चन्द्र दैवत। ऐसा 'ट' कार का लक्षण है।

ठ :—चतुर स्रासन गज वाहन वाला, शख के समान दो भुजा वाला, वज्र, गदा के आयुध को धारण करने वाला, जम्वूद्वीप प्रमाण, अमृत स्वाद वाला, पुल्लिग, रक्षा, स्तम्भन, मोहन, कार्य के सिद्ध करने वाला, सर्वाभरण भूषित, क्षत्रिय दैवत। ऐसा 'ठ' कार का लक्षण है।

ड :—चतुर स्रासन, शख के समान, जम्बू द्वीप प्रमाण, क्षीरामृत स्वाद वाला, पुल्लिग, दो भुजा वाला, वज्र पद्म के आयुध को धारण करने वाला, रक्षा, स्तम्भन, मोहनकारी, कपूर गन्ध वाला, सर्वाभरण भूपित है। केला के स्वाद वाला, शुभ स्वर वाला, कुबेर दैवत। ऐसा 'ड' कार का लक्षण है।

ढ :—चतुरस्रासन, मोहन के समान, जम्बू द्वीप प्रमाण, पुल्लिग, आठ भुजा वाला, पशु, पाश, वज्र, मूसल, भिदपाल, मुद्गर, चाप, हल, नाराचायुध को धारण करने वाला, सुस्त्रादं, सुस्वर, सिह नाद के समान महाध्वनि करने वाला, लाल वर्ण वाला, ऊपर मुख वाला, दुष्ट निग्रह शिष्ट परिपालन करने वाला, सौ योजन विस्तार वाला, हजार योजन आवृत्त वाला, तदर्द्ध परिणाहं जटा मुकुट को धारण करने वाला, सुगन्ध से सयुक्त, निश्वास वाला, किन्नर ज्योतिष के द्वारा पूजित, महोत्सवयुक्त, कालाग्नि शक्ति, वश्याकर्षण, निमिषार्द्ध साधन, विकलाग, अग्नि दैवत । ऐसा 'ढ' कार का लक्षण है ।

ण —त्रिकोणासन, व्याघ्र वाहन, सौ हजार योजन आयाम, पचास हजार योजन विस्तार वाला, छ भुजा वाला, शशि तोमर, भुशुंडि, भिदपाल, पशु त्रिशूल के आयुधको धारण करने वाला, कठोर गन्ध से सहित, श्राप या अनुग्रह करने में समर्थ, काले वर्ण का, रौद्र दृष्टि, खारा स्वाद वाला, नपुसक, वायु दैवतं । ऐसा 'ण' कार का लक्षण है ।

त :—पद्मासन, हाथी वाहन, शौर्य ही जिसका आभरण है, सौ योजन विस्तार वाला, पचास योजन आयाम, चम्पा के गन्ध वाला, चार भुजा वाला, पशु, पाश, पद्म, शख के आयुध वाला, पुल्लिग, चन्द्रादि देवता से पूजित , मधुर स्वाद वाला, सुगन्ध प्रिय । ऐसा 'त' कार का लक्षण है ।

थ :—बैल का वाहन, आठ भुजा वाला, शक्ति तोमर, पशु, धनुष, पाश, चक्र, गदा, दण्ड आयुध वाला, काला वर्ण वाला, काला वस्त्र वाला, जटा मुकुटधारी, करोड योजन आयाम आधा करोड विस्तार वाला, क्रूर दृष्टि वाला, कठोर स्वर वाला, गन्ध वाला, धतूरा के रस का प्रिय, सर्व का मार्थ साधन अग्नि दैवत । ऐसा 'थ' कार की शक्ति व लक्षण है ।

द :—भैंस का वाहन, काला वर्ण, तीन मुख वाला, छः भुजा वाला, गदा, मूसल, त्रिशूल, भुशुंडि, वज्र, तोमर का आयुध वाला, करोड योजन आयाम वाला, आधा करोड़ योजन त्रिस्तिर्ण, दिगम्बर (नग्न) लोहा के आभरण वाला, उर्द्ध दृष्टि, सर्प का यज्ञोपवित-धारी, निष्ठुर ध्वनि है जिसकी मकरन्द मुन्मोक्षण, मन्त्र साधन मे विशेष, यम देवता से पूजित काला रंग वाला, नपुंसक । ऐसा 'द' कार का लक्षण है ।

ध :—पुल्लिग, कषायला वर्ण वाला, तीन नेत्र वाला, चतुरायुत योजन, विस्तीर्ण, रौद्र कार्य करने वाला, छ: भुजा वाला, चक्र, पाश, गदा, भुशु डि, मूसल, वज्र, शरासन का आयुध धारण करने वाला, काला वर्ण, काला सर्प का यज्ञोपवित धारण करने वाला, जटा मुकुटधारी, हुँकार का महाशब्द करने वाला, मशहूर, कठोर, धूम्र प्रिय, रौद्र दृष्टि, नैऋत्य देव से पूजित । ऐसा 'ध' कार का लक्षण है ।

न :—काला वर्ण का, नपुसक, त्रिशूल, मुद्गर के आयुध वाला, द्विभुजा युक्त, उर्द्ध केश से व्याप्त, चर्मधारी, रौद्र दृष्टि वाला, कठोर स्वाद वाला, काला सर्प का प्रिय, कौए के समान स्वर वाला, सौ योजन उत्सेध वाला, पचास योजन आयाम वाला, निर्यास, गुग्गल, तिल,

तेल के धूप का प्रिय, दुर्जन प्रिय, रौद्र कर्म का धारण करने वाला, यमादि देव से पूजित। ऐसा 'न' कार का लक्षण है।

प —असित वर्ण, पुल्लिग, जाति पुष्प के गन्ध का प्रिय, दस सिर वाला, बीस हाथ वाला, अनेक आयुधों के धारण करने वाली मुद्रा से युक्त करोड योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, मन्त्र, कोटि योजन शक्ति का धारी, गरुड वाहन वाला, कमल का आसन, सर्वाभरण भूपित, सर्प का यज्ञोपवित धारी, सर्व देवता से पूजित, सर्व देवात्मक, सर्व दुष्टो का विनाशक, (अलयानिल) चन्द्रादि देवता से पूजित। ऐसा 'प' कार का लक्षण है।

फ :—विजली के समान तेज वाला, पुल्लिग, पद्मासन, सिंह वाहन, दस करोड योजन आयाम वाला, पाँच करोड योजन का विस्तार वाला, दो भुजा वाला, पशु, चक्र के आयुध वाला, केतकी के गन्ध का प्रिय, सिद्ध विद्याधर से पूजित, मधुर स्वाद वाला, व्याधि विष, दुष्ट, ग्रह विनाशन, सर्व महारति, महादिव्य शक्ति, शान्तिकर, ऐशान्य देव से पूजित। ऐसा 'फ' कार का लक्षण है।

ब —इ गिलि का भ, दस करोड योजन का उत्सेध, उसका आधा विस्तार, मुक्ति का भरण धारण करने वाला, जनेव धारी, दिव्या भूषित, आठ भुजा वाला, शख, चक्र, गदा, मूसल, कॉडकण, शरासन, तोमर आयुध को धारण करने वाला, हस वाहन वाला, कुवलयासन का धारी, बैर फल का स्वादी, घन स्वर वाला, चम्पा के गन्ध वाला, वश्याकृष्टि प्रसग प्रिय, कुबेर देव से पूजित। ऐसा 'ब' कार का लक्षण है।

भ —नपु सक, दस हजार योजन उत्सेध, पाँच हजार योजन विस्तीर्ण, (विस्तार वाला), निष्ठुर मन वाला, कठोर, रुक्ष, स्वाद प्रिय, शीघ्र गति गमन प्रिय, ऊपर मुख वाला, तीन नेत्र वाला, चार भुजा वाला, चक्र, शूल, गदा, शक्ति के आयुधो को धारण करने वाला, त्रिकोणासन वाला, व्याघ्र वाहन, लोहिताक्ष, तीक्ष्ण, उर्द्ध केश वाला, विकृत रूप वाला, रौद्र काति, अर्द्ध खिले हुये नेत्र, शरण सिद्धि कर, नैऋत्य देव से पूजित। ऐसा 'भ' कार का लक्षण है।

म – उगते हुये सूर्य के समान प्रभा, अनन्त योजन प्रभा शक्ति, सर्व व्यापि, अनन्त मुख, अनन्त हाथ, भूमि, आकाश, सागर, पर्यन्त दृष्टि, सर्व कार्य साधक, अमरी करण द्वीपर्न सर्व गन्ध माल्यानु लेपन से सहित, धूप चरु का क्षत प्रिय, सर्व देवता रहस्य करण, प्रलयाग्नि शिखि काति से युक्त, सर्व का नायक, पद्मासन, अग्नि देवता से पूजित। ऐसा 'ल' कार का लक्षण हुआ।

य —नपु सक, भूमि, आकाश, दिशा विशेष वाला, सर्व व्यापि, अरूपी, शीघ्र, मन्द गति युक्त, प्रमोद से युक्त, व्यभिचार कर्म प्रिय, सर्व देवता, अग्नि, प्रलयाग्नि, तीव्र ज्योति, सर्व विकल्प वाला, अनन्त मुख, अनन्त भुजा, सर्व गर्भ करता, सर्व लोक प्रिय, हरिण वाहन, वृत्तासन, अ जन के समान वर्ण वाला, महामधुर ध्वनि से युक्त वायव्य देवता से पूजित। ऐसा 'य' कार का लक्षण है।

र :—नपुंसक, सर्व व्यापि, बारह सूर्य के समान प्रभा, ज्वालामाल, करोड़ योजन द्युति, सर्व लोक के कर्त्ता, सर्व होम प्रिय, रौद्र शक्ति, स्त्री णाम पच सायक, पर विद्या का छेदन करने वाला, आत्म कर्म साधन वाला, स्तम्भन, मोहन कर्म का कर्त्ता, जम्बू द्वीप में विस्तीर्ण, भैंस का वाहन, त्रिकोणासन, अग्नि देवता से पूजित। ऐसा 'र' कार का लक्षण है।

ल —पीला वर्ण, चार हाथ वाला, वज्र, शक्र, शूल, गदा के आयुधो को धारण करने वाला, हाथी का वाहन वाला, स्तम्भन मोहन का कर्त्ता, जम्बू द्वीप मे विस्तीर्ण, मद गति प्रिय, महात्मा, लोकालोक मे पूजित, सर्व जीव धारी, चतुरस्त्रासन, पृथ्वी का जय करने वाला, इन्द्रदेव के द्वारा पूजित। ऐसा 'ल' कार का लक्षण है।

व :—श्वेत वर्ण बिन्दु से सहित, मधुर क्षार रस का प्रिय, विकल्प से नपुंसक, मगर का वाहन, पद्मासन, वश्याकर्षण, निर्विष शान्ति करण वरुणादि से पूजित। ऐसा 'व' कार का लक्षण है।

श :—लाल वर्ण दस हजार योजन विस्तीर्ण पांच हजार योजन आयाम, चदन गंध, मधुर स्वाद, मधुरस प्रिय, चक्रवा का रूढ, कुवलयासन, चार भुजा, शख, चक्र, फल कमल, का आयुध धारी, प्रसन्न दृष्टि, सुभानस, सुगन्ध, धूप प्रिय, लाल वर्ण के हार से शोभिता भरण, जटा मुकुटधारी, वश्या कर्षण, शातिक, पौष्टिक कर्त्ता, उगते हुए सूर्य के समान, चन्द्रादि देव से पूजित। ऐसा 'श' कार का लक्षण है।

ष :—पुल्लिग, मयूर शिखा के समान वर्ण, दो भुजा, फण, चक्र का आयुध वाला, प्रसन्न दृष्टि, एक लाख योजन विस्तिर्ण पचास हजार योजन आयाम, अम्लरस प्रिय, शीतल गध, कछुआँ का आसन कछुआँ पर बैठा हुआ प्रिय दृष्टि वाला, सर्वाभरण भूषित, स्तभन, मोहनकारी, इन्द्रादि देवता से पूजित, ऐसा 'ष' कार का लक्षण है।

स :—पुल्लिग, शुक्ल वर्ण, चार भुजा, वज्र, शख, चक्र, गदा का धारी, एक लाख योजन विस्तीर्ण, मधुर स्वर, मौक्तिक वज्र, वैडुर्य आदि के भूषण सें सहित, सुगन्धित माल्यनु-लेपन से सहित, सित वस्त्रप्रिय, सर्व कर्म का कर्त्ता, सर्व मत्र गण से पूजित महा मुकुटधारी, कश्याकर्षण का कर्त्ता, प्रसन्न दृष्टि, हँसवाहन, कुबेर देव से पूजित। ऐसा 'स' कार का लक्षण है।

ह :—नपुसक सर्व व्यापी, सितवर्ण, सितगध प्रिय, सित माल्यानुलेपन से सहित, सिताबर प्रिय, सर्व कर्म का कर्त्ता, सर्व मत्रो का अग्रणी, सर्व देवता से पूजित, महाद्युति से सहित, अचित्य गति, मन स्थायी, विजय को प्राप्त, चितित मनोरथ विकल्प से रहित, सर्व देव महा कृष्टित्व अतीत अनागत वर्तमान त्रैलोक्य काल दर्शक, सर्वाश्रयादि देवता से पूजित, महा-द्युतिमान, ऐसा 'ह' कार का लक्षण है।

क्ष :—पुल्लिग, पीले वर्ण का, जवुद्वीप ध्याय ध्येय, सख्यात द्वीप समुद्र मे व्यापक एक

मुख, मरुत गाभीर्य, आठ भुजा वाला, वज्र पाश, मूशल, भुशडि, भिडि, पाल, गदा, शख, चक्र आयुध धारी, हाथी का वाहन वाला, चतुरस्त्रासन, सर्वाभरण भूषित, जटा मुकुटधारी, सर्व लोक मे पूजित, स्तभन कर्म का कर्त्ता, सुगन्ध माल्य प्रिय, सर्व रक्षाकर, सर्वप्रिय काल ज्ञान मे माहेश्वर, सकल मन्त्र प्रिय, रुद्राग्नि देवता से पूजित । ऐसा 'क्ष' कार का लक्षण है ।

स्वरों और व्यंजनों की शक्ति

मंत्र पाठ

"णमो अरिहताण णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व–साहूण ।।"

विश्लेषण

ण् + अ + म् + ओ + अ + र् + इ + ह् + अ + म् + त् + आ + ण् + अ + म् । ण् + अ + म् + ओ + स + इ + द् + ध् + आ + ण् + अ + म् । ण् + अ + म् + ओ + आ + य् + अ + र् + इ + य् + आ + ण् + अ + म् । ण + अ + म् + ओ + उ + व् + अ + ज् + झ् + आ + य् + आ + ण् + अ + म् । ण् + अ + म् + ओ + ल् + ओ + ए + स् + अ + व् + व् + अ + स् + आ + ह् + ऊ + ण् + अ + म् ।

इस विश्लेपण मे से स्वरो को पृथक् किया तो—

अ + ओ + अ + इ + अं + आ + अ + अ + ओ + इ + आ + अ + अ + ओ + आ + अ + इ + आ + अ + अ + ओ + उ + अ + आ + आ + अ + अ + ओ + ओ + ए + अ + अ + आ + ऊ + अ ।

(आ + अ = ऐ; इ + आ = ई; अ + अ + ओ = औ; अ + अ = अ)

पुनरुक्त स्वरो को निकाल देने के पश्चात् रेखांकित स्वरो को ग्रहण किया तो—
अ आ इ ई उ ऊ [र्] ऋ ॠ [ल्] ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अ.
व्यञ्जन

ण् + म् + र् + ह् + त + ण् + ण् + म् + स् + द् + ध् + ण् + ण् + म् + य् + र् + य् + ण् + ण् + म् + व् + ज् + झ् + य् + ण् + ण् + म् + ल् + स् + व् + व् + स् + ह (घ) + ण् ।

पुनरुक्त व्यजनो को निकालने के पश्चात्—

ण् + म् + र् + ह + ध् + स् + य् + र् + ल् + व् + ज् + घ् + ह ।

ध्वनि सिद्धान्त के आधार पर वर्गाक्षर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ।

अत घ् = कवर्ग, झ् = चवर्ग, ण = टवर्ग, ध् = लवर्ग, म् = पवर्ग, य, र, ल, व, स = श, ष, स, ह, ।

अतः इस महामन्त्र की समस्त मातृका ध्वनियाँ निम्न प्रकार हुई। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ ण्, त् थ् द् ध् न्, प् फ् ब् भ् म्, य् र् ल् व् श् ष् स् ह् !

उपर्युक्त ध्वनियाँ ही मातृका कहलाती है। जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में बतलाया गया है—

अकारादिक्षकारान्ता वर्णा प्रोक्तास्तु मातृकाः।
सृष्टिन्यास स्थितिन्यास-संहृतिन्यासतस्त्रिधाः ॥३७६॥

अर्थात्—अकार से लेकर क्षकार [क+ष+अ] पर्यन्त मातृका वर्ण कहलाते है।

इनका तीन प्रकार का क्रम है।—सृष्टि क्रम, स्थिति क्रम और सहार क्रम।

णमोकार मत्र में मातृ का ध्वनियो का तीनों प्रकार का क्रम सन्निविष्ट है। इसी कारण यह मत्र आत्म कल्याण के साथ लौकिक अभ्युदयों को देने वाला है। अष्ट कर्मो के विनाश करने की भूमिका इसी मन्त्र के द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। सहार क्रम कर्म विनाश को प्रगट करता है। तथा सृष्टि क्रम और स्थिति क्रम आत्मानुभूति के साथ लौकिक अभ्युदयो की प्राप्ति मे भी सहायक है। इस मन्त्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमे मातृका ध्वनियो के तीनो प्रकार के मन्त्रो की उत्पत्ति हुई है। बीजाक्षरों की निष्पत्ति के सम्बन्ध मे बताया गया है 'हलो बीजानि चोक्तानि स्वराः शक्तय ईरिता." ॥३७७॥ अर्थात् ककार से लेकर हकार पर्यन्त व्यजन बीजसंज्ञक है और अकारादि स्वर शक्तिरूप है। मन्त्र बीजो की निष्पत्ति बीज और शक्ति के संयोग से होती है।

सारस्वत वीज. माया, बीज, शुभनेश्वरी बीज, पृथिवी बीज, अग्नि बीज, प्रणव बीज मारुत बीज, जल बीज, आकाश बीज, आदि की उत्पत्ति उक्त हल् और अचो के संयोग से हुई है। यो तो बीजाक्षरो का अर्थ बीज कोश एवं बीज व्याकरण द्वारा ही ज्ञात किया जाता है परन्तु यहाँ पर सामान्य जानकारी के लिए ध्वनियो की शक्ति पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

अ—अव्यय, व्यापक, आत्मा के एकत्व का सूचक, शुद्ध-बुद्ध, ज्ञान रूप शक्ति द्योतक, प्रणव बीज का जनक।

आ - अव्यय शक्ति और बुद्धि का परिचायक, सारस्वत बीज का जनक, माया बीज के साथ कीर्ति धन और आशा का पूरक।

इ—गत्यर्थक, लक्ष्मी प्राप्ति का साधक, कोमल कार्य साधक, कठोर कर्मो का बाधक व ह्री बीज का जनक।

ई—अमृत बीज का मूल कार्य साधक, अल्पशक्ति द्योतक, ज्ञान वर्धक, स्तम्भक, मोहक, जृम्भक।

उ—उच्चाटन वीजो का मूल, शक्तिशाली, श्वास, नलिका द्वारा जोर का धक्का देने पर मारक।

ऊ—उच्चाटक और मोहक वीजो का मूल, विशेष शक्ति का परिचायक, कार्य ध्वस के लिए शक्ति दायक।

ऋृ—ऋद्धि वीज, सिद्धि दायक, शुभ कार्य सम्वन्धी वीजो का मूल, कार्य सिद्धि का सूचक।

लृ—सत्य का सचारक, वाणी का ध्वसक, लक्ष्मी वीज की उत्पत्ति का कारण, आत्म सिद्धि मे कारण।

ए–निश्चल पूर्ण, गति सूचक, अरिष्ट निवारण बीजो का सूचक, पोषक ओर सवर्द्धक।

ऐ—उदात्त, उच्च स्वर का प्रयोग करने पर वशीकरण वीजो का जनक, पोषक और सवर्धक, जल वीज की उत्पत्ति का कारण, सिद्धि प्रद कार्यों का उत्पादक वीज, शासन देवताओ का आव्हान न करने मे सहायक, क्लिष्ट और कठोर कार्यो के लिए प्रयुक्त वीजो का मूल, ऋण विद्युत का उत्पादक।

ओ—अनुदात्त—निम्न स्वर की अवस्था मे माया बीज का उत्पादक, लक्ष्मी और श्री का पोषक, उदात्त, उच्च स्वर की अवस्था मे कठोर कार्यों का उत्पादक वीज, कार्य साधक निर्जरा का हेतु, रमणीय पदार्थो के प्राप्ति के लिए आयुक्त होने वाले वीजो मे अग्रणी, अनुस्वरान्त वीजो का सहयोगी।

औ—मारण और उच्चारण सम्वन्धी वीजो मे प्रधान, शीघ्र कार्य साधक निरपेक्षी अनेक वीजो का मूल।

अं—स्वतन्त्र शक्ति रहित कर्माभाव के लिए प्रयुक्त ध्यान मन्त्रो मे प्रमुख शून्य या अभाव का सूचक, आकाश वीजो का जनक, अनेक मृदुल शान्तियो का उद्घाटक, लक्ष्मी वीजो का मूल।

अः—शान्ति वीजो मे प्रधान निरपेक्षा अवस्था मे कार्य असाधक सहयोगी का अपेक्षक।

क—शान्ति वीज, प्रभावशाली सुखोत्पादक, सम्मान प्राप्ति की कामना का पूरक, काम वीज का जनक।

ख—आकाश वीज, अभाव कार्यो की सिद्धि के लिए कल्पवृक्ष, उच्चाटन वीजो का जनक।

ग—पृथक करने वाले कार्यों का साधक, प्रणव और माया वीज के साथ कार्य सहायक।

घ—स्तम्भक वीज, स्तम्भन कार्यो का साधक, विघ्न विघातक, मारण और मोहक वीजो का जनक।

ङ—शत्रु का विध्वसंक, स्वर मातृका बीजों के सहयोगानुसार फलोत्पादक विध्वसक बीज जनक।

च—अगहीन खण्ड शक्ति द्योतक स्वर मातृका बीजों के अनुसार फलोत्पादक-उच्चाटन बीज का जनक।

छ—छाया सूचक, माया बीज का सहयोगी बन्धनकारक, आप बीज का जनक, शक्ति का विध्वसक, पर मृदु कार्यों का साधक।

ज—नूतन कार्यो का साधक, आधि व्याधि विनाशक, शक्ति का संचारक, श्री बीजों का जनक।

ञ—स्तम्भक और मोहक, बीजो का जनक, कार्य साधक, साधना का अवरोध माया बीज का जनक।

ट—वह्नि बीज, आग्नेय कार्यो का प्रसारक और निस्तारक, अग्नि तत्व युक्त विध्वसक कार्यो का साधक।

ठ—अशुभ सूचक बीजो का जनक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों का साधक, मृदुल कार्यों का विनाशक, रोदन कर्त्ता, अशान्ति का जनक साक्षेप होने पर द्विगुणित शक्ति का विनाशक, वह्नि बीज।

ड—शासन देवताओं की शक्ति का प्रस्फोटक, निकृष्ट कार्यो की सिद्धि के लिए अमोघ सयोग से पञ्चतत्वरूप बीजो का जनक, निकृष्ट आचार-विचार द्वारा साफल्योत्पादक अचेतन क्रिया साधक।

ढ—निश्चल माया बीज का जनक, मारण बीजो में प्रधान, शान्ति का विरोधी, शान्ति वर्धक।

ण—शान्ति सूचक, आकाश बीजों में प्रधान, ध्वंसक बीजो का जनक, शक्ति का स्फोटक।

त—आकर्षक बीज, शक्ति का आविष्कारक, कार्य साधक, सारस्वत बीज के साथ सर्व सिद्धिदायक।

थ—मंगल साधक, लक्ष्मी बीजों का सहयोगी, स्वर मातृकाओं के साथ मिलने पर मोहक।

द—कर्म नाश के लिए प्रधान बीज आत्म शक्ति का प्रस्फोटक वशीकरण बीजों का जनक।

ध—श्री और क्ली बीजों का सहायक, सहयोगी के समान फलदाता, माया बीजों का जनक।

न—आत्म सिद्धि का सूचक–जल तत्व का स्रष्टा, मृदुतर कार्यो का साधक, हितैषी आत्म नियन्ता।

प—परमात्मा का दर्शक जलत्व के प्राधान्य से युक्त समस्त कार्यो की सिद्धि के लिए ग्राह्य।

फ—वायु और जल तत्व युक्त महत्वपूर्ण कार्यो की सिद्धि के लिए ग्राह्य स्वर और रेफ युक्त होने पर विध्वसक, विघ्न विघातक, 'फट्' की ध्वनि से युक्त होने पर उच्चाटक कठोर कार्य साधक।

व—अनुस्वार युक्त होने पर समस्त प्रकार के विघ्नो का विघातक और निरोधक, सिद्धि सूचक।

भ—साधक विशेपत मारण और उच्चाटन के लिए उपयोगी, सात्विक कार्यो का निरोधक, परिणत कार्यो का तत्काल साधक, साधना मे नाना प्रकार से विघ्नोत्पादक, कल्याण मे दूर, कटु मधु वर्णो से मिश्रित होने पर अनेक प्रकार के कार्यों का साधक, लक्ष्मी वीजो का विरोधी।

म—सिद्धि दायक, लौकिक और पारलौकिक सिद्धियो का प्रदाता सन्तान की प्राप्ति मे सहायक।

य—शान्ति का साधक, सात्विक साधना की सिद्धि का कारण, महत्वपूर्ण कायो की सिद्धि के लिए उपयोगी, मित्र प्राप्ति या किसी अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी ध्यान का साधक।

र—अग्नि वीज, कार्य साधक समस्त प्रधान वीजो का जनक, शक्ति का प्रस्फोटक और वर्द्धक।

ल—लक्ष्मी प्राप्ति मे सहयोग श्री वीजो का निकटत, सहयोगी और सगोत्री कल्याण सूचक।

व—सिद्धि दायक आकर्षक ह, र और अनुस्वार के सयोग से चमत्कारो का उत्पादक, सारस्वत वीज, भूत–पिशाच–शाकिनी वाधा का विनाशक, रोगहर्ता लौकिक कामनाओ की पूर्ति के लिए अनुस्वार मातृका सहयोगापेक्षी, मगल साधक, विपत्तियो का रोधक और स्तम्भक।

श—निरर्थक सामान्य वीजो का जनक या हेतु उपेक्षा धर्म युक्त शान्ति का पोपक।

प—आव्हान वीजो का जनक, सिद्धि दायक, अग्नि स्तम्भक, जल स्तम्भक, सापेक्ष ध्वनि ग्राहक, सहयोग द्वारा विलक्षण कार्य साधक, आत्मोन्नति से शून्य, रुद्र वीज का जनक, भयकर और वीभत्स कार्य के लिए प्रयुक्त होने पर साधक।

स—सर्व समीहित सावक, सभी प्रकार के वीजो मे प्रयोग योग्य शान्ति के लिए परम आवश्यक, पौष्टिक कार्यो के लिए परम उपयोगी, ज्ञानावरणीय–दर्शनावरणीय आदि कर्मो का विनाशक, क्लीं बीज का सहयोगी, काम वीज का उत्पादक आत्म सूचक और दर्शक।

ह—शान्ति पौष्टिक और माङ्गलिक कार्यो का उत्पादक, साधन के लिए परमोपयोगी स्वतन्त्र और सहयोगापेक्षी, लक्ष्मी की उत्पत्ति मे साधक, सन्तान प्राप्ति के लिए अनुस्वार युक्त होने पर जाप मे सहायक, आकाश तत्व युक्त कर्म नाशक सभी प्रकार के बीजो का जनक।

———

मन्त्र निर्माण के लिये निम्नांकित बीजाक्षरों की आवश्यकता

ॐ ह्रा ह्री ह्रूँ ह्र: हा ह स क्ली ब्लू द्रां द्री द्रूं द्र. क्ष्वी श्री क्ली अर्हं अं फट्। वषट्। सवौषट्। घे घे। ठ ठ: खः ह्ल्व्यूं व्रं व्र य ऋं त थं पं आदि बीजाक्षर होते है।

बीजाक्षरों की उत्पत्ति

बीजाक्षरों की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र से ही हुई है। कारण सर्व मातृका ध्वनि इसी मन्त्र से उदभूत है। इन सब में प्रधान "ॐ" बीज है। यह आत्म वाचक है, मूल भूत है। इसको तेजो बीज, काम बीज और भाव बीज मानते है। प्रणव वाचक पंच परमेष्ठी वाचक होने से 'ॐ' समस्त मन्त्रों का सार तत्त्व है।

श्री ……………कीर्त्ति वाचक
ह्री ………कल्याण
श्री ………………शान्ति
ह ………मगल
ॐ ……… सुख
ह ………विद्वेष रोष वाचक

प्रौ प्री………………स्तम्भन
क्ली ………………लक्ष्मी प्राप्ति वाचक
सर्व तीर्थकरों के नाम………मंगलवाचक
श्वी ………………योग

यक्ष—यक्षणियों के नाम……… कीर्त्ति और प्रीति वाचक।

मन्त्र शास्त्र के बीजो का विवेचन करने पर आचार्य ने उनके रूपो का निरूपण करते हुये बताया है कि—

अ आ ऋ ह श य क ख ग घ ङ	यह वर्ण वायु संज्ञक है।
इ ई ऋ च छ ज झ ञ क्ष र थ	यह वर्ण अग्नि तत्व सज्ञक है।
लृ व ल उ ऊ त ट द ड ण	यह वर्ण पृथ्वी तत्व सज्ञक है।
ए ऐ थ ध ठ ढ ध न स	यह वर्ण जल तत्व सज्ञक है।
ओ औ अं अः प फ ब भ म	यह वर्ण आकाश तत्व संज्ञक है।

वर्ण के लिंग

अ उ ऊ ऐ ओ औ अ, क ख ग घ, ट ठ ड ढ, त थ, प फ व, ज झ, य स ष ल क्ष—इन वर्णो का लिंग पुल्लिग है। (सज्ञक है)

आ ई च छ ल व.........इन वर्णो का लिंग.स्त्री लिंग है। (सज्ञक है)

इ ऋ ॠ लृ लॄ ए अः ध भ म र ह द ज ण ङ न, इनका नपु सक लिग है।

ध्वनि (उच्चार) के वर्ण, मन्त्र शास्त्रानुसार

स्वर और ऊष्म ध्वनि	ब्राह्मण वर्ण सज्ञक
अन्तस्थ और क वर्ग ध्वनि	क्षत्रिय वर्ण संज्ञक
च वर्ग और प वर्ग ध्वनि	वैश्य वर्ण सज्ञक
ट वर्ग त वर्ग ध्वनि	शूद्र वर्ण सज्ञक
वश्य आकर्षण और उच्चाटन मे	हू का प्रयोग
मारण मे	फट् का प्रयोग
स्तम्भन, विद्वेषण और मोहन मे	नम का प्रयोग
शान्ति और पौष्टिक मे	वषट् का प्रयोग

मन्त्र के आखिर मे 'स्वाहा' शब्द रहता है। यह शब्द पाप नाशक, मङ्गलकारक तथा आत्मा की आन्तरिक शान्ति दृढ करने वाला है। मन्त्र को शक्तिशाली करने वाले अन्तिम ध्वनि मे।

स्वाहा–स्त्रीलिग
वषट्, फट्, स्वधा–पुल्लिग
नम नपु सक लिग

उन वर्णो के इस प्रकार लिंग माने गये हैं।

बीजाक्षरों का वर्णन

ॐ, प्रणव, ध्रुव ब्रह्मबीज, तेजोबीज, वा ॐ तेजोबीज,

ऐं--वाग्भव बीज, ह—गगन बीज,

लं—काम बीजं,
झी—शक्ति बीज,
हं स.—विषापहार बीज,
क्षी—पृथ्वी वीजं,
स्वा—वायु बीजं,
हा—आकाश बीजं,
ह्रां—माया बीजं,
भ्रौ—अकुश बीजं,
ज—पाश बीज,
फट् विसर्जन बीजम्, चालन बीजम्,
वौषट् पूजा-ग्रहणं—आकर्षण बीजम्,
सवौषट्-आमन्त्रण बीजम्,
ब्लू—द्रावण,
क्लू—आकर्षणं,
ग्लौ—स्तभनं,
ह्री—महाशक्ति,
वषट्—आह्वननम्,
र—जलनम्,
क्ष्वी—विषापहार बीजम्,
उ—चन्द्र बीजम्
घे घै ग्रहण बीजम्,
वै विद्यौ-विद्वेषण बीजम्,
ट्रा ट्री क्ली ब्लू स=रोष बीजम् वा पच वाणीद्र,
स्वाहा—शातिकं मोहक वा—
स्वधा—पौष्टिकं मोहक वा
नम—शोधन बीजम्

ह्रूँ—ज्ञान बीजं,
य—विसर्जन बीजं उच्चारणं,
प—वायुबीज,
जुं—विद्वेषण बीज,
झ्वी—अमृत बीजं,
क्ष्वी—भोग बीज,
ह्रौ—ऋद्धि सिद्धि बीजं,
ह्रॉ-सर्व शान्ति बीजम्,
ह्री—सर्व शान्ति बीजम्,
ह्रूँ—सर्व शान्ति बीजम्,
ह्रौ-सर्व शान्ति बीजम्,
ह्र—सर्व शान्ति बीजम्,
हे—दण्डं बीजम्,
ख—स्वादन बीजम्,
भ्रौ—महाशक्ति बीजम्,
हल्व्र्यूं—पिड बीजम्,
ह्रॅं—मगल सुख बीजम्,
श्री—कीर्ति बीजम्, वा कल्याण बीजम्
क्ली—धन बीजम्, कुबेर बीजम्,
तीर्थङ्कर नामाक्षर—शाति, मागल्य, कल्याण व विघ्नविनाशक बीजम्,
अ—आकाश या धान्य बीजम्
आ—सुख बीजम् तेजो बीजम्
ई गुण बीजम् तेजो बीजम्
वा उ-वाय बीजम्

क्षा क्षी क्षुं क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः—रक्षा, सर्व कल्याण, अथवा सर्व शुद्धि बीज है।

त—थ—द— कालुष्य नाशक, मङ्गल वर्धक, सुख कारक मङ्गल

व ·· · ·· द्रवण वीजम् ।

य·· · ·· ····रक्षा वीजम् ।

मं······ ·· ····मङ्गल वीजम् ।

ज्ञ······· ···· ···शक्ति वीजम् ।

स···· ··· ····शोधन वीजम् ।

मन्त्र सिद्धि के लिये जैन शास्त्रो मे ४ प्रकार के आसन कहे गये है—

(१) श्मशान पीठ।

(२) शव पीठ।

(३) अरण्य पीठ ।

(४) श्यामा पीठ ।

णमोकार मन्त्र मे से ही वीजाक्षरो की उत्पत्ति हुई है । जैसे—

(ॐ) समस्त णमोकार मन्त्रो से

(ह्री) की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र के प्रवम चरण से—

श्री	,,	,,	,,	,,	द्वितीय चरण से
क्षी क्ष्वी	,,	,,	,,	,,	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से
ग्ली	,,	,,	,,	,,	प्रथम पाद मे से प्रतिपादित
द्रां द्री	,,	,,	,,	,,	चतुर्थ और पचम चरण से
ह	,,	,,	,,	,,	प्रथम चरण से
र्ह	,,	,,	,,	,,	वीज हे तीर्थङ्करो के यक्षिणी द्वारा अत्यन्त शक्तिशाली और सकल मन्त्रो मे व्याप्त है ।
ह्रां ह्री ह्रूं ह्रौ ह्र			,,	,,	प्रथम धरणी से उत्पन्न हुए है ।
क्षा क्षी क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्ष			,,	,,	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से उत्पन्न हुये है ।

बीजाक्षर मन्त्र

(१) ॐ —इसे 'प्रणव' नाम से ही प्रसिद्धि है। अरिहन्त अशरीर (सिद्ध) आचार्य, उपाध्याय, मुनि (साधु) इनके पहले अक्षर लेकर सन्ध्यक्षर ॐ बना है। यह परमेष्ठीवाचक है।

(२) ह्रँ —यह मन्त्र राज, मन्त्राधिप, इस नाम से प्रसिद्ध है। सब तत्वो का नायक बीजाक्षर तत्व है। इसे कोई बुद्धि तत्व, कोई हरि, कोई ब्रह्म, महेश्वर या शिव तत्व या कोई सावं, सर्वव्यापी या ईशान तत्व इत्यादि अनेक नामो से पुकारता है। इसे 'व्योम बीज' भी कहते है।

(३) ह्रीं —मन्त्र का नाम 'माया वर्ण', माया बीज और शक्ति बीज ही कहते है।

(४) क्ष्वीं :—मन्त्र का नाम सकल सिद्ध विद्या या महा विद्या है, इसे 'अमृत बीज' ही कहते है।

(५) श्री —मन्त्र का नाम छिन्न मस्तक महाबीज है। इसे 'लक्ष्मी बीज' ही कहते है।

(६) क्लीं :—मन्त्र का नाम काम बीज है।

(७) ऐं :—मन्त्र का नाम 'काम बीज' और 'विद्या बीज' ही है।

(८) 'अ' :

(९) क्ष्वीं —मन्त्र का नाम क्षिति बीज है।

(१०) स्वा —मन्त्र का नाम वायु बीज है।

(११) "ह्रां' (१२) 'ह्रूं' (१३) 'ह्रौ' (१४) 'ह्र'

(१५) 'क्लं' (१६) 'क्रौं' (१७) 'श्री' (१८) 'श्रू'

(१९) 'क्षां' (२०) 'क्षी' (२१) 'क्षं' (२२) 'क्ष'

युग्माक्षरी

(१) अर्हं (२) सिद्ध (३) ॐ ह्री (४) आ, सा

त्रयाक्षरी

(१) अर्हत (२) ॐ अर्ह (३) ॐ सिद्धं

चतुराक्षरी

(१) अरहत या अरिहत (२) ॐ सिद्धेभ्य (३) असिसाहु

पंचाक्षरी

(१) असि आउसा (२) ह्रां ह्री ह्रूं ह्रौं ह्र (३) अर्हत सिद्ध

त—थ—द— कालुष्य नाशक, मङ्गल वर्धक, सुख कारक मङ्गल

व ” ” ” द्रवण वीजम् ।

य” ” ” ”रक्षा वीजम् ।

मं” ” ” ”मङ्गल वीजम् ।

झ” ” ” शक्ति वीजम् ।

स” ” ”शोधन वीजम् ।

मन्त्र सिद्धि के लिये जैन शास्त्रो मे ४ प्रकार के आसन कहे गये है—

(१) श्मशान पीठ ।

(२) शव पीठ ।

(३) अरण्य पीठ ।

(४) श्यामा पीठ ।

णमोकार मन्त्र में से ही वीजाक्षरो की उत्पत्ति हुई है । जैसे—

(ॐ) समस्त णमोकार मन्त्रो से

(ह्री) की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र के प्रवम चरण से—

श्री	,,	,,	,,	,,	द्वितीय चरण से
क्षी क्ष्वी	,,	,,	,,	,,	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से
ग्ली	,,	,,	,,	,,	प्रथम पाद मे से प्रतिपादित
द्रां द्री	,,	,,	,,	,,	चतुर्थ और पचम चरण से
ह	,,	,,	,,	,,	प्रथम चरण से
र्हं	,,	,,	,,	,,	वीज है तीर्थङ्करो के यक्षिणी द्वारा अत्यन्त शक्तिशाली और सकल मन्त्रो मे व्याप्त है।
-ह्रां -ह्री -ह्रूँ -ह्रौ -ह्र.			,,	,,	प्रथम धरणी से उत्पन्न हुए हैं।
क्षा क्षी क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्ष			,,	,,	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से उत्पन्न हुये है ।

बीजाक्षर मन्त्र

(१) ॐ .—इसे 'प्रणव' नाम से ही प्रसिद्धि है। अरिहन्त अशरीर (सिद्ध) आचार्य, उपाध्याय, मुनि (साधु) इनके पहले अक्षर लेकर सन्ध्यक्षर ॐ बना है। यह परमेष्ठीवाचक है।

(२) ह्रं —यह मन्त्र राज, मन्त्राधिप, इस नाम से प्रसिद्ध है। सब तत्वो का नायक बीजाक्षर तत्व है। इसे कोई बुद्धि तत्व, कोई हरि, कोई ब्रह्म, महेश्वर या शिव तत्व या कोई साव, सर्वव्यापी या ईशान तत्व इत्यादि अनेक नामो से पुकारता है। इसे 'व्योम बीज' भी कहते है।

(३) ह्रीं —मन्त्र का नाम 'माया वर्ण', माया बीज और शक्ति बीज ही कहते है।

(४) क्ष्वीं —मन्त्र का नाम सकल सिद्ध विद्या या महा विद्या है, इसे 'अमृत बीज' ही कहते है।

(५) श्री —मन्त्र का नाम छिन्न मस्तक महाबीज है। इसे 'लक्ष्मी बीज' ही कहते है।

(६) क्लीं :—मन्त्र का नाम काम बीज है।

(७) ऐं —मन्त्र का नाम 'काम बीज' और 'विद्या बीज' ही है।

(८) 'अ' :

(९) क्ष्वीं —मन्त्र का नाम क्षिति बीज है।

(१०) स्वा —मन्त्र का नाम वायु बीज है।

(११) "ह्रां'	(१२) 'ह्रूं'	(१३) 'ह्रौं'	(१४) 'ह्रः'
(१५) 'क्लं'	(१६) 'क्रौं'	(१७) 'श्री'	(१८) 'श्रूं"
(१९) 'क्षां'	(२०) 'क्षीं"	(२१) 'क्षं'	(२२) 'क्ष'

युग्माक्षरी

(१) अर्हं (२) सिद्ध (३) ॐ ह्रो (४) आ, सा

त्र्याक्षरी

(१) अर्हत (२) ॐ अर्हं (३) ॐ सिद्धं

चतुराक्षरी

(१) अरहत या अरिहत (२) ॐ सिद्धेभ्य (३) असिसाहु

पंचाक्षरी

(१) असि आउसा (२) ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्रः (३) अर्हत सिद्ध

(४) णमो सिद्धाण (५) नमो सिद्धेभ्य (६) नमो अर्हंते
(७) नमो अर्हद्भ्य (८) ॐ आचार्येभ्य

षडक्षरी मन्त्र

(१) अरहत सिद्ध (२) नमो अरहते (३) ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र
(४) ॐ नमो अर्हंते (५) ॐ नमो अर्हद्भ्य (६) ह्री ॐ ॐ ह्री ह स
(७) ॐ नम सिद्धेभ्य (८) अरहत सिसा

सप्ताक्षरी

(१) णमो अरहताण (२) ॐ ह्री श्री अर्हं नम
(३) णमो आयरियाण (४) णमो उवज्झायाण
(५) नमो उपाध्यायेभ्य (६) नम सर्व सिद्धेभ्य
(७) ॐ श्री जिनाय नम

अष्टाक्षरी

(१) ॐ णमो अरहताण (२) ॐ णमो आइरियाण
(३) ॐ नमो उपाध्यायेभ्य (४) ॐ णमो उवज्झायाण

नवाक्षरी

(१) णमो लोए सव्वसाहूण (२) अरहत सिद्धेभ्यो नम

दशाक्षरी

(१) ॐ णमो लोए सव्वसाहूण (२) ॐ अरहत सिद्धेभ्यो नम

एकादशाक्षरी

(१) ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अमिआउसा
(२) ॐ श्री अरहत सिद्धेभ्यो नम.

द्वादशाक्षरी

(१) ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र असि आउसा नम.
(२) ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असि आउसा स्वाहा
(३) अर्ह सिद्ध सयोग केवलि स्वाहा

त्रयोदशाक्षरी मन्त्र

(१) ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा नम

(२) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा

(३) ॐ अर्हं सिद्ध केवलि सयोग स्वाहा

चतुर्दशाक्षरी

(१) ॐ ह्रीं स्वर्हं नमो नमोऽर्हताणं ह्रीं नमः

(२) श्रीमद् वृषभादि वर्धमाना तेभ्यो नमः

पंचदशाक्षरी

(१) ॐ श्रीमद् वृषभादि वर्धमानान्तेभ्यो नम ।

षोडाक्षरी

(१) अर्हं सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः ।

द्वाविंशत्यक्षरी

(१) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हंसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः ।

त्रयोविंशत्यक्षरी

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि–आ–उसा अर्हं सर्व सर्व शान्ति कुरुः कुरु स्वाहा ।

पंचविंशत्यक्षरी

ॐ जोग्गे मग्गे तच्चे भूदे भव्वे भविस्से अक्खे पक्खे जिण परिस्से स्वाहा ।

एकत्रिंशत्यक्षरी

ॐ सम्यकदर्शनाय नम. सम्यकज्ञानाय नम. सम्यकचारित्राय नमः सम्यक् तपसे नमः ।

सत्ताईस अक्षरी मन्त्र ऋषि मण्डल

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रे ह्रैं ह्रौं ह्रः ९ बीजाक्षर

असि आउसा सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नम. १८/२७ शुद्धाक्षर

णमोकार मन्त्र

(१) पंच त्रिशंत्यक्षरी ३५ श्री णमोकार मन्त्र

णमो अरिहताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥ १ ॥

एक सप्तत्यक्षरी ७१

(१) ॐ अर्हन्मुख कमलवासिनि पापात्मभयकरि श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्त्र-प्रज्वलिते सरस्वति ममपाप हन हन दह दह क्षा क्षी क्षू क्षौ क्ष क्षीखर धवले अमृत मम्भवे व वं ह ह स्वाहा।

षट् सप्तत्यक्षरी ७६

१ ॐ नमो अर्हन्ते केवलिने परमयोगिने अनत शुद्धी परिणाम। विस्फुरु दुरु शुक्लध्यानाग्नि निर्दग्ध कर्म बीजाय प्राप्तानत-चतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मगलाय वरदाय, अष्टादशदोपरहिताय स्वाहा।

२४ शत सप्त विंशत्यक्षरी १२७

चत्तारि मगल, अरहन्ता मगलं, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवली पण्णत्तो धम्मो मगल।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहु लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि शरण पव्वज्जामि, अरहन्ते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

इस प्रकार मत्र है जिसके यथाविध जपने से इह परलोक सुख की प्राप्ति आत्म सिद्धि कार्य सिद्धि के लिए उपयुक्त है।

केवलि विद्या —

ॐ ह्री अर्हणमो अरिहताणं ह्री नम ।। व
ॐ णमो अरिहताण श्रीमद्वृपभादि वर्धमानान्तिमेभ्यो नम ।।
या श्रीमद्वृपभादि वर्धमानान्तिमेभ्यो नम ।।

विविधपिशाची विद्या —

ॐ णमो अरिहंताण ॐ ।। **इति कर्ण पिशाची ।।**
ॐ णमो आयरियाण ।। **शकुन पिशाचो ।।**
ॐ णमो सिद्धाण ।। **इति सर्व कर्म पिशाची ।।**

फलम् –इति भेदोऽङ्ग पठनो द्युक्त मानसो (सश्च) मुने ।।
सिद्धान्त -- ज्ञान जायते गणितादिषु ।।

वज्र पञ्जरम् —ॐ हृदि। ह्री मुखे। 'णमो' नाभौ।

'अरि' वामे। 'हता' वामे। दक्षिणे ण ताह शिरासि। ॐ दक्षिणे वाहौ। ह्री वामे वाहौ। णमो कवचम। सिद्धाण, अरनाय फट् स्वाहा ।।

फलम् .—विपरीत कार्येऽङ्ग न्यास शोभन कार्ये वज्र पञ्जर स्मरेत तेन रक्षा ।

अपराजित विद्या -ॐ णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ह्री फट् स्वाहा ।।

फलम् :– इत्योषोऽनादि सिद्धोऽयं मंत्र—स्याच्चितचित्रकृत इत्येषा पचाङ्गी विद्याध्याता कर्म क्षय कुरुते ।।

परमेष्ठी बीज मंत्र .— ॐ तत्कथमिति चेत् अरिहता, असरीरा आयरिया तह उवज्झाया मुणिणो पढमक्ख (र) णिप्पण्णो (ण्णो) ॐ कारोय पञ्च परमेष्ठी ।। **अकसेदो** [ ] **इति** जैनेन्द्र सूत्रेण अ+अ इत्यस्य दीर्घा. अ आ पुनरपि दीर्घ उ तस्य पररुप गुणे कृते औमिति जाते पुनरपि मोदर्व चन्द्र [ॐ] इति सुत्रेणानुसारेणाऽनुस्वारे सति सिद्ध पञ्चाङ्ग मत्र निष्पद्यते ।।

प्रथम रक्षा मन्त्र .—ॐ णमो अरहताण शिखायाम् ।

यह पढकर सारो चोटी के ऊपर दाहिना हाथ फेरे ।

ॐ णमो सिद्धाण—मुखावरणे ।

यह पढकर सारे मुख पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो आयरियाण—अङ्ग रक्षा ।

यह पढकर सारे अग पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो उवज्झायाण—आयुध

यह पढकर सामने हाथ से जैसे कोई किसी को तलवार दिखावे, ऐसे दिखावे ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण—मौर्वी ।

यह पढकर अपने नीचे जमीन पर हाथ लगाकर और जरा हिलकर जो आसन बिछा हुआ है, उसके इधर-उधर यह ख्याल करे कि मैं वज्र शिला पर बैठा हूँ, नीचे से बाधा नही हो सकती ।

सव्वपावप्पणासणो—वज्रमय प्राकाराश्चतुर्दिक्षु ।

यह पढकर अपने चारो तरफ अगुली से कुण्डल सा खीचे यह ख्याल कर ले कि यह मेरे चारो ओर वज्रमय कोट है ।

मगलाण च सव्वेसि—शिखादि सर्वत. प्रखातिका ।

यह पढकर यह खयाल करे कि कोट के परे खाई है ।

पढमहवई मगल—प्राकारोपरि वज्रमय टकाणिकम् ।

इति महा रक्षा—सर्वोपद्रवविद्राविणी ।

यह पढकर वह जो चारो तरफ कुण्डली खीचकर वज्रमय कोट रचा है उसके ऊपर चारो तरफ चुटकी बजावे । इसका मतलब है कि जो उपद्रव करने वाले हैं वे सब चले जावे । मै वज्रमयी कोट के अन्दर व वज्रशिला पर बैठा हूँ । इस रक्षा मन्त्र के जपने से जाप

करते हुए के ध्यान मे साप, शेर, बिच्छू, व्यन्तर, देव, देवी आदि कोई भी विघ्न नही कर सकते। मन्त्र सिद्ध करने के समय जो देव-देवी डरावना रूप धारण कर आवेगा तो भी उस वज्रमयी कोट के अन्दर नही आ सकेगा। अगर शेर वगैरह पास से गुजरेगा तो भी आप तो उसे देख सकेंगे किन्तु वह जप करने वाले को मायामय वज्र कोट की ओर होने से नही देख सकेगा, जपने वाले को अगर कोई तीर-तलवार वगैरह से घात करेगा तो उस स्थान का रक्षक देव उसको वही कील देगा। वह इस रक्षा मन्त्र को जपने वाले का घात नही कर सकेगा। अनेक मुनि श्रावको के घातक इस रक्षामन्त्र के स्मरण से कीले है, और उनकी रक्षा हुई है।

नोट—जो वगैर रक्षा मन्त्र से मन्त्र सिद्ध करने बैठते हैं वे या तो व्यन्तरो आदि की विक्रिया से डर कर मन्त्र जपना छोड देते हैं या पागल हो जाते है। इसलिए मन्त्र साधन करने से पहले रक्षा मन्त्र जप लेना चाहिए। इस मन्त्र से हाथ फेरने की क्रिया सिर्फ गृहस्थ के वास्ते है। मुनि के तो मन से ही सकल्प होता है।

द्वितीय रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहताण ह्रा हृदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो सिद्धाण ह्री शिरो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो आयरियाण ह्रू शिखा रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो उवज्झायाण ह्रै एहि एहि भगवति वज्रकवच वज्रिणि रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण ह्र क्षिप्र साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि, दुष्टान् रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

जब कभी अचानक कही अपने ऊपर उपद्रव आ जाए, खाते पीते सफर मे जाते, सोते बैठते तो फौरन इस मन्त्र का स्मरण करे, यह मन्त्र बार बार पढना शुरू करे। सब उपद्रव नष्ट हो जावे, उपसर्ग दूर हो, खतरे से जान माल बचे।

तृतीय रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहताणं, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्व साहूण। एसो पच णमोकारो सव्वपावप्पणासणो। मगलाण च सव्वेसि पढम हवइ मगलम ॐ ह्रू फट स्वाहा।

चतुर्थ रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहताण नाभी—यह पद नाभि मे धारिए

ॐ णमो सिद्धाण हृदि—यह पद हृदय मे धारिए

ॐ णमो आयरियाण कण्ठे—यह पद कण्ठ मे धारिए

ॐ णमो उवज्झायाण मुखे—यह पद मुख में धारिए

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण मस्तके यह पद मस्तक मे धारिए

सर्वा गे मा रक्ष रक्ष मातगिनि स्वाहा ।

यह भी रक्षा मन्त्र है । जो अङ्ग जिसके सम्मुख लिखा है, वह मन्त्र का चरण पढकर उस अङ्ग का मन मे चिन्तवन करे जैसे वह उस मे रखा हो ऐसा समझे। यह मन्त्र इस प्रकार १०८ बार पढे, रक्षा होगी ।

रोग निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहताणं, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण ।

ॐ णमो भगवदि सुयदे वयाणवार सग एब यण । जणणीये सररु

ॐ णमो भगवदिए सुय देव याए सव्व सुए मयाएणीयं सर स्सइए सव्व वाइणि सव्ण वणे ।

सदृ ए सव्वबाइणि सवणवणो ।

ॐ अवतर अवतर देवी मम शरीर प्रविश पुछ तस्स पविस सव्व जणमय हरीये :

अरहत सिरिए परमे सरीए स्वाहा ।

यह मन्त्र १०८ बार लिखकर रोगी के हाथ में रखे, सर्व रोग जाँए ।

मस्तक का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ णमो अरहताण, ॐ णमो सिद्धाण, ॐ णमो आयरियाण, ॐ णमो उवज्झायाण ॐ णमो लोए सव्वसाहूण ।

ॐ णमो णाणाय, ॐ णमो दसणाय, ॐ णमो चरिताय, ॐ ह्री त्रैलोक्यवश्यकरी ह्री स्वाहा ।

विधि—एक कटोरी मे जल लेकर यह मन्त्र उस जल पर पढकर, उस जल को जिसके मस्तक मे पीडा हो, आधाशीशी हो उसे पिलावे तो उसके मस्तक के सर्व रोग जाये ।

ताप निवारण मन्त्र

ॐ ह्री णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

जब यह मन्त्र पढे, पाँचवे चरण के अन्त मे "ऐं ह्री" पढता जावे, एक सफेद शुद्ध चद्दर लेकर उसके एक कोने पर यह मन्त्र पढता जावे और गाँठ देने की तरह कोणे को मोडता जावे, १०८ वार उस कोणे पर मन्त्र पढकर उसमे गाँठ देवे, वह चद्दर रोगी को उढा देवे। गाँठ शिर की तरफ रहे, रोगी का बुखार उतरे। जिसको दूसरे या चोथे दिन बुखार आता है। इससे हर प्रकार का बुखार चला जाता है। जब तक बुखार न उतरे, रोगी इस चद्दर को ओढे रहे।

बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं ज्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो सिद्धाणं झ्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो आयरियाणं स्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, क्ष्म्ल्व्यूँ नमः ।

(यहाँ नाम लेकर) अमुकस्य वन्दिमोक्ष कुरु कुरु स्वाहा।

विधि —यह प्रयोग है—जिस किसी का कोई कुटुम्बी या रिश्तेदार या मित्र जेल हवालात मे हो जावे, उसके वास्ते उसका कुटुम्बी यह प्रयोग करे। एक पाठा कागज पर श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा मॉड कर (लिखकर) पाँच सौ फूल लेकर यह मन्त्र पढता जावे और एक फूल उसके ऊपर चढाता जावे और उस पर जहाँ फूल चढाया था, उस पाठे पर ही अंगुली ठोकता जावे, ऐसे ५०० वार मन्त्र पढे। अमुक की जगह मन्त्र से उसका नाम लिया करे, जिसे वन्दी मे रखा हुआ है। इधर तो वह कार्यवाही करे, उधर उसकी अपील वगैरह जैसी कार्यवाही कानून की हो सो ही करे। वन्दीखाने मे से, कैद से फौरन छूटे। यह मन्त्र उस पाठे पर चित्राम की प्रतिमा के सम्मुख खडे होकर पढे। और खडा होकर ही फूल चढावे, सब कार्य खडा होकर ही करे, इससे वन्दी मुक्त होय, स्वप्न मे शुभाशुभ कहे।

नोट — यह प्रक्रिया गृहस्थ के वास्ते है, मुनि के वास्ते इसके स्मरण मात्र से ही वन्दीखाना दूर हो, अपने आप ही वन्दीखाने के किवाड खुले और जजीर टूटे।

बन्दीखाना निवारण द्वितीय मन्त्र

णंहूसावव्सएलो मोण ।

णंयाझाज्वउ मोण ।
णंयारिइआ मोण ।
णंद्धासि मोण ।
णंताहंरअ मोण ।

विधि :—चौथ, चौदस या शनिश्चर को धूल की चुटकी लेकर मन्त्र पढता हुआ तीन बार फूँक मारकर जिस पर डाले सो वश मे होय। यह मन्त्र नवकार मन्त्र के ३५ अक्षर उल्टे लिखने से बनता है, जब समय मिले, और जितनी देर तक इस मन्त्र का जाप करे। नित्य सात दिन तथा ग्यारह दिन तथा इक्कीस दिन तक जपे, अगर हो सके तो इसका सवा लक्ष जाप करे। इससे अधिक जितने हो सके करे, तो तुरन्त ही बन्दी छूट जावे। कैद मे हो वह तो यह मन्त्र जपे, और इसके हितपरिवारी अदालत मे मुकदमा की अपील वगैरह करे तो तुरन्त छूटे।

मछली बचावन बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो लोए सव्बसाहूणं ।

हुलु हुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा ॥

विधि : - यह मन्त्र दो कार्यो की सिद्धि में आता है :—

१— यह मन्त्र कंकरी के ऊपर पढकर मुँह से फूँक देता जावे। इस प्रकार इक्कीस बार पढकर फिर उस कङ्कर को किसी हिकमत से जाल पर मारे, जो मछली पकड रहा हो तो उसके जाल मे एक भी मछली न फँसे, सब बचे।

२— यह मन्त्र जितनी देर तक जप सके प्रतिदिन जपे, सवा लक्ष संख्या पूर्ण होने पर वल्कि उससे पहले ही बन्दी, बन्दीखाने से छूटे। अगर मुमकिन हो सके तो मन्त्र जपते समय धूप जलाकर आगे रखे, मन्त्र का फल तुरन्त हो, बन्दीखाने से तुरन्त छूटे।

अग्नि निवारण मन्त्र

ॐ अर्हं असि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः ।

विधि —एक लोटे मे पवित्र शुद्ध जल लेकर उसमें से हाथ की चुल्लू में जल लेकर यह मन्त्र इक्कीस बार पढे। जहाँ अग्नि लग गई हो उस स्थान पर इस जल का छींटा दे। पहले जो चुल्लू मे जल है जिस पर इक्कीस बार मन्त्र पढा है, उसकी लकीर खीचे, उस लकीर से आगे अग्नि नही बढे और अग्नि शान्त हो जाये। इस मन्त्र को १०८ बार अपने मन मे जपे तो एक उपवास का फल प्राप्त हो।

चोर, बैरी निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं,, ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्री णमो लोए सव्वसाहूणं।

विधि —इस मन्त्र को पढकर चारो दिशा मे फूँक दो, तुरन्त चोर, वैरी नाशे (अर्थात् जिस दिशा मे चोर, वैरी हो उस दिशा मे फूँक दीजे यानि यह मन्त्र पढता जावे और उस तरफ फूँक देता जावे तो तुरन्त चोर, वैरी भागे।

नोट —पहले इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करे और इसे सिद्ध करे, फिर जरूरत पर थोडा स्मरण करने से कार्य सिद्ध होगा। किन्तु पहले थोडा भी नियम से जपकर जरूर सिद्ध करले, जिससे जरूरत पडने पर फोरन काम आवे। 7422

चोर नाशन मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं धगु धगु महाधगु महाधगु स्वाहा।

विधि —यह मन्त्र पहले सवा लक्ष जप कर सिद्ध करे, वक्त पर मन्त्र के अक्षरो को पढता जावे और उन अक्षरो को अपने ललाट पर वतौर लिखने के हरफ–ब–हरफ खयाल करता जावे और मन्त्र जपता जावे, तो तुरन्त चोर भाग जावे अथवा मन्त्र को वांये हाथ मे लिखकर, मुट्ठी बाँधकर ऐसा खयाल करे कि, मेरे वाये हाथ मे धनुष है और मन्त्र जपता जावे तो चोर तुरन्त भाग जावे।

दुश्मन तथा भूत निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय-स्तम्भय मोहय-मोहय अन्धय-अन्धय मूकवत्कारय कुरु कुरु ह्री दुष्टान् ठः ठः ठः।

इस मन्त्र की दो क्रिया है —

१—यदि किसी के ऊपर दुश्मन हमला करने आवे तो तुरन्त उसके मुकावले को जावे। यह मन्त्र १०८ वार मुट्ठी बाँध कर जप करता जावे, दुश्मन भागे।

२ - यदि किसी बालक या स्त्री को कोई भूत–पिशाच, चुडैल, डायन सतावे तो यह मन्त्र १०८ बार मुट्ठी बाँध कर पढकर उसे झाडे। सुबह–शाम दोनो समय झाडा करे तो भूतादिक जावे, बालक स्त्री अच्छे हो जावे।

नोट - इस मन्त्र के नीचे के चरण मे,—ह्री दुष्टान् ठ ठ ठ मे दुष्टान् के स्थान पर दुश्मन का नाम जानता हो तो ले या भूतादिक कहे।

वाद-जीतन मन्त्र

ॐ ह्रं सः ॐ अर्हं ऐ श्रों अ- सि-आ उ सा नमः ।

विधि :—पहले यह मन्त्र पढकर एक लक्ष तथा सवा लक्ष जप सिद्ध कर लेवे, फिर जहाँ वाद–विवाद मे जाना हो वहाँ यह मन्त्र इक्कीस बार पढ कर जावे तो वाद–विवाद में आप जीते, जय पावे ।

विद्या-प्राप्ति, वाद जीतन मन्त्र

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा नमो अर्हं वद वद वाग् वादिनी सत्य वादिनि वद वद मम वक्त्रें व्यक्त वाचयाह्रीं सत्यं—ब्रूहि सत्यं ब्रूहि सत्यं वद सत्यं वद अस्खलित प्रचारं सदैव मनुजा सुरसदसि ह्रीं अर्हं अ-सि-आ-उ-सा नमः ।

विधि :— यह मन्त्र एक लक्ष बार जपे तो सर्व विद्या आवे, और जहाँ वाद–विवाद करना पड जावे, तो वहाँ वाद के झगड़े मे बोल ऊपर होय, जीत पावे ।

परदेश लाभ मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो भगवइए चन्दायईएसतट्ठाए गिरे मोर मोर हुलु हुलु चुलु चुलु मयूर वाहिनिए स्वाहा ।

विधि —जब किसी परदेश में रोजगार के वास्ते धन प्राप्ति के लिए जावे तो पहले श्री पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा के सामने यह मन्त्र दस हजार जपे । फिर श्रेष्ठ मुहूर्त्त मे गमन करे । जिस दिन, जिस समय गमन करने लगे, इस मन्त्र को १०८ बार जपे । जब उस नगर मे पहुँचे तो यह मन्त्र १०८ बार जपे । जिस नगर में जावे, रोजगार करे, लाभ हो । महान् धन मिले ।

नोट. जिस नगर मे रोजगार के लिये जावे, वहाँ मगलवार के दिन प्रवेश न करे । मगल वार के दिन प्रवेश करे तो हानि हो । घर की पूँजी खोकर, कर्जदार हो, दिवाला निकाले, काम बन्द हो ।

शुभाशुभ कहन मन्त्र, वाग्बल मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वीं स्वाहा ।

विधि :—किसी मुदकमे मे या फिर किसी फिकर में या अन्देशे मे या बीमारी मे, रात में सारे मस्तक पर चन्दन लगाकर, चन्दन सूख जाने के बाद १०८ बार यह मन्त्र पढकर सो जावे । जैसा कुछ होनहार होगा, स्वप्न द्वारा मालूम होगा । बृहस्पतिवार से ११००० जाप करे ।

मन-चिन्ता कार्य-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा-नमः स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से मन–चिन्ता कार्य सिद्ध होय। अर्थात् जब यह मन्त्र जपे आगे धूप जला कर रखले। जिस कार्य की सिद्धि के वास्ते जपे, मन मे उसे रखे कि अमुक कार्य की सिद्धि के वास्ते यह मन्त्र जपता हूँ। यदि कोई इस मन्त्र का सवा लक्ष जाप करे तो मन–चिन्ते कार्य होय, सब कार्य की सिद्धि होवे।

द्रव्य-प्राप्ति मन्त्र

अरहंत, सिद्ध, आइरिय, उवज्झं, सव्वसाहूणँ।

विधि —इस मन्त्र का सवा लाख जप विधि पूर्वक करे तो द्रव्य प्राप्ति हो।

लक्ष्मी-प्राप्ति, यशकरण, रोग निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहँताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आमरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमः स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी बढे (वृद्धि को प्राप्त हो) लोक मे यश हो, सर्व प्रकार के रोग जाये।

नोट —सवा लक्ष जप विधि पूर्वक जपने से कार्य पूर्ण सिद्ध होता है, फिर जिस मर्यादा से जपेगा, उतनी मदद देगा।

सर्व-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

विधि —इस महा मन्त्र का सवा लक्ष जप करने से सर्व कार्य सिद्धि होती है।

द्रव्य-लाभ, सर्व सिद्धि दायक मन्त्र

ॐ अरहंताणं, सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाण साहूणं मम रिद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि —स्नान करने के पश्चात् पवित्र होकर प्रभात, मध्यान्ह, अपरान्ह, तीनो समय इस मन्त्र का जाप करे, द्रव्य लाभ हो, सर्व सिद्धि हो।

नोट —२१ दिन तक तीनो समय के सामायिक के वक्त निर्भय होकर दो–दो घडी जाप्य करे।

पुत्र-सम्पदा प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं असि आउसा चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा। त्रिभुवन स्वामिनो विद्या।

विधि —जब यह मन्त्र जपने बैठे तो आगे धूप जला कर रख लेवे और यह मन्त्र २४ हजार फूलो पर, एक फूल पर एक मन्त्र जपता जावे। इस प्रकार पूरा जपे। घर मे पुत्र की प्राप्ति हो और वश चले।

नोट :—धन, दौलत, स्त्री, पुत्र, मकान सर्व सम्पदा की प्राप्ति इस मन्त्र के जाप से होवे।

राजा तथा हाकिम वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु। वषट्

विधि :—जब किसी राजा या हाकिम या बडे आदमी को अपने वश में करना हो तो, याने अमुक मेरे पर किसी तरह मेहरबान हो तो शिर पर पगडी या दुपट्टा जो बाँधता है यह मन्त्र २१ बार पढ कर उसके पल्ले मे गाँठ देवे। जब मन्त्र पढना शुरू करे, जब पल्ला हाथ मे लेवे। २१ बार यह मन्त्र पढकर गाँठ देवे और शिर पर उस वस्त्र को बाँध कर उसके पास आवे तो वह मेहरबानी करे, मित्र हो। जब मन्त्र पढे अमुक की जगह उसका नाम लेवे। राजा प्रजा सर्व वश्यम्।

वशीकरण (मन्त्र)

ॐ णमो अरहंताणं। अरे (आरि) अर (अरि) णिमोहिणी अमुकं मोहय-मोहय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से चावल तथा फूल पर मन्त्र पढकर जिसके शिर पर रखे वह वश में हो। १०८ बार स्मरण करने से लाभ होता है।

सर्प भय निवारण मन्त्र

ॐ अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत जयि अर्हं नमः।

विधि :—यह मन्त्र नित्य प्रति टक ३ गुणीजे। बार १०८ दिवाली दिन गुणीजे। जीवन पर्यन्त सर्प भय न हो।

दुष्ट निवारण मन्त्र

ॐ अर्हं अमुकं दुष्टं साधय साधय अ सि आ उ सा नमः ।

विधि —इस मन्त्र को २१ दिन तक जपे, १०८ वार शत्रु ऊपर पढे, क्षय होय ।

लक्ष्मी लाभ करावन मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रू णमो अरहंताणं ह्रूं नमः ।

विधि —१०८ वार पढे, लक्ष्मी लाभ हो ।

रोगापहार मन्त्र

ॐ णमो सव्वो सहि पत्ताणं ।
ॐ णमो खेलो सहि पत्ताणं ।
ॐ णमो सल्लो सहि पत्ताणं ।
ॐ णमो सव्वोसहि पत्ताणं ।
ॐ ऐं ह्री श्रीं क्ली क्लौ अर्हं नमः ।

विधि :—१०८ वार पढे, सर्व रोग जाय ।

व्रणादिक नाशन मन्त्र

ॐ णमो जिणाणं जावियाणं । यूसोणि अं (अ) एस (ऐ) णं (ण) वणं (सक्ववाराणवणं) मा पच्वत्तु मां फुट् (य उ ध उ मा फुट्) ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि .—राख पढकर व्रणादिक पर लगावे, समाप्ति हो ।

आकाश गमन मन्त्र

ॐ णमो आगासगमणिज्जो स्वाहा ।

विधि —२५० दिन अलूणा भोजन काजी सेती करीजे । २४६ वार मन्त्र पढ वक्त के ऊपर याद करे । आकाश गमन होय ।

आकाश गमन द्वितीय मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं,
ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ णमो भगवीय सु ंप्रदेवयानवर संगसबयन जननीयन जननी यस्य स्सइ ये सर्ववाईने प्रवतर प्रवतर देखिम शरीरं पवित्ररतं जनम पहरये अर्हन्तशरीरं स्वाहा ।

विधि .—ये मन्त्र १०८ वार खडी मन्त्री हाथ में राखिजे ये को देखिजे ।

व्यापार लाभ व जयदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविधेयं अर्हं नमः ।

विधि ·—यह मन्त्र दिन मे तीन बार जपिये । १०८ बार जपे तो व्यापार मे लाभ हो सर्वत्र जय पावे ।

भय नाशक मन्त्र

ॐ णमो सिद्धाणं पंचेणं ।

विधि —यह मन्त्र १०८ बार दिवाली के दिन जपिये, जीवे जगतां इस थकी भय टले ।

सर्व रोग नाशक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौ अर्हं नमः ।

विधि :—यह मन्त्र त्रिकाल बार १०८ वार जपे, सर्व रोग जाय ।

विरोधकारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा अनाहत विजे ह्रीं ह्रूं असं कविश्रें खं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि .—यह मन्त्र सात दिन १०८ बार जपे मसान के अङ्गारे की राख घोलकर कौवे के पङ्ख से भोज–पत्र पर लिखे । जिसका नाम लिखे वह मेरे विरोध उपजे ।

सर्व सिद्धि व जयदायक मन्त्र

ॐ अरहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहू, सव्व धम्मति त्थयराणं ॐ णमो भगवईए सुयदेवयाये शांति देवयाणं सर्व पवयणं देवयाणं दसाणं दिसा पालाणं पंचलोग पालाणं । ॐ ह्रीं अरहन्त देवं नमः । (श्री सर्व जुमोहं कुरु कुरु स्वाहा) पाठन्तरे ।

विधि ·—यह मन्त्र १०८ बार जपे उत्तम स्थान मे । सर्व सिद्धि और जयदायक है । सात बार मन्त्र पढकर कपड़े मे गाँठ देने से चोर भय नही होता, सर्प भय भी नही होता ।

आत्म-रक्षा महासकलीकरण मन्त्र

पढ़मं हवइ मंगलं व्रजमइ शिलामस्तकोपरि णमो अरहंताणं अगुष्ठ्योः णमो सिद्धाणं तर्जन्योः णमो आयरियाणं मध्यमयोः णमो उवज्झायाणं अनामिकयोः णमो लोएसव्वसाहूणं कनिष्ठकयोः ऐसो पंच णमोयारो व्रजमइ प्राकारं, सव्वपावप्पणासणे जलभृतरवातिका, मंगलाणं च सव्वेसि खादिरांगार-पूर्ण-खातिका।

।। इति आत्मनिश्चन्तये महासकलीकरणम् ।।

आकाश गमन कारक मन्त्र

ॐ आदि ह्री हीन पंचबीजपदैर्युतं सर्व सिद्धये नमः।

विधि —पुष्प या फल से एक लाख जाप वृक्षे छीक कृत्वा तणी—वद्ध तं आरूढोऽग्नि कुण्डो होमचेत्। येका धातेन पादास्त्रोटयते खे गमनम्।

सर्व कार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा।

विधि व फल —यह सर्व कार्य सिद्ध करने वाला मन्त्र है।

अरहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू।

विधि -षोडशाक्षर विद्याया जाप्य २०० चतुर्थ फलम्।

रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटि रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो आयरिगणं नाभि रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ब्रह्माण्ड रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं ऐसो पंच णमोयारो शिखा रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं सव्वयावप्पणासणो आसणं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं आत्म चक्षु पर चक्षु रक्ष रक्ष रक्ष रक्षामन्त्रोयम् ।

चोर दिखाई न देने अर्थात् चोर भय नाशन मन्त्र

ॐ णमो अरिहंताणं आभिरणी मोहणी मोहय मोहय स्वाहा ।

विधि —२१ बार स्मरण करे, गाँव में प्रवेश करते हुए। अभिमन्त्र 'क्षीर वृक्ष्यो हन्यते लाभा' रास्ते में जाते हुए इस मन्त्र का स्मरण करने से चोर का दर्शन भी नही होता ।

वांच्छितार्थ फल सिद्धि कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः । (महामन्त्र)

अ सि आ उ सा नमः । (मूल मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हते उत्पत उत्पत स्वाहा । (त्रिभुवन स्वामिनि)

विधि .—स्मरण करने से वांछितार्थ सिद्ध होता है ।

नवग्रह अरिष्ट निवारक जाप्य

सुर्य मंगल—ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

चन्द्रमा-शुक्र—ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

बुध-वृहस्पति—ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।

शनि-राहु-केतु—ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

प्रत्येक ग्रह की शान्ति के लिए उपरोक्त मत्र के दस हजार जाप करने चाहिए और सर्व ग्रहो की शान्ति के लिए ॐ ह्री बीजाक्षर पहले लगाकर पंच नमस्कार मंत्र के दस हजार जाप करने चाहिए।

एते पंचपरमेष्ठी महामन्त्र प्रयोगा ॐ नमो अरिहउ भग वउ बाहुबलिस्स पण्हसवणस्स मलेणिम्मल नाणपयासेणि ॐ णमो सव्व भासइ अरिहासव्व भासइ केवलि एण्णा सव्ववयगेण सव्व सव्व होउ में स्वाहा । आत्मान शुचि कृत्य बाहु युग्म सम्पूज्य कायोत्सर्गेण शुभाशुभं वक्ति । इति

ॐ णमो अरहंताणं ह्रां स्वाहा ।

ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं स्वाहा ।

ॐ णमो आयरियाणं ह्रूं स्वाहा ।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रौं स्वाहा ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः स्वाहा ।

विधि —सुगन्वित फूलों से १०८ वार जप कर लाल कपडे से फोडा-फुन्सी पर घेरा देने से तथा गले मे पहनने से फोडा न पक कर वैठ जाता है ।

ॐ वार सुवरे अ-सि-आ-उ-सा नमः

विधि .—त्रिकाल १०८ वार जपने से विभव करता है ।

जाप्य-मंत्र

आवश्यक नोट —माला के ऊपर जो तीन दाने होते हैं, सवसे अन्तिम जो इन तीनो मे से है उससे जप आरम्भ करो । जपते हुए अन्दर चले जाओ । जव सारे १०८ जप कर चुको तव उन आखिर के तीन दानो को माला के अन्त मे भी जपते हुए उसी आखिर के दाने पर आओ ! जिससे माला जपनी शुरू की थी । यह एक माला हुई । इन तीनो दानो के वारे मे किसी आचार्य का मत ऐसा भी है कि ये तीन दाने रत्नत्रय के सूचक है इसलिए इन तीनो दानो पर सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राय नम ऐसा मन्त्र पढकर माला समाप्त (पूर्ण) करनी चाहिए ।

प्रथम मन्त्र—ॐ णमो अरहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूण ।

दूसरा मन्त्र—अरहंत, सिद्ध, आयरिया, उवज्झाया, साहू ।

तीसरा मन्त्र- अरहन्त, सिद्ध ।

चौथा मन्त्र- ॐ ह्री अ-सि-आ-उ-सा ।

पांचवा मन्त्र—ॐ नम सिद्धेभ्य ।

छठा मन्त्र—ॐ ह्री ।

सातवा मन्त्र—ॐ ।

अनादि निधन मन्त्र—ॐ णमो अरहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्व साहूण ।

चत्तारि मगल—अरहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलि पण्णतो धम्मो मगल

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णतो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरण पव्वजामि—अरहते सरण पव्वजामि, सिद्धे सरण पव्वजामि, साहू सरण पवज्जामि, केवलि पण्णत्त धम्म सरणं पव्वजामि । ह्रौ सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

———

१०८ जाप्यम्

ॐ भूः ॐ सत्यः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अ–सि–आ–उ–सा नमः मम ऋद्धिं वृद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा । ॐ नमो अर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ सूरभ्यः स्वाहाः । ॐ पाठकेभ्यः स्वाहा । ॐ सर्व साधूभ्यः स्वाहा । ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ--सि-आ-उ-सा नमः स्वाहा । मम सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा । अरहंत प्रमाणं समं करोमि स्वाहा ।

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रौ शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा (नमः) ॐ ह्रीं श्रीं अ-सि-आ-उ-सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं ह्रीं नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधूभ्यः नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार पढकर छाती को छीटे देवे ।

ॐ ह्रीं अर्ह नमः । या ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह नमः ।

सर्य मंत्र का खुलासा

किसी काम के लिये ८००० जाप करने से फौरन काम होता है खासकर कैद वगैरह के मामले मे अजमाया हुआ है ।

ॐ ह्रीं अर्ह णमो सव्वो सहिपत्ताणं ।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिप्पो सहिपत्ताणं ।

विधि :—दोनों में से कोई एक ऋद्धि रोज जपे । सर्व कार्य सिद्ध हो ।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐ क्रौ ह्रीं णमो अरहंताणं नमः ॐ ह्रीं अर्ह णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रॉ ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रति चक्रे, फट् विफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र की नित्य १ माला जपे तो दलाली ज्यादा होवे धन ज्यादा होवे । राज द्वारे जो जावे तो दुश्मन झूठा पडे, पुत्र की प्राप्ति होवे । बदन मे ताकत आवे, विजय हो,

परिवार बढे, बुद्धि बढे, सौभाग्य बढे, जहाँ जावे वहाँ आदर सम्मान पावे। मूंठ करे तो भी नजदीक न आवे, जाप करे जितने वार धूप खेवे, पद्मासन होकर करना। नासाग्र दृष्टि लगाकर जाप करना चाहिये।

शांति मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं, केवलिपण्णतो धम्मो, सरणं पव्वजामि ह्रौ शांति कुरु कुरु स्वाहा। श्रीं अर्हं नमः।

(१) बिजौरा या नारीयल १०८ वार इस मंत्र से मंत्र कर ७२ दिनो तक वन्ध्या को खिलावे तो पुत्र हो।

(२) नये कपडे, मंत्र से मंत्रितकर रोगी को पहनावे तो दोष ज्वर जाय।

ॐ सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सिद्धिदायकेभ्यो नमः।

विधि :—जाप १०८ अष्टमी चतुर्दशी को पढकर धूप देना।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, णमो अरहंताणं णमो आचार्याणं णमो उवज्झायाणं, णमो साहूणं, णमो धर्मेभयो नमः। ॐ ह्रीं णमो अर्हन्ताणं आरे अभिनि मोहनी मोह्य मोह्य स्वाहा।

विधि :—नित्य १०८ जपे। ग्राम प्रवेशे ककर ७ मंत्र २१ क्षीर वृक्ष हन्यते नाभो भवति। प्रथम मंत्र जप दीप धूप से सिद्ध करना, पीछे अपने काम मे लगना चाहिये।

सर्व शांति मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा सर्व शांति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं नमः। क्लीं सर्वारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि —१०८ वार जाप गुरुवार से आरम्भ करे पूर्व दिशा को मुख करके बैठे। धूप से प्रारम्भ कर ११,००० जाप करे।

मंत्र —ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा ह्रीं नम।

विधि —इस मन्त्र का त्रिकाल १०८-१०८ वार जाइ के फूलो से जप करे तो सर्व प्रकार की अर्थ सिद्धि को देता है।

मंत्र —ॐ क्ली ह्ली ह्रं ऐ ह्रीं (ह्रां ?) ह्र अपराजितायै नम।

विधि :—इस मंत्र का ३ लक्ष्य जाप विधि पूर्वक करने से सिद्ध होता है इस मन्त्र के प्रभाव से साधक जो भी भोगोपभोग चीजो की इच्छा करता है वह सब साधक को प्राप्त होता है। स्त्री आदिक तो अपना होश ही भूलकर साधक के पीछे पीछे चलती है।

मंत्र :—ॐ पार्श्वनाथाय ह्री ।

विधि .—इस मन्त्र का १ लाख बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र का दस दिन तक प्रयत्न पूर्वक आराधना करने से स्त्री, पुरुष, राजा आदिक वश मे होते है । पथभ्रष्ट होने वाला मनुष्य दस दिन तक प्रतिदिन १-१ हजार जप करे तो जल्दी से ही पद की प्राप्ति पुन होती है ।

मंत्र :—ॐ आँ हाँ क्ष्वी ॐ ह्री ।

विधि :—चन्द्रग्रहण या सूर्य ग्रहण मे या दीवाली के दिन इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए साधक को देवे । इस मन्त्र को शुद्धता से ब्रह्मचर्य पूर्वक ६ महीने तक प्रतिदिन एक हजार (१ हजार) बार जाप करने वाले को ये मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के प्रभाव से साधक को राजा, उन्मत्त हाथी, घोड़ा, सर्व जगत के प्राणी वश मे होते है । सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मंत्र —ॐ ह्री श्री कलि कुण्डदण्डाय ह्री नम ।

विधि —पार्श्व प्रभ की मूर्ति के सामने सोने की कटोरी मे १२००० (१२ हजार) जाइ के फूल से इस मन्त्र का जप करे, मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद मनोवांछित कार्य की सिद्धि होती है मन्त्र के प्रभाव से भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी शाकिणी इत्यादिक सामने ही नही आते बाधा देने की तो अलग बात रही । मन्त्र के प्रभाव से युद्ध, सर्प, चौर, अग्नि, पानी, सिंह, हाथी इत्यादि बाधा नही पहुँचा सकते है । मन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होवे ,वध्या गर्भ धारण करे, जिसकी सन्तान होते ही मरती होवे तो जीने लगे, कीर्ति की प्राप्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, राज्य, सौभाग्य की प्राप्ति होती है देवांगनाये सेवा में हाजिर रहती है । ऐसा इस विद्या का प्रभाव है ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवति शिव चक्रे मालिनी स्वाहा ।

विधि ·—पुष्य नक्षत्र, सप्तमी या शनिवार के दिन या रवि पुष्पामृत मे, पहले निमन्त्रण पूर्वक दूसरे दिन अपनी छाया बचा के, सफेद आकड़े की जड़ को लाकर पार्श्व प्रभुकी प्रतिमा बनावे, फिर उपर्युक्त मत्र से मूर्ति की प्रतिष्ठा करके इसी मन्त्र से मूर्ति की पूजा करे, तो जो जो कार्य साधक विचारे वह सर्व कार्य साधक के चितन मात्र से ही होते है । न्यायालय वगैरह, विवाद मे, धान्य सग्रह मे सब में, विजय प्राप्ति होती है ।

मंत्र :—ॐ ह्री ला ह्रा प लक्ष्मी श्वी क्ष्वी कुः हंसः स्वाहा ।

विधि ·—इस मत्र का विधिपूर्वक जाइ के फूलो से १३००० (हजार) जाप तीन दिन में करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है । इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए स्वयं शुद्ध होकर विलेपन लगाकर सफेद वस्त्र पहनकर, अम्बिका देवी की मूर्ति को स्नान कराकर पंचामृत से पूजा करे, फिर देवीजी के सामने बैठकर भक्ति पूर्वक उपवास करके मन्त्र सिद्ध करे तो तीन दिन में मन्त्र सिद्ध हो जायेगा । फिर मन्त्र के प्रभाव से भूत, भविष्यत्

वर्तमान की वात को देव कान मे आकर कहेगा, याने जो पूछोगे वही कान मे आकर कहेगा।

मंत्र :—ॐ ह्रीं ला ह्रा प लक्ष्मी हस स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का दस हजार जाप जाइ के फूलो से करने से और दशास होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायेगा। मत्र के प्रभाव से स्थावर या जगम विप की शक्ति का नाश होता है।

मंत्र —ॐ ऐ ह्रीं श्री क्ली व्लू कलि कुण्ड नाथाय सौं ह्री नम।

विधि —इस मन्त्र का ६ महीने तक एकासन पूर्वक १०८ वार जाप करे तो सो योजन तक के पदार्थ का ज्ञान होता है। उसके वारे मे भूत, भविष्यत् वर्तमान का हाल मालूम पडता है, इस मन्त्र का कलिकु ड यत्र के सामने वैठकर जाइ के पुष्पो से १ लाख वार जाप करे और दशास होम करे, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

विशेष —पाच वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक इस विद्या की जो आराधना करता है उसको प्रतिदिन विद्या के द्वारा १ पल भर सोना नित्य ही प्राप्त होता है। किन्तु नित्य ही जितना सोना मिले उतना खर्च कर देना चाहिए। अगर खर्च करके सचय करोगे तो विद्या का महत्व घट जावेगा।

मंत्र —ॐ हुँ २ हे २ कूँ चूँ टूँ तूँ पूँ यूँ शूँ ह्रां ह्रू (भ्रां हूँ) फट्

विधि —इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र के प्रभाव से राज दरवार मे, कचेरी मे, वाद विवाद मे, उपदेश के समय, पर विद्या का छेदन करने मे, वशीकरण मे, विद्वेपणादि कर्मो मे, धर्म प्रभावना के कार्यो मे अति उत्तम कार्य करने वाला है।

पद्मावती प्रत्यक्ष मंत्र : २ ॐ आ क्रौं ह्री ऐं क्ली ह्रौं पद्मावत्यै नम.।

विधि :—सवा लाख जाप करने से प्रत्यक्ष दर्शन होते है या साढे वारह हजार जप करने से स्वप्न मे दर्शन होते हैं।

सरस्वती मंत्र . ३—"ॐ ऐ श्री क्ली वद् वद् वाग्वादिनी ह्री सरस्वत्यै नम.।"

विधि .—वाह्य मूहूर्त मे रोज ५ माला जपने से वुद्धिमान होय। ॐ ज्रौ ज्रो शुद्ध बुद्धि प्रदेहि श्रुत-देवी-मर्हत तुभ्यं नम।

लक्ष्मी प्राप्ति मत्र ४—"ॐ ह्री श्री क्ली ठे। ॐ घटा कर्ण महावीर लक्ष्मी पुरय पुरय सुख सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि —धन तेरस को ४० माला, चौदस को ४२ और दीवाली के दिन ४३ माला उत्तर दिशा मुख, लाल माला से, लाल वस्त्र पहन कर करे, लक्ष्मी की प्राप्ति होय।

श्री मणिभद क्षेत्रपाल का मत्र ५—ॐ नमो भगवते मणिभदाय क्षेत्र पालाय कृष्ण रुपाय चतुर्भु जाय जिन शासन भक्ताय नव नाग सहस्त्र वालाय किन्नर किं पुरुप गधर्व,

राक्षस, भूत प्रेत, पिशाच सर्व शाकिनी ना निग्रह कुरु कुरु स्वाहा माँ रक्ष रक्ष स्वाहा।
क्षेत्र पालनो मत्र ६—ॐ क्षा श्री क्षूँ क्ष· क्षौ क्ष क्षेत्र पालायनम ।

विधि :—साढे बारह हजार जाप करना ।

फौजदारी दीवानी दावा आदि निवारण मंत्र :—६

मूल मन्त्र —ॐ ऋषभाय नमः ।।

विधि :—श्री आदीश्वर भगवान के समक्ष स्त्रोत १०८ बार प्रतिदिन जाप करना । साढे बारह हजार जाप करे मूल मन्त्र का ।

चक्रेश्वरी देवी का मन्त्र · १—ॐ ह्री श्री क्ली चक्रेश्वरी मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा ।
विधि सोते समय ५ माला जपना चाहिये ।

मत्र २—ॐ नमो चक्रेश्वरी चिन्तित कार्य कारिणी मम स्वप्ने शुभाशुभं कथय २ दर्शय दर्शय स्वाहा ।

विधि :—शुभ योग, चन्द्रमा, तिथि वार से शुरु कर साढे बारह हजार जाप करे । स्वप्न मे शुभा शुभ मालूम पड़ेगा ।

चर्तुविंशति महाविद्या

णमो अरिहंताणम्, णमो सिद्धाणं, णमो अइरियाणम् ।
णमो उवज्झायाणम्, णमो लोए सव्व साहूणम् ।।

विधि :—यह अनाधि मूल मन्त्र है । इस मन्त्र से भव्य जीव ससार समुन्द्र से पार हो जाता है और लोकिक सर्व कार्य की सिद्धि होती है । यदि मन, वचन, काय को शुद्ध करके त्रिकाल जपे ।

ॐ नमो भगवओ अरहऊ ऋष भस्स आइतित्थ यरस्स जलंतं ग (च्छं) तं चक्कं सव्वत्थ अपराजिय, आयावणि ऊहणि, थंभाणी, जंभाणी, हिली-हिली धारिणी भंडाणं, भोइयाणं, अहीणं, दाढीणं, सिंगीणं, नहीणं, वाराणं, चारियाणं, जक्खाणं, ररक्खसाणं, भूयाणं, पिसायाणं, मुहबंधणं, चक्खु बंधणं, गइ बंधणं करेमी स्वाहाः ।

विधि ·—इस विद्या से २१ बार धूल याने मिट्टी को मन्त्रित करके दशों दिशा मे फैंक देने से मार्ग मे किसी प्रकार का भय नही रहता है । संघ का रक्षण होता है । कुल का रक्षण होता है । गण का रक्षण होता है । आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओ का और

नर्व नाव्विग्रो का रक्षण होता है। इससे सर्व प्रकार का उपसर्ग दूर होता है। मन्त्र पढ़ता जाय और मन्त्रित धूली को फेंकता जाय।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अजिय जिणस्स सिज्झऊ मे, भगवइ महवइ महाविद्या अजिए अपराजिए अनिहय महावले लोग सारे ठः ठः स्वाहा।

विधि —इस विद्या का उपवास पूर्वक ८०० वार जाप्य करे तो दारिद्र का नाश, व्याधियो का नाश, पुत्र की प्राप्ति, यश की प्राप्ति, पुण्य की प्राप्ति, सौभाग्य की प्राप्ति, दम्पत्ति वर्ग मे प्रीति की प्राप्ति होती है।

ॐ नमो भगवऊ संभवस्स अपराजियस्स सिरस्याउवज्झऊ में भगवऊ महइ महाविद्या संभवे महासंभवे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —चतुर्थ स्थान याने दो उपवास करके जपे साढे वारह हजार मन्त्र, फिर इस मन्त्र से भोजन अथवा पानी अथवा अर्क अथवा पुष्प या फल को अट्ठसय (आठ सौ वार) मन्त्रित करके जिसको दिया जायगा वह वशी हो जायगा।

ॐ नमो भगवऊ अभिनदणस्य सिझष्यऊ मे भगवइ महइ महाविद्या-नंदणे अभिनन्दणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —दो उपवास करके फिर पानी को अट्ठसय (आठ सौ वार) जाप मन्त्रित करके जिसका मुख मन्त्रित पानी से धुलाया जायगा वह वशी हो जायगा।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सुमइस्स सिझष्यऊ मे भगवई महइ महाविद्या समणे सुमण से सोमण से ठः ठः ठः स्वाहाः।

विधि —दो उपवास करके अट्ठसय (आठ सौ वार) मन्त्र अरहत प्रभु के सामने कोई भी कार्य के लिये अथवा दुकान की वस्तुओ के लिए जाप करके सो जावे तो भूत, भविष्यत, वर्तमान ये क्या होने वाला है, जो भी कुछ मन मे है, सवका स्वप्न मे मालूम पडेगा, सर्व कार्य सिद्धि होगी।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पउमप्पहस्स सिज्झष्याउ में भगवई महइ महाविद्या, पउमे, महापउमे, पउमुत्तरे पउमसिरि, ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को भी अट्ठसय (आठ सौ वार मन्त्र) दो उपवास करके करने वाले मनुष्य के सर्वजन इप्ट हो जाते है याने सर्व लोगो का प्रिय हो जाता है।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सुपासस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महाविद्या, पस्से, सुपस्से, अइपस्से, सुहपस्से ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अपने शरीर को मन्त्रीत करने सो जावे तो स्वप्न में शुभाशुभ का ज्ञान हो। मार्ग चलते समय स्मरण करने से सर्प, व्याघ्र, चोर, आदिक का भय नही रहता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ, चंदप्पहस्स सिज्झष्यऊ में भगवइ महइ महाविद्या चंदे चंदप्प में अइप्पभे महाप्पभे ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—दो उपवास करके इस मन्त्र को आठ सौ बार जाप करके पानी सात बार मत्रीत करके उस पानी से जिसका मुँह धुलाया जायगा वह सर्वजन का इष्ट हो जायगा अथवा पानी को २१ वार मत्रीत कर स्त्री या पुरुष को देने से चन्द्र के समान सर्व-जन का इष्ट होता है ।

मन्त्र : ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पुष्पदंतास्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महा-विद्या पुप्फ, महापुप्फे, पुप्फसुइ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को दो उपवास करके आठ सौ बार मत्र जपे फिर इस मन्त्र से फल को अथवा पुष्प को २७ बार मत्रीत कर जिसको दिया जाय वह वश मे हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सियलजिणस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महाविद्या सीयले२ पसीयले पसंति निव्वुए निव्वाणे निव्वुएरिा नमो भवति ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र को दो उपवास करके २१ बार पानी मंत्रीत करके आँख के रोग पर या शिरोरोग, पर आधा शिशी रोग पर, फौडा फुन्सी के रोग पर परीक्रमा रूप मंत्रीत पानी को छीडके तो रोग अच्छा हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सिद्यंसस्स सिज्झष्याउ में भगवइ महइ महा विद्या सिज्जसे २ सेयं करे महासेयं करे पभं करे सुप्पभं करे ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को उपवास पूर्वक रात्रि मे पुष्पों से आठ सो जाप करे । भूतेष्टाया रात्रौ सर जो ब्रलि कर्म (साष्टशत) जापम् । कुर्यान्मोच्य चबहिः स स्वस्थ श्चन्द्रराशिविद्या, उपद्रवं जगल चाउदिसे सुगहेयव्वं मुद्धवलि कम्मं कायव्वं तवाहिय च चउदिसि परिक्ख कम्म कायव्वैतऊ सुह होइ ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ वासुपुज्यस्स सिज्झष्याऊ मे भगवइ महइ महा-विद्या वासुपुज्ये २ महापुज्ये रूहे ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को उपवास पूर्वक आठ सो बार जप करके सो जावे फिर जो स्वप्न मे शुभा-शुभ दीखेगा, वह सब सत्य होगा । जं किंचि अप्पण ट्ठाए पर ट्ठाएवा नाउकामेण

खेमवा भयंवा नासवा डमरवा मारिवा दुभिक्खवा, सासयंवा, असासयवा जयंवा अन्नयरवा पडिलेहिऊ कामेण अप्पाण सत्त वार परिजवेऊण सोयव्व ज जपासइ सुमिणे तस्स फल तारिस होइ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ विमलस्स सिज्झण्याउ में भगवइ महइ महा-विद्या अमले २ विमले कमले निम्मले ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —सप्ताभि मन्त्रित सुमं प्रतिमा सं पूज्य तिष्ठति स्व कृते। तत्रस्थ पश्चयति य सत्यार्थ-स इति विमलजिन विद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अणंत जिणस्स सिज्झण्याउ मे भगवइ महइ महाविद्या अणंत केवलणाणे अणंत पद्मवनाणे अणंते गमे अणंत केवल दंसणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —शास्त्रारम्भे जपत्वा साष्टशत शयत एपयत्स्वप्ने। पश्यति तत्सर्वं मिद तथैव तदनन्त जिनविद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ धम्म जिणस्स सिज्झण्याउ में भगवइ महइ महाविद्या धम्मे सधम्मे धम्मे चारिणी धम्म धम्मे उवए स धम्मे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —शिष्याचार्याद्यर्थे कार्योत्सर्गे जपन्नि मा विद्या। पश्यति शृणोति यदसौ तत्सत्य सर्वमेव पचदशी।। कार्यारभेशिष्य श्रवणो विद्याभि मन्त्रितोऽष्ट शतम्। कार्यस्य पारदर्शी, विशेषतोऽप्य नशन ग्राही।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ संतिजिणस्स सिज्झण्याउ में भगवइ महइ महा-विजा संति संति पसंति उवसंति सव्वापावं एस मेहि स्वाहा।

विधि —इम मत्र का आठ सौ बार जाप कर धूप गध पुष्पादिक को मत्रीत करके धूप देने से, ग्राम, नगर, देश, पट्टण मे अथवा स्त्रीओ मे वा पुरुषो मे वा पशुओ मे का, मारि रोग नष्ट हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ कुंथुस्स सिज्झण्याउ मे भगवइ महइ महाविद्या कुंथुडे कुंथे कुंथुमइ ठः ठः ठः ॐ कुंथेश्वर कुंथे स्वाहा।

विधि —इस मत्र मे धूलि को सात बार मत्रित कर जहाँ डाल देवे वहाँ के सर्वज्वर सर्व रोग नष्ट हो जाते है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अरस्स सिज्झण्याउ में भगवइ महइ महाविद्या अरणि आरिणी अरणिस्स पणियले ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —राजकुलं, देवकुल वा देवा गन्तु मिच्छता विद्याम्। परि जप्यपय. पेयं वक्त्र वाऽभ्यज्य गध तैलेन। वद्ध्वा शिरसि शिखां वा सिद्धार्थान् वा स्वनिवसन प्रांते। गंन्तव्यं, यत्रेष्टं सुभग स्तत्रेति चन्द्रगज विद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ मल्लिस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महाविद्या मल्लीसु मल्ली जय मल्लिपडि मल्लि ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से वस्त्र माला अलंकारादिक मत्रीत करके जिसको दिया जावेगा वह वश में हो जायगा।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ मुणिसुव्यस्स सिज्झष्यउ मे भगवइ महइ महा-विजा सुव्वए अणुव्वए महव्वए व एमइ ठः स्वाहा।

विधि :—व्याघ्र, चित्रक, सिहादेः कस्य चिन्मास भक्षिण.। दग्धवा मास च केशिवा तद्रक्षा भ्रक्षिताङ्गुलि। यस्यनाम्ना जपेद् विद्यामिमामष्टोत्तर शतम्। सहस्त्रं वास वश्य स्यादिति सुव्रत विद्या।।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ नमिस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महाविद्या अरे रहावत्ते आवते वतेरिट्ठनेमि स्वाहा।

विधि —इस मंत्र से सात बार फल पुष्प वा अलंकारादि मत्रीत करके जिसको दिया जाय वह वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अरिट्ठनेमीस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महा-विजा अरेरहावते आवत्रे वत्रे रिट्ठनेमि स्वाहा।

विधि —हयं, गजं रथ नावं साष्टशताभि मंत्रितम्। आरोहेद् वाहनंवश्यं वैरी वा वशगो भवेत्।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पासस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महाविजा उग्रे महाउग्रे उग्रजसे पासे सुपासे एस्स माणि स्वाहा।

विधि :—देश पुरग्रामादे कोष्ठागारस्य धूप बलि कर्म। कार्यं शिव च सरुजा शाति, बंहुधनम-पधनस्य। द्विपद चतुष्पद वाड भिमन्त्रणाद् वश्यमथधन निहितम्। सुप्रापयुधि विजय स्वार्थं कृतिः पार्श्वं विधेय।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ महइ महावीर वर्द्धमाण सामिस्स सिज्झप्यसउ में भगवइ महवइ महाविज्या वीरे २ महावीरे सेण वीरे जयंते अजिए अपरा-जिए अणिहए स्वाहा।

विधि —सुवासान नया जप्तान् शिष्य मूर्ध्नि गुरु. क्षिपेत्। स्वकार्यं पारग. स स्यादपविघ्न मिहान्तिमा।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ वढ्ढ माणाय सुर असुर तिलोय पूजिताय वेगे महावेगे निवृंवरे निरालंवणे विटि २ कुटि २ मुदरे पविसामि कुहि २ उदरेतेपे विसिस्सामि अंतरिऊ भवामि मामेपावया ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि —पथियुद्धे द्युते वा स्मरणाद पराजितोऽथ चौराणाम् । व्याघ्रादीना भीतौ मुष्टेर्वंधे भवति शाति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ उसहस्स चरमवर्द्धमाणस्स काल संदीवस्सप, ह समणस्स, विभ्कां पुरीसस्स, सव्वपावाणं हिंसा, बंधंक रित्रा जे अठ्ठे सच्चे भूए भविस्से से अठ्ठे इह दीसउ स्वाहा सवेसुं उं स्वाहा । कारो कायव्वो च उथेण साहणं कायव्वं सव्वासि पंचमंगल नमुक्कारं करिता तऊ सव्वाऊ विभ्काऊ ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ इमं विभ्कां पउंभ्कामि ।

विधि —रामे विजाए सिप्यऊ वार ३ वार जाप्य ज जस्सतिथयरस्य जम्म नखत तमिचेवतम तव कायव्व सव्वाऊ अठ्ठसय जापेण ।

विधि —ये चतुर्विशति विद्या है इन विद्याओं का करने वाला गर्व से रहित होना चाहिए। शान्त चित्त होना चाहिए । ये चौबीस तीर्थंकर के मत्र तीर्थंकर प्रभू के जो जन्म नक्षत्र हो उस रोज से उसी तीर्थंकर के मन्त्र जाप करना चाहिये कौनसा दिन जिस तीर्थंकर का जन्म नक्षत्र है ये अन्यत्र देखकर कार्य करे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूं द्रां द्रीं द्रुं द्रः द्रावय २ हूँ फट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से तेल को १०८ वार मत्रीत करके देने से सुख से प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्री नमः ।

विधि – विधि पूर्वक सवा लाख जाप करके एक माला नित्य फेरने से सर्व काय सिद्धि होती है । सर्व रोग शात होते है । लक्ष्मी की प्राप्ति होती है इस मत्र को एकाक्षरी विद्या कहते है । सात लक्ष जप करने से महान विद्यावान होता है ।

मन्त्र :—ॐ अंखिक्खि महाविसेण विष्णु चक्रेण हूं फट् स्वाहा ।

विधि —इस मत्र से चूर्ण २१ वार मत्रीत करके (सखानिकयोष्टि विकके कर्त्तव्ये) तो आँख रोग शात होना है ।

मन्त्र :—ॐ कालि २ महाकालि रोद्री पिंगल लोचनी सुलेन रौद्रोपशाभ्यंते ठं ठः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से सात वार (घरट्ट पुट लूहण) वस्त्र में बाधकर डोरे से, वामी ग्राँख दुखे तो दक्षिण की तरफ बाँधे और दक्षिण की तरफ आँख दुखे तो वामी की तरफ बाँधे, तो ग्राँख की पीडा शात होती है।

मन्त्र :—ॐ शांते शांते शाँति प्रदे, जगत् जीवहित शांति करे, ॐ ह्रीं भगवति शांते मम शांति कुरु २ शिवं कुरु कुरु, निरुपद्रव कुरु कुरु सर्वभय प्रशमय २, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः शांते स्वाहा।

विधि - स्मरण मात्र से शांति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ वर्द्धमाणस्स वीरे वीरे महावीरे सेणवीरे जयंते अपराजिए स्वाहा।

विधि: उपाध्यायो के वाचन समय का मन्त्र है, परम्परागत है। प्रात. अवश्य ही २१ वार या १०८ वार स्मरण करना चाहिये, फिर भोजन करना चाहिये। इस मन्त्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति, आपत्ति का नाश, राजा से पूज्यता को प्राप्त, लक्ष्मी की प्राप्ति, दीर्घायु, शाकिनी रक्षा, सुगति। (स्याद्धवात्तरे चेन्न करोति तदोपवासोहड. शक्त्यु गुरु पोवादण्ड· जावभी व कालावधि अक्षर २७ मन्त्रेसति—मत्रो न कथ्याप्यग्रे कथनीय· गुरु प्रशादात् सर्व सफल भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अवखीया महाणसस्स तर तर ॐ अवखीण महाणस स्वाहा ॐ क्षीं क्षः क्षः क्षः यः यः यः लः हुं फट् स्वाहा।

विधि :—अनेन वा साक्षता अभिमन्त्रय गृहादौ प्रशिप्ता दोषोनुपमयंति (इस मन्त्र से अक्षत मन्त्रीत कर घर के अन्दर फेक देवे तो सर्व दोप नाश हो जाते है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ संतिजिणस्स सिज्झष्यउ मे भगवइ महाविद्या संति संति पसंति उवसंति सव्वपावं पसमेउ तउसव्व सत्ताणं द्वपय चउप्पयाणं संति देशेगामागर नगर पट्टणखेडेवा पुरिसाणं इत्थीणं नपुंसगाणी वा स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से धूप १००८ वार मन्त्रीत करके घर मे अथवा देवदत्त के सामने उस धूप को खेने से भूत प्रेत डमर मारी रोगो की शान्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो अणाइ निहणे तित्थयर पगासिए गणहरेहिं अणुमन्निए द्वादशांग चतुर्दश पूर्व धारिणी श्रुतिदेवते सरस्वति अवतर अवतर सत्यवादिनि हुं फट् स्वाहा।

विधि .—अनेन सारस्वत्त मन्त्रेण पुस्ताकादौ प्रारम्भ क्रियते प्रथम मन्त्र पठित्वा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः, ॐ ह्रीं नमः कृष्णवास से क्षमौंशत सहस्त्र कोटी लक्षसिंह वाहने फ्रं सहस्त्र वदने ह्म्रं महाबले ह्म्रौं अपराजिते ह्रीं प्रत्यंगिरे ह्म्रौं परसैन्य निर्नाशिनि ह्रीं पर कर्म विध्वासिनि ह्सः परमन्त्रो छेदिनियः सर्वशत्रू घातिनि ह्सौं सर्व भूतदमनि वः सर्व देवान वंधय वंधय हूं फट् सर्व विघ्नान छेदय छेदय सर्वानर्थान निकृतय निकृतय क्षः सर्व प्रदुष्टान् भक्षय भक्षय ह्रीं ज्वालाजिके ह्सौं करालव क्रे ह्सः पर यन्त्रान स्फोट्य स्फोट्य ह्रीं वज्रश्रृङ्खलां त्रोटय त्रोटय असुर मुद्रां द्रावय द्रावय रोद्रमूर्त्ते ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे मम मर्नाश्चतित मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि — इस मन्त्र को स्मरण करने मात्र से सर्व कार्य की सिद्धि हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ विश्वरूपमहातेज नील कंठ विष क्षयः महावल त्रिसूलेनगंडमाला छिद्र छिद्र भिंद भिंद स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से आकडे का दूध और तिल का तेल २१ वार या १०८ वार मन्त्रीत कर गण्डमाल के ऊपर लगावे तो गण्डमाल का रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं क्रां क्रींक्रूं क्रः श्रीशेषराजाय नमः हूं हः हः वं क्रे क्रे सः सः स्वाहा ।

विधि —यह धरणेन्द्र मन्त्र है, इस मन्त्र को कोई भी महान आपत्ति के समय दस हजार जाप करे तो अभीप्ट फल दायक होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्व सिद्धाय नमोरे वार्चनाय यक्ष सेनाधिपतये इदं कार्यं निवेदय तद्यथा कहि कहि ठः ठः ।

विधि —इस मन्त्र को क्षेत्रपाल की पूजा करके क्षेत्रपाल के सामने १०८ वार जाप करे फिर गुग्गल को २१ वार मन्त्रीत करके, स्वय को धूप का धूवा लगाकर सोवे, तो स्वप्न मे शुभाशुभ मालूम होता है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले अमुक कार्य विषये ह्रीं श्रीं क्षी अवतर अवतर मम शुभाशुभं स्वप्ने कथय कथय स्वाहा ।

विधि —काच कर्पूर युक्त प्रधान श्रीखण्डे नालिस्य सिवनि काप्ट पट्ट के जाती पुप्प १०८ जाप्यो देय. स्वप्ने शुभाशुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ चंद्र परिश्रम परिश्रम स्वाहा ।

विधि :—हस्त प्रमाण शरं ग्रहीत्वा रघणि ताडयेत दिन २१ यावत् ततो रघणिर्नश्यति। हस्त प्रमाण शर (बाण) को लेकर इस मन्त्र से २१ दिन तक रंघणि वायु का ताडन करने से रघणिवायु नष्ट होती है।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा ।
(सहश्रं जाप्यः पूर्व १०८ गुणेते स्वप्ने शुभाशुभं कथयंति ।)

विधि :—इस मन्त्र को १००८ बार जाप करके, फिर सोने के समय १०८ बार जाप करके सो जावे तो स्वप्न मे शुभाशुभ मालूम होता है।

मन्त्र :—ॐ अंगे फुमंगे फुअंगे मंगे फु स्वाहा (बार २१ जलमभि मंत्र्यपिवेत् शुलं नाशयति ।)

विधि —इस मन्त्र से जल २१ बार मन्त्रित करके उस जल को पी जावे तो शूल रोग नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे सुध्म सिंहबाह ने सहस्त्र वदने महाबले प्रत्यंगिरे सर्वसैन्य कर्म विध्वंसिनी परमंत्र छेदनी सर्वदेवाणाणी सर्वदेवाणाणी वंधि वाधि निकृंतय निकृंतय ज्वालाजिह्वे कराल चक्रे ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे स्वाहा स्वाहा स्वाहा शेषाणंद देवकेरी आज्ञाफुरइ ४ घट फेरण मंत्र ।

विधि :—इस मन्त्र की विधि नही है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अष्टादश-वृश्चिकाणां बिषं, हर हर, आं क्रूं ह्रां स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढता जाय और बिच्छु काटे हुए स्थान पर झाडा देता जाय तो बिच्छु का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ शिवरि फुट् स्वाहाः ।

विधि —स्ववाकुं प्रमार्जयेत दष्टस्य विष मुत्ररति।

मन्त्र :—ॐ खुलु मुलु स्वाहाः ।

विधि :—वृश्चिक विद्धं आत्मनः प्रर्दक्षणी कारयेत।

मन्त्र :—ॐ कंखं फुट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र की विधि नही है।

मन्त्र :—ॐ काली महाकाली वज्रकाली हनश्रुलं श्री त्रिश्रुलेन स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से कर्ण (कान) का दर्द नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ मोचनी मोचय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

ॐ तारणि तारणि तारय मोचनि मोचय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

विधि —वार ७ विच्छु (खजुरा) डक अभिमंत्र्य विष उतरति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयस्य आवदुक दारुकविवदुक दारुकविवदु विवदु विवदु दारुक स्वाहा । १२ कटो० के० मं० नमः क्षिप्रगामिनि कुरु कुरु विमले विमले स्वाहा ।

विधि —इन मन्त्रो से पानी मन्त्रीत करके जिसके नाम से पीवे, वह मनुष्य वश मे हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अरपचन धीं स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को १०८ वार तीनो सध्याओ मे स्मरण करने से महान् बुद्धिमान हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ श्री वद वद वाग्वादिनि ह्रीं नमः ।

विधि - इस मन्त्र का १ लाख जाप करने से मनुष्य को काव्य रचना करने की योग्यता प्राप्त होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्री श्री वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः ।

विधि - देव भद्र नित्य स्मरणीय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।

विधि - तीन दिन मे १२ हजार जाप करके १ माला नित्य फेरे तो कवि होता है।

मन्त्र :—ॐ कृष्ण विलेपनाय स्वाहा ।

विधि —१०८ वार नित्य ही स्मरण करने से स्वप्न मे अतीत अनागत वर्तमान का हाल मालूम पडता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय क्षल क्षल प्रज्वल प्रज्वल हूं हूं महाग्नि स्तंभय स्तंभय हूं फुट् स्वाहा । अग्नि स्तम्भन मन्त्रः ।

विधि —इस मन्त्र से ७ वार कजिक (काजी) मन्त्रीत कर दीपक के सामने क्षेपन करने से दीपक वन्द हो जायगा । और शरीर मे लगा हुआ ताप शान्त हो जायगा ।

मन्त्र :—ऐं ह्रीं सर्वभय विद्रावणि भयायैः नमः ।

विधि .- इस मन्त्र का स्मरण करके मार्ग मे चले तो किसी प्रकार का भय नही होगा।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रों ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रित करके जिसको दिया जाय वह वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो सुमति भुखाब्जाय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करके धर्म कथा करने से प्रमाणित शब्द होते है। (एनं स्मृत्वा धर्मकथां कुर्वन् गृहीत्वाक्योभवः)।

मन्त्र :—ॐ नमो मालिनी किलि किलि सणि सणि स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को १२ हजार विधि पूर्वक जाप करके १०८ बार नित्य जपे तो सरस्वती के समान वाक्य होते है।

मन्त्र :—ॐ भ्रू भ्रूवः श्वेत ज्वालिनी स्वाहा।

विधि :—अग्नि उतारक मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ चिली चिली स्वाहा।

विधि :—सर्पोच्चाटन मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी क्लीं नमो ॐ अमृते अमृत वर्षणि पट् पट् प्लावय प्लावय ॐ हंसः।

विधि :—अग्नि उतारण मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले वर कमले स्वाहा।
(बार २१ तैलमभि मंत्र्य दापयेत् विशल्याभवति गुर्विणी)

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रित कर गर्भिणी स्त्री को देने से शीघ्र कष्ट से छूट जायगी।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ चंदप्पहस्ससिष्यउ मे भगवइ महइ महाविज्या चंदे चंदे चंदप्पभे सुप्पभे अइप्पभे महाप्पभे ठः ठः स्वाहा। (लाभ करण मन्त्र)

विधि.—इस मन्त्र का नित्य ही १०८ बार स्मरण करने से लाभ होता है।

मन्त्र :—ॐ हः क्षूं क्षूं हः। (शिरोर्त्ति मन्त्र)

विधि. इस मन्त्र से मस्तक को मन्त्रित करने से सिर का दर्दमिटता है।

मन्त्र :—ॐ भूधर भूधर स्वाहा। (खजूरा मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र को पढता जावे और नीम की डाली से झाडा दे तो बिच्छू का जहर नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ पद्मे महापद्मे अग्निं विध्यापय विध्यापय स्वाहा ।

(अग्नि स्तम्भन मन्त्र)

ॐ नमो भगवते पार्श्वचंद्राय गोरी गंधारी सवं संकरी स्वाहाः ।

विधि —(मुखाभि मत्रेण १०८ वार अदियता) ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं मम सर्व दुष्टजनं वशी कुरु कुरु स्वाहा ।

(समरंड मरंमारिं रोगं सोगं उवछवं सयलं घोरं चोरं पसमेउ सुविहि संघस्स संति जणो वार २१ शांतये स्मरणीया)

विधि :—युद्ध मे मरने के समय मे अथवा रोग, शोक, उपद्रव, सकल घोर चोरो के पास मे पहुँच जाने पर अथवा चतुर्विध सघ की शाति के लिये शात चित्त से २१ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ ए हु सुउग्रइ सुरोए जिब्मंति तिमिर संघायां अणलिए वयणा सुद्धाए गंतरमापुणो एहि हुं फुट् स्वाहा । (एकान्तर ज्वर विद्या) ।

विधि .—इस मन्त्र से एकान्तर ज्वर वाले को झाडा देने से ज्वर दूर हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये येनकेन चिन्मगोपरि पापं चिंतितं कृतं कारितं अनुमतं वातत्पापं तस्यवै मस्त के निपत्तउ मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरु शरीर रक्षां कुरु कुरु ह्री प्रत्यंगिरे स्वाहा । ॐ नमो कृष्णस्य मातंगस्य चिरि अहि अहि अहिणि स्वाहा । (अंगुल्यागृरचते भूतं नाशयति)

विधि :—(इस मत्र की विधि उपलब्ध नही हो सकी है) ।

मन्त्र :—ॐ चलमाउ एया चिटि चिटि स्वाहा । (कलवाणि मन्त्र)

विधि :—(इस मत्र की विधि उपलब्ध नही हो सकी है) ।

मन्त्र :—ॐ विमिचि भस्मकरी स्वाहा । (विशुचिका मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र से खुजली दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्रमीलि सुर्यमिलि कुरु कुरु स्वहा ।

विधि —इस मन्त्र से झाडा अथवा पानी मन्त्रित कर देता जावे तो दृष्टि दोष दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो धम्मस्स नमो संतिस्स नमो अजियस्स इलि मिलि स्वाहा ।

(श्रव श्रुति मन्त्र)

विधि :—अनेन मंत्रेण चक्षु कर्णोचाधिवास्य आत्मविषये परविषये च एकांत स्थीतो यत् श्रुणोति तत्सत्य भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्ग्लां जिनचंद्राचार्य नाम गृहणेण अष्टोत्तर शतव्याधीः क्षयं यां तु स्वाहा । (रोग क्षय मन्त्रः अत्थण कंडकं क्रियते ।)

विधि :—इस मन्त्र से पानी से मन्त्रीत करके देने से १०८ व्याधी नाश को प्राप्त होती है, पानी १०८ बार मन्त्रित करना चाहिये । जब तक रोग न जाय तब तक मन्त्रित पानी देवे ।

मन्त्र :—ॐ क्षः क्षः । (कर्णरोगोपशनम मन्त्र)

विधि :—विधि नही है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः । (अग्नि स्तंभन मन्त्र)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः श्रीं नमः ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—अनेन मत्रेण कागुणि (माल कागणी) अक्षीता श्चणका अभिमत्र्यते ततो गुडेन धूपयति गुडे नैव सवेष्प्य भंक्षते विद्या प्रभवति । इस मन्त्र से मालकांगुणी और चना मन्त्रित उन चना और कांगुनी को गुड की धूप लगावे फिर चना और कांगुनी को गुड से वेष्टित करके खावे तो बहुत विद्या आती है । ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्याय असिमसि लुप्तोसि स्वाहा । (अर्कोतारण मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र की विधि उपलब्ध नही हो सकी है ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय मणिभद्राय महायक्ष से नापतये ॐ कलि कलि स्वाहा ।

विधि :—अनेन दतकाष्टं सप्त कृत्वोऽभि मत्र्य प्रत्युषे भक्षयेत् अयाचित भोजन लभते । दतवन के (दातुन) सात टुकड़े करके इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके प्रातः खावे याने दातुन करे तो अनमागे भोजन मिलता है । याने भोजन के लिये याचना नही करनी पड़ती है ।

मन्त्र :—निरु मुनि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से झाडा देने से दात की वेदना शांत होती है ।

मन्त्र :—निकउरि स्वाहा । (विश्रुचिका मंत्र)

विधि —इस मत्र से राख (भस्म) मत्रीत करके खुजली पर लगाने से खुजली रोग शांत होता है ।

मन्त्र :—ॐ अजिते अपराजिते किलि २ स्वाहा ।

विधि :—ऐपा विद्या वैर, व्याघ्र, दष्ट्रिणा वधं करोति कर्करिका सप्ताभिमत्रतां कृत्वा दिक्षु विदीक्षु क्षिपेत्। इस मंत्र से ककरियो को ७ वार या २१ वार मत्रीत करके दिशा विदिशाओ मे फेकने से वैर, व्याघ्र, दात वाले जीवो को वद कर देता है। याने इनका उपद्रव नही होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे ममस्वस्ति शांति कुरु २ स्वाहा।

विधि —यह मत्र सिर्फ स्मरण करने से सर्व प्रकार की शाति होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्री अंबिके उर्जयंत निवासिनी सर्व कल्याण ह्रीं कारिणी नमः।

विधि —इस मत्र को स्मरण करने से सर्व प्रकार का कल्याण क्षेम होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्री कपिले लंगेपुंरो वः महामेघ प्रवर्षणस्य अनेक प्रदीपनकं विज्ञापय २ स्वाहा।

विधि — जाति पुष्पे १०८ मूल साधनं एक विशति कृत्वोऽभिमत्रनेन अविलेन धारादीयते प्रदीपन कन क्रामति।

मन्त्र :—इंदते प्रज्वलितं वज्रं सर्व ज्वर विनाशनं अनेन अभुकस्य ज्वरं वंज्रेण चूर्णयामि यदि अद्यापिन कुर्वसो।

विधि इस मत्र से जल को २१ वार मत्रीत करके पिलाने से ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—धुणसि चंचुलीलवं कुली पर विद्या फट् स्वाहा हूँ फट् स्वाहा।

विधि - इस मत्र का स्मरण करने से पर विद्या का स्तम्भन होता है।

मन्ध :—ॐ अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

विधि इस मन्त्र का स्मरण करने से सर्व कार्य सिद्ध होता है।

यन्त्र :—ॐ हँसः शिव हँसः हं हं हं सः पारिरेहंसः अ (क्षि) चिछ जांगुली नामेण मंतु असुणं तहं पटि जइ सुणइ तो कीडउ मरइ अहन सुणइ तो सत्त वासाइं निधिसो होइ ॐ जांगुलि के स्वाहाः।

विधि —इस मत्र से वालु २१ वार मत्रीत करके साप की वामी अथवा साप के विल पर डाल देवे तो साप विल छोड कर भाग जायेगा।

मन्त्र :—ऐं क्ली ह्सौः रक्त पद्मावति नमः सर्वं मम वशी कुरु-२ स्वाहा ॐ अलू मलू ललू नगर लोकूराजा सर्व मम वशीं कुरु-२ स्वाहा।

विधि – इस मत्र से लाल कनेर के पुप्प २१ वार मत्रीत करके नगर के प्रवेश के समय अथवा राजा के सम्मुख अथवा प्रजा के सम्मुख डाले तो राजा प्रजा नगरवासी सव वश मे होते हैं।

मंत्र:—ऐं क्ली ह्सौः कुडलिनी नमः ।

विधि : - इस मत्र का त्रिकाल १०८ बार जपने से कुभाग्य भी सौभाग्य हो जाता है ।

मंत्र :—पनरस सयता वसाणं दिखु दिंतस्स गोयम मुनिस्स उवगरणं वहु देइ धणऊ धन्नाण भव्वाणं ॐ नमो सिद्ध चामुंडे अजिते अपराजिते किल कलेश्वरी हूं फट् स्वाहा या फुं फट् स्वाहा : इत्यस्य स्थाने स्फुट् विकट करी ठः ठः स्वाहा ऐसा भी होता है ।

विधि · -इस मत्र का स्मरण करने से मार्ग का श्रम दूर होता है ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवते क्रोध रुद्राय हन २ दह २ पच २ हहः स्वचक्रेण अमुकस्य गृहं नाशय स्वाहा ।

विधि —इस मत्र से डोरा को २१ बार मंत्रीत करके ५ गाठ लगावे फिर उस डोरे को हाथ मे बाधे तो सर्व उपद्रव नाश हो जाते है ।

मंत्र :—ॐ आं क्रों प्रों ह्रीं सर्व धुरजनं राजानं क्षोभय-क्षोभय आनय-आनय ममपादयोः पातय पातय आर्कषिणी स्वाहा ॐ नमो सिद्ध चामुंडे अजिते अपराजिते किली २ रक्ष २ ठः ३ स्वाहा ॐ नमो पार्श्वनाथाय ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियांणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ नमो णाणाय ॐ नमो दंसणाय ॐ नमो चरिताय ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवंशकरी ॐ ह्रीं स्वाहा जइतः ।

मंत्रः —ॐ व्रजसेणाय महाविद्याय देव लोकाउ आगयाय मइंघति उं इंद जालु दिशि वंधं विदिशि बंधं आया संबंधं पायालं वंधं सर्व दिशाउ वंधं पंथे दुप्पय वंधं, पंथे वंधं चउप्पयं घोरं आसीविसं वंधं, जाव गंथी न छुटइ ताव ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—वार ७ जपित्वा विपरितं ग्रथी वध्वा वामदिशि कुर्यात ताचल घुनित्पादौ वर्जयेत् ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवऊ वर्द्धमाणस्स जस्सेयं चक्कं जलंतं गच्छइ संयलं महिमंडलं पयासंत लोयाणं भूयाणं भूवणाणं जूए वारणे वारायं गणे वा जंभणे थंभणे मोहणे सव्वसत्ताणं अपराजिऊ भवामि स्वाहा । ॐ नमो ओहिजिणाणं नमो परमोहिजिणाणं नमो खेलोसहि जिणाणं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्राय श्री पदमावति सहिताय ॐ मारक्ष २ महावल स्वाहा । ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शिरोमणि विद्रावकाय स्वाहा ।

विधि .—पुरषस्य दक्षिणेन स्त्रियावामेन वाहुनीया शिरोर्त्ति मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्री पांचाली २ जो इमं विजं कंठे धरिइ सो जाव जीवं अहिणा नड सिझइति स्वाहा। वार २१ गुण सुप्पते

मन्त्र :—ॐ चंडे फुः।

विधि .—इस मन्त्र को २१ वार पढकर फूक देने से विच्छु का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—आदित्यरथ वेगेन वासुदेव बलेनच गुरूड पंक्षिनिपात्रेन भूम्यां गछ २ महावलः ॐ उनीलउ कविलउ भमरू पंखालउ रत्तउ विंछिउ अनंत्तरि कालउ एउ मंत्रु जो मणि अवधारइ सो विंछिउ डंक उत्तारइ।

विधि —इस मंत्र रुपमणि को जो जो धारण करता है। याने स्मरण करता है वह बिच्छू के डक के जहर को उतार देता है।

मन्त्र :—ॐ जः जः २ कविसी गाइ तणइच्छाणि तिणिउप्पन्नी विंछिणि पंचता हांलगिउ अठारह गोत्र विंछिणि भणइनिसुणिहो विंछिय विसुपायाल हं हुं तउ आवइ जिम चडंतु तिम पडंतु छइ पायालि अभिय नव २ कुंड सो अभिउमइ मंत्रिहि आणिउं डंकह दीधउं तइं विसु जाणिउ ॐ जः जः ३।

विधि —इस मन्त्र को पढकर झाडा देने से विच्छु का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—मइदिट्ठी कल्पालिणी श्री उझयिणी मडा चोरंती ब्रह्माधी विलवंती तासुपसा इं मइं शिषव द्वीवलवंति त्रिभुवणु वसिकरउ।

विधि —विधान रक्षा मन्त्र। यहाँ अभिप्राय कुछ समझ मे नही आया है।

मन्त्र :—काला चोला पहिरणी वामइ हथि कपालु हउं शिव भवणहनि सरी को मम चंपइ वारु वाली कपाली ॐ फूट् स्वाहा। (र. वि. मंत्र)

मन्त्र :—वंधस्स मुख करणी वासर जावं सहस्स जावेण हिलि २ विझाण तहारिउ वल दप्पं पणासेउ स्वाहा।

विधि —कृष्ण चतुर्दशी को उपवास करके शुद्ध होकर रात्री मे इस मत्र का १००० जप करके सिद्ध कर ले, फिर १०८ वार प्रतिदिन जपने से शीघ्र ही वधन को प्राप्त हुए मनु का छुटकारा होता है तुरन्त ही वधि मोक्ष होता है।

मन्त्र :—ॐ विधुजिह्वे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धग धग धूमांध कारिणि देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मन श्चिततिं मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—इस मत्र को कपूर चदनादि से थाली में लिखकर सफेद पुष्प अक्षतादि (मोक्ष ५१) ८ १००० पहले जाप करे फिर नित्य प्रति स्मरण मात्र से सर्व कार्य सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री क्लीं ब्लो कलिकुंड स्वामिन् सिद्धि श्रियं जगद्वश मानय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को कपूर चदन केशरादि से पाटा के ऊपर लिखकर २१ दिन मे प्रतिदिन १०८ बार अनशनादि तप पूर्वक जाप करे आदर पूर्वक आराधना करे फिर निश्चित रूप से अभिष्ट सिद्धि होगी । यह मत्र चितामणी है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्सौं देवि पद्मे मे सर्व जगद्वशं कुरु सर्व विघ्नान् नाशय २ पुरक्षोभं कुरु कुरु ह्रीं संवौषट् ।

विधि :—इस मत्र को लाल कनेर के फूलो से १२००० हजार जाप करे फिर चने के बराबर मधु मिश्रित गुगुल की गोली १२००० हजार बनाकर होम करने से मत्र सिद्ध हो जायगा । इस मत्र के प्रभाव से राजादिक वश मे होते है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं पद्मे पद्मावति पद्म हस्तेपुरं क्षोभय क्षोभय राजानं क्षोभय क्षोभय मंत्रीणं क्षोभय क्षोभय हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को भी लाल कनेर के फूलों से और लाल रंग मे रंगे हुए चावल से १२००० हजार जाप करके मत्र को सिद्ध करे । यह मत्र भी वशोकरण मत्र है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु ३ यः भंज भंज हर हर दह दह पच पच गृहन गृहन् माचिरं कुरु कुरु रुद्रो आज्ञापयाति स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र से गुगुल, हिंगु सर्षय (सरसो) साप की केचुलि इन सब को मिलाकर मत्र से १०८ बार या २१ बार मत्रीत करे फिर रोगी के सामने इन चीजो की धूणी देवे तो तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यतरादि, रोगी को छोडकर भाग जाते है और रोगी निरोगी हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ इटिमिटि भस्सं करि स्वाहा ।

विधि —इस मत्र से पानी १०८ बार मत्रीत करके पिलाने से पेट का दर्द शात होता है ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धिः चटकि धाउ पटकी फ़ूटइ फ़ूं जु न वंधइ रकुन वहइ वाट घाट ठः ठः स्वाहा । त्रिम्मादेवी चंडिका लिशिखरु लोही पूकु सुकि जाइ हरो हरः देवी कामाक्षा की आज्ञा फुरै जइ ईहिं पिंडिरहइ पीडा करहिं ।

विधि —इस मत्र को अरणी कडो की राख को १०८ बार मत्रीत कर आँख पर लगाने से आँख की पीड़ा शात होती है ।

मन्त्र :—समुंद्र समुंद्र मांहि दीपु दीप माहिं धनाढयु जी दाढ़ की डउखाउ दाढ़ कीडउ नरवाहित अमुक तणइ पापी लीजउ ।

विधि – इस मत्र से ७ वार या २१ वार (उ जने) मत्रीत करने से दाढ पीडा दूर होती है ।

मंत्र :—ॐ उतुंग तोरण सर्प कुंडली गतुरी महादेवुन्हाइ कसणउ ढलि जाइ वलिछीनउ मूसलिछीनउ कारवविलाइ छीनउ ऊगमुखी पाठ मुखीछीनउ थावरउछीनउ कालहोडीछीनउ वराहीछीनउ वाठसीछीनउ गडुछीनउ गुव-मुछीनउ चउरासी दोषछीनउ अठ्ठासीसय व्यछीनउ छीनी-छीनी भीनी-भीनी महादेव की आज्ञा ।

विधि :—अरणी कडे की राख को मंत्रीत करके उस भस्म को ३ या ५–या ७ दिन फोढे के ऊपर वाधने से दुष्ट स्फोठिकादिक का नाश होता है ।

मंत्र :—आवइ हणवंतु गाजंउ गुड डंउ वाजामोगरिउ आछा कंद रखंउ हाथमोडंउ पायमोडउ चउथि काटइ चउथि उतारइ रक्त श्रुल मुख श्रुल सवे श्रुल समेटि घालिवा पुप्रंचड हणुमंत की शक्तिः ।

विधि — इस मत्र से पानी २१ वार मत्रीत करके पिलाने से और शूल प्रदेश मे लगाने से अजीर्ण विशूचिका शूलादि की शाति होती है । स्त्री के प्रसव काल मे इस मत्र से मत्रीत पानी पिलाने से तत्क्षण प्रसव होता है ।

मंत्र :—एडा पिंगला सुख मिना जडा वीया नाडी रामु गतु सेतु वंधि सुख वंधि मुखा खारु वंधि नव मास थंभू दशमइ मुक्ति स्तंभू ३ ।

विधि - इस मत्र से कन्या कत्रित सुत्र को स्त्री के वरावर नाप कर ले फिर ९ नो लड करके २१ वार मंत्रीत करके उस डोरे को स्त्री की कमर मे वाधे तो गर्भ का स्तंभन होता है और नो मास की पूर्ति हो जाने पर कमर मे वधा डोरा को खोल देने से तुरन्त प्रसव हो जाता है ।

मंत्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रांको चक्र वेगेन घटं भ्रामय-भ्रामय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः जः जः ॐ चक्रवेगेन घटो भ्रामय भ्रामय स्वाहा ॐ भ्रकुटि मुखी स्वाहा ॐ हिमल वंर्ज स्वाहा ।

विधि - घट भ्रामण मत्र –

मंत्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्र वेगेण शंख वेगेन घटं भ्रामय भ्रामय स्वाहा हो ही होरी सणरीसो अदमदपुरी सोडग मएवर्याइउ दिउ दक्षिण दिशा
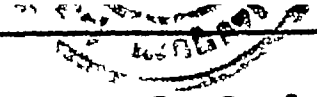
हागी लगा महादेवी किली २ शब्दं जंकार रूपीं अदमद चक्रि छिन्नी २ मडाशिनि छिन्नि २ कंवोडती छिन्नि २ अदमद सामिणि छिन्नी हो ही होरी सणरी सो पर पुरुष दिवायर भंजइ मुद्रयसयाइं तिहिं बारि हिंपइं संताइं कंपइं वहुविह सायरत्ते कम्मइं परिहरहु रायकं पावंती चिगि च्चिगाइं कंवोडी डाइणि फाडइ सिहोही होरी सणरीसोविष नासणि हर चक्रि छिन्नी सुदरशणि ।

विधि :—इस मंत्र से गुगल मंत्रीत करके धूप देने से जो भी बाधा होगी वह प्रकट होगी । अगर भूत की बाधा होगी तो आग मे मन्त्रीत गुगल को डालने से कड़वी बदबू आयेगी, चमड़े की गध आवे तो शाकिनी बाधा, घुसरभि की गध से योगिनी बाधा ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवइ कालि २ मरुलि काक चंडालि ठः ठः ।

विधि :—इस मंत्र को ७ बार मंत्रीत (जप) करके गोबर से मंडल करे ।

मंत्र :—ॐ नमो ब्रह्मदेवश्वराय अरे हरहि मरि पुंडरि ठः ठः ।

विधि :—इस मत्र को १०८ बार जप कर (शाल्योदन सत्कामधु घृत) मिश्रित करके पीड ३ स्थापन करे फिर प्रथम डभ द्वितिये मृदु तृतीये अगारा कल्पनीया प्रथमे काक पाते शीघ्रं वर्षति द्वितीय पक्षेण तृतीये न वर्षति ।

मंत्र :—ॐ ब्रह्मणि विश्वाय काक चंडालि स्वाहा । (काकाह्वान मन्त्रः)

मंत्र :—काम रूपी विपइ संताडावइ परवइ अछइ कोकिलउ भइखु अजिउ सुकोकिलउ भइखु पहिरइ पाऊचडइ हांसि चडइ कंहा जाइ श्री उजेणी नगरी जाइ उजेणी नगरीछइ गंध वाम सणुता हुंछइ सिद्धवटु सिद्धवट हे द्विवल इछइ चिहाचिहां दाडइ मडउं महाहाथि छइ कपालु कपालियंतु यंत्रि मन्त्रु मन्त्रि कासतु कासइं नामतुं नामइ ऐं क्लीं शिरु धूणय २ कटिकंपय२ नाभि चालय चालय दोषतणा आठइ महादेवी तणे वाणे हणि हणि खिलि खिलि मारि मारि भांजि २ वायु प्रचंडु वीरु कोकिल उभइर वु जः जः ह्लः ह्लः ।

विधि :—इस मंत्र को सात बार जपने से दोष नही (प्रभवति) प्रकट होगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु पिशुन चक्षु २ डाकिनि चक्षु २ साकिनी चक्षु सर्वलोक चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु अमुकस्य चक्षु दह दह पच पच हन हन हूं फट् स्वाहाः ।

विधि —यह मन्त्र २१ जपे (कलवाणी मन्त्र)।

मन्त्र :—ॐ चिकिचि णि स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से भस्म (राख) को २१ वार मन्त्रीत करके चारो दिशाओ मे फेकने से मशका नश्यन्ति।

मन्त्र :—ॐ ठों ठों मातंगे स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से सरसो २१ वार मन्त्रीत करके डालने से चूहे नष्ट हो जाते है।

मन्त्र :—ॐ स्वाहा।

विधि — इस मन्त्र से कन्या के हाथ का सूत कता हुआ ७ वार मन्त्रीत करके खटिया के बाध देने से खटमल नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ हर हर भमर चक्षु स्वाहा।

विधि .—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत करके २१ वार, फिर खावे तो दात के कीड़े नाश होते हैं।

मन्त्र :—ॐ क्ल्व्यूं क्ली क्लें शिनि सर्व दुष्ट दुरित निवारिणि हूं फट् स्वाहा। ॐ अमृते अमृत्तोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृत वाहिनी अमृतं श्रावय २ सं सं ह्लं ह्लं क्ली २ ब्लुं २ द्रां द्री दुष्टान द्रावय २ मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु दुःखमपनय २ श्री शांतिनाथ चक्रेन अमृत वर्षिणी स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को २१ वार जपे। (कलवाणी मन्त्र)

मन्त्र :—ॐ समरि समरि सिद्धी समरी आतुरि आतुरि पूरि पूरि नाग वासिणि तं अन्थि वासिणी आकासु बंध पातालु बंधु दिशि बंधु अवदिशि बंधु डाकिणि बंध शाकिणि बंध बंध बंधेण लंकादही तेण हणु एण लोहेन।

विधि – इस मन्त्र को २१ वार जपने से सर्व उपद्रव शान्त होते हैं। (कलावानी कृते)

मन्त्र :—ॐ हिमवंत स्योत्तरे पार्श्वे कठ कटी नाम राक्षसी तस्यानूपुर शब्देन मकुणा नश्यंतु ठः ठः स्वाहा।

विधि .— इस मन्त्र से कीड़ा-कीड़ी नाश होते है।

मन्त्र :—युधिष्ठर उवाचेत्पधिकंच अते वते कार्य सिद्धे विसवंतो अजीन भाठ्ठे किलिकिनिपातेसु गुदिनिपातेसु वातहरिसेसु पीत्त हरीसेसु सिलेसम हरिसेसु

ब्राह्मणो चत्वारो गाथा भणंती काली महाकाली लिपिसिपि शारदा भयं पंथे ।

विधि :—अर्श उपशम मन्त्रः हरिश स्थानेषु श्रूलोचारणे सति श्रूलोपशम मन्त्रः ।

मन्त्र :—आउभूत जीव आकाशे स्थानं नास्ति ॐ असि आउसा ॐ नमः (त्रैयामन्त्र)

मन्त्र :—ऐं क्लीं ह्सौं (योनी, नाभि, हृदय, स्थाने वामा नां वश्यं ललाट मुख वक्षसि नृणां वश्यं)

मन्त्र :—ॐ नमो चामुडा फट्टे फट्टेश्वरी ।

विधि :—अनैनतै ल, सुंट्ठी, च वार ७ प्रदक्षिणा वर्त ७ वामा वर्त्त चामि मत्र्यत्तत स्तैलेन टिक्ककं करणीय सुठयां चूर्णि कृत्यान नस्युर्देया।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं अंबिके आं क्रां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्मक्लीं नमः ॐ ह्रीं ह्रंः श्रीं स्वाहा ॐ ह्रूं मम सर्वदुष्ट जनंवशी कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमो भगवत्ते रिषभाय हनि हनि ते ।

विधि .—इस मन्त्र को प्रात. १०८ बार स्मरण करने से सुन्यतादि सर्व रोग शांत होते है ।

मन्त्र :—ॐ सां सूं से सः वृश्चिक विषं हर हर सः ।

विधि :—अनेन बार २१ खटिकायामभि मंत्रितायां वृश्चिक उतरति ।

विधि :—इस मन्त्र से खटिया को २१ बार मन्त्रित करने से बिच्छु का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ऋषभाय हनि हनि हना हनि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार या १०८ बार जपने से कषायेन्द्रिय का उपशम होता है, विशेष तो निद्रा, तन्द्रा का नाश करने वाला है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंडे २ अमुकस्य आपात्त रक्षणे अप्रतिहत चक्रे ॐ ह्रीं वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे वढ़माणे वीरे जयंते अपराजिए ह्रूं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हत्ति भागवति पारमेश्वरी शांते प्रशांते सर्व-क्षुद्रोपशमेनि सर्वभयं सर्वरोगं सर्वक्षुद्रोपद्रवं सर्ववेला ज्वलं प्रणाशय २ उपशमय २ सर्व संघस्य अमुकस्य वा स्वाहा ॐ नमो भगवऊ संतिस्स सिष्यउ में भगवइ महाविद्या संत्ति संत्ति पंसत्ति पंसत्ति उवसंत्ति सव्वपावं-पसमेउ सव्वसंत्ताणं दुपय चउप्पयाणं संति देश गामा नगर नगर पट्टण खेडेवा रोगियाणं पुरिसाणं इत्थीणं न पुंसयाणं अट्ठसयाभि मंतिएणं धूप पुष्प गंध माला ल कारेणं संति । कायव्वा निरुवसग्गं हवइ ३ ।

विधि – ऐते ि-त्रभिरपिवासा जल च प्रत्येक मप्टोत्तर शत वारान् अभिमंत्र्या· यदा त्वत्फत्सुकं भवति तदा प्रत्येक वार २१ अभिमन्त्र्य हस्तवाहन च ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय वज्र स्फोटनाय वज्र वज्र एकाहिक रक्ष रक्ष द्वयाहिकं रक्ष रक्ष त्र्याहिकं रक्ष रक्ष चातुर्थिकं रक्ष रक्ष वात ज्वरं पित्त ज्वरं श्लेष्म ज्वरं संद्धिपात्र ज्वरं हर हर आत्म चक्षु परचक्षु भूत-चक्षु पिशाच चक्षु शाकिनि चक्षु डाकिनी चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु ठठारिच मारि व त्डिकल्लालि वेसिणि, छीपिणि, वाणिणि, खन्निणि, वंभणि, सु नारिं सर्वेषां दृष्टि वंधि वंधि गतिं बंधि २ ऊडोसिणि, पाडोसिणि, घरवासिणि, वृद्धियुवाणि, शाकिणिनां हन हन दह दह ताडय ताडय भंजय भंजय मुखं स्तंभय २ इलि मिलि ते पार्श्वनाथाय स्वाहा ।

विधि —अनेन प्रत्येक गुणणा पूर्व पचसप्तवा ग्रन्थयो वध्यन्ते ।

मन्त्र :—ॐ क्षु ।

विधि —इस मन्त्र से माथे का रोग दुखना शान्त होता है ।

मन्त्र: —ॐ ह्री चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर रोगं ह्रीं नाशय नाशय स्वाहा ।

विधि —इन मन्त्र से २१ वार अक्षत (तन्दूल) श्वेत मत्रीत करे दुप्ट व्यतर कृत रोग शात होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते सुग्रिवाय कपिल पिंगल जटाय मुकुट सहश्र योजनाय आकर्षणाय सर्वशाकिनिनां विध्वंशनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हणि २ दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि२ भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वर्गिं इंदु पाताली वासुगि अहट्ठ कोडि भूतावलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तिंभि स्तिंभि वंधि वंधि हूं फट् स्वाहा ।

विधि —७ वार स्मरण करने से श्राशान प्रभवति ।

मन्त्र :—ॐ अंगे वंगे चिर चंडालिनी स्वाहा ।

विधि --अनेन वार ७ अभिमत्रीतयो गोमूत्र घृष्टया गुटिकया चक्षु रजने वेलोय शाम्यति ।

मन्त्रः–ॐ सोखाऊ सारू छिन्नउं तडाकु छिन्नउं पडडाकु छिन्नउं गद होडी फोडी छिन्नउं रक्त फोडि छिन्नउं रक्तफोडि कउणि उपाइ देवी नारायणि उपाइछिन्नउं

भिन्नउं अर्जुन कइवाणि नार सिंह कइ मंत्री म्हारइ हाथि शरीर विसइ नाथि चउसट्ठि सह दोष नाथि बावन्नसइ लोंट नाथि आणि आणि कट्टि कट्टि सोखाम्हारउ बुतउं कीजइ काटि फोडी पासिधरजइ अइसउ सोखा तुंवलि वंतउ लायउ लग्रइछदुवियउ छदु इ फूटउफदु उ घाइ लग्रइ वायुसोखाचेट की शक्तिए एसंत्रेन जाहि भस्मेन लहुइउ हंसा ठाउउ उच्चरइ संमुद्रहतीरि पंखपसारइविसुहडइ अइं अहभरइ शरीरउ सरुदिसपसरु हंस समुजीव परिवसइ विदूनास्ति विसुज फोडी छिन्नउं काली फोडी छिन्नउं कविलि फोडि छिन्नउं लोही फोडि छिन्नउं राती फोडी छिन्नउं लुय छिन्नउं पाणि-यलुय छिन्नउं ॐ सुकवण सुकु ॐ हत्तइ संकरु मच्छइ बह्मा टोपइ उट्ठु उट्ठु वइसु वइसु सुकइ करइ कूडि सिरी नाइं गयउ देउ जय जया विजया जेण तेण पंथेण कट्टि धल्लिरिवेडा जइन कट्टि घल्ल इंत महादेव की भार संकल तूपडइ फोडी वैश्वानर तोडी नीस्वरिहि किनीस्वार हू कि वैश्वानरि प्रज्वालउं वज्र स्वादियउं मूलि जिस्व धूलि छलि छिदि छद्मि कालु रुद्र अग्नि उभ्पुड हइ जइ इवु पिंडिरह इज फोडी सिवनास्तिविसु ।

विधि :—अनेन मत्रेण लूतादि फोडी वार ७/२१ (उंजिता श्रुष्यति) मत्रीत करने से लुता-दिक से होने वाले फोडे–फुन्सी शात होते है ।

मन्त्र :—हूं खे रक्षे खः स्त्रीक्षे हूं फट् ।

विधि —लक्ष जाप्यात् मोक्षः ।

मन्त्र :—ॐ इति तिटि स्वाहा ।

विधि —१०८ बार भणित्वा त्रिकाल हस्त वाहनं कार्य कारव विलाइ पीडा नाशयति ।

मन्त्र :—लूण लूणा गरिहि उप्पन्नउं जोगिणिहिउपायउ जाहि गलिनि उरत्ता-विकलिजमण्यु देखिन सक्कइ सुवामिय पातालि ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार मन्त्रीत करके जिसके नाम से खावे वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ अरहंत सिद्ध सयोगि केवलि स्वाहा । ॐ आइच्चु सोमु मंगल बुद्ध गुरु सुक्को शनि छरो राहु केतु सव्वे विगहा हरंतु ममविग्घरोग चयं ॐ ह्रीं अच्चुप्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा आहिय सराहिया हः म्हः यः यों हु वः ऊहः ।

विधि —इस मन्त्र से धूली (मिट्टी) को ५ या ७ वार मन्त्रीत करके, दुष्ट के सामने डालने से दुष्ट उपशम हो जाता है और वश मे हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ हः हः हंसः सः सः हंसः षषः हंसः रः रः हंस क्षः क्षः हंसः जागु हंसः हः हः ।

विधि —अनेन ऊ जनेन कल्पानीये च कालदण्टो जिवति एते स प्रन्यया ।

मन्त्र :—ॐ भगमालिनी भगवते ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा ।

विधि —वस्त्र, पुष्प, पान आदिक मन्त्रीत कर देवे तो वश मे होता है ।

मन्त्र :—ॐ जंभे थंभे दुट्ठमंथं भय मोहय स्वाहा ।

विधि —वासाधूपो जलवा २१ वार अभिमन्त्यते ।

मन्त्र :—ॐ आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्व चक्षु ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से झाडा देने से नजर लगने वाले का दृष्टि दोष दूर होता है ।

मम्त्र :—ॐ दीट्ठि विसुअ ढीट्ठि विसुथावरु विसु जंगम विसु विसु विसु उपविसु उपविसु गुरु की आज्ञा परमगुरु की आज्ञा स्फुरउ आज्ञा स्फुरत्तर आज्ञा तीव्र आज्ञा तीव्रतर आज्ञा खर आज्ञा खरतर आज्ञा श्री का जल नाथ देव की आज्ञा स्फरउ स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से दृष्टि दोप उतारा जाता है ।

मन्त्र :—पाश्र्वोपर्वउ त्रिशुलधारी श्रुल भंजइ श्रुल फोडइ तासुलय जय ।

विधि —इस मन्त्र से पेट पीडा का नाश होता है ।

मन्त्र :—हिमवंनस्यात्तरे पार्श्वे अश्वकर्णो महाद्रुमः तत्रेव श्रूला उत्पन्ना तत्रैव प्रलयं गता ।

विधि शूल नाशन मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ पंचात्माय स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को २१ वार मन्त्रीत करके, ज्वर ग्रस्त रोगी की चोटी मे गाठ देने से ज्वर बन्धन को प्राप्त होता है ।

मन्त्र :—ॐ हुं मुड़न स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से शाकिनी दोष से रक्षा होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय सर्व भूत वशं कराय किनर किंपुरुष गरुड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच शाकिनी डाकिनीनां आवेशय आवेशय कट्टय कट्टय घुर्मय घुर्मय पात्रय पात्रय शीघ्रं शीघ्रं ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः फट् ५ यः ५ वज्र तुंडोमहाकार्ये वज्र ज्वलित लोचन व्रजदंड निपातेन् चन्द्रहास खड्गेन भूभ्यांगच्छ महाज्वर स्वाहा । (ज्वर वाहन क० मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ नमो अप्रति चक्रे महावले महावीर्ये अप्रतिहत्त शासने ज्वाला मालोद्भ्रान्त चक्रेश्वरे ए ह्वे हि चक्रेश्वरी भगवति कुल कुल प्रविश प्रविश ह्रीं आविश आविश ह्रीं हन हन महाभूत ज्वारार्ति नाशिनी एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक ब्रह्मराक्षस ताल अपस्मार उन्माद ग्रहान् अपहर अपहर ह्रीं शिरोमुंच २ ललाटं मुंच मुंच भूजं मुंच २ उदर मुंच २ नाभिमुंच २ कटि मुंच २ जंघां मुंच २ भूमिं गच्छ २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन ज्वरिणि हस्त भ्रामयित्वा ज्वर प्रमाणात्रि गुण कुमारीसूत्र दवरक अमुं बार २१ जपन वेला ज्वरे ग्रन्थि सात एकांत रादौ २ दत्वा स्त्रीणा वामे वाहौ पुरुषस्य दक्षिणे वध्येत् प्रथम दवर करय कुंकुम धूप पूजा कियते ।

मन्त्र :—ॐ यः क्षः स्वाहा कुमारी सूत्रस्य नवतं तवः पुरुषमानेन गृहीत्वाऽनेनाभि मंत्र्यस गुडां गुटिकां कृत्वा भक्षयेत् घृतं वा अनेन बार १०८ अभिमंत्र्य-पिवेत् वालको नश्यति ।

मन्त्र :—काच माचि केष्यिटि स्वाहा ।

विधि :—अणेन चणका वर्षोपलानि वा सूइ वाडभि मन्त्यते कामल वातं नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ श्री ठः ठः (हिडु की मन्त्र:)

मन्त्र :—ॐ सीय ज्वर उण्ण ज्वर वेल ज्वरवाय ज्वरपमूह रोगे व उवसमेउ संतित्तिथयरो कुणउ आरोग्गं स्वाहा । (वार २१ स्मरणीया)

विधि :—इस मत्र को २१ वार जाप करने से हर प्रकार के ज्वर नाश होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ग्लांजिनदत्ताचार्य मंत्रेण अष्टोत्तर शत व्याधि क्षयं यांतु ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से कन्या कत्रीत सुत्र को ७ वड करके १०८ या ७ या २१ मत्रीत करके डोरे मे ७ गाठ लगावे फिर ज्वर पीडा ग्रसीत व्यक्ति के हाथ मे या कमर मे वाँधने से ज्वर गड गुमडादि सर्व दोप नाश को प्राप्त होते है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री क्लीं कलिकुंड स्वामिन् अ सि आ उ साय नमः।

विधि —इस मत्र से कुमारी कत्रीत सूत्र को १०८ मत्रीत करके और डोरे मे ६ गाठ लगावे और कमर मे वाधे तो गर्भ रक्षा भी होता है और गर्भ मोचन भी होता है। ध्यान रखे कि गर्भ रक्षा के लिये डोरा मत्रीत करना हो तो मंत्र के साथ २ गर्भ रक्ष २ वोले और गर्भ मोचन करना हो तो गर्भं मोचय २ मत्र के साथ वोले तो कार्य हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो अइरियाणं ॐ णमो उवज्झायाण ॐणमो सव्वसाहूणं एय पंचणमोक्कारो चउवीसमष्यउ आयरिय परं परागय चंदसेण खमासमणाणं अत्थेणं सुत्तेणं दाढ़ीणं दत्तीणं जरक्खाणं रक्खसाणं पिसायाणं चोराणं मुख बंधाणं दिट्ठी बंधाणं पहार करोमि ह्री ठः ठः स्वाहा।

विधि —इस मत्र से पानी मत्रीत करके उस पानी को दिशोदिशा मे फेकने से दृष्टि दोष शात होता है।

मन्त्र :—ॐ उजेणि पार्टणि को कासु नामवाडहिउ रक्तवाउ छिदउ ताउ छिदउ सूधउली छिदउ फोडि छिदउ फोसली छिदउ दृष्टि छिदंउ शोफु छिदउ ग्रंथि छिदउ २ अनादि वचननेन छिदउ रामण चक्रेण छिदं छिद भिद भिद ठः ठः शिरोत्तौ शिरोति छिदउ स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को वोलता जाय और हाथ से छुरी पकड कर उस छुरी के अग्र भाग को छेदानुकार से घुमावे तो माथे का रोग, फोडे, फुन्सी का रोग शान्त होता है, किन्तु छुरी को फोडे के ऊपर घुमाना पडेगा।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्वनाथाय सत्तफण विभूषित्ताय अपराजित्ताए ॐ भ्रम २ रम, वज्र वज्र आकट्ट आकट्ट अमुकस्य सर्वग्रहान् सर्व

ज्वरान् सर्व भूतान् सर्व लूतान सर्व वात्तान् सर्वोपद्रवान् समस्त बैडाकिन्यो हन हन त्राशय त्राशय क्षोभय क्षोभय विज्ञापय विज्ञापय श्री पाश्र्वनाथो आज्ञापयति ।

विधि :—अनेन बार ७/७ गुण्या ग्रन्थि दीयन्ते अयं मन्त्र खटिकया प्रथमं नव सरावे लेख्यः द्वितीय शरावे चान विछिन्न खटिकया एवं विघ ठ कारत्रयं लिखित्वान्न शरावं अधोमुख उपरि निवेश्य कुमारी सूत्रेण द्वयमपि वेष्टियित्वा सु विधानेन मंचकाधो धरणीय धूपादिना पूजनीय नैवद्य च दातव्य सर्वरोग निवृति ।

मन्त्र :—**ॐ क्रीं ह्रीं रक्ते रक्ते स्वरा इदं कटोरकं भ्रामय भ्रामय स्वाहा ।**

विधि :—श्रावक गृहानीत भस्मना वार ७ परिमार्जयित्वा मंडले स्थाप्यत्ते पूजादिक विधियते ।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवतेन कृताय व्याघ्र चर्म परिर्वात्तित शरीराय यो यो वा जपेयो भवति सोऽस्मिन्पात्रे प्रवेशय प्रवेशय सर सर प्रसर प्रसर चल चल चालय चालय भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय यत्र स्थाने द्रव्यं स्थापितं तत्र तत्र गच्छ गच्छ स्वाहा ।**

मन्त्र :—**रागाइरिउ जई णं जए जिणाणं नमो महं होउ एवं ऊहि जिणाणं परमोहीणं पितंपित्तहा एव मणं त्तोहीणं णंताणं तोहि ज्जयजिणाणं नमो सामन्न केवलिणं भवा भव थाणते सित्तहा सित्तहा उग्गतव चरण वारीण मेवमितो नमो मंह होउ चउ दस दस पुव्वीणं नमो तहिक्कार संगंमि ।**

विधि :—सव्वेसि ए ए सिं एव किच्चा अह नमुक्कार जभिय विज्ज पउंजेसामे विद्यापसि ज्जिज्जा ।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवऊ बाहुवलि स्सेहपगह सवणिस्सं ॐ वग्गुं वग्गुं निवग्गु मग्गंगयस्स सया सोमेविय सोमण सेम हम हुरे जिन वरे नमं सामि इरिकालि पिरिकाली सिरिकाली तह महाकाली किरियाए हिरियाएय संग एतिविह कलियंविरए सुहुमाहप्पे सव्वे सांहते साहुणो वंदे ॐ किरि किरि कालिं पिरि २ कालिं चसिरि २ सकालिं हिरि हिरि कालिपयं पिय सरिध सरे आयरिय कालि ८ किरिमेरिं पिरिमेरिं सिरि मेरिं**

सरिय होइहिरि मेरिं आयरियमेरिपय मपि साहंते सूरिणो सरिमो ९
इयमंत पय समेया थुणिया सिरिमाण देव सूरीहि जिणसिद्ध सूरि
पमुहा दितुथुण ताएण सिद्धिपयं ॥१०॥

मन्त्र :—ॐ नमो गायमरससिद्धस्स बुद्धस्स अवखीणं महाणिसस्स पत्तं पूरय पूरय स्वाहाः। ॐ दिट्ठी मखा विलट्ठी श्री उज्जेणीमउं चरंती ब्रह्मधीय वलवंती तासु पसाइं अम्ह सिद्धि लद्धि वलं त्रिभुवनं वशीकरं (आत्मरक्षा मन्त्र) उच्चिट्टीवर प्रसादात् सर्व सिद्धी तरकणा होइ शांतिदेव की आज्ञा फुरइ।

मन्त्र :—ॐ एकवर्ती सीसवर्ती पंच ब्राह्मण पंचदेव गरुडनी कंचुली पहिरइ मनुनि भ्रंतु वालु वालिहिं विंछिय हवालह नदी प्रवेसु हाथ रक्खउ पागरक्खउ वलिशंकर जीउ राखउ नारसिहणउ वंधु पडइ श्री स्वामिनीणी आज्ञा फुरइ।

विधि —वज्र तागवर प्रशादात् सर्वसिद्धि तरक्कणा होइ शान्ति देवतणी आज्ञा फुरइ।

मन्त्र :—कालीनागिणी मुहिवसइ को विस कटउ रवाइ अंगि अंगि अम्हहरू वसइ कोसंमुहउ न ट्ठाइ।

विधि .—इस मत्र को ३ वार पढकर अपने वस्त्र के अन्तिम छोर पर वाये हाथ से गाँठ लगावे तो मार्ग मे किसी प्रकार का भय नही होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्षीण महाणसस्स त्तर २ ॐ अक्खीण महाणसस्स स्वाहा।

विधि —स्मरण मात्र से ही लाभ करता है।

मन्त्र :—ॐ अट्ठे मट्ठे चोर घट्ठे सर्व दुष्ट भक्षी मोहीनी स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से पत्थरो को मन्त्रीत करके दशो दिशाओ मे फेंकने से चोरो का भय नही होता है।

मन्त्र :—आइवंसे चाइ वंसे अच्चग्रलियं पच्चग्रलियं स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को स्मरण करने से मार्ग मे भय नही होता है।

मन्त्र :—ॐ धनु धनु महाधणु २ कट्टि ज्जंतंसयं न देइ आरोपित गुणं।

विधि :—धनुमार्गे लिखित्वा एन मत्र मध्येविन्यस्य वामपादेनाहृत्य गच्छेत् चोर भय न भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं गरुड ह्लीं हंस सर्व सर्प जातीनां मुख वंधं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार स्मरण करने से १ वर्ष तक साँप नही काट सकता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वग्रहाः सोम सूर्यागारक बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्वर राहु केतु सहित्ताः सानु ग्रहा में भवंतु ॐ ह्रीं असि आउसा स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करने से प्रतिकूल ग्रह भी अनुकूल हो जाते है ।

मन्त्र :—इदस्स वज्रेण विष्णु चक्रशतेन च काका सकुठारेण अमुकस्य कंठान् छिंद छिंद भिंद भिंद हुं फट् स्वाहा । (कांठा मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ झंण्यं अरुणोदय अमुकस्य सूर्यावर्तं नाशय नाशय ।

विधि :—कालातिलराती करडिदर्भरक्त चन्दन फूलः २१ सूर्यावर्त नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ फों फां वो भों मों क्षों यों फट् स्वाहा ।

विधि :—लूतागर्दभादीनां डाकिनीनां भूतपिशाचाना सर्वग्रहाणां तथा ज्वर निवर्त्तको मन्त्रः ।

मन्त्र :—हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे सरधानामयक्षिणी । तस्मान्नूपुरशब्देन विशल्या भवति गुर्विणी ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जल मन्त्रीत करके गर्भिणी को पिलाने से प्रसुति सुख से हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्लां ह्लीं ह्ल ह्लः लूह लूह लक्ष्मी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चना को मन्त्रीत करके खिलाने से कामल रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सवराय इलिमिलि स्वाहा । (शिरोर्ति मन्त्रः)

मण्त्र :—ॐ ह्लीं क्षीं क्लीं आवेशय स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण सर्व विषये हस्त भ्रामण । इस मन्त्र को पढता जाय और रोगी पर हाथ फेरता जाय तो सर्व प्रकार के विष दूर होते है ।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं क्षः उर्द्ध मुखी छिंद छिंद भिंद भिंद स्वाहा । (कलवाणी मन्त्रः) ।

मन्त्र :—डुंगर उप्परिरि सिमुयउ सो अप्पुत्रु वराउ तसु कारणि मइ पाणिउ दिन्नउ फिहउ सूरिय वाउ ।

विधि —इस मन्त्र से सूर्यवात दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ क्षी क्षी क्षी हः।

विधि —इस मन्त्र से सिर दुखना ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ वः ॐ सः ॐ ठः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से मक्खिया उपद्रव नही होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो नमस्त्रित्तये ऊंदर ऊंदर हर हर कर कर चर चर भूवि देसि देसि दास पुरलु ठः ठः अनगार से वितेकुर्वरसंहर संहर सर्व भूत निवारिणी क्ली म्लीं क्ली उत्तालि कालि कालि स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से अपस्मार रोग दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ वज्र दंडो महाकाय वज्रपाणि महावलः तेन वज्र दंडेन् भूमि गच्छ महाज्वरे ॐ नमो धर्माय ॐ नमो संघाय ॐ नमो बुद्धाय ॐ मनै मनै एकाहिक द्वाहिकः त्र्याहिक चातुर्थिक वेलाज्वर वातिक पैतिक श्लेष्मिकः। संन्निपातिक सर्व ज्वरान् अमुकस्य ज्वरं बंधामि ठः ठः।

विधि इस मन्त्र से फल व पानी मन्त्रीत कर खिलाने से बुखार दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे कपिलो नाम वृश्चिकः तस्य लांगुल प्रभावेन भूम्यांपतउ महाविष।

विधि —इस मन्त्र से विच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्वी श्रीं प्रदक्षिणे स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से भी विच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षः।

विधि —इस मन्त्र से भी विच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्री ऋों ठः ठः ठः अष्टादश वृश्चिकाणां जाति छिद छिद भिद भिद स्वाहा ।

विधि इस मन्त्र से झाडा देने पर विच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ अद्भुत मालिनीं ठः ठः स्वाहा।

विधि - इस मन्त्र से विच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ खुर-खुर्दन हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—२१ वार फेरा चउसट्ठिदातव्या ।

मन्त्र :—ॐ क्षिय पक्षियः ३ निर्विषी करणं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उत्तर जाता है

मन्त्र :—ॐ हृदये ठः ।

विधि :—इस मन्त्र का ललाट पर ध्यान करने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ आगि संकरूं पाच्छी संकरूं चालि संकरूं हउं सिउं सिउं संकरूं जइरे वीछिय अचल सिचल बलसि चंडिकादेवी पूजपाइ टालसि वृश्चिक खी भरिवि खप्परू रूहिर मदमांस कर कुकरू डोरिय उडक्कस हुने उरूगही रउतहि चंडि मोरिलु नीसरइ जोगिणी नयणाणां दुत खिखिणि खिरत्तं पालुखिणि खखीछिय खः खः ।

विधि —इस मन्त्र से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अमुकस्य कंठकं छिद छिद भिद भिद ठः ठः स्वाहा । यह कंठक् मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढे ।

मन्त्र :—ॐ विसुंधरी ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार हस्त वाहन श्वान विषोत्तार मन्त्रौ ।

मन्त्र :—ॐ विश्वरूप महातेजठ्: २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से अक्कं विष दूर होता है ।

मन्त्र :—आदिउ आदितपुत्तु अर्क जट मउडधरु लयउ मुष्टिह घउयष्टि रेजः ।

विधि :—इस मत्र से अक्कं विष दूर होता है ।

मन्त्र :—हिमवंत नाम पर्वतो तिणिहालिउ हलु खेडइ सुराहिका पुत्र तसु पाणिउ देसु उल्लहि सिज्झइं सुज्जावत्तउ ।

विधि :—अनेन वार ७ उंजनमपि क्रियते ।

मन्त्र :—गंग वहंती को धरइ कोतहि मत्तउहथि मइ वइ संदरू थांभिय उमहु परमेसरु हथि ता ती सीयली ठः ठः ।

विधि —इस मत्र से अग्नि स्तभन (भवति) होती है।

मन्त्र :—कुंतिकरो पांच पुत्र पंचहि चडहि केदारी तिण्हु तँडतह महिपडइ लोहिहि पडइ ऊ सारु तातीसीयली ठः ठः ।

विधि :—इस मत्र से दिव्य अग्नि भी शात होती है।

मन्त्र :—लइ मदिया वामह (थ) छम्मि कहिया जाहि दव दंतिए मदीय ऋुद सएणं भाणिय भार सहस्सेण वंधोहि वसपविस पडिय मचडिय ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—अनेन वार २१ कुसरणी अभिमत्र्यते ।

मन्त्र :—हिमवंतस्योत्तरे पारे रोहिणी नाम राक्षसी तस्यानाम ग्रहणेन वलिरोगं छिदामि पणरोगं छिदामि ।

विधि :—गल रोहिणी मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ कंद मूले वारण गुण वाणधणुह चडावणु ह चडावणु निक्कवाय सर जावन छिप्पइराव ।

विधि :—यह सरवायु मत्रः । (इस मत्र से धनुर्वात ठीक होता है)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं कलिकुंड दंड स्वामिन् सिद्धि जगद्वशं आनय आनय स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र को प्रात. अवश्यमेव २१ या १०८ वार स्मरण करके भोजन करे तो इस मत्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति आपदा का नाश राजा से पूजित लक्ष्मी का लाभ, दीर्घायु शाकिनी रक्षा सुगति की प्राप्ति। यदि जाप करते हुए छूट जाय तो उसका प्रायश्चित,एक उपवास करना चाहिए। अगर उपवास करने की शक्ति न हो तो जैसी शक्ति हो उस मुताविक प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए और फिर जपना प्रारम्भ करे। जीवन भर इस मत्र का स्मरण करे और गोप्य रक्खे किसी को वतावे 'नही' तो देव गुरु के प्रसाद से सर्व कार्य स्वय सफल हो जायेगे। और सुगति की प्राप्ति होगी।

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते स्वाहाः ।

विधि :—(छेति उतारण मत्र)

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते तखाते हूं फट् स्वाहा । (लावणोत्तारण मंत्रः)

मन्त्र :—ॐ(प) क्षिपस्वाहायः हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से दुष्ट वर्ण शान्त होते है ।

मन्त्र :—ॐ वंक्षः स्वाहा (गड मन्त्रः)

मन्त्र :—नीलीपातलि कविलउ वडुयउ कालउडंवुचउ विहुभांडु पृथ्वी तण इपापी लीजिसिजइ गिडिसि पावसि ठः स्वाहा ।

विधि :—अनेन वार २१ गडोऽभिमन्त्र्यते एतद्भिमंत्रितेन भस्मनाऽक्षि म्रक्ष्यते ।

मन्त्र :—ॐ उदितो भगवान् सूर्योपद्माक्ष वृक्ष के तने आदित्यस्य प्रसादेन अमुकस्याद्धं भेटकं नाशय नाशय स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र को कुंकुंसो से लिखकर कान पर बाँधने से आधा शिशी सिर की पीडा दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ चिगि भ्रां इं चिगि स्वाहा ।

विधि :—अनेन मत्रेण दर्भु, सुइ, जीवरा इ हाथि लेवा इ जइ डावइ हाथि संरावु करोटी वाध्रियते सूइ पुणपाणी माहि घाली जइ खाट हेट्ठिधरी जइ कामल-वाउ फीटइ पडियउ दीसइ ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रुं रौं रं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कामल वात (उज्यते) नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ इटिल मिटिल रिटिल कामलं नाशय नाशय अमुकस्य ह्रीं अप्रत्तिहते स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चना, कडवा तैल, नमक, अजवाइन, मिर्च, सब चीज साथ में लेकर २१ वार मन्त्रीत करके खिलाने से कामल-वात नाश होता है ।

मन्त्र :—हिमवंत उत्तरे पार्श्वे पर्वतो गंध मादने सरसा नाम यक्षिणी तस्याने उर सद्दे ण विशल्या भवति गुर्विणी ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रीत कर शरीर पर तथा मल स्थान पर लगाने से गर्भिणी सुख से प्रसूति करती है ।

मन्त्र :—ॐ क्रां श्रां ह्रीं सों नमो सुग्रीवाय परम सिद्धि कराय सर्व डाकिनी गृहीतस्य ।

विधि .—पाटे पर यंत्र लिखकर अन्दर नाम लिखे, फिर सरसो, उडद, नमक से ताडन करे तो डाकिनी आदि से आक्रंदीत हुआ रोगी का रोग नाश होता है। इस प्रकार का यंत्र बनावें—
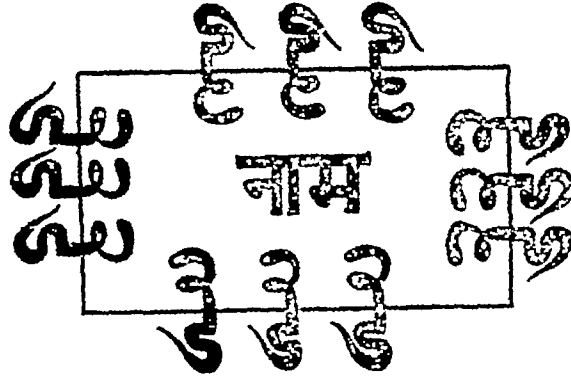
मन्त्र :—ॐ ह्रीं वासादित्ये ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि .—सर्व मूली उन्मूल्यन मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्ष्रीं ३ क्षः ३ लः ३ यः ३ हुं फट् स्वाहा ।

विधि ·—अनेन वासा अक्षत रक्षा वार २१ अभिमन्त्र्य चतुर्दिक्षु गृहादौ क्षिप्पते सर्व दोषा उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रेश्वरी नखाग्रह शिखाग्रह रक्षं रक्षं हुंफट् स्वाहा ।

विधि —कलवाणी मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ दसा देवी केरउ आडउ अणंत देवी केरउ आडउ ॐ विद्धं विद्धेण विजाहरी विजा ।

विधि —गो घृतेन हस्ते चोपडयित्वाविद्वगडोपरि हस्तो मन्त्र भणित्वा वार २१ भ्राम्यते ततो विद्व उपशाम्यति, यदा एत्ता वतापिन निवर्त्तते तदा गोमय पुत्तलकम धो मुखम व लव्य श्रु लाभि विध्यते ततो निवर्त्तते ।

मन्त्र :—ॐ उरगं उरगां सप्त फोडिउ नीसरइ रक्त वइमांसि रांघिणि । छिन्नउ सवाउ हाथुसरीरि वाहयेत् ।

विधि :—अनेन उं जित्ताराधिणि रूपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ प्रांजलि महातेजे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को गौरोचन से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर धारण करने से जुँआ मे जीत होती है ।

मन्त्र :—द्रोण पर्वतं यथा वद्धं शीतार्थे राघवेण उतं तथा वंघयिष्यामि अमुकस्य गर्भं मापत उमा विशीर्यउ स्वाहा । ॐ त्तद्यथाधर धारिणी गर्भ रक्षिणी आकाश माल्र के हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—लाल डोरा को इस मन्त्र से २१ वार जपकर २१ गाठ देवे, फिर गर्भिणी के कमर मे वाध देने से गर्भ पतन नही होता है, किन्तु नो मास पूरे होने पर उस डोरे को खोल देना चाहिए ।

मन्त्र :—ॐ पद्मपादीव ह्रीं ह्रां ह्रः फट्ट जिह्वा बंधय बंधय सवसवे व समानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र मे वच मन्त्रीत करके मुँह मे रखने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्ता वते हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—कन्या कत्रीत सूत्र गाठ देकर लाल कनेर के फूलो से १०८ वार मन्त्रीत करके स्त्री के कमर में वाधने से रक्त प्रवाह नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ अमृतं वरे वर वर प्रवर विशुद्धे हुं फट् स्वाहा । ॐ अमृत विलोकिनि गर्भ संरक्षिणि आर्कार्षणि हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ विमले जयवरे अमृते हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ भर भर संभर सं इन्द्रियवल विशोधिनि हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ मणि धरि वजिणी महाप्रतिसरे हुं हुं फुट् फुट् स्वाहा ।

विधि :—इस पाँच मन्त्रो को चन्दन, कस्तूरी, कुंकुम अलकुक के रस से भोजपत्र पर लिखकर इस विद्या का जाप करे, फिर गले मे वांधे या हाथ मे वांधने से शाकिनी, प्रेत, राक्षसी वा अन्य का किया हुआ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र प्रयोगादि का नाश होता है। विशेष क्या कहे, विष भक्षण भी किया हो तो भी उस विष का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ काली रौद्री कपाल पिंडिनी मोरा दुरित्त निवारिणी राजा वंधउ

शक्तिका बंधउ नील कंठ कंठेहि बंधउ जिह्वादेवी सरस्वती बंधउ चक्षुर्भ्या पार्वती वांधउ सिद्धिर्मम गुरु प्रसादेन ।

विधि .—इस मन्त्र का सदैव स्मरण करना चाहिए। क्षुद्रोपद्रव का नाश होता है, विशेष पंडितो की सभा मे स्मरण करे, चोरो का भय हो तो स्मरण करे, या राजद्वारे स्मरण करे ।

मन्त्र :—रंघणिरंघ वाइ विसलित्ती देवीतिण त्तिणि तिसु लिभित्ती उट्ठी उवहिली जाइव्यडत्ति जावन संकरु आवइ अप्पि ।

विधि —गोवर की गुहली का करे, और एक स्वय दूसरी गुहली का कि जिसको रघणी होती है उसको करके अक्षत से मन्त्रोच्चारण पूर्वक ताडन करे तो रघणी अच्छी हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ घंटा कर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः विस्फोटक भयं प्राप्तं मां रक्ष रक्ष महाबल यत्र त्वं तिष्ट से देव लिखी तो विशदा क्षरैः तत्र दोषान्नुपशामि सर्वज्ञ वचने यथाः ।

विधि '—इस मन्त्र से कन्या कत्रीत सूत्र मे ७ गाठ लगावे, मन्त्र को २१ बार पढे, फिर उस डोरे को कमर मे वाधने से निगडादय उपशम होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्री श्री धनधान्य करि महाविद्ये अवतर मम गृहे धनधान्यं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा ।

विधि —२१ वार स्मरणीया ।

मंत्र —मुर्वण मउडुरक्त आक्षि नील चचु स्वेत वर्णु शरीरिजउमाथइ अनंत पुलकुविहुकाने कु डल तक्षकु शख चूडु वाहर रवइ वासुकिककोलु विह पाए नेउल शखद्वय पाय हे दि्ठ अरकत्रुयानि ब्रह्मपुत्र खत्रु चरसि अखत्रुजिनवर सिजज्ञाकारिजाइ विसुखर का खारिहिखाइ विमुलल्लाकारि लेइ विसुलिहि किलिहि हँस किलिहिलि हि हँस जसु चदुठा इसोविमुखय हजाइ लोहिउ समप्पियउ तासु मइ जीवि उ समप्पियउ आदित्य कालिज्जसमप्पियउ कालागणी रुद्र फोफस अरि रे उट्ठी २ ।

विधि —अनेन । वार २१ अपरान्हे दिन ७ डाभिउ जित्ता दुष्ट फोडी का वलु पीहउ चरहलु रॉधण्यादिक मुपशाम्यति गूहलिकद्वाय मध्येवा स्व पादादिक भ्रियते ।

मंत्र .—ॐ वीरिणो विवात पित्तापि इटि २ हस मंस भक्षणे दास हरण व्याधि चूरणह दुगत मांसगत तेज गन गलगड गंड माला कुरु हुटिया रोगो रुधिर हरो गुह्य कुंभ करणो

पंचमो नास्ति कलिंग प्रिये वात हरस्यां अधो मुखी देवी नव शिर-धरे छत्री हरिय भट्ठ धरिय उसव्वसभावाइ खीलउ परमथि-आपणी पर मुद्र दी धी जग वाउ भमर वाउ हदु वाउ रक्त वाउ राघणि सव्ववाउ सिद्धिहि जाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से प्रत्येक प्रकार के वात रोग ठीक होते है। मंत्र पढते जाये और झाड़ा देते जाये।

मंत्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रयपद्मावति सहिताय कि नर कि पुरूषाय गरुड गंधर्व महोरग यक्षराक्षस भूत पिशाच शाकिनीना सर्वमूल व्याधि विनाशाय काला दुष्ट विनाशाय वज्र सकल भेदनाय वज्र मुष्टि स चूर्णनाय महावीर्य पराक्रमाय सर्व मन्त्र रक्षकराय सर्वभूत वंश कराय ॐ हन २ दह २ पच २ छिन्नय २ भिन्नय २ मुच्चय २ धरणेन्द्र पद्मावति स्वाहा ॐ नमो भगवते हनुमताय कपिल पिंगल लोचनाय वज्राँगमुष्टि उद्दीपन लकापुरी दहन वालि सुग्रीव अजण कुक्षि भूषण आकाश दोष बधि २ पाताल दोष वधि २ मुद्गल दोष बाँधि एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर वात ज्वर धातु ज्वर प्रेत ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्व ज्वरान् सर्वदह २ सर्वहन २ ह्री स्वाहा कोइलउ कंट ग्रलउ पुज्जित्तउ फुलल वंवालु आपणो शक्ति आगलो खेलावइ हीमवेत्तालु चल्लावइ एक जाति चालि छन्न चालि प्रकट चालि जर उल्रोडि ल्रीउ ल्रोडि चउरासी दोष कोइलउ हणउ वापुशक्ति कोइलावी रत्तणी ३ ।

विधि :—एभिस्त्रिभिमर्त्रे. प्रत्येक कलपानीये कृते पायित्ते सर्वे दोषा उपशाम्यसि, एकैकेन वार ७ अभिमंत्र्यतया खटिकया नव शरावे, ठ, कारे लिखिते ऊसीसाधोत च निद्रा समा-

याति ॐ संयुक्तं नमस्कार पद पंचकं लिखित्वा चिप्टिका वद्धा नवर क्षति मातृका नमस्कार वाचक्र लिखित्वा तच्चिप्टि काउ छीर्षं के घृताराबौ मुप्तस्य सर्वोप द्रवान्नाशयति। इस मन्त्र के विधि का भाव विशेष समझ मे नही आता है।
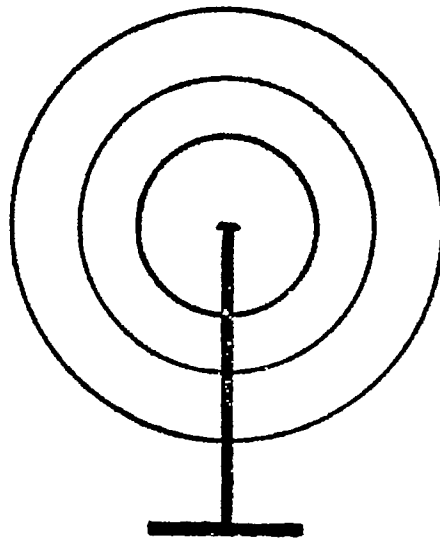
मन्त्र · ॐ खत्रिउ काला कुट विस वन्नउ सूद्रिका सद्धूलिउ वन्नउ वाय ससउ हरियालउ वन्नउ चारि विस चारि उवन्नउ अट्ठारह जाति फोडी २ जानिर्विसी होइ शनेश्वर वारिउ हु जाय उरेविस खपनि का जाती पीगला पूत माह मासि अधारी चउदसिरे वति नक्षत्रे धारउ जन्मु भयउ मू टिठ हयउ दीट्ठि तोलियउ खाउ अत्तोलियउ खाउ पल खाउ पलसउ खाउ भार खाउं भारसउ खाउ अदीट्ठउ खाउ हउ खाउ तुहुन खाइ कउणुखाइ श्री नरडा मडैवु खाउ जरे विस फूटि होइ माटी त्रेत्रीस कोडि देवता खाधउ वाटि तिहु त्रिभुवन शिव नास्ति विसु ठ ठ श्री नील कठ की श्राज्ञा सोषाराउल की आज्ञा शिव शक्ति नास्ति वि सुजरे विस ज ज । 7422

विधि —विसत्रिभुवनि हि नास्ति विसु ।

मन्त्र —ॐ नमो पास पत्ताय भस्म जटाय शमशान रचिताय वग्घ चम्म पहिरणाय चलु—२ रे चालु २ रे डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाच छलु छिद्र जाणु विनाणु गुप्तु प्रकटु चउरासी यत्र चूरि २ चउरासी मन्त्र चूरि २ पराई मुद्रा चूरि २ आपणी मुद्रा प्रकट करि पाराइ भाँजि घालि वापु श्री महादेव तणी आज्ञा वाधि भीडि श्राक्रसि सर्वइ दोप जिकवणइ श्राथि गुप्त प्रकटति सवइ वाधि आणिघालि महारा पाग हेट्ठि ३ दीहउ रीस नीरसउ अद वद व पुरी सो दग मग चरितउ उट्ठियद क्खिणादिसि हिम देव किलि २ शव्दइ जकार रूपिहि अदवद वक्कइ छिंदि मडा सिणि छिंदि अहमद साविणि छिदि कवाडत्ती छिदि २ ही हउरीस निरीसउ परपोरिसि दिवाकरू भु जसि मु ध सामिते वार नइ पसता कपइ व हुव वसायर ते कचापरिहरिगय की पात्ती चग भगउडी करमीडउ डाइणि फोडिसि होरी सणत विसनासण हरि छदि सुदरि सणि । ॐ नमो श्ररिमत्र राजाय कुछितविटँ वनाय अनत शक्ति सहिताय अष्ट कुल पर्वत वाँधि आढार भाव वनस्पती वाधि नव कुल नाग वाधि सात समुद्रि वाधि श्रट्ठासी सहस्त्र रिपि वाधि नवानवइ कोडियक्ष वाधि विष्णु रुद्र वाधि नव कोटि देव वाँधि छप्पन्न कोटि चाउडा वाधि श्रट्ठारह पवणि वाधि छतिस राजकुली वाधि मालिणि वाधि कल्लालिणि वाधि तेलणी वाधि ब्राह्मणि वाधि सर्वइ दोप वाधि जिकवण दोष आथि गुप्त प्रकटति सर्व दोप वाधि भीडि आक्रसि आणि घालि महारा पाग हेट्ठि वडइ वेगि वायु २ अरि मन्त्र य वायण की शकि वाधि २ भिडि २ आक्रसि २ वड वेगि वाधि २ ।

विधि —इस मत्र से पानी मत्रीत करके देने से श्रथवा झाडा देने से सर्व प्रकार के दोष चाहे व्यतर डाकिनी शाकिनि राक्षस भूत प्रेतादि कृत हो चाहे दृष्टि दोप हो चाहे परकृत यत्र मत्रादि हो सर्व प्रकार के दोप इस महा मत्र से शात होते है ।

मन्त्र :—आय मानंन त्तेज आइत्त मान पहिरणउँ हुंकारइ आवइ जकारइ जाइजः ३ ।

विधि :—स्नात्र काराप्य अक्षतै स्ताम्यते गुगुल दीयते तृतीय ज्वर नाश्यति ।

मन्त्र :—जदुहुल त्रशनि वेसिय ॐ उप्पाइया सिरत्ति जउं हण वंति कलि काउ किउच तिन दुक्कातत्ति कालु काले महाकाले ।

विधि :—एक श्वास मे सात वार अथवा तीन श्वासमे इक्कीस वार हाथ पर सिर धरे तो सिर का दर्द शात होता है ।

मंत्र :—ॐ नमो सुग्रीव सया कल विकुल जाटयागण गधर्व जरकर कस बेताल भूत प्रेत पिशाच डाइणि सिर सूल पेट सूल आकाश पाताल कन्यका ॐ नमो पार्श्वनाथाय जस्सेय चक्कं फुरतंगच्छइ तेण चक्केण जटुट्ठ दुट्ठ विस चउरासी वायाउछत्तीस लूताय सत्तावीसं अध गडाइ अट्ठावीस फुल्लियाऊ छिंदी २ भिंदि २ सुदरिसण चक्केण चद्र हास खड्गेन इन्द्र वज्रेण हु फट् स्वाहा ।

विधि :—दर्भेण गडवाउ उजितो वार २१ निवर्त्तते फ उपवास कृत्वा सध्यायांपयश्च पीत्वा प्रभाते कृष्ण चनकान् भक्षयित्वा मुष्टि प्रमाण कुब्जक जटा षष्टिक तंदुलकेन पिष्टाय: पिवति तस्य अभारि निवर्त्तते ।

मन्त्र :—सोहुया कारणी पहुया वालिरेऊँ पजारे जरालं किली जइ हणुया नाउं हर संगर की अगन्या श्री महाधव भराडा की अगन्या देव गुरु की अगन्या जरो जरालंकि ।

विधि :—डोरा को दश वड करके उस मे दश गाठ लगावे मन्त्र १०८ बार पढे । मंन्त्र पढ़ता जावे और डोरे मे गाठ लगाता जावे । उस डोरे को गले मे या हाथ मे वांधने से वेला ज्वर, एकातर ज्वर, द्वयातर ज्वर, त्रयतर ज्वर का नाश होता है । इसी प्रकार गुगुल को भी मन्त्रीत कर जलाने से सर्व ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ॐ शंकरू महादेव देहि सिद्ध तेल ।

विधि :—इस मन्त्र से काच तेल अभिमन्त्रित (नश्यया) करके सू घे तो सर्व प्रकार के सिर दर्द नष्ट होते है। और इस तेल से गुमडा, फोडा, घाव, अग्निदाह इत्यादिक अच्छे होते है ।

मन्त्र :—ॐ सद्यवाम अघोर ईसान तत् वक्तः ।

विधि :—इस मन्त्र को एक श्वास में ३ वार जपने से माथे का दर्द शात होता है। और विच्छू का जहर उतर जाता है ।

विशेष :—अनेननि श्वासेन वार मेक विधिना, एव वार त्रय जपित्ते शिरोर्त्ति वृश्चिक मुतरति कालु वरी चूर्ण ग० ८ पल द्वय क्काथपलिका मध्ये अधा घाडा वावची वीज चूर्ण त्र्यंगुली प्रक्षिप्त पीते सरिषप तेले अभ्यगेद भूत श्वेत कर्कं टीनि वर्त्तयति, टकण

खारम्य वासित्त जलेण लेपे सर्वमपि साडं निवर्त्तयति, सुवर्ण माक्षिक केलरस पली हरियाल मणसिल गन्धक निंबु या रस पलि अभ्यगेनद भूत निवृति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां आं क्रों क्षां ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं पद्मावती नमः ।

विधि .—इस मन्त्र को सफेद पुष्पो से १००८ दस दिन तक जपे तो सर्व सिद्धि करने वाला होता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्त जट्ट रक्त रक्त मुकुट धारिणि परवेध संहारिणी उदलवेधवंती सल्लुहणि विसल्लुचूरी फट्ट पूर्वहि आचार्य की आज्ञा ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से परविद्या का छेदन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ३ दिन मे १०८ पुष्पो से श्री पार्श्वनाथ भगवान के सामने जप करे तो सर्व सम्पदादिक होती है । तीनो दिन १०८–१०८ पुष्प होने चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय हिली हिली मिलि मिलि चिली चिली किली किली ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्रौं क्रौं क्रौं यां यां हंस हंस हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—सर्व ज्वर नाशन मन्त्र ज्वरानतर देव कुल दर्शनायाग्रह ।

मन्त्र —ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्री श्री ह्री नम ॐ तक्षकाय नम उत्कट विकट दाढा रुद्रा कराय नम हन हन दहि दहि पचि पचि सर्व ग्रहाणा वधि वधि भूताना राशि राशि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि शोपि शोपि भक्षि भक्षि य यू. ज्वलि ज्वलि प्रज्वलि प्रज्वलि वायु वीरु ॐ नीलासूया कता ग्राया का हु जाणइ ग्राखु जाणइ आपद्रेट्ठि परद्रेट्ठि माय वाप केरी द्रेट्ठि ग्राडासी पाडासी की द्रेट्ठि नाट्ठु केरी द्रेट्ठि शिहरीउ मूलु अजीर्ण व्याधि हणुमत तणी लातभस माते हो जिउ ॐ वीर हनोवता अतुल वल पराक्रमा सर्वव्याधि छिनि छिनि भिनि भिनि त्राशय त्राशय नाशय नाशय त्रोटय त्रोटय स्फोटय स्फोटय वाधय वाधय वधइ वघेण लकादहि तेण हणूएण हू फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ वार जपने से व्याधि वध होती है ।

मन्त्र :—हन हन दह दह पच पच मथ मथ त्रास सागी सत्वयारे वछ नाग नारो वोल घिमोर उपांग आवहु पुत आवहु सुणहु विचारहु हछि

हिलइ विसु दिट्ठि हिमारुद्र कवि सवी सवावीस उपवीस चइ वारि भार विस माटी करउ संज्ञा ही नास्ति विसनाश य य क्षोभय क्षोभय विक्षोभय विक्षोभव माविलाशय २ ।

विधि :—इस मन्त्र को ऊपर वाले मन्त्र के साथ जोड़कर पूरा मन्त्र ७ वार जपने से विष उतर जाता है ।

मन्त्र :—**श्रूल महेश्वर जइ द्वारि पर्वत्ते माला चारि समुद्र माहि लु लंघि हंस भस्म अधूली सिरि गंभारी परतू स लखुण पर जीवउ जिया स्वहि कुमारीकं मकरेइ हंसु विनय पूतु गुरुड्ढु सवास सहस्त्र भार पर-विसुनि वद्धउं ।**

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से विष बधन को प्राप्त होता है अथवा नष्ट होता है ।

मन्त्र :—**ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं सर्व ज्वरो नाशय नाशय सर्व प्रेत नाशिनी ॐ ह्रीं ठः भस्वं करि फट् स्वाहा ।**

विधि :—इस महामन्त्र को जपने से अथवा २१ वार पानी मन्त्रीत कर पिलाने से पेट दर्द, अजीर्ण आदिक नष्ट होते है ।

मन्त्र :—ॐ ह्री वातापिर्भक्षितोयेन पीतोयेन महोदधि समेपीत च भुक्तं च अग स्तिर्जर यिष्यति ह्री ॐ कारे प्रथम रूप निराकारे प्रसूत शिवशक्ति सम रूप विन्न काल भैरव कालउ गोरउ क्षेत्रपालु जक्ख वइज नाथु कलि सुग्रीव करी आज्ञा फूर इ ज·हो महाज्वर २ जाल जलती देवी पद्मावण वेगिव हृति देवि सहर मारि पइट्ठी देवी इ वकुविसुइ स्ववीस विस वावीस म वाघ विसुत हमहु वद्धी सिद्धि गठिलं कह हु तउ नीसरइ गडयड तु गाज तुट जाहो महाज्वर २ ।

विधि —नाग वल्ली पत्रपरि जप्य क्षरि तस्यदेय कर्णे वा दृप्ट प्रन्यय· ।

मन्त्र :—**ॐ नमो भेलि विखए गिन्हामिम दिया सव्व दुट्ठ आमदिया सव्व मुहमह लक्खिया स्वाहा ।**

विधि —इस मन्त्र को १०८ वार १० ककर को मन्त्रीत करके दशो दिशाओं मे फेकने से मार्ग मे चोरादिक का भय नही होता है ।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिजिनः शांतिकरः श्री सर्वसंघ शांति विदध्यात् अर्हं स्वाहा ॐ ह्रीं शांते शांतये स्वाहा ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये ।**

विधि :—वार १०८ दिन ७ यस्य कार्यणादि दोषै सस्मारणीय ततोयेन दोष कृत स्यात्तस्यैव पतति राजप्रसाद वैरिम्म तन्नास्ति यदि तो नस्यात्त् पर प्रत्यगिरादि यत्राग्रत. कार्य हिंगु भाग १ वचा भाग २ पिप्पली भाग ३ सू ठि भाग ४ यवानी भाग ५ हरीतकी भाग ६ चित्रिक भाग ७ उपलोठ भाग ८ एत च्चूर्णं प्रात रूथा योष्णोद-केन २१ पेय कास, श्वास, क्षय रोग, मन्दाग्नि दोप प्रशम कार्मण चैत दौष: धात् प्रशमति ।

मन्त्र :—रे कालिया निष्य खिल्लउं सहता लुया ठः ठः । (ये कीलणी मन्त्र हैं)।

मन्त्र :—रे कालिया जिष्य मुक्की सहत्तालुयायः यः स्वाहा।(ये कीलणी मन्त्र है)।

मन्त्र :—ॐ ज्रं ज्रां श्री हा हंसः वं हं सः क्षं हंः सः हा हं सः स्थावर जंगम विष नाशिनी निर्जरण हंस निर्वाण हंस अहं हंस जुं ।

विधि —जल अभिमत्रयपाय येत् यदि जीर्यते तदा जीवति अन्यथा मृत्यु ।

मन्त्र :—ॐ हंसः नील हंसः महा हंसः ॐ पक्षि महापक्षि सर्प्पस्य मुखं वंध गति वंधं ॐ वं सं क्षं ठः । इस मन्त्र से सर्प का ग्रहण होता है ।

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों नृं ठः ।

विधि —इस मन्त्र से वोच्छु और साप का जहर वध जाता है। वृश्चिक सर्प विषये-कडक वध ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते ऋषभाय जैनमति मोनमति रोदन मति स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से वच सात, मन्त्रीत करके खावे तो महा बुद्धिमान, निरोगी होता है।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्री कीर्तिमुख मंदिरे स्वाहा ।

विधि इस मन्त्र को उपदेश देने के समय मे प्रथम स्मरण करे तो श्रोतागण आकर्षण होते है ।

मन्त्र :—ॐ यः रः लः त्यज दूरतः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र का प्रात नित्य ही १०८ वार स्मरण करने से कार्मणादि दोप नाश होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंते (उत्पति) स्वाहा । वाहुवलि चत्तारि सरणं पवज्जामी

इत्यादि। ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ णमो आइरियाणं ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।

विधि : इस मन्त्र का स्मरण करने से स्वप्न मे शुभाशुभ मालूम होता है और दुस्वप्नों का नाश होता है।

मन्त्र :—इति पिसो भगवान अरिष्ट सम्म संबुद्धो विज्जावरण संपन्नो सुगतो लोक विद्ध अनुत्तरो पुरुष दमसारथी शास्तादेवानां च मानुषाणं च बुद्धो भगवाजयधम्मा हेतु प्रभवा तेसां तथागतो अवचेतसांयो निरोधो एवं वादी मह समणो।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपकर दुपट्टे मे गाठ लगाकर ओड लेने पर किसी भी प्रकार के शस्त्रो का घाव नही लग सकता, रण में सर्व शस्त्रो का निवारण होता है। इस मन्त्र के स्मरण मात्र से जीव बन्धन मुक्त हो जाता है। चोर भय, नदी मे डूबने का भय, राज भय, सिह व्याघ्र सर्पादि सर्व उपद्रव का निवारण होता है। यह मन्त्र पठित सिद्ध है, इस का फल प्रत्यक्ष होना है।

मन्त्रः—ॐ अरिट्ठ नेमि बंधेण बंधामि पर दृष्टि बंधामि चौराणं भूयाणं शाकिणीणं डाकिणीणं महारोगाणं दृष्टि चक्षु अंचलाणं तेसि सव्वेसिं समणं बंधामिगइ'वंधामि हुं हुं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं सव्व अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहुणं मम् ऋद्धि वृद्धि सर्व समीहतं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का प्रात. और शाम को उभय काल में बत्तीस २ बार स्मरण करना चाहिये।

मन्त्र :—णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं इत्यादि। ॐ नमो भगवइएसुयदेवयाए सव्व सुय मयाए सरस्सईए सव्व वाइणि सुवन्न वन्ने ॐ अरदेवी मम शरीरं पविस्स पुछंतयस्स मुहंपविस्स सव्वं गमण हरीए अरहंत सिरीए स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का प्रात १०८ बार जप करने से महाबुद्धिमान होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रं मम् अमुकं वशी कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार स्मरण करने से इच्छित व्यक्ति वश में होता है।

मन्त्र :—ॐ अव्वुप्ते मम् सर्व भयं सर्व रोगं उपशामय २ ह्रीं स्वाहा अर्हं स्वस्ति लंकातः महाराजाधिराज समस्त कौणाधिपतिः अमुक शरीरस्थं अमुक ज्वरं समादिशतिय थारे रे दुष्ट अमुक ज्वरं त्वयापत्रिका दर्शनादेव शींघ्र मागतव्यं अथ नाग छसित दाते सिर श्चंद्रहासखङ्गेन कर्त-यिष्यामि हुं फट्ः मा भणिष्यसि यन्नाख्यात्तं ।

विधि —इस मन्त्र को कागज पर लिखकर, रोगी के हाथ मे उस कागज को बाधने से वेला ज्वरादि भाग जाते है।

मन्त्र :—ॐ हर हर हुं हः दूतां श्रुकि पृछ कस्य प्रछादिकां ।

विधि —प्रकुमित्रात्तन्नोऽनेनमत्रेण वार १०८ जपित्वा पुनरापिमीग्ते वृद्धौ वृद्धि शुभ च लाभादि पृछाया ह्यनैथ हानिर श्रुभ च ।

मन्त्र :—ॐ ब्राह्मणी २ अहो कहो बलिकंठकाः खविलाई लेऊ लेऊ हिव जाहो ।

विधि —अनेन वार ३२ हस्तस्य स्पर्श विधानेन वलि काठा काख विलाइउप शाम्यति दृष्ट प्रत्ययोय ।

मन्त्र :—ॐ लावण लाइ वाधि थण लउ काख विलाइ अर्जुन कइ वाणी छीन उती ह्र इ अर्जुन भामि जाइं विलाइ ।

विधि —अष्टोत्तर शत वेल रक्षामभि मन्त्र्य दीयते ।

मन्त्र :—ॐ समुंद्र अवगाहिनी भृगु चंडालिनी नव लुन जलु हुं फट् स्वाहा । कु ५ कुआइ २ नु ५ तुआइ ३ ए ६ जः ३ तक्षकाय नमः ।

विधि —देव पूजा पूर्वक जल, इस मन्त्र से मन्त्रीत करके देने से डक का विष उतर जाता है। शिस्या दिक्षा एकात ज्वर, तृतीय ज्वर, भूत, शाकिनी का निग्रह होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्री श्रीस्फ्रां सिद्धिः गणनाम विद्येयं ।

विधि —इस मन्त्र को एरड के पत्ते पर लिखकर रास्ते मे उस पत्ते को फैक देने से शाकिन्यादि मार्ग से हट् जाते है। इस मन्त्र को नीव के पत्ते पर लिखकर, उस पत्ते को पानी मे फेक देने से शाकिन्यादि जल त्तरंति स ब्रत्ययोऽय ।

मन्त्र :—ॐ कल्व्यूँ ॐ मम्ल्व्यूँ ॐ तम्ल्व्यूँ ॐ ड्म्ल्व्यूँ ॐ हल्ल्यूँ ॐ सम्ल्व्यूँ ॐ क्ष्म्ल्व्यूँ ॐ ग्म्ल्व्यूँ ॐ खम्ल्व्यूँ ।

विधि :—इन नव कुटाक्षर को मंडल पर लिखकर पूजा करने वाले व्यक्ति की प्रत्यक्ष रूप से शाकिन्यादि आकर सेवा करते है। और सब दुष्टादिक उपशमता को प्राप्त होते है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से १०८ सफेद पुष्पो से ३ दिन तक जप करने से श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के सामने, तो सर्व सम्पत्तिवान होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स गण हरिस्स अक्षीण महाण सस्स सव्वाणं व छा थाणं सव्वाणं पत्ताणं सव्वाणं वथूणं ॐ अक्खिण महाणसिया लद्धिहवउ मे २ स्वाहा।

विधि :—प्रात उपयोग वेलाया विहरण वेलाया चेतन वेलायां च स्मरणीय वार २१ मंत्रभिमंत्रणीय देय वस्तु अभिमन्त्र्य दातव्यं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ला ह्वा प्लक्ष्मीं स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार स्मरण करने से स्वप्न में शुभा शुभ प्रकट करता है।

मन्त्र :—ॐ अरण भद्रे नदी-चारे स्वाहा।

विधि :—गांव व नगर मे प्रवेश करते समय मिट्टी को सात बार मत्रीत करके फेकने से गाँव में मागे बिगर भोजन की प्राप्ति होती है। याने भोजन के लिए याचना नही करनी पड़ती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति वागेश्वरी अन्नपूर्ण ठः।

विधि —इस मन्त्र को नगर मे प्रवेश करते समय २१ बार जपे तो भोजनादिक का लाभ हो।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रों क्लीं ब्लूं जंभे जंभे मोहे वषट्।

विधि :—इस मन्त्र का हाथ से जाप करने पर सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः।

विधि :—अनेन मन्त्रेण शीतलि का दोष हस्तो वाहनीय स्ताम्नि वृति र्भवति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ अ आवि सोषागजंति गडडं तिमेघ जिम धउ हडंति मडा मसाण भखंतु ईणइं छंदइतुए परि चल्लइं फाटइ फूटइ धमाह लग्गइ भूत प्रेत भीडउ मारइ नव ग्रह तुट्ठा चालइ वाप वीर श्री परमेश्वरा एकल्ल वीर अहुट्ठ कोडि रूप फोडि निकहइ

एक रूप मेल्हि उजेणि महि कालि गगन खाली भूत पंचास वांधि चेडउ वांधि चेटकु वांधि एकंतरु बांधि वेतरउ बांधि त्रेयतरउ बांधि चालंतउ दोपु चरडकइ काटि ।

विधि —इस मन्त्र से कन्या कत्रित सुत्र मे ३ गाँठ लगाकर उन तीनो गाठ के मध्य मे (कोलिया पुट) डाले फिर उस डोरे को हाथ मे वाँधे तो एकातरादि ज्वर का नाश होता है। प्रत्यक्ष वात है।

मन्त्र :—यं रं लं वं क्षः ।

विधि —वलि कृष्ण कवल दव रकेनअनेन वार २१ जपित्वा वधयेत वलिर्याति ।

मन्त्र :—ॐ तारे तु तारे वीरे २ दुर्गा दुत्तारय २ मां हुं सर्व दुःख विमोचिनी दुर्गोत्तारीणी महायोगेश्वरी ह्री नमोस्तुते ॐ ह्रां ह्री ह्रूं ह्रूं सरसुं सः हर हुं हः स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र का १०८ वार स्मरण करने से सर्व शाति होती है। सर्व उपद्रव का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ पासनाहस्सथं भेउ संत्वाउ ई ई ऊजिणा एमा इह अभि भवंतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ वार जाप करने से, इति, का उपशम होता है। जिस क्षेत्र मे इस मन्त्र से भस्म और अक्षत १०८ मन्त्रीत करके फेकने से और इस मन्त्र को भोज पत्र पत्र लिखकर खभे पर वाँधने से किसी प्रकार की इति नही होती है।

मन्त्र :—ॐ नमों शिवाय ॐ नमो चंड गरुडाय क्लीं स्वाहा श्री गरुडो आज्ञा पयति स्वाहा विष्णुं क्लीं २ मिलि २ हर २ हरि २ फुरु २ मूषकान् निवारय निवारय स्वाहा ।

विधि इस मन्त्र से सरसो मन्त्रीत कर डालने से चूहे नही रहते है।

मन्त्र :—ॐ प्रसन्न तारे प्रसन्ने प्रसन्न कारिणि ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से शाति मिलती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री ब्रह्म शांते श्री मदंवि के श्री सिद्धाय के श्री अछुप्ते श्री सर्व देवता मम् वांछितान् कुर्वन्तु सर्व विघ्नान्निशंतु सर्व दुष्टान् वारयंतु ह्रीं अर्हं श्री स्वाहा ।

विधि :—स्मरणादेव पूजापुर. सर कर्त्तव्येति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं कुष्मॉडि देवि मम् सर्व शत्रुं वशं कुरु २ स्वाहा ॐ ह्रीं क्लीं सर्व दुष्टेभ्यो मां रक्ष २ स्वाहा ।

विधि .—अश्वनी नक्षत्र मे घोडे के पॉव की हड्डी ४ अगुल प्रमाण इस मन्त्र से मन्त्रीत करके शत्रु के गृह मे डालने से शत्रु के सर्व कुल का उच्चाटन हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ खुर खुरीभ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र मे कुत्ते के पाव की हड्डी अगुल ५ की लेकर ७ बार मन्त्रीत करके जिसके गृह मे डाल देवे वह अधा हो जाता है और फिर उसको अतिसार रोग होकर मर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ भद्र यटा मल धरति सु ठः ठः स्वाहा ।

विधि .—धतुरा कुली ५ मसाण धूलि इन दोनो को लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर इस मन्त्र से मन्त्रीत कर शत्रु के घर मे डालने से उच्चाटन हो जायेगा । आद्रा नक्षत्र मे लाल कनेर की कील अगुल ४ प्रमाण लेकर इस मन्त्र से ७ बार मन्त्रीत करके जिसके घर मे डाल दी जाय वह वश मे ही जाता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं स्वाहा ।

विधि :—मघा नक्षत्र मे अपा मार्ग की कील ४ अगल इस मत्र से सात बार मन्त्रीत करने के जिसके घर मे गाड दिया जाय वह वश मे हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ खिली खीली स्वाहा ।

विधि .—अनुराधा नक्षत्र मे, सरीष की कील अगुल ४ प्रमाण इस मन्त्र से सात बार मन्त्रीत करके जिसके घर मे डाल दिया जाय, वह वश मे हो जाता है यदा तस्य सत्कपुष्पो परिकीलिका मारीजते तदा स्वस्त्रियो वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ स्वदार दार स्वाहा ।

विधि ·– स्वाति नक्षत्र मे बाडि (बगीचा) की कील अगुल ४ प्रमाण इस मन्त्र से ७ बार मत्रीत करके तेल से बर्तन भरकर उस तेल में वह कील डाल कर तेल से युक्त बर्तन को जिस घर मे गाड देवे तो तेल न भवति ।

मन्त्र :—ॐ तटमर्टय स्वाहा ॐ व्याघ्र वदने व्रज देवी सप्त पाताल भेदिनी यज्ञक्षस प्रतिक्षोभिणी राजा मोहिनी त्रैलोक्य वंश करणी परसभा जय २ ॐ ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जपने से प्रतिवादि की जिह्वा का स्थभन होता है ।

मन्त्र :—ॐ जहि हुंधरणि सरजिइत्तछ हु धरी सरत्ति जाहण वंत किल किय उगइ न आवाईत्ति ॐ फट स्वाहा । एकल्ल सुंदरि हेलिविसु संवर्ग सुन्दरि हरहि विषु न दृष्टि विसु न अदृष्टि विसु मन्त्र कइ जं जंकार इति निसाणक शब्द त्रिभुवने नास्ति विसु ।

विधि —मयण हल मूल काष्ट वार ७ जपित्वा निशान च वार ७ जपित्वा निसाण काष्टे ना हन्यते यत्र २ शब्द श्रुयते तत्र २ स्थावर विष न प्रभवति ।

मन्त्र :—अस्ति तिउडि मइ चलति पत्ती ठी वहरी काल मेघ मइ आवत दीट्ठि दाडिम हुल्ली सव्व कहा जग हिल्ली मोर तु त्रात्रु तोरवु भरकु मइ दी एह उत्तइ लीयउ तु हु आगइ पाड कहि जन जाइ आदि तउ अत इदीन्हनु आथ वतइ लइ वात कहि वापु काल मेघ वहिरी की शक्ति अ ल ल ल ल ल ।

विधि —काच शरावे पूतलक श्मसाने कोइलेन लिखीत्वा वार ७ पुष्प जपित्वा २ सप्तपुष्प
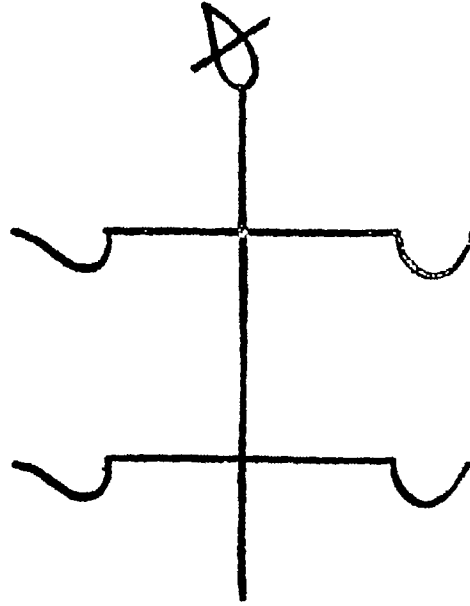
या वत्पूज्यते गुगुल गुलिका चउ दाह्यते दिन ७ यावत् रात्री विधानं एक जाति पुष्पाणि ग्राह्याणि तत्तोयन्नाम्ना जप्यते स कष्टो भवति । पानीयस्थाने य शरावे क्षिप्ते सुस्थो भवति । पर प्रावप्रार्थ्यते जतु हतु स्वामिनि मेरहा वतु तदामोच्य अन्यो मोचयितु न शक्य ।

मन्त्र :—हिमगिरि पर्वतु त हांथि तु पवणु उच्छलियउ कवणु ऊछालइ हणवंतु ऊछा लइ नींव की लकड़ी डालइ हिमगिरि पर्वति लेपाडइर चोरक्खु चार रक्खु ए बोल जतु प्रमाण न करहीतउ ईश्वर पार्वती पूज ढालहि ठ रे ठ : २।

विधि · - नीव की लकडी हाथ मे पकड कर रोगी के माथे पर ३ बार घुमावे और मन्त्र पढते जाये तो असणी पात वार येत्। नदी मध्ये पूर्वोक्त वर्द्धमान विद्यात्रि रुच्चरन् शिरसि पूर्वाभि मन्त्रित वासान्निक्षिप्त ततस्त छिरसि ह्री कार त्रिवलयित क्रौ कारात विन्यस्य तदुपरि गुरु स्व हस्त कृत्वा ह्री कार मेक विशति वारान् ध्यायति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं स्वां क्रीं त्रीं श्रीं प्रीं सर्व संपू भगवति भट्टारि के महा पराक्रम वले महाशक्ते क्षां क्षीं क्षूं मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

विधि · –इस महा मन्त्र को प्रभात समय मे २१ वार नित्य जपने से सर्व प्रकार के रोग नष्ट होते है। श्रेयश्चकर होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं नमि ऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्री नमः। (इति मूल मंत्र)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलि कुंड स्वामिनि अप्रति चक्रे जये विजये अजिते अपराजिते नंभे।

विधि ·—उपदेश के समय जप कर उपदेश करने से श्रोताजन आकर्षयति अगर सामने पर चक्र भी आ रहा है तो भी इस मन्त्र का ३ दिन तक जप करने से पर चक्र भाग जायेगा, दुष्ट जन का स्थभन करता है और मनुष्यो को वश मे करता है। (स्मृतो मास ६ निरन्तर बार १०८ स्मर्यते तत ऊर्द्ध वार २१ चित्राग्रेण।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय नमः ॐ ह्रीं सर्व विद्याभ्यो नमः ॐ ठः ३।

विधि . – इस मन्त्र को ६ महीने तक निरन्तर १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। फिर ७ या २१ बार जपने से सर्प जाति का भय नही होता है। पजुसरण पारण के पडु पूजियइ-पड आगइ वार १०८ स्मर्यते।

मन्त्र :—ॐ ह्री पंचाली २ जोइ मंविज्जं कंठे धारइ सो जावज्जीवं अहिणानड सज्जइत्ति स्वाहा।

विधि :—वार २१ गुणियित्वा सुप्यते।

मन्त्र :—ॐ ह्री चामुंडे वज्रपाणे हुं फट् ठः ठः।

विधि —गुप्ति मोक्ष विषये मासु १ सहस्त्र उभय सध्यं गुणनीय ग्रह विग्रहा दौच।

मन्त्र :—ॐ सरल विषात् सिरकती नाशय नाशय अर्द्ध शिरोतौ सिरकती स्थाने अर्द्ध सिरकति।

विधि —आदित्य शुक्र वारयोरिम अर्द्धत्रट्टिकाया लिखित्वा कुमारी सूत्रेण वेष्टयित्वा पक्का क्षर सयुक्त मर्द्ध श्रुनोदीयते अन्यदर्द्ध शिरोर्तिमान् भक्षयति।

मन्त्र :—ॐ इलवियक्ष ॐ सिलवियक्ष।

विधि :—इस मन्त्र से लोहे को कील ७ वार मन्त्रित करके पूर्वाभिमुख लकडी के खभे मे ठोके, स्वय पश्चमाभिमुखेन् दाढ रोगिण सकाशात् कीलिका खोटन च आनाय्यते स्तोक निक्षिप्य पुनर्वार ७ जपित्वा निक्षिप्यते पुनर्वार ७ सकलानिक्षिप्यते तत्पार्श्वा-द्वस्तु १ परिहार्यते। इस प्रकार करने से दाढ पीडा नष्ट होती है।

मन्त्र :—ॐ ठ्ठ्ठः ॐ ह्लं क्षूं जंभे ॐ ह्लं क्षूं स्तंभे ॐ ह्लं क्षूं अंधे ॐ ह्लं क्षूं मोहे।

विधि —इस मन्त्र को कपडे पर लिखकर धारण करना चाहिये। (इमवहि का पट्टे लिखित्वा पार्श्वेधार्य्य)।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हुं फट् ॐ ह्लां ह्लीं ह्लं ह्लैं ह्लौ ह्लः।

विधि —इस मन्त्र को पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के सामने १०८ वार जपने से वेला ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :— ॐ चंडि के चक्रपाणे हुं फट् स्वाहा।

विधि —(इसकी विधि उपलब्ध नही हो सकी है।)

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्व चंद्राय गौरी गांधारी सर्ववशंकरी स्वाहा। ॐ नमो सुमति मुख मंडये स्वाहा।

विधि —आम्यापृथक वार १०८ मुखभामिमन्त्र्य वाम हस्तेनवादा दौ गम्यते।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं अछुप्ते मम श्रियं कुर कुरु स्वाहा ह्लीं मम दुष्ट वातादि रोगान् सर्वोपद्रवान वृहतो नु भावात् ठः ३ मक्षिका फुंसिका गुरुपादुके अमृतं भयं ठः ३ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को ३ बार जपकर भोजन करने के लिये बैठने से मक्खीयाँ नही आती है। और सर्व प्रकार के वात रोग नष्ट होते है।

मन्त्र :—ॐ एहि नंदे महानंदे पंथे खेमं भविस्सइ पंथे दुपयं बंधे पंथे बंधे चउपयं घोरं आसीविसं बंधे जाव गंठी न छुटइ स्वाहा। ॐ नमो भगवऊ पार्श्वनाथाय ह्रयं धरणेन्द्राय सप्तफण विभूषिताय सर्व वातं सर्व लूतं सर्व दुष्टं सर्व विषं सर्व ज्वरं नाशय २ त्रासय २ छिद २ भिंद २ हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके देने से दृष्टि ज्वरादिक शात होते है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं विजय महाविजये सर्व दुष्ट प्रणाशिनी महांत मुख भंजनि ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जपे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ज्वीं लाह्वापलक्ष्मीं चल २ चालय२ स्वाहा।

विधि —कृष्णाष्टम्या चतुर्दश्या वा उपोषितेन् सहस्त्र १००८ जाप्य.—ततासाधिते सर्व स्वप्ने कथयति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं बाहुबलि प्रलंब बाहु बलिगिरि २ महागिरि २ धीरबाहुवले स्वाहा। ॐ बाहुबलि प्रचंड बाहुबलि क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः उर्द्ध भुजं कुरु२ सत्यं ब्रूहिर स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को कायोत्सर्ग १०८ जाप्य:।

मन्त्र :—ॐ ज्रीं ह्रां ह्रीं ह्रें नमः।

विधि :—बार ३३ जाप्ये राजकुले तेज आगच्छति।

मन्त्र :—ॐ स्वैरिणी २ स्वाहा।

विधि :—पूगीफलादिक वार १०८ जपित्वायस्य दीयत्ते स वश्यो भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं अरेअरणि म्हारिणि मोहिणी २ मोहय२ स्वाहा।

विधि —जिन आयतन मे इस मन्त्र को १०८ बार जपे फिर फलादिक को ७ बार मन्त्रीत कर जिसको दिया जाय वह वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ मातंग राजाय च्लि २ मिलि मितक्ली अमुकस्य रक्तं स्तंभय २ स्वाहा ।

विधि :—शुक्ल (सफेद) रंग के डोरे को इस मन्त्र से २१ वार मन्त्रीत करे, फिर उस डोरे को वाधे तो स्त्रियो का रक्त श्राव वध होता है ।

मन्त्र :—करुणी वरुणी हुइव हिणिरात मुहि रातपूठी पारे अछउ श्रीघोडी भेडु उतार उपहर मलाउभतु संचारउ जहिवहर उतेही पहरिसंसारउ ।

विधि —वार २१ वातग्रस्थस्य श्वस्य हस्त वाहन घोडा हस्त वाहन मन्त्रः । मानुषस्यापि रक्तं निष्कासिते हस्तो वाह्यते ।

मन्त्र :—वज्रदंडो महादंडः वज्रकामल लोचनः वज्र हस्त निपातेन भूमौगछ महाज्वरः एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नश्यंतु त्रिभिः ।

विधि —एप मन्त्रो वहुकरि तृणेन चूना रसेन् नाडा वल्लीदले लिखित्वा यस्य ज्वर आगच्चति तस्य पार्श्वाह् क्षापनीय ज्वर नाश्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं फे नमः ।

विधि —लक्ष जापेन वधनात्मुच्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्री श्रीं झ्रौ झ्रां कोदंड़ स्वामिनि मम वंदि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि .—रोज सवेरे दोनो समय दक्षिण की तरफ मुख करके रौद्र भाव से १०८ वार इस मन्त्र को जपे तो वन्दि–मोक्ष ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्म नंदेश्वर हूं ।

विधि इस मन्त्र को १०८ वार जपने से पाप से मुक्ति मिलती है । ५०० वार जपने से वह विशेष रूप, १००० जप से अपमृत्यु चालयति, २००० जप से सौभाग्य करोति, रात–दिन मे ध्यान करन से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । (वृद्धि होती है) और १ लाख जाप करने से वन्दि मोक्ष, सर्व प्रकार का दारिद्र नाश होता है ।

मन्त्र :—उद्धीध गधगंती प्रज्वलंती हणइ झाल गुरुपदेशी नामार्ज्जनपार्या ।

विधि —ध्यायती सिद्धि स्तभयति घात वात अग्नि दग्वलावणा दौपिछादिना उँजन कल्पानीय सर्वमुप शमयति दृष्ट प्रत्यय ।

मन्त्र :—ॐ वीर नारसिंहाय प्रचंड वातग्रह भंजनाय सर्वदोष प्रहरणाय ॐ ह्रीं अम्ल व लूं श्रीं स्फीं त्रोटय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र से दुष्टवातादि उंजनं ।

मन्त्र :—लइंद्रेण कृतं द्वारं इन्द्रेण भ्रकुटी कृतं भंजती इः कपाटा नि गर्भं मुंच सशोणितं हुलु हुलु मुंच स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रीत करके पेट के ऊपर मालिश करे, और पानी मन्त्रीत करके पिलाने से सुख से प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ धनु २ महाधनु २ सर्वधनु धीरी पद्मावती सर्वदुष्ट निर्दल स्तंभनीनि मोहनी सर्वासु नामिराजा धीनामि सर्वासुनामि राजाधि नामि आउ बंधउ दृष्टि बंधउ मुख स्तंभउ ॐ किरि २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को दक्षिण हस्त से धनुष–बाण चलाने की मुद्रा से जपना, सर्व प्रकार से दुष्ट जनों के मुख का स्तम्भन करने वाला वह सर्व उपद्रव दूर करता है ।

मन्त्र :—ॐ गगनधर मट्टो सर्यालि संसारि आंवट्टो धरि ध्यानु ध्यायउ जुमग्रउ सुपावउ आपणी भक्ति गुरु की शक्ति धरपुर पाटण खोमंतु राजा प्रजाखोभंतु डाइणि कुकुरु खोभंतुवादी कुवादी खोभंतु आपणी शक्ति गुरु की शक्ति उँ ठः ३ ।

विधि :—इस मन्त्र से मिट्टी को मन्त्रीत करके माथे पर रखने से या पास मे रखने से सर्व जन वश होते है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः महादुष्ट लूता दूष्ट फोडी व्रण ॐ ह्रां ह्रीं सर्वं नाशय २ पुलिं तखङ्गेन् छिन भिन्न २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल २१ या १०८ वार मन्त्रीत करके लगाने से और राख (भस्म) मन्त्रीत करके लगाने से सर्व प्रकार का गड गुमड फुंसी आदि शांत होते है ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ॐ संकरु महादेव देहि सिद्धि ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल १०८ बार मन्त्रीत करके गडमाल उपर लगाने से गंडमाल अच्छा होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहऊ भगवऊ मुखरोगान् कंठरोगान् जिह्वा रोगान् तालु रोगान् दंत रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्त्तय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी मन्त्रीत करके कुल्ला करने से सर्व प्रकार के मुख रोग शांत होते है ।

मन्त्र :—ॐ डाऊ चेडा उन्मन मोखी बावन वीर चउसट्ठि योगिणि छिंद २ भिंद २ ईसर कइत्रि सूलीहृण वंत कह खङ्गि छिन्न २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि वार २१ उ जनेन कर्ण मूलादि उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सेथउ घोडउ ब्राह्मणी कउ घोडउल कारे लागइ जकारे जाइ भूत बांधि प्रेत बांधि राक्षस बांधि मेक्षस बांधि डाकिनि बांधि शाकिनी बांधि डाउ बांधि वपालउ बांधि लहुडउ गरुडु वडउ गरुडु आसनि भेदु २ सुबांधिकसु बांधि सकसु बांधि सकसु बांधि जइने मेरउ वुतउ करहि परिग्रह स चक्रु भीडी धरि मारि बापु प्रचड वीर नार स्यंध वीर की शक्ति धरी मारि बापु पूत प्रचंड सीह ।

विधि :—इस मन्त्र को धूप से मन्त्रीत करके जलाने से और रोगी पर हाथ फेरने से भूतादि उपशमति ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं नमो सिद्धाणं नमो अणंत जिणाणां सिद्धयोग धाराणं सव्वेसि विज्जाहर पूत्ताणं कयंजली इमं विज्जारायं पउंजामि इसामे विज्जापसिध्यउ आर कालि बालकालि पुंस हररेउ आवतवो चडि स्वाहा ।

विधि —पृथ्वी पर सात कंकर लेकर इस मन्त्र से २१ वार या १०८ वार मन्त्रीत कर विकने वाली दूकान की चीजो पर डाल देने से शीघ्र ही उस सामान की विक्री हो जाती है

मन्त्र :—ॐ अरहऊ नमो भगवऊ महइ महावर्द्धमाण सामिस्सपणय सुरासुर से हर वियलिय कुसु मुच्चिय कमस्स जस्स वर धम्म चक्कं दिणय रविं वं व भासुर छांय ते एण पज्जलं तं गच्छइ पुरऊ जिणिदस्स २ आयसं पायालं सयलं महि मंडलं पयासं तं मिछत मोह तिमिरं हरेइति एहं पिलोयाणं सयलं भिविते लुक्के चिंतिय सितो करेइ सत्ताणं रक्खं रक्खस डाइणि पिसाय गह जक्ख भूयाणं लहइ दिवाए वाए ववहारे भावउ सरं तोउ जुएय रणेरायं गणेय विजयं विसुद्धप्पा ।

विधि —इस वर्द्धमान विद्या स्त्रोत का पाठ करने वाले के रोग शोक आपदा शांत होती है ।

मन्त्र :—ॐ महादंडेन मारय २ स्फोटय २ आवेशय २ शीघ्र भंज २ चूरि २ स्फोटि २ इंद्र ज्वरं एकाह्निकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्दिकं वेला ज्वरं

सम ज्वरं दुष्ट ज्वरं विनाशय २ सर्व दुष्टानाशय २ ॐ ७ र ७ ह्रो स्वाहा २ य : ३ ।

विधि :—इस मन्त्र को अष्टमी अथवा चतुर्दशि को उपवास करके १०८ बार जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। और यह मन्त्र सर्व कार्य के लिए काम देता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रा ह्रीं ह्रौ ह्रः ।

विधि :—इस मन्त्र से डोरा रगीन वड करके २१ वार मन्त्रीत करके हाथ मे बाधने से तृतीय ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा। (सर्व कर्म झरा मंत्र)

विधि :—विशेषत. शाकिनी गृहीतस्य सर्षापान् गृहीत्वा शाकिन्या कर्षयेत्। एकैक सर्षप सप्ताभिमन्त्रीत कृत्वा जलभृत कटोरक मध्ये क्षिपेत् ये तरति ते शाकिन्य. समेन शाकिन्य विषमेण भूत अथ न तदा भूत शाकिनी मध्याद् एकोपि ना अनेन मन्त्रेण सप्ताभि मन्त्रीत कृत्वा उदुषल ताडयेत् यथा २ ताडयेत् तथा २ आक्रदति। एतेन् चोवर सप्ताभि मत्रित कृत्वा उद्धी कृत्य स्फोटयेत् रुपिण्यो नश्यति अनेन् मन्त्रेण युग्मगृहीत्वा सप्ताभि मन्त्रीता क्रित्वा उद्वीकृत्य स्फोटयेत् रुपिण्यो नश्यंति। अनेन मन्त्रेण अजा लिडि कामे काकी विध्यात् शाकिन्या गृहीतस्य खट्वाधः शराव स पुट धारयेत् शाकिन्या नश्यति रक्षा वधयेत्।

मन्त्र :—ॐ क्रां क्रीं क्रौं क्षः हः रः फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से सरसो लेकर पढता जावे और रोगी के ऊपर सरसो डालता जावे तो भूतादिक रोगी को छोडकर निश्चित ही भाग जाते है।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र मौलि सूर्य मौलि स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से डोरे को २१ बार मन्त्रीत करके जिसकी आँख चक्षु दुःखती हो उस मनुष्य के कान मे उस डोरे को बाधने से चक्षु रोग पीडा नष्ट होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो आर्या व लोकिते स्वराय पझे फुः पद्म वदने फुः पद्म लोचने स्वाहा।

विधि :—भस्म वार २१ जपित्वा टिल्लक त्रियतेततो दृष्टि दोषो निवर्तंते हस्तवाहन च। इस मन्त्र से भस्म २१ वार जप कर तिलक करने से दृष्टी दोष याने नजर लगी हो तो ठीक हो जाती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अग्र कुष्मांडिनी कनक प्रभेसिह मस्तक समारुडे अवतर २ अमोघ वागेश्वरी सत्यवादिनी सत्यं कथय २ ॐ ह्रीं स्वाहा।

विधि —मासमेकं दशमी मारभ्य १०८ जपित्वा पचमी दशम्योर्विशेपत तप कार्य यामिन्यर्द्धि अविचलेन वार ७ जाप्य ।

अयं यंत्र लेखन विधि .—वसन्तु १ ग्रीष्मु २ प्रावृट ३ शरद ४ हेमन्तु ५ शिशिर ६ एक दिन मध्ये पट् रितवो भवति दश २ घटिका प्रत्येक ऋतु प्रमाण अहोरात्रि मध्ये पट् भवति घटिका ६० आदित्योदयात् वसत ऋतु घटिका. १० तत्राकर्पण १ ग्रीष्मे, द्वेपण २ प्रावृटे, अपरान्हे उच्चाटण ३ लिखेत् सर्वत्र योज्य शिशिरे मारण लिखेत् ४ शरदे शातिक लिखेत् ५ हेमते पौष्टिक लिखेत् ६ पन्नगाविप शेषरा विपुलारूणा वुजविष्ट राकुकुटोरग वाहना अरुण प्रभा कलला ननात्य विका वरदा कुशायतप शादिव्य फलांकिताचितयेत् पद्मावती जपता सता फलदायिनी दिवकाल मुद्रासन पल्लवाना भेद परित्ताय जपेत्समत्री न चान्यथा सिध्यति तस्यमत्र । कुर्वन् सदा तिष्ठति जाप्य होम ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हति भागवति परमेश्वरी शांते प्रशांते सर्वक्षुद्रोप शामिनि सर्व भयं सर्वं रोगं सर्वं क्षुद्रोपद्रवं सर्वं वेला ज्वरं प्रणाशाय २ उपशमय २ अमुकस्य स्वाहा ।

विधि :—वार ७४ ऽ १०८ अनेन मत्रेण दवरक वासादिमभिमन्त्र्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री चंद्र वदनी माहेश्वरी चंडिका भूतप्रेत पिशाच विद्रापय २ वज्रदंडेन महेश्वर त्रिशूलेनदी वीर खड्गेन चूरय २ पात्र प्रवेशे २ ॐ छां छीं छूं छः फट् स्वाहा ।

विधि :—प्रथम १०८ वार इस मन्त्र का जाप्य करे, फिर डोरा को २१ वार मन्त्रीत करके वाध देने से सर्व कार के ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ अतिशनैश्वराय ।

विधि .—इस मन्त्र का जाप करने से शनि की पीडा दूर होती है ।

मन्त्र :—लोहु खाहु लोहु पीयउ लोह ही वरु दितु चंदसुर राजा अनुनाही कोइ राजा ।

विधि .—इस मन्त्र से फोडे को ७ वार मन्त्रीत करने से फोड़ा (घाव) अच्छा होता है ।

मन्त्र :—ॐ लक्ष्मीं आगछ २ ह्रीं नमः अरे ॐ नमः सोषा महाप्रचंड वीर भूतान् हन २ शाकिनी हन २ मुंच २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र से जाप करे तो सर्व दोप की शान्ति होती है ।

मन्त्र :—वहु पाणी ए पुर पट्टणमज्झि आणि एण वाउ पुत्रु तुह मछइ कामलु चडियउ सोमे पींछिलेउ छाडिउ १ उडु का मल संखपालु भणइ उडु का मल संखु पालु भणइ ।

विधि :—रविवारे शोभने दिने (गोस नाड) शब्द सत्कपाडलेत्वा खडि का १०८ एकैक वार भणित्वा कुमारी सुत्र दवर केण सप्त वडेन ग्रंथि दातव्य. कठे प्रक्षिप्तामाला यथा २ वर्द्धयते तथा २ कामल उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रुं रः स्वाहा ।

विधि - इस मन्त्र से तीन दिन तक २१–२१ बार मन्त्र पढता जावे और कामलवात रोगी पर हाथ फेरता जाय तो कामल वात नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्षीं ३ हः स्वाहा ।

विधि —इस मत्र को जपता जावे और सिर पर हाथ फेरता जावे तो सिर का दर्द दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ग्रां हुं फट् स्वाहा ।

विधि —इस मत्र को १०८ बार पढे और रोगी पर हाथ फेरे तो शाकिन्यादि दोष शांत होते है । चाउ लोद केन सहवास जडापीषयित्वा पातव्या सुखेन् प्रसूते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रः श्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र को वासी मुख नाभि मत्रीत करे तो—

मन्त्र :—जे चल्ल चल्लइ घाउ घल्लइ अष्ट कुल नाग पूजा पाए टालइं भोपरिभो कुमारी काला सांपहदाढ़ निवारी खील तुं वाट घाटजहि तउ आयउ खीलउं माथ वा पूर्जाहितुहु जायउ खीलउं धरणि अनु आकासु मरसिरे विषहर ज.का.टि सिसासु ।

विधि : –सर्प खिलण मत्र—अनेन् मंत्रेण वात विषये दवर को ग्रथि ९ सत्को कृत्वा दीयते पर अष्टकुल नागस्थाने चउरासी वाय इति पदपठि तव्य । जेथउ तेथउ ठरे स सर्प कीलन मत्र ।

मन्त्र :—ॐ नमोहणु हणइ वज्रदडेग वेदुप्रजालिगोपाला शाकिनी चेडउ डाउसो ना समउ भेदु बहत्तरि साडा ए.हरा गुगुल ल.धउं हाथी पहुता सी वलि पासि गिरि टालइ भीम टालइ राहउ चडुं टालइ जमरातणी

पुजखड़डहडंत पाडइ हिडव गंट्ठि मोर गंट्ठेण वाप हणु वीरणी शक्ति फुरइ सयं जरु त्रेता ज्वरु वेला ज्वरु एकांतरऊ हणुवीरणी शक्ति फ़ूरइ ।

विधि —इस मत्र से डोरा मत्रीत करके बाँधने से ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ह्वॄ भॄ ।

विधि —इस मत्र को भयानक स्थान मे स्मरण किया करे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं मायांगे सरस्वस्यै नमः ।

विधि —वोध सारस्वत मंत्र । चद्रा नना स्वरा भोधौ वाङ्मयी च सरस्वती ह्र च्चद्र मडल गताध्याये त्सारस्वत महत् ।

मन्त्र :—ॐ ह्री ठः श्री वीस पारा उल केरी आज्ञा श्री घंट्टा कर्णकेरी आज्ञा फुरइ ।

विधि .—उसरणी वात मत्र ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित्तपिंगलाय लघु २ हलु २ विलु २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि —कसु भल रक्तमूत्र स्त्री प्रमाण कृत्वा शिरसउपरी अगुल ४ कृत्वा ऽनेनू मत्रेणभि । मत्र्य व ध्रीयात् वा मपादल ध्वगुलि काया गर्भो न रक्षति पानीय चलुक ३ अभि मत्र्य दीयते गर्भो न क्षरति ।

मन्त्र :—ॐ तद्यथा गर्भधर धारिणी गर्भरक्षिणि आकाश मात्रीकै हुं फट् स्वाहा ।

विधि —इस मत्र से लाल डोरे को २१ वार मत्रीत करके स्त्री के कमर मे वाँधने से रक्त स्त्राव रुक जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पिंगलायः मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय २ ॐ तद्यथा हु सुरलघु २ तिलि २ मिलि२ स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से लाल डोरे को २१ वार मन्त्रीत कर ७ गाठ लगाकर स्त्रियो के वाम पाव के अँगूठे मे वाधने से रक्त स्राव रुक जाता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते २ वस्त्रे पु फु रक्ते वात्ते स्वाहा ।

विधि —अनेन कमु भ रक्त सूत्रेण अन्हट्ठ हस्त दवरक वटित्वा अधा धाडा मूल वधित्वा वार ७ अभिमन्त्र्यते रक्त वाहक नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ भोमाय भूमि पुत्राय मस् गर्भं देहि २ स्थिर २ माचल माचल ॐ क्रां क्री क्रौं र्उ फट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र का मगलवार दिन को कुमारी कन्या को भोजनादि वस्त्रालंकार से सन्तुष्ट करे फिर इस मन्त्र का १ महिने में ५०:००० जाप पूरा करे, किन्तु मगलवार को ही जाप्य शुरू करना चाहिये और याव जीवं (जीवम पर्यन्त) प्रत्येक मंगलवार को ब्रह्मचर्यं व्रत पाले और एकासन करे तो नि सन्देह सन्तान उत्पन्न होती है ।

मन्त्र :—ॐ हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे पर्वते गंध्र मादने तस्य पर्वतस्य प्राग्दिग्विभागे कुमारो शुभ पुण्य लक्षणाए णेव चर्मवसना घोणसैः कृत के ऊरन्नुपुरा सर्प मंडित मेखला आसो विसचोंभलि का दृष्टि विष कर्णा व तंसिका खादंती विषपुष्पाणि पिवंती मारुतां लतां समांल वेति लावेति एह्ये हि वत्से श्रुणोहि मे जांगुली नाम विद्याहं उत्तमा विषनाशिनी (यत्किंचि मम नाम नातत्सर्वं नश्यते विषं) ।

मन्त्र :—ॐ इलवित्ते तिलवित्ते डुंवे डुवालिए दुस्से दुस्सालिए जक्के जक्करणे मम्मे मम्मरणे संजक्करणे अघे अनघे अखायंतीए अपायंतीए श्वेतं श्वेते तुंडे अनानु रक्ते ठः २ ॐ इल्ला विल्ला चक्का वक्का कोरडा कोरड़रति घोरडा घोरड़त्ति मोरडा मोरड़ति अट्टे अट्टरुहे अट्टट्टोंडु रुहे सप्पे सप्प रुहे सप्प ट्टोंडु रुहे नागे नागरुहे नाग ट्टोडु रुहे अछे अछले विषत्तंडि २ त्रिंडि २ स्फुट २ स्फोटय २ इंदाविषम विषं गछतु दातारं गछतु भोक्तारं गछतु भूम्यां गछतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र विद्या को जो पढता है, सुनता है, उसको सात वर्ष तक सांप दृष्टि में नही दिखेगा याने उसको सात वर्ष तक सर्प के दर्शन नही होगे और काटेगा भी नही और काटेगा भी तो शरीर में जहर नही चढेगा ।

मन्त्र :—अपसर्प सर्प भ्रदंते दूरं गछ महाविषु जनमेजय य ज्ञाते आस्तिक्य वचनं श्रृणु । आस्तिक्य वचनं श्रुत्वा यः सर्पेनि निवर्त्तते । तस्यैव भिद्यते मुर्द्धा सं सृ वृक्ष फलं यथा ।

मन्त्र :—ॐ गरुड जीमुत वाहन सर्प भयं निवर्त्तय २ आस्तिक की आज्ञा पर्यंत पदं ।

विधि —इस मन्त्र को हाथ की ताली बजाता जावे और पढता जावे तो सांप चला जाता है, किन्तु मन्त्र तीन बार पढ़ना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले २ मातंग सवराय सं खं वादय ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से वालू २१ वार मन्त्रीत करके घर मे डाल देने से सर्व सर्प भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नकुलि नाकुलि मकुलि माकुलि अ हा ते स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से वालू २१ वार मन्त्रीत करके घर डाल देने से घर मे साप नही होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सुर्रबिदु सः ।

विधि —इस मन्त्र को पढता जावे और सर्प डसने वाले मनुष्य को नीम के पत्तो से झाडता जाय तो साप का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चामुंडे कुर्यम दंडे अमुक हृदय मम हृदयं मध्ये प्रवेशाय ३ स्वाहा ।

विधि --इस मन्त्र को पढता जावे और जिस दिशा मे क्रोधी मानव, हो उस दिशा मे सरसो फेंकता जावे तो क्रोध नष्ट हो जाता है (भस्म निसद्य क्षिपते क्रोध)

मन्त्र :—वानरस्य मुखं घोर आदित्य सम तेजसं ज्वरं तृतीयकं नाम दर्शना देव नश्यति तद्यथा हन २ दह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंसय २ विद्रावय २ छेदय २ अन्यसीमां ज्वर गच्छ हनुमंत लांगुल प्रहारेण भेदय ॐ क्ष्रां क्ष्री क्ष्रौ क्ष्रः रक्ष रक्ष फट् स्वाहा । विष्णु चक्रेण छिन्न २ रुद्र श्रुलेण भिंद भिंद ब्रह्मकमलेन हन हन स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को केशर, गौरोचन से भोजपत्र पर लिखकर प्रात रोगी को दिखाने से ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुरु क्षेत्रपाल मेघनाद केरो आज्ञा ।

विधि —अनेन वार २१ खटिकामभिमन्त्र्यस्य ज्वर आगच्छन्नष्ति स ज्वर वेला या अग्रे उपवेश्य तत्पार्श्वतस्त्रि रेखाभि कुडकं । क्रियते यावद्वेलाया उपरिघटिका १ अतिक्राता भवति तावत्कुडक नमस्कारेण उत्तारणीय कुडस्थेन न पातव्य न भोक्तव्य किंतु नमस्कारा गुणनीया य र ल व व ल र य इति पूर्वत एव परावर्त्तनात् ३०० एकातरादि वेलोप शाम्याति दृष्ट प्रत्ययोय कस्यापि अग्रे न कथनीय ।

मन्त्र :—ॐ पंचवाण हृथे धनुषं बालकस्य अवलोकनं हनु अस्य सरूपेण नश्यत्तै धनुर्वातकं ॐ क्रां क्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—धनुष और पाच बाण लेकर मन्त्रीत करे, इस मन्त्र से फिर चारो दिशा मे एक-एक बाण छोड देवे और एक बाण आकाश मे छोडे फिर धनुर्वात रोगी के देखने से धनुर्वात शांत होता है। और कोई भी बालक को भी देखे।

मन्त्र :—र्हं छाया पुरुषस्य क्षं: क्षां: ३ क्षं: क्षां: क्षां: क्षां: क्षां: क्ष: ।

विधि :—इस मन्त्र से अधाहेडा दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते ईश्वराय गौरी विनाय कषए मुष सहिताए कपाल मालाधराय चंद्र शोभिताय तृतीय ज्वर वर प्रदाय गमय गमय स्फोटय २ त्रोटय२ परमेश्वरीस्य आज्ञायाम रहिरे तृतीय ज्वर जइ पीडा करइ।

विधि :—इस मन्त्र से गुग्गुल को १०८ बार मन्त्रीत करके, फिर रोगी के सिर पर महेश्वर है ऐसा विचार करता हुआ रोगी के सामने उस गुगुल को जलाने से तथा पानी कलवानी करके पिलावे तो तृतीय ज्वर जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवत: क्षेत्रपालं त्रिशूलं कपालं जटा मुकुट वद्धं शिरो डमरूक शोभितं उग्रनादं जियं गोगिणी जय जया वहुला संद विकट नै मुखं जयंतु कुंडल विशालं।

विधि :—इससे दर्भ हाथ में लेकर रोगी को झाड़ा दे तो ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते काश्यपपस्ताय वासुकि सुवर्ण पक्षाय वज्र तुंडाय महागुरुडाय नम: सर्वलोकन खांतर्गताय तद्यथा हन २ हनि २ मन २ मनि २ सवंलूतान ग्रस २ चर २ चिरि कुरु २ घोड़ासान गृन्ह २ लोह लिंग छिंद भिंद २ गंडमाल कीटां भक्षे स्वाहा।

विधि :—तीक्ष्ण शस्त्रेण उ जयेत गडमाला नश्यति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय शंशाक गोक्षीर धवलाय अष्टकर्म निर्मूलनाय तलपाद पंकज निषेविनी देवी गोत्र देवत्ति जलंदेवति क्षेत्र देवति पाद्रदेवति गुप्त प्रकट सहज कुलिश अंतरीषयत्र स्थाने मठे आरा में नदी कुल संकटे भूम्यां आगच्छ २ आणि २ बांधि २ भूत प्रेत पिशाच मुद्‌गर जोटिंग व्यंतर एकाहिक द्वयाहिक चातुर्थिक मासिक वरसिक शीत ज्वर दाह ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्वाणि प्रवेश २

गात्राणि भंज २ पात्राणि पूर २ आत्म मंडल मध्ये प्रवेशय २ अवतर २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मुद्गलादि दोष नाश होते है ।

मन्त्र :—पर्वतु डुंगरु कर्कट वाड़ि तसु केरि वंश कुहा हाडी छिद २ भिद २ सापून केरि शक्ति ठः ठः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से विष काटा ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय तद्यथा हने मोहने अहं अमुकं अमुकस्यं ज्वरं बंधामि एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिकं नित्यं ज्वरं बंधामि वेला ज्वरं बंधामि स्वाहा ।

विधि —केशर, गौरोचन से चीरिका (   ) ऊपर इस मन्त्र को लिखकर कठ मे धारण करने से ज्वर का नाश होता है । विदुक २० लिखित्वा द्वयोर्दिक शोर्गण—यित्वार परिमार्ज्यते ततो वृश्चिक विषयाति ।

मन्त्र :—घ घ घः घु घु घुः धरुरे धरुहुउ सुनील कंठु आउरे वाहुडि २ ।

विधि —वाम हस्ते दुह अगुलि आगुष्ठे, डक, गृहीत्वा ऽय मत्रो भण्यते वृश्चिक विष याति ।

मन्त्र :—ॐ सवरि स्वाहा ।

विधि .—जब अपने को विच्छू काट ले तो वे इस मन्त्र को जपे, विच्छू का जहर नही चढता है ।

मन्त्र :—ॐ रौद्रं महारौद्रं वृश्चिकं अवतारय २ स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से सात प्रदिक्षणा करते हुये जपे तो वृश्चिक विष उतरति । अम जपित्वा आत्म सप्तप्रदक्षिणादाय नीयात्ततो वृश्चिक उतरति ।

मन्त्र :—अट्ठारह जाति विछी यह अरुणार उदे बुल्लावइ महोदवउ उत्तारइ खंभाक देव केरी आज्ञा फुरतु देव उतारउ ।

विधि —इस मन्त्र से १०८ वार हाथ फेरता जाय और मन्त्र पढता जाय तो विच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—अट्ठ गंट्ठि नव फोडि ३ तालि वीछतु ऊपरि मोरु उडिरे जावन गरुड भक्खइ ।

विधि :—इस मन्त्र से ७ बार हाथ से झाड़ा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—सुयर वाले हिंगेरु येहिं अन्नु नेहिं फलेहिं अमुका विछि उलग्गउ उत्तारित्छइ एहिं।

विधि :—इस मन्त्र से प्रथम कपड़ा को मोड़ता जाये, तो बिच्छू का जहर उतर जाता है। मौन से मन्त्र पढना चाहिये।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि :—तृणाग्रेण वृश्चिक अकुटक सप्तवार स्पृश्यते हस्ते गृह्यते न लगती यदपि पतति भूमौ तदा पुनस्तथैव स्पृश्यते शिरीष वृक्ष फले घर्षपित्वा लगित्ते डकादपि वृश्चिक नुत्तरति।

मन्त्र :—ॐ जः हः सः।

विधि :—इस मन्त्र से सिर दर्द ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ वैष्णवै हुं स्वाहा।

मन्त्र :—ॐ क्षं क्षूं शिरोवेदनां नाशय २ स्वाहा।

विधि :—ऊपर लिखे दोनो ही मन्त्र सिर का दर्द मिटाने का है, इस मन्त्र को २१ बार पढने से सिर वेदना ठीक होती है।

मन्त्र :—ॐ पूं पूं हः हः दुं दुः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से अर्द्ध शिसा रोग शान्त होता है।

मन्त्र :—अध भेदकं सिरती नाशय २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर कान में बाधने से आधासीसी शान्त होता है।

मन्त्र :—आवइ २ उर्द्ध फाटिउमरि सिजा ३ चाउंड हणी आण जइ २ हुइ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं रीं रीं रुं यः क्षः।

विधि :—इस मंत्र को २१ वार जपने से सिर पीडा की शाति दूर होती है।

मन्त्र :—ॐ महादेव नील ग्रीव जटा धर ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से भी सिर पीडा शान्त होती है।

मन्त्र :—ॐ ऋषभस्य किरु २ स्वाहा।

विधि – इस मंत्र से भी सिर पीडा दूर होती है।

मन्त्र :—पारे पारे समुद्रस्य त्रिकुटा नाम राक्षसी तस्याः किली २ शब्देन अमुकस्य चक्षु रोगं प्रणश्यति।

विधि – इस मंत्र से सप्तवड लाल डोरे को ७ गाठ देकर वाम कान पर डोरे को बाँधने से चक्षु पीडा दूर होती है।

मन्त्र —ॐ अंषि जले जलं धरे अन्धा वंधा कोडी देव पुआरे हिमवंतसारी।

विधि:– इस मंत्र से २१ वार आरनाल जल मन्त्रीत करके चक्षु धोने से पीडा मिटती है।

मन्त्र :—ॐ कालि २ महाकालि २ रौद्री पिंगल लोचनी श्रु लेन रौद्रोप शाम्यंते ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि —वार ७ घर टूपुट लहणक वस्त्र दोरडउ यदि वामी तदा दक्षिणो कर्णे यदि दक्षिणा तदा वामे वध्यते।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्म पुष्पाय महापद्म पुष्पाय ठः ठः स्वाहा।

विधि —वार २१ हस्तो वाह्यते चक्षुषोर्भरण निवृति क्रियते।

मन्त्र :—ॐ विष्णु रूपं महारूपं ब्रह्मरूपं महागुरुं शंकर प्रणिपादेयं अक्षि रोग मा ह ह रौ ह्लं ह्लं हिरंतु स्वाहा।

विधि – इस मत्र से पानी २१ वार मत्रीत करके जल छिडके तो चक्षु पीडा शात होती है।

मन्त्र :—ॐ क्षि क्षि प क्षं हं सः।

विधि —भस्म मत्रीत करके आँख पर लगावे तो चक्षु पीडा शात होती है।

मन्त्र :—रे आकस हणाक आदित्य पुत्र थलि उप्पन्नउ ख .णिया दारी उत्तर हि कि उत्तारउं कि छालियाह कवार तुं (अवर्कोतारण मन्त्र)।

मन्त्र :—ॐ भूर २ भूः स्वाहा। (खजूरा मन्त्र)।

मन्त्र :—ॐ भूरु २ स्वाहा।

विधि :—इस इस मत्र को २१ वार पढ कर हाथ से झाडा दे तो खजूरा विप शात होता है। कपित्थ वटिका पानीयेन घर्षित्वा डके दीयते खजूरो विपोपशम।

मन्त्र :—ड्रूं वु कु कुरु वंभगुराउ पंचय मिलहि तिपव्वय घाउ।

विधि —इस मन्त्र से मिट्टी को मन्त्रीत करके घोडे के काटे हुये पर डालने से और हाथ से झाडा देने से अच्छा हो जाता है।

मन्त्र :—वाग्घहिं रहोज्जुत्तो सीहे हिं परिवारिऊ एभ्य नंद गछा मोकु कुराणां मुखं वंधामि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढता जाय ओर कपडे में गाठ देवे तो पागल कुत्ते का मुख बध हो जाता है, फिर किसी को भी नही काटता है ।

मन्त्र :—धतूरे वाहि ऊँहिं महादेवो उपाइ ऊँहिं धरि गरुडि बच्चाइ ऊँहिं धरि गरुडि गरुडि ।

विधि —२१ बार जलमभिमन्त्र्य पीयते धतूरउ चूरति ।

मन्त्र :—कालो पंखाली रुयालि फट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से मक्खियाँ भागती है ।

मन्त्र :—उडक वेडि जागलि जाहठर ललइ पारियरे ललइ जाहः कालो कुरड़ी तु हु फिट् काल काले सरी उग्र महेसरी पछारु साधणि शत्रु नाशिनी ।

विधि —रविवार को गोबर से मण्डल करके उसके ऊपर खड़ा रहे फिर दर्भ लेकर इस मन्त्र से झाडा २१ बार देवे तो कृमि दोष मिटता है ।

मन्त्र :—समुद्र २ माहिदीपु दीप माहिधनाढ्य जीव दाढ़ कीड़उ खाउ दाढ़ कीडउ न खाहित अमुक तणइ पापिली जइं ।

विधि —इस मन्त्र से दाढ को २१ बार मन्त्रीत करे तो दाढ पीडा शान्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ इटि त्तिटि स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को १०८ बार जप कर ७ बार हाथ से झाडा देवे तो कांख विलाई नष्ट होती है ।

मन्त्र :—कुकुहा नाम कु हाडउ पलि घडि उपलासइ घडिउ भारि घडिउ भारसइ घडिउ सवरासवरी मंत्रेण तासु कुहाडेण छिन्न वलि त्रूटे व्याधि ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से काग कांख विलाई नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ चक्रवाकी स्वाहा ।

विधि :—मनुष्य के प्रमाण सात वड डोरा बनावे, फिर इस मन्त्र से १०८ वार मन्त्रीत करे गुड के अन्दर गुटिका भक्षापयेत् वालका नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ यः क्षः स्वाहा। अनेनापि सर्वंतथैव कार्यं वालको पशमो भवति।

मन्त्र :—ॐ देवाधिपत्तो सर्व भूतादि पत्तो ह्रीं बालकं हन २ शोषय २ अमुकस्य हुं फट् स्वाहा।

विधि.—दोरउ नवततु नव गंठि वालकोपशमो भवति।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि.—पानी अभिमन्त्र्य १०८ वार पीयते हिडुकिं नाशयति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि —वार ३२ हिडकी नश्यति।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षां क्षुं क्षैं क्षौं क्षं क्षः।

विधि —गर्म पानी को २१ वार मन्त्रीत करके पीने से विश्रुचिका नाश होती है।

मन्त्र :—भस्म करी ठः ठः स्वाहा। ॐ इचि मिचि भस्म करी स्वाहा। ॐ इटि-मिटि मम भस्मं करि स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से जल मन्त्रीत करके पिलाने से और हाथ से झाडा देने से अजीर्ण ठीक होता है और अतिसार भी ठीक होता है। और पेट का दर्द भी ठीक होता है।

मन्त्र :—अतीसारं वंधेमि महाभेरं वंधेमि न क्वाहि वंधेमि स्वाहा।

विधि —डोरा को ७ वार मन्त्रीत करे, फिर कमर मे वाधे तो नाक रक्त, अतीसार ठीक होता है। और वहुत खट्टी काजी नीमक के साथ पोने से भी अतिसार ठीक होते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो ऋषभध्वजाय एक मुखी द्विमुखो अमुकस्य क्लीहा व्याधिं छिंदय २ स्व स्थानं गछ प्ली हे स्वाहा। यह प्लीहा मन्त्र है।

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों ठः ठः स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का १०८ वार जाप करने से दुष्ट वर्ण (घाव) का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ इटि तुटि स्वाहा।

विधि :—(वलि नाश)

मन्त्र :—ॐ इज्जेविज्जे हिमवंत निवासिनी अमोविज्जे भगंदरे वातारिसे सिँभारि से सोणि यारि से स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से पानी ७ बार मन्त्रीत करके पिलाने से बवासीर ठीक हो जाता है।

मन्त्र :—अडी विणडी विहंडि विमडीवा कुंण कुंण कुंतय तोविण ट्टी विमडी वा कुंकुणा विद्यापसाए अम्हकुले हरि साउन भवंति स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र से किसी भी प्रकार के धान्य का लावा। (धाणी) को मन्त्रीत करके ७ दिन तक खिलावे तो हरिष रोग याने बवासीर ठीक होता है।

मन्त्र :—अंजणि पुतु हणवंतु वालि सुग्रीउ मुहि पइसइ २ सोसइ २ हरि मंत्रेण हणुवंत की आज्ञा फुरइ।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत कर देने से और नारियल की जटा कमर में बाधने से बवासीर रोग ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ धानी धानी तुह सो वलि हालो वावो होई दुवन्नी मासि दीहि बांधइ इ गांठिडउ गांठि २ विस कंटउ पसरइ असुर जिणे विणऊभऊ। भाणऊं।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके पीने से विष कंटक नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो द्राद्राव्य जस्स सरीखेर कारिणी तस्स छंडती नमो नमः श्री हनुमन्त की आज्ञा प्रवर्तते।

विधि :—इस मन्त्र से थूक और भस्म दोनों को मन्त्रीत कर दाद के ऊपर लगाने से दाद ठीक होता है। प्रभु गदिनदद्रे चहिश्रा वलि तैलेन सह मेलयित्वा ऽभि मन्त्रिणा पूर्वं दीयते दद्रादिक याति।

मन्त्र :—कर्म जाणइ धर्म्म जाणई राका गुरु कउ पातु जाणइ सूर्य देवता जाणइ जाई रे विष।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़ा को मन्त्रीत करने से फोड़ा ठीक हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ दधी चिकतु पुत्तु तामलि रिषि तोर उपित्ता गावि जीभ वाटि मारियउ तिथु वयरिहंतु लागउहंतु गावितु हु ब्राह्मणु छाडि २ न कीजइ अइसा।

विधि :—इस मन्त्र से जल २१ बार मन्त्रीत करके उस पानी को मुख में लेकर, मुख में घुमाने से मसोड़ा ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ घंटा कर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशनः चतुः पदानां मले जाते रक्ष रक्ष महा बलः ।

विधि —इस मन्त्र को सुगन्धित द्रव्यो से भोज पत्र पर लिख कर घण्टा मे वाधे फिर उस घण्टा को जोर से वजावे जितने प्रदेश मे घण्टे की आवाज जायेगी उतने प्रदेश के मल दोप नष्ट होंगे सर्व व्याधि नष्ट हो ी ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र परिश्रम २ स्वाहा ।

विधि एक हाथ प्रमाण वाण (शर) को लेकर २१ दिन तक इस मन्त्र से रिघणी वाय को ताडन करे तो रिंगणी वाय नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ कमले २ अमुकस्य कामलं नाशय २ स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से चने मन्त्रीत करके खाने से कामल वाय नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ रां री रूं रौं रः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से २१ वार दिन ३४ तक हाथ से झाडा देवे तो कामल वात नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ कामली सामली विवहिन कामली चडइ सामली पडइ विहुसुइ सारतणी ।

विधि —इस मन्त्र से कामल वात नष्ट होता है ।

मन्त्र :— ॐ नमो रत्नत्रयाय ॐ चलूट्टे चूजे स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को रोते हुये वच्चे के कान मे जपने से वच्चा चुप हो जाता है रोता नही है ।

मन्त्र :—इष्टि महादृष्टि विद्विष्टि स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से दृष्टि दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ मातंगिनी नाम विद्या उग्रदंडा महावला लूतानां लोह लिंगानां यच्चंहलाहलं विषं गरुडो ज्ञापय त (लूत्तागड़ गंडादि) ।

विधि —इस मन्त्र से मकडी का जहर निकल जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ पार्श्व चंद्राय पद्मावती सहिताय सर्व लूतानां शिरं छिंद छिंद २ भिंद २ मुंच २ जा २ मुख दह २ पाचय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि . यह भी मकडी विप दूर करने का मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ चंद्रहास खड्गेन छिद २ भिंद २ हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़ा को मन्त्रीत करने से फोडा ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्ं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्ः महा दुष्ट लूता, दुष्ट फोडी, दुष्ट व्रण ॐ ह्रा ह्रीं सर्वं नाशय २ पुलित खड्गेन छिंदि २ भिंदि २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार फोडा, फुन्सी, व्रण, मकडी विष को मन्त्रीत करने से शान्त होते है ।

मन्त्र :—ॐ हुड होडि फोडि छिन्नं तल होडि फोडि छिन्नउं दिट्ठा होडि फोडि छिन्नं बाहोड़ि फोडि छिन्नउं सातग्रह चऊ रासी फोडि हणवंत कइ खांडइ छिन्नउं जाहिरे फोडि वाय व्रण होइ ।

विधि :—कुमारी कन्या कत्रीत सूत मे इस मन्त्र से गाठ १४ दे, फिर गले में या हाथ में बाधे तो सर्व प्रकार के फोडे-फुन्सी इत्यादिक दूर होते है । और सर्व प्रकार की वायु नष्ट होती है ।

मन्त्र :—पवणु २ पुत्र, वायु २ पुत्तु हणमंतु २ भणइ निगवाय अंगज्ज भणइ ।

विधि :—इस मन्त्र से भी सर्व प्रकार की वात दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ नील २ क्षीर वृक्ष कपिल पिंगल नार सिंह वायुस्स वेदनां नाशय नाशय २ फुट् ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी वात रोग दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते रक्त वाते हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से स्त्रियो की या पुरुषो की लावण पड जाती है, वह दूर हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ महादेव आइ की दुट्ठि दिकि सर्व लावण छिंदि २ भिंदि २ जुलि २ स्वाहा ।

विधि :—यह भी लावण उतारण मन्त्र है ।

मन्त्र :—कविलउ कक्कडउ वैश्वानरु चालंतउ ठः ठः कारी नपज्जलइ न शीतलउ थाइ श्री दाहो नाथतणी आज्ञा फुरइ स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ पुरुष, स्त्री, वाग्निदग्धोऽनेन मन्त्रेण घू घू कार्यते भव्यो भवति । यद्यने नोपायेननोपशाम्यति तदा तैल मभिमन्त्र्य दीयते भव्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते हिमसीत लेहि मतुषारपातने महाशीतले ठः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से अग्नि उतारी जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ज्लां ज्लीं ज्लं ज्लः ।

विधि .—इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः ।

विधि —इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ अमृते अमृत वर्षणि स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से काजि (मट्ठा) मत्रीत करके उस मट्ठा काँजी से धारा देवे तो अग्नि का स्तभन होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व विद्याधर पूजिताय इलि मिलि स्तंभयामि स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को पढकर अपनी चौटी मे गाठ लगा कर अग्नि मे प्रवेश करे तो जलेगा नही ।

मन्त्र :—गंग वहंती को धरइ कोकवलिं विसुखाइ एणिहि विंदि हि विंदउ वेसं नरु ऊल्हाइ । ॐ शीतले ३ रये शीतल कुरु कुरु स्वाहा । (चारायां स्मर्यते) ।

मन्त्र :—वालेंयः कर्द मेयः चि॰खिलंयष्ठ कारं ठः ।

विधि इस मन्त्र से भी दि॰य स्तभन होता है ।

मन॰ :—इंद्रेणरइय चुल्लिउ वेण चाडा विषं तिल्लं महादेवेण थंभियं हिमजिस्व सीयलं ट्ठाहि गोलक स्तंभ ॐ जं जे अमृत रुपिणी स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से (चारिका) दासी का स्तभन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं स सूर्याय असत्यं सत्यं वद वद स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को २१ वार स्मरण करके सिर पर हाथ धरे, फिर आग मे प्रवेश करे तो आग मे नही जलता है । यह मन्त्र झूठे को सत्य कहलाने वाला है । झूठा आदमी अगर शपत करे कि मेरी अगर बात झूठी हो तो मैं आग मे जल जाउ गा नही तो जलू गा नही । ऐसी शपत करने वाला झूटा आदमी भी इस मन्त्र का आश्रय लेकर आग मे प्रवेश करे तो झठा होने पर भी अग्नि मे नही जलेगा और सच्चा सावित

होगा नि सन्देह। बार २१ स्मरताय छिरसि हस्तो दीयते सो शुद्धोपि दिव्ये श्रुध्यति न सदेहो। यावति क्षेत्रे दृष्टिः प्रसरति तावति क्षेत्रे एत स्मरतो दिव्य श्रुद्धि ।

मन्त्र :—ॐ श्री वीर हनूमंत्र मेघ घर त्रय त्रावय सानर नानगण २ देवगण २ भेदगण जलंततो सावय सानर लहरि हिमाल जसुपाउदिय उतसु कछ मीथाइ जलं थाह सीतलं जलत श्री हनूवंत केरी आज्ञा वापु वीर।

विधि :—अय मन्त्रो बार १०८ स्मृत्वा चूरि गृह्यते न दह्यते यदा अन्योगाहते तदा वार २१ चुरिस मुख निरीक्ष्य स्मर्यते सोपि न दह्यते पर चुरौ दृष्टि र्धरणीया।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ज्वाला मती मोघामती कालाग्नी रुइ शीतलं जलत श्री हनुवंत पयमय वज्र लोह मयी तिलल नास्ति अग्निः।

विधि :—अय मन्त्रो बार १०८ स्मृत्वा गोल को गृह्यतेऽन्य पार्श्वाद्वि लोकयता ग्राह्यते सोपिन दह्यते।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय अनंत योग सहस्त्राय आखारणा आविया हनुं दहुं २ जलुं २ प्रज्वलुं २ भेदउं २ छेदउं २ सोसउं २ आप विद्या राखउं पर विद्या छेदउं प्रत्यंगिरा नमोस्तु सुग्रीव तणी आज्ञा फुरइ ठः ठः स्वाहा।

विधि :—बार २१ स्मृत्वा चुरि गोलक दिव्योः शुद्धि यति। अक्षतान् वार २१ जपित्वा ऽ पर पार्श्वाच्चुरि गोलक धमने क्षेप्पत्ते स्व परयोः श्रुद्धि दृष्ट प्रत्ययः।

मन्त्र :—ॐ अणिउ बंध उधार वंद्धउं वालिसउं हणुवंतु वंधउं हणुवंति मूकी लाल अणिउं बंधउं किधार।

विधि :—अनेन मन्त्रेण वार २१ धारा जप्पते खड्ग की धारा बध।

मन्त्र :—आर धार खांडउ कयर तुं आणिउ लोहु बंधु वंधउ वाप प्रचंउ नार-स्यंह की शक्ति।

विधि :—बार ७ खड्गा दीना धारा वध.।

मन्त्र :—धुलि २ महा धुलि धुलि दर्शणि न फट्टई घाउ सुमरंतह वज्रा सणि पाउ।

विधि :—एक विशति वार चतुप्पथ धूलिमभिमंत्र्य प्रहारे दीयते भद्रो भवीत न सशय.।

मन्त्र :—अरकंड मंडलस चरा चरं तीणि पीहुउ प्रलय नीयउ कालिग वइं गणध तुरकं ।

विधि —वार १०८ भणित्वा चोर्यते लीह को परि रविवारे प्लीह को यात्येव ।

मन्त्र :—ॐ भगवति भिराड़ी भाटप्तु तु कुरु कुटउतिणि भगवति भिराड़ी की ६ मास सेवा कीधी भगवति भिराडी तूसि करि वरू दीहुउ जुकणू जल वटि थल वटि अम्हरउं नामु ले सइ तसुकु सवणु फ़ेडि ससवणु होसइ ।

विधि —इस मन्त्र को घर से जाते समय ३ वार स्मरण करे तो अपशकुन भी शकुन हो जाते हैं । वार ३ अस्तु वस्त्रु मार्गेऽपशकुनं सु सकुन भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं शासन देवते सिद्धायके सत्यं दर्शय २ कथय २ स्वाहा ।

विधि परदेश जाते समय इस मन्त्र का सात पाँव चलकर ७ वार स्मरण करे तो मुहुर्त वार शकुन अच्छे न होने पर भी सर्व कार्य सफल होते है । अशुभ मुहुर्त भी इस मन्त्र के प्रभाव से शुभ हो जाता है ।

विशेष —सरसो का चूर्ण करे, फिर अकोल के तेल मे आग पर औंटावे, फिर उस तेल को ऊट के चमडे से बने हुए जूतो पर लगावे, फिर चले तो एक मे सौ योजन की शक्ति आ जाती है और फिर सौ योजन वापस लौट भी सकता है ।

मन्त्र :—ॐ कलय विकलाय स्वाहा ॐ ह्रीं क्षीं फट् स्वाहा ।

विधि .—कलपानिये मन्त्रो वार २१ गुणनियी सर्व कर्म करो च ।

मन्त्र :—नानउ वोलइ सूतली चाउ चउदिशी मोकली ।

विधि —इस मन्त्र से तैल मन्त्रीत करके लगाने से सुख पूर्वक प्रसुति होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षं क्षं ।

विधि —इस मन्त्र से कर्ण शूल (कान का दर्द) मिटता है ।

मन्त्र :—ॐ शूलानाथ देव नास्ति सूल सखानाथ देव नास्ति शूल ब्रह्म चक्रेण योगिनी मंत्रेण श्रं ५ ।

विधि इस मन्त्र से प्रसूति शूल का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कल लोचने ल ल भी क्लीं प्लीं २ अमुकस्या गर्भ स्तंभय स्तंभय क्लां क्लीं क्लूं ठः ठः स्वाहा ।

विधि इस मन्त्र को हरिद्रा (हल्दी) के रस से भोज पत्र पर लिखकर एक मटके मे लिखित भोजपत्र को डाल कर चौ रस्ते पर उस मटके को गाड देवे तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है। देहली का धोवण तलवार का धोवण पीवे तो गर्भ नही गिरता है। पचाग कर्णवीर पिवेत छउड् पतति

मन्त्र :—ॐ चिटि चांडालि स्वाहा।

विधि इय मुपोषितेन् वार १०८ जाप्यातत स्त्रीणा सून्य भवति। कु कु गौरोचनाभ्याभूर्जे लिखित्वा कंठा दौ वध्यते।

मन्त्र :—ॐ चामुंडे एष कोस्थंथं भामि व्रज की लके न ठः ठः स्वाहा।

विधि —काले डोरे को उल्टा वट कर इस मन्त्र को २ बार बोलकर गाठ डोरे में लगावे फिर कमर मे बाधे मूल नक्षत्र या जैष्ठा नक्षत्र मे तो गर्भ गिरना रुक जाता है। नो महीने समाप्त हो जाने पर उस डोरे को छोड देना चाहिए तब ही बच्चा होगा। जब तक डोरा कमर मे बन्धा रहेगा तब तक प्रसूति नही होगी।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा हस्त प्रहरणी अमुकस्य वंदि मोक्षं कुरु २ स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से तैल सात बार मन्त्रीत करके सिर पर डालने से वदि मोक्ष।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्लीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिने मम् वंदि मोक्षं कुरु २ श्रीं ह्लीं क्लीं स्वाहा।

विधि —सात दिन तक सध्या के समय निश्चय से जप करे तो शीघ्र ही बदी मोक्ष होता है एक माला नित्य फेरे।

मन्त्र :—ॐ हरि २ तिष्ट २ तस्करं वंधेमि माचल २ ठः।

विधि —इस मन्त्र से अपने वस्त्र को मन्त्रीत कर एक गाठ लगावे तो मार्गमे चोर का भय नही रहता।

मन्त्र :—ॐ नमो सवराणं हिली हिली मिलि मिलि वाचायै स्वाहा।

विधि — इस मन्त्र का २१ वार स्मरण करने से वचन चातुर्य होता है।

मन्त्र :—ॐ मालिनी किलि २ सणि २।

विधि : इस मंत्र का स्मरण करने से सरस्वती की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ कर्ण पिशाचो अमोध सत्य वादिनी मम् कर्णे अवतर २ अतीताः नागत वर्त्तमानं दर्शय २ एहि ह्लीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधि —शुद्ध होकर रात्री मे स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ नमो नमो पत्तेय बुद्धाणं ।

विधि —प्रतिवादि पक्ष की विद्या छेद होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो सयं बुद्धिणं ज्रौं २ स्वाहा ।

विधि —नित्य ही सिद्ध भक्ति करके इस मत्र का जाप करे तो कवि होता है और आगम वादि होता हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो बोहि बुद्धाणं झ्रौं २ स्वाहा ।

विधि शत शत पंचविंशति दिनानि जपेत् एक सघो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो आगास गमणांणं झ्रौं २ स्वाहा।

विधि —अट्ठावीस (२८) दिन तक नमक रहित काजि का भोजन करके प्रतिदिन १०८ बार मंत्र जपे तो आकाश मे १ योजन तक गति होती हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो महातवाणं झ्रौं २ स्वाहा ।

विधि —इस मत्र से १०८ वार पानी मत्रीत करके पीने से अग्नि का स्तभन होता हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो विप्पो सहिपत्ताणं झ्रौं २ स्वाहा ।

विधि .– इस मत्र का जप करने से नर मारी का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो अमिया सवाणं झ्रौं २ स्वाहा ।

विधि —इस मत्र का जप करने से सर्व प्रकार का उपसर्ग नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो खेलो सहिपत्तांणं।

विधि —सद्योऽन्प मृत्यु मुपशमयती इस मत्र को नित्य जपने से अपमृत्यु का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो जल्लो सहिपत्तांणं ।

विधि —इस मत्र से शुद्ध नदी का जल १०८ वार मत्रीत करके पीने से तीन दिन में ही अपस्मरादि रोग का नाश होना है।

मन्त्र :—ॐ नमो घोर तवाणं ।

विधि –विष सर्पादि रोग पर जय प्राप्त करता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट्वि चक्राय ह्री ह्रूं अ सि आ उ सा ज्रौं २ ज्रौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र का स्मरण करने से विसुचिं (हैजा) रोग का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ज्वल २ प्रज्जवल २ श्रीं लंका नाथ की आज्ञा फुरइ ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने अग्नि प्रज्जवलित होती है ।

मन्त्र :—ॐ अग्नि ज्वलइ प्रज्जवलइ डभइ कट्ठह भारु मइं वे सन रुथं भियउ अग्नि हिं पडउतु सारु ।

विधि :—अनेन मत्रेण कटाहा मध्याद्वटका: कृष्यते ।

मन्त्र :—ॐ पुरुषकाये अद्योराये प्रवेग तो जाय लहु कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र से सरसो २१ बार जप करके सिर पर धारण करे तो सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो कृष्ण सवराय वल्गु २ ने स्वाहा ।

विधि —इस मत्र को हाथ से २१ बार स्वयं को मत्रीत करके जिसको भी स्पृश करे वह वश मे हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ भवगती काली महाकाली स्वाहा ।

विधि :—सवेरे मुँह धोकर इस मंत्र से हाथ में पानी लेकर ७ बार मत्रीत करे और फिर जिस व्यक्ति के नाम से पीवे वह व्यक्ति वश में हो जाता है । सात दिन तक इसी प्रकार जल पीवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती गंगे कालो २ महाकाली स्वाहा ।

विधि :—वाम पॉव के नीचे की मिट्टी को वाम हाथ से ग्रहण करे फिर उस मिट्टी को ७ बार मंत्रीत करे फिर अपने मुख पर लगावे (मुखं खरद्यते) फिर राज कुल मे प्रवेश करे और जैसा राजा को कहे, वैसा ही राजा करे ।

मन्त्र :—ॐ आकाश स्फाटिनी पाताल स्फोटिनी मद्य मांस भक्षणी अमुका जीभ खिलि २ स्वाहा ।

विधि :—दक्षिण दिश गत्वा, ठिकरकं गृहीत्वा, श्मशाना गारेण, जलसह धृष्टेण अर्कपत्रे मन्त्र लिखित्वा नाम श्लविद्धं कृत्वा पत्रं भूमौ निखन्या धोमुखं उपरिपाखाणं दत्वा धूल्या-स्थगपित्वा उपरि हृदनीय द्विर सानु कूलोनिः प्रतापश्च भवति गौरोचनात्मस्य पित्तेना लोडय वामहस्त कनिष्ठां गुल्या तिलक कारयेत् त्रैलोक्यं वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रुद्राय अगिधगि रंगि स्वाहा ।

विधि : - श्वेत सरसो को इस मन्त्र से ६० बार मन्त्रीत करके जिसके माथे पर डाले तो सवशी भवति महिला विशेषतः ।

मन्त्र :—ॐ जलिपाणिउं थलि पाणिउं मकरि मछिउं टोलीउंपाणिउं सूरग हणिउं दिज्जमु खुधावउं ज्ज जोयउं सुमोहउं ज्ज चाहउं सुवाहउं पंचकिरिण पंच धारि जो महु करइ रागुरो सु सुजाउ अट्ठमइपा तालि फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन् सुर्योदय समये वाम हस्तेन् करोटक मध्य स्थित उदक गृहित्वा वार २१ अभिमन्त्र्यनत एकविंशति वारा मुख प्रक्षाल्य राजकुले गतव्य श्वेत सर्षपा शिव निर्माल्यमेव च एकीकृत्य यस्य गृहे स्थापयेत् तस्यो च्चाटनं भवति ।

मन्त्र :—ॐ पिशाच रुपेणलिंग परिचुबयेत् भगंवि सिंचयेत् स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण उदक चुरुकमेक विंशतिवारा नृमुछ प्रक्षाल्य सध्या कालेऽनया विश्रयायस्य नाम गृहीत्वा पानीयं पीयते एक विंशति रात्रेण नरेन्द्र पत्नी अपि वशी भवति किं पुन सामान्य स्त्री। दूधी ली (लोकी) मूल शुक्ल चतुर्दशी आदित्यवारे गृहीत्वा आत्म मुखे प्रक्षिप्यते प्रकुपितमपि राजान पादयो ।
पातयति वशी करोति दृष्ट प्रत्यक्ष ।

मन्त्र :—ॐ तारे तु तारे तुरे मम कृते सर्व दुष्ट प्रदुष्टानां जंभय स्थंभय मोहय हुं फट् ३ सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां स्तंभय तारे स्वाहा ।

विधि :—शुक्ल चतुर्दशी दिने १००० जाप्यसिध्यति प्रतिदिन वार ७ कार्ये उपस्थते वार १०८ वशी भवति दृष्ट मात्रे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति रक्ता क्षीरक्त मुखी रक्त खशीरक्त मांस वलि ए ए अमुकं उच्चाटय २ ॐ ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को केशर से भोजपत्रपर लिखकर शत्रु द्वारे गाडे तो शत्रु उच्चाटन होजाता है जहाँ जाता है वहा द्वेष ही होता है नोच जाति गृह सत्कानि सप्तम च वा तृणानि मौन पूर्वक गृहीत्वा कुमारी सुत्रेण वेष्टयित्वा पश्चात सृष्टि सहार विरचितशरा व युग्म लात्वा कपिलगौघृतेन एक वर्ण गौघृतेन भूत्वामलिन स्त्री पार्श्वात् वृति दापयित्वा कज्जल पातयित्वा ते नैव घृतेन सहाजन कृत्वा तेन तिलक विधाय राजकुलादौ गम्यते वशी कर्णमुतम ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति पद्मावती वृषभ वाहिनी सर्वजन क्षोभिणि मम चिंतित कर्म कर्मकारिणी ॐ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः ।

विधि :—इस महा मन्त्र का स्मरण करने से सर्वजन वश करता है आदर से स्मरण करना चाहिये । दृष्ट प्रत्यक्षः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो रुद्राय ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं पिवामि चामुंडिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार पानी मन्त्रीत करके जिसके नाम से पीवे तो वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती वशं करि स्वाहा ।

विधि इस मन्त्र से फलादिक २७ बार मन्त्रीन कर जिसको खिलाया जाय वह वश मे होता है । अन्धा हुलि के फूल और वाम पाव के नीचे की धूली, श्मशान को राख (भस्म) सब मिलाकर चुर्ण करे फिर उस चुर्ण को जिसके माथे पर डाले वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ सुंगधवती सुंगध वदना कामिनी कामेश्वराय स्वाहा अमुक स्त्री वश मानय २ ।

विधि :—इस मन्त्र का ३० दिन तक रात्री मे १०८ बार जप करे तो अन्य की तो क्या बात इन्द्र की पत्नी भी वश में होती है ।

मन्त्र :—ॐ देवी चंद निरइ करइ हरु मंडइ राहडि तीनइ त्रिभुवन वसि किया ह्रौं कियइ निलादि ।

विधि :—इस मन्त्र से चन्दनादिक मन्त्रीत करके तिलक करने से सर्वजन वश मे होते है ।

मन्त्र :—ॐ काम देवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तंभय २ मोहय २ वशमानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कोई भी वस्तु मन्त्रीत कर चाहे जिसको देने से वह वश में होता है । सिन्दुर, चन्दन, कुंकुम सम भाग लेकर इस मन्त्र से ७ बार मन्त्रीत कर माथे पर तिलक करने से अच्छा वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ देवी रुद्र केशी मन्त्र सेसी देवी ज्वाला मुखी सूति जागा विसिवइट्ठी लेयाविसी हाथ जोडंति पाय लागंति ठं ठली वायंति सांकल खोडंति ले आउ कान्हड नारसिंह वीर प्रचंड ।

विधि :—इस मन्त्र को जिसका नाम लेकर १०८ बार ७ दिन तक जपे तो वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ समोहनी महाविद्ये जंभय स्तंभय मोहय आकर्षय पातय महा समोहनी ठः ३ ।

विधि —इस मन्त्र का स्मरण मात्र से वशीकरण होता है।

मन्त्र :—कांइ करे सिलोउरे खुदा महु चउसट्ठि जोगिणि केरीमुदा।

विधि —इस मन्त्र से अपने थुक को २१ वार मत्रीत करके फिर उस थुक से तिलक करे तो राज कुलादिक मे सर्वत्र जय होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रं ३ ह्रीं ३ ह्रूं व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः।

विधि —रात्री को सोते समय प्रातः इस मन्त्र का एक एक श्वास मे चिंतन करे फिर जो मन मे चिंतन करे वह वश मे होता है।

मन्त्र :—ॐ काली आवी काला कपड़ा काला आभरण काला कंनि ताडवन्न केशकरी मोकला आवीचउ वाहए कहाथि प्रज्वलंतो छाणी एक हाथी कुत्ता चाक हिग हिल्ली तहि नगहिल्ली जहि अच्छइ मत्तविलासिणि घरु फोड़ि पुरु मोड़ि घरु जालि धरु वालिदा घुता पुसो सु अंगिलाइ अमुकी मारइ पाइ पाडि।

विधि —अनेन मत्रेण जल चलुक २१ अभिमन्त्र्य स्वप्न काले सुप्यते यावन्निद्रा नागच्छति तावन्न वक्त व्यसा वशी भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय नमो चार्या व लोकिते श्वराय बोधिसत्त्वाय महा सत्वाय महा कारुणि काय चंद्रेन सूर्य मति पूतेन महा महा पूतेण सिद्ध पराक्रमे स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अपने स्वय के कपडे को २१ वार मन्त्रीत करके उस कपडे से गाठ लगावे फिर क्रोधी के आगे जावे तो वह शात हो जाता है धतुरे के फल को लेकर अपने मूत्र मे भावना देवे, फिर उसको पान के साथ जिसको भी खिलावे तो वह वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अमुकं अमुकीं वा स्तंभय २ मोहय २ वश मानय स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से पुष्प अथवा फलादिक १०८ वार मत्रीत करके जिसको वश करना हो उसको दिया जाय तो वह वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं मम अमुकं वशी कुरु २ स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र का १०८ वार स्मरण करने से वश मे होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं सर्व दुष्ट जनं वशी कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का भी १०८ बार स्मरण करने से वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं कूष्मांडि देवि मम सर्व शत्रुं वशं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करे, वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रों ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत करके जिसको दिया जाय वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो देवीए ॐ नमो भरणीय ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से काजल १०८ बार मन्त्रीत करके आँख मे आजने से सर्वजन वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सिद्ध बुद्ध माला अंबिके मम सर्वा सिद्धिं देहि देहि ह्रीं नमः ।

विधि :—पुत्र की इच्छा रखने वालो को नित्य ही १०८ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रुं द्रः द्रावय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल और चावल मन्त्रीत कर देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्रकामाय स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से कन्या कत्रित सूत को २१ बार मन्त्रीत करे, फिर सात वार मन्त्र को पढकर उस सूत को कमर मे बाधे तो शुक्र का (वीर्य) स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवउ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणसस्स अवतर अवतर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से अक्षत ५०० बार मन्त्रीत करके बिकने वाली चीजों पर डालने से क्रय विक्रय मे लाभ होता है ।

मन्त्र :—सीता देलागउ घाउ फूकिउ भलउ होइ जाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल ७ बार मन्त्रीत करके घाव पर लगाने से और २१ बार मन्त्र पढकर वाव ऊपर (फुक्का प्रदान विधियते) घाव भरने लगता है ।

मन्त्र :—सोवन कंचोलउ राजादुधु पियइ घाउ न अउघाइ भस्मांत होइ जाइ ।

विधि :—कुत्ते के काटने पर इस मन्त्र से भस्म मन्त्रीत कर, लगाने से अच्छा होता है ।

मन्त्र :—सीहु आकारणी पहुया घालिरे जंप जारे जरा लंकि लीजइ हणुया नांउ हरसं करची अगन्या श्री महादेव भराडाची अगन्या देव गुरु ची अगन्या जारे जरा लंकि ।

विधि .—दशवड सुत्र मे दश गाठ लगावे, दस वार मन्त्र पढे, फिर उस सुत्र को गले मे या हाथ मे वाँवे तो वेला ज्वर, एकानर ज्वर, द्ववान्तर ज्वर, त्र्यतर ज्वर, चतुर्थ ज्वर नष्ट होता है। इसी प्रकार गुगुल मन्त्रीत करके जलाने से भी ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ चंड कपालिनी शेषान् ज्वरं बंध सइंल ज्वरं बंध वेला ज्वरं बंध विषम ज्वरं बंध महा ज्वरं बंध ठः ठः स्वाहा ।

विधि '—इस मन्त्र से कुसु भ रग के डोरे मे मन्त्र २१ वार पढता हुआ ७ गांठ लगावे फिर गले मे या हाथ मे वाधे तो सर्व ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—कालिया ज्वर वेताल नारसिंह खय काल क्षीं क्षीणी अमुकस्य नास्ति ज्वरः ।

विधि :—वार २१ चापडी वादने ज्वरोयाति ।

मन्त्र :—सप्त पातालु सप्त पाताल प्रमाणु छइ वालु ॐ चालिरे वालु जउ लगि राम लाषण के वाणु छीनि घातिय हिलउ ।

विधि .—इस मन्त्र से जगली कडे की राख और अक्षत मन्त्रीत कर देने से स्तन की पीड़ा ठीक होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्याय सर २ आगच्छ २ इमं चक्षुरोगं नाशय २ स्वाहा ।

विधि .—कुमारीकत्रीत सुत्र को लेकर ७ वड करे, फिर मयुर शिखा को केशर मे रंग कर उस डोरा मे मयुर शीखा को वाघे, फिर इस मन्त्र से २१ वार मन्त्रीत करके कान मे वाधने से चक्षु रोग का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ज्येष्ट शुक्रवारिणि स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र से कुमारी सुत्र को सात वड करके सात गाठ लगावे, फिर उस डोरे को कमर मे वाधने से वीर्य का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—अं रं हं तं सिं द्धं आं यं रिं यं उं वं ज्ञां यं सां हुं च ।

विधि :—एयाणि विदु मत्ता सहियाणि हवति सोलसवि १ सोलससु अक्खरेसुं इक्कि क्क

अक्खरेसुम ताजा सावरि सा वइ मेहं कुणइ सुभिक्खं न सन्देहो। एयाइं अक्खराइं सोलस जो पढइ सम्म मुवउत्तो सोदुष्यिक्खु दुराउलपर चक्क भयाइं हणइ सया।

मन्त्र :—ऐं ह्रीं भ्रूं त्रूं क्रूं द्रूं ट्यूं क्षूं ह्लूं क्लें ह्लें ह्सां क्रों ह्रीं फ्रें ह्लूं क्ष्मौंक्ष्मः।

विधि .- यह अठ्ठारह अक्षर वाली त्रैलोक्य विजयादेवी नाम महाविद्या वार ३३ चावल तीनों काल ध्यान करने से सर्व इष्ट की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ अर्हं नमः ॐ ह्लीं ३ ॐ श्रीं ३ ॐ प्रीं २ ॐ व्रीं ३ ॐ भ्रीं ३ म्रीं ३ ज्रीं ३ ल्रीं ३ झ्रीं व्रीं ३ हुं फट् स्वाहा।

विधि :—यह विद्या ३१ अक्षर की महा विद्या है, सर्व कर्म करने वाली है प्रथम विद्या चौर भय होने पर १६ बार जाप करना चाहिये। दूसरी विद्या शाति कर्म स्थापना, प्रतिष्ठादिक मे, राजा आदि के प.स जाने के समय ३ बार जपना चाहिये। तुरन्त ही राजा के दर्शन होते है। तीसरी विद्या शाकिन्यादिक मे मुद्गलादि दोष मे और चोदग पीडा मे १०८ बार कलपानी आदिक करना चाहिये। चतुर्थ विद्या जब गर्भ गिरने लगे, तब पानी तैल को १०८ बार मन्त्रीत करे फिर लगावे। पंचम्या राज शत्रु भयादिषु स्वय जाप्या आतुर पार्श्वा च जपनीया इष्ट देवता दीनां च भोग' कार्यं। षष्टया मनुशस्य धनुर्वाते सति गुगुलं १०७६ दाह्यते कर्णे च जप्यते। सप्तम्यां सर्प दष्टस्य घनं घृत वार २१९९ जप्तापानीय कृष्ण जीरकं च परि जाप्यो ड्राह्यते लहरी नाशः। अष्टमीयदा मेघजानदि मार्गा दो विषमा भवति तदा जात्य कु कुमेन जलेन् वा, हस्त पट्ट (द) कादौ लिखित्वा कर्पूरा गुरु धूपा दिना पूज्या बार १०८ नदी सुगमा भवति। नवमी जपनीया खड्गादि स्तम्भ। दशमी पदीप नादौ स्मरणीया एक वस्त्र परि जाप्य स मुख स्तम्भ दिव्ये उँजि जप्त्वा शुक्ल (सरसो) सर्षपा अग्नौ क्षेप्याऽनिष्टोऽश्रुद्धो भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो धर्मराजाय मृत्युस्थाने शुभं कराय काक रूपिणे ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि .—अयं सदावार ३ त्रयं जाप्य' यदाषह ६ मासा वधिरायुर्भवति तदाऽयं विस्मरति उत्कृष्टतो दशानामेवाय देयः।

मन्त्र :—ॐ अर्हं न्मुख कमल वासिनि पापात्म क्षयं करि श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्त्र ज्वलिते सरस्वती मत्पापं हन २ दह २ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीर धवले अमृत संभवे वं वं हं २ स्वाहा।

विधि. इस मन्त्र को विशेषत: कुंवार पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को चन्द्रमा के सामने मुख करके जप किया जाता है। और करीब १००० वार जपने से ज्ञान का प्रकाश होता है। एक माला नित्य जपने से पाप कालिमा दूर होती है, मन. स्वस्थ्य होना है।

मन्त्र :—ॐ श्रीं श्रि श्रुं श्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः रां रिं रुं रः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लः ध्रां ध्रिं ध्रूं ध्रः स्वाहा।

विधि. -सिचह् काउण जल इमेण मन्त्रेण सत्तपरियत्त थभेइ पली वयण दिव्वं च करेही धोएहि। मेघ माला प्रवक्ष्यामि। जा सग्रहुती अवतरंती गज्जती अमीयधाराहि वरि सती तुहु मेघमाला वुच्चहि परम कल वारणु करणु करिति वइ सान रुघभती जवीउंति।

विधि.—इमेण मत्रेण पाणिय पवर धोउण जाहु जलणे सिहि इमध्ये निरासको।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते महामाए अजिते अपराजिते त्रैलोक्य माते विद्ये से सर्व भूत ऽयावहे माए २ अजिते वश्य कारिके भ्रम भ्रामिणि शोबिणि ध्रूवे कारिणे ललति नेत्राशनि मारणि प्रवाहणि रण हारिणि जए विजय जं भंनि खगेश्वरी खगे प्रोखे हर २ प्राण खिखिणी २ विधून २ वज्र हस्ते शोषय २ त्रिशुल हस्ते षट्वांग कपाल धारिणि महापिशित मासं सिनि ऽानुषार्द्ध चर्म प्रावृत शरीरे नर शिर मालां ग्रंथित धारिणी निर्शूर्नि हर २ प्राणानु मर्म छेदिनि सहस्त्र शीर्षे सहस्त्र वाहने सहश्र नेत्रे हे ह्व २ हे २ ष २ ग २ धु २ छ २ जी २ ह्लीं २ त्रि २ ख २ हसनी त्रैलोक्य विनाशिनि फट् २ सिंहे रूपे खः गज रूपे गः त्रैलोक्यो दरे समुद्र मेखले गृन्ह २ फट् २ हे २ हुं२ प्रं २ हन २ माए भूत ऽसवे परम सिद्ध विद्ये हः २ हुं २ फट् २ स्वाहा।

विधि —सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण मे उपवास करके इस मन्त्र का १०८ वार जाप करे मन्त्र तव सिद्ध होता है, फिर इस मन्त्र का २१ वार स्मरण करनेसे राजा, मन्त्री, नर, नारी, जो कोई भी हो सवका आकर्षण होता है। सव वश मे होगे। जिस किसी दुष्ट के नाम से जपे तो उसका अवश्य ही उच्चाटन होता है। रण मे वा, राजकुल मे, वाद मे, विवाद मे इस विद्या का स्मरण करने से अजय होता है। और पुष्पादिक मन्त्रीत करके, जिसको भूत, प्रेत, शाकिन्यादि से लगा हो, उस पुरुप के ऊपर डालने से भूतादिक प्रकट होते है। बहुत क्या कहे सर्व अभिष्ट सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो अणंत जिणाणं णमो सिद्ध जोग धराणं णमो सव्वेंसि विज्जा हर पुत्ताणं कयंजली ।

विधि :—इमं विज्जारायं पउ जामि इमामे विज्जा पसिष्यऊ ।

मन्त्र :—आवखालि वालिक्रा लिपं सुखरे ॐ आवत वो चडि स्वाहा ।

विधि :—दियं वाय पत्त कक्वराऊ वा घिप्पति ताऊ सत्त वाराऊभिमंति उण जो आहम्म इसो वसो होइ ॥१॥ इस मन्त्र से सात ककर लेकर मन्त्रीत करे, फिर जो भी बिकने वाली चीज है उसमे उन सात ककरो को डाल देवे तो वस्तु शीघ्र बिक जाती है ॥२॥ एयाए तुलसी पत्ताणी सत्ताभि मतिउण कंन्हे कीरति ज मग्गइ त ल ह इ ॥३॥ सत्ताभि मंतिऊ कुमारी सुत मऊ डोरो हस्ते वध्यते कुविऊ पसीयइ ॥४॥ एयाए धरा, कक्वराऊ सत्तधि तुण सत्त वा राजा वियाहि गावी सुण हीवा । आहम्मइ ॥ ५ ॥ अप्पणो सरोरे पज्जविऊण ज मोसो वइ सो वसो भवई ॥ ६ ॥ एयाए तिल्ल जविउण जरिऊ मक्खिज्जइ सस्थो हवइ ॥ ७ ॥ एयाए सप्पदट्ठस्स पाणिय सत्ताभिमतियं पाइज्जइ सुही होइ ॥ ८ ॥

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों नरो सहि सहे नमः ।

विधि :—गोमय मडल कृत्वा श्री खड कस्तुरिका कर्पू रेणमडलं वेधाय तस्यो परि दीपकः कुमारी कर्तित सूत्र वृति घृत भृतो दीयते बार १०८ बार मन्त्रो जप्यते पात्र मस्तके दीयते जव निकातर मध्ये आत्मना मन्त्रो जप्यते शुभे शुकलां वरधरा नारी शुक्ल पुष्पं गृहीत्वा शुभ वदती दृश्यते अशुभे रक्ता वरा शुभ वदती च अष्टम्यां चतुर्दश्या वा अथवा प्रयोजनेऽनस्या तिथौ दृश्यते दीप शोखाया दृश्यते ।

मन्त्र :—ॐ अरिहंते उत्पत्ति स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लाख जाप करने पर सिद्ध होता है इस विद्या का नाम त्रिभुवन स्वामिनि है । सिद्ध हो जाने पर विद्या से जो पूछो वह सब कहेगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा नमः ।

विधि :—इयं सप्ता दशाक्षरी विद्या अस्याः फल गुरूपदेशा देव ज्ञायते ।

मन्त्र :—ॐ रूधिर मालिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को सात बार जप करके अपना रक्त निकाले फिर उस रक्त को करंज के तेल मे मिलावे फिर कमल पुष्प की डंडि का डोरा सूत्र निकाले फिर उस डोरे की बत्ती बनावे उस वत्ती को रक्त मिला हुआ करंज के तेल मे डाल कर बत्ती को जला देवे फिर काजल ऊपाड कर आँख में अंजन करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

अदृष्य व्यक्ति सबको देखता है, किन्तु दूसरे व्यक्ति उस अदृष्य व्यक्ति को नही देख पाते है ।

मन्त्र :—ॐ मातंगाय प्रेत रूपाय विहंग माय धून २ ग्रस २ आकर्षय २ हूं फट सिरि सूल चंडा धर प्रचंड सुग्रीवो आज्ञापयति स्वाहा ।

विधि :—सरसो लेकर इस मन्त्र से १०८ वार ताडित करने से ग्रह भूत डाकिन्यादि शीघ्र दूर होते है। कनेर के फूल, धतुरे के फूल, अश्व गन्ध, अपामार्ग इन वस्तुओ की धूप वनाकर जलाने से भूत वाधा नष्ट होती है ।

श्लोक :—कण वीरस्य पुष्पाणि कनकस्य तथैव च,
अश्व गधा स्वपा मार्ग मेप धूपो विधियते ॥१॥
अनेन् धूपि तागस्य भूता नश्यति वि चिन्हता,
शाकिन्यो विविधा कारास्तथा च, रजनी चरा ॥२॥
वैताला श्चेव त्तु ष्माडा ज्वरा श्चातुर्थिकादय,
सर्पाश्चैव विशेषेण शिरोर्त्ति विविधा तथा ॥३॥
धूप राजेन सर्वेपि धूपि ताया विनाशन,
श्रृष्क शनावरी खड हस्ते वद्ध ज्वरम पहरति ॥४॥
इन श्लोको का अर्थ वहुत सरल है इसलिए यहाँ नही किया है ।

मन्त्र :—ॐ क्लीं ॐ सः ।

विधि :—पान ७ चूर्णेन खडयित्वाऽलक्ते केन लिखित्वा भक्ष्यते तृती ज्वर नाश. ।

मन्त्र :—ॐ कुमारी केन ह्री भगवति नग्नो हूं अनाथाय ठः ३ ।

विधि :—कालत्रय वार १०८ जाप्य सप्ताह वस्त्र ददाति, गोरोचन तथा हिंगु कु कुम च मन शिलाक्षी द्रेण च समा युक्तं जात्य धोपि च पश्यति ।

मन्त्र :—ॐ किरि २ स्वाहा ।

विधि अर्द्ध रात्री मे नग्न होकर इस मन्त्र का जाप करने से स्वप्न मे मन चिन्तित कार्य को कहता है ।

मन्त्र :—हूंषो वलाय सूर्यो नमः ।

विधि कन्या कत्रीत सूत्र मे ६ गाठ लगाकर पाव मे बाधने से वलिर्याति ।

मन्त्र :—ॐ गरूडाय विलि २ गरुडे ज्ञापयति तस्य विष्णु वचने न हिलि २ हर २ हिरि २ हुर २ स्वाहा निरखे (निर्रके) व सुमध्य यारे ।

विधि :—इमेण मन्त्रेण सत्त परियते भूइ धराउ नाशति वित्त गजेण दुट्ठावि ।

मन्त्र :—ॐ लं वं रं यं क्षं हं सं मातंगिनी स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से जल को अभीमन्त्रीत कर पिलाने से सर्व रोग चला जाता है। चउ दश अक्खर विज्जा जविय जल सत्त वाराऊ जल विस दाह विसाण वाहि हरं तोए पीएण ।

मन्त्र :—ग छ ह उ कुपाउ उरू छिदउ मुहुछिदउ पुंछु छिदउ छिदि २ भिंदि २ त्रुटि २ जाहि ३ निसंत्तानु ।

विधि :—इस मन्त्र को २१बार पढता जाय और हाथसे झाड़ा देता जाय तो, गड दोष नष्ट हो।

मन्त्र :—ॐ पंचात्माय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार चोटि मन्त्रीत करके चोटी मे गाठ लगावे तो ज्वर से छुटकारा मिलता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं नित्ये कलं दे मद द्रवे इं क्लीं ह्सौं पद्मावती देवी त्रिपुराजित्रिपुर क्षोभिनी त्रैलोक्यं क्षोभय २ स्त्री वर्ग आकर्षय २ ब्लीं ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का विधि विधान से जप करने से महादेवी पद्मावती जी का प्रत्यक्ष दर्शन होता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्सौ पद्मावती नमः ।

विधि :—यह पद्मावती मूल मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती श्रियं मम कुरु २ दुरितानि हर २ सर्व दुष्टानां मुखं बंधय २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र का २१ बार स्मरण करने सर्व कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ क्लीं ब्लीं लीं घ्रीं (ध्री) श्रीं कलि कुंड भगवती स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १००८ बार ज्येष्ठ महीने मे जप करे तो पद्मावती महादेवी जी प्रसन्न होती है ।

मन्त्र :—ॐ भगवति विद्या मोहिनी ह्रीं हृदये हर २ आउ २ आणि जोहि २ मोहि २ फे ३ आर्कषि २ भैरव रूपिणी ब्लूं ३ मम वशमानय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ वार जप करने से आकर्षण होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति महा विद्ये चक्रेश्वरी एहि २ शीघ्रं द्रां भ्रूं गृन्ह २ ॐ ह्रीं सहस्त्र वदने कुमारि शिखंड वाहने श्रुक्ले श्रुक्ल गात्रे ह्रीं सत्य वादिनि नमः।

विधि :—हाथ के चुलु मे पानी ७ वार मत्रीत करके नित्य पीवे। ७ वार तो, ज्ञान की वृद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो देवाधि देवाय नमः सिंह व्याघ्र रक्ष वाहने कटि चक्र कृत मेखले चंद्राधि पतये भगवति घंटाधिपतये टणं २ शब्दाधिपतये स्वाहा।

विधि —घण्टा को २१ वार इस मन्त्र से मत्रीत कर वाधने से रोग मिटता है। (यहा घण्टा से मतलव छोटे घु घरू लेना।)

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति महा मोहिनी जंभनी स्तंभनी वशी करणी पुर क्षोभिणी सर्व शत्रु विद्रावणी ॐ आं क्रों ह्रां ह्रीं प्रों जोहि २ मोहि २ क्षुभ २ क्षोभय २ अमुकं वशी कुरु २ स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का रात्री को सोते समय ३०८ वार नग्न होकर जपने से महा वशी करण होता है।

मन्त्र :—ॐ अरे अरूणु मोहय २ देवदत्तं मम वश्यं कुरु २ स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को कृष्ण पक्ष की चौदश को पाटे पर लिखकर लाल कनेर के फूलो से जप करे १०८ वार तो उत्तम वशीकरण होता है। देवदत्त मन्त्र मे आया है। उस जगह पर जिसको वश करना चाहे उसका नाम ले।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे जगरसं मोहिनी जगदुन्मादिनी नयन मनोहरी हे हे आनंद परमानंदे परम निर्वाण कारिणी क्लीं कल्याण देवी ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का सतत जप करने से सौभाग्य की वृद्धि सर्व जनप्रीयता, और उत्तम प्रकार से वशीकरण होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे रत्नत्रय तेजो ज्वलित सु वदने कमले विमले अवतर देवि अवतर विवुध्य ॐ सत्यं मादर्शय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से शीशा, दीप, तलवार छूरी, लकड़ी, जल, दीवाल आदि मन्त्रीत करके दोषी को दिखाने से जैसा का तैसा कह देता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे जगत्संमोहन कारि सिद्धे सिद्धार्थे क्लीं क्लिन्ने मदद्रवे सर्व कामार्थ साधिनी आं इं ऊं हितकरी यसस्करी प्रभंकरी मनोहरी वशंकरी श्रूं ह्स म्रूं द्रूं क्रुं द्रां द्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का सतत् जप करने से तीनो लोको की स्त्रिया क्षुभित होती है। परम सौभाग्य की प्राप्ति होती है। राजकुल की स्त्रियो को देखकर जपने से नित्य ही दास भाव से व्यवहार करती है। इन तीनो ही कार्य के लिये पहले लाल कनेर के फूलों से १००० जाप करे सर्व कार्य सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लः यः क्षः २ ह्लीं फट् फट् २ स्वाहा।

विधि — मन्त्राधि राजमन्त्र :— पहले उपवास करे, फिर सायकाल मे दूध पीकर सवेरे, काले चनो को खाकर मुष्टीप्रमाण ऋुन्षक जटा षष्टिक को चॉवल का धोया हुआ पानी या चावल माड को पीसकर पिलाने से मारी रोग की निवृत्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय २ ह्लीं स्वाहा।

विधि :—वासा श्वेताक्षता अभिमत्र्य गृहादौक्षेप्या. दुष्ट व्यंतर कृत रोगो नश्यति।

अब भूत तत्र विधान को कहते हैं।

[श्रीमद पूज्य पादाचार्य कृत]

प्राणिपत्य युगादि पुरुषं, केवल ज्ञानं भास्करं, भूत तन्त्र प्रवक्ष्यामि यथावदनु पूर्वशः ॥१॥

अर्थ :—श्री आदिश्वर प्रभु को नमस्कार करता हू जिनको की केवल ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हुआ है। ऐसे आदि पुरुष को नमस्कार करके भूत तन्त्र को कहूगा जैसे कि पहले पूर्वाचार्यो ने कहा है।

तत्र :—श्रुचि विद्या ल कृतो मन्त्री पंचाग वद्ध परिकरः साधयेद्भूवनं कृत्स्ण कि पुनः मनुजेश्वरान् ॥२॥

अर्थ .—सर्व विद्या से अलकृत साधक सकली करण पूर्वक पच अग का रक्षण करता हुआ साधन करे तो तीनो लोको को साधने वाला होता है तो फिर मनुष्यो के राजा की

तो वात ही क्या, अव आगे वाली विद्या का तीन वार उच्चारण करे। णमो अरि हताण णमो सिद्धाण णमो आगासगामिणिण। ॐ नम — अव पच अंग न्यास करके विचक्षण बुद्धि वाला कार्य प्रारम्भ करे। पचाग न्यास विधि ॐ अरहताण नम हृदयं। हृदय को हाथ लगावे। ॐ सिद्धाण नम शिर। ऐसा कहकर सिर का स्पर्श करे। ॐ आचार्याणा नम शिखा। शिखा का स्पर्श करे। ॐ उपाध्यायाना नम कवच। ऐसा कहकर कवच धारण करे। ॐ लोके सर्व साधुना नम अस्त्र। ऐसा विचार करके अस्त्र धारण करे। इस सकली करण को मुर, इन्द्र भी भेदन करने मे असमर्थ है, फिर अन्य की तो वात ही क्या है। सुरा सुरेन्द्राणा अस्त्र विसर्ग युक्त त्रासकर सर्व दुप्टाना। इस प्रकार अ ग न्यास विधि करके आदि प्रभु की प्रतिमा के सामने या अन्य तीर्थ कर की प्रतिमा के सामने यथा शक्ति पूजा करके मन्त्र का जाप प्रारम्भ करे।

मंन्त्र —सवाय नमो भगवतो ऋषभाय नमो गुरु पादेभ्यो हुदु २ कल २ सिमि २ गृह्ल २ धनु २ रुभ २ आविश २ माविलव २ शीघ्र कुरु २ सुरु २ मुरु २ वध २ दह २ छिंद २ ष्युंभ २ वीर २ भज २ महावीर २ ग्रस २ मर्द २ हे है हे घु धू मे३ वुघ २ हस ३ केलि ३ महाकेलि ठ फट् २ फुरु २ सर्वग्रहान धुनु महासत्व वज्रपाणि दुर्दाताना दमक चर ३ कक ३ यथा नुशास्तोस्ति भगवता ऋपभदेवेन तथा प्रति प्रद्य इद ग्रह ग्रह्ल सुवज्र मूर्द्धान् फालय महा वन्त्राधिपति सर्व भूताधिपति वज्र मेरवल वज्र काल हु २ रौतु २ जयति वज्र पाणिर्महावल दुर्द्धर २ क्रोध चण्ड धुरु २ धावे २ ही ह्व हो ह्व ह ह्वा क्षा क्षा हो २ क्षी २ है २ क्षुं २ क्ष २ क्ष सोध र्माधिपति ऋषभ स्वामिराज्ञापयति स्वाहा।

विधि —यह पठित सिद्ध मन्त्र है, केवल पुप्पो से जप करना चाहिये, तव सिद्ध हो जाता है। चाहे गृह से गृहित हो, चाहे अगृह से हो, सवको सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को पढने से गृहित व्यक्ति को आवेश आता है, छोड देता है, हसाता है, गवाता है, जिसको कि इन रोगो से गृसीत हो। अनत, वासुकि, तक्षक, कर्कोटिक, पद्म, महापद्म, शखपाल, कुलिक, महानाग, इत्यादिको के काट लेने पर आवेश में आते है, शीघ्र ही जहर उतर जाता है। तीन लोक मे जो काल कुट विप है उसका भी असर नही रहता, फिर सर्प के जहर की तो क्या कथा। इस प्रकार पूज्यपादाचार्य का वाक्य है यहाँ किसी भी प्रकार की शका नही करनी चाहिये। और पवन ज्वर, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, राक्षस, व्यतर, गर्दभ, लूता (मकडी विपा) दिक को नष्ट करता है, कितने ही दुप्ट क्यो न हो (पूजपादाचार्य कृत भूत तत्र समाप्ता)

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र का पहले ३० हजार जाप करे, तव मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन रात्रि मे वलि देकर नर्नवेद्य की ओर जपे, फिर इस मन्त्र से वस्त्राचल को १०८ वार मन्त्रित

करके गाठ देवे, फिर राजकुलादिक मे जावे तो साधक जो कहे, सो मान्य होता है। अगर १००० जाप नित्य करे तो सर्व स्त्रियो का प्रिय होता है, और अगर किसी को वश करना चाहे तो अनु को १०८ वार जाप करने से कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—**बहुत दिवस की कुठाहल नान्ही करियाणी भे विसुरागी उजान्हइ कापडइ छाणि लीजइ पियण दीजइ।**

विधि —इस मन्त्र से शेर के वाल का विष नष्ट होता है।

शाकिनी उच्चारण धूप —सरसो, हिगु, नीब, के पत्ते वच, सर्प की काचली, इस सवकी धूप वनाकर रोगी के सामने जलाने से शाकिनी का उच्चाटन हो जाता है। वणि की जड़, हिगू, सूंठ सवको समभाग लेकर जल के साथ पीस लेवे, फिर शाकिनि गृसीत रोगी को नाक मे सुंघाने से शाकिन्यादि, रोगी को छोडकर भाग जाते है।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवतो माणि भद्राय कपिल लिंग लोचनाय वाताचल प्रेतां-चल डाकिनी अंचलं शाकिनी अंचल वंध्या चलं सार्वाचलं ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।**

विधि —आचलवात मन्त्र।

मन्त्र :—**ह्रीं। इति उपरित नांगुलिद्वय मध्येअंगुष्ठकं निधाय गुण्यते मार्गे सर्व भयं निवर्तयति।**

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवत्यं अप कुष्मांडि महाविद्ये कनक प्रभे सिंह रथ गामिनी त्रैलोक्य क्षोभनी एह्ये २ मम चिंतितं कार्यं कुरु २ भगवती स्वाहा।**

विधि —सफेद गुलाव के फूल १०८ वार लेकर इस मन्त्र का जाप करे तो लाभालाभ शुभाशुभं जीवित मरणादिक का कहता है। इस मन्त्र का कर्ण पिशाची भी नाम है।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी अमोध सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर २ सत्यं कथय २ अतीत अनागत वर्तमानं दर्शय २ एह्ये २ ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।**

विधि —लाल चन्दन की एक पुतली वनावे, फिर उसको पुतली के आगे एक पट्टे पर इस मन्त्र को लिखकर सुगन्धित पुष्पो से १०,००० जाप करे तव यह मन्त्र सिद्ध होता है। अव यहाँ पर संक्षेप से कहते है। शुद्ध होकर सिधे कान को ७ वार इस मन्त्र से मन्त्रित करे या १०८ वार अव्यग वस्त्रे सुप्पते, तव शुभाशुभ स्वप्न मे कहता है या वचन से कहता है। शिवजी के लिग पर २४ षकार श्मशान के अंगारे से (कोयले) लिखे,

फिर ज्वर ग्रसित रोगी को उस लिंग को दूध से धोकर पिलावे, तो ज्वर से रहित होता है।

मन्त्र :—ॐ द्रां द्रीं ख्रौं ख्रूं क्ष।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म मन्त्रित करके खाने से, घटिका रोग नष्ट होता है।

मन्त्र :—दिशां वंध भगवान वंध वार्हंतां चक्षु वंधः सर्वं मुख बंधः क्लीं मुखः ॐ वातली २ वाराही २ वारामुखी २ सर्व दुष्ट प्रदुष्टानां क्रोधं स्तंभस्तंभे जिह्वां स्तंभस्तंभे दृष्टि स्तंभस्तंभे महि स्तंभस्तंभे सर्व दुष्टान् प्रदुष्टे ॐ ठः ७ क्लीं गुरु प्रसादे।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से स्तंभन होता है, लेकिन गुरु की कृपा होनी चाहिये।

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय वानर राजाय अतुल बल वीर्यं पराक्रमाय स्वाहा।

विधि :—मन्त्रो लिख्यते ढाहु लीपते शोभने चूर्ण खरटिते अधोमुखषुच्या श्रूलाया वा एक द्वित्रि लिख्यते। इस मन्त्र को सुपारि, फल मन्त्रीत करके खिलाने से सर्व प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

मंत्र —ॐ नमो भगवतो पार्श्व चद्राय महावीर्य पराक्रमाय अपराजित शासनाय ससार प्रमर्दनाय सर्व शत्रु वश कराय किनर किं पुरुश गरुड गधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, प्रमर्दनाय सर्व भूत ज्वर व्याधि विनाशनाय काल दष्ट मन्त्रो छादनाय सर्व दुष्ट ग्रह छेदनाय सर्व रिपु प्रणासनाय अनेक मुद्रा कोटा कोटी शत सहस्त्र लक्ष स्फोटनाय वज्र श्रृंखल छेदनाय वज्र मुष्टि सचूर्णनाय चद्र हासच्छेदनाय सुदर्शन चक्र स्फोटनाय सर्व पर मन्त्र छेदनाय सर्वात्म मन्त्र रक्षणाय सार्वार्थ काम साधनाय विश्वाकुशाय धरणेन्द्राय पद्मावति सहिताय हिलि २ मिलि २ किलि २ मह २ दिलि २ परमार्थ साधिनी पच २ पय २ धम २ धर २ छिंद २ भिंद २ मुंच २ पाताल वासिनी पद्मावति आज्ञापयती हु फट स्वाहा।

विधि —सर्व विपय के कार्य मे इस मन्त्र का जाप करना चाहिये।

मन्त्र —ॐ नमो भगवतो चड पार्श्वाय भगवन एहि २ यक्ष यक्षी राक्षस राक्षसी भूत भूती पिशाचं पिशाची कुष्माड कुष्माडि नाग नागी क्षर क्षरी अपस्मार अपस्मारी प्रेतं प्रेती कुमार कुमारी ब्रह्म राक्षस स्कद स्कदी विशाख विशाखी गाधर्व गाधर्वी उन्माद उन्मादी काली महाकाली खेती महाखेती कात्य यिनी महा कात्यायिनी भृगी रिटी महा भृगीरिटी विनाय की महा विनाय की चामुडि महा चांमुडि सप्त मात्र की ताट की महा ताट की डाकिनी महा डाकिनी सप्त रोहिणी महा सप्त रोहीणी

सूर्य ग्रहं गृन्ह २ सोम ग्रहं गृन्ह २ वन राज ग्रहं गृन्ह २ नागेन्द्र ग्रहं गृन्ह २ माहेश्वर ग्रहं गृन्ह २ नमोस्तुते भगवते पार्श्वनाथाय एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चार्तुथिक विषम ज्वरं सांवत्सरि कार्द्ध मासिकं वातिकं पितिकं श्लेष्मिकं संनिपातिकं ज्येष्ठाया गृन्ह २ मुह २ मुंच २ धम २ रग २ तिष्ठ २ पच २ त्रिष्ठि २ कथ २ परु २ तुरु २ पूरय २ भगवते भो २ शिघ्र २ आगच्छ २ आवेश २ हन २ दह २ पच २ छिंद २ भिंद २ कुरु २ लघु २ चल २ रिपु २ गडाली २ चडपुरी २ अपस्मारति पर पुरी २ धरि २ करि २ कुरु २ भीन्तरपूर्ण २ कुंभ २ भज २ र र र र र रि रि रि रि रु रु रु रु हु फट् सर्वक्षर नाशिनी कालमुखीनां वासुकीनां तक्षकीनां कपिलाना काल कीटानां अष्टादश वृश्चिकाना द्वादश मूषकाना व्यतर विषनाशिनी सर्वं विष छेदनी सर्वं रोग विनाशिनी हितंकरी यशस्करी सर्वं लोक वशंकरी नमो स्तुते भगवते पार्श्व नाथाय तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः आज्ञापयति स्वाहा ।

विधि —यह मन्त्र सर्व रोग मे पढता जाय और झाडा देवे तो सर्व रोग नष्ट होते है ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्वनाथाय श्री कलि कुंड नाथाय सप्त फण चतुर्दश दंष्ट्रा करालाय धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय महाबल पराक्रमाय अपराजित साशनाय अष्ट विद्या सहस्त्र परिवाराय सर्व भूत वशकराय वज्रमुष्टि चूर्णनाय अकाल मृत्यु नाशनाय संसार चक्र प्रमर्दनाय सर्व विष मोचनाय सर्व मुद्रा स्फोटनाय सर्व श्रुल रोग नाशनाय काल दृष्ट मृतको पथापनाय सर्ववध मोचनाय अनेक मुद्राशत सहस्त्र कोटा कोटि स्फोटनाय वज्र श्रंगोद्भेदनाय सुदर्शन चंद्र हास खड्ग नाशनाय सर्वात्म मन्त्र रक्षणाय सर्वार्थ काम साधनाय सर्व विष छेदनाय सर्व रोग नाशनाय किं पुरुष गरुड गान्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच डाकिनोना प्रनाशनाय एहि २ महाबलि पद्मावति साधनी देवी एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चार्तुथिक वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक सनि पातिक सर्व ज्वरान् गड पिटक विस्फोटिक श्रूल लूता ज्वाला गर्दभ अक्षि कुक्षि रोगाणां वाल ग्रह हन २ दह २ पच २ पाटय २ विध्वशय २ गृन्ह २ वध २ मोचय २ तिष्ट २ वेधय २ उच्चाटय २ चल २ धम २ रंग २ कंप २ जल्प २ कुरु २ पूरय २ आवेशय कपिल घातिं कुरु २ कपिल पिंगल लोचनाय कुरु २ भ्रामय २ शांतिकर २ शुभकर २ प्रशांताय २ ह्ली धरणेन्द्राय अमृवर्षो ज्ञापयति हुं फट् स्वाहा । क्षि क्षां क्षं क्षः रः ७ कुरु २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी सर्व कार्य की सिद्धि होती है तथा सर्व रोग शान्त होते है । ये पठित सिद्ध मन्त्र है । मन्त्र नित्य १ बार पढने से स्वयं सिद्ध हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्वनाथाय तीर्थंकराय कालामुखीनां वासुकीनां कपिलिकानां कालकीटानां तक्षकानां अष्टादश वृश्चिकानां एकादश देवतानां पंचादश विसर्पाणां द्वादश मूषिकानां सर्वेषां चित्रिकाणां सर्वेषां

डाकिनीनां सर्वेषां लूतानां सर्वेषां वातानां सर्वेषां विस्फोटकानां सर्वेषां ज्वराणं सर्वेषां णां सर्वेषां पन्नगानां सर्वेषां ग्रहाणां सर्व रोग विनाशिनी सर्व विद्या छेदिनी सर्व मुद्रा छेदिनी अर्थकरी हितकरी यशः करी सर्व लोक वशंकरी हन २ दह २ पच २ मथ २ गृन्ह २ छिद २ शीघ्रं २ आवेशय २ पार्श्व तीर्थंकराय ॐ नमो नमः हुं २ यः २ पार्श्व चंद्रो ज्ञापयति स्वाहा ।

विधि —सर्व साधकोय मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ऐसो पंच-णमोकारो ॐ सव्वपावपणासणों ॐ मंगलाणं च सव्वेसि पढ़मं हवइ मंगलं स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होते है, और सव इच्छा सफल होती है। यह सर्व मन्त्रो का सार है ।

मन्त्र :—ॐ थंभेउ जलं जलणं चिंतिय मित्तोय पंच नमुक्कारो अरि मारि चोर राउल घोरु वसग्र पणासेउमनसया स्वाहा मम समीहियथं-पुण कुणइ ।

मन्त्र :—ॐ नमो पंचालए पंचालए ।

विधि —इस विद्या का जो जीवन-पर्यन्त स्मरण करता है। उनको जीवन पर्यन्त कभी सर्प नही काट सकता है।

मन्त्र :—ॐ णमो सिद्धाणं आउवंसि चाउवंसि अच्चग्रलं पच्चग्रलं स्वाहा ।

मन्त्र :—ॐ नमि ऊणपास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्लीं नमः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं गह भूय जक्ख रक्ख सड़ाइणि चोरारि दुट्ठराय मारि धरागय रोग जलणाइ सव्व भयाउ रक्खउ सिरिथं भणयट्ठिऊ पासा स्वाहा ।

नोट .—ऊपर लिखे मन्त्रो की विधि नही है ।

मंत्र —ॐ नदे भद्दे जए विजये अपराजिते स्वाहा ३ ॐ ह्री ह्रँ ह्री नमो वर्द्धमान स्वामिने व्रा व्री व्रु व्र. स्वाहा ॐ ऐ ह्री नमो वर्द्धमान स्वामिनि महाविद्ये मम शान्ति कुरु कुरु तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि कुरु २ हृष्टि कुरु २ जीव रक्षा च कुरु २ ह्र क्ष्रू जभे मोहे

हुं फट् ठ ५ वलि गृन्ह २ धूप गृन्ह २ पुष्पाणि गृन्ह २ नैवेद्य गृन्ह २ नानाविध वलि गृन्ह २ सर्व रोग अपहर २ व्रां व्री व्रू व्रः वर्द्धमान स्वामिने स्वाहा। ॐ पन्नती गधारी वइरोटा माणवी महाजाला अव्वुत्ता पुरिसदत्ता काली गौरी महाकाली अप्पडीहया रोहणी वज्रं कुसा वज्जसिखला माणसी महामाणसी एयाउ मम सन्ति कराखे मकरा लाभ करा हवंतु स्वाहा ॐ अट्ठेवय अट्ठेसया अट्ठ सहस्सय अट्ठ कोडीऊ रक्खतु मे सरीरं देवा सुरपणमिया सिद्धा स्वाहा।

विधि :— मस्तके वाम हस्तं चालयद्भिः स्वस्परक्षाक्रियते।

मन्त्र :—ॐ नमः देवपास सामिस्स संसार भय पारग। मिस्स ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी में कुरु २ देवी पद्मावति भगवती ह्रीं स्वाहा ॐ चोरारि मारि विसहर गर भयरिण रायदुट्ठ जलणेय गहभूय जरक्ख रक्खस साइणि दोसं पणासेउ मम देवोपास जिणो स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं आं लक्ष्मी स्वाहा।

विधि —सात धान्य को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके सातों धान्यो को पृथक-पृथक तोलकर पृथक-पृथक पुडिया वाध लेवे फिर २१ वार मन्त्रीत करके सिराणे रखकर सो जावे फिर प्रात उठकर उन धान्यो की पुडिया को तोल लेवे, जो धान्य वजन मे बढ जायगा वह धान्य ज्यादा पैदा होगा वर्षाकाल मे।

मन्त्र :—मुहि चंदप्पह ज्जहियइ जिणुम थइ पारस वथु ईरण इमु छ इं मुछकिय को ही लणह समुथु।

मन्त्र :—ॐ शांते शांति प्रदे जगज्जीव हित शांति करे ॐ ह्रीं भयं प्रशम २ भगवति शांतेमम शांति कुरु कुरु शिवं कुरु कुरु निरुपद्रवं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः शांते स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को तीनो समय (टाइम) जपने से निरुपद्रव होता है।

मन्त्र :—ॐ नमोअ रहो वीरे महावीरे सेणवीरे वर्द्धमान वीरे जयंते अपराजिए भगवऊ अरहस्स जिणिंद वरवीर आसणस्स कु समय मयप्पणा सणस्स भगवऊ समण संघस्स में सिद्धासिद्धाइया सासण देविनि विग्घं कुणउ सानिष्पं स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का नित्य ही स्मरण करने से किसी प्रकार का उपद्रव नही होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं ह्रूं श्री गज मुख यक्षराज आगच्छ मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रां क्रों क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्ष्म्ल्वर्यूं

हम्ल्व्र्यूं भम्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं टम्ल्व्र्यूं रम्ल्व्र्यूं घम्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं छम्ल्व्र्यूं खम्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं ड्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी सर्व कार्याणि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का नित्य ही स्मरण करने से सर्व उपद्रव शान्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ वीर वीर महावीर अजिते अपराजित अतुल बलपराक्रम त्रैलोक्य रण रंग मल्ल गजित भवारि मल्ल ऊं दुष्ट निग्रहं कुरु कुरु मूर्द्धान् मा क्रम्य सर्व दुष्ट ग्रह भूत पिशाच शाकिनी योगिनी रिपुयक्ष राक्षस गंधर्व नर किंनर महोरग दुष्ट व्याल गोत्रप क्षेत्रप दुष्ट सत्व ग्रहंनि ग्रहाण निग्रन्हीया २ ॐ चुरु चुरु मुरु मुरु दह वह पच पच मर्दय २ त्राडय २ सर्व दुष्ट ग्रहं ॐ अर्हंद्भगवद्वीरो अतुलवल वीरो निन्हिया दत्र स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से अक्षत २१ वार मन्त्रीत कर घर मे डालने से घर मे किसी प्रकार का उपद्रव नही होता है ।

मन्त्र :—अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापभावाणं होउ नमो ऊ माई सांहि तो सव्व दुःक्ख हरो, जोहि जिणाणपभावो पर मिट्ठीणंच जंच माहप्पं संघामिजोणु भावो अवयर उजलं मिसोइथ ।

विधि —इस मन्त्र से २१ वार पानी मन्त्रीत कर पीलाने से सर्व प्रकार के उपद्रव शात होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ असि आउसा नमः स्वाहा ॐ अरिहोति लोय पुज्जो सत्त भय विवज्जिऊ परम नाणी अमर नर नाग महिऊ अणाइ निहणो सिवंदेउ ॐ वियये जंभे थंभे मोहे हुः स्वाहा ।

विधि —इय विद्या यस्य डिंभस्य वध्यते तस्य दता सुखे नायाति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ल्रीं क्ष्रीं त्रीं श्रीं हे हे हर २ अमुकं महाभूतेन गृन्हापय २ लय २ शीघ्रं भक्ष २ खाहि २ हुं फटौ ।

विधि —मसान के कपडे पर विप और खून से इस मन्त्र को शत्रु के नाम सहित लिखे फिर उस कपडे को चार रास्ता फाटता हो वहा गाड देवे तो शत्रुभूत वाधा से ग्रसित हो जाता है और उसको हटाने मे कोई भी समर्थ नही होता है । जव गडा हुआ कपडा निकाल दिया जाय तव अच्छा होता है ।

मन्त्र :—हुं घटो ॐ रुद्राय स्वाहा ।

विधि :—रुद्राक्ष, गुगुल, भूत केशी, हिंगु विल्ली की टट्टी (मल) (वीराल वृष्टि) मोर पख, गो श्रृंगु, मुलोट्टी, सरसों बच, इन सब चीजो को एकत्र करे फिर ये मत्र पढता जाय और इन सब चीजो को धूप देवे तो प्रेत ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ लुंच मुंच स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी को मन्त्रीत करे २१ बार फिर रोगी को पिलावे तो (अरिशोपशम) बवासीर रोग शांन्त होता है । इस मन्त्र को जो पढता है सुनता है उसको बवासीर रोग नही होता ।

मन्त्र :—ॐ इले नीले २ हिमवंत निवासिने गलगंधे विसगंधे अनषटे भगंदरे न कोरसा वातारसा हता कृष्णा हता श्वेता स्फटिक रसा मणि सन्त्र ऊषधीनां वर्णरातं जीवेत् । जो इमां न प्रकाशयेत् चतुर्थब्रह्म घातक ।

मन्त्र :—ॐ कालि महाकालि अवतरि २ स्वाहा लुंचि मुंचि स्वाहा ।

विधि :—जो इमा विद्या न प्रकाशयेत् तसु कुले हरिसा नाशयंति । सवेरे दुरा मन्त्र को २१ बार द्वयपलिका प्रमाण जल को मन्त्रीत कर ७ दिन तक पीवे तो उस व्यक्ति को हरस, (बवासीर) पीड़ा नही होती है । इस मन्त्र को प्रतिदिन भी स्मरण करना ।

मन्त्र :—अमीकऊ कुंडु तहि न्हाइ देव्या हाथि लउडातुपरि जविउ तेलु छीनीवराही पीड करइ फाडइ फूटइ जइ फुसइ ई पीड़ नही जान ही कइ खाजहि गंउ भमरइ नवउ सोपउ प्रचंडु गाजइ चारिमास मसाणि जागइ फाडइ पूटइ धावि लागइ काली-पन्नाली काली चउदसि उपन्नी महादेव कइ मुहि पर्ज ति नीकली फाट फूटइ जइ फुसइ महादेवपूज पायल इधू धुरी वुचइ वानरी काली वूचइ कूकरी जाफोडी वाउ वियालु होउ जउल गिखडी कादव इन छीपइ सन होडी छिन्नउ वाय होडि छिनउ हाडहोडी छिन्नउ गुप्तहोडी छिन्नउ पाठ उछौन उधर वर उ छी न उ ऊग मुछी नउ ग्रह चउरासी नव फोडि छिनि छीनि हगु मन्त कइ खाडई महादेव कइ त्रिशुलिहगु व्रह्म राम सकं सधि वाय जिणीकी जाय नव उचेडउ महादेव कउ काडुलय उग उविसु लल्ल कारइ सी गिय उवथणागु आकु तेलु धतुर उइथु घरि निहथु घरि पिगलि माइदिट्ठउ दीट्ठि पराय ऊटकारी गयछ पुक्कारी व्रह्मपुतु काज ला विसुजारे का दवा पुक्कार हिट्ठु ठीवाड आछइ दुठु हतुन जाणउ मनदा पूछिका मखदे लारू खाइ भारउ खाइ व्रह्म खाइ महादेउ खाइ तेतीस कोडि देवता खाइ जा फोडि वाउ वियालु होइ जउ लगि खडीका ध्वइन छीपइ ।

विधि —इस मन्त्र से ३७ वार तैल मन्त्रित करके फोडे पर लगाने से दुष्ट फोडा नष्ट होता हैं।

मन्त्र :—ॐ आं क्रो प्रो ह्रीं सर्व पुर जनं क्षोभय २ आनय २ पादयोः पातय २ आकर्षणी स्वाहा।

विधि —अनेन मन्त्रेण वार २१ जपित्वा हस्तो वाह्यते तथा कुमारि सूत्र दवर के अमु मन्त्र वा ७/७ जपित्वा सप्त ग्रथयो दीयते ततो गाढतर ग्लाना वस्था या रोगिण कटि प्रदेशे दक्षिण हस्ते वा दवर को वध्यते वार ७।२१ अनेन मन्त्रेण वासा अभिमन्त्र्य रोगिणा शरीरे लग्यते शराव सपुट च रोगिण खट्टा धस्थात् स्थाप्यते तस्य नित्य भोगादि कार्य ते स्वय च नित्य स्मर्यते।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे शत वदने शत सहस्त्र सिंह कोटि वाहने पर विद्या उद्यादने सर्व दुष्ट निकंदने सर्व दुष्ट भक्षणे अपराजिते प्रत्यंगिरे महाबले शत्रु क्षये स्वाहा।

विधि —इस महामन्त्र का नित्य ही १०८ वार जप करने से सर्व दुष्टादिक का उपशम होता है और सर्वमन चितित कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो इंद्र भूद गणहरस्स सव्व लद्धि करस्स मम ऋद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मच को नित्य लाभ के लिए सदास्मरण करना चाहिए। वकरे का मूत्र, हिंगु, वच, इनको पानी के साथ पीसकर पिलाने से यदि वासु की सर्प भी काट लिया होतो भी निर्विष हो जाता हैं।

मन्त्र :—ॐ माले शाले हर विषये वेगं हाहासरो अंवेलं चे सर्वेकि पोत गेद्रः मारुद्रं अर्चटः मः हुं २ लसः स्वाहा।

विधि —इस विद्या का स्मरण करने से विप निर्विष हो जाता है।

———

अब करगिणी नाम की गारूड़ी विद्या को लिखते है।

मन्त्र :—ॐ अकलु स्वाहा

विधि इस मन्त्र से, शख को सात वार मत्रीत करके सर्प खाया हुआ मानव के कान मे शख को वजाने से तत्क्षण निर्विप हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ चिटि पिटि निक्षीज ३ ।

विधि :—अनया सप्त वारपरिजप्य दष्टस्यै परि निक्षिपेत्रक्षणा न्निर्विषो भवति ।

मन्त्र :—ॐ चलि चालिनी नीयतेज ३ ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ वार जप कर हाथ को सर्प खाये हुये व्यक्ति के ऊपर (दापयेत्) फिर पानी को माथे पर डालने से निर्विष हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चंद्रिनी चंद्रमालिनीयते ज ३ ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी को ५ वार मन्त्रोत करके सर्पदृष्टा को स्नान कराने से १०० योजन चला जाता है और निर्विष हो जाता है ।

मन्त्र :—उत्तरापथ पिप्पिलि सहिं वसहिं ज (ग) पडरक्खसि विसऊ ढइ विमुप थरइ विसु आहारि करेइ जं जं चक्खइ सयतु विसुतं सयलु निरु विसु होइ अरे विस दीट्ठ उदिट्ठि बंधउ गंट्ठि लयउ मुट्ठि ॐ ठः ठः ।

मीणा मन्त्र :—छ हार कारनेखार ठं ठं ठं ठं कार ठः ठः ठरे विष ।

विधि :—उर्द्ध स्वासेन सीत्कार कुर्वताऽनेन मन्त्रेण वार १०८ जल मभि मंत्र्य भक्षित गढतर विषोय पुरुषादि. पानीय पाप्यते सिच्यतेऽवश्यं विष वमति अस्य मन्त्रस्य पूर्व साधना ।

विधि :—प्रनिवर्ष वार १/१ एत्र क्रियते निंव काष्टे पट्टि काया नि व चन्दना क्षरै मन्त्रो लिख्यते निंव पुष्पै निंव चन्दने न पूज्यते निंव छाविश्चो ड्राह्यते वार १०८ मन्त्रो जप्यते प्रतिवर्ष वार १/१ अनेन विधिना पट्टित सिद्धिस्यात ।

मंत्र :—अह घोणसविज्जाए संतेहिं जवंति सत्तवाराउ पच्छापि बंति तोयं पटंति अह घोणसा विज्जा १ मंत्रयं ॐ नमो श्री घोण से हरे २ वरे २ तरे २ वः २ वल २ लां २ रां २ रीं २ रुं २ रौं २ रस २ क्ष्रूं २ ह्रीं २ ह्रूं ह्रां भगवती श्री घोण से घः ५ सः ५ हः ५ वः ५ ढ़ ५ ठः ५ गः ५ वर विहंगम नुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः क्ष्मां री शोष य २ ठः ३ श्री घोण से स्वाहा ।

विधि :—यह पठित सिद्ध मन्त्र है इस मन्त्र से सर्व कार्य की सिद्धि होती है । सर्व प्रकार के विष दूर होते है । सर्व प्रकार के रोग दूर होते है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं महा संमोहिनी महाविद्येमम दर्शनेन अमुकं जृंभय स्तंभय

मोह्य मूर्छय कछय आकछय आकर्षय पातय ह्रौं महा संमोहिनी ठः ठः स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र का स्मरण करके उपदेश देने से सब श्रोता गण आकृष्ट होते हैं। स्त्र्यादि विषये तन्नामृ चू य कोपि रोचते तन्नाम खटिकया लिख्यो पर वाम पाद दत्वा वार १०८ स्मृर्य तेत तस्तन्मृष्ट्वा वाम हस्तेन तिलक क्रियतेऽधोमुख ततो राजादिर्वशोस्यात्। स्त्र्यादि विषये च दक्षिण पादं दत्वा वार १०८ जप्त्वा च दक्षिण पाणिनोर्द्ध मुखस्तिलक क्रियते पर तस्यानामोपरि पूगी फल ध्रियते त तस्या दीयते तत सा वशीकरण स्यात ।

मंत्र :—ॐ ब्रह्म कुष्यि के दुर्जन मल २ मुखो स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से ७ या २१ वार चन्दन मन्त्रीत करके उल्टा तिलक करे तो संसार को वश करने वाला होता है।

मन्त्र :—ॐ जंभे स्तंभे मोहे अंध्रे सर्व शत्रु वंश करि स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को पहले १०० माला जप करके सिद्ध करले फिर जिसके नाम वार १०८ जल मन्त्रीत करके तीन चुलु पानी छीटे और तीन चुलु पानी पिलावे तो वशी हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अर्धयाडा पिट्ठ वाडा जियुथानक स्सेति आइ तिथु थानक जाह महादेव की केरी आज्ञारा ठः ठः ।

विधि .—अनेन् मंत्रेत तृयानि सप्त वार १०८ अभि मंत्र्ये विले प्रक्षिप्यते कीटि का न नी सरती ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं कलि कुंडे अमुकस्य आपत रक्षणे अप्रतिहत चक्रे ॐ नमो भगवऊ महइ महावीर वर्द्ध माण सामिस्स जस्सोयं चक्कं जलंतं गच्छइ आयांसं पायालं लोयाणं भयाणं जोएवा रणेवा रायंगणेवा जाणे वा वाहणे वा बंधणे वा मोहणे सव्वेंसि अपराजिऊ होमि होमि स्वाहा ।

जयपुर निवासी, गुरु भक्त, संगीताचार्य श्री शान्ति कुमार गंगवाल, व उनकी धर्मपत्नि मेमदेवी ग्रन्थ प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कराने हेतु श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथुसागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विजयमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये ।
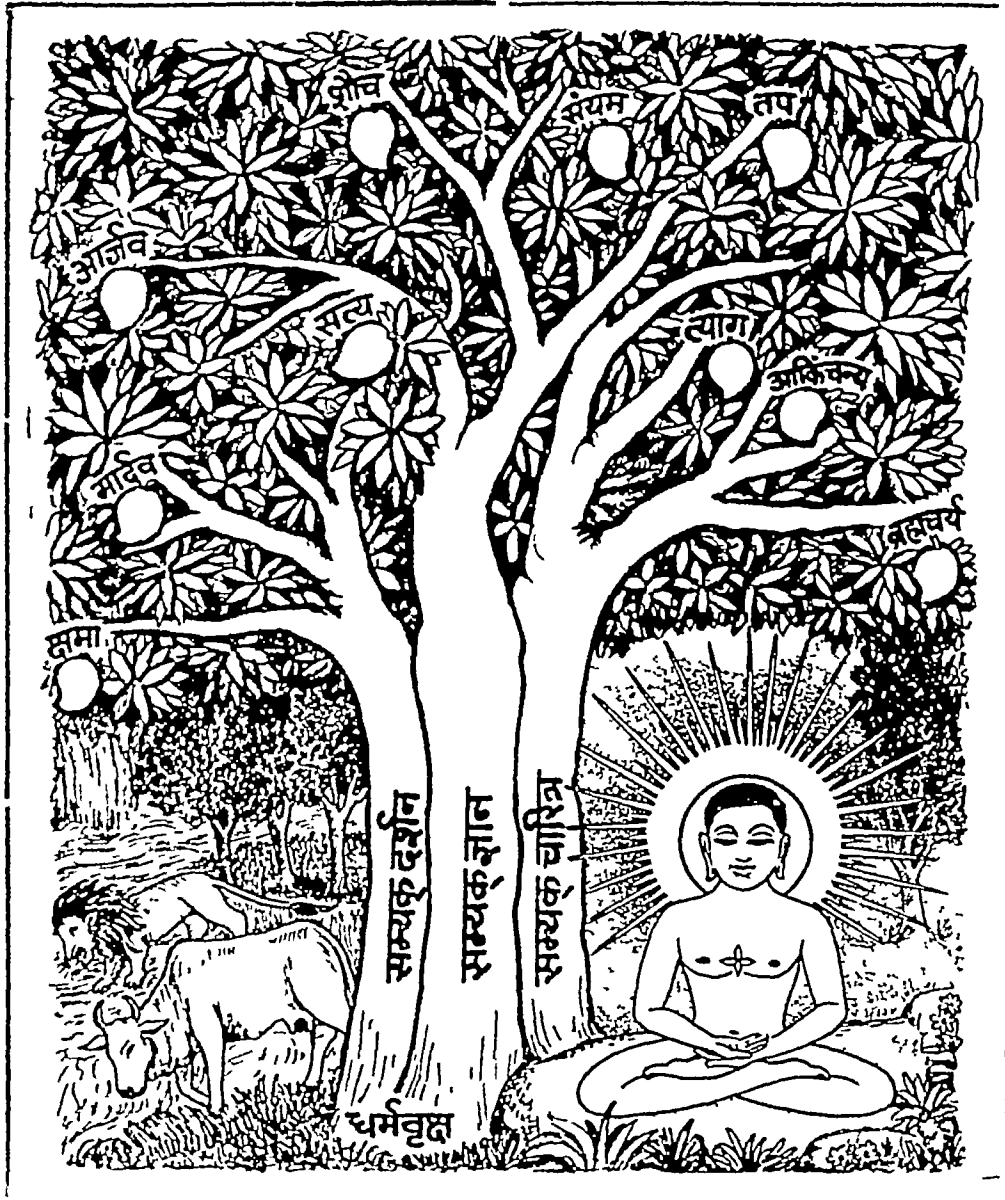
आचार्य श्री का सघ भक्त जनो के साथ (अकलूज चातुर्मास मे)

शारदा दण्डक

ऐं जय २ जगदेक मात्तर्नम चन्द्र चूडेंद्र सौपेन्द्र पद्मोद्भू वोष्यां श्रु शीतां श्रु शिखि पवन यम धनद दनुजेन्द्र पति वरुण मुख सकल सुर मुकुट मणि निचय कर निकर परिजनित वर विविध रुचिर चित्र नव कुसुम चय-बुद्धि लुंच्च भ्रमद्भ्रमर मालानि नादा नुगत मुंजुसि जान मन्जीर कलस कनक मयकिंकिणी क्वाणजिन्नयुङ्छामर सनि भृतपद किरण गण-किंकरानुगत सुचक्रामण ली लेषु लो ले स्थला भोजनिभ चरण नरवरत्न किरण कांति छलेन हरन यन हव्याशन: प्रतिकृतानग विजय श्रियो सौभवत्या भये नेव शरणागत. पादमूले सुमूलेसमालीन इवलक्ष्यते ललित लावण्य तरुकंदली सुभग जघालते गलोन कलधौत रजत प्रभोरुद्यते विद्यु-द्युद्योत माणिक्य वधो ज्वलानर्घ्य कांची कला पानु सयमित मुनि तंव विवस्म रद्विरद परि-रचित नव रोमराज्य कुशे निरंकुशे दक्षिणा वर्तनाभि भ्रम त्रिवलितर लुट्टित लावन्यरस निम्नगा भूषित मध्यदेशे सुवेसे स्फुरत्तार हारावली गगन गंगा तरंग घ्व जालिंगि तो तु गनिविडस्तन स्वर्ण गिरि शिखर यग्मे उमे मुरारी कर कबुरे खानुगत कंठपीठे सुपीठे लसित सरस सुविलास भुज युगल परिहसित कोमल मृणाल नव नाले सुनाले महानर्घ्यमणि वलय जमयूख मुख मासलित कर कमल नखरत्न किरण जित तरणि किरणे सुशरणे स्फुरत्यग्रै रागेन्द्र मणि कुंडलो ल्लसित काँति छटा हरित गल्लस्थली रचित कस्तुरिका पत्र लेखा समुत् खाल सुरनाथ नामी व शोभे महासिद्ध गन्धर्व गण किंनरी तु वर प्रमुख परिरचित विविध पद मगला नंद सगीत मुख सम्पूर्ण कर्णसु कर्णे जय जय स्वामिनि शशि सकल सुगन्धि ताबुल परिपूर्ण मुख वाल प्रवाल प्रभाधर दलोपात विश्रात दंत द्यु ति द्योत्तिता शोक नव पल्लवा सक्त शरदिंदु सांद्र प्रभेसु प्रभे विश्वनाथादि निर्माण विधि मन्त्र सूत्र सुस्पष्ट नासाग्र रेखे सुरेखे कपोल तल कांति विभवेन विभाति नश्यति यावंति तेजासि चतमा सिच विमल तर तार तर सचर तार का नंग लीला विलासो ल्लसित कर्ण मूलात विश्रात विपुलेक्षणा क्षेप विक्षेपे विक्षिप्त रुचिर २ नव कुंदली नांबुज प्रकर भूषिताशा व काशे सुकाशे चलद्भ्रू लता विजित कंदर्प को दण्ड भंगे सुभंगे ॐ लन्मध्ये मृगनाभिमय बिन्दु पद चन्द्र तिलकाय मानेक्षणालकृतार्द्धे दुरोचिर्ल लाटे सुलोढे लसित वंश मणि जालि कात रि चलत् कु तलातानुगत नव कुंद माला नुषक्त भ्रम द्भ्रमरपक्ते सुपक्ते वह द्वहुल परिमल मनोहारि नव मालिका मल्लिका मालती केतकी चंपके दीवरोदार माला नुसग्रथित धम्मिल्ल मूर्द्धावन द्वेदु कर संचयो गगन तल संचरोयं वशश्छ त्ररुप. सदा दृश्यते पार्श्व नाथे यस्य मधुर स्मीत ज्योतिषा पूर्ण हरिणांक लक्ष्मक्षणादेदेव विक्षिप्य ते तस्य

मुग्ध मुख पुंडरी कस्य कविभिः कदा कोप माकेन कस्मै कथदीयता सस्फुट स्फटिक घटिताक्ष मूत्र नक्षत्र चय चक्र वर्ति पद विनोद सदर्शिताहर्निगा समय चारे सुचारे महाज्ञान मय पुस्तक हस्तपद्मेऽत्र वामे दधत्या भवत्या स्फुट वाम मार्गस्य सर्वोत्तम त्व समुपदिश्यते दिव्य मुख सौरभे योग पर्यंक वद्धास ने सुवदने सुखदने सुहसने सुवसने सुरसने सुवचने सुजघने सुसदने सुमदने सुचरणे सुगरणे सुकिरणे सुकरुणे जननि तुभ्य नम ऐ अ इ उ ऋ लृ इति लघु तया तदनु दैर्घ्येण पंचैव योनि स्थिता वाग्भवे प्रणव ॐ विन्दु रू विन्दु रू क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ व भ म य र ल व श ष स हे ति सिद्धं रूद्रात्मिक काममृत कर किरण गण वर्षिणी मात्रि कामुद्गिरतिव मन्ति रस तीस सती हसती सदा तत्र कमल भव भवन भूमौ भवति भय भेदिनि भवानि नद भजनी सुभुर्भव स्वर्भुवन भूति भव्ये सुहव्ये सुकव्ये मुक्त तितायेन सभाव्यसे तस्य जर्जरित जरसो विरजसो विपुत्री कृतार्द्धस्य सत्तर्क पद वाक्य मय सु शास्त्र शास्त्रार्थ सिद्धात सौरादि जैन पुराणेति हास स्मृति गारूड भूत तत्र शिरोदय ज्योतिषायुर्विधाना ख्य पाताल शास्त्रार्थ शस्त्रास मन्त्र शिक्षा दिक विविध विद्या कुल ललित पद गुफ परिपूर्ण रस लसित कान्ति सो दार भणिति प्रगल्भार्थ प्रबन्ध साल कृता शेष भाषा नहा काव्य लोलोदय सिद्धि मुपयाति सद्योविके वाड्भवे नैक के नैव वाग्देवी वागीश्वरो जायते किंच कामा क्षरेण सक्त दुचारितेन तव साव को वाध को भवन् भूवि सर्व शृगारिणा तन्नय न पथ पथि मतित नेत्र निलोत्पलत् झटिति सिद्ध गध वर्गण किंनरी प्रवर विद्याधरी वासुरी मरी वाम ह्री नाथ ना गांग ना वा तदा ज्वलन मदन शरि भिकर सक्षोभित्ता विगलितेव दलि तेव छलिते व कवलितेव विलिखि तेव मुखितेव मुद्रितेव व पुषि संपद्य ते शक्ति वोजेषु सध्यायिना योगिना भोगिना रोगिणाँ वैनतेयाप्यते नाहि नातत् क्षणाद मृते मेघाप्यते दु सह विषाणा शशाक चूडाप्यते ध्यायते येन वीज त्रय सर्वदा तस्य नाम्नैवष श्रु पाशमल पजर लुटयति तदाज्ञया सिद्वयति गुणाष्टक भक्ति भाजा महा भैरवि। ऐं ॐ हूं कवलिन सकलत त्वात्मके सुख रूपे परिणताया त्वयि तदाक परि शिष्य ते शिष्यते यदि तर्हित्वच्छक्ति हीनस्य तस्य कार्य क्रिया कारिता तदिति तस्मिन विंधौ तदा तस्य किं नाम किं शर्म किं कर्म किं नर्म किं वर्म किं मर्म काममतिः कागति कारति काधृति. कास्थिति पर्यर्ष्यति यदि सर्व श्रुन्यात भूमौ निजे स्थास मुन्मेष समय समासाद्य वालाग्र कोग्रं शरूपापि गर्भि कृत शेष ससार वीजानु वघ्नासि क त तदा स्वत्रिकागीय से तदनुपरिजनित कुटिलाग्र तेजो कुराजन निवामेति सस्तूष से वद्ध सस्पष्ट रेखा गिखावा ज्येष्ठेति सभाव्यसे सैव शृ गा ठका कारिता मागता रौद्रि रोद्रिति विख्याय्यसे ताश्चवामादि कास्त त्क लास्त्रीन गुणान् सदधत्य क्रियाज्ञानमय वाछा स्वरूपा मात्रामरस जन्म मधु मथनपुर वैरिणवीज भाव भजत्य. सृ जत्य स्त्रि भुवन त्रिपुर

भैरवी तेन् संकीर्त्य से तत्र शृ गार पीठे लसत् कु डलोल्का कलाया कुला प्रोल्लसती शिवार्कं समास्क द्य चाद्रं महामण्डल द्रावयन्ति पिवंति सुधां कुल वधु व्रत परित्यज्य पर पुरुषमकुलीन् मवलंव्य सर्वस्व माक्रम्य विश्व परि भ्रम्य तेनैव स्यार्गेण निजकुल निवास समागत्य सन्तुष्य सीतितदाक पतिक प्रिय. क प्रभु कोस्तिते नैव जानी महे हे महे स्यानिरम से च कामेश्वरी काम काम गर्जा लये अनग कुसुमादिभि. सेविता पर्यट सि जाल पीठे तदनु चक्रेश्वरी परिजेता नटसि भगमालिनी पूर्णा गिरि गह्वरे नग्न कुसुमा वृता विलससि मदन शरमधु विकासित कदंब विपिने त्रिपुर सु दरी सो घ्राणे नमस्ते ३ अरहते ।

इति त्रिपुर सु दरी चरण किं करोऽरीरचन् महा प्रणति दीपक त्रिपुर दंडकं दीपकः इमं भजति भक्ति मान् पट्टुत्तिय सुधी साधक. सर्वाष्टि गुण सपदा भवति भाजन सर्वदा ।।१।।

इस त्रिपुर सु दरी शारदा दडक को जो कोई पढता है, सुनता बुद्धिमान तो सम्पूर्ण गुणरूपी सम्पदा को प्राप्त होता है । सम्पूर्ण दु खो को दूर करता है । कीर्ति की प्राप्ति होती है और सम्पूर्ण विद्याओ का स्वामी बनता है ।

।। इति शारदा दण्डकः समाप्तः ।।

मन्त्र :—संपत्ते सीह भएसंतं भणि ऊण धगुह चूलेण किज्जइ तह कु डलयं वहि एसे सयल संघस्स धगु हस्सरे हमष्येन कुणइ कुणइ चलणंपि सीह संघाऊ मंतप हावेण फुडं संघस्स विरक्खणं कुणई मंत्रोयथा नंटायणु पुत्रा सायरि उपडि हास मोरी रक्खा कुकुर जिम पुछी उल्ल वेइ उर हइ पुछी पर हइ मुहि जाहि रे जाह अट्ठ संकला करि उरू बंधउ वाघ वाघिणी मुहु बंधउ कलि व्याखि खिणी की दुहाइ महादेव श्री ऋषभदेव की पूजा पाइटा लहि जइ आगल्ही वीर वदेहि ।

विधि : धनुष लेकर डोरी चढाकर आवाज करे धनुष का फिर इस मन्त्र से सात बार मन्त्र पढ कर सात रेखा करे । मन्त्र के प्रभाव से व्याघ्र भी उस रेखा को उलघन नही कर सकता है ।

अनेन मन्त्रेण धगु ह अट्टणि ना कु डला कार सघात वाह्ये रेखा सप्तकं क्रियते मन्त्र प्रभावेन सिहो सघात मध्ये नायाति रेखा नोल्लंघते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह् स्क्लीं पद्मे पद्मे कटिनी ठ्लें नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का त्रिकाल १ माला फेरने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है। विशेष जप करना हो तो गुरु की पहले आज्ञा प्राप्त करे तब ही सिद्ध हो सकता है। अन्यथा नही।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्व कार्य प्रसाधि के भट्टारिके सव्वान् वयणर त्तस्य सम सव्वाऊ रिद्धिऊ सं पज्जंतु ह्रां ह्रू क्रौं नमः सर्वार्थ साधिनी सौभाग्य मुद्रया स्म० ॐ नमो भगवती यामये महा रौद्र काल जिह्वे चल चल भर भर धर धर क्रां क्रां ब्रीं ब्री हुं हुं य मालेनी हर हर ज्वी हुं फट् स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र से भूत प्रेतादि नष्ट होते हैं। इस मन्त्र को १०८ वार नित्य ही स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ इरि मेरि किरि मेरि गिरि मेरि पिरि मेरि सिरि मेरि हरि मेरि आयरिय मेरि स्वाहाः।

विधि —इस मन्त्र का सध्या मे ७ दिन तक १०८ वार जपे सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—श्री सह जाणंद देव केरी आज्ञा श्री गुरू याणंद केरी आज्ञा श्री पिगडा देव केरी आज्ञा अचलान् चालि चालि देऊ करि चालि चालि स्वाहाः।

विधि — पुष्प धूपाक्षत श्री खड युक्तो घट, सखो जपेत् वार १०८ तत शिलाया प्रत्य परे पुरूपोनि वेश्या क्ष तै र्हन्य ते तत स्फिरत यह घट, शख भ्रामण मन्त्र है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्र चक्रेश्वरी मध्ये अदतर २ ह्री चक्र चक्रेश्वरी घंट चक्रवेगेन भ्रामय २ स्वाहा।

विधि —नये घडे को चन्दनादिक से मन्त्र से पूजा करके फिर घडे के उपर कुम्हार को स्थापन करके इस मन्त्र का १०८ वार जाप करे फिर अक्षत से उस घडे को ताडन करे अगर घटा ससार मे भ्रमण करे तो शुभ है और घडा टूट जाय तो हानी होगी। नूतन घट चदनादि ना पूजीय त्वा मन्त्र भणन पूर्व मुपरि कुमार विवेश्य प्रथम वार १०८ अभि मन्त्रितै रक्षितै स्ताडयत्त सृष्टि भ्रमणे शुभ सहारे हानि।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र रूपेण घटं भ्रामय २ मम दर्शय २ ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि —नये घडे के अन्दर चन्दन से ही लिखे फिर उस घडे को मडल अन्दर स्थापन करे, फिर चारो दिशाओ मे उस घडे की पूजा करे फिर अक्षत लेकर मन्त्र पढता जाय ओर घड़े का अक्षतो से ताड़न करता जाय तो घडा घुमेगा।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र धारिणी व्रज धारिण चक्र वेगेन कटोरं कं भ्रामय २ दव्यं दर्शय २ शल्यं दर्शय २ चौरं दर्शय २ सिद्धि स्वाहा।

विधि :—एक कटोरा को गाय के मूत्र में धोकर पत्थर के चकले पर स्थापन करे फिर कुंदरू और गुगुल की धूप देकर इस मन्त्र से हाथ मे सरसो लेकर उस कटोरा का मन्त्र पढता जाय और ताडन करता जाय तो वह कटोरा जल कर जहाँ पर चोर होगा, अथवा चोरों द्वारा जहाँ पर धन गड़ा होगा वहां पर पहुँचेगा।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रय याय नमो आचार्य विलोकिते स्वरात्थ वोधि सत्वाय महा सत्वाय महा कारूणि काय चन्द्रे २ सूर्ये २ मति पूतने सिद्ध पराक्रमें स्वाहा।

विधि :—अपने कपड़े को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके गाँठ लगावे फिर क्रोधित मनुष्य के सामने जावे तो तुरन्त वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रपाप मोचिनि २ मोक्षिणी २ मिली २ मोक्षय जीवं स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का त्रिकाल १० माला २ फेरे तो तुरन्त ही बदी बदी खाने से छूटता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अघोर घंटे स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का १ लक्ष जाप करने से तुरन्तबदी वंदी मोक्ष होता है।

मन्त्र :—ॐ लिं विं विं विं स्वाहा अलइ नलइ तलइ गलइ हेमंतु न वास इरसा वाता रसा होता किं स्वामि लोभिता सप्त सिंगार केरउ मणि मंतु ए विद्या जेन प्रकाश इतेह चत्वारि ब्रह्म हत्या।

विधि :—इस मन्त्र का वार २१ या १०८ सारस्य श्रुचिकया कटोर कस्या लगत्या जलमभिमंत्र्यते तज्जल मर्द्ध पीयते शेष अर्द्ध जल मध्ये श्रूचिकानिक्षिप्य कटोरकं भव्य परिणामम स्थोद्य भव्य स्थाने रात्रौ मुच्यते तत्र हरीषा पतति प्रमाते कटोर कस्थ जल रक्तं भवति।

हिगु, वच दोनों समान मात्रा मे लेकर चूर्ण करे उस चूर्ण को बकरी के मूत्र के साथ मिलाकर पिलाने से सर्प का विष दूर होता है।

मन्त्र :—हउं सिठ ह उं संकरू हउं सुपर मत्तात् विसुरं जउं विसुखाउं विसु अवले विणि कर उं जादि सिवा हुउं सादिशि निर्विस कर उं हरो हर शिव नास्ति विसु।

विधि '—थावर विप भक्षण मन्त्र भक्षितो वा कल पानीय पातव्य वार ७ अभिमन्त्य निर्विषो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को १०८ वार पढता जाय और हाथ से भाडा देता जाय और पानी को १०८ वार मन्त्रीत करके पिलाने से सर्प का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ह्रीं ह्रूं ह्रः ।

विधि '—इस मन्त्र से भाडा देवे १०८ वार तो किसी के द्वारा खिलाया हुआ जहर दूर होता है । तथा क्ष' इति स्मर्यते सर्पो न लगति ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले मातंग सवराय शंखं वादय २ ह्रीं फुट् स्वाहा ।

विधि :—वालु को २१ वार इस मन्त्र से मन्त्रीत करके घर मे डालने से सर्प घर से भाग जाते है ।

मन्त्र —ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं कलि कुंड स्वामिने अप्रति चक्रे जये जये अजिते अपराजिते स्तंभे मोहे स्वाहा ।

विाध – कन्या कत्रित सुत्र को मनुष्य के वरावर लेकर १०८ वार मन्त्रीत करे, फिर उस सुत्र का टुकडा करके खावे तो (वालका न भवति) सन्तान नही होवे ।

मन्त्र :—वम्ल्व्यूं क्ष्म्ल्व्यूं प्म्ल्व्यूं ।

विधि .—इस मन्त्र को पान ऊपर हाथी के मद से अथवा सुगन्धित द्रव्य से लिखकर खिलावे तो वश होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं चमुंड चंडालिनी अमुका मम नामेण आलिंगय २ चूंवय २ भग संचय २ ॐ क्रों ह्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वं फट् फट् स्वाहा ।

विधि – रात्रि को सोने के समय इस मन्त्र को १०८ वार जपना, फिर पानी को २१ वार मन्त्रीत करके पीना, सोती समय इस प्रकार २९ दिन तक करना, शनिवार से प्रारम्भ करना, जिस स्त्री के नाम से जपा जायगा वह अवश्य वश मे होगी ।

मन्त्र :—ॐ गुह्यिा वैतालाय नमः ।

विधि .—काली गाय का गोवर जव भूमि पर न पडे उससे पहले ही रविवार को प्रभात ही ग्रधर ले लेवे, फिर जगल मे एकान्त जगह मे जाकर उस गोवर का ४ कडे वनाना, फिर उसी दिन से नमक रहित गाय के दूध के साथ भोजन करना, उसी दिन से ब्रह्मचर्य का पालन करना, जव शौच लगे तव जगल मे जहाँ कडे पड़े थे

वहाँ जा कर एक कंडे पर दाहिना पैर रखना दूसरे कडे पर बांया पैर रखना, एक कंडे पर शौच करना, एक कंडे पर पेशाब करना, शौच करते समय इस मन्त्र का एक हजार जाप करना। इस प्रकार तीसरे रविवार तक करना, जब तीसरा रविवार आवे तब शमशान की अग्नि लाकर मल वाला कंडा और पैशाब वाला कन्डा दोनो को अलग-अलग जलावे, फिर जलाकर दोनो कन्डो की भस्म अलग-अलग रख लेवे। जब प्रयोग करना हो तो शत्रु के घर मे विष्टा के कन्डे वाली भस्म को डालने से शत्रु के घर मे खाने पीने की वस्तु में भोजन मे सब जगह विष्टा ही विष्टा हो जायगा, शत्रु भोजन भी नही करने पावेगा। जब शत्रु चरणो मे आकर पडे तो पैशाब वाले कन्डे की राख को शत्रु के घर मे डलवाने से विष्टा होना बन्द हो जायगा। तब शान्ति होगी।

मन्त्र :—**ॐ उचिष्ट चांडालिनी देवी अमुकी हृदयं प्रविश्य मम हृदये प्रवेशय २ हन २ देहि २ पच २ हुं फट् स्वाहा।**

विधि .—शनिवार से रविवार तक ७ दिन इस मन्त्र को शौच पैशाब बैठते समय २१ बार जपे तो ७ दिन में वाछित स्त्री वश में होती है।

मन्त्र :—**ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो उयणी मोहिनी दोय बही नड़ी चालोकंत वन माही जान जलंती आगी बुझा वीदों जल मोही थल मोही आकाश मोही पाताल मोही पाणी की पणि हारी मोही वाट घाट मोही आवता जाता मोही सिंहासन बैठो राजा मोही गोखे बैठी रानी मोही चौशठ जोगिनी मोही एता न मोहै तो कालिका माता को दूध हराम करि हनुमंतनी वाचा फुरै गुरु की शक्ति हमरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।**

विधि .—रविवार के दिन इस मन्त्र को १०८ बार नग्न होय जपे पान, फूल, सिन्दूर, गुगुल इन चीजो का सात बार होम करे। जिसको वशी करना चाहे उसके आगे वही पूजा मे का सिन्दूर को सात बार मन्त्रीत क के सीधा तिलक अपने माथे पर करे। वह जिसके नाम से सिन्दूर मन्त्रीत क के तिलक लगाया हो। वश्य होता है। अगर व करण को छोडना चाहे तो पूर्वोक्त क्रिया करके पूजा में का सिन्दूर से उल्टा तिल करे।

मन्त्र :—**ॐ काला कलावा आली रात भैसासुर पठाऊ आधी रात जेरुन आवे आधीरात ताल सेलु करे सगलारात वाप हो काला कलवा वीर अमुकी स्त्री बैठाकूं उठाय लाय सूता कूं जगाय ल्याव खडी कूं**

चलाय ल्याव पवन वेग आणि मिलाय आपणि वलि मुक्ति लीजै अमुकी स्त्री आणि दिजै आवै तो जीवै नहीं तो उर्द्ध फाटि मरै ।

विधि —भैंसहा गुग्गुल की गोली एक सो आठ घृत के साथ बैर की लकडी को जलाय कर इस मन्त्र से होम करे। (वलि देवे)

मन्त्र :—**सर्पापि सर्प भद्रंते दूरं गच्छ महाविषः जन्मेजयस्यय भीते आस्तिक वचनं स्मर ॥१॥ आस्तिक वचनं श्रुत्वा यस्सर्पोन निवर्त्तते। शत-धाभिद्यते मून्द्धि शीर्ष वृक्ष फलं यथा ।**

विधि —अगर सर्प सामने चला आ रहा हो तो दोनो श्लोक रूप मन्त्र को पढकर ताली वजा देना और सर्प के सामने मिट्टी फेक देना, सामने से सर्प हट जायगा, अगर नही मानेगा और जवरदस्ती सामने आवेगा तो सर्प के दो टुकडे हो जावेगा। सवेरे और शाम को तीन-तीन बार इस श्लोक को नित्य ही स्मरण करे तो सर्प जीवन मे कभी भी नही काटेगा ।

मन्त्र :—**ॐ नमो काना भैरू कल वा वीर में तोहि भेजु समदा तीर अंग चटपटी मांथै तेल काला भैरू किया खेल कलवा किलकिला भैरू गजगजाधर में रहे न काम सवारे रात्रि दिन रोव तो फिरै तो जती मसान जहारै लोह का कोट समुद्रसी खांई रात्रि दिन रौवता न फिरै तो जती हणमत की दुहाई सवदशा चापिडका चा फूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।**

विधि —श्मशान की भस्म को ७ वार इस मन्त्र से मन्त्रीत करके जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह उन्मत्त होकर फिरे, याने पागल हो जाय, भूकता फिरे।

मन्त्र :—**ॐ महा कुबेरेश्वरी सिद्धि देहि २ ह्रीं नमः ।**

विधि —इस मन्त्र को तीन दिन तीन रात्रि अहनिश जपे एकान्त जगह मे, जहाँ स्त्री-पुरुष का मुख भी नही दिखाई पडे ऐसी जगह जाकर जपे यहाँ तक कि भूख लगे चाहे प्यास लगे तो भी जपता ही रहे। टट्टी लगे तो भी जपे। और पैशाव लगे तो भी जपता रहे। एक मुरदे की खोपडी को सिन्दूर का तिलक लगावे फिर दीप धूप, नैवद्य चढाय कर उस खोपडी के सामने जप करे निर्भय होकर चौथे दिन साक्षात भगवती सिद्ध होगी और वरदान देगी फिर नित्य ही ४० सुवर्ण मोहर का, फिर ४० सुवर्ण की मोहर नित्य मिलेगी।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं रक्त चामुण्डे कुरु कुरु अमुकं मे वश्य मे वश्यमानय स्वाहा ।

विधि :—लाल कनेर के फूल, लाल राइ, कड़ुवा तेल का होम करे, दश हजार जाप करे अवश्य ही वशीकरन होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो वश्य मुखीराज मुखी अमुकं मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—सवेरे उठकर मु ह धोते समय पानी को सात बार मन्त्रित करके मु ह धोने से जिसके नाम से जपे वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणी अमुख मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को भोजन करते समय एक २ ग्रास के सात एक बार मन्त्र पढता जाय और खाता जाय तो पाँच सात ग्रास में ही वशीकरण होता है। अमुक की जगह जिसको वश करना चाहे उसका नाम ले ।

मन्त्र :—ॐ जल कंपै जलधर कंपै सो पुत्र सौ चंडिका कंपै राजा रूठो कहा करे सिंघासन छाडि बैठे जब लगई चंदन सिर चडाउं तब गीत्र भुवन पांव पडाउं ह्रीं फंट् स्वाहा ।

विधि .—चदन को १०८ बार मन्त्रित करके तिलक लगाने से राजा प्रजा सर्व ही वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्री करी धन करी धान्य करी मम सौभाग्य करी शत्रु क्षय करी स्वाहा ।

विधि :—अगर, तगर, कृष्णागर, चन्दन, कर्पू र, देवदारू इन इन चीजो का चूर्ण कर इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे और १०८ बार मन्त्र की आहुति देवे तो तुरन्त राजगार मिले चाहे व्यापार चाहे नौकरी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं नरसिंह चेट की ह्रां ह्रीं दृष्टया प्रत्यक्ष अमुकी मम वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को रात्रि को १०८ बार जपने से स्त्री तुरन्त वश मे होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं ॐ नमां भगवति मोहिनी महामोहिनी जृंभिणी स्तंभिनी पुर ग्राम नगर संक्षोभिनी मोहिनी वंश्य करिणी शत्रु विडारनी ॐ ह्रीं ह्रां ह्रं द्रोही २ जोहि २ मोहि २ स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को सातो बार १०८ बार जपे और मुख पर हाथ फेरे तो राजा प्रजा सर्व वश्य ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी सप्त पाताल भेदिनी सर्व राज मोहिनी अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ वार नित्य ही जाप करने से वडा प्रतापी होता है और जगद्वश्य होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो राई रावै धनि आधावे खारी नोन चटपटी लावे मिरचै मारि दुश्मनै जलावे अमुक मेरे पांव पडता आवै बैठा होय तो उठावै सूता होय तो मार जगावै लट गहि साटी मार मेरे बांये पायें तले आनि घाल दषों हनमंत वीर तेरी आज्ञा फुरै ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि —राई, धनिया, नमक, मिरच, इन चारो चीजो को मिलाकर इस मन्त्र से १०८ वार अग्नि मे होम करे तो इच्छित व्यक्ति आकर्षित होता है।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मे वश्य मानय सः जुं ॐ ।

विधि —इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से वशी करण होय ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुक आकर्षय २ सः जुं ॐ ।

विधि .—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से आकर्षण होता है।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकी आकर्षय २ सः जुं ॐ ।

विधि —इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से स्त्री का आकर्षण होता है। पुरुष के लिये करे तो पुरुप भी आकर्पण हो ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं स्तंभय २ ठः ठः सः जुं ॐ ।

विधि .—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से भी स्तम्भ होता है।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मोहय २ सः जुं ॐ ।

विधि —इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से मोहनी करण होता है। अमुक की जगह साध्य व्यक्ति का नाम लेवे ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं उच्चाटय २ सः जुं ॐ ।

विधि —इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से उच्चाटन होता है।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मारय २ घे घे सः जुं ॐ ।

विधि —इम मन्त्र का एक लक्ष जप करने से मनुप्य मरण को प्राप्त हो जाता है

मन्त्र :—ॐ नमो चीटी २ चांडाली महाचांडाली अमुकं मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—दूध, घी को एक हजार आठ बार होम करे तो स्त्री या पुरुष वश मे होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो नगन कीटि आ वीर ह्रूं पूरों तोरी आशा तूं पूरों मोरी आशा ।

विधि :—भूने हुए चावल एक सेर, शक्कर १ पाव, घी आधा पाव इन सब चीजो को एकत्र करके रखना फिर प्रात काल जहॉ चीटियो का बिल है वहा जाकर मन्त्र पढ़ता जाय और वह एकत्र करी चीज को थोडी २ चीटियो के बिल पर डालता जाय । इस प्रकार ४० दिन तक करने से तुरन्त रोजगार मिलता है ।

मन्त्र :—ॐ चंदा मोहन चंदा वेली नगरी माहि पान की चेली नागर वेली की रंग चढ़ै प्रजा मेरे पाय पडै । यहॉ नाम देवे ।

विधि :—वार ७ या २१ मन्त्रित पान खाने से सर्वलोक देखकर प्रसन्न होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो हन २ दह २ पच २ मथ २ अमुकं मे वश्य मानय २ कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सूर्योदय के समय पानी को १०८ बार मत्रित करके पीने से वश्य होता है ।

तन्त्र :—दो मुंह वाले साप मरे हुये को ७ दिन तक नमक में गाड देना फिर आठवे दिन उस सांप को नमक के अन्दर से उठा लेना । लेके पानी से धो लेना, फिर नदी या तालाब मे जाकर कमर तक पानी मे जाकर साप के हड्डी की गुरीआ एक २ पानी में छोडते जाना जो हड्डी की गुरीआ पानी मे सर्पाकार चले उसे ले लेना । लेके उस गुरीआ को चादी या ताँबे के ताबीज में डालकर पास रखे तो मनुष्य अदृश्य होता है ।

तन्त्र :—काली बिल्ली को तीन दिन उपवास करवा के धाप कर घी उस भूखी बिल्ली को पिलावे फिर जब वह बिल्ली उल्टी करदे तब उस घी को उठाय लेना, उस घी का दीपक जलाकर मनुष्य की खोपडी पर काजल पाडना उस काजल को आँख मे अजन करने से मनुश्य अदृष्य हो जाता है । अपने तो सबको देखता है । किन्तु स्व को कोई भी नही देख पाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरू कूं काला भैरूं कपिली जटा भैरूं फिरे चारों दिशा कह भैरू तेरा कैसा भेष काने कुंडल भगवा हाथ अंगोछी ने माथे ममडो मरे मशाने भैरू खड़ो जह २ पठॐ तह २ जाय हाथ भी जी खड़ २ खाय मेरा वैरी तैरा भख काढ कलेजा देगा चख

डाकिनी का चख शाकिनी का चख भूत का विगर चह्या रहे तो काली माता की सेज्या पर पाव धरे गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—अर्ध रात्रि मे काली माला, काला वस्त्र पहनकर १०८ वार जपना, नित्य भुक्त भैरो को वलि देना २१ दिन तक, तो कार्य हो।

मन्त्र :—ॐ माहेश्वरी नमः।

विधि —इस मन्त्र सो वेर की लकडी चार अंगुल की एक हजार वार मन्त्रित करके जिसके घर मे डाल देवे तो सर्व परिवार वश होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अमुकी मे प्रयछ ठं ठः।

विधि —इस मन्त्र सो पाडर जाहि की लकडी पाच अंगुल की कील बनाकर एक हजार वार इस मन्त्र सौ मन्त्रित करके देवता के मन्दिर मे वाम तरफ मकान हो उसमे गाड देवे, कन्या जल्दी मिलती है।

मन्त्र :—ॐ कं कां कि की अमुकं हुं कुं कूं कें कै कों कौं कं कः ठः ठः।

विधि —इस मन्त्र से खैर की लकडी की आग जलाकर उसमे घी की मन्त्र से आहुति देने से शत्रु को ज्वर चढता है और जव शत्रु आकर चरणो में पडे तो उसकी शान्ति के लिये इस मन्त्र ॐ सो स, को जपने से ज्वर टूटता है।

मन्त्र :—ॐ हूं खं खां हिं वि खुं खूं खें खै खों खौं खं खः ठः ठः।

विधि भीलावे की लकडी छ अंगुल की एक हजार वार मन्त्रित करके शत्रु के दरवाजे मे गाडने से शत्रु महान कष्ट पाता है। जव गढी हुई लकडी को निकाले तव शाति।

मन्त्र :—ॐ क्षौं धं धां धिं धीं धुं धूं धें धै धों धौं धं धः अमुकं ठः ठः।

विधि हारि ६ की लकडी चौदह अंगुल की एक हजार वार मन्त्रित करके चौराहे पर रात्रि को गाड देने से शत्रु को राक्षस आकर वाधा पहुचाता है। जव उस लकडी को चौराहे पर से निकाले तो शाति हो।

मन्त्र :—ॐ ह्री ह्रूं जं जां जि जी जुं जूं जें जै जों जौं जं जः अमुकं ठः ठः।

विधि —पीपल की लकडी पाच अंगुल की हजार वार मन्त्रित करके अपने घर गाड़ देने से वश होय।

मन्त्र :—ॐ झं झां झी झि झुं झूं झें झै झों झौं झं झः अमुकं ठः ठः।

विधि :—समी की लकडी की कील ११ अगुल की इस मन्त्र से १००० बार मन्त्रित करके जिसके घर मे गाड दी जाय उसके घर मे के सर्व भय राक्षस, भूत, प्रेतादिक कृतोपद्रव शान्त हो।

मन्त्र :—ॐ क्षु क्षीं अमुकं ठः ठः।

विधि :—लोहे के त्रिशूल को विष और रक्त से लिप्त करके १००० धार मन्त्रित करे और फिर उस त्रिशूल को भूमि मे गाड देवे तो शत्रु का निश्चय से मरण हो।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुध्वो ह्लां स्वाहा।

विधि —सहस्त्रेक जप्त्वा पूर्वस्यैव कर्तव्य मनास्मरे तु सर्वमाकर्षयति।

मन्त्र :—ॐ प्रचंड ह्लीं ह्लीं फट् ठं: ठः।

विधि —इस मन्त्र से मनुष्य की हड्डी सात अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर मे गाडे उसके घर मे महान् उत्पात होता है उसको निकाल देवे तो शाति हो।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षौं अमुकं फट् स्वाहा।

विधि :—चूटका मसं सयुक्त कटुतैलेन जुहुयात् मन्त्रसहस्त्रेण मन्त्रीत्वात् शत्रुनिपातो भवति।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षौ अमुकं फट् स्वाहा।

विधि -- इस मन्त्र से चिउ टा मसा कडवा तैल मे १००० बार होमे तो शत्रु का निश्चित मरण हो।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं अमुकं ठः ठः।

विधि :—मनुष्य के हड्डी की अठारह अगुल कील को इस मन्त्र से हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर मे गाड़ दिया जाय उसके कुटुम्ब मे महान् उत्पात हो। निकाले तब अच्छा हो।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्लां ह्लूं महाकाल कराल वदन गृह भिंदि २ त्रिशुले न ठं ठः।

विधि :—इस मन्त्र से विभि तक काष्ट की कील एक इस अगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर के द्वार पर जिसके नाम से गाडे वह सद्य मरे।

ॐ ह्लीं ह्लां अमुकं ठं ठः।

विधि :—इस मन्त्र सेतु (   ) काष्ट की लकड़ी नव अगुल प्रमाण १ हजार बार मन्त्रित करके जिसके नाम से घर मे गाड़े तो वश्य होय।

मन्त्र :—ॐ मातं गिनी ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि .—राई, नमक दोनो को घी के साथ होम करने से जिसके नाम से होम करे वह वश में हो आकर्षित हो ।

मन्त्र :—ॐ जलयं जुल ठ ठ स्वाहा ।

विधि —उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे वट वृक्ष की तीन अगुल लकडी को सात वार मन्त्रित करके जिसके घर मे डाल दिया जाय उसके घर मे श्मशान हो जाय ।

मन्त्र :—ॐ मनु ऊं ठं ठः स्वाहा ।

विधि .—हस्त नक्षत्र मे जास्छि की कील चार अगुल सात वार मन्त्रित करके कुम्हार के आवा मे (वरतनो के भट्टे मे) डाल देवे तो सर्व वरतन फूट जाय ।

मन्त्र :—ॐ मरे धर मुह मुह ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—विशाखा नक्षत्र मे विष काष्ट की चार अगुल की कील को सात वार मन्त्रित करके जिसके घर मे डाल देवे तो उस घर का सर्वनाश हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ मिली २ ठं ठः स्वाहा ।

विधि —ज्येष्ठान नक्षत्र मे हिगोष्ट की लकडी एक अगुल की सात वार मन्त्रित करके जिस वैश्या के घर मे डाल देवे, तो वैश्या के घर मे अन्य पुरुष प्रवेश नही करेगा ।

मन्त्र :—ॐ नां नीं नुं ठं ठः स्वाहा ।

विधि —मूल नक्षत्र मे नील (नाल) काष्ट की लकड़ी नो अंगुल की सात वार मन्त्रित करके वेश्या के घर मे डाल देने से दुर्भागी होती है वेश्या ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ठं ठः स्वाहा ।

विधि —पूर्वाषाढा नक्षण मे अपामार्ग की कील और भृगराज आता सहित मन्त्री के जिसके घर मे डाले तो वह पुरुषहीन हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ जं जां जिं जूं ठं ठः स्वाहा ।

विधि —उत्तराषाढा नक्षत्र मे काग की हड्डी सात अगुल इस मन्त्र से मन्त्रीत करके जिसके घर मे डाल देवे तो उसका उच्चाटन हो जाता है ।

अदृश्य अंजन विधि —वैला द्राज्या ततो ग्राह्य वाराह वस सजुत । प्रिय पित यथा देवि कज्जलं यस्तु कारयेत् । इस प्रकार अजन वनाकर आँख मे आजने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठुं ठूं ठें ठैं ठो ठौं ठं ठः अमुकं गृह २ पिशाच हुं ठं ठः ।

विधि :—शाखोटक की कील नो अंगुल एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके नाम से चौराहे पर रखे साथ मे मद्य, मांस, नख, रक्त, फूल भी रखे तो शत्रु को पिशाच लग जायगा। जमीन मे गाड़ना चाहिये। जब अच्छा करना हो तब वापस निकाल देवे तो अच्छा हो जायगा।

मन्त्र :—ॐ जं जां जिं जीं जुं जूं जें जैं जों जौं जं जः अमुक ठं ठः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण लोह कील केन राश नाशन मन्त्र.।

मन्त्र :—ॐ ह्लं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को मो कपास के बीज और छुई मुई (लजालु) कडवा तेल (सरसो का तेल) मिलाकर जिसके नाम से होम करे उसके शरीर मे फोड़ा फुंसी निकल आवे। अगर अच्छा करना चाहे तो ॐ स्वाहा मन्त्र की घृत दूब की आहुति देवे तो अच्छा हो।

कर्ण पिशाची देवी सिद्ध करण मन्त्र :—ॐ धेठ स्वाहा ।

विधि :—लाल फूल से एक लक्ष इस मन्त्र का जाप करे तब मन्त्र सिद्ध होता है। जो बात पूछो भूत, भविष्य, वर्तमान की सब कान मे कह देवे।

मन्त्र :—ॐ खं ऊं खः अमुकं हन हन ठ ठ ।

विधि :—इस मन्त्र से, जाऊ की लकडियो से जो नदी के किनारे हो, उन लकडियो से होम करे तो शत्रु का निपात हो।

मन्त्र :—ॐ खं डुं खः अमुकं ठं ठः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण झाऊ काष्ट समिधि होमियात् सर्व शत्रु निपातो भवति।

मन्त्र :—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रां ह्रीं हुं ऊं दक्षिण कालिके क्रां ह्रीं ह्रूं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मयूर की बिष्टा, कबूतर की बिष्टा, मुरगा की विष्टा, धतूरे का वीज ताल मखाना इन पाचों चीजो को बराबर लेना, फिर मन्त्र का जप १ हजार करना और दश मास होम करना तब वह होम की भस्म लेके जिसके माथे पर मन्त्रित कर डाल दिया जाय वह उन्मत्त हो जाता है। शरठो वृश्चिको भृंगोकर्करा च चतुष्टयं, चत्वार पक्काय तैलं तल्लेपं कष्ट कारक।

मन्त्र :—ॐ मर २ ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—पूर्वा फाल्गुणी नक्षत्र मे राक्षस वैतालादि उपद्रव करे।

मन्त्र :—ॐ नमः कामेश्वरीय गद २ मद उन्माद अमुकी ह्रीं ह्रः स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र का २०००० जाप करे फिर दस मास होम करे। जिस स्त्री का नाम लेते हुये करे तो वह स्त्री वश मे होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रीं ऐं ह्रीं परमेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जाप करने से पुरुष वश मे होता है।

मन्त्र :—ॐ आं ह्रीं क्रो एहि २ परमेश्वरी स्वाहा ।

विधि —लाल वस्त्र पहिनकर लक्ष जाप जपने से पुरुष वश मे होता है।

मन्त्र :—ॐ क्षौं ह्रीं आं ह्रीं स्वाहा ।

विधि - लाल कपडे पहिनकर काप मे कु कु म लगाना, लाल रग का फूल धर माला पहिनकर एकात निर्जन वन मे १ लक्ष जप करने से स्त्री आकर्षण होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रं अमुकं हन २ स्वाहा ।

विधि - लाल कनेर के फूल, सरसो का तेल, १ हजार जप कर एक हजार होम प्रत्येक पुष्प के प्रति मन्त्र पढकर होम करे तो शत्रु का नाश हो जाता है। विधि मे थोडी सी कमी रहने पर स्वय का नाश हो जाता है। सावधान रहे।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं लां ह्रीं लीं ह्रीं लौ ह्रीं लः ह्रीं अमुकं ठं ठः ।

विधि —सरसो की भस्म को इस मन्त्र से मन्त्रित करके शत्रु के घर मे डाल देवे तो शत्रु की भुजा का स्तम्भन हो जाता है, और सेना के सामने डालने से सेना का स्तम्भन हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ श्री क्षं का मातुरा काम खेला विधेंसिनी लवनी अमुकं वश्यं कुरु २ ह्रीं नमः ।

विधि —इस मन्त्र को भोजन करते समय अपने भोजन को ७ वार मन्त्रित करके जिसके नाम से खावे वह सातवे दिन तथा वारहवे दिन वश मे हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ जुं सः ।

विधि - इस मन्त्र को त्रि सध्याओ मे जपने से शत्रु का नाश हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ हुं नमः ।

विधि —तीनो संध्याओ मे नित्य ही लक्ष लक्ष जप करे तो पादुका सिद्धि होती है। उस पादुका को पहिन कर, जल पर तथा आकाश मे गमन करने की शक्ति आती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रां ॐ ह्रं ह्रं अमुकं हन हन खंडेन फुट स्वाहा ।

विधि :—गोबर को अधर ले लेना फिर उस गोबर की प्रतिमा बनाना (पुतला) शत्रु की, फिर श्मशान में जाकर रात्रि के अन्दर एक हजार मत्र का जप करना, जप करके उस गोबर वाले पुतले का जो अंग छुरी छेदन करे उसी अग का छेदन शत्रु का हो जाता है। विधि में कमी रही तो अपना हो जाता है। गोबर लेते समय मंत्र को पढता जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं क्षुं ह्रीं अमुकं ठं ठः

विधि :—विष रक्त, से लोहे के त्रिशूल को लिप्त करके इस मन्त्र का एक हजार जप कर त्रिशूल को मन्त्रित करे। फिर जमीन मे गाड देने से शत्रु की तत्काल मृत्यु हो जाती है।

मन्त्र :—ॐ ॐ ॐ ह: ह: ऐं नमः।

विधि :—इस मन्त्र का आठ लाख जप करने से महा विद्वान् कवि पडित होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्लों ह्लों ठं ठः।

विधि :—जाऊ काष्ट की बारह अगुल कील को एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे वह मर जाता है, विधि में कमी रही तो स्वय मर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्लों ह्रीं श्रीं श्रों श्रें सः स्वाहाः नमः।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से सिद्ध जन होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदि योगिनी परम माया महादेवी शत्रु टालनी दैत्य मारनी मन वांछित पूरणी धन वृद्धि मान वृद्धि आन जस सौभाग्य आन न आनै तौ आदि भैरवी तेरी आज्ञा न फुटै गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुटो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—मत्र जपे निरन्तर १०८ बार विधिपूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय। सर्व कार्य सिद्धि होय। बार २१-१०८ चोखा मत्र जिस वस्तु मे राखे तो अक्षय होय।

मन्त्र :—ॐ नमो गोमय स्वामी भगवउ ऋद्धि समो वृद्धि समो अक्खीण समो आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठ : ठ : ठ : स्वाहा।

विधि :—मंत्र जपे प्रातः काल शुद्ध होकर लक्ष्मी प्राप्त होय। वार २१–१०८ सुपारी चॉवल मंत्रित कर जिस वस्तु मे घाले सो अक्षय होय। यह मत्र पढ कर दीप, धूप, खेवे भोजन वस्तु भडार मे अक्षय होय। उज्ज्वल वस्त्र के धारी शुद्ध आदमी भीतर जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमों भगवउ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणस्स भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि —मत्र नित्य प्रात काले शुचिभूत्वा दीप धूप विधानेन जपे, लाभ होय, लक्ष्मी प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ नमों गोतम स्वामोने सर्व लब्धि सम्पन्नाय नमः अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ प्रतिदिन जपिये, जय हो, कार्य सिद्ध होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये स्वाहा ।

विधि —फल अनेन मत्रेण लवण च तुष्पय धूलि च पृथक पृथक एकविंशति वारान् परिजप्य आतुरस्य पार्श्वतौ भ्रामयित्वा एकविंशति वारान् परिजप्य तक्रादिमध्ये स्थापयित्वा आतुर पल्यकस्याधो धारयेत् यथा २ लवण विलीयते तथा तथा दृष्टिदोषणे मुच्यते लवण मत्र दृष्ट प्रत्यय ।

मन्त्र :—ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं स्रावय २ अमुकस्य सर्व दोषान् स्रावय प्लावय स्वाहा ।

विधि —औषधादि मत्रण मत्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्री धरणेन्द्र पार्श्वनाथाय नमः निधि दर्शनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—जप मत्र अस्य तु मत्रस्य जपात् हस्त नेत्रयो स्पर्श्य मत्र निधिस्तभन प्राप्त्वा दर्शनं कार्य नेत्राभ्या स्पष्ट भवति दर्शनम् ।

मन्त्र - ॐ नमो ह्री जय जय परमेश्वरी अम्बिके आम्र हस्ते महासिह् जानु स्थिते ककणी नूपुरा रावकेयूर हारा गदानेक सम्दूषणै भूषितागे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निष्फले निर्मले नि प्रपचे महोग्रनने सिद्ध गधर्व विद्याधरे रचिते मत्र रूपे शिवे शकरे सिद्धि बुद्धि धृति कीर्ति वृद्धि स्थिते शान्ति पुष्टि निधि स्तुष्टि दृष्टि श्रिये शोभने सुख हासे ज्वरे जभिनी स्तंभिनी मोहनी दीपनी, शोषिणी, भासनी, दुष्ट निर्णाशिनी क्षुद्र विद्रावणी धर्म सरक्षिणी देवी अम्वे महा विक्रमे भीमनादे सुनादे अघोरे सुघोरे रौद्रे रोद्राननें चडिके चडिरुपेसुचक्रे सुनेत्रे सुगात्रे, सुपात्रे, तनु मध्यभागे जयति २ पुरध्री कुमारी सुभद्रे पवित्रे सुवर्णे महामूल विद्यास्थिते गौरि गाधारी गधर्व जक्षेश्वरी काली २ महाकालि योगीश्वरी जैनमार्ग स्थिते सुप्रशस्ते शस्त्रे धनुनाद्र दडाभि चक्रेक वक्राकुशावेक शास्त्रोदिते सृष्टि सहार कातार नागेन्द्र भूतेन्द्र देवेन्द्र स्तुते किन्नरै यक्ष रक्षा धिपै ज्योतिषै पन्नगेन्द्रै सुरेन्द्राश्चिति वदिते पूजिते सर्व सत्वोतमे

सर्व मत्राधिष्ठते ॐ कार वषट्कार हुकार ह्रीकार सुधाकार बीजान्विते दु ख दौर्भाग्य निर्णाशिनी रोग बिध्वशनी लक्ष्मी धृति, कीर्ति कान्ती विस्तारनी सर्व दुर्गुणेषु निस्तारणी दुस्तरोत्तारणी ॐ क्रौ ह्री नमो यक्षिणी ह्री महादेवी कुष्माडिके ह्री नमो योगिनी ह्रू सदा सर्व सिद्धि प्रदे रक्ष मा देवी अम्बे अम्बे विवादे रणे कानने शत्रु मध्ये समुद्र प्रवेशागमे गिरौ कृष्ण रात्रौ घने सध्याकाले निहस्तं निरस्त निहीन निशान्त प्रशन प्रनष्ट प्रह्लष्ट ग्रहै र्यक्ष रक्षो रुगै दैत्यभूतैः पिशाचै ग्रहीत ज्वरेणाभिभूतं गजैर्व्याध्रिसिहै निरुद्धं व्याल वेताल ग्रस्त खगेन्द्रेण नीत कृतातै न ग्रस्त मृत चापि संरक्ष मा देवी अम्ब्रालये त्वत्प्रसादात् शान्तिकं पौष्टिक वश्यमाकर्षणोच्चटौन स्तभन मोहन दीपन चैव एतन्यहा ताडक एतानि सर्व कार्याणि सिद्धि नयति सक्षेपत. सर्वरोगा प्रणश्यन्ति । न सशय भवेदिह ॐ ह्र फट् स्वाहा इति "आम्र कुष्माडिनी मालामत्र" । ॐ ह्री कुष्माडिनी कनक प्रभेसिह मस्तक समारुदे जिनधर्म सुवत्सले महादेवी मम चिंतित कार्य शुभाशुभ कथय-कथय अमोघ वागीश्वरी सत्यवादिनी सत्य दर्शय-दर्शय स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र का विधान मगल के दिन से आरम्भ करे । गुलाब का इत्र अपने शरीर पर लगावे । गुलाब के फूल चढावे । एक चौकी पर या आले में चमेली के फूलो का चौकोर चबूतरा बना ले । वहा देवी की स्थापना करे । धूप बत्ती जलावे, धूप खेवे, धूप मे जावित्री अवश्य मिलावे, गाय के घी का दीपक जलावे, मिष्ठान्न चढावे और आम्रफल विशेष रूप से चढावे । नित्य प्रति प्रथम नेमिनाथ स्वामी की पूजा करके देवी की पूजन करना ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कल्लो हां स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र पहिनकर एकान्त मे एक लाख जप करे तो आकर्षण होता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं हूं सं सं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र का एक हजार जप करने से सिद्ध होता है तब खयर की लकडी के एक हजार टुकडे-टुकडे विष और रक्त से लिप्तकर मत्रपूर्वक अग्नि में होम करे तो शत्रु को ज्वर चढे । विधि मे कमी रही तो स्वयं को चढे और फिर कभी भी अच्छा नही होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो काल रूपाय अमुकं भस्मीं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मत्र का जप श्मशान मे तथा एकान्त मे जपे तो शत्रु कभी नही जीवे । विधि चूके तो स्वयं का मरण निश्चित होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो विकराल रूपाय महाबल पराक्रमाय अमुकस्य भुजवत्सलं बंधय २ दृष्टि स्तंभय २ अंगानि धुनय २ पातय २ महीतले हुं ।

विधि इस मत्र का एक हजार जप करे और शत्रु का मत्र मे नाम डाल दे तो शत्रु की शक्ति का छेद हो जाता है। जड के समान हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो कालरात्री त्रिशूलधारिणी मम शत्रु सैन्यं स्तंभनं कुरु २ स्वाहा।

विधि भौ वारे गृहीत्वा तु काकोल्लूकपक्षयो, भूर्यपत्रे लिखेन्मत्र, तस्य नाम समन्वित गोरोचन गले वध्वा, काकोल्लूकपक्षयो सेनाना समुख गच्छेत् नान्यनाश करोदित शव्द मात्रे सैन्य मध्ये, पलायतेति निश्चित राजा, प्रजा, गजा श्चश्व, नान्यथा च महेश्वरी। तथा —

मन्त्र :—ॐ नमो भयंकराय परम भय धारिणे मम शत्रु सैन्य पलायनं कुरु २ स्वाहा।

विधि —इस मत्र को भौमवार कू काला कौवा और उल्लू के पख लेकर इस मत्र को भोजपत्र पर लिखकर गले मे वाधना। उन दोनो पखो के साथ, फिर शत्रु की सेना के सन्मुख जावे तो सेना देखते ही भाग जावे।

मन्त्र :—ॐ सु मंखी महापिशाचिनी ठः ठः ठः फट् स्वाहा।

विधि —अपमृत्यु से मरे हुये मनुष्य के मुर्दे पर इस मन्त्र का जाप २१ हजार वैठ कर करे और मुर्दे के मु ह मे पारा दो तोला डाल देवे। जव जप समाप्त हो जावे तव सहतु १ सॉप १ शराव, उडद का होम करे। दशास। तव वह मुर्दा उठ जावेगा, उस मुर्दे को पकड कर उसके मु ह से पारा की गोली निकाल लेना और उस मुर्दे को जला देना। इसी मन्त्र से उस पारा की गोली की पूजा करके २१०० सो जाप करे। फिर उस गोली को पास मे या मु ह मे धारण करने से मनुष्य आकाश मे उडने लगता है, जहाँ जाना चाहे वहाँ जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कु सेंदुरिया चलै अैसा वीर नरसिंह चलै असै वीर हनुमंत चलै लट छोड़ मरे पाय परै मेरी भगती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि —शुभ मुहूर्त मगलवार के दिन अपने शरीर मे उवटन लगावे, फिर उवटन उतारे। उस शरीर के मैल का एक मनुष्याकार पुतला वनावे। उस पुतले के माथे मे सिन्दूर की टीकी सोलह लगाना, सोलह २ वार एक टीकी लगाते समय सोलह २ वार मन्त्र पढना, इस प्रकार सोलह दिन तक करना प्रत्येक दिन का मन्त्र व टीकी २५६ हुई। इस प्रकार करने से वारआ, यक्ष प्रत्यक्ष होता है। प्रत्यक्ष होते ही उससे वचन ले लेवे जो आज्ञा करो सो ही करे।

मन्त्र :—थल वाधौ हथौडा वांधौ, अहरन माही, चार खूट कडाही बांधो, बांधो

आज्ञा माही तीन सवद मेरे गुरु के चालियौ चढ़ियौ लहरस वाई अनीं बांधौ सूंई बांधौ बांधौ सारा लोहा निकलियो न लोहू पकियो न घाव जिसकी रक्षा करे गुरु नाथ।

विधि .—इस मन्त्र को एक श्वास मे सात वार पढ कर नाक कान छेदन करने से पीड़ा भी नही होगी और पकेगा भी नही।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवते चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चँद्र महिताय चन्द्र कीर्ति मुख रंजनी स्वाहा।**

विधि .—इस मन्त्र को चन्द्र ग्रहण के दिन रात्रि मे जपने से विद्या की प्राप्ति अच्छी होती है।

मन्त्र :—**ॐ नमों भगवती पद्मावती सर्व जन मोहिनी सर्व कार्य कारणी विघन संकट हरणी मन मनोरथ पूरणी मम चिंता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा।**

विधि —इस मन्त्र का साढे बारह हजार जप करना चाहिए, त्रिकाल जाप करे। अखण्ड दीप धूप रखना, शुद्ध भूमि, शुद्ध वस्त्र और शरीर शुद्धि का पूरा ध्यान रखे, पार्श्व प्रभु के मूर्ति के सामने अथवा पद्मावती के सामने सफेद माला पूर्व दिशा की तरफ मुख रखना, एकाग्रता से जप कर सिद्धि करना, इस मन्त्र का सवा लक्ष जप भी कहा है।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवती पद्मने पद्मावती ॐ ऐं श्रीं ॐ पूर्वाय, दक्षिणाय, पश्चिमाय उत्तराय, आण पूरय, सर्व जन वश्यं कुरु २ स्वाहा।**

विधि .—इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करना तव मन्त्र सिद्ध हो जावेगा, फिर प्रात.काल एक माला नित्य फेरना जिससे आय बढेगी, बेकार का कार्य मिटेगा। मन्त्र, दीप, धूप, विधान से जपना सकली करण पूर्वक। भगवान के सामने।

मन्त्र :—**ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वांच्छा पूर्ण भूत प्रेत निग्रहणी सर्व शत्रु सहांरिणी, दुर्जन मोहिनी, ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः स्वाहा।**

विधि —इस मन्त्र का जप दीप धूप विधान से भगवान के सामने बैठ कर सवा लक्ष जप करना, धूप मे गुग्गुल, गोरोचन, छाड छबीला, कपूर, काचरी इस सवको कूट कर गोली बना लेवे, शनिवार अथवा रविवार की रात्रि को लाल वस्त्र, लाल माला लाल आसन, लाल वस्त्र पर स्थापना करके जाप एक २ गोली अग्नि में डालते हुए एक २ मन्त्र के साथ खेवे और एक २ मन्त्र के साथ लाल पुष्प भी रखता जाय,

इस प्रकार सवा लक्ष जप एक महीने मे पूरा करे, मन्त्र जपने के समय एक महीने तक ब्रह्मचर्य पाले तव मन्त्र सिद्ध होगा। फिर नित्य ही प्रात. काल ११ या २१ वार मन्त्र का नित्य ही स्मरण करे, आय वढेगी, लक्ष्मी प्रसन्न होगी, सुख शान्ति मिलेगी।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्म कुंशी वज्र वज्र कुशी प्रत्यक्ष भवन्ति २ स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का जाप इक्कीस दिन मे एक २ हजार नित्य करके पूरा करे, जाप दीप धूप विधान पूर्वक अर्द्ध रात्रि मे एकाग्रता से करे तो मन्त्र सिद्ध होगा। फिर एक माला नित्य ही। फेरे लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। वस्त्र शुद्धि का पूरा २ ध्यान रखे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूं ह्नः ऐं नमः स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को नव रात्रि मे सिद्ध करे। सिद्ध करते समय ब्रह्मचर्य व्रत पाले। एकासन करे, कषायो का त्याग करे, मन्त्र एकान्त मे अखण्ड दीप, धूप, पूर्वक साढे बारह हजार जप करना, फिर एक माला नित्य फेरने से आनन्द से दिन जायगा, रोजी मिलेगी। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर कार्य काल मे इस मन्त्र का २१ बार जाप कर व्याख्यान देवे तो श्रोता मोहित होते है। २१ वार जप कर वाद विवाद करे तो जय प्राप्त हो। कोर्ट मे मजिस्ट्रेट के सामने इस मन्त्र का २१ वार जप कर वोले तो मुकदमे मे अपनी विजय हो। पर गांव मे रोजी के निमित्त जाने के पहले प्रवेश के समय जलाशय के किनारे वैठ कर एक माला फेर कर प्रवेश करे तो व्यापार मे लाभ मिले। सर्व कार्य सिद्ध हो। इस मन्त्र का ७ वार जाप करते हुए अपने मुंह पर हाथ फेरने से शत्रु की पराजय होती है। मन्त्र के अन्त मे स्वाहा पूर्वक शत्रु का नामोच्चारण करता जाय। इस मन्त्र से २१ वार सिर को मन्त्रित करे तो सिर दर्द दूर होता है। इस मन्त्र से २१ वार पानी मत्रित कर पिलाने से पेट का दर्द दूर होता है। इस मत्र को पढता जाय और भस्म उतारता जाय तो विच्छू का जहर दूर होता है। मार्ग मे चलते समय जप करता जाय तो व्याघ्रादिक का भय नही होता है।

मन्त्र :—ॐ अर्हं मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयं कारी वद २ वाग्वादिनी सरस्वती ऐं ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि —इस मत्र का शुद्धिपूर्वक ब्रह्मचर्यव्रत पालते हुए अखण्ड दीप धूप विधान पूर्वक एक लाख जप करना, फिर दशांस होम करना, होम करने मे धूप इस प्रकार की चीजो का वनाना—नारियल, खोपरे के टुकडे, १ कपूर, खोरक, (छुहारा), मिश्री, गुग्गुल, अगररताञ्जणी घृत, गुड, चन्दन। इस प्रकार की सामग्री की धूप वना कर हवन करे तव स्वप्न मे देव अथवा देवी आकर वरदान देगा। मन्त्र सिद्ध हो जान के वाद विद्या वहुत आती है। व्याख्यान मे चतुरता होती है।

मन्त्र :—नमि उण असुर सुर गरूल भुयंग परिवंदिये गय किले से अरि हे सिद्धापरिय उवज्झाय सव्व साहूणं नमः।

विधि :—इस मंत्र का जप नित्य एक सौ इक्कीस बार उत्तर दिशा की ओर मुख करके करे, दीप धूप रखने से मन्त्र की शक्ति बढती है। जतन पूर्वक उपयोग स्थिर रखना, जब जप पूरा हो जाय तब २१ बार णमोकार मन्त्र को जप लेना, इस तरह करने वाले को सर्व प्रकार के भय नष्ट होते है और आनन्द मगल हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो जिणाणं, ॐ ह्रीं अर्हं आगासगामीणं, ॐ ह्रीं श्रीं वद २ वाग्वादिनी भगवती सरस्वती मम विद्यासिद्धि कुरु कुरु।

विधि—इस मत्र का अधिक जाप करने से ऐसा लगेगा कि मै आकाश में उड़ रहा हूँ। जाप करने के बाद भगवान की व सरस्वती देवी की पूजा करे, जप आँख मीच कर करे तव मत्र सिद्ध होगा,। उसके पश्चात् कोई भी मत्र या विद्या सिद्ध करने मे देर नही लगेगी तत्काल सिद्धि होगी। आयु का ज्ञान होगा, कष्ट निवारण होगा।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं क्रौं २ बटु काय आपद, उद्धारणाय कुरु २ बटु काय ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं नमः।

विधि—इस मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप विधि पूर्वक करे, विशेष पूजन करे, तब देव प्रत्यक्ष होगा अथवा स्वप्न मे दीखेगा और स्पष्ट उत्तर देगा। इस मन्त्र का जाप अत्यन्त सावधानी पूर्वक करना नही तो पागल कर देता है।

सहदेवी कल्प

सहदेवी के पेड के नीचे शनिवार की रात्रि को जाकर १ सुपारी रखे, सहदेवी को धूप दिखा कर हाथ जोड विनय पूर्वक प्रार्थना करे कि हे सहदेवी प्रात: मैं तुमको अपने यहाँ पधराऊगा, ऐसा कह कर घर आ जावे, रविवार को प्रात होने के पहले जा कर फिर १ फल भेट कर ये मन्त्र इक्कीस बार पढे।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती सहदेवी सद्वत हया नीसद्वेवद्व कुरु २ स्वाहा॥

विधि :—इस मत्र से मंत्रित कर जड सहित सहदेवी को वाहर निकाले और मौन वने अपने स्थान पर आकर एक पाटे पर स्थापन कर धूप, दीप, फल भेट करे और फिर उसका रस निकाले, और उस रस में गोरोचन व केशर डाल कर गोली वनावे, जव कभी काम हो तब गोली को घिस कर तिलक कर के जावे तो इच्छित व्यक्ति वश मे होगा। विजय होगी, सहदेवी की जड हाथ मे बाँधने से रोग नष्ट होता है। इसके चूर्ण को पीस कर गाय के घी मे मिला कर पीने से वन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करती है।

प्रसूति के समय कष्ट हो रहा हो तो इसको कमर से बांधने पर शान्ति से प्रसव होता है। कण्ठ माला रोग होने पर हाथ मे बाधे, हाथ मे बाध कर प्रस्थान करे तो जप पावे। शत्रु के सामने विवाद पड जाने पर जड जाने पर जड को पास मे रखे तो जय पावे।

लोगस्स कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं नमः नीमजिणं च बन्दाभिरिट्ठ नेमि पासं तह वद्ढ माणं चम नोवाच्छितं पूरय २ ह्रीं स्वाहाः।

विधि :—किसी प्रकार का भय उत्पन्न हुआ हो साधु सग मे अथवा गृहस्थियो मे तो इस मत्र का पीले रग की माला से जाप करना चाहिए और किसी प्रकार की मिथ्या दृष्टियो द्वारा उपद्रव आने वाला हो तो लाल रग की माला से जप करने से सब प्रकार का भय मिट जाता है, शाति होती है। इष्ट देव का स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्झोअ (य) गरेधम्म तित्थपेरीजण अरिहंते किति इस्सं चउव्विसंपि केवलि मम मनो अभिष्टं कुरु २ स्वाहाः।

विधि —इस मत्र का जाप पूर्व दिशा मे मुख करके खडे हो कर करना चाहिए। सम्पत्ति सुख के लिए श्वेत वस्त्र, सफेद माला, सफेद आसन चक्रेश्वरी देवी के सामने दीप धूप रख कर करे। साधु करे तो दीप धूप की आवश्यकता नही है। अन्तिम पहर रात्रि का वचे तव मत्र की आराधना करना। खडे होकर जप करने से शीघ्र लाभ होता है। सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ क्रॉं क्रीं ह्री ह्रीं उस मम जिअं च वन्दे संभवमीभणं दणं च सु मइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे स्वाहा।

विधि —इस मत्र का जाप पद्मासन से उत्तर मुख होकर सकल्पपूर्वक एकान्त स्थान में अय विल व्रत करते हुए २१ हजार जप करे। फिर एक माला नित्य फेरे जिससे शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होती है। दीप धूप अवश्य सामने रखे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्री (हसौं) झों झीं सुविहि चपुप्फ दन्तं सीयलं सिज्झं सवा सु पुजं च विमलनंणत च छम्मं संति च वंदामि कुंथुं अरं चमल्लि वन्दे मुणि सुव्वयं (च) स्वाहा।

विधि —इस मत्र का विधिपूर्वक दीप धूप दान पूर्वक सवा लक्ष जप करने से आपस के झगड़े ग्रह क्लेश वगैरह सव शात होते है। सब प्रकार के वैर भाव मिटते है। फिर एक माला

नित्य फेरनी साधू संघ में अथवा गृहस्थों के घर में सर्व प्रकार का मन मुटाव दूर होता है। सम्पत्ति सुख की प्राप्ती होती है। जाप न्युन्याधिक नही करे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रां ह्रीं एवं मऐ अभि थुआवि हुयर यमला पहीण जर मरणा चउव्विसंपि जिणवरा तित्थयरा में पसीयंतु स्वाहा।

विधि .—इस मंत्र का साढे वारह हजार दीप धूप विधान पूर्वक करने से सर्व प्रकार के अपवाद मिटते है यश फैलता है। सर्व कार्यों में जय विजय प्राप्त होती है। शत्रु स्वय ही शात हो जाते है।

मन्त्र :—ॐ आं अम्ब्रराय (उद्यंवराय) कित्तिय वंदिय महिया जे लोगस्य उत्तमा सिद्दा आरोग्ग बोहिलाभं समाहि वर मुत्तमं दिन्तु स्वाहा।

विधि :—इस मत्र का स्मरण मनुष्य जब रोगी हो जाय किसी प्रकार से रोग ठीक नही होता हो ओर दिनों दिन वेदना वढती जाय तो जाप, करे अथवा दूसरा व्यक्ति रोगी मनुष्य को सुनावे तो, आयुष्य अगर वाकी है तो शांति मिलती है। आयु का अगर आयु अन्त है तो इस मत्र को सुनाने से समाधि ठीक होगी। सद्गति की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं आं जां जीं चन्दे सुनिम्मल यरा आइच्चे सु अहियं पयासयरा सागर वरगंभीरा सिद्दा सिद्धि ममदि सन्तु मम मनोवांछित पूरय पूरय स्वाहा।

विधि यश प्रतिष्ठा के इच्छुक व्यक्तियो को इस मत्र का जाप करना चाहिए। यह मंत्र अत्यन्त चमत्कारी है। मत्र का जाप साढे बारह हजार करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होगी। यश प्रतिष्ठा वढेगी, उपद्रव शांत होगे।

मन्त्र :—ॐ चंडिनि चले २ चित्ते चपले चपल चित्तेरेतः स्तम्भय २ ठः ठः स्वाहा।

विधि —३ हजार जाप इस मत्र का दीप धूप विधान पूर्वक जपने से सिद्ध होता है। फिर इस मत्र से सात बार शक्कर मत्रीत कर, योनी, मे रखने से स्त्रियो का प्रदर रोग शांत होता है।

मन्त्र :—ॐ ओं औं अं अः स्वाहाः।

विधि .—इस मत्र को जप कर काजल वनावे काजल आँख की रुई और लाख का रस अथवा आक की रुई और कमल के धागे की वत्ती वना कर काजल वना आँखो मे अंजन करने से वश्य होता है।

मन्त्र :—ॐ वाचस्पतये नमः ।

विधि .—इस मत्र का जाप १ वर्ष तक करे तो बुद्धि बहुत बढेगी ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अट्टे मुट्टे क्षुद्र विधट्टे क्षुद्रान् स्थम्भय २ दुष्टान् चूरय २ मनोवाछित पूरय २ स्वाहाः ।

विधि —दीवाली के दिन १००० जाप करे, पीछे एक माला नित्य फेरे तो मनोवाछित कार्य हो ।

मन्त्र :—ॐ नमो ज्वाला मालिनी देवी शभंवति रक्त रोहिणी ॐ क्षांः क्षीं क्षम्ल्व्र्यूँ ह्रां ह्रीं रक्त वाशसी अथ वर्ण दुहिते अघेरे कर्म कारके अमुकस्य मनः दह २ उपविष्टाय मुखं दह २ सुप्ताय मनः दह २ पर बुद्धाय हृदयं दह २ पच २ मथ २ अथ तावद हन्यात् ॐ हम्ल्व्र्यूँ हॅं हॅं हॅं फट् स्वाहाः ।

विधि —इस मन्त्र का १०८ वार जाप नित्य करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा ।

विधि —कुमारिका सूत्रेण कटक कुत्वा कणवीर पुष्प १०८ जाप्य दत्वा कटौ वधये द्रक्त प्रवाहं नाशयति ।

मन्त्र :— ॐ अंगे कुमंगे मंगे फु स्वाहाः ।

विधि —१००८ वार जाप पूर्व १०८ गुणिते स्वप्ने शुभाशुभ कथ ।

मन्त्र :—ॐ अंगे कुमंगे फु स्वाहा ।

विधि —फल व जल अभिमन्त्र्य पिवेत शूल नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ नमः क्षिप्त गामिनी कुरु २ विमले स्वाहा ।

विधि —अने नाम्बु सप्ताभि मन्त्रित कृत्वा यस्य नाम्नि पिवेत् स वश्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्री क्री ह्रीं हॅं फट् स्वाहाः ।

विधि —पु गी फलादि यस्य दीयते स वश्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्री सर्वभय विद्रावणि भयायै नमः ।

विधि :—एन ध्यायन् पथानं व्रजेत् भयं न भवति ।

मन्त्र :—ॐ कृष्ण गन्ध विलपे नाय स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार स्मरणे ना तीता नागत वर्तमान स्वप्ने कथयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं त्रिशुलिनीं प्रेत कपालस्तां नृमुंड मुक्तावलि बद्ध कंठां कृतान्त-हारां रूधिरौधं संप्लुतां तामेव रौद्रीं शरणं प्रपद्यै अमुकं विस्फोटक भया द्रक्ष २ स्वाहाः ।

विधि :—ये मन्त्र केशर, कपूर, गोरोचन से लिखकर भुजा के बाँधने से शीतला का दोष जाता है ।

मन्त्र :—ॐ काम देवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तम्भय २ मोहय २ वशं मानय २ स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेणाभिमन्त्र्य यद्वस्तु यस्य कस्याऽपि दीयते स वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ सम्मोहिनी महाविद्यै जंभय स्तम्भय मोहय, आकर्षय पातय महा संभोहिनी ठः । स्मरण मात्रेण सिद्धिर्भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अरहंत देवाय नमः ।

विधि :—१०८ बार वाद के समय जपने से तथा और कार्य में तो जय होय। मन्त्रि के कपडा मे गाठ दीजे तो चोरी न कर सके तथा सर्पादि वस्त्र से दूर रहे ।

णमोकार मन्त्र उल्टा जपे वन्दी मोक्ष होय विना कार्य उल्टी नाही जपि जै ।

णमोकार मन्त्र ३ बार पढकर धूल चूंटी के फूंक दै इके जे के माथे डारे सो वश्य होय ।

चौथ तथा चौदश शनिवार को णमोकार मन्त्र पढि के सन्मुख तथा दाहिने बाई तरफ फूंकि दीजे पढि पढि के वेरी देखते ही भागि जाय ।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अपराजित शासनाय चमर महा भ्रमर भ्रमर भ्रमर रूज २ भुंज २ कड़ २ सर्व ग्रहान् सर्व ज्वरान् सर्व वातान् सर्व पीडान् सर्व भूतान् सर्व योगिनीन् सर्व दुष्टान्नाशय क्षोभय २ ऊँ कः धः मः यः रः क्षि क्षं सर्वोपस र्गान्नाशय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र से कलवाणी करके पिलावे सर्व रोग दोष पीडा भूत उपद्रव जाय सही।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवऊ पास जिणदस्स अलवेसर २ आगच्छ २ मम स्वप्ने शुभाशुभं दर्शय २ स्वाहा।

विधि .—प्रथम पूर्व मुख, दीप, धूप विधानेन १०००८ वार जपे। कार्य काले २११०८ जप सोवे, शुभ शुभ आदेश स्वप्न मे होय सही।

मन्त्र :—ॐ णमो णाणाय, ॐ णमो दंसणाय, ॐ णमो चरित्ताय, ॐ णमो त्रिलोक वरं करहिं स्वाहा।

विधि .—सर्व कर्म करो मन्त्रोऽयम। कालायानी येन घटन पायन चलावण्य च छु सिरोधी सिरोत्पातादिषु कार्येषु योज्य ॥

मन्त्र :—ॐ ह्लूँ ह्लूँ ह्लूँ ठं ठं ठं स्वाहा।

विधि —आद्रा नक्षते राता कनीर की कील आगुल चार वार ७ इस मत्र सूँ मन्त्रि, जिको नाम लीजे सो वश्य भवति।

मन्त्र :—अनेन कील सयनाल स्वाहा।

विधि —उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे खैर की कील अगुल ८ वार ७ मन्त्रि जै जिका घर माहि गाढे सो उच्चाटन भवति।

मन्त्र :—ॐ गर्दभ ह्लदये स्वाहा।

विधि —चित्रा नक्षते गर्दभ अस्थिमय कीलक पचागुलम् सप्तभि मन्त्रये यस्य गृहे निखनेत गर्दभ सम भ्रमति।

मन्त्र :—ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं सिकोतरी मम चिंतितं कथय २ सत्यं ब्रूहि २ स्वाहा।

विधि अनेन मन्त्रेण आजानुजल मध्ये प्रविश्य १०८ कनेर का फूल जपिजै, चन्दन, केशर, कपूर, कस्तूरी सू हाथ लेप कीजै अग्र धूप दीजै सफेद घोडे चढी कन्या दीसै। जो पूछो सो कहे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अचले प्रबलौ चल चल अमुकी गर्भ चाल २ स्तंभय २ स्वाहा।

———

गर्भ स्थंभनं मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्लीं ह्म्ल्व्र्यूं महादेवी पद्मावति मह्यंहि मम दर्शनं देहि स्वाहा ।

विधि :—अक्षत १०,००० (दस हजार) जाप्य क्रियते पद्मावति प्रत्यक्षो भवति अथवा आदेश ददाति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवोक्त गोमयस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्षीण महानसी लब्धि लक्ष्मी आनय २ पूरय २ स्वाहा ।

विधि :—वार २१ अक्षत पर जपिये । धनधान्य मध्ये क्षिप्यते अक्षय भवति । किन्तु उस स्थान को उठाइजै नहि ।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं णमो महायम्मा पत्ताणं जिणाणं ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण द्वादश सहस्त्र जाप्य कृतेन लक्ष्मी सिद्धति लक्ष्मी कथयति निधि स्थान ।

मन्त्र :—ॐ णमो इदं भुइ गण हरस्स सव्वलद्धिकरस्स मय ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ लाभाय सदा स्मरणीया ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं भ्वी श्रीं क्लीं श्रीं ह्रौं श्रीं ह्लीं श्रीं झ्रौं झ्रूं श्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा ।

विधि : -मंत्रोयं लक्ष जप्त सन श्रिया वश्यं करोति च धन्य धान्यं समं दीप्त दानं ददाति वृद्धयति ।

मन्त्र :—ॐ अम्बे अम्बालें भूतान् कूरान् सर्पान् दूरी कुरु २ निधिं दर्शय २ श्रीं ह्रौं स्वाहा ।

विधि :—मन्त्रोऽय द्वादश सहस्त्र जप्तो कथयति, वशति निधान स्फुटं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रं उ ह्रूं ह्रूं व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः ।

विधि :—रात्रौ स्पाप समये प्रत्यूषे च वार १–१ श्वासेन स्मरण कार्यां यो मनसि चिन्तये तस्य वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रे इले तीले नीले हिमवंत निवासिनी गल गंध्रे विश्व गंधे दुष्ट भंगदरि, वा तारिशा नाशारिशा स्फटिकारिशा हता कृष्ठा, हतानिर्धूताय ।

विधि —इमा विद्यां पठति, शृणोति, तस्य कुले अरिश वाता नाहि । अनेन मंत्रेण बार २१ कलपानीयेन अर्शोपशम ।

मन्त्र :—ॐ कालि महाकालि अवतरि २ स्वाहा लुंचि मुंचि स्वाहा ।

विधि —वार २१ स्मरणात् हरण पीडा न भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे शत वदने शत् सहस्त्र सिंह कोटि वाहने पर विद्या उछादने सर्व दुष्ट निकंदने सर्व दुष्ट भक्षणे अपराजिते प्रत्यंगिरे महावले शत्रु क्षये स्वाहा ।

विधि .—एतस्य महा मत्रस्य नित्य वार १०८ जापने सर्व दुष्ट दुरितोपशमेन सर्व समिहित सिद्धि र्भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहउं भगवउं मुख रोगान् कंठ रोगान् जिह्वा रोगान्, तालु रोगास् दन्त रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्तय २ स्वाहा ।

विधि '—पानीयमभि मन्त्र्य कुरला क्रियन्ते मुख रोगा. निवृति । तत्र कर्णे वध्यते ततोऽक्षि दोपा न निवर्त ते ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पिंगलाय मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय २ ॐ तद्यथा हुसु २ लघु २ तिलि २ मिलि स्वाहा ।

विधि —रक्त सूत्र दूवर के ग्रन्थि ७ कृत्वा वार २१ जापित्वा स्त्रीणा वाम पादागुष्ठे बधयते रुधिर प्रशमयेत ।

मन्त्र :—ॐ श्री ह्रीं क्लीं कलि कुंड दंड स्वामिने मम वदि मोक्षं कुरु रक्षीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि —नित्य जाप्येन वदि मोक्ष. दिन ७ सन्ध्या समय निश्चयत जापः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चन्द्रमुखी दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय नाशय ह्रीं स्वाहा ।

विधि .—श्वेताक्षत अभिमन्त्र्य ग्रहादी क्षेप्या. दुष्ट व्यतर रोगो नश्यति । वानर मुख चोर आदित्य सम तेज स ज्वर तृतीयक नाम दर्शनादेव नश्यति ।

मन्त्र :—तद्यथा हन २ दह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंशय २ विद्रावय २ छेदय २ अन्य सीमां ज्वर गच्छ २ हनुमंत लांगुल प्रहारेण भेदय २ ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षूं रक्ष २ स्वाहा ।

विष्णु चक्रेण छिन्न २ रुद्र शूलेन भिंद २ ब्रह्म कमलेन हन २ स्वाहा ।

विधि :—कुमकुम गौरोचन भूर्ये लिखित्वा प्रत्यवेला यां हस्ते बधनीया ।

मन्त्र :—ॐ भस्मकरी ठः ठः स्वाहा । ॐ इच्चि मिच्चि भस्मकरि स्वाहा । ॐ इटि मिटिमम भस्मकरि स्वाहा ।

विधि :—एभि मन्त्र जलमभिमन्त्र्य पीय्यतेऽजीर्ण मुदशाम्यति । अति सारादि रोगानऽपि निवर्तते उदर पीड़ा च उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रौं श्रृं ह्रः कलिकुंड स्वामिने जये विजये अप्रति चक्रे अर्थ सिद्धि कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इद मन्त्र लिखित्वा वस्तु मध्ये क्षिप्यते क्रियाण विक्रियते रक्षाया ।

मन्त्र :—ॐ णमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पण मासिक वात पित्त कफ श्लेष्म सन्निपातिक सर्व रोगानां, सर्व भूतानां, सर्व प्रेतानां, सर्व दुष्टानां, सर्व शाकिनीनां, नाशय २ त्रासय २ क्षोभय विक्षोभय २ ॐ ह्रूं फट् स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ भाडा दीजे व डोरा कर गले वाधे सर्व रोग ज्वर दोष जाये ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते अपहृयत सासनाय संसार चक्र परि मर्दनाय आत्ममंत्र रक्षणाय पर मंत्र छेदनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व ज्वरं, विषम ज्वरं, महा ज्वरं, ब्रह्म ग्रहकं, नाग ग्रहकं, भूत ग्रहकं प्रेत ग्रहकं पिशाच ग्रहकं, सर्व ग्रह, सर्व दुष्ट ग्रह सहस्त्र शूल विनाशनाय, अमृत राई केशर की पीडा, ज्वर विनाशनाय, यक्ष राक्षस, भूत पिशाचादि भवनादि दोषं नाशय २ हिलि २ हल २ दह २ पच २ मर्दय २ विध्वंसय २ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व ग्रह उच्चाटनं ह्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रूं फट् स्वाहा ।

विधि :—रक्षा मन्त्रोय झाडो दीजै सर्व रोग दोप जाए ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वतीर्थ नाथाय वज्र स्फोटनाय, वज्र महावज्र, सर्व ज्वरं, आत्म चक्षु, पर चक्षु, प्रेत चक्षु, भूत चक्षु, डाकिनी चक्षु,

शाकिनी चक्षु, सिंहारी चक्षु, माता चक्षु, पिता चक्षु, वटारी, चमारी, एतेषां सर्वेषां दृष्टि बंधय २ अवलते श्री पार्श्वनाथाय नमः ।

विधि. इस मन्त्र से झाडा दे, नजर जाय । बालक का दृष्टि दोष न रहे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पद्मे ह्री ह्रौं क्लीं ब्लूं गीय २ अमुकस्य अपत्यदानाय, अपत्यं सुपुत्रं सर्वावयवेन युतं, शोभनं दीर्घायुषं पुत्रं देहिया विलम्बय ह्री श्री पद्मावती मम कार्यं सिद्धि कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा ।

विधि —गोली बीज (पारस, पीपल बीज) मन्त्रीतटतु समये सूर्य सन्मुख होय खाय, सन्तान होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती मम त्रियं कुरु २ दुरितानि हर २ सर्व दुष्टानां मुख बंधय २ ह्री स्वाहा ।

विधि —यह मन्त्र स्मरण करे २१ वार लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो पार्श्वनाथाय भगवते सप्तफणी मणि विभूषिताय, क्षिप्र २ भ्रमर २ महाभूमि सर्व भूतान सर्व प्रेतान, सर्व ग्रहान, सर्व रोगान, सर्व शाकिनी, भेदान ऑ क्रों ह्रीं आहूय आह्वानया छेदय २ भेदय २ ॐ क्रौ ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि : - पानी मत्र पिलावैं तथा झाडा दे, सर्व दोष रोग शान्ति करे ।

मन्त्र :—ॐ नमो पद्मावती मुख कमल वासिनी गोरी गांधारी स्त्री पुरुष मन क्षोभिनी, त्रिलोक मोहनी स्वाहा ।

विधि —ये मन्त्र दीवाली के दिन १०० जाप करे सर्व कार्य सिद्ध होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री ह्रं क्ली अ सि आ उ सा धुलु २ कुलु २ सुलु २ अक्षयं में कुरु २ स्वाहा ।

विधि —पच परमेष्ठी मन्त्रोऽम त्रिभुवन स्वामिनी विद्या अनेन लाभो भवति जाप १०८ नित्य करे गुरुवाम्नायेन सिद्धम् ।

मन्त्र :—ॐ णमो भगवते विश्वचिन्तामणि लाभ दे, रूप दे, जश दे, जय दे, आनय २ महेश्वरी मन वाछितार्थ पूरय २ सर्व सिद्धि ऋद्धि वृद्धि सर्व जन वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—चिन्तामणि मन्त्रोऽयम् नित्य जपै सर्व सिद्धि होय, प्रभात सन्ध्या जपै । धूप खेवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते वज्र स्वामिने सर्वार्थ लब्धि सम्पन्नाय वस्तार्थ स्थान भोजनं लाभ दे ह्रीं समीहितं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—अनेन मत्रेण ग्राम प्रवेशे ककर ७ बार २१ क्षीर वृक्षे स्थाप्यते सिद्धिर्भवति ग्रामे सुखं भवति लाभ च भवति । लाभ मत्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते गोमयस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स अक्खीणस्स ह्रीं गौतम स्वामिने नमः अनेन मंत्रेण ग्राम प्रवेशे कंकर ७ बार २१ अभिमंत्र्य क्षीर वृक्ष दक्षिण दिशा हन्यते । प्रभूत लाभो भवति । लाभ मंत्रोयम । ॐ तारे तुतारे ह्रीं तुरे स्वाहा ।

विधि :—प्रथम ग्रामे प्रवेशे १०८ जपै सर्व जन शोभन लाभ मन्त्रः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं आरे अभिणी मोहनी मोहय २ स्वाहा ।

विधि :—नित्य १०८ वार जाप जपै ग्राम प्रवेशे ७ कंकर वार २१ क्षीर वृक्ष हन्यते लाभो भवति । प्रथम मन्त्र जप दीप, धूप से सिद्ध करना पीछे अपने कार्य मे लगना ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरटिं धातय २ पर विहनान स्फोटय सहस्त्र खण्डान कुरु २ पर मुद्रां छिंद २ पर मंत्रान् भिंद २ ह्रां क्षां क्षं व फट् स्वाहा ।

विधि :—पढकर सिद्धार्थ क्षेपण करना । इसको ब्रह्मचर्य से जपना । शुद्ध भोजन करे, रात्री को भोजन न करे रक्षा मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ नमो अघोर घंटे मम वन्दि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—जाप १२००० श्याम विधानेन ।

मन्त्र :—वन्दि मोक्ष मंत्रोऽयन् ।

विधि :—यह मन्त्र रोज १०८ वार भस्म पर लिखे श्याम विधानेन ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं तुर २ आगच्छ २ सुर सुन्दरी स्वाहा ।

विधि :—शाक आहारो, भुवि सेज्या, शुचि भूत्वा जितेन्द्रिय. पचोपचार योगेन अर्च्चये ।

चन्द्र मण्डल श्वेताम्वर शुक्ल वस्त्र धरो भूत्वा मन्त्र गुनिये श्वेत गंधानुलेपने लिंग करति आगे गुणी को होम कीजे साठ सहत्र गुणिये तिल, घृत होमये तो सिद्ध । भवति याक्षिणी । स्वर्ण पाद सहस्त्र च प्रयच्छति । दिने २ भगिनी मानेती वक्तव्य अथवा चेटी च जल्पयेत् । अथ भार्या शोभने चेव तेन भावने पश्यते भागिनो इत्युकते नेता

सिधिया शृणु ददाति पादुकाग हु॑ देव कन्या प्रयच्छति। सर्व काम करा सास्तु सालिका भोग दायिनी निधानाति विचित्राणि आनये चेटिका सदा इति सुर सुन्दरि साधन विधि।

मन्त्र :—ॐ उच्चिष्ट चांडालिनी सुमुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि .—वार १०८ दिन ६ पहले दिन जीमने वैठता ग्रास १ वार ३ जीमता बीच भूंठे मुँह वार १०८ जपै। पानी ३ मन्त्र कर पीना फिर भोजन करे दिन ६ जप कर पीछे से परवाने वैठा वार १०८ जाप करना पीछे ६ दिन ३ मसान ऊपर जाप करना प्रत्यक्षी भवति।

मन्त्र :—ॐ णमो गोमय स्वामी भगवऊ ऋद्धि समो, वृद्धि समो, अक्षीण समो, आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः स्वाहा।

विधि — मन्त्र प्रात काल नित्य जपे, शुचि होय, लक्ष्मी प्राप्त होय। वार १०८, २१ सुपारी, चावल मन्त्रित कर जिस वस्तु मे घाले सो अक्षय होय। यह मन्त्र पढ दीप धूप खेवे। भोजन वस्तु भ डार मे होय। उज्जवल वस्त्र पहनकर शुद्ध आदमी भीतर जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। ॐ नमो भगवऊ गोमयस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स अक्षीणस्स भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि '—मन्त्र नित्य प्रात काले शुचि भूंत्वा दीप, धूप विद्यानेन जपे, लक्ष्मी प्राप्त होय, लाभ होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मनी स्वाहाः।

विधि —घर मध्ये सुन्दर स्थान केशर से एक हाथ लीपे, पद्मनी की पूजा करे।
जाप १०,००० गूगल खेवे। दीप पुष्प नैवेद्य चढावे। अर्द्ध रात्रि मे करैं। १,००० रोज ऐसे ही १ मास करे। देवी प्रसन्न होय। लक्ष्मी देवे। लाभ मन्त्रोऽयम्।

मन्त्र :—ॐ कमल वासिनी कमल वासी महालक्ष्म्यै राज्य में देव रक्षे स्वाहा।

विधि —त्रिकाल जाप कीजे मनोरथ सिद्धि लक्ष्मी प्राप्ति होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं पद्मे पद्मावती पद्म हस्ते राज मंत्र क्षोभिनी शीघ्र मम वश्य मानय २ हुं फट् स्वाहाः।

विधि —राज द्वार जाय जाप करे वार २१ तथा १०८ राजा वश्य होय।

मन्त्र :—ॐ मुखी, राजा मुखी, प्रजा वश्य मुखी, सर्व वश्यं कुरु २ पद्मावती क्लीं फट् स्वाहा।

विधि :—वार २१ तथा १०८ पानी को चुल्लू मन्त्र मुख धोवे राजद्वार जाय सर्व सभा वश्य। कार्य सिद्धि होय।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले स्वाहा:।

विधि :—हस्त वाह नात् अभि मन्त्रय जल दानात् सर्प विप जाय।

मन्त्र :—ॐ ब्लीं ब्लीं सा दुग्ध वृद्धि कुरु २ स्वाहा:।

विधि —चावल की खीर मन्त्रित कर खिलावे, दुग्ध स्तनो मे बढै।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन् अमुकस्य गर्भ मुंच २ स्वाहा।

विधि —अनेन मन्त्रेण तैलमभिमन्त्रय ऋष्यते सुखेन प्रसवति।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तवती हुं फट् स्वाहा।

विधि —रक्त कण वीर पुष्प २१ जाप्य कृत्वा देव रक्त स्त्री कण्ठे बंधनीय। रक्त स्रावे हरति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कमले कमलोद्भवे स्वाहा।

विधि :—वार २१ चने की दाल, खारक मन्त्री दीयते कमल वाय जाय।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अपराजित शासनाय चमर महा भ्रमर-भ्रमर रूज रूज भुंज २ कड़ सर्व ग्रहान् सर्व ज्वरान् सर्व वातान् सर्व पीड़ान् सर्व भूतान् सर्व योगिनी सर्व दुष्टान्नाशय क्षोभय २ ॐ क: ध: म: य: र क्षि क्षं सर्वोपसर्गान्नाशय २ हुं फट स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से कल वाणी करके पिलावे सर्व रोग दोष पीड़ा भूत उपद्रव जाय सही।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवऊ पास जिणंदस्स अलवेसर २ आगच्छ २ मम स्वप्ने शुभाशुभं दर्शय २ स्वाहा।

विधि :—प्रथम पूर्व मुख, दीप, धूप विधानेन १९००८ जपे। कार्य काले २१, १०८ जप सोवे, शुभाशुभ आदेश स्वप्न मे होय सही।

अष्ट गंध श्लोक

मन्त्र :—चन्दनो सीर कर्पूरा गुरू काश्मीर कास दै।
गोरोचन जर। मांसी युक्तै गंधाष्टकं विदु:॥
ॐ नमो भगवते चन्द्र प्रभावभित् सर्व मुख रंजनि स्वाहा।
प्रभाते उदकमभिमन्त्रय अमुकं प्रक्षालयेत्॥

सर्व जन प्रियो भवति ।

ॐ नमों कपाली ज्वलिते लोहित पिंगले स्वाहा ।।

विधि —इस मन्त्र से ककर १२ लिखे, रोगी कू गिनावने पूरे देखे तो रोगी जीवे । ज्यादा देखे तो रोग वढे । कम देखे तो रोगी मरे । इति रोग परीक्षा ।

मन्त्र :—**ॐ अप्रति चक्रे फुट् विचक्राय स्वाहा ।**

विधि —सरसो के दाने आठ पानी से धोय सुखावे, पीछे १०८ वार पढि (मन्त्र्य) पानी के कटोरे मे डाले, एक दाना तिरे तो भूत दोष, दो तिरे तो क्षेत्र पाल दोष, तीन तिरे तो शाकिनी दोप, चार तिरे तो भूतनी दोष, पाच तिरे तो आकाश देवी दोष, छ तिरे तो जल देव दोष, सात तिरे तो कुलदेव दोष, आठ तिरे तो गोत्रज देवी दोष, सर्व डूवे तो किसी का दोष नही । इति दोष ज्ञान मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—**ॐ चक्रेश्वरी चक्र धारिणी कटोरे चालय २ चोरं ग्रहाण २ स्वाहा । चिट्ठी जुवा नाम ।**

विधि —लिख वार २१ मत्र पढ कटोरं भुथाई नाम चिट्ठी मत्र पढता ऊपर मेल जे जे नाम कटोरो सो चोर जानिए । वा चिट्ठी जलावे सो जले नाही इति चोर ज्ञान मत्रोऽयम् । ॐ नमो श्री आदेश गुरू को थल बाधू, जल बाँधू, बाँधू जल की तीर । नगरी सहित राजा बाँधू जाल सहित कीर । जे रण जाल मे जीव माछली आवे, तो श्री पार्श्वनाथ छप्पन छप्पन कोड जादूँ की दुहाई । वार ७ ककरी मन्त्रि जाल मे डाले । जाल बंधे मछली आवे नही ।

मन्त्र :—**ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे शत्रु उच्चाटनी महा मोहिनी सर्व नर नारी मोहनी जयं विजयं ऋद्धि वृद्धि कुरु २ ।**

विधि —राजा प्रजा मोहन होय, ऋद्धि वढे ।

मन्त्र :—**ॐ ह्री ज्रं श्री चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु २ ह्रीं अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं, साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहित कुरु २ स्वाहा ।**

विधि —वार १०८ नित्य जपे धन धान्य वृद्धि होय । कामधेनु मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्ली अ सि आ उ सा चल २ कुल मुल इच्छियम में कुरु २ स्वाहा ।**

विधि :—नित्य वार १०८ जपे दोनो समय लाभ होय ।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं कलिकुंड स्वामिन् आगच्छ २ आत्म मंत्रान रक्ष रक्ष पर मंत्रान छिंद छिंद मम सर्व समीहितं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा ।**

विधि :—ये मन्त्र १२००० जपे श्वेत तथा रकत पुष्पे । सर्व सम्पदा प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ नमों वृषभनाथाय मृत्यु जयाय सर्व जीव शरणाय, परम त्रयी पुरुषाय, चतुर्वेदाननाय अष्टादश दोष रहिताय, श्री समवशरणे द्वादश परीषह वेष्टिताय ग्रह, नाम भूत, यक्ष भूत, राक्षस सर्व शान्ति कराय स्वाहा ।

सर्व शान्ति कर मन्त्रोऽयम्

मन्त्र :—ॐ कर्ण पिशाचिनी देवी अमोध वागीश्वरी, सत्यवादिनी, सत्यं ब्रूहि २ यत्वं चिंतेसि सप्त समुद्राभ्यंतरे वर्तते तत्सर्व मम कर्णे निवेदय २ ॐ वोषट् स्वाहा ।

विधि :—जाप १००० करे, जल मध्ये होम १००८ शुभा शुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ रक्तोत्पल धारिणी मझ हाजर रिपु विध्वंशनी सदा सप्त समुद्राभ्यंतरे पद्मावती तत्सर्व मम कर्णे कथय । शीघ्र शब्दं कुरु २ ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं कर्ण पिशाचिनी के स्वाहा ।

विधि :—सहस्त्र जाप होम १०८ पश्चात्सिद्धि ।

गोरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हन् २ ॐ ह्रीं दहे दहे ॐ ह्रीं हन हनां ॐ हन् २ ॐ ह्रीं हः हः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से गोरोचन २१ वार मन्त्रीत कर माथे पर तिलक करे तो राज दरवार में विवाद मे वशीकरण होता है । रोगी मनुष्य हृदय पर तिलक करे तो स्त्री वश होय । वांहे तिलक करे तो व्याघ्र चिता वश होय । गर्दन पर तिलक करे तो सर्प वशी होय । पग (पैर) में तिलक करे तो चौरादिक वश होय । अगुठे मे तिलक करे तो सर्व विद्या सिद्धि होय । जीभ मे तिलक करे तो कवि पंडित विद्वान होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमों काली वज्रा कुंशा की आणैं जो अमुका कीखिसै कव ही देवी कालि की आंण ।

विधि :—वार २१ या १०८ वार वेल मन्त्री जै धरण ठीकाने आवे ।

मन्त्र :—ॐ नमों आदित्या भगदीन सूर्य संसयस वृष लोचन श्री शक्र प्रसादेन आधासीसी सूय नाशय २ स्वाहा ।

विधि - वार ६ मन्त्रीत धूप खेने से आधा सीसी रोग नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ जल कंपई जल हर कंपइ सय पुत्र सु चंडिका कंपै राजा रूवो (चो) कहा करे सि आसन छांडि वैदेसि जव लगई चंदन सिर चढ़ा वु तब लग त्रिभुवन पाप पठावु ह्रीं फुट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र से चन्दनादि १०८ वार मन्त्रीत करके माथे मे तिलक करे तो राजा का वशीकरण हो, सत्य है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरू कू उंचो खेडो डिग डिगे लो: तवे नें मोर मुछालो ज्यों २ मोर करै पुकार तु लु बिछु चढ़ै कणाल ।

विधि . - इस मन्त्र को एकान्त मे खडे रह कर २१ वार जपे तो बीछू काटे हुए आदमी को ज्यादा जहर चढता है ।

मन्त्र :—ॐ नमों आदेश गुरू कू धाइ गाइ गोबर जिसमै ऊपना च्यार बिछु चार काला चार काबरा चार भवरा पाखा लाल तारू उतर बिछू नहीं तरै कै नील कंठ मोर हकारू मोर खासी तोड़ै जारे बिछू मंकरे खी छोड गु० ह० फु० ।

विधि —इस मन्त्र को २१ वार पढ कर हाथ से झाडा देने पर विछू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ धु लुः दे उ लः धुल पुरः तिहानै में दायण देव कुकर विस कुनर ई माण माणस के ही मातरीख मंत्री बंधो जै सगला ई स्वान रो विषल-त्तरई सही ।

विधि —इस मन्त्र से ३ रविवार तक पागल कुत्ते का काटा हुआ आदमी को मन्त्रीत करे २१ वार, तो कुत्ते का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ छौं छौं छौं छः अस्मिन् यात्रे अवतर स्वाहाः ।

विधि .—इस मन्त्र मे पेडा, ३ वार मन्त्रीत कर प्रात ही खावे तीन दिन तक, तो आधा सीसी (आधा माथा का दर्द दूर हो ।)

मन्त्र :—मेरू गिरी पर्वत जहाँ वसै हणमंत वीर कांख विलाई अंग थण मुरड तीनु भस्मा भूक गुः० हः० फुरोः० ।

विधि :—७ नमक की डली लेकर ७ वार मन्त्रीत करे, २१ वार फू क दे तो काख विलाइ ठीक होती है गाथैस वरो वार २१ तिणाथो मन्त्री जै तिण - लेई एक २ का तिणाथी वार ३ मन्त्री जै फू क दीजै थणस से जाय । मूरड गई होय तो तेनो लोहनी कडछी की डडी वार २१ मन्त्र कर २१ वार फूक देने पर पेट दर्द, उदर शूल, धिरण पीडा, वाय काख विलाई । इतने रोग ठीक होते है ।

मन्त्र :—ॐ नमो इंद्र पूत इंद्राणी हणई राधणी हणइ वायसूल हणइ हर्षा हणई फीहा गोला अंतगलि वायगोला हणई नहीं तर इंद्र माहाराजा नी आज्ञा ।

विधि —इस मन्त्र से १०८ वार साढे तीन आटा की तावा की रीग मत्र कर चाँवल से रक्त वस्त्र सवा गज कपडे को मत्रे तो गोलो, फीहो ठीक होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं श्री करि धन करि धान्य करि रत्न वर्षणी महा-देव्यै पद्मावत्यै नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ वार नित्य ही जाप करे तो देवीजी प्रत्यक्ष हो ।

नारि केल कल्प

श्लोकः—द्वि जटी एक नेत्रस्तुः नालि केरो मही तले ।
चिंतामणि समोप्रोक्तं सर्व वांछित दायक ॥ १ ॥

यस्य पूजन मात्रेण समृद्धि कुरु ते सदा ।
राजद्वारे जयेप्राप्ते: लाभः आकस्मिक तथा ॥ २ ॥

वेशानिपूज्य मानेय दद्यात्यभीष्ट वांछितं ।
प्रक्षाल नपयपाना । द्वंध्याज नयतेसुतं ॥ ३ ॥

गंधाघ्रातेनय स्यासु गूढ गर्भाप्रसुत्तये ।
स्वगारेपूजितेयस्मिन् इष्टसिद्धि स्थिरा भवेत् ॥ ४ ॥

सांयुगी तरणे घोरे । विवादे नृप वेस्मनि ।
अर्चयेन्नेक नेत्रंयन् । अजज्यो जायतेपुमान् ॥ ५ ।

वृद्धिस्यादिवसायस्य । व्दिदेसेपूजना द्विसः ।
पूजनात्मंदिरे स्वीये क्षुद्रानस्यंत्यु पइवा ॥ ६ ॥
शाकनी भूत प्रेतादि क्षेत्रपाल पिशाचकाः ।
मुद्‌गलादि महादोषाः क्षयंयांति क्षणे नते ॥ ७ ॥
सर्व शांति भवेयस्मिन् मही तेज गती भले ।
आयु वृद्धि महासिद्धिः तीव्र बुद्धि समुद्वय ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लूं स्वरूपायः क्ली चकामाक्षये नमः
स्वति त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय च ॥ ६ ॥

सर्वात्मगूढ मंत्राय नालिके रेक चक्षुषेविना मणि समानाय प्रसस्याय नमो नमः ।

ॐ ह्री श्रीं क्लूं क्लीं एकाक्षराय भगवती स्वरूपाय सर्व युगेस्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय नमः ।

विधि :—अनेन मत्रेण चैत्राष्टम्या रक्त कुसु मैवा १०८ लक्ष्मी वीज जप पुरस्सरं गृहे पूज्ययति तस्यस र्वार्थ भीष्ट सिद्धिर्भवती । एतस्य प्रक्षाल नोद केन वध्या सुतजनयति । ऋतु रमानानतर एतस्य गधा ध्रातेन गूढगर्भा प्रसूतय । गृहे पूजिते सर्वा भिष्टार्थ सिद्धि स्थिरा भवति । एतस्य पूजना द्वादेव्यवस्थिपिते व्यवसाय वृद्धि र्भवति । इद माया वीजपूर्व स्वेत पुष्प १०८ पूजनात् गृहेस गोणसा द्यु पद्रवो न स्यात् । एतस्य पूजनात् गृहे शाकिनी भूत प्रेत पिशाच क्षेत्र पालादि दोषो न भवति । एतस्य गृहे पूजनात् क्षुद्रोप द्रवानस्यु । एतस्य पूजनात् सर्व शाति र्भवति । एतस्य गृहे पूजनात् मुद्‌गलाद्या सानिध्य करा भवति, किं वहुनायस्यैक नेन्नद्विजटी सषक त नालिकेरं कृति सास्ति गेहे । चिंता मणि प्रस्तर तुल्य नाव सम चित धन्य त मस्य चित्ते ।

॥ इति ॥

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्ली क्लूं ब्लूं क्लीं ब्लूं यस्तोस्तं सुग्नी वीय शाकिनी दोष निग्रहं कुरु २ स्वाहाः ।

विधि —कोरा मटका या हडिया मे खडी चूना से अक्षर लिखे फिर उडद मुट्ठी, १५ कपूर, फूल ७, वार मन्त्रीत कर हडिया मे डालकर ढक्कन लगा देवे फिर नीचे आग लगा कर ऊपर हडिया धर देवे । विल्ली को आने नही देवे तो, शाकिनी पुकारती आवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो महाकाय योगणि योगणि नाथाय शाकीनी कल्प वृक्षाय दुष्ट योगिणी संधिरू हाय कालडेडेशाधय २ वंधय २ मारय २ चूरय २

अपहर शाकिनी संधूमवीरात् ॐ उँ ग्नों ग्नीं ग्नां उँ ह्लीं ह्लां २ ह्लोंत्फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से गुग्गुल ७ वार मन्त्रित कर उंखल में डाल कर मुंसल से कूटे तो शाकिनी को प्रहार लगता है। गोडो मूडे शाकिनी मस्तक मूडा वैलागीनी चेष्टा। पेट दर्द हो, उवाक आवे, उच्चाट उपजै, सूल आवे, वेटि करे, माँटि दिठाउ चाट उवाट उपजै, सूल आवे, सासरे न रहे, मावो अंगरै, देह लूणपाणि हो वई। घणुं वोले नही, सूहणो भीलडी रूप देखे। सुती डरे, छोरू आवद्व रहे, लोहि पडे, छोरू न हुवै। इतनी बात हो तो शाकिनी की चेष्टा जानना।

मन्त्र :—काली चीडी चग २ करै मोर विलाइ नाचै हणमंती यती कीं हाक मांनै अमुका की धरण ठीकाणै।

विधि :—इस मंत्र को १०८ वार प्रभात ही रविवार को वेलअठाइ आटा की मन्त्री धूप देइ हाथ मे राखिजै धरण ठीकानै आवे।

मन्त्र —ॐ नमो अ जैपाल राजा आजया देराणी तेहने सात पुत्रा प्रथम पुत्रः एकान्तरो, वेलाज्वर, शीतज्वर, दाह ज्वर, पक्ष ज्वर, नित्य, ज्वर, तृतीय ज्वर, ए सात ज्वर माहिपीडा करै तो अै जैपाल राजा अर्जया देराणी की ग्र० मे फु०

विधि .—कन्या कत्रीत सूत्र को सात वड कर के गाठ ७ लगावे उसको २१ वार मन्त्रीत करे हाथ मे बाधे तो सर्व प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो रूद्र २ महारूद्र २ वृश्चिक विनाशय नाशय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ वार मन्त्रीत करे वैसे बीछु का जहर उतरे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हिमवन्तस्योतरे पार्श्वे अश्व कर्णो महाद्रुमः तत्र सूलसमुत्पन्ना तत्रैव विलयंगता।

विधि :—इस मन्त्र से पानी कलवाणी कर पीलाने से सूल मिट जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पींगलाय मातंगराजाय उतय्पथा लघु हिली २ चिली २ मिलि २ स्वाहा।

विधि :—कन्या कत्रीत सूत को सात वड करके गॉठ २१ देवे फिर २१ वार मन्त्रीत कर कमर में बाधने से गर्भ का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—ॐ आँणूं गंग जमण चीबेली लूं खीलूं होठ कंठ सरसा वालू खीलूं जीभ मुंखं संभा लूं खीलूं मावापजिण तूं जाया खीलूं वाट घाट जिण तूं आया खीलूं धरती गयण अकाश मरहो बिसहर जो मेंलूं सास।

विधि —इस मन्त्र से धूलि, अथवा ककर, अथवा भस्म, १०८ मन्त्रीत कर साप के ऊपर डालने से साप की लीत होती है।

मन्त्र :—ॐ गगयमण उंची पीपली जारे सर्थ निकलि वीर।

विधि —इस मन्त्र से भस्म १०८ वार मन्त्रीत कर सर्प पर डालने से कीलित किया हुआ सर्प छुट जाता है।

मन्त्र :—ॐ काली कंकारूं वाली महापत्र राली हूं फट् स्वाहाः।

विधि —इस मन्त्र से भस्म १०८ वार मन्त्रीत कर आँख (चक्षु) पर पट्टी वाधने से नेत्र अच्छे होते है।

मन्त्र —ॐ नमो गगा जमुना की आगु वल खीलु होठ कठ मुख खीलु तेरी वाट घाट जोतु आया तर धरती ऊपर आकाश मरीन सकै काढिसा सलवा २ कोयला करी कर कहा काल राजारि रूघोच्यार दुआर हाली चाली कु तरी पछारी लख गरूडदसर अफीरि फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि —इस मन्त्र से सर्प का मु ह स्थभन किया जाता है।

मन्त्र —ॐ नमो सु उखिलणभई वाचा भई विवाच इसर गोरी नयनस जो वै सिर मुकलाया केस कमर धोवती करै वाभण का वेस मइ तो सरपा छोडि फिर करि च्यारूं दसर अफरि फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।

विधि —इस मन्त्र से सर्प का मुख स्तम्भन किया हुआ छूटता है।

मन्त्र —ॐ नमो लोह मै तालु लोह मै जडीउ वज्र मे जडी उ तालो उघडि तालो न उ घडै तो वज्र नाथ की आज्ञा न उघडै तो राम सीता की आज्ञा फुरै तत्त उघडै तो नार सिंह वीर की आज्ञा फुरै ठ ठ ठ स्वाहा।

विधि —वार ७ वा २१ ताला को मन्त्रीत कर तीन वार ताला को हाथ से ठपका लगावे तो ताला खुल जावे।

मन्त्र —ॐ नमो कामरू देश कानक्ष्या देवी लकामाहि चावल उपाय किसका चोर किसका चावलपीरकानुगाधीरमे राभनुकाचाउल चिडा चोर को मुख लागै साह उ गण उखा वै चौर कै मुख लोही नी कावै चीर छुटै तो महादेव को पत्र फुटै फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा ब्रह्मा वा च विष्णु वाच सूर्य च द्रमा वाच पवन पाणी वाणी वाच।

विधि —इस मन्त्र से चावल २१ वार मन्त्रीत कर चवावे तो चोर के मु ह मे खून निकले।

मन्त्र :—ॐ नमो ब्राह्मण फीटि योगी हुया ब्रोर ज नोइ नासकीय फुटकिर गलइ पछा नारसिंह कीर की आण फिरइ ए।

विधि —इस मन्त्र से गुड (गुग्ग) २१ वार मन्त्रीत कर खिलाने से ७ दिन तक तो वाला का रोग दूर होता है। वाला माने नेहरवा रोग।

मन्त्र :—ॐ नमो उज्जेन नगरी सीपरा नंदी सिद्धवड़ गंधरप मसान तहां बसे जापरो जापराणं बै बेटा भूतिया, मेलिया अहो भूतिया अहो मलिया अमुकाने घर पाखान नाख २ ॐ अहो मलिया अमुकाने घर विष्टानाख २ ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि .—भगी के मशान मे से पत्थर इ ट लाकर, एकान्त स्थान मे चोका लगा कर जगह पवित्र करे, फिर उस लाये हुवे ई ट या पत्थर को उस चोके मे रख देवे, फिर उस ई ट या पथर पर बैठकर, सामने एक वरतन मे अग्नि रख कर, कनेर के फूलो से १०८ वार भैंसा गुगल के साथ आहुति पूर्वक जप करना, पूर्व दिशा मे बैठकर करना इस प्रकार सात दिन तक जप करना तो शत्रु के घर मे निश्चय से पत्थर और विष्टा वरसेगा, अगर सात दिन मे प्रत्यक्ष न हो तो सात दिन फिर करना तव तो जरूर ही वरसेगा। इस प्रकार की क्रिया समाप्त हो जाने के वाद मद् की धार देना। जो होम की भस्म थी, उस भस्म को पोटली मे वाँध कर मत्र से मन्त्रीत कर, जिसके घर में डाल दी जाय उसके घर मे पत्थर वरसे सत्य है, किन्तु मन्त्र रात्रि मे जप करे।

मन्त्र :—ॐ टे टें टें मार टें स्वाहा।

विधि :—जहा चौरस्ते की धूलि को लेकर मध्यान्ह समय में लेकर इस मन्त्र से १०८ वार मन्त्रीत करके, घर मे डालने से चूहे सव भाग जाते है। एक भी चूहा नही रहता है।

मणि भद्रादि क्षेत्रपालों का मन्त्र

ॐ नमो भगवते ह्म्ल्व्र्यूं ह्रा ह्री ह्रूं ह्रौ ह्रः माणि भद्र देवाय भैर वाय कृष्ण वर्णाय रक्तोष्टाय, उग्र दष्ट्राय त्रिनेत्राय, चतुर्भुजाय, पाशां कु शफल वरदे हस्ताय नागकर्ण कुण्डलाय, शिखा यज्ञोपवीत मण्डिताय ॐ ह्री भ्रा २ कुरू २ ह्री २ आवेशय २ ह्रौ स्तोभय २ हर २ शीघ्रं २ आगच्छ २ खलु २ अवतर २ क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं चन्द्रनाथ ज्वालामालिनी, चडोग्र पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर धरणेन्द्र पद्मावति आज्ञादेव नाग यक्ष, गधर्व, ब्रह्म राक्षस रण भूता दीन् रति काम, वलि काम, हतु काम, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, भवातर, स्नेह, वैर, सवधीसर्व ग्रहान्नावेश्य २ नाग ग्रहान्नावेशय २ गधर्व ग्रहान्नावेशय २ आकर्षय २ व्यतर ग्रहान्नाकर्षय २ ब्रह्म-राक्षस गहान्नाकर्षय२ चेटक गहानाकर्षय२ सहस्त्र कोटि पिशाच ग्रहानाकर्षय २ अवतर २ शीघ्र २ धुनु २ कम्पय २ कम्पावय २ लीलय २ लालय २ लोलय नेत्र चालय २ गात्र चालय २ सर्वांगं चालय २ ओ क्रो ह्री गगनगमनाय आगच्छ २ कार्य सिद्धि कुरु २ दुष्टानां मुख स्तंभय २ सर्व

ग्रह भूतवेताल व्यतर शाकिनि डाकिनी ना दोप निवारय २ सर्व पर कृत विद्यानाशय २ हूं फट् घे घे ठ ठ वपट् नम स्वाहा।

विधि —इस मणि भद्र क्षेत्रपाल के महामन्त्र को दीप धूपपूर्वक क्षेत्रपाल की धूमधाम से पूजा करके, ब्रह्मचर्यपूर्वक, एकासन करता हुआ सिद्ध करे १००० वार तो ये मत्र सर्व कार्य सिद्ध करने वाला है। जो भी रोगी भूत प्रेत बाधा से दुखी हो उसको बैठाकर इस मन्त्र से १०८ वार भाडा देने पर उसकी व्यतर वाधा हट जायगी। रोग से मुक्त हो जायगा। किन्तु पहले सिद्ध करना पडेगा। मन्त्र सिद्ध करे तो डरे नही, इस मन्त्र से मणि भद्र भैर व प्रत्यक्ष भी आ सकते है।

मन्त्र :—ॐ ह्री श्रीं अर्हं चन्द्र प्रभपाद पंकज निवासिनी ज्वाला मालिनी तुभ्यं नमः।

विधि —इस मन्त्र का ६ दिन तक पिछली रात्री मे शुद्ध होकर ३ माला जप करे नित्य त ज्वालामालिनी देवी जी प्रत्यक्ष दर्शन देवे।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः भगवति सर्व निमिति प्रकाशिनी वाग्वादिनि अहिफेनस्य मासं धुवां कं कथय २ स्वप्नं दर्शय २ ठः ठः।

विधि —इस मन्त्र का खूब जप करने से सर्व चीजो के भाव क्या खुलेगे सो स्वप्त मे दिखेगा।

अनोत्पादन

मन्त्र :—ॐ तद्यथा आधारे गर्भ रक्षणे आस मात्रिके हूं फट् ठः ठः ठः ठः ठः

विधि .—अनेन मत्रेण रक्त कुसुम सूत्रे स्त्री प्रमाणे ग्रन्थि ७ स्त्री के कटि वाधे गर्भ थमे अधूरा जाय नही। मत्र १००८ प्रथम जपै। दीप धूप विधानेन जपै।

मन्त्र :—ॐ उदितो भगवान सूर्य सहस्राक्षो विश्व लोचन आदित्यस्य प्रसादेन अमुकस्य अर्द्ध शिरोर्द्ध नाशय २ ह्री नमः।

विधि :—डोरा करि १०८ वार मत्रि गाठ दे कर्ण वाघे अधा शीशी जाय।

मन्त्र :—ॐ नमो स्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराणां वृष्टि कुरु २ ह्रीं संवौषट्।

विधि .—प्रथम १ लाख विधि पूर्वक जपै। जव पानी वरसावना होय तव उपवास कर पाटा पर लिख पूजा कर जपै पानी वरसै। जव रोकना होय तो।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं सों क्षं क्षं क्षं मेघ कुमार केभ्यो वृष्टि स्तंभय २ स्वाहा ।

विधि :—श्मशान मे प्यासो जाप जपै मेघ का स्तभन होगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते विश्व चिन्तामणि लाभ दे रूप दे, जश दे जय दे आनय २ महेसरिमनवांछितार्थ पूरय २ सर्व सिद्धि वृद्धि ऋद्धि सर्व जन वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि —चिन्तामणि मंत्रोयम्, नित्य जपै सर्व सिद्धि होय प्रभात सध्या जपै धूप खेवै ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्स्ल्व्र्यूं मेघ कुमारणां ॐ ह्रीं श्रीं नमो स्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमारिकाणां वृष्टि कुरु कुरु ह्रीं संवौषट ।

विधि : – सहस १२ जपेत वृष्टिकृत्सद्यः ।

मन्त्र :—ॐ स्फ्रांरक्त कम्बले देवी द्यूत मृतं उत्था पय २ आकाशं भ्रामय २ जलदमानय२ प्रतिमांचालय२ पर्वत कंपय२ लीला विलासं ओं ओं ओं नमः ।

विधि .—अनेन मत्रेण कुम-कुम मिश्रिते जवात्से रभिता नभि मन्त्रायाडगे स रक्त पादौ क्षिप्यते जलदागम । इद मंत्र इटय हरिताल कु म कुमाद्यै लिखेत् । इस मत्र को इट के ऊपर हरिताल और केशरादि से लिखकर भूमि के अन्दर गाडे तो वृष्टि रुक जाती है । याने पानी बरसना बध हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय हनुमंताय सर्व कीटकका मक्षि काय पिपीलिका विले प्रवेश २ स्वाहा ।

विधि .—यदा रविवारे सूर्य सक्रमण मवति तदा रात्रौ बार १०८ सहसो जपित्वा कीटी नगरे क्षिप्यते सर्वथा कीडी जाय ।

मन्त्र :—ॐ चिकि २ ठः ३ ।

विधि :—बार २१ अनेन जप्त सूत्र शय्या बद्ध मत्कुण नाशयति । इस मत्र को २१ बार जप कर सूत्र को शय्या मे बाधने से खटमल कम होते है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आवी टीडी हु अ ऊ उकाम छाडयउ मंदिर मेरु कवित्र हाकाइ हनुमंत हूकई भीम छां–डिरे टीडी हमारी सीम ।

विधि .—वार १०८ अभिमन्त्रय सरसप ने बालू खेत मे चोकर छीटे टीड़ी जाय वार १०८ अभिमन्त्य सरसप ने बेलू खेल्लने चौकेर छीटे टीडी जायँ ।

मन्त्र :—ॐ ॐ ॐ ठ सइफल नव सह भुज पंच ग्राम कूठ तनइ पापिली जइ जउइणि कणि कीडउ पडइ ।

विधि चिट्ठी लिखधान कण मध्ये अथवा जीर्णधान कण ममिमन्त्र्य अन्न मध्ये क्षिप्यते । धान सुलै नाही ।

मन्त्र :—ॐ नमो भुंज नायाय तद्यथा हर-हर ससि-ससि मिलि-मिलि सर्वेषां प्राणिनां मुंडं बंधं करोमि स्वाहा ।

विधि :—तीन सै गुणी जै सरसप बेलुमन्त्र्य सस्य मध्ये क्षिप्यते धान सुलै नाही ।

मन्त्र :—ॐ नमो नार सिंघ तू घूंघरियालो सब्रह वीरह खरउ पियारउ ॐ तली धरती ऊपर-आकाश मरहि मृगी जइ लहइ प्रकाश ।

विधि :—जि वार मृगी आवै ति वार श्याही मसि सूं माथे लिख जै, मन्त्र भणि औषधि नाख दीजै मृगी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं तेरह सरसौ, चौदह राई, हाट की धूलि, मसान की छाई पढ़कर मारुं मंगलवारै तो कदई नावह रोग द्वारे फुरई मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—वारई मगलवारे इण मत्र सू मत्रि तेरइ महिला, ७ सरसप ७ राई, १ चुटकी चौराहे की धूलि, एक चुटकी मसान की छाई (राख) एकटा कर मत्रइ मगल वारै दोषाइत मे नाखिजे अवरता गले मत्रि वाधिये आदित्य वारे । एकठा करिए मगलवारे कीजै मृगी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो ऊँचा पर्वत मेघ विलास सुवरण मृगा चरइ तसु आस-पास श्री रामचन्द्र धनुष बाण चढ़ाया आजि रे मृगा तुझको रामचन्द्र मारने आया गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि —वर्षाकाले रवि दिने धनुप भवति तदा कुमारी सूत्र नो डोरो नव लड कीजै धनुप सामा जो इने वार ७ मत्रि गाठि दशक दीजै ।

इम गाठ दीजै कार्य काले रवि दिने गाठ ।
तावीज माहि घालि गले राखिए मृगी जाए ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र परिश्रम २ स्वाहा ।

विधि :—१०८ जप सरसो से ताडिजै रीगन वाय जाय ।

मन्त्र :—समरा समरी इम मणइ गंडू गर ऊपर माल रवणई बलि रांगण फाग विलाई लूण पानी जिमि हेम गलाई भारा अमृत-२ प्रक्षुम्य फुट् स्वाहा ।

विधि :—पानी मन्त्र्य वार २१ प्याइजे भाडो दीजै रीगनवाय जाप ।

मन्त्र :—ॐ तारणि तारय मोचनि मोचय मोक्षणि मोक्षय जीव वरदे स्वाहा ।

विधि :—पानी बार २१ मन्त्रित कर पीलावे भाडो दीजै सर्व वायु जाय ।

मन्त्र :—ॐ प्रह जउ गाइ सूरो ए ए झिझंत तिमिर संघाया अनिल, वयण, निबद्धो अमुकस्य लूतवातं, रक्त वा तं अगिवातं, अडनीवातं विगंछिया वातं, वृद्धिवातं, संतिवातं, पणासरा स्वाहा ।

विधि :—कुमारी का सूत्र बार १०८ गाठ १२ मन्त्रि दीजै देह प्रमाण डोरो करिए तो वाय जाय ।

मन्त्र :—ॐ मोहिते ज्वालामालिनी महादेवी नमस्कृते सर्वभूत देवी स्वाहा ।

विधि —जिसपर शंका हो उसके नाम की चिट्ठि मन्त्र तेल मे चोपडि अग्नि माहि होमिये बले ते चोर जाणबे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री वज्र स्वामिने सर्वार्थ सिद्धि सम्पन्नाय भोजन वस्त्रार्थ देहि-देहि ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—नगर प्रवेशे काकरा ७, वार २१ मन्त्रि वट वृक्ष के सामने डाले गाव मे प्रवेशकरे तो सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोमयस्य सिद्धस्य, बुद्धस्य अक्खीण महाणसस्य. भास्करी श्रीं ह्रीं मम चिंतितं कार्य आनय-आनय, पूरय-२ स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार गुनिये तो लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वयर स्वामिस्स मम भोजनं देहि-देहि स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ गुणि काकरी २१ मन्त्रि वट वृक्ष उपर छाटिये तत ग्रामे लाभ भोजनं भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलि कुंड स्वामिने अप्रति चक्रे जये-विजये अजिते अपराजिते जम्भे स्वाहा ।

विधि देशना काले स्मृत्वा देशनाकार्ये युवति जनान ग्राकर्षयति सर्व वशीभवति दिन त्रयं यस्यां दिशि पर चक्र भवति। तत्सम्मुख स्मरयते निर्विघ्नहो भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंताणं आस्मिणी मोहनी मोहय-मोहय स्वाहा।

विधि '—एष मार्गे गच्छद्भिः स्मरतः तस्कर। दर्शनमपि न भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो सयं बुद्धाणं ज्रौं झौं स्वाहा।

विधि .—प्रति दिवस सिद्ध भक्ति कृत्वा अष्टोत्तर शत दिनानि यावदष्टोत्तर जपेत कवित्ता गमादितय, पाडित्य च भवति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमो पुरुषोतमाणं अर्लील अपौरूषाणम् अर्हं असि आ उ सा नमः।

विधि —जाप्य १०८ कृत्वा असवलित सुख सौभाग्य ऋद्धि श्च भवति।

मन्त्र :—ॐ ह्री अर्हं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोग पइवाणं लोग पज्जोयगराणं मम् शुभाशुभं दर्शय-२ कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधि —जाप १०८ सस्तर के उपर मौनेन शयनीय स्वप्ने ग्रादेश '

मन्त्र :—ॐ नमो अहिर्हंताणं अभय दमाणं चक्खू दयाणं मंगा दयाणं शरण दयाणं एं ह्रीं सर्वभय विद्रावणायै नमः।

विधि —जाप १०८ सर्व भयानि विशेप तो राजकुल भय पर चक्र णय निवर्तयति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरंहताणं अप्पडिब्रहय वरनाणं दसंण धराणं विउट्ट छडमाणं एं स्वाहा।

विधि . -निरतर जापा दतीत वर्तमानागत्त ज्ञान स्वप्न शकुन निभित्तादीनामपि तथा देशत्व च भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो जिणाणं जावयाणं केवलियाणं केवलि जिणांण सर्व रोष प्रशमनि जंभिनी स्तंभिनी मोहनी स्वाहा।

विधि —पट्टे मत्र लिखित्वा जापो १०८ वार दीयते तत् क.र्य काले वस्त्र खंड मयूर शिखा सयुक्त परिजप्य वाम पार्श्वे ध्रियते राजा वश्यो भवति।

मन्त्र :—ॐ णमो जिणाणं जावयाणं मुत्ताणं मोयगाणं असि आ उ सा यै नमः वंदि मोक्षं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि .—रात्री दश हजार जापो वदि मोक्ष ।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख चक्र गदा प्रहरिणी अमुकस्य बंध मोक्षं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—बार २१ तैलं जपित्वा मस्तके क्षिपेत् वंदि मोक्षः ।

मन्त्र :—ॐ णमो बोहि जिणाणं धम्मदियाण धम्मदेसियाण अरिहंताणं, णमो भगवइ सुय देविया सव्वसु अतायरावार संग जणणि अर्हं सोरोए क्ष्वी क्ष्वीं स्वाहा ।

विधि :—१०८ जपिये । देखना समये वाक्य रस होय, व्याख्याने सत्य प्रत्ययः ।

मन्त्र :—ॐ नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनिहाण लोग हियाणं लोग पइवाणं लोग पज्जुगाराणं नमः शुभाशुभं दर्शय २ करण पिस्रावति स्वाहा ।

विधि :—रात सूता जापिये १०८ बार शुभाशुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवउ गोयमस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स, अक्खीण महाणसी, अस्य संयोगो गोयमस्स भगवान भास्करीयम् ह्रीं आणय २ इम स भयवं अक्षीण महालब्धि कुरु कुरु सिद्धि, वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—तन्दुल १०८ मंत्र सूखडी घृत मांहि मूकिये । अदृथाय सही । अक्षय होता है । ॐ चिन्तामणि-२ चिंतितार्थं पूरय-२ स्वाहा ।

चिन्तामणि मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अर्हतें नमः ।

विधि :—पान ७ ऊपरै लिखै, १ सासे लिखि बीडा चबाइये, केशर सूं लिख स्त्री पुरुष सर्व वश्य ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन आगच्छ २ पर विद्यां छेदं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ तथा २१ तेल मंत्रि प्रसूति काले नाभि लेप सर्व डील (शरीर) मर्दनं सुखे प्रसव होई ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि शीघ्रं चालय उर्द्धं बाहुं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—प्रथम यस्मिन् दिने बाहुबलि साधन प्रारभ्यते तस्मिन् दिने उपवास विधाय, संध्या समये स्नान कृत्वा शुभ वस्त्राणि परिधारय श्री खण्ड, कर्पूर, कस्तूरिकाया, सर्वाङ्ग लिप्त्वा ततो पविश्य मंत्र—१०८ जप्यते ततोर्द्धी भूय कायोत्सर्गेन मंत्र स्मरणीयं शुभाशुभं कथयति । इति ।

मन्त्र :—लक्षं लक्षणं लक्ष्यते च पयसा संशुद्ध मानोर्जलम क्षीणे दक्षिण पश्चिमोत्तर पुरः षट्म त्रयद्वये मासैकम ।

मध्ये क्षिद्र गतं भवे दश दिनं, धूमाकुले तछिने सर्वज्ञै परिभाषितं, जिनमते आयुर्प्रमाणं स्फुटं ॥१॥

अर्थ — निर्मल भोजन मे जल भर सम ठामे (वर्तन) मे रोगी ने दिखावी जै जो सूर्य दक्षिण हीन दीखै तो छ मास जीवै । पश्चिम हीन दीखै तो ३ मास जीवै, उत्तरहीन दीखै तो २ मास जीवै, पूर्वहीन दीखै तो २ मास जीवै । जो मडल सछिद्र देखै तो १० दिन जीवै । धूभाकुलित देखै तो तिहि (उसी) दिन मरे । यह मृत्यु जीवित ज्ञान सर्वज्ञ देव कहो ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवता कूष्मांडनी क्षा ह्रीं ग्वीं शासनदेवी अवतर २ दीपे दर्पणे शक्ति ब्रूहि २ स्वाहा ।

विधि —वार १०८ मत्रि पढी जै विधि सूं पूजा कीजै माता प्रत्यक्षा भवेत् ॥

मन्त्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी, चक्रवेगेन वाम हस्ते अचलं चालय २ घंट भ्रामय २ श्री चक्रनाथ केरी आज्ञा ह्रीं आवर्ते स्वाहा ।

विधि —पूर्व जाप १०८ चावल मन्त्र घडा माहि (डाले) ना खिजै घटो-भ्रमति ।

मन्त्र —ॐ ह्री नमो आइरियाणम् म्म्ल्व्र्यूं पश्चिम द्वार वंधय २ ।
ॐ नमो उवज्झायाण म्म्ल्व्र्यूं उत्तर द्वार वधय-बधय ।
ॐ ह्री णमो लोए सव्व साहूण क्म्ल्व्र्यूं अधोद्वार वधय-वधय ।
ॐ ह्री णमो अरिहताण स्म्ल्व्र्यूं अग्रद्वार बधय-वधय ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाणं ध्म्ल्व्र्यूं नैऋत्य द्वार वधय-वधय ।
ॐ ह्री णमो आयरियाण म्म्ल्व्र्यूं पवन द्वार वधय-वधय ।
ॐ ह्री णमो उवज्झायाण व्म्ल्व्र्यूं ईशान द्वार वधय २ ।
ॐ ह्री णमो लोए सव्वसाहूण म्म्ल्व्र्यूं उत्तर द्वार वधय-वधय आत्म विद्या रक्ष-रक्ष ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षः ब्म्ल्व्र्यूं पर विद्यां छिद छिद देवदत्त स्वाहा ।

क्षां क्षीं क्षीं क्ष्यः क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्र पालाय वन्दि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—बार १० जाप कीजै बन्धन छूटै। सही सर्व सिद्धि करे। सर्व सिद्धि करं मंत्र सर्व दु:ख हर परं पठनीय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मावती सर्वजन वशंकरी सर्व विघ्न प्रहारणी सर्वजन गति मति, जिह्वा स्तंभिनी ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्ष्म्ल्व्र्यूं, ह्म्ल्व्र्यूं गति मति जिह्वा स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—७ बार व तीन चन्दन, केशर, कपूर, कस्तूरी, गोरोचन, पीस, गुटका क्रियते, तदुपरि जाप १०८ दीयते पुष्प दीयते, तिलक कृत्वा गम्यते, शाकिनी भूत राजादि वश्यं भवति ।

मन्त्र :—ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्रौं ह्रौं नमः ।

विधि :—नित्य जाप पीत मालाया पञ्चशत क्रियते। पीतवसनानि धारयते सर्वसिद्ध मनोभिलास पूर्णिता भवति सकल भूषणाचार्य ग्वालेर्या कृता लक्ष्मी लाभः स्यात् ।

कलश भ्रामण मन्त्र विधि

मन्त्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्रवेगेन वाम हस्तेन अचलं चालय २ घटं भ्रामय भ्रामय श्री चक्रनाथ केरी आज्ञा ह्रीं आवर्तय स्वाहा ।

विधि :—गोमयेन चतुष्कोण मडल लिप्य गौ धूमादि अन्नोपरि कलश स्थाप्य तन्म ध्ये पुष्प १०८ मन्त्रेण मन्त्रियित्वा कलशे निवेशयेत् । पर पुरुष हस्तारूढे अक्षतेन घट भ्रमति तदा अशुभ स्व हस्तारूढे सति घट भ्रमति तदा कार्य सिद्धिः। महत्तर कार्ये विधिः कार्या राजादि विचारे व वर्षे सुमिक्षाए विचारेण रोगादि विचारे स्त्री पुत्रादि विचारेऽपि विचारणीय ॥ "चमत्कृते व्यापारे वस्तु विक्रय प्रयोग भूर्य पत्रे लिखेद् यत्र ।"

अष्टगंधेन नरः शुचिः पुनः सुश्वेत पुष्पेण मंत्रं जाप्य शत्तोत्तरं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरेणन्द्र प्रिय पद्मावती श्रियं मम कुरु कुरु दुरितानि हन २ सर्व दुष्टानां मुख बंधय २ स्वाहा ।

इदं जप्त्वा वस्तु मध्ये यंत्रं क्षिपित्वा बिक्रीयते। तत्क्षणादपि अन्य प्रकारः ॥१॥

रम्भापत्रे लिखेन्नाम। कर्पूरेण मदेन त्रि रात्रि मर्चनं कृत्वा केशरं समं। तन्दुले मस्तके क्षेप्यं। दारिद्रयं तस्य नश्यति, देवि तस्य प्रसादेनं धनवान जायते नरः ॥ २ ॥

यंत्र च भक्षय दिशं दारिद्रयं तस्य नश्यति ॥ ३ ॥
पुनः द्वितायुतं जपेन्मंत्रं होमयेत् पायसं कृतं, नश्यते तत्क्षणादेवी दारिद्रयं दुष्ट बुद्धिना ॥ ४ ॥

पद्मावती सिद्धि मन्त्र

महारजते ताम्रपत्रे कदली त्वचि व पुनः ।
अष्टगंधेन, दुग्धेन,श्वेत पुष्पै रक्त पूजनं ॥१॥
ताम्र पत्रे पयः क्षिप्त्वा यंत्र स्नानं समाचरेत् ।
आदौ च वर्तुलं लेख्यं, त्रिकोणकं षट् कोणकं ॥२॥
वर्तुल चैव पश्चाश्च्चतुद्वारेण शोभितं ।
मध्ये क्रों लिखेद्धीमान् । कोणे क्लीं सदा बुधः ॥३॥
त्रिकोणे प्रणवं कृत्वा तद्वाह्ये च फुट् उच्यते ।
चतुर्द्वार लिखे श्री धरणेन्द्र पद्मावती नमः ॥४॥
क्रों कारेण वेष्टयेत् रेखां वन्हिमानं च वाहुभिः ।
एवमेव कृते यंत्रे । गोपीनाथ पुनेः पुनेः ॥५॥
पीताम्बर धरो नित्यं पीत गंधानु लेपनं ।
ध्यायेत् पद्मावती देवीं भक्ति मुक्ति वर प्रदां ॥६॥
प्रथमं क्रों वाहु क्षैत्रपाल संपूज्य यंत्र पूजनमाचरेत् । ततो जापः ।

मन्त्र :—ॐ क्रों क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं पद्मे पद्मासने नमः ॥ लक्ष मेकं जपेन्मत्रं ।
होमयेत्पायसं घृतं ॥ तावत्पात्रे घृतं क्षीरं । अथवा द्रव्य विमिश्रितं होमयेद्वर्तुले कुंडे । देवीनुवशगा भवेत् । दुग्धाहार यव भोज्यं निराहारश्च श्राद्धयो । एवमेव जपेन्मंत्रं भूमिशायि नरः शुचिः । प्रत्यक्षो देवीमा विश्य, वरं दत्ता भवेन्तदा । त्रिगुणं सप्त रात्रि च । जपं कृत्वा प्रशांत धी । प्रथम दिवसे देवीं । कन्यकां दशवर्षकीं ।
भैरवीं भीम रुपा च । सावधाने जितेन्द्रियः ॥

द्वितीय दिवसे शक्ति कन्यकां द्वादशाब्दिकां भैरवेण समायुक्तां भयं द्रष्ट्वा च रौरवं। तृतीये दिवसे मायां वरं ब्रूहि मम प्रभो एवमेव प्रकारेण त्रिकालज्ञो भवेन्नरः।

मन्त्र :—**ॐ नमो ह्रां श्रीं ह्रीं ऐं त्वं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी, शंख चक्र, गदा-धारिणी मम स्वप्न दर्शनं कुरु २ स्वाहा ।।**

विधि :—१०८ बार मौनेन शयनीय जप्तः स्वप्ने आदेश सत्यः ।।

मन्त्र :—**ॐ अमुकं तापय २ शोषय २ भास्करी ह्रीं स्वाहा।**

विधि :—आदित्य सम्मुखो भूत्वा, नामगृहित्वा, रात्रौ सहस्त्र मेक जपेत् सप्ताहे म्रियते, रवौ कर्त्तव्य। घोड़ा वच स्त्रीणी दांए हाथ की चिटली अगुली प्रमाण तंतु दूध सूँ घिसिरित्वंतर प्याइये पेट माहि रहे तो पुत्र होय, न रहे तो न होगा।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनहाणं लोगहियाणं, लोग पाइवाणम्, लोग पज्जो अगराणं, मम शुभाशुभं दर्शय २ कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।**

जाप्य १०८ संस्थार के मौनेनशयनीयम स्वप्ने आदेशः।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं अर्हं सव्वजीवानां मत्तायां सव्वेंसिसत्तूणं अपराजिउं भवामि स्वाहा ।**

विधि :—श्वेत सरसप (सरसो) बार २१ मन्त्रिजै जल मध्ये क्षिप्यति तरति तदा जीवति, बूढ़ति तदा मरति। रोगी आयुर्ज्ञानम् ।।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वस्त्रांचल वृद्धि कुरु २ स्वाहा।**

विधि :—बार १०८ सध्याएं मन्त्रि जे पछे बडी (चादर) सिरहाने दीजै प्रभाते नापिये बढ़े तो शुभ घटै तो अशुभ।

मन्त्र :—**ॐ गजाननाय नमः।**

विधि :—जाप सहस्त्र घृत मधु एक ठाकर का टवका १०८ होमिये। वस्तु तौल सिरहाने दीजै। प्रभाते नापिये वढे तो मदी, घटै तो तेज होय।

मन्त्र :—**ॐ नमो वज्र स्वामिने सर्वार्थ लब्धि सम्पन्नाय स्नानं, भोजनं, वस्त्रार्थः लाभं देहि-देहि स्वाहा ।।**

विधि :- काकरा ७ वार २१ मन्त्रि क्षीर वृक्ष हेठ भूंकिये लाभ होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री सूर्याय नमः ॥

विधि :—जल मन्त्रि नेत्र प्रक्षालिये नेत्र दूखता न रहे ।

मन्त्र :—ॐ विश्वावसु नाम गंधर्व कन्या नामाधिपति सरुपा सलक्षान्त देहि मे नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ॥

विधि .—मन्त्र मणि ७ अजुलि जल दीजे ए मन्त्र स्मरण १००० जाप कीजै नित्य १०८ कीजै, १ मास अथवा ६ मास में कन्या प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ धूम्-धूम् महा धूं धूं स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ राख मन्त्र नाखिये उ दरा (चूहे) जाय । (सत्य)

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां ह्रूं ह्रै ह्रों ह्रं ह्रः ॥

विधि —सार वेर काकरा मंत्रि चार दिशिना खिये (डाले) टीडी जाय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रूं वद् वद् वागेश्वरी स्वाहा ।

विधि —सरस्वती मत्र वार २१ जपिये श्वेत पाटा लिखि घोल प्यावै वाचा स्फुटा भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय महति महावीर्य पराक्रमाय सर्वसूल रोग व्याधि विनाशनाय काल दृष्टि विष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः सर्व-कल्याणकर दुष्ट हृदय पाषाण जीवन रक्षा कारक दारिद्र विध्वंशक अस्माकम् मनोवांछिकं (तं) भवतु स्वाहा ।

विधि —इमा पार्श्वनाथाय सपादिका विद्या यक्ष कर्दमेन स्थाली लिखित्वा शुभौ दिने जाती पुष्प १२००० जपैत । त्रिकोण कु डे जाप द्वादशाशेन समगूगल गुटिका १२००० सिता-घृत मिश्रित हृायिये । तत्र प्रत्यक्षा भवति ॥ द्रव्य ददाति, वार्ध दिन, प्रतिदिन १०८ वार करिये सर्वकार्य सिद्धिकर हर्ष ददाति ॥

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते (दो) वो सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाण लब्धि मम आणय २ पूरय २ ह्री भास्करी स्वाहा ।

विधि :—जाप १२००० चावल अखण्ड दिवाली की रात जपिये । रोज १०८ जपिये भोजन अक्षीण लब्धि मन सतोप शरीरं सौख्य आलय मागल्य भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्य रूपाय आगच्छ २ अमुकस्य अक्षिरोगं, अक्षि-पीड़ा नाशय स्वाहा ।

विधिः—वार १४ आँख पर जपिजे पीडा जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते विश्व रूपाय कामाख्याय सर्व चिंतितं प्रदाय मम लक्ष्मीं प्राप्त कराय स्वाहा ।

विधि —(इस मत्र की विधि नही है) ।

मन्त्र :—ॐ नमो अर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष—कल्मषाय दिव्य—तेजो—मूर्तये श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्व क्षामर डामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा देवदत्तस्य सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि .—अनेन मन्त्रेण वार ३ व ७ गधोदक पढि शिरसि निक्षियेत् ।

मन्त्र :—ॐ उच्चिष्ट चांडालिनो सुमुखी देवी मह्रा पिशाचिनी ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ दिन पहले जीमने बैठता ग्रास १ बार ३ जप धरती मेलता पानी चलु ३ धरती मेलता दूजै दिन ग्रास ३ जीमता बीच झूठे मुँह बार १०८ जप पानी चलु ३ मत्र पढि पीना । फिर भोजन करे दिन ९ इस प्रकार कर पीछे से पाखाने बैठता, बार १०८ जप करना । पीछे दिन ९ मशान ऊपर बैठ जप करना प्रत्यक्ष भवति ।

मन्त्र :—ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं, ॐ ख्म्ल्व्र्यूं, ॐ त्म्ल्व्र्यूं, ॐ म्म्ल्व्र्यूं, ॐ भ्म्ल्व्र्यूं, ॐ ह्म्ल्व्र्यूं, ॐ इम्ल्व्र्यूं, ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं, ॐ रम्ल्व्र्यूं, ॐ ख्म्ल्व्र्यूं ।

विधि :—ये मत्र अष्टगधेन लिख पूजा पूर्वक मस्तक पर रखै, लाभ हो जाये, जाप करै विधि पूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदि योगिनी परम माया महादेवी शत्रु टालनी, दैत्य मारिनी मन बांछित पूरणी, धन आन वृद्धि आन जस सौभाग्य आन आनै तो आदि भैरवी तेरी आज्ञा न फुरै । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो । ईश्वरो मन्त्र वाचा ।

विधि .—मत्र जपै निरतर १०८ वार विधिपूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय । सर्वकार्य सिद्ध होय । वार २१-१०८ चोखा मत्रि जिस वस्तु मे राखै अक्षय होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो गोमय स्वामी भगवउ ऋद्धि समो अक्खीण समो आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि —मत्र जपै प्रात काल शुद्ध होयकर लक्ष्मी प्राप्त होय। वार २१-१०८ सुपारी, चावल, मत्रि जिस वस्तु मे घालै सो अक्षय होय। ये मत्र पढ दीप, धूप खेवै भोजन वस्तु भाडार मे अक्षय होय। उज्जवल वस्त्र के शुद्ध आदमी भीतर जायँ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमः भगवऊ गोमय मस्स सिद्धस्स बुद्धस्स, अक्खीणस्स भास्वरी ह्रीं नम स्वाहा।

विधि :—मत्र नित्य प्रात काले शुचिर्भूत्वा दीप-धूप विधानेन जपै लाभ होय। लक्ष्मी प्राप्त होय।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते गौतम स्वामिने सर्व लब्धि सम्पन्नाय मम अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि —वार १०८ प्रतिदिन जपिये। जय होय। कार्य सिद्धि होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वां ज्वीं ज्वालामालिनी चोर कंठं ग्रहण २ स्वाहा।

विधि —शनि रात्रि चौखा (चावल) धोय, वार २१ मत्रि कोरी हाडी माहि घालिये (रवि प्रभाते गुहली देय वार २१ मत्रि चावल खवावै चोर के मुख लोहू पडै।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रवेगेन कट्टोरकं भ्रामय २ चोरं गृहय २ स्वाहा।

विधि :—कट्टोरक भमना पूर्व मन्त्र्य चोरमेव गृहणाति कटोरा चलावन भस्मना पूर्वं मन्त्र्य चोरमेव गृहणाति कटोरा चलावन मन्त्रम्।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं क्लीं असि आ उ सा धुलु २ कुलु २ सुलु २ अक्षयं में कुरु कुरु स्वाहा।

विधि —पच परमेष्ठी मत्रोय त्रिभुवन स्वामिनी विद्या। अनेन लाभो भवति जप १०८ वार नित्य करै। गुरु आम्नायेन सिद्धम्।

काक शकुन विचार

जिस समय अपने मकान की हद मे काक वोलै उसी समय अपने पैरों से अपनी परछाई नाप ले जितने पैर हो उसमे ७ का भाग दे। शेषफल का शकुन इस प्रकार है। पहले पगले अमृत फल लावै, द्वितीय पगले मित्र घर आवै, तीसरे पगले मित्तर हान, चौथे पगले श्री कष्ट जान। पाचवे पगले (जीये न कोय) सुख सम्पति लावै, छठवे पगले निशान व जावै, सातवे पगले जीया न कोय। काक वचन नही झूठा होय।

जीवन मरण विचार

आत्मदूत तथा रोगी त्रिगुण्यं नामकाक्षरं सप्त ह्रते समे मृत्यु विषमे जीवति ध्रुवं ॥

इति ॥ १ ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ह्रीं नमः कृष्ण वा ससे क्ष्मौं शत सहस्र लक्ष कोटि सिंह वाहने फ्रैं सहस्र वदने ह्लौ महाबले ह्लौ अपराजिते ह्लीं प्रत्यंगिरे हयौ पर सैन्य निर्णाशिनी ह्लीं पर कार्य कर्म विध्वंशनीह्यः पर मन्त्रोच्छेदिनि यः सर्व शत्रूच्चाटनीह्यौ सर्वभूत दमनि ठः सर्वदेवान् बंधय बंधय हुं फट् सर्व विघ्नान् छेदय २ यः सर्वानर्थान निकृत्य २ क्षः सर्व दुष्टान् भक्षय २ ह्रीं ज्वाला जिह्वे ह्लौ कराल वक्त्रे ह्यः पर यंत्रान् स्फोटय २ ह्लीं वज्र श्रृंखलान् त्रोटय २ असुर मुद्रां द्रावय २ रौद्र मूर्ते ॐ ह्लीं प्रत्यंगिरे मम् मनश्यिति तं मंत्रार्थ कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—अस्य स्मरणात् सर्वसिद्धि ।

मन्त्र :—ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्व सिद्धाय नमो रे वार्चनाय यक्ष सेनाधिपते इदं कार्य निवेदय तद्यथा कहि २ ठः २ ।

विधि :—एन मत्र वार १०८ क्षेत्रपाल्स्याग्रे पूजा पूर्वं जपेत् । ततो वार २१ गुग्गलेनाभि-मन्त्र्य आत्मान धूपयित्वा सुप्यते स्वपने शुभाशुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ विधुज्जिहे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धग २ धूमांधकारिकी देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मनश्चिततं मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि .—अमुं मत्र कर्पूर चन्दनादिभिः स्थालादौ लिखित्वा श्वेत पुष्पाक्षतादि मोक्ष पूर्वं सहस्र जाप्येन प्रथम साध्य पश्चात्नित्य स्मर्यमाणात्सिद्धि ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु २ यः भंज २ हर २ दह २ पच २ गृह्ण २ माचिरं कुरु रुद्रो आज्ञां पयति स्वाहा ॥

विधि —अनेन मत्रेण वार १०८ गुग्गुल, हीग (हिंगुल) सर्षप सर्पक चुलिका एकत्र मेलयित्वा-गर्भन्त्य धूपोदेय तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यंतरादि गृहीत पात्र सद्यो विमुच्यते स्वस्थ भवति ।

मन्त्र :—ॐ इटि मिटि भस्मं करि स्वाहा ।

विधि —अनेन वार १०८ जलमभिमन्त्र्य पाय्यते उदर व्यथोपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वे ग्रहाः सोम सूर्यागारक बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु, केतु, सहिता सानुग्रहा मे भवन्तु । ॐ ह्री अ सि आ उ सा स्वाहा ।

विधि —अस्या स्मृतायां प्रतिकूला अपि गृहा अनुकूला भवन्ति ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा ।

विधि .—कुमारी सूत्रेण कटक कृत्वा रक्त कण वीर पुष्प १०८ जाप्य दत्वा कटौबधयेत् रक्त प्रवाह नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्री श्री धनधान्य करि महाविद्ये अवतर २ मम गृहे धन धान्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि .—वार ५०० अक्षताभिमन्त्र्य त्रयाणके क्षिप्यते क्रयो वित्रयो लाभश्च भवति ।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर २ स्वाहा ।

विधि व फल :—१००८ नाप पूर्वं १०८ गुणिते स्वप्ने शुभाशुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ नमोर्हते भगवते बहुरूपिणी जम्भे मोहिनी स्तंभे स्तंभिनी कुक्कुट उरग वाहिनी मुकुट कुण्डल केयूर हारा भरण भूषिते चण्डोग्रपार्श्वनाथ, यक्षी लक्ष्मी पद्मावती त्रिनेत्रेपाशांकुश फलाभय वरद हस्ते मम अभीष्ट सिद्धि कुरु २ मम चिंतित कार्य कुरु २ ममोषध सिद्धि कुरु २ वषट् स्वाहा ।

विधि —इस मत्र का त्रियोग शुद्ध कर श्रद्धापूर्वक जपने से सर्वकार्य सिद्ध होते है । सर्व औपधिओ की सिद्धि होती हैं । इस मत्र की सिद्धि पुज्यपादाचार्य को थी, और इसके ही प्रभाव से देवी जी श्रीपद्मावती माताजी ने पुज्य पादाचार्य के पांव के तलवों मे दिव्य औपधियो का लेप कर दिया था, उन औपधियो के प्रभाव से विदेह क्षेत्र मे उन आचार्य का आकाश मार्ग से गमन हुआ था ।

पुत्रोत्पत्ति के लिये मंत्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असि आउसा नमः ।

विधि :—सूर्योदय से १० मिनिट पूर्व उत्तर दिशा मे, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उर्ध्व, अधो दिशाओं मे क्रमश २१–२१ बार जप करे । पुन १० माला फेरे, मध्यान्ह में १० माला, साय काल १० माला जपे । पुन स्वप्न आवेगा, तब निम्न प्रकार की दवाई देवे, मयूरपख की चाद २, शिवलिगी का बीज १ ग्राम, दोनो को बारीक खरल करे, ३ ग्राम गुड मे मिलाकर रजो धर्म की शुद्धि होने पर खिलावे, पहले या दूसरे माह में ही कार्य सिद्ध हो जायेगा ।

। अथ वृहद् शांतिमंत्रः प्रारभ्यते ।

इस शाति मंत्र को नियमपूर्वक पढने से अथवा शांति धारा करने से सर्व प्रकार के रोग शोक व्यंतरादिक बाधाये एवं सर्व कार्य सिद्ध करने वाला और सर्व उपद्रवों को शात करने वाला है अत इसे नित्य ही स्मरण करना चाहिये ।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐं अर्हं व मं हं सं तं प व २ म २ ह २ सं २ तं २ प २ झ २ झ्वी २ क्ष्वी २ द्रां २ द्री २ द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्री क्रो [+ देवदत्त नामधेयस्य] पाप खण्ड २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ शीघ्र २ अर्हं झ्वी क्ष्वी हं सः झं व व्हः पः हः क्षां क्षी क्षूं क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः क्षी ह्रा ह्री ह्रू ह्रें ह्रो ह्रौ द्रा द्री द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ ठ [× देवदत्त नामधेयस्य] श्रीरस्तु । सिद्धिरस्तु । बृद्धिरस्तु । तुष्टि-रस्तु । पुष्टि-रस्तु । शान्ति रस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु स्वाहा ।।

ॐ निखलभुवनभवनमगलीभूतजिनपतिसवनसमयसम्प्राप्ताः ।। वरममिनवकर्पूरकालागुरुकुकुमहरिचदनाद्यनेकसुगन्धिवन्धुरगन्ध द्रव्यसम्भारसम्बन्धवन्धुरमखिलदिगन्तरा- लव्याप्त—सौरभातिशयसमाकृष्टसमदसामजकपोलतलविगलित — मदमुदितमधुकर— निकरार्हत्परमेश्वर-पवित्रतरगात्र—स्पर्शनमात्रपवित्रिभूत — भगवदिदंगन्धोदकधारा वर्षमशेष हर्ष निबन्धन भवंतु [देवदत्त नामधेयस्य] शान्तिं करोतु । कान्तिमाविष्करोतु । कल्याण प्रादु करोतु । सौभाग्य सन्तनोतु । आरोग्यं मातनोतु । सम्पदं सम्पादयतु । विपद-

मवसादयतु । यशोविकासयतु । मन. प्रसादयतु । आयुर्द्राघयतु । श्रिय श्लाघयतु । शुद्धि विशुद्धयतु । बुद्धि विवर्द्धयतु । श्रेय पुष्णातु । प्रत्यवाय मुष्णातु । अनभिमत निवारयतु । मनोरथ परिपूरयतु । परमोत्सवकारणमिद । परमभगलमिद । परमपावनमिद । स्वस्त्यतु नः । स्वस्त्यस्तु व । झ्वी क्ष्वी ह् स असिआउसा स्वाहा ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय धातिकर्मविनाशनाय अष्टमहाप्रातिहार्य-सहिताय चतुस्त्रिंशदतिशयसमेताय । अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यसुखात्मकाय । अष्टादशदोषरहिताय । पञ्चमहाकल्याणसम्पूर्णाय । नवकेवललब्धिसमन्विताय दशविशेषणसयु-क्ताय । देवाधिदेवाय । धर्मचक्राधीश्वराय । धर्मोपदेशनकराय । चमरवैरोचनाच्युतेन्द्र प्रभृतीन्द्रशतेन मेरूगिरिशिखरशेखरीभूतपाण्डुकशिलातलेन गन्धोदकपरिपूरितानेक — विचित्रमणिमय — मगलकलशैर-भिपिक्त—मिदानीमहत्त्रैलोक्येश्वरमर्हत्परमेष्ठिनमभिषेचयामि ह् भ्रु झ्वी क्ष्वी ह् स द्रा द्री ऐं अर्हं ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री द्रावय २ स्वाहा ॥

(यहा जिस २ भगवान के नाम के साथ
जो जो द्रव्य का नाम है उन्हे चढाता जावे)

ॐ ह्री शीतोदकप्रदानेन शीतलो भगवान् प्रसीदतु व । शीता आप. पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु व ॥१॥ गन्धोदकप्रदानेन अभिनन्दनो भगवान् प्रसीदतु । गन्धाः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु व ॥२॥ अक्षतोदक प्रदानेन अनतो भगवान् प्रसीदतु अक्षत. पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु व. ॥३॥ पुष्पोदकप्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान् प्रसीदतु । पुष्पाणि पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु व ॥४॥ नैवेद्यप्रदानेन नेमिनाथो भगवान् प्रसीदतु । पीयूषपिण्ड पान्तु । शिवमाङ्गध्यन्तु श्रीमदस्तु व ॥५॥ दीपप्रदानेन चन्द्रप्रभो भगवान् प्रसीदतु । कर्पूरमाणिक्यदीपा पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु व ॥६॥ धूपप्रदानेन धर्मनाथो भगवान् प्रसीदतु । गुग्गुलादिदशाङ्गधूपा पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु व ॥७॥ फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान प्रसीदतु । क्रमुक – नारिंग—प्रभृतिफलानि पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्नु व ॥८॥ अर्हन्तः पान्तु व । सद्धर्मश्रीवलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु वः ॥ सिद्धा पान्तु व । हृदयनिर्वाण प्रयच्छन्तु व ॥ आचार्या पान्तु व । शीतलसौगन्ध्यमस्तु व. ॥ उपाध्याया पान्तु व. । सौमनस्य चास्तु व ॥ सर्वसाधव पान्तु व । अन्नदानतपोवीर्य विज्ञान—मस्तु व ॥ (यहा २४ वार पुष्प चढावे)

ॐ वृषभस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् अष्टविधकर्म विनाशन चास्तु व ॥१॥ श्रीमद्-जितस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादादजेयशक्तिर्भवतु व. ॥२॥ शम्भवस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादा-

दनेकगुणगणाश्चास्तु व ॥३॥ अभिनन्दनस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादादभिमतफलं प्रयच्छन्तु वः ॥४॥ सुमतिस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादादमृतं पवित्र प्रयच्छन्तु व. ॥५॥ पद्मप्रभस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादाद्दयां प्रयच्छन्तु व. ॥६॥ सुपार्श्वे स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु व. ॥७॥ श्रीचंद्रप्रभस्वामिन. श्रीपादपद्म प्रसादाश्चन्द्रार्कतेजोऽस्तु वः ॥८॥ पुष्पदंतस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्प सायकातिशयोऽस्तु वः ॥९॥ शीतलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादशुभ-कर्ममलप्रक्षालनमस्तु वः ॥१०॥ श्रेयासजिनस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् श्रेयस्करोऽस्तु वः ॥११॥ वासुपूज्यस्वामिन श्रीपादपद्मसादाद्रत्नत्रयावासकरोऽस्तु व. ॥१२॥ विमलस्वामिन. श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मवृद्धिर्वै माङ्गल्यं चास्तु व ॥१३॥ अनन्तनाथस्वामिन श्रीपादपद्म-प्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु वः ॥ १४ ॥ धर्मनाथस्वामिन. श्रीपादपद्म-प्रसादात् शर्मप्रचयोऽस्तु व ॥१५॥ श्रीमदर्हत्परमेश्वरसर्वज्ञपरमेष्ठिशान्तिनाथ स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् शान्तिकरोऽस्तु वः ॥१६॥ कुन्थुनाथस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात्त त्राभि-वृद्धिकरोऽस्तु व ॥१७॥ अरजिन स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात्परमकल्याणपरम्पराऽस्तुवः ॥१८॥ मल्लिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्छल्यविमोचनंकरोऽस्तुवः ॥१९॥ मुनिसुव्रत-स्वामिनः श्रीपादद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनं चास्तु वः ॥२०॥ नमिनाथस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादा-त्सम्यग्ज्ञान चास्तु व ॥२१॥ अरिष्टनेमिस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् अक्षयं चारित्रं ददातु व ॥२२॥ श्रीमत्पार्श्व भट्टारकस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात्सर्वविघ्नविनाशनमस्तु वः ॥२३॥ श्रीवर्धमानस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यदर्शनाद्यष्टगुणविशिष्ट चास्तु वः ॥२४॥

श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ परमेष्ठी-परम-पवित्र-शांतिभट्टारक स्वामिन श्रीपाद्पद्म-प्रसादात्सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु। वृषभादयो महति महावीर वर्धमान पर्यन्त परम तीर्थंकरदेवाश्चतुर्विशतिर्हन्तो भगवन्त सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सम्भिन्नतमस्का वीतरागद्वेष-मोहास्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरणविप्रमुक्ता सकल भव्य-जनसमूहकमलवनसम्बोधनकराः। देवाधिदेवा। अनेकगुणगणशतसहस्रालङ्कृतदिव्यदेहधरा। पञ्चमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिंशदतिशयविशेषसम्प्राप्ताः इन्द्रचक्रधरबलदेववासुदेव-प्रभृतिदिव्यसमानभव्यवर पुण्डरीकपरमपुरुषमुकुटतटनिबिडनिबद्धमणिगणकर निकरवारिधारा-भिषिक्तचारुचरणकमलयुगलाः। स्वशिष्य पर शिष्यवर्गा प्रसीदन्तु व ॥ परममाङ्गल्यनामधेया। सद्धर्मकार्येष्विहामुत्र च सिद्धा. सिद्धि प्रयच्छन्तु व ॥

ॐ नृपातिशतसहस्रालङ् कृतसार्वभौमराजाधिराज परमेश्वरबलदेववासुदेवमण्डलीक महामण्डलीकमहामात्यसेनानाथराजश्रेष्ठिपुरोहिताधीशकराञ्जलिनमितकर कुड्मलमुकुलालङ्

कृतपादपद्मा । कुलिशनालरजत मृणालमन्दारकर्णिकारातिकुलगिरिशिखरशेखरगगन मन्दाकि-नीमहाह्लदनदनद।शतसहस्रदलकमलवासिन्यादि सर्वाभरणभूपिताङ्गसकलसुन्दरीवृन्दवन्दित-चारुचरणकमलयुगला ।। आमौषधय । क्ष्वेलौषधयः जल्लौषधाय विप्रुपौषधय । सर्वौषधयश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। मतिस्मृति सज्ञाचिन्ताभिनिवोधज्ञानिनश्च व. प्रीयन्ताम् २ ।।

ॐ ह्री अर्हं णमो जिणाण ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौ झ्रौ स्वाहा ॐ ह्री अर्हं णमो ओहि जिणाण सिरो रोग विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो परमोहि जिणाण नासिका रोग विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं अक्षिरोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो अणतोहि जिणाण कर्ण रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो कुट्ठ बुद्धीणममात्मनि विवेकज्ञान कुरू २ शुल उदर गड गुमड विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो वीज बुद्धीण मम सर्व ज्ञान कुरू २ श्वास हेडकी रोग विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो पादाणु सारीण. परस्पर विरोध विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो सभिन्न सौदराण श्वास कास रोग विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमोसय बुद्धिण कवित्व पाडित्व च कुरू२ ॐ ह्री अर्हं णमो पत्तेय बुद्धिण प्रतिवादी विद्या विनाशन कुरू२ ॐ ह्री अर्हं णमो बोहिय बुद्धिण अन्य गृहीत श्रुत ज्ञान कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो ऋजुमदीण वहु श्रुत ज्ञान कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो विउल मदीण सर्व शाति कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो दश पुव्वीण सर्व वेदिनो भवतु ॐ ह्री अर्हं णमो चउ दस पुव्वीण स्व समय परसमय वेदिनो भवतु ॐ ह्री अर्हं णमो अट्ठाङ्ग महाणिमित कुसलाण जीवित मरणादि ज्ञान कुरू २ ॐ ह्री णमो वियण यद्धि पत्ताण कामित वस्तु प्राप्ति र्भवतु ॐ ह्री अर्हं णमो विज्जा हराण उपदेश प्रदेश मात्र ज्ञान कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो चारणाणनष्ट पदार्थ चिंता ज्ञान कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमोपण्ण समणाण आयुष्यावसान ज्ञान कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो आगासगामीणं अतरिक्ष गमन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो आमीविसाण विद्वेप प्रति हत भवतु ॐ ह्री अर्हं णमो दिट्ठि विसाण स्थावर जंगम कृत विघ्न विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो उग्ग तवाण वचस्तम्भण कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो दित्त तवाण सेना स्तम्भन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो तत्तवाण अग्नि स्तम्भन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो महा तवाण जलस्तम्भन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो घोर तवाण विपरोगादि विनाशन कुरु २ ॐ ह्री अर्हं णमो घोर गुणाण दुष्ट मृगादि भय विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो घोर गुण पर क्कमाण लता गर्भादि भय विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो घोर गुण वम्भ चारीण भूतप्रेता दिभय विनाशनं भवतु ॐ ह्री अर्हं णमो विपो सहि पत्ताण जन्मान्तर देव वैर विनाशन कुरु २ ॐ ह्री अर्हं णमो खिल्लो सहिपत्ताण सर्वाप मृत्यु विनाशन कुरू २

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताण अपस्मार रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणंगजमारि विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताण मनुष्यऽमरोप सर्ग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो मण वल्लीण गो अश्व मारि विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो वच वल्लीण अजमारि विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो काय वल्लोण महिष गोमारि विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो खीर स्रवीण सर्प भय विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो सप्पि सवीण युद्ध भय विध्वंसक कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो अक्खीण महाण साण कुष्ट गड मालादि विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो महुर सवीणं मम् सर्व सोख्यं कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो अमीय सवीण मम् सर्व राज भय विनाशन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो वड्ढमाणाण बधन विमोचनं कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो वढ्ढ माणाण अस्त्र शस्त्रादि शक्ति निरोधन कुरू २ ॐ ह्री अर्हं णमो सव्व साहूण सिद्धि कुरू २।।

कोष्ठबुद्धिबीजबुद्धिपदानुसारिबुद्धिसम्भिन्नश्रोत्रश्रवणाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। जलचारणजङ्घाचारणतन्तुचारणभूमिचारणश्रेणिचारणचतुरङ्गुलचारणआकाशचारणाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। मनोबलिवचोबलिकायबलिनश्च व. प्रीयन्ताम् २ ।। उग्रतपोदीप्ततपोमहातपोघोरतपोऽनुतपोमहोग्रतपश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। मतिश्रुतावधिमन पर्यय केवलज्ञानिनश्च व प्रीयन्ताम् ।। यमवरुणकुबेरवासवाश्च व प्रीयन्ताम् ।। अनन्तवासुकीतक्षककर्कोटकपद्ममहापद्मशखपालकुलिशजयविजयादिमहोरगाश्च व. प्रीयन्ताम् ।। इद्राग्नियमनैऋर्तवरुणवायुकुबेरईशानधरणेन्द्रसोमाश्वेतिदशदिक्पालकाश्च व. प्रीयन्ताम् २ ।। सुरसुरोरगेन्द्रब्रम्मरचारणंसिद्धविद्याधरकिन्नर किम्पुरुषगरुडगन्धर्वयक्ष-राक्षसभूतपिशाचाश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। बुधशुक्रबृहस्पत्यर्केन्दुशनैश्वराङ्गारकराहुकेतुतारकादिमहाज्योतिष्कदेवाश्च व. प्रीयन्ताम् २ ।। चमरवैरोचनधरणानन्दभूतानन्द वेणुदेव वेणुधारिपूर्णवशिष्ठ जलकान्तजल—प्रभुघोषमहाघोषहरिषेणहरिकान्तअमितगतिअ-मितवाहनवेलाञ्जनप्रभञ्जन अग्निशिखिअग्निवाहनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। गीतरति गीतकान्तसत्पुरुषमहापुरुषसुरूपप्रतिघोषपूर्णभद्रमणिभद्र पुष्प-चुलमहाचूलभीमममहाभीमकालमहाकालाश्चेति षोडशव्यन्तरेन्द्राश्व व प्रीयन्ताम् २ ।। नाभिराजजितशत्रुदृढराजस्वयवरमेघराजधरणराजसुप्रतिष्ठमहासेनसुग्रीवदृढरथविष्णुराजवसु—पूज्यकृतवर्मसिहसेनभानुराजविश्वसेनसुदर्शनकुम्भराजसुमित्राविजयमहाराजसमुद्रविजयविश्वसेन सिद्धार्थाश्चेतिजिनजनकाश्च च प्रीयन्ताम् २ ।। मरूदेवीविजयासुषेणासिद्धार्थासुमङ्गला-सुसीमापृथ्वीलक्ष्मणाजयरामासुनन्दाविपुलानन्दाजयावतीआर्यश्यामालक्ष्मीमतिसुप्रभाऐरादेवी—श्रीकातामित्रसेनाप्रभावती सोमावर्पिलाशिवदेवीब्राह्मी प्रियकारिण्यश्चेति जिनमातृकाश्च

व. प्रीयन्ताम् २ ।। गोमुखमहायक्षत्रिमुखयक्षेश्वरतुम्बरुकुसुमवरनन्दिविजयअजितब्रह्म ईश्वरकुमारषण्मुख पातालकिन्नरकिम्पुरुषगरुडगन्धर्वमहेन्द्रकुबेरवरुणविद्युत्प्रभसर्वाण्हधरणेन्द्रमातङ्गनामश्चेतिचतुर्विशतियक्षाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। चक्रेश्वरीरोहिणीप्रज्ञप्तिवज्रशृंङ्कलापुरुषदत्तामनोवेगाकालीज्वालामालिनीमहाकालीमानवीगौरीगान्धारीवैरोटीअनन्तमतिमानसी—महामानसीजयाविजयाग्रपराजितावहुरूपिणीचामुण्डीकुष्माण्डीपद्मावतीसिद्धायिन्यश्चेति चतु—र्विशतिजिनशासनदेवताश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। कुलगिरिशिखरशेखरीभूतमहाह्रदादिसरोवरमध्यस्थितसहस्रदलकमलवासिन्योमानिन्य सकलसुन्दरीवृन्द वन्दितपादकमलाश्च देव्यो व प्रीयन्ताम् २ ।। यक्षवैश्वनरराक्षसनवृतपन्नगअसुर सुकुमारपितृविश्वमालिनी—चमरवैरोचनमहाविद्यमारविश्वेश्वरपिण्डासनाश्चेति पञ्चदशतिथिदेवताश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। हिट्ठिमहिट्ठिम हिट्ठिममज्भम हिट्ठिमोपरिम मज्भमहिट्ठिम मज्भम मज्भम मज्भमोपरिम उपरिमहिट्ठिम उपरिममज्झम उपरिमोपरिमाश्चेति नवग्रैवेयवासिनोऽहमिन्द्रदेवाश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। अर्च्चअर्च्चमालिनोवैरोचनसोमसोमरूपाङ्का स्फटिकादित्यादि नवानुदिशवासिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। विजयवैजयन्तजयन्तअपराजितसर्वार्थसिद्धिनामधेयपञ्चानुत्तरविमानविकल्पानेकविविधगुणसम्पूर्णाष्टगुणसयुक्ताः सकलसिद्धसमूहाश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। सर्वकालमपि [+ देवदत्त नामधेयस्य] सम्पत्तिरस्तु । सिद्धिरस्तु। वृद्धिरस्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । शान्तिरस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु । सम्पदस्तु । मनःसमाधिरस्तु । श्रेयोऽभिवृद्धिरस्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । पुण्य वर्धताम् । धर्मो वर्धताम् । आयुर्वर्धताम् । श्रीर्वर्धताम् । कुल गोत्र चाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्र चास्तु व । ततो भूयो भूयःश्रेयसे ।। ॐ ह्री क्ष्वी क्ष्वी ह स स्वस्त्यस्तु वः । स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा । ॐ पुण्याह २ प्रीयन्ताम् २ । भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञ सर्वदर्शिनः सकलवीर्या सकलसुखास्त्रिलोकप्रद्योत-नकरा जातिजरामरण विप्रमुक्ता सर्वविदश्च ॐ श्रीह्री-धृतिकीर्तिबुद्धि लक्ष्म्यश्च व प्रीयन्ताम् २ ।। ॐ वृष-भादिवर्धमानान्ता शान्तिकरा सकलकर्मरिपुकान्तार-दुर्गविषमेषु रक्षन्तु मे जिनेन्द्रा. । आदित्यसोमाङ्गारक-बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर राहु केतुनामनवग्रहाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। तिथिकरण नक्षत्रवार मुहूर्तलग्नदेवाश्च इहान्यत्र ग्रामनगराधिदेवताश्च ते सर्वे गुरुभक्ता अक्षीणकोशकोष्ठगारा भवेयुर्दानतपोवीर्यधर्मानुष्ठानादि नित्यमेवास्तु । मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्र गुरुसुहृत्स्वजनसम्बधि बन्धुवर्गसहितस्यास्य यजमानस्य [+देवदत्त नाम धेयस्य] धनधान्यैश्वर्यद्युतिवलयश कीर्तिबुद्धिवर्धन भवतु सामोद-प्रमोदो भवतु । शान्तिर्भवतु कान्तिर्भवतु । तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । सिद्धिर्भवतु । वृद्धिर्भवतु । अविघ्नमस्तु । आरोग्यमस्तु । आयुष्यमस्तु । शुभकर्मास्तु । कर्मसिद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु

इष्टसपदस्तु। अरिष्टनिरसनमस्तु। धनधान्यसमृद्धिरस्तु। काममाङ्गल्योत्सवा सन्तु। शाम्यन्तु पापानि, पुण्य वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। श्रीर्वर्धताम्। आयुर्वर्धताम्। कुलं गोत्र चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु व.। स्वस्ति भद्रं चास्तु न। क्ष्वी क्ष्वी हं सः स्वस्त्यस्तु ते स्वस्त्यस्तु मेस्वाहा॥

ॐ नमो ऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रयालङ्कृताय दिव्य-तेजोमूर्तये नम प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यहिताय। अनन्तसंसारचक्रपरि-मर्दनाय। अनन्तज्ञानाय। अनन्तदर्शनाय। अनन्तवीर्याय। अनन्तसुखाय। सिद्धाय बुद्धाय। त्रैलोक्यवशकराय। सत्यज्ञानाय। सत्यब्रह्मणे। धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय। उपसर्गविनाशनाय। घातिकर्मक्षयकराय। अजराय। अमराय। अपवाय। [देव-दत्त नामधेयस्य] मृत्युं छिंदि २ भिंदि २॥ हन्तुकाम छिंदि २ भिंदि २। रतिकाम छिंदि २ भिंदि २॥ बलिकाम छिंदि २ भिंदि २॥ क्रोध छिंदि २ भिंदि २॥ पापं छिंदि २ भिंदि २॥ वैरं छिंदि २ भिंदि २॥ वायुधारण छिंदि २ भिंदि २॥ अग्निभय छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व शत्रुभय छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वोपसर्ग छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व विघ्न छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व भय छिंदि २ भिंदि॥ सर्व राज भयं छिंदि २ भिंदि॥ सर्व चोर भय छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व दुष्ट भयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व सर्प भय छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व वृश्चिक भय छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व ग्रहभयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व दोष छिंदि २ भिंदि २। सर्व व्याधि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व क्षाम डामरं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व परमंत्रं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वात्मघात छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व परघात छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व कुक्षि रोग छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व शूलरोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वाक्षिरोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व शिरोरोग छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व कुष्ट रोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व ज्वररोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व नरमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व गजमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वाश्वमारि छिंदि २ भिद २॥ सर्व गोमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व महिषमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वाजमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व सस्यमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व धान्यमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व वृक्षमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व गुल्ममारि छिंदि २ भिंदि। सर्व लतामारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व-पत्रमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व पुष्पमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व फलमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व राष्ट्रमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व देशमारि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व विषमारिं छिंदि २ भिंदि २। सर्व क्रूररोगवेतालशाकिनीडाकिनीभय छिंदि २ भिंदि २

सर्व वेदनीय छिंदि २ भिंदि २ ।। सर्व मोहनीय छिंदि २ भिंदि २ ।। सर्वापस्मार छिंदि २ भिंदि २ ।। सर्व दुर्भग छिंदि २ भिंदि २ ।।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बलशौर्य वीर्य वश कुरु २ । सर्व जनानन्द कुरु २ । सर्व जीवानन्द कुरु । सर्व राजानन्द कुरु २ । सर्व भव्यानन्दं कुरु २ । सर्व गोकुलानन्द कुरु २ । सर्व ग्राम नगर खेट खर्वट मटम्ब पत्तन द्रोणमुख जनानन्द कुरु २ । सर्व लोकं सर्व देश सर्व सत्त्व वश कुरु २ । सर्वानन्द कुरु २ । हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ शीघ्र २ । सर्व वश मानय हू फट् स्वाहा ।

यत्सुख त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसन वर्जित । अभय क्षेम मारोग्य स्वस्तिरस्तु विधीयते ।। श्री शातिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव दृष्टिसुपुष्टिररस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभि वृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधन धान्यम् सदास्तु ।

।। इति ।।

इस वृहत् शान्ति मत्र का उच्चारण करते हुए मन्त्र साधक जिनेन्द्र प्रभु पर जल धारा अवश्य करे । तव मन्त्र साधन करने मे किसी प्रकार का भय उत्पन्न नही होगा ।

पद्मावती आह्वाननमंत्र:

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत् पार्श्वचन्द्राय त्रैलोक्य विजयालकृताय, सुवर्ण वर्ण धरणेन्द्र नमस्कृताय नीलवर्णाय, कर्मकान्तारोन्मूलन मत्त-मत्तङ्गजाय, संसारोतीर्णाय, प्राप्त परमानन्दाय, तत्पादारविन्द सेवा हे वाक् चचरीकोप मे मानव देव-दानव त्रिनम्र मौलि मुकुट मण्डली मयूख मजरी रजिताघ्रीपीठे सेवक जन वाच्छितार्थ पूरणाधरीकृतकचिन्तामणि काम धेनु कल्प लते विकएज्जपाकुसुमोदितार्क पद्मरागारुण देह प्रभाभासुरीकृत समस्ताकाशादिक चत्रवाल लीला निर्दलित रौद्र दारिद्रोपद्रवे शरणागत त्राणकारिणी, दैत्यौपसर्ग निवारिणी भूत-प्रेत-पिशाच-यक्ष राक्षसाकाश जल, स्थल देवता दोष निर्णाशिनी मातृ मुग्दल चेटकोग्र ग्रहण शाकिनी योगिनी वृन्द वेताल रेवती पीडा प्रमर्दित परविद्या मन्त्र यन्त्रोच्छेदिनी पर सैन्यविध्व सिनी स्थावर जगम विष सहारिणीसिंह शार्दूलव्याघ्रोरग प्रमुख दु टसत्व भयापहारिणि कास-श्वास, ज्वर भगन्दर श्लेष्मवातपित्त कडूकामल क्षयो दुम्बर प्रसूति प्रमुख रोग विध्व सिनी चोरानल जल राजग्रहविच्छेदिनी एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक भौतिक वातिक सान्निपातिक पैत्तिक ज्वरोच्चाटिनी त्रिभुवन जन मोहिनी भगवती

श्री पद्मावती महादेवी एहि एहि आगच्छ आगच्छ प्रसाद कुरु कुरु (वषट्) सर्व कर्म करी (वषट्) ।

इस आह्वानन् मन्त्र का स्मरण जब करे, जहाँ देवीजी को आकर्षण करना हो।

पद्मावती माला मन्त्र लघु

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय धरणोरगेन्द्र नमस्कृताय सर्वोपद्रव विनाशनाय, परविद्याच्छेदनाय, परमन्त्र प्रणाशनाय सर्वदोष निर्दलनाय आकाशान् बधय-२ पातालान् बंधय-२ देवान् वधय-२ चाण्डाल ग्रहान् बधय-२ भगवन् क्षेत्र पालग्राम बधय-२ डाकिनी बंधय-२ लाकिनी बंधय-२ जाकिनी बधय-२ ग्रहीत मुक्तकाम बधय-२ दिव्य योगिनी बधय-२ वज्र योगिनी बधय-२ खेचरी बधय-२ भूचरीम् बधय-२ नागान् बधय-२ वर्ण राक्षसान् बधय-२ जोटिगान् बधय-२ मुग्दल ग्रहान् बधय-२ व्यन्तर ग्रहान् बंधय-२ आकाश देवी बधय-२ जल देवी बधय-२ स्थल देवी बधय-२ गोत्र देवी बंधय-२ एकाहिक द्वयाहिक-त्र्याहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर रात्रि ज्वर सर्व ज्वर मध्यान्ह ज्वर वेला ज्वर वातिक-पैतिक श्लेष्मिक-सान्निपातिक-सर्व दोष देव कृत-मानव कृत यंत्रकृत कार्मण उच्छेदय-२ विस्फोटय-२ सर्व दोषान् सर्व भूतान् हन-हन दह-दह पच-पच भस्मी कुरु-२ स्वाहा धे धे।

ॐ ह्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ठ्म्ल्व्र्यूं क्ष्मा क्ष्मी क्ष्मूं क्ष्मौ क्ष्यं क्ष्मः कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन्नतुल बलवीर्य पराक्रम मम शाकिन्यादि भयोपशमन कुरु २ आत्म-विद्या रक्ष २ पर विद्या छिंदि २ भिंदि २ हू फट् स्वाहा।

विधि :—इस मत्र का साढे बारह हजार विधि से जप करे, दसांस होम करे तो सर्व प्रकार के उपद्रव शात होते है।

पद्मावती माला मंत्र: (वृहत्)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र सहिताय पद्मावती सहिताय सर्व लोक हृदयानन्द कारिणि भृगी देवि सर्व सिद्धि विद्या विधायिनि कालिका सर्व विद्या मन्त्र यन्त्र मुद्रा स्फेटिनिकरालि सर्व पर द्रव्ययोग चूर्ण मथिनि सर्वविष प्रमर्दिनि देवि। अजितायाः स्वकृत विद्या मंत्र तत्र योग चूर्ण रक्षिणि जृम्भे पर सैन्य मर्दिनि नोमोदानन्द दायिनि सर्व रोग नाशिनि सकल त्रिभुवानन्द कारिणि भृंगी देवि सर्वसिद्ध विद्या विधायिनि महामोहिनी त्रैलोक्य संहार कारिणि

चामुण्डि ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्व ग्रह निवारिणि फट् २ कम्प २ शीघ्र चालय २ बाहुं चालय २ गात्र चालय २ पादं चालय २ सर्वाङ्ग चालय २ लोलय २ धुनु २ कम्प २ कम्पय २ सर्व दुष्टान विनाशय २ सर्व रोगान् विनाशय २ जये, विजये, अजिते, अपराजिते, जम्भे मोहे स्तम्भे,स्तम्भिनि,अजिते ह्री २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ चल २ चालय २ आकर्षय २ आकम्प २ विकम्पय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्षा क्षी क्षू क्षौ क्षः हू फट् फट् फट् निग्रह ताडय २ वम्ल्व्र्यूं स्रा स्री ह्रू क्रौं क्षं क्षौ क्षः क्ष ह २ स २ धः २ स २ भ्म्ल्व्र्यूं हू २ धर २ कर २ हू फट् फट् फट् ॐ शख मुद्रया धर २ य्म्ल्व्र्यूं पुर हू फट् कठोर मुद्रया मारय २ ग्राहय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं हर हर स्वस्तिक मुद्राताडय २। र्म्ल्व्र्यूं पर २ प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धग २ धूमान्धकारिणि रा रा प्रा प्रा क्ली ह २ व २ आ नद्यावर्त मुद्रया त्रासय २। क्ष्म्ल्व्र्यू शख चक्र मुद्रया छिदि २ भिदि २ म्म्ल्व्र्यूं ग त्रिशूल मुद्रया छेदय२ भेदय २ घ्म्ल्व्र्यूं ध चन्द्र मुद्रया नाशय २ व्म्ल्व्र्यूं मुशल मुद्रया ताडय २ पर विद्या छेदय २ पर मन्त्र भेदय २ ध्म्ल्व्र्यूं धम २ वन्धय २ भेदय २ हलमुद्रया प २ वः २ य कुरु २ व्म्ल्व्र्यूं ब्रा ब्री ब्रू ब्रौब्र: समूद्रे मज्जय २ घ्म्ल्व्र्यूं छ्रा छ्री छ्रौ छ्र: अत्राणि छेदय २ पर सैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षा क्ष क्षः क्ष हूं ३ फट् फट् पर सैन्य विध्वसय २ मारय २ दारय २ विदारय २ गति स्तम्भय २ भ्म्ल्व्र्यूं भ्रा भ्री भ्रूं भ्रौ भ्र श्रवय २ श्रावय २। ट्म्ल्व्र्यूं य प्रेषय २ पं छेदय २ द्वेपय २ विद्वेपय २ स्म्ल्व्र्यूं स्रा स्री स्रू स्रौ स्रः श्रावय २। मम रक्षा रक्ष २ पर मन्त्र क्षोभय २ छेद २ छेदय २ भेद २ भेदय २ सर्व यन्त्र स्फोटय २ म म म्म्ल्व्र्यूं म्रा म्री म्रू म्रौ म्रः जृम्भय २ स्तम्भय २ दु.खय २ दु.खाय २ ख्म्ल्व्र्यूं ख्रा ख्री ख्रू ख्रौ ख्र हाः ग्रीवा भजय २ मोहय २ त्म्ल्व्र्यूं त्रा त्री त्रूं त्रौ त्रः त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ सर्वाङ्ग स्तम्भय २ चल २ चालय २ भ्रम २ भ्रामय २ धूनय २ कम्पय २ आकम्पय २ भ्म्ल्व्र्यूं स्तम्भय २ गमन स्तम्भय २ सर्वभूत प्रमर्दय २ सर्व दिशा वधय २ सर्व विघ्नान् छेदय 2 निकृन्तय २ सर्व दुष्टान् निग्राहय २ सर्व यत्राणि स्फोटय २ सर्व शृंखलान् त्रोटय २ मोटय २ सर्व दुष्टान् आकर्षय ह्म्ल्व्र्यूं ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्रः शान्ति कुरु २ तुष्टि कुरु २ पुष्टि कुरु २ स्वस्ति कुरु २ ॐ आ क्रौ ह्री ह्रौ ह्र पद्मावति आगच्छ २ सर्व भयात् माम रक्ष २ सर्व सिद्धि कुरु २ सर्व रोग नाशय २। किन्नर कि पुरुष गरूड महोरग गधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच वेताल रेवती दुर्गा चण्डी कूष्माण्डिनी डाकिनी वन्ध मारय २ सर्व शाकिनी मर्दय २ सर्व योगिनी गण चूर्णय २ नृत्य २ गाय २ कल २ किलि २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ मुलु २ कुलु २ कुरु २ अस्माक वरदे पद्मावती हन २ दह २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिदि २ ह्री २ क्ली प्ली प्लु प्लुं ह्रां ह्री श्रू ह्रू भ्रू स्रू स्र ह्रू ग्री प्री श्रा श्री त्रा त्री ह्रा ह्री प्रा प्री प्रू प्र पद्मावती धरेणन्द्र माज्ञापयति स्वाहा।

यह पद्मावती माला मन्त्र पढने मात्र से सिद्ध होता है नित्य ही दिन मेत्रिकाल पढे। सर्व कार्य की सिद्धि होती है, भूत प्रेतादि व्याधिया नष्ट होती हैं।

'श्री ज्वालामालिनी देवी माला मन्त्रः'

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय शशाक शख गोक्षीर हार नीहार विमल धवल गात्राय घाति कर्म निर्मूलोच्छेदन करायजाति जरा मरण शोक विनाशन कराय ससार कान्तारोन्मूलन कराय अचिन्त्य बल पराक्रमाय अप्रतिहत शासनाय अप्रतिहत चक्राय त्रैलोक्य वशंकराय सर्व सत्व हितकराय भव्यलोक वशकराय सुरा सुरोरगेन्द्र मणिगण खचित मुकुट कोटि तट घटित पादपीठाय त्रैलोक्यमहिताय अष्टादश दोष रहिताय धर्म चक्राधीश्वराय सर्व विद्या परमेश्वराय कुविद्या अध्नाय चतुस्त्रिंशदतिशय सहिताय द्वादशगण परिवेष्टिताय शुक्लध्यान पवित्राय अनन्त ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय अनन्तवीर्याय अनन्त सुखाय सर्वज्ञाय सिद्धाय बुद्धाय शिवाय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे स्वयभुवे परमात्मने अच्युताय दिव्यमूर्ति प्रभामण्डलमडिताय कण्ठताल्वोष्ठ पुटव्यापार रहित तत्तदभीष्ट वस्तु कथक निशेषभाषा प्रतिपालकाय देवेन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादि शतेन्द्र वदित पादार विदाय पच कल्याणाष्ट महा प्रातिहार्यादि विभवालकृताय वज्रवृषभनाराच सहनन चरम दिव्य देहाय देवाधिदेवाय परमेश्वराय तत्पादपंकजाश्रय निवेशिनि देविशासन देवते त्रिभुवन जन सक्षोभिणी त्रैलोक्य सहार कारिणि स्थावर जंगम कृत्रिम विषम विषसहार कारिणि सर्वाभिचार कर्मापहारिणि पर विद्या छेदिनि पर मत्र प्रणाशिनि अष्टमहानाग कुलोच्चाटिनि कालदष्ट्र मृतकोत्थापिनि सर्व रोगापनोदिनी ब्रह्मा विष्णु रूद्रेंद चन्द्रादित्य ग्रह नक्षत्र तारा लोकोत्पाद ... ...भय पीडा प्रमर्दिनी त्रैलोक्य महिते भव्यलोकहितंकरि विश्वलोक वशकरि महाभैरवि भैरव रूपधारिणि भीमे भीम रूपधारिणि महारौद्रे रूपधारिणी सिद्धे सिद्ध रूपधारिणि प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरूड गधर्व किन्नर किं पुरुष दैत्योरगेन्द्रामर पूजिते ज्वाला माला कराले तत्तदिगन्तराले महामहिष वाहिनि त्रिशूल चक्र झष पाश शर शरासन फलवरद प्रदान विराजमान षोढशार्द्ध भुजे खेटक कृपाण हस्ते त्रैलोक्याकृत्रिम चैत्यालय निवासिनि सर्व सत्वानुकम्पनि रत्नत्रय महानिधि साँख्य सौगत चार्वाक मीमासक दिगम्बरादि पूजिते विजयवर प्रदायिनि भव्यजन सरक्षिणि दुष्ट जन प्रर्मदिनि कमल श्री गृहीत गर्वावलिप्त ब्रह्म राक्षस ग्रहापहारिणि शिवकोटि महाराज प्रतिष्ठित भीम लिगोत्पाटन पटु प्रतापिनि समस्त ग्रहाकर्षिणि (ग्रहानुवन्धिनि ग्रहानुच्छेदिनि ग्रह काला मुखि) नगर निवासिनि पर्वत वासिनि स्वयभूरमण वासिनि वज्र वेदिकाधिष्ठित व्यतरावास वासिनि मणिमय सूक्ष्म घटनाद किचिद्रणित नूपुर युक्त पादार विन्दे वज्र वैडूर्य मुक्ताफल

हरिन्मणि मयूरवमाला मण्डित हेम किकिणि झणत्कार विराजित कनक ऋजुसूत्र भूपित नितम्बिनि वारद नीरद निर्मलायमान सूक्ष्म दुकूल परीत दिव्य तनुमध्ये सध्यापरागारूण मेघ समान कौमुम्भ वस्त्र धारिणि वालार्क रूक् सन्निभायमान तपनीय वसनाच्छादिते इन्द्र चन्द्रकादि मौक्तिकाहार विराजित स्तन मण्डले तारा समूह परित्तोत्तमागे यमराज लुलायमान महिपासुर मर्दन दक्षभूत महामहिप वाहिनि ताराधर तारे नीहार पटीर पय. पूर कर्पूर शुभ्रायमान विमल धवल गात्रे भयकाल रूद्र रौद्रावलोकित भाल नेत्रानल विस्फुलिंग समूह सन्निभ ज्वालावेष्टित दिव्य देहिनि कुल शैल निर्भेदिनि कृत सहस्र धारायुक्त महा प्रभा मण्डल मण्डित कृपाणि भ्राज दोर्दण्डे देवि ज्वालामालिनि अत्र एहि २ र पिण्ड रूपे एहि २ नव तत्त्व देहिनि महामहित मेखला कलित प्रतापे एहि २ ससार प्रमर्दिनि एहि २ महामहिषवाहने एहि २ कटक कटि सूत्र कुण्डलाभरण भूषिते एहि २ घनस्तनि किकिणि नूपुरनादे एहि २ महामहित मेखला सूत्रे एहि २ गरूड गंधर्व देवासुर समिति पूजित पादपकजे एहि २ भव्यजन सरक्षिणि एहि २ महादुष्ट प्रमर्दिनि एहि २ मम ग्रहाकर्षिणि एहि २ ग्रहानुवन्धिनि एहि २ ग्रहानुच्छेदिनि एहि २ ग्रहकाल कालामुखि एहि २ ग्रहोच्चाटिनि एहि २ ग्रह मारिणि एहि २ मोहिनि एहि २ स्तम्भिनि एहि २ समुद्रधारिणि एहि २ धुनु २ कम्प २ कम्पावय २ मण्डल मध्ये प्रवेशय २ स्तम्भ २ ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र आह्वानन गृण्ह २ जल गृण्ह २ गध गृण्ह २ अक्षत गृण्ह २ पुष्प गृण्ह २ चरू गृण्ह २ दीप गृण्ह २ धूप गृण्ण २ फल गृण्ह २ आवेश गृण्ह २ ॐ ह्म्ल्व्यूँ महादेवि ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लूं द्रा द्री ह्रां ह्री ह्रू ह्रौ ह्र हा देव ग्रहान् आकर्षय २ ब्रह्मा विष्णु रूद्रेन्द्रादित्य ग्रहान्नाकर्षय २ नाग ग्रहान्नाकर्षय २ यक्ष ग्रहान्नाकर्षय २ गधर्व ग्रहान्नाकर्षय २ ब्रह्मराक्षस ग्रहान्नाकर्षय २ भूत ग्रहन्नाकर्षय २ व्यन्तर ग्रहान्नाकर्षय २ सर्व दुष्ट ग्रहान्नाकर्षय २ शतकोटिदेवतानाकर्षय २ सहस्रकोटि पिशाच देवतानाकर्षय २ कालराक्षस ग्रहानाकर्षय २ प्रेतासिनी ग्रहानाकर्षय २ वैतालो ग्रहानाकर्षय २ क्षेत्रवासी ग्रहानाकर्षय २ हन्तुकाम ग्रहानाकर्षय २ अपस्मार ग्रहानाकर्षय २ क्षेत्रपाल ग्रहानाकर्षय २ भैरव ग्रहानाकर्षय २ ग्रामादि देवतानाकर्षय २ गृहादि देवतानाकर्षय २ कुलादिदेवतानाकर्षय २ चण्डिकादि देवतानाकर्षय २ शाकिनि ग्रहान्-आकर्षय २ डाकिनी ग्रहानाकर्षय २ सर्व योगिनी ग्रहानाकर्षय २ रणभूत ग्रहानाकर्षय रज्जूनिग्रहानाकर्षय २ जलग्रहानाकर्षय २ अग्नि ग्रहानाकर्षय २ मूक ग्रहानाकर्षय २ मूर्ख-ग्रहानाकर्षय २ छल ग्रहानाकर्षय २ चोरचिताग्रहानाकर्षय २ भूत ग्रहानाकर्षय २ शक्ति-ग्रहानाकर्षय २ चाडाली ग्रहानाकर्षय २ मातगग्रहानाकर्षय २ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रभव भवान्तर स्नेह वैर वध सर्व दुष्ट ग्रहानाकर्षय २ कम्प २ मृत्योरक्षय २ ज्वर भक्षय २

अनलविषंहर २ कुमारीरक्ष २ योगिनीभक्षय २ शाकिनी मर्दय २ डाकिनी मर्दय २ पूतनी कम्पय २ राक्षसी छेदय २ कोलिकामुद्रा दर्शय २ सर्व कार्यकारिणी सर्व ज्वर मर्द्दिनिसर्व शिक्षाजन प्रतिपादिनि एहि २ भगवति ज्वालामालिनि एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिकं वात्तिक श्लेष्मिक पैत्तिक २ श्लेष्मिक सान्निपातिक (वेला) ज्वरादिक पात्रे प्रवेशय २ ज्वलि ज्वलि ज्वालावय २ मुच २ मुचावय २ शिरं मुच २ मुख मुच २ ललाट मुच २ कठं मुच २ बाहू मुंच २ हृदय मुच २ उदर मुच २ कटि मुच २ जानुं मुंच २ पाद मुंच २ ग्राछेदय २ क्रो भेदय २ ह्री मर्दय २ क्षी बोधय २ ह्म्ल्व्यूँ घूर्मय २ र र र र र रां रा स घ पातय २ पर मत्रान् स्फोटय २ ॐ ह्रा ह्री ह्रूं ह्रौ ह्र घे घे फट् स्वाहा। अस्मिन् दलमध्ये प्रवेशय २ पात्रे गृहण २ आवेशय २ ग्रासय २ पूरय २ खण्ड २ कट कट कंपावय २ ग्राहय २ शीर्ष चालय २ भाल चालय २ नेत्रं चालय २ वदन चालय २ कण्ठं चालय २ बाहूं चालय २ हस्त चालय २ हृदय चालय २ गात्र चालय २ सर्वांग चालय २ लोलय २ कप २ कम्पावय २ शीघ्र अवतर २ गृण्ह २ ग्राहय २ अचेलय २ आवेशय २ ॐ क्ष्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनी ह्री क्ली ब्लूं द्रा द्री क्षा क्षी क्षू क्षौ क्ष हा सर्व दुष्ट ग्रहान् स्तभय २ हा पूर्व बधय २ दक्षिण बधय २ पश्चिम बधय २ उत्तर बंधय २ ठः ठ हु फट् २ घे घे ॐ र्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनी ह्री क्ली ब्लूं द्रां द्री ज्वल र र र र र र र रा रा प्रज्वल २ हु ज्वल ज्वल धग २ धू धूं धूमाधकारिणी ज्वल ज्वल ज्वलित शिखे प्रलय धग धगित वदने देव ग्रहान् दह २ नाग ग्रहान् दह २ यक्ष ग्रहान् दह २ गधर्व ग्रहान् दह २ ब्रह्म र क्षस ग्रहान् दह २ सर्व भूत ग्रहान् दह २ व्यन्तर ग्रहान् दह २ सर्व दुष्ट ग्रहान् दह २ शतकोटि देवतान् दह २ सहस्र कोटि पिशाच राजान् दह २ घे घे स्फोटय २ मारय २ दहनाक्षि प्रलय धग धगित मुखि ॐ ज्वालामालिनि ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र हा सर्व दुष्ट ग्रह हृदय हू दह दह पच पच छिंदि २ भिंदि २ ह ह हा हा हे हे हू फट् २ घे २ ॐ भ्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्री क्लो ब्लू द्रा द्री भ्रा भ्री भ्रू भ्रौ भ्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् ताडय २ हू फट् २ घे २। ॐ म्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री म्रा म्री म्रू म्रौ म्रः हा सर्व दुष्ट ग्रहाणां वज्रमय सूच्या अक्षिणी स्फोटय २ अदर्शय २ हू फट् २ घे २। ॐ य्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री हा आ क्रो क्षी य्रा य्री य्रू य्रौ य्रः हा सर्व दुष्ट ग्रहान् प्रेषय २ घे २ हू जः ज ज ॐ घ्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लूं द्रा द्री घ्रा घ्री घ्रूं घ्रौ घ्र हा घ घ खं ख खड्गै रावण सद्विद्यया घातय २ सच्चन्द्रहासः शस्त्रेण छेदय २ भेदय २ जठरं भेदय २ भ्रं भ्र ख ख ह ह हू २ फट् २ घे २ ॐ म्म्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री झ्रा झ्री झ्रूं झ्रौ झ्र हा सर्व दुष्ट ग्रहान् वज्रपाशेन बधय २ मुष्टि वधेन वधय २

हू फट् २ घे २। ॐ ख्म्ल्व्र्यू ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लूं द्रा द्री खा खी खू खौं खः हा. सर्व दुष्ट ग्रहाणा अगभग कुरु २ ग्रीवा भजय २ हू फट् २ घे २। ॐ छ्म्ल्व्र्यू ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लूं द्रा द्री छा छी छू छौं छ्र हा सर्व दुष्ट ग्रहाणा अन्त्राणि छेदय २।

हूँ फट् फट् घे घे। ॐ ठ्म्ल्व्र्यू ज्वालामालिनी ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री ठा ठी ठू ठौ ठ. हा सर्व दुष्ट ग्रहान् विद्युत्पापाण अस्त्रेण ताडय २ भुम्या पातय २ फट् फट् घे घे। ॐ व्म्ल्व्र्यू ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लू द्रां द्री व्रा व्री व्रूं व्रौं व्र हा सर्वदुष्ट ग्रहान समुद्रे मज्जय २ हू फट् फट् घे घे। ॐ ड्म्ल्व्र्यू ज्वालामालिनि ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री ड्रा ड्री ड्रू ड्रौं ड्र हा सर्व डाकिनी मर्दय २ हूँ फट् फट् घे घे झ्रौं झ्र सर्व शाकिनि मर्दय २ हूँ फट् फट् घे घे सर्व योगिनिस्तर्जय तर्जय सर्व शत्रून् ग्रासय २ ख खं ख ख ख ख खादय खादय स त व म हा झ सर्व ग्रहान् उत्थापय २ नट नट नृत्य नृत्य स्वाहा य य सर्व दैत्यान् ग्रस ग्रस विध्व सय २ दह दह पच पच पाचय २ धर २ धम २ घुरु २ पुरु २ फुरु २ सर्वोपद्रव महाभय स्तभय २ झम् २ ह ह दर दर पर २ खर २ खड्गरावण सद्विद्यया घातय २ पातय २ चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय २ भेदय २ झ झ ह हं ख ख घ घ द द फट् फट् घे घे हा हा आ क्रौं क्ष्वी क्ष्वौं ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री क्रौं क्षी क्षी क्षी क्षी ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा ॥ ग्रय प ति ससिद्धि ।

॥ इति ॥

इस ज्वालामालिनीपठति सिद्ध माला मत्र को ७२ दिन तक दीप धूप रखकर नित्य ही १ वार पढने मात्र से सिद्ध हो जायगा, फिर प्रत्येक व्याधि मे पानी मत्रित करके देने से अथवा झाडा देने से सर्व व्याधि दूर हो, और भूत, प्रेत, शाकिनि आदि तथा परविद्या का प्रभाव नष्ट होता है।

सरस्वती मन्त्रः

मन्त्र :—ॐ अर्हन् मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयंकरी श्रुत ज्ञाना ज्वाला सहस्त्र ज्वलने सरस्वती मत्पापं हन २ दह २ पच २ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीर वर धवले अमृत संभवे (पल्लवे) अमृतं श्रावय २ वं वं वं वं हुं हुं फट् स्वाहा।

विधि —केशर घिसकर गोली ३६० वनाकर दीपोत्सव के दिन अथवा शरद पूर्णिमा के दिन अर्हन्त प्रतिमा के सम्मुख साधन करे। १००० जप करे। उपरोक्त से १ गोली को

२१ बार मंत्रित करके प्रात: उस गोली को खावे, इस प्रकार ३६० दिन में ३६० गोली खावे तो महान विद्यावान हो। किन्तु खट्टा खारा नही खावे। प्रतिदिन स्मरण करने से बुद्धि का वैभव बढता है।

द्वितीय विधि :—इस मत्र को कासी की थाली में लिखे सुगधित द्रव्यों से, फिर सुगन्धित पुष्पों से १००८ वार मत्र का जाप करे, शरद पूर्णिमा के दिन मेवा की खीर बनाकर रखे। दूसरे दिन वही मेवा की खीर खावे और कुछ नही खावे, तो सरस्वती प्रसन्न रहे। बुद्धि प्रबल होती है। यह प्रयोग शरद पूर्णिमा के दिन करे। जप सुगन्धित पुष्पो से करे।

। शांतिमन्त्र लघू ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री शांति नाथाथ जगत् शांति कराय सर्वोपद्रवशांति कुरु २ ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि —इस मत्र का जाति पुष्प से नित्य ही १०८ बार जप करने से सर्व मनो वांछित प्राप्त होता है।

शांति मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शांति नाथाय सकल विघ्न हराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य सर्वोपद्रव शांति लक्ष्मी लाभं च कुरु २ नमः (स्वाहा)

विधि —इस मत्र का सोलह दिन मे १६००० जप करके दशांस होम करे, शुक्ल पक्ष के पखवाडे मे १६ दिन का जो पखवाडा हो, उसमें प्रत्येक दिन १००० जप सुगन्धित पुष्पो से करे तो सर्व कार्य की सिद्धि हो। उपसर्ग, उपद्रव, सर्व दूर हो, सर्व शांति होती है। लक्ष्मी लाभ, यश लाभ होता है।

नवग्रह जाप्य

१ रवि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रो ह्रीं ह्रः आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंबवर्गस्य) सर्व

दुष्टग्रह रोग कष्टनिवारणं कुरु कुरु सर्वशाति कुरु कुरु सर्व समृद्धि कुरु कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निश्सनं कुरु कुरु धनधान्य समृद्धि कुरु कुरु काममांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट् ।

इस मत्र का जप ७००० हजार करे, तो रवि गृह शात होते है।

२ सोम महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चंद्रप्रभतीर्थंकराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आॅ क्रों ह्रीं ह्रः सोममहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मत्र का ११००० हजार जप करे।

३ मंगल महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्यतीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गांधारी यक्षी सहिताय ॐ आॅ क्रों ह्रीं ह्रः मंगलकुज महाग्रह मम-दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु हूं फट् ।।

इस मत्र का जप १०००० करे।

४. बुध महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लीतीर्थंकराय कुवारेयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आॅ क्रों ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मन्त्र का जाप १४००० करे।

५. गुरू महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रों ह्रीं ह्रः गुरुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

ग्रह की शाति के लिये इस मन्त्र का जप १९००० हजार करे।

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाकालीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शुक्रमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरू कुरू हूं फट् ॥

इस मन्त्र का जप १६००० हजार करे।

७. शनि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रततीर्थंकराय बरुणयक्ष बहुरुपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारण सर्व शांति च कुरू कुरू हूं फट् ॥

इस मन्त्र का जप २३००० हजार करे।

८. राहु महाग्रह मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थंकराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मन्त्र का १८००० जप करे।

९. केतुमहा ग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्री ह्रः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु फट् ॥

इस मन्त्र का ७००० जप करे।

नोट —प्रत्येक ग्रह के जितने जप लिखे हो उतना जप करके नवग्रह विधान करे। दशमांस होम करे तो ग्रह की शान्ति होती है।

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः

श्री शांतिनाथाय शांति कराय सर्व पापप्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्व रोगाय मृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम डामर विनाशनाय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लौ ह्लः असि आउसा मम सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि —इस शान्ति मन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोलह दिन के पखवाडे मे प्रत्येक दिन १००० जप करे। सोलह दिन मे सोलह हजार जप दीप, धूप विधि से करे, फिर शान्ति विधान कराकर, १६००० जप का दशास होम करे, तो सर्व प्रकार के रोग, सर्व प्रकार के डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेतादि बाधा दूर होती है। लक्ष्मी लाभ होता है, मनवाछित सिद्धि प्राप्त होती है।

वर्द्धमान मन्त्र

ॐ णमो भय वदो वड्ढ माणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आवासं पायालं लोयाणं भूयाणं जये वा विवादे वा थंभणेवा रणांगणेवा रायं गणेवा मोहेण वा सव्व जीवसत्ताणं अपराजिदोमम् भवदु रक्ख २ स्वाहा ।

विधि —इस वर्द्धमान महाविद्या को उपवास करके एक हजार जप सुगन्धित पुष्पो से जप करे, दशमास होम करे, तो ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर कही से भय आने वाला हो अथवा आ गया हो, तो सरसो हाथ मे लेकर सर्व दिशाओ मे फेक देने से आगत उपद्रव, भय, परकृत विद्याएँ सर्व स्तम्भित हो जायेगे। घर मे स्मरण मात्र से ही शाति हो जायगी। विशेष फल गुरु गम्य है।

जिनेन्द्र पंच कल्याणक के समय प्रतिमा के कान में देने वाला सूर्य मन्त्र

ॐ ह्लीं क्ष्रूं ह्लूं सुं सुः क्ष्रौ ह्लीं ऐं अर्हं नमः सर्व अर्हन्त गुणभागी भवतु स्वाहा ।

विधि —प्रतिष्ठाचार्य इस मन्त्र को २१ वार कान मे पढे।

मन्त्र :—**ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं ह्लां ह्लौं श्रीं श्रौं जय जय द्रां क्लि द्रा क्ष सां मृंजय जिनेभ्योः ॐ भवतु स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र को दर्पण सामने रखकर ५ वार कान मे पढे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रौं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रातर गात्राय चतुरशिति गुण गणधर चरणाय अष्ठचत्वारिंशत गणधर वलाय षर्ट्त्रिशत गुण संयुक्ताय णमो आइरियाणं हं हं स्थिरं तिष्ठ २ ठः ठः चिरकालं नंदतु यंत्र गुण तंत्र गुणं वेदयुतं अनंत कालं वर्द्धयन्तु धर्माचार्या हुं रुं कुरु २ स्वाहा, स्वाधा ।

विधि :—इस मन्त्र को भी प्रतिमा के सामने सात बार पढे ।

प्रत्येक शासन देव सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां श्रीं वं सर्वज्ञाय प्रचण्डाय पराक्रमाय वटुक भैरवाय अमुक क्षेत्रपालाय अत्र अवतर २ तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जिस क्षेत्रपाल की प्रतिष्ठा करनी हो, उस क्षेत्रपाल की मूर्ति के कान मे २७ बार पढे ।

पद्मावती प्रतिष्ठावायक्षिणी प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्री पद्मावती देवी (क्ष्म्ल्व्र्य्यै) अत्र अवतर २ तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि —कोई भी देवी की प्रतिष्ठा करनी हो तो इस मन्त्र को जिसकी प्राण प्रतिष्ठा होनी है, उस मूर्ति के दोनो कानो में २७–२७ बार पढना चाहिये ।

धरणेन्द्र अथवा यक्ष प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्री धरणेन्द्र देवताये अत्र अवतर २ अत्र तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को यक्ष मूर्ति के कान मे २७–२७ बार कान मे पढने से प्रतिष्ठा हो जायगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद् २ वाग्वादिनीभ्योनमः ।

विधि :—कुमकुम कपूर के साथ सूर्य ग्रहण मे जिह्वाग्रे लिखित्तस्य नरस्य वाग्वादिनी सतुष्टा भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वद् २ वाग्वादिनी भगवति सरस्वती ह्रीं नमः ।

विधि —१२००० जप इस मन्त्र का करके दशाश होम करे, सूर्य या चन्द्र ग्रहण मे वेला, वच, मालकागणी, इन चीजो को १०८ बार मन्त्रीत करके जिस बालक को खिलावे उसकी बुद्धि का विकास होता है।

॥ ० ॥

गणधर वलय से सम्बन्धित
ऋद्धि मंत्र व फल

ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्ह असि आउ सा ह्रौं २ स्वाहा। एतत् सर्व प्रयोजनीयम्, विसूचिकाशान्ति र्भवति ॥ १ ॥

ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां पुष्प १०८ जपेत्, ज्वरनाशनम् ॥ २ ॥

णमो परमोहिजिणाणं ह्रां शिरोरोगनाशनम् ॥ ३ ॥

णमो सव्वोहिजिणाणं ह्रां अक्षिरोगनाशनम् ॥ ४ ॥

णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगं नाशयति ॥ ५ ॥

णमो कुट्ठबुद्धीणं शूल-गुल्म-उदररोगं नाशयति ॥ ६ ॥

णमो बीजबुद्धीणं श्वास-हिक्कादि (हीचकी) नाशयति ॥ ७ ॥

णमो पदाणुसारीणं परैः सह विरोधं कलहं नाशयति ॥ ८ ॥

णमो संभिन्नसोयाणं कासं नाशयति ॥ ९ ॥

णमो पत्तेयबुद्धाणं प्रतिवादिविद्याच्छेदनम् ॥ १० ॥

णमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं भवति ॥ ११ ॥

णमो बोहिबुद्धाणं अन्यतरगृहीते श्रुते एक संधो भवति ५२ दिनं यावज्जपेत् ॥ १२ ॥

णमो उज्जुमईणं शान्तिकं भवति, दिन २४ यावज्जपेत् ॥ १३ ॥

णमो विउलमईण वहुश्रुतत्वम्, लवणाम्लवर्जं भोजनम् ॥ १४ ॥

णमो दसपुव्वीणं सर्वाङ्गवेदी भवति ।। १५ ।।

णमो चऊदसपुव्वीणं जापः १०८ स्वसमय-परसमयवेदी ७ भवति ।।१६।।

णमो अट्ठंगनिमित्त कुसलाणं जीवित-मरणादिकं जानाति ।। १७ ।।

णमो विउव्वणरिद्धिपत्ताणं काम्यवस्तूनि प्राप्नोति, दिन २८ जापः ।। १८ ।।

णमो विज्जाहराणं उद्देशप्रदेशमात्रं खे गच्छति ।। १९ ।।

णमो चारणाणं चिन्तामुष्टिपदार्थ स्वरूपं जानाति ।। २० ।।

णमो पण्हसमणाणं आयुर्वसानं जानाति ।। २१ ।।

णमो आगासगामीणं अन्तरिक्षे योजनमात्रं गमयति ।। २२ ।।

णमो आसीविषा (सा) णं विद्वेषणं पार्श्वष्टकमंत्रक्रमेण ।। २३ ।।

णमो दिट्ठीविसाणं स्थावर जङ्गम-कृत्रिमविषं नाशयति ।। २४ ।।

णमो उग्गतवाणं वाचास्तंभनम् ।। २५ ।।

णमो दित्ततवाणं रविवाराद् दिनत्रयं मध्याह्ने जापः, सेना-स्तम्भ ।। २६ ।।

णमो तत्ततवाणं जलं परिजप्य पिबेत् अग्निस्तम्भं ।। २७ ।।

णमो महातवाणं जलस्तम्भनम् ।। २८ ।।

णमो घोरतवाणं विष-सर्प्प-मुखरोगादिनाशः ।। २९ ।।

णमो घोरगुणाणं लूतागर्भपिटकादि नाशयति ।। ३० ।।

णमो घोरगुणपरक्कमाणं दुष्टमृगादीनां भयं नाशयति ।। ३१ ।।

णमो घोरगुण बंभचारीणं ब्रह्मराक्षसादि नाशयति ।। ३२ ।।

णमो आमो सहिपत्ताणं जन्मान्तरवैरेण पराभवं न करोति ।। ३३ ।।

णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वानपमृत्यूनपहरति ।। ३४ ।।

णमो जल्लोसहिपत्ताणं अपस्मारमवलेपं चित्तविप्लवं नाशयति ।। ३५ ।।

णमो विप्पोसहिपत्ताणं गजमारी शाम्यति ।। ३६ ।।

'णमो सव्वोसहियत्ताणं' मनुष्यमरकं नाशयति ।। ३७ ।।

'णमो मणवलीणं' अश्वमारी शाम्यति ।। ३८ ।।

'णमो वचोवलीणं' अजमारी शाम्यति ।। ३९ ।।

'णमो कायब्लीणं' गोमारी शाम्यति ।। ४० ।।

'णमो अमयसवीणं' समस्तमुपसर्गं शाम्यति ।। ४१ ।।

'णमो सप्पिसवीणं' एकाहिक-द्वयाहिक-त्र्याहिक चातुर्थिक-पाक्षिक मासिक-सांवत्सरिक-वातादिसमस्तज्वंर नाशयति ।। ४२ ।।

णमो खीरसवीणं गोक्षीरं परिजत्यपिबेत् दिन २४ क्षयं कांस गण्डमाला-दिकं च नाश्यति ।। ४३ ।।

'णमो अवखीणमहाणसाणं' आकर्षणं ।। ४४ ।।

'णमोलोए सब्वसिद्धायदणाणं' राजपुरूषादिवश्यं ।। ४५ ।।

ॐ नमो भगवदो महदि महावीर वड्ढमाणबुद्धिरिसीणं चेतः समाधिम व स्थायां प्राप्नोति ।। ४६ ।।

ॐ णमो जिणे तरे उत्तरे उत्तिण्णभवण्णवे सिद्धे २ स्वाहा ।

पूर्वसेवा—करजापः ११००० ततः । १००८ अथवा जघन्यतः १०८ उभयं गरूडाक्षतैजपिः इति सिद्धा भवति । ततो महति संघादि कार्ये प्रयुज्जते अनागाढे न प्रयोज्यम् । रौद्रकर्मणि 'ॐ णमो जिणे चक्कवाले' इति बिशेष । शेषं समानमेव ।

प्रयोगश्चेत्यम् ....

३ तथा स्वकार्येऽव्यादौ जलदौः स्थूये जापः शतत्रयंत्तन प्रतीक्षते । ततः स्वोत्सङ्गाच्छ्वेता मार्जारिका निर्गच्छति । सा च गच्छन्ती धीरैरनुगम्यते । यत्र झाटादौ गत्वान्तर्घते तत्र एकहस्ते खनिते जलं भवति ।

अवृष्टयादावागाढे कार्ये गूहलिकां कृत्वा चांदनं चतुररत्त चतुर्द्वारप्राकारं

कृत्वा मध्ये चंदन टिक्ककक्कं कृत्वा गरूडाक्षतैर्जातिक लिकाभिर्वा १०८ जाप दिन ६ न प्रतीक्षते कार्य सिद्धयति।

अथ अप्रस्तुता अपि मन्त्रा नान्दीपदगर्मत्वात् प्रकाश्यन्ते केचित—नमो 'अरहन्ताणं इत्यादि नमो लोए सर्व्वसाहूण' पर्यन्तमादौ पठयते ॐ णमो।

जिणाणं २ णमो ओहिजिणाणं ३ णमो परमोहिजिणाणं ४ णमो सव्वोहिजिणाणं ५ णमो अणंतोहि जिणाणं ६ णमोकु ट्ठबुद्धीणं ७ णमो बीज(य)बुद्धीणं ८ णमो पयाणुसारीणं ९ णमो संभिन्नसोयाणं १० णमो सयंबुद्धाणं ११ णमो पत्तेयबुद्धाणं १२ णमो उज्जुमईणं १३ णमो विउलमईणं १४ णमो दसपुव्वीणं १५ णमो चउदस- पुव्वीणं १६ णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं सत्यं कथय कथय स्वाहा। अष्टोत्तरशतजापेन यत्किञ्चित्पृच्छयते तत् सर्वं कथयति भवति च।

अत्रापि पूर्वपाठः। १ ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं २ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ३ णमो खेलोसहिपत्ताणं ४ णमो विप्पोसहिपताणं ५ णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं २ स्वाहा।

गुल्म-शूल-प्लोह-दद्रु (दाद्) गड-गण्डमाला-कुष्ट-सर्वज्वरातिसार लूता व्रण विषाणि अन्येऽप्यष्टोत्तरशत व्याधय उञ्जनेन जलपानेन नश्यत्ति।

पूर्ववतः पाठः। १ ॐ णमो उग्गतवाणं २ णमो दित्तवाणं ३ णमो तत्ततवाणं ४ णमो महातवाणं ५ णमो धोरतवाणं ६ णमो धोरगुणाणं ७ णमो घोरपरक्कमाणं ८ णमो धोरगुणबभयारीणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा। युद्ध तस्करादिषोऽशभयनाशो युद्धे विजयश्च।

पूर्ववत् पाठः। १ ॐ णमो खीरासवीणं २ णमो सटिपरासवीणं' ३ णमो महुसवीणं ५८ णमो अमयसवीणं स्वाहा। सर्वौषधी (धि) उत्पादन-वंधन-नियो-जनभिमन्त्रण कला पानीय स्थावरजङ्गमजाठरयोगज कृत्तिमादिसर्वविष सर्ववृश्चिकादि विषहरणं जलपानामृतध्यानेन ॥ १० ॥

स्तुतिपदानि ३२, २४, १८—१६—१३—१२—८ यावत् पच्च भविष्यति इहचात्यन्तगोप्यान्याम्नायान्तराणयपि सन्तीति वृद्धाः ।

तथाहि [ॐ णमो अरिहंताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् दिचक्राय ह्री अर्हं असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा ॐ नमो भगवते अरिहंताणं णमो ओहि जिणाणं ह्रां ह्री ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं अर्हं असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा । पूर्वोक्तयंत्रस्वरूपं ध्यात्वा कार्योत्सर्ग दत्वा एतं मंत्रमष्ट्रोत्तरशतवारं जपेत । ज्वरस्तम्भनं भवति ॥ २ ॥]

ॐ णमो बीज (य) बुद्धीणं । एतन्मंत्रमष्टोत्तराशतवारं कायोत्सर्गेण यन्त्रस्वरूपं घ्यात्वा जपेत । काशश्चासहिक्कारोगोऽपयाति ॥ ३ ॥

ॐ णमो परमोहिजिणाणं । एतःमन्त्रं ध्यात्वा कायोत्सर्गेण तिष्ठेत् । शिरोरोगोऽपयाति ॥ ४ ॥

ॐ णमो णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगोऽपैति ॥ ५ ॥

ॐ णमो-णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगनाशः ॥ ६ ॥

ॐ णमो-णमो कुट्ठबुद्धीणं शूल-गुल्म-कृमिनाशः ॥ ७ ॥

ॐ णमो-णमो पत्तेयबुद्धाणं । प्रतिवादि पक्षस्य विद्याच्छेद ॥ ८ ॥

'ॐ णमो सयंबुद्धाणं' झ्रौ झ्रौं स्वाहा । प्रतिदिवसं सिद्धभक्ति कृत्वा अष्टोत्तरशतदिनानि यावत् अष्टोत्तरशतं जपेत् कवित्वमागमवेदित्वं च भवति ॥ ९ ॥

ॐ णमो बोहिबुद्धाणं झ्रौं-झ्रौं स्वाहा । पञ्चविंशतिदिनानि यावच्छतं जपेत् एक संधो (१) भवति ॥ १० ॥

ॐ णमो दसपुव्वाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा । एकान्तर भोजनं कृत्वा दिनास्त् समये दिन ८० यावज्जपेत्, परसमयागमवेदित्वं भवति ॥ १३ ॥

ॐ णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा । त्रिधा ब्रह्मचर्येण दिन २४ चतुर्विशतितीर्थकरस्तवानन्तर श्री खंडकुंकुमसितसर्षपकुष्टोगोक्षीरेण

पिष्टा सव्यकरेणालिख्य पश्चादुपरिसुगन्धपुष्पैरेकान्तेऽधरात्रवेलायां जपेत् नष्ट-विनटचिन्ता सुख-दुःख जीवित-मरणादीन् सम्यग् जानाति ।

ॐ णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताण झ्रौं झ्रौ स्वाहा । दिन २८ पञ्चोपचा रक्रमेण रक्तकणवीरपुष्पैर्जपेत् १०८ । काम्यवस्तूनि प्राप्नोति ।। १५ ।।

ॐ णमो विज्जाहराणं झ्रौं भ्रौ स्वाहा । दिन २५ यावत् जाती पुष्पैः १०८ जपेत् देशतोऽन्तरिक्ष गामी ।।१६।।

ॐ णमो चारणाणं झ्रौं ण्रौं स्वाहा । स्नात्वा नदी तीरे वार २५ जपेत् । कायोत्सर्ग कृत्वा नष्टमुष्टिचिन्तास्वरूपं जानाति ।। १७ ।।

ॐ णमो पण्हसमणाणं झ्रौ झ्रौ स्वाहा दिन २८ यावत् श्वेतकणवीर पुष्पै, १०८ जिनगृहे चन्द्रप्रभपादभूले जपेत् । आयुरवसानं कथयति ।। १८ ।।

ॐ णमो आगासगमणाणं झ्रौ झ्रौं स्वाहा । दिन २८ जपेत् । अलवणका-ञ्जिकेनभोजनम् । योजनमेकं खे याति ।। १९ ।।

ॐ णमो दिट्ठी विसाणं झ्रौ २ स्वाहा । गमनस्तम्भः ।। २० ।।

ॐ णमो दित्ततवाणं झ्रौ २ स्वाहा रवौ मध्यान्हे दिन ३ जपेत् चौरस्तयः ।। २१ ।।

ॐ णमो महातवाणं झ्रौं २ स्वाहा । शुद्धजलं १०८ अभिमन्त्रय पिबेत्, अग्निस्तम्भः ।। २२ ।।

ॐ णमो मणोबलीणं झ्रौं २ स्वाहा । दिन २ जपेत् १०८, जल-स्तम्भ ।। २३ ।।

ॐ णमो धोरतवाणं झ्रौं २ स्वाहा बिष विषर्पादिरोगजयः ।। २४ ।।

ॐ णमो महाधोरतवाणं झ्रौ २ स्वाहा । दुष्टा न प्रभवन्ति ।। २५ ।।

ॐ णमो धोरपरक्कमाणं झ्रौं २ स्वाहा । लूतादिदोषायनयः ।। २६ ।।

ॐ णमो धोरबंभयारीणं झ्रौं झ्रौं २ स्वाहा । ब्रह्मराक्षसनाशः ।। २७ ।।

ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं जन्मान्तरावस्थायां वैरकारणेन प्राप्तग्रह—मेकदिन—मात्रेण न स्पृशति ।। २८ ।।

ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं । सद्योऽपमृत्युनाशः ।। २९ ।।

ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं। शुद्ध नदीजले १०८ जपित्वा तज्जलं पिबेत्, दिनत्रयेणापस्मारादिरोगनाशः ।। ३० ।।

ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं झ्रौं २ स्वाहा नरमारीशमः ।। ३१ ।:

ॐ णमो मणोबलीणं (झ्रौं झ्रौं स्वाहा) दिन २ जपेत् अजमारीशमो-अष्टशतम् ।। ३२ ।।

ॐ णमो वयणबलीणं झ्रौं २ स्वाहा दिन ३ जपेत् गोमारी-शमः ।। ३४ ।।

ॐ णमो अमयासवाणं (झ्रौं २ स्वाहा,) समस्तोपसर्गनाशः ।। ३५ ।।

ॐ णमो सप्पिरासवलद्धीणं झ्रौं २ स्वाहा। एकाहिक—द्व्याहिक—त्रयाहिक—चातुराहिक—षण मासिक वार्षिक—वातिका—पैत्रिक—श्लैष्मि-कादीनां दिनत्रयेण शमः ।। ३८ ।।

ॐ णमो खीरासबलद्धीणं झ्रौं २ स्वाहा कायोत्सर्गे स्थित्वा १०८ जपेत् ततः क्षीरमभिमंत्रय दिन २४ पिबेत्, अष्टादशकुष्टव्रणोपशमः ।। ३७ ।।

ॐ णमो जिणाणं जायमाणाणं न य पूई न य सोणियं न य पच्चइ न य फुट्ठ इ व्रणं ठः ठः । रक्षा लवणं जलक्किन्नंवार २१ अभिमन्त्र्य बध्यते ।। ३८ ।।

ॐ णमो जिणाणं णमो पण्हसमणाणं णमो वेसमणस्स णमो रयण चूडाए णमो पुण्य भद्दमाणिभद्दाण णमो सव्वाणुभूईणं रयणुतर पुप्फचूलाणं णमो अट्ठण्हं वाईणं सिद्धिसंतिपुट्ठिसिद्धाणुवयणं आणाइक्कमणिज्ज स्वाहा। गोरोयणा १० मणसिलापत्तं कुंकुम च पोसपुण्णिमाए चउत्थेण ११ अट्ठसयं जाओ दायत्वो पुस्सजोगे वा परिजवितेणं गुलिया समालभिन्ना सव्वकज्जसाहणी होइ विसाणं असज्जझया होइ ।। ४४ ।।

अण्डकोष वृद्धि व खाख बिलाई मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो नलाई-ज्यां बैठ्या हनुमंत आई पके न फुटे चले बाल जति

रक्षा करे। गुरु रखवाला शब्द सांचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

विधि :—नीम की डाली से २१ वार भाडे तो अण्डकोष वृद्धि तथा खाख बिलाई ठीक हो।

मस्सा नासक मन्त्र

मन्त्र :—ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा।

विधि :—शुभ मुहूर्त मे ११०० जाप कर इस मन्त्र को सिद्ध करले। फिर २१ बार पढ़कर लाल सूत मे एक गाठ दे, और हर २१ बार पढकर एक गाठ दे। इस तरह तीन गांठ देने पर ६३ बार मन्त्र पढ लिया जायेगा। इस सूत्र को दाहिने पैर के अंगूठे मे बाँध देने से खूनी बबासीर की पीडा दूर होती है।

व्रणहर मन्त्र

मन्त्र :—ॐ णमो जिणाणं जावयाणं पुसोणि अं ए एणि सव्व पायेण वणमा पच्चें उमा धुव उमा फुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से राख अभिमन्त्रित कर व्रण जिनको वण भी कहते है। जो बालको के शरीर पर हो जाते हैं उन पर अथवा शीतला के व्रणो पर लगावे, तो मिट जाते है।

बाला (नहरवा) का मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो मरहर दे शंक सारी गांव महामा सिधुर चांद से बालै कियो विस्तार बालो उपनो कपाल भांय या हुंतियो गींहु ओ तोड़ कीजै नै उबाला किया पाचे फुटे पीड़ा करे तो विप्रनाथ जोगी री आज्ञा फुरे।

विधि .—कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत की डोरी करके ७ गाठ मन्त्र पढकर दे, पैर के बाध दे। बाला ठीक हो जायगा।

घाव की पीड़ा का मन्त्र

मन्त्र :—सार सार बिजै सार बांधू सात बार फूटे अन्न उपजे घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार पढकर घाव पर फू के तो पीडा कम हो घाव भरे।

कर्ण पिशाचिनी देवी का मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं मम शुभाशुभं दर्शय कर्णपिशाचिनी नमः स्वाहा।

विधि —प्रतिदिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहनकर पूर्व की ओर मुँहकर रुद्राक्ष की माला से जाप शुरू करे। दसो दिशाओ मे एक एक माला फेरे २१ दिन तक। फिर जब जरूरत हो तो रात के समय एक माला फेर कर जमीन पर सो जाय, चन्दन घिस कान पर लगावे। स्वप्न मे प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर प्राप्त होगा, कान मे बीच मे चटका चलेगा, घबराये नही।

क्लीं बीजमन्त्र

आकर्पण तन्त्र मे सबसे पहले क्ली वीजमन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके सिद्ध होने के वाद ही आकर्पण मन्त्रो व तन्त्रो का प्रयोग करना चाहिये। उसके अभाव मे
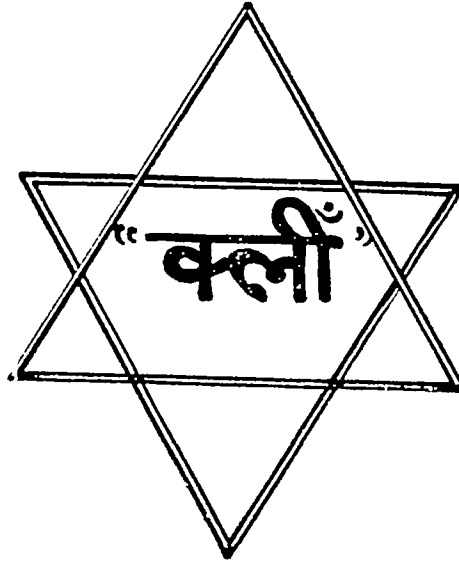
सफलता प्राप्त करना सम्भव प्रतीत नही होता। क्ली वीज मन्त्र को काय वीज यानि काय कला वीज कहते है। त्रिकोण की ऊर्ध्वमुख तथा अधोमुख स्थापन से जो आकृति वनती है।

उसे योनि मुद्रा कहते है। इसके बीच मे क्ली बीजाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिये। इस मन्त्र का जाप करते समय निम्न बातो को ध्यान मे रखना आवश्यक है :—

१. सर्व प्रथम भृकुटी के बीच मे योनि मुद्रा की कल्पना करके उसके बीच में क्ली बीजाक्षर की स्थापना कर उसका ध्यान करना चाहिये।
२. ध्यान मे इसका वर्ण लाल रग का बनाकर ध्यान करना चाहिये।
३. प्रातःकाल दो घण्टे तक इसका ध्यान करना चाहिये।
४. स्वस्थ मन शाँत चित्त होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिये।
५. दाहिने दाथ की कनिष्ठा अ गुली पर माला फेरनी चाहिये।
६ दण्डासन का उपयोग व दक्षिण दिशा की ओर मु ह रखना चाहिये।
७. प्रवाल (मू गा) की माला का प्रयोग करना चाहिये।
८ ६ महिने मे यह बीज मन्त्र सिद्ध हो जाता है। उसके वाद वशीकरण व आकर्षण आदि मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये।

वाक् सिद्धि मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि में वाचा सिद्धं बिना पर्वतं गते, द्रां, द्रीं, द्रूं, द्रें, द्रौं, द्रः।

विधि —मस्तक पर बाया हाथ रखकर एक लक्ष जाप करे तो वचन सिद्ध हो।

मन्त्र :—ॐ णमो अरिहंताणं धम्म नाय गाणंधम्म सार हीणं धम्म वर चाउरंग चक्क पट्टीणं मम् परमैश्वर्यं कुरु कुरु ह्रीं हंसः स्वाहा।

विधि —पूर्व की ओर मुख करके सफेद आसन, सफेद माला व सफेद वस्त्र पहनकर शुभ मुहूर्त मे जाप शुरू करे। मस्तक पर बाँया हाथ रखकर एक लक्ष जाप कर, फिर एक माला रोज जपे तो वाक् सिद्धि होती है।

दाद का मन्त्र

मन्त्र :—गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाह तो राजा वैरधिन आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ वेगे चलाव।

विधि —इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत कर पिलाने से दाद का रोग दूर होता है।

卐 भजन 卐

—संकलन कर्त्ता—श्री शान्तिकुमार गंगवाल

कुंथु सागर, गुरुवर हमारे, हमको दर्शन दे रहियो ।
मन मन्दिर में आजइयो ।। टेक ।।
रेवा चन्द्र के राज दुलारे, माता के हो प्राण पियारे ।
हमको दर्शन दे रहियो, मन मन्दिर मे आजइयो ।।१।।
बीस वर्ष में दीक्षा धारी, छोड़ी है धन दोलत सारी ।
शरण हमें स्वामी ले रहियो, मन मन्दिर में आजइयो ।।२।।
भेष दिगम्बर तुमने धारा, सकल भेद विज्ञान संवारा ।
भेद ज्ञान दरशा जइयो, मन मन्दिर मे आजइयो ।।३।।
मंडल को है शरण तुम्हारी, पूरी करना आश हमारी ।
मोक्ष मार्ग बतला जइयो, मन मन्दिर में आजइयो ।।४।।

।। आरती ।।

सतोषी लाल की दुलारी, मै आरती उतारू तुम्हारी ।।टेक।।
कामा नगरी मे जन्म लियो है, जन्म लियो है माता जन्म लियो है ।
माता जी हो प्यारी-प्यारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ।।१।।
यह संसार दुःखमय जाना, दुःखमय जाना, माता दुःखमय जाना ।
भारत देश उजियारी, मै आरतो उतारू तुम्हारी ।।२।।
बालापन मे दीक्षा धारी, दीक्षा धारी, माता दीक्षा धारी ।
मुक्ति दीजे भव पारि, मै आरती उतारू तुम्हारी ।।३।।
आप विदुषि हो माता जी, जय माता जी, जय माता जी ।
ज्ञान का है भण्डार भारी, मै आरती उतारू तुम्हारी ।।४।।
गणनी विजयमती माता जी, जय माता जी, जय माता जी ।
मंडल है शरण तुम्हारी, मै आरती उतारू तुम्हारी ।।५।।

दि० जैन मन्दिर, जयसिंहपुरा खोर पर १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज प्रवचन करते हुये। श्री लल्लूलाल गोधा महाराज श्री का करबद्ध प्रवचन सुनते हुए।

दि० जैन मन्दिर, जयसिहपुरा खोर की मूल वेदी मे बैठे हुये १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज एव गणनी १०५ आर्यिका श्री विजयमती माताजी, प्राचीन भव्य मूर्तियो के दर्शन करते हुये, पास मे श्री लल्लूलाल गोधा सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी मन्दिर व मूर्तियो के बारे मे जानकारी देते हुए।

आचार्य श्री के चातुर्मास के समय आरा (बिहार) मे भक्ति सगीत का कार्यक्रम करते हुए जैन संगीत कोकिला रानी एव आध्यात्मिक संगीत विदुषी बहिन श्रीमती कनक प्रभाजी हाडा, साथ मे बाये से दाये श्री शान्ति कुमार गगवाल, श्री मोतीलाल हाडा श्री राजेन्द्र कुमार बाकी वाला, प्रदीप कुमार गंगवाल, जयपुर (राजस्थान) बैठे हुए है।

(पृष्ठ २४६ से ५६०)

इस खण्ड में

तृतीय यंत्राधिकार

मन्त्र लिखने की विधि व बनाने की विधि

९ १६ ७ ८

श्लोक :—इच्छा कृतार्द्ध कृत रूप हीनं। धने गृहे, षोडश सप्त चाष्टौ।

१५ १०–० १ २ ७ ६ ३ ८ १ ४ ५

तिथि दशाशे प्रथमे च कोष्टे। द्वि सप्त षट् त्रि अष्ट कु वेद वाण।

अर्थ :—जितने का यन्त्र बनाना हो उस सख्या का आधा करना, उसमे से एक कम करना, पुन एक–एक कम कर लिखना, धने गृहे— ९ वा कोठे मे लिखना, फिर १६ वें कोठे मे लिखना, फिर ७ वे कोठे मे लिखना, फिर ८ वे कोठे मे लिखना, फिर १५ वे कोठे मे कोठे मे लिखना, फिर १० वे कोठे मे लिखना, इतना लिख जाने के बाद जो कोठे खाली
कु वेद-वाण
रह जाये उन कोठो मे क्रमश: २, ७, ६, ३, ८, १, ४, ५ ।

उदाहरणार्थ यन्त्र नीचे मुजब देखो जैसे कि हमको बनाना है ८४ का यन्त्र—

यन्त्र ८४ का

३४	४१	२	७
६	३	३८	३७
४०	३४	८	१
४	५	३६	३९

८४——२=४२–१=४१ इस ४१ सख्या को कोष्टक का जो प्रथम खाना है चार लाइन वाला, उसके दूसरे खाने मे ४१ सख्या को रक्खे। फिर श्लोक मे लिखा है कि, धने गृहे, राशियो मे सबसे अन्तिम वाली राशी घन राशी है। इसलिए धन राशि को ९वां नं० दिया है। सो कोष्टक मे भी नोवा खाना है उसमें एक सख्या घटा कर ४० रख देवे। इस प्रकार श्लोक मे जो जो नबर पूर्वक सकेत दिया है, उन २ खाने मे एक २ सख्या को कम करते हुए रख देना। इस प्रकार रखते हुए यत्र बना लेना। इसी विधि से अन्य प्रकार जिसको जितनी मंख्या का यत्र बनाना हो वह इसी प्रकार बनावे। ये १६ खाने वाले यत्र की विधि है।

नो खाने वाले यन्त्र की विधि —एक नो खाने वाला कोष्टक बनावे फिर उसको विधि के अनुसार सख्या भर देवे ।

यन्त्र १५ का

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उदाहरणार्थ —जैसे हमको १५ का यत्र बनाना है तो दूसरे नम्बर कोठे मे १ लिखे फिर ९ नम्वर के कोठे मे २ लिखे, फिर ४ नम्बर के कोठे मे ३ लिखे, फिर ७ नम्बर कोठे मे ४ लिखे फिर ५ नम्बर कोठे मे ५ लिखे, फिर ३ नम्बर कोठे मे ६ लिखे, फिर ६ नम्वर कोठे

यन्त्र १८ का

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

यन्त्र २१ का

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

यन्त्र २४ का

११	४	९
६	८	१०
७	१२	५

मे ७ लिखे, फिर १ नम्वर के कोठे मे ८ लिखे, फिर ८ नम्वर के कोठे मे ९ लिखे, इस प्रकार यत्र कोष्टक भरने से १५ का यत्र तैयार हो जाता है। इसी प्रकार नो कोठे के यत्र लिखने की विधि है। अन्य १८ या २१ का या ३३ जो भी जरूरत हो, वह इसी प्रकार लिखकर तैयार करे।

यन्त्र लेखन विधि समाप्त ।

यन्त्र महिमा वर्णन

जिण चोवीसेपय प्रणमेवि, सह गुरु तणा वचन निसुणेवि ।
यंत्र तणो महिमा अतिघणो, भावे बोलूं भवियण सुणो ॥ १ ॥
सोले कोठे लखिये वीश, सघला भय टाले जगदीश ।
अठावीसवाँ रोग भय हरै, छत्रीशे द्युति जय करे ॥ २ ॥
त्रीशे वलि सायंणि (शाकिनी) नाशंति, वत्रीशे सुख प्रसवते हुंति ।
देवध्वजा जो लखिये इसे, पर चक्र भय न होवे किमे ॥ ३ ॥
घर वारणें जो लखिये एह, कामण नव पराभवे तेह ।
शाकणि संहारनि हुवे तिहां, चोतीसो यंत्र लखिये जिहाँ ॥ ४ ॥
चालीशे शीश रोग टले, पागे वयरी हेला दले ।
अनेवली ठाकरवे बहुमान, वसुधावलि वाधारे मान ॥ ५ ॥
वासठें बंध्या गर्भ जु धरै, ऐसा वयण सद्गुरु उच्चरैं ।
चौसठ रो महिमा छे घणो, मार्गे भय न होवे कोई तणों ॥ ६ ॥
वारिभय रिपू शाकिणी तणा, चौशठना नहीं प्रणं ।
बावत्तरी भूरू भूरि जेह, भुंभे नर जय पाये तेह ॥ ७ ॥
पच्चासी पंथे भय हरे, अठयोत्तरि सो शिव सुख करे ।
वीशोत्तर सौ नयणे निरखंत, प्रसव वेदन तेब विहुत ॥ ८ ॥
बावनशोनो ऊली नीर, मुख धोवे होवे वाहलो वीर ।
सत्तरि भय नो महिमा अनन्त, तुच्छ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ९ ॥
एक सो बहुत्तरो यंत्र प्रभाव, बालक ने टाले दुष्ट भाव ।
बिहुमोनो यंत्र लखिये वाट, वाणिज्य घणा होय हाट मझार ॥ १० ॥
त्रणशें नर नारी नो नेह, विणठो बांधे नहीं सन्देह ।
चारशे घर भय न विहोय, कण उत्पत्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥
पाँच सै महिला गर्भज धरै, पुरुष हने पुत्र संतति करे ।
छशे यन्त्र होय सुखकार, सातशे झगड़े होय जयकार ॥ १२ ॥

नवसे पंथे न लागे चोर, दश में दुख न परभवें घोर ।
इग्यारसे छेजे जीव दुष्ट, तेहना भय टाले उत्कृष्ट ।। १३ ।।
बन्दी मोक्ष वार से होय, दश सहसे पुनः तेंहिज होय ।
बली सयलनी रक्षा करे, एम यन्त्र तणी महिमा विस्तरे ।। १४ ।।
पच्चास से राजा दिक मान, शाकिनि दोष निवारण जान ।
कण्ठे तथा मस्तक जे धरे, अशुभ कर्म तें शुद्ध जे करे ।। १५ ।।
बावनना मो मस्तके तथा, कठे क्षेत्रपालनो हित सदा ।
पणयालीस सिर कण्ठे होय, सर्व वश्य धापें तस जोय ।। १६ ।।
कुंकुम गोरोचन्दन सार, मृग मद सों चौदस रविवार ।
पवित्र पणे पुण्य मूल नक्षत्र, एकमना लखिये जो यन्त्र ।। १७ ।।
पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ।
पंडित अमर सुन्दर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ।। १८ ।।
।। इति छन्द महिमा ।।

अथ यंत्र महिमा छंद का भावार्थ :

बीसा यत्र सोलह कोठे मे लिखकर पास मे रखने से तमाम तरह के भय का नाश होता है। २८ (अट्ठाइसा) यत्र रोग भय को नष्ट करता है। ३६ (छत्तीसा) यत्र द्यु ति सट्टा करने वाले पास रखकर करे तो विजय होती है। ३० (तीसा) यत्र से शाकिनी भय नष्ट होता है। ३२ (वत्तीसा) यत्र से कष्ट के समय उपयोग करने से सुख से प्रसव होता है। ३४ (चौतीसा) यत्र देवध्वजा पर लिखा जाय तो शुभकारक है। पर चक्र अथवा किसी के द्वारा भय प्राप्त होने वाला हो तो उसे मिटाता है। मकान के वाहर दीवार पर लिखने से पराभव नही होता। कामण टुमण का जोर नही चलता। शाकिनी आदि पलायण हो जाती है। ४० (चालीसा) यत्र से सिरदर्द मिट जाता है। वैरी पावो मे गिरता है। गांव मे परगने में मान-सम्मान वढता है। ६२ (वासठ) के यत्र से वन्ध्या स्त्री भी मान-सम्मान गर्भ स्थिर धारण करती है। चौसठिया यत्र की महिमा वहुत है। मार्ग मे सर्व प्रकार के भय से वच जाता है। ७२ (वहत्तरिया) यंत्र से भूतप्रेत का भय नष्ट होता है,

सग्राम में विजय पाता है। ८५ (पिच्चासिये) यत्र से मार्ग का भय मिटता है। अट्ठोत्तरिये यंत्र से शिव सुख दाता सर्व कष्ट को नष्ट करने वाला है। २० (बिशोत्तर) सो यत्र बड़ा होता है जिससे प्रसव सुख रूप होता है। वेदना मिटती है। ५२ (बावन सौ) यत्र को पानी से धोकर मुख धोवे तो भाईचारा स्नेह बढता है। भाई बहिन के आपस मे प्रेम रहता है। १७० (एक सौ सत्तरिये) यत्र की महिमा बहुत है। इसका वर्णन तुच्छ बुद्धि से मनुष्य नही कर सकता। १७२ (एक सौ बहत्तरिया) यत्र से बालक को लाभ होता है, भय मिटता है। २०० (दो सौ) का यत्र दूकान के बाहर दीवार पर या मागलिक स्थापना के पास लिखने से व्यापार बढता है। ३०० (तीन सौ) के यंत्र से नर नारी का प्रेम बढता है और टूटा हुआ स्नेह फिर जुड जाता है। ४०० के यंत्र से घर मे भय नही होता। खेत पर लिखने से वा लिखकर खेत मे रखने से उत्पत्ति अच्छी होती है। ५०० के यत्र से स्त्री को गर्भ धारण हो जाता है, और साथ ही पुरुष भी बाधे तो सतति योग भी होता है। बनता है। ६०० (छ. सौ) के यत्र से सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। ७०० के यत्र बाधने से झगड़े टटो मे विजय करता है। ६००(नोसौ)के यंत्र से मार्ग मे भय नही होता, तस्कर का भय मिटता है। १०००(सहस्त्रिये) यन्त्र से पराजय-परभव नही होता और विजय पाता है। ११०० (ग्यारह सौ) के यत्र से दुष्टात्मा की ओर से भय क्लेश होता हो तो वह मिट जाता है। १२०० (बारह सौ) के यत्र से बन्दीवान् मुक्त हो जाता है। १०००० (दस सहस्त्रिये) यत्र से बन्दीवान मुक्त हो जाता है। ५०००० (पचास सहस्त्रिये) यत्र से राज मान मिलता है, कष्ट मिटता है। इस तरह प्राचीन छन्द का भावार्थ है। इसमें बताये बहुत से यंत्र हमारे सग्रह मे नही है, लेकिन यत्र महिमा और उनमे होने वाले लाभ का पाना छन्द भावार्थ से समझ में आ सकेगा। जिनको आवश्यकता हो यत्र शास्त्र के निष्णात से लाभ उठावे।

यंत्र लेखन गन्ध।। यत्र अष्ट गध से और यक्ष कर्दम से लिखे जाते है और कलम के लिए भी अलग विधान है।। अनार की चमेली की और सोने की कलम से लिखना बताया है सो यत्र के बयान मे जिस प्रकार की कलम या गंध का नाम आवे वैसी तैयारी कर लेना चाहिये। लिखते समय कलम टूट जाय तो यत्र से लाभ नही हो सकेगा और लिखते समय गधादि भी कम न हो जाय जिसका उपयोग पहले ही कर लेना चाहिये।। अष्ट गध मे अगर, तगर, गोरोचन, कस्तूरी, चन्दन, सिन्दूर, लाल चंदन कपूर इनको एक खरल में घोट कर तैयार कर लेना चाहिये। स्याही जैसी रस बना लेनी चाहिये।। = ।। अष्ट गध का दूसरा प्रकार कपुर, कस्तुरी, केशर, गोरोचन, सधरफ, चन्दन और गेहुँला। इस तरह आठ वस्तु का बनता

है । अष्टगध का तीसरा विधान' केशर, कस्तुरी, कपूर, हिंगुल, चन्दन, लाल चन्दन, अगर, तगर लेकर घोटकर तैयार कर लेना । पच गध का विधान केशर, कस्तुरी, कपूर, चन्दन, गोरोचन इन पाच वस्तु का मिश्रण कर रस वना बेना ।।=।। यक्ष कर्दम का विधान, चन्दन, केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तुरी, गोरोचन, हिगुल रत्ता जणी, अम्वर सोने का वर्क, मिरच, ककोमु इन सबको लेकर स्याही जेसा रस वना लेवे ।। ऊपर वताए अनुसार स्याही जैसा रस तैयार कर पवित्र कटोरी या अन्य किसी स्वच्छ पात्र मे लेना । ध्यान रखिये कि जिसमे भोजन किया हो अथवा पानी पिया हो तो वह कटोरी काम मे नही आ सकेगी । स्याही यदि तत्कालिक वनाई हो अथवा पहले वनाकर सुखाकर रखी हो तो उसे काम मे ले सकते है । सव तरह के गध या स्याही की तैयारी मे गुलाब जल काम मे लेना चाहिये और अनार की या चमेमी की कलम एक अ गुल से याने ग्यारह तेरह अंगुल लम्वी होनी चाहिए और याद रखिये कि ग्यारह अ गुल से कम लेना मना है । सोने का निब हो तो वह भी नया होता चाहिए जिससे पहले कभी न लिखा हो । जिस होल्डर मे निब डाला जाय उसमे लोहे का कोई अ श नही होना चाहिए । इस तरह की तैयारी व्यवस्थित रूप से की जाय ।। भोजपत्र स्वच्छ हो, दाग रहितहो, फटा हुआ नहीहो ऐसा स्वच्छ देखकर लेना और यत्र जितना वडा लिखना हो उससे एक अ गुल अधिक लम्वा, चौडा लेना चाहिए । भोजपत्र न मिले तो अभाव मे आवश्यकता पूरी करने को कागज भी काम ले सकते है ।।=।। यत्र लेखन योजना ।।=।। जव यत्र का साधन नया सिद्धि करने के लिए वैठे उससे पहले यन्त्र को लिखने की योजना को समझ ले । विना समझे या अभ्यास किये वगैर यत्र लिखोगे तो उसमे भूल हो जाना सभव है । मान लो भूल हो गयी लिखे हुए अक को काट दिया या मिटा दिया और उसकी जगह दूसरा लिखा हो वह भी यत्र लाभदायक नही होगा यदि अक लिखते समय अधिक या एक के बदले दूसरा लिखा गया तो वह भी एक प्रकार की भूल मानी गयी है । अत इसी तरह से लिखा गया हो तो उसका कागज या भोजपत्र, जिस पर लिख रहे हो उसको छोड दो और दूसरा लेकर लिखने लगो इस तरह एक भी भूल न होने पाए । इसीलिए पहले लिखने का अभ्यास कर लेना चाहिए ।। यत्र लिखते समय यत्र मे देख लो कि सवसे छोटा या कम गिनती वाला अक किस खाने मे है ।। और जिस खाने मे हो उसी खाने से लिखना शुरू किया जाय और वृद्धि वाले अक से लिखते जाओ । जैसे यत्र मे सवसे छोटा अक पजा है तो पाच का अक जिस खाने मे है उसी खाने से लिखने की शुरुआत करो और वाद मे वृद्धि पाते हुए याने छ सात, आठ, जो भी सख्या लिखे हुए को पहली अधिक हो उसे लिखते हुए यत्र पूरा लिख लो । ऐसा कभी मत करना कि यत्र के खाने अकित किए वाद प्रथम के खाने मे जो अक हो उसे लिखकर वाद मे जो खाने है

उनमे लाइन सिर लिखते जाओ। यदि इस तरह से यत्र लिखा गया हो तो वह यत्र लाभ नही पहु चा सकेगा। इसलिए यंत्र लिखने की कला बराबर सीख लेनी चाहिए। और लिखते समय वराबर सावधानी से लिखना योग्य है "यत्रो की योजना" यत्र मे जो विविध प्रकार के खाने होतें है जिसमे से कई यत्र तो ऐसे होते है कि जिनमे लिखे अंको को किसी भी तरह से गिनते हुए अन्त की सख्या एक ही प्रकार की आवेगी। बहुधा इस प्रकार के यत्र आप देखेगे इस तरह की योजना से यह समझ मे आता है कि यंत्र अपने बल को प्रत्येक दिशा मे एकता रखता है और दिशा मे भी निज प्रभाव को कम नही होने देता ॥ यत्रो मे भिन्न भिन्न प्रकार के खाने होते है, और वह भी प्रमाणित रूप से व अको से अकित होते है। जिस प्रकार प्रत्येक अक निज बल को पिछले अक मे मिला दश गुना बढा देना है। तदनुसार यह योजना भी यत्र शक्ति को वढाने के हेतु की गयी, समझना चाहिये। जिन यंत्रो मे विशेष खाने हो और उन खानो मे अकित किए हुए अको को किधर से भी मिलान करने से एक ही योग की गिनती आती हो तो इस तरह के यत्र अन्य हेतु से समझना चाहिए और ऐसे यत्रो का योगाक करने की भी आवश्यकता नही होती है। ऐसे यत्र इस तरह देवो से अधिष्ठित होते है कि जिनका प्रभाव बलिष्ट होता है—जैसे भक्तामर आदि के यत्र है। इसलिए जिन यत्रो मे योगाक एक मिलता हो उनके प्रभाव मे या लाभ प्राप्ति के लिए शंका करने की आवश्यकता नही है॥ **यंत्र लेखन विधान** ॥ ८ ॥ यत्र लिखने बैठे तब यदि यत्र के साथ विधान लिखा हुआ मिलेगा तो उस पर ध्यान देना चाहिए और खासकर यत्र लिखते मौन रहना उचित है। सुखासन से आसन पर बैठना सामने छोटा बडा पाटिया या बाजोठ हो तो उस पर रखकर लिखना परन्तु निज के घुटने पर रखकर कभी न लिखना चाहिए। क्योकि नाभि के नीचे का अग ऐसे कार्यों मे उपयोगी नही माना है।

प्रत्येक यत्र के लिखते समय धूप, दीप आदि अवश्य रखना चाहिए और यन्त्र विधान मे जिस दिशा की तरफ मुख करके लिखना बताया हो देख लेवे। यदि न लिखा मिले तो सुख-सम्पदा प्राप्ति के लिए पूर्व दिशा की तरफ और सकट-कष्ट, आधि-व्याधि के मिटाने को उत्तर दिशा की तरफ मुख करके वैठना चाहिए। तमाम क्रिया करे तो शरीर शुद्धि कर स्वच्छ कपडे पहिन करके विधान पर पूरा ध्यान रखना॥ ॥ **यंत्र चमत्कार** ॥—यत्र का वहुमान कर उनसे लाभ प्राप्त करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। वार्षिक पर्व दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर या अन्दर जहाँ देव स्थापना हो वहाँ पर पन्दरिया चोतीस पेसठिया यत्र लिखने की प्रथा है। जगह-जगह वहुत देखने मे आती है। विशेष मे यह भी देखा है कि गर्भवती स्त्री कष्ट पा रही हो और छुटकारा न होता हो तो विधि सहित यत्र लिखकर उस

स्त्री को दिखाने मात्र से ही छुटकारा हो जाता है। और किसी स्त्री को डाकिनी शाकिनी सताती हो तो यत्र को हाथो पर या गले मे बाँधने मात्र से या सिर पर रखने से व दिखाने मात्र से आराम हो जाता है ।। प्राचीन काल मे ऐसी प्रथा थी कि किले या गढ की नीव लगाते समय अमुक प्रकार का यत्र लिख दीपक के साथ नीव के पास मे रखते थे। इस समय भी बहुत से मनुष्य यत्र को हाथ मे बाँधे रहते हैं, और जैन समाज में तो पूजा करने के यत्र भी होते हैं जिनका नित्य प्रति प्रक्षाल कराया जाता है। और चद । से पूजा कर पुष्प चढाते हैं। इस तरह से यत्र का बहुमान प्राचीन काल से होता आया है जो अब तक चल रहा है ।। साथ ही श्रद्धा-वान लोग विशेष लाभ उठाते है। श्रद्धा रखने से आत्म विश्वास बढता है। साथ ही श्रद्धा भी फलती है। जिस मनुष्य को यत्र पर भरोसा होता है उसे फल भी मिलता है। एक निष्ठ रहने की प्रकृति हो जाती है और इतना हो जाने से आत्म बल, आत्म गुण भी बढता है। परिणाम मजबूत होते है और आत्म शुद्धि होती है। इसलिए विश्व स रखना चाहिए।

यंत्र लेखन कैसे करवाना ।।—।। जो मनुष्य मन्त्र शास्त्र यत्र शास्त्र के जानकार और अक गणित जानने वाले ब्रह्मचारी, शीलमान, उत्तम पुरुष हो, उनसे लिखवाना चाहिए और ऐसे सिद्ध पुरुष का योग न पा सके तो जिस प्रकार का विधान प्रति मन्त्र के साथ लिखा हो उसी तरह से तैयारी कर मन्त्र लेखन करे। और लिखते ही यत्र को जमीन पर नही रखना और जिसके लिए बनाया हो उसे सूर्य स्वर या चन्द्र स्वर मे देना चाहिए ।। लेने वाला बहुमान पूर्वक ग्रहण करते समय देव के निमित्त फल भेट करे तो अच्छा है। यत्र लेने के बाद सोने के चाँदी या ताँबे के माद लिए मे यत्र को रख देना भी अच्छा है। यदि माद लिया न रखना हो तो वैसे ही पास मे रख सकते है। यत्र को ऐसे ढग से रखना उचित है कि वह अपवित्र न हो सके मृत्यु प्रसग मे लोकाचार मे जाना पडे तो वापसी आने पर धूप खेने से पवित्रता आ जाती है ।। – ।।

शकुनदा पन्दरिया यन्त्र ।।१।।

पदरिया यन्त्र आपके सामने है इसमे एक से नौ अक तक की योजना है। इसलिए इसको सिद्ध चक्र यन्त्र भी कहते है। इस यन्त्र पर शकुन लिए जाते है। तावे के पत्रे पर या कागज पर अप्ट गध से अच्छे समय मे यत्र लिख लिख लिया जाय और जहा तक हो सके (आम) आवे के पाटिया का वना हुआ पाटला हो उस पर स्थापित करे। आबे का पाटिया न मिल सके तो जैसा भी मिले उस पर स्थापित कर धूप से निज हाथो को स्वच्छ कर नवकार मन्त्र नौ वार वोलकर तीन चावल या तीन गेहूँ के दाने लेकर ऊपर छोड़ देवे। जिस अक पर

कण अर्थात् दाने गिरे उसका फल इस तरह समझ लेवे । चोके छक्के दीसे नही । शकुन वीचारी

यन्त्र नं. १

४	३	८
९	५	१
२	७	६

आवे, बीये अट्ठे सात तिये बात सुनावे । रुके पञ्जे नव निधि पावे ।। इस तरह फल का विचार कर कार्य की सिद्धि को समझ लेना ।।१।।

द्रव्य प्राप्ति पन्दरिया यन्त्र ।।२।।

इस यत्र से वहुत से लोग इसलिए परिचित है कि दिवाली के दिन दुकान मे पूजन विधान मे लिखते है । जब कार्य की सिद्धी के लिए लिखना है तो सिन्दूर से लिखना चाहिए ।

यन्त्र न. २

४	३	८
९	५	१
२	७	६

पहले छोटे खाने शुद्ध कलम से बनाकर एक अक छट्टे खाने है वहा से शुरुआत करे । सातवे खाने मे दो का अंक दूसरे मे तीन का अक इस तरह चढते अंक लिखना चाहिये और बाद मे चन्दन या कु कुम से पूजा कर पुष्प चढाना धूप खेय कर नैवेद्य फल चढा कर हाथ जोड लेना चाहिये यही इसका विधान है । यत्र लिखते समय जहाँ तक हो सके श्वास स्थिर रख मौन रहकर लिखना चाहिए और हो सके तो नित्य धूप खेव कर नमन कर लेना चाहिए ।।२।।

वशीकरण पंदरिया यन्त्र ।।३।।

यह पदरिया यत्र भोज पत्र या कागज पर पच गध से लिखना चाहिए। विशेषकर शुक्ल पक्ष मे पूर्व तिथि के दिन शुभ नक्षत्र मे घी का दीपक सामने रख, धूप खेयकर चमेली की

यन्त्र न० ३

६	७	२
१	५	९
८	३	४

यन्त्र न० ४

२	७	६
९	५	१
४	३	८

कलम से लिखना और इस यत्र को पास रखना चाहिए। शीघ्र से सिद्ध करना है तो जिस काम पर कावू करना है प्रात काल मे यन्त्र को धूप से खेवे और कार्य का नाम लेवे। यन्त्र को नमन कर पास मे रख ले कार्य सिद्धि हो जाती है ।।३।।

उच्चाटन निवारण पन्दरिया यन्त्र ।।४।।

यह यन्त्र उच्चाटन या उपद्रव को नाश करने मे सहायक होता है। प्राचीन समय से ऐसी पद्धति चली आती है कि इस यत्र को दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर लिखते है और इस यत्र को लिखने का कारण यही है कि भय का नाश हो और सुख सम्पदा आवे। लिखते समय धूप दीप रखना और सिन्दूर से चमेली की कलम से लिखना चाहिए। दरवाजे के सिरे पर कोई मागलिक स्थापन हो तो उसके दोनो तरफ लिखना। स्थापना न हो तो दरवाजे मे जाते दाहिनी तरफ ऊपर के भाग मे लिखना चाहिए। इस यन्त्र को जव किसी मनुष्य को भय उत्पन्न हुआ हो और उसे वास्तविक भय के सिवाय वहम भी हो रहा हो तो उसके निवारण के लिए भोज पत्र पर अष्ट गध से लिखकर पास मे रखने से स्थिरता आयेगी, वहम दूर होगा। यत्र को दशाग धूप से खेना चाहिए ।।४।।

प्रसूति पीडा हर यंत्र (पंदरिया यंत्र)

प्रसूति को प्रसव के समय पीडा हो और शीघ्र छुटकारा न हो तो कुटुम्ब में चिंता बढ जाती है। जब ऐसा समय आया हो तो इस यत्र को सिन्दूर से या चन्दन से अनार की

यन्त्र न० ५

८	३	४
१	५	९
६	७	२

कलम से मिट्टी की कोरी ठीकरी जो मिट्टी के टूटे हुए बर्तन की हो। इसमें लिखकर लोबान से खेबकर प्रसूति वाली को बताने से प्रसब शीघ्र हो जायगा। प्रसूति स्त्री यत्र को एक दृष्टि से कुछ देर देखती रहे, और इतने पर से प्रसव शीघ्र नहौ होवे तो चदन से लिखे हुए यंत्र को स्वच्छ पानी से उस ठीकरी पर के यंत्र को धोकर वह पानी पिला देवे तो प्रसूति पीड़ा मिट जायगी ॥५॥

मृत्यु कष्ट दूर पंदरिया यन्त्र ॥६॥

यह यत्र उन लोगो के काम का है जो जीवन की जोखिम का काम करते है। जल में, स्थल मे, व्योम मे या वराल यत्र से आजीविका चलाते हो या ऐसा कठिन काम हो कि

यन्त्र न० ६

८	१	६
३	५	७
४	९	२

जिनके करते समय आपत्ति आने का अनुमान किया जाता है। इस यत्र की तरह के कार्य करने

वाले इस यत्र को यक्ष कर्दम से लिखकर अपने पास रखे तो अच्छा है। इस यन्त्र को अनार की कलम से लिखना चाहिए और दिवाली के दिन मध्य रात्रि मे लिखकर पास मे रखे तो और भी अच्छा है। दिवाली के दिन नही लिखा जाय तो अच्छा दिन देखकर विधान के साथ लिख मादलिये मे रख पास मे रखे ॥६॥

पिशाच पीड़ा हर यन्त्र नं. ॥७॥ (सत्तरत्रिया यंत्र)

पिशाच, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी इत्यादिक कष्ट पहुचाता हो तो उसे निवारण करने के लिये ऐसे यन्त्र को पास मे रखना चाहिये। भोजपत्र या कागज पर यक्ष कर्दमसेअनार या चमेली की कलम से अमावस्या, रविवार और मूल नक्षत्र इन तीनो मे एक जिस दिन हो

यन्त्र न० ७

॥	७	२	७॥
४	५॥	२॥	५
६॥	१	८	१॥
६	३॥	४॥	३

स्वच्छ होकर मौन रह कर इस यन्त्र को लिखे लोबान व धूप दोनो का धुआ चलता रहे। उत्तर दिशा या दक्षिण दिशा की तरफ लाल या श्याम रग के आसन पर बैठ कर लिखो। विशेष वात सात रग के रेशम का धागा से यन्त्र को लपेट देवे और मादलिये मे रख ले या कागज मे लपेट अपने पास रखे। विशेष जिसके लिये वनाया हो उसका नाम यन्त्र के नीचे लिखे कि "शाकिनी पीडा निर्वाणार्थ या भूत पीडा निर्वाणार्थ। जिसकी ओर से पीडा होती हो उसका नाम लिखे। किसी मनुष्य को कोई शत्रु या क्रूर मनुष्य सताता हो, कष्ट पहु चाता हो, हैरान करता हो, परेशान करता हो तो यन्त्र लिखे अमुक द्वारा उत्पन्न पीडा के निवार्णार्थ ऐसा लिखाना चाहिए और तैयार करने के वाद पास मे रखे तो कष्ट हो रहा होगा उससे शाति मिलेगी। दोनो विधान मे यक्ष कर्दम मे लिखना चाहिए ॥७॥

सिद्धिदाता बीसा यन्त्र ।।८।।

बीसा यन्त्र वहुत प्रसिद्ध है और यह कई तरह के होते है जैसा कार्य हो वैसे यन्त्र वनाया जाय, तो लाभ होता है । इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र चमेली की या सोने की कलम से लिखना चाहिए । भोजपत्र स्वच्छ लेकर गुरु पुष्पवार विपुण्य योग हो । उस दिन या पूर्णा तिथि

यन्त्र न० ८

९	४	७
५	७	८
६	९	५

को लिखे और पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके लिखे । दीपक धूप सामने रखे । यन्त्र तैयार होने के बाद जिसको दिया जाय वह खड़ा हो दोनो हाथो मे लेकर मस्तक चढावे और पाख रखे तो ससार के कामो मे सिद्धि मिलती है ।।८।।

लक्ष्मीदाता विजय बीसा यन्त्र ।।९।।

इस यन्त्र को लिखना हो तब आम्बे के पटिये पर गुलाल छीडक कर उस पर चमेली की कलम से एक सौ आठ बार यन्त्र लिखे वही गुलाल या दूसरी गुलाल छाटता रहे ।

यत्र नं० ९
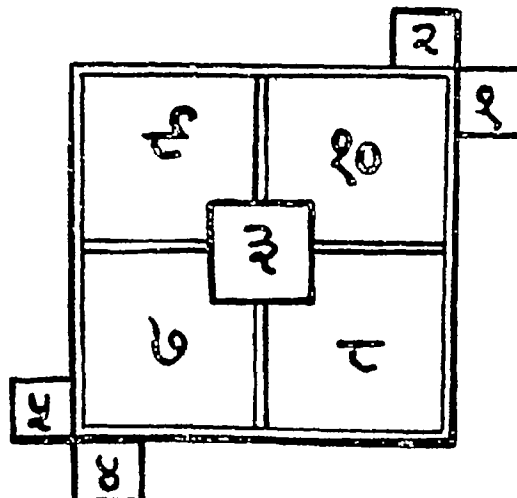
वारीक कपडे मे गुलाल रखकर पोटली वनाने से छांटने मे सुविधा होगी। जव एक सौ ग्राठ वार लिख ले तव उसी समय ग्रष्ट गध से भोज पत्र पर या कागज पर यन्त्र को लिख कर पास मे रखे तो उत्तम है। व्यापार या क्रय विक्रय का कार्य पास मे रख कर किया करे ग्रौर हो सके तो नित्य धूप भी देवे ।।९।।

सर्व कार्य लाभ दाता बीसा यन्त्र ।।१०।।

यह यन्त्र तमाम कार्य को सिद्ध करता है। इस यन्त्र को तावे के पत्रे पर या भोज पत्र पर लिख कर तैयार कर अष्ट गध और चमेली की सोने की कलम से लिखे। शुक्ल पक्ष शुभ

यन्त्र न० १०
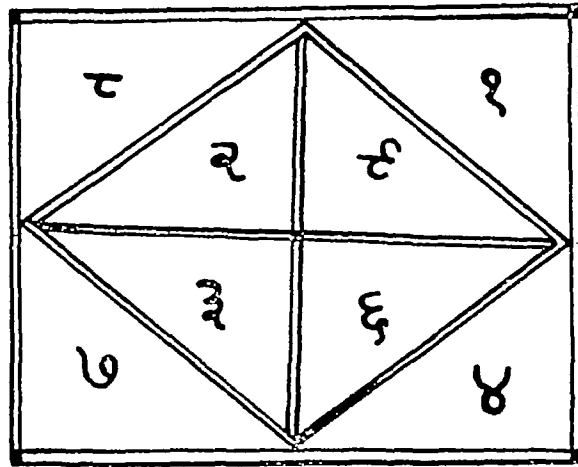
वार पूर्णा तिथि या सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग हो उस दिन लिख कर रख लेवे और अमृत धूप दीप रख लेवे प्रात काल से यन्त्र की स्थापना कर सामने सफेद ग्रासन पर बैठकर नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे। जाप कम से कम साढे बारह हजार और अधिक करे तो सवा लाख जाप पूरा कर, फिर यन्त्र को पास मे रख कर कार्य करे।।

मन्त्र —ॐ ह्री श्री सर्व कार्य फलदायक कुरू कुरू स्वाहा । यन्त्र तैयार हो जाने के वाद जव पास मे रखा जाय ग्रौर ग्रनायास प्रसूति ग्रह या ग्रत देह दाह क्रिया मे जाना हो तो वापस ग्राकर यन्त्र को धूप खेवने मात्र से शुद्ध हो जायगा ।।१०।।

शांति पुष्टि दाता बीसा यन्त्र ।।११।।

शाति पुष्टि मिलने के लिये यह यन्त्र वहुत उत्तम माना गया है। जव इस तरह का यन्त्र तैयार करना हो तो स्वच्छ कपडे पहिन कर पूर्व दिशा की ओर देखता हुआ वैठकर धूप दीप

रख कर इष्ट देव का स्मरण कर इस यन्त्र को आबे के पटिये पर एक सौ आठ बार गुलाल छीडक कर लिखो और विधि पूरी होने पर भोज पत्र या कागज पर, अष्ट गध से लिखकर यत्र

यन्त्र न० ११
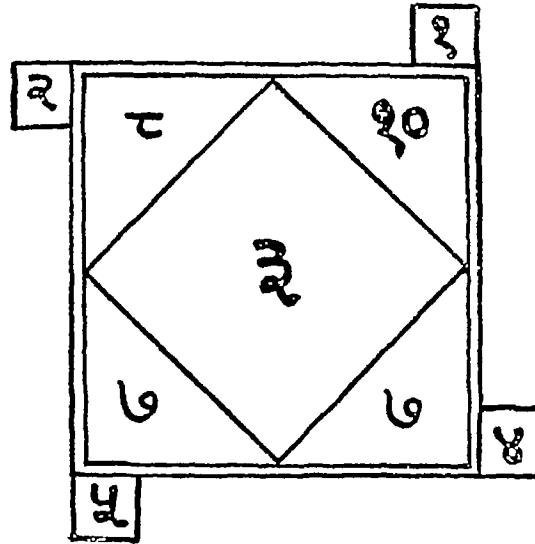
को अपने पास मे रखे। जिसके लिये यन्त्र बनाया हो उसका नाम यन्त्र मे लिखो अर्थात् मनुष्य के श्रेयार्थ ऐसा लिख शुभ समय मे हाथ मे चावल या सुपारी ले कर यत्र सहित देवे। लेने वाला लेते समय तो आदर से लेवे, और कुछ लेने वाला भेट यन्त्र के नाम से कर धर्मार्थ खर्च करे। यह यन्त्र शुभ फल देने वाला है। शाति पुष्टि प्रदायक है। श्रद्धा रख कर पास मे रखने से फलदायक होता है।
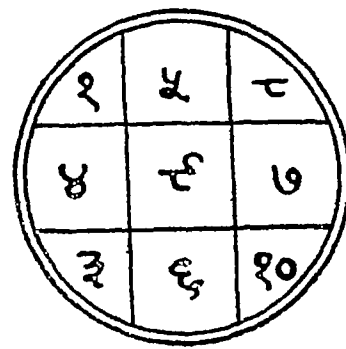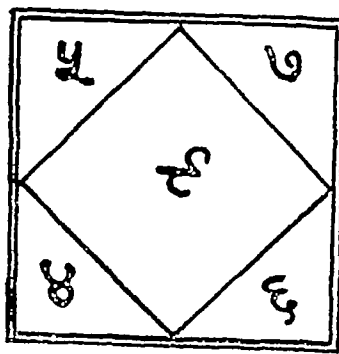
बाल रक्षा बीसा यन्त्र ॥१२॥

इस यन्त्र की योजना मे एक अक्षर बाये से दाहिने और का एक खाना बीच मे छोड़कर दो बार आया है जो रक्षा करने मे बलवान है। इस यन्त्र को शुभ योग मे भोज पत्र या कागज पर अष्ट गन्ध से अनार की कलम से लिखो और लिखने के बाद भेट कर ऊपर रेशम का धागा लपेटते हुए नो आटे लगा देवे। बाद मे धूप खेवे मादलिये मे रखे। गले मे या कमर पर जहाँ

यन्त्र नं० १२

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

सुविधा हो वाध देवे वास्तव मे गले मे वाधना अच्छा रहता है। इसके प्रभाव मे वालक वालिका के लिये भय, चमक, डर आदि उपद्रव नही होते और हर प्रकार से रक्षा होती है ।।१२।।

आपत्ति निवारण बीसा यन्त्र ।।१३।।

मनुष्य के लिये आपत्ति तो सामने खडी होती है। ससार आधि-व्याधि उपाधि की खान है। जव जव कष्ट आते है तव मित्र भी बैरी बन जाते हैं। ऐसे समय मे इस यन्त्र द्वारा शाति मिलती है। आपत्ति को आपत्ति मानता रहे और हताश होता रहे तो अस्थिरता बढती

यन्त्र न० १३
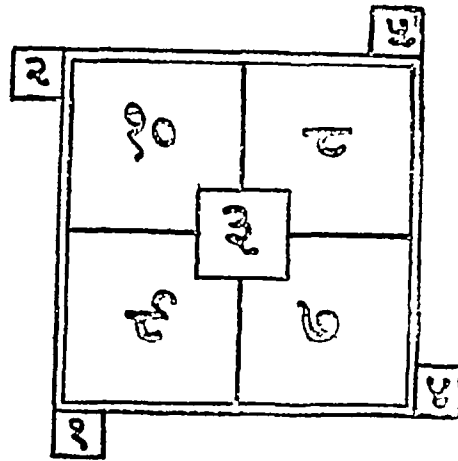
है। अत इस यन्त्र को पच गध से चमेली की कलम से भोजपत्र या कागज पर लिख कर पास मे रखो और जिस मनुष्य के लिये यन्त्र वनाया हो उसका नाम यत्र मे लिखो अमुक की आपत्ति

निवारणार्थ ऐसा लिख कर समेट कर चांवल, सुपारी, पुष्प और यत्र हाथ मे दे देवे। लेने वाला मत्र को पास मे रखे और चावल सुपारी आदि जल मे प्रवेश करा देवे। आपत्ति से बचाव होगा और आपत्ति को नष्ट करने मे हिम्मत पैदा होगी। दिमाग मे स्थिरता आवेगी साथ ही अपने इष्ट देव के स्मरण को भी करता रहे। इष्ट का आराधना ऐसे समय मे बहुत सहायक होता है। और दान, पुण्य करने से आपत्ति का निवारण होता है। इस बात का ध्यान रखे। इष्ट सिद्धि होगी ।।१३।।

गृह क्लेश निवारण बीसा यन्त्र ।।१४।।

ग्रह क्लेश ग्रहस्थ के यहाँ अनायास छोटो बडी बात में हुआ करता है और सामान्य क्लेश हुआ हो तो जल्दी नष्ट हो जाता है परन्तु किसी समय ऐसा हो जाता है कि उसे दूर करने मे कई तरह की कठिनाईयां आ जाती है और क्लेश, दिन-दिन बढता रहता है। और ऐसे समय मे यह बीसा यत्र बहुत काम देता है। इस यत्र को भोज पत्र या कागज पर यक्ष कर्दम से

यन्त्र नं० १४
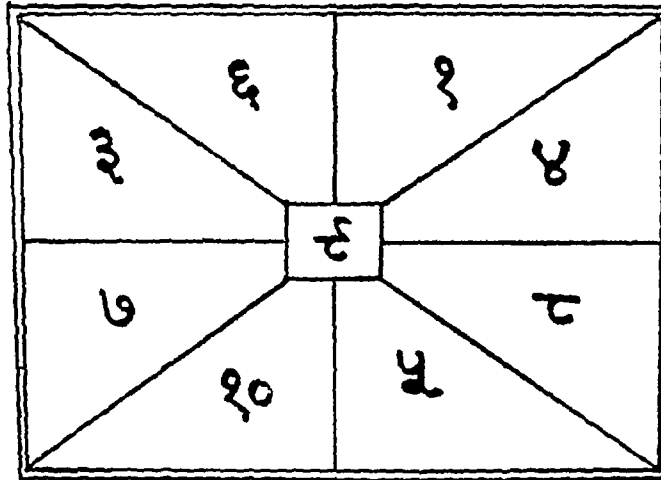
लिखना चाहिये और लिखने के वाद एक यंत्र को ऐसी जगह लगा देना कि जिस पर सारे कुटुम्व की दृष्टि पडती रहे और एक यंत्र घर का मुखिया पुरुष निज के पास में रखें और पहला यत्र जिस जगह लगाया हो वह शरीर भाग से ऊ ची जगह पर लगावे और नित्य धूप खेय कर उपसम होने को प्रार्थना करे तो क्लेश नष्ट हो जाएगा। प्रत्येक कार्य में श्रद्धा रखनी चाहिये। इष्ट देव के स्मरण को कभी नही भूलना, जिससे कार्य की सिद्धि होगी ।।१४।।

लक्ष्मी प्राप्ति बीसा यन्त्र ।।१५।।

ससार मे लक्ष्मी की लालसा अधिक रहा करती है। इसीलिये लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अनेक उपाय ससार मे गतिमान हो रहे है और ऐसे कार्यो की सफलता के लिये यह यंत्र काम मे आता है। जिसको इस यत्र का उपयोग करना हो तब उत्तम समय देखकर अष्ट

यन्त्र न० १५
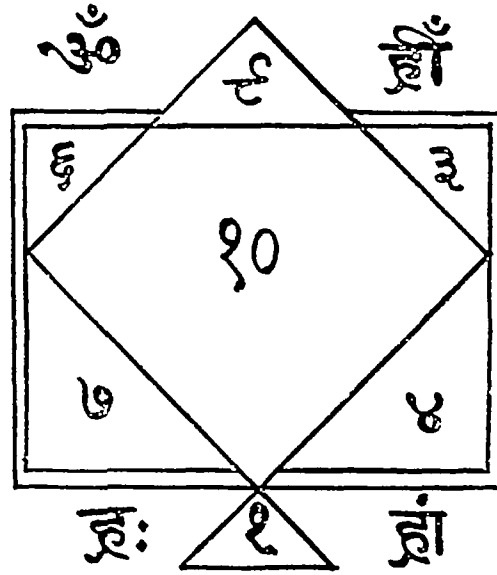
गध से या पच गध से लिखले। कलम सोने की या अनार की अथवा चमेली की जैसी भी मिल सके लेकर भोजपत्र या कागज पर लिखे और यत्र को अपने पास मे रखे। हो सके तो इस तरह का यत्र तावे के पत्र पर तैयार करा, प्रतिष्ठित करा, निज के मकान मे या दुकान मे स्थापना कर नित्य पूजा करे। सुवह शाम घी का दीपक कर दिया करे तो लाभ मिलेगा। इष्टदेव के स्मरण को न भूले। पुण्य सचय करे पुण्य से आशाएँ फलती है और दान देवे तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।।१५।।

भूत-पिशाच-डाकिनी पीड़ा हर बीसा यन्त्र ।।१६।।

जव ऐसा वहम हो जाय कि भूत पिशाच-डाकिनी पीडा दे रही हो तव यत्र-मत्र-तत्र वाले को तलाश की जाती है। और इस तरह के वहम अक्सर स्त्रियो को हो जाया करते है और ऐसे वहम का असर हो जाने से दिन भर सुस्ती रहती है रोती है, रुग्णता रखती है और ऐसे वहम का असर और पाचन शक्ति कम हो जाती है। और भी कई तरह के उपद्रव

हो जाने से घर के सारे मनुष्य चिंतातुर हो जाते है ओर यत्र मत्र वालो की तलाश करने मे बहुत साधन खर्च करते है ऐसे समय मे यह बीसा यत्र काम देता है। यत्र को यक्ष कर्दम से अनार को कलम से लिखना चाहिये लिखते समय उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठना और

यन्त्र नं० १६

यत्र भोज पत्र पर अथवा कागज पर लिखवा कर दो यत्र करा लेना। जिसमें से एक यंत्र को मादलिया मे रखकर गले मे या हाथ में बांध देना। दूसरा यत्र नित्य प्रति देखकर डब्बी मे रख देना और जिस समय पीडा हो तब दो-चार मिनट तक आंखे बन्द किये बगैर यंत्र को एक दृष्टि से देखकर वापस रख देना, सो पीडा दूर हो जायेगी, कष्ट मिटेगा और धन व्यय से बचत होगी। धर्म नीति को नही छोडना ॥१६॥

बाल भय हर इक्कीसा यन्त्र ॥१७॥

बालक को जब पीडा होती है, चमक हो जाती है तब अधिक भय पुत्र की माता को

यन्त्र नं० १७

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

हुआ करता है और जिस प्रकार से हो सके पीडा मिटाने का उपाय किये जाते है, और घर के सब लोग ऐसा अनुमान करते है कि किसी की दृष्टि लगने से या भय से अथवा चमकते यह पीडा हो गयी है। इस तरह की पीडा दूर करने मे यह यंत्र सहायक होता है। जब यत्र तैयार करना हो तब भोजपत्र अथवा कागज पर यक्ष कर्दम से अनार की कलम लेकर लिखना चाहिये। जब यत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ आटे देकर मादलिये मे रख गले मे या हाथ मे बाधने से पीडा मिट जाती है। आपत्ति चिता का नाश हो जाता है। बालक आराम पाता है। नित्य इष्टदेव के स्मरण को नही भूलना चाहिये ।। १७ ।।

नजर दृष्टि चौबीसा यन्त्र ।।१८।।

बालक को दृष्टि दोष हो जाता है। तब दूध पीने या कुछ खाते समय अरुचि हो जाने से वमन हो जाता है। पाचन शक्ति कम हो जाने से मुखाकृति रक्त रहित दिखने लगती

यन्त्र न० १८

७	६	११
१२	८	४
५	१०	९

है। इस तरह की हालत हो जाने से घर मे सबको चिंता हो जाती है। इस तरह परिस्थिति मे चौबीसा यत्र भोजपत्र अथवा कागज पर अनार की कलम लेकर यक्ष कर्दम से लिखना चाहिये और मादलिये मे रख गले मे या हाथ पर बाधना और जिस मनुष्य का या स्त्री की दृष्टि की दृष्टि दोष हुआ हो उसका नाम देकर दृष्टि दोष निर्वाणार्थ लिखना चाहिये यदि नाम स्मरण न हो तो केवल इतना ही लिखना कि दृष्टि दोष निर्वाणार्थ यत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे मे आटे देकर यत्र के पास मे रखे या गले पर या हाथ पर पर बाधे तो दृष्टि दोप दूर हो जाता है ।। १८ ।।

प्रसूती पीड़ा हर उन्तीसा यन्त्र ॥१९॥

यह यत्र उन्तीसा और तीसा कहलाता है। उपर के तीन कोठे और बायी तरफ के तीन कोठो मे तो उन्तीस का योग आता है। औरमध्यभाग के तीनों कोठे और नीचे के

यन्त्र न० १९

१५	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

तीन कोठे ओर ऊपर से नीचे तक मध्य विमाना व दाहिनी ओर के तीन कोठों मे तीस का योग आता है गर्भ प्रसव के समय मे यदि पीडा हो रही हो तब इस यंत्र को कुम्हार के अवाड़े की कोरी कोठरी पर अष्ट गध से लिखकर बताने से प्रसव सुख हो जाएगा। बताने के बाद भी पीडा होती है तो यत्र को पीतल या ताबे के पत्ते पर या थाली मे अष्ट गध से अनार की कलम से लिख कर धूप देकर धोकर पिलाने से पीड़ा मिटती है ओर प्रसव सुखपूर्वक हो जायगा ॥ १९ ॥

गर्भ रक्षा तीसा यन्त्र ॥२०॥

यह यत्र जब प्रसव का समय निकट नही और पेट मे दर्द या और तरह की पीडा

यन्त्र नं० २०

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

होती है तो उस यन्त्र को अष्ट गध से लिखकर पास मे रखने से पीडा मिटेगी। अकाल मे प्रसव नही होगा और शरीर स्वस्थ रहेगा ॥ २० ॥

गर्भ रक्षा पुष्टि दाता बत्तीसा यन्त्र ॥२१॥

यह यत्र गर्भ रक्षा के लिए उत्तम माना गया है। जव महिने दो महिने तक गर्भ स्थिर रहकर गिर जाता हो अथवा दो चार महीने बाद ऋतुस्राव हो जाता हो तो इस यंत्र को अष्ट गध से तैयार करके पास मे रख लेने से या कमर पर बाधने से इस तरह के दोष

यन्त्र न० २१

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

मिट जाते हैं। गर्भ की रक्षा होती है और पूर्ण काल मे प्रसव होता है। विशेष कर गर्भ स्थित रहने के पश्चात् वाल वुद्धि से जो स्त्री ब्रम्हचर्य नही पालती हो अथवा गर्म पदार्थ खाती पीती हो उसी गर्भ स्राव होना सभव है। और दो चार वार इस त ह हो जाने से प्रकृति ही ऐसी वन जाती है। इसलिये ऐसे अमगल करने वाले कार्य को नही करना चाहिये और यत्र पर विश्वास रखकर शुद्धता से रखेगे तो लाभ होगा ॥ २१ ॥

भयहर सुव्वं व्यवसाय वर्धक चौतीसा यन्त्र ॥ २२ ॥

इस यन्त्र को निज जगह व्यवसाय की रोकड रहती हो या धन-सम्पत्ति रखने का स्थान हो या तिजोरी के अन्दर दीवाली के दिन शुभ समय लिखकर दीप, धूप, पुष्प से पूजा करते रहना। यदि नित्य नही हो सके तो आपत्ति भी नही है। इस यन्त्र को अष्टगध से लिख-

यन्त्र नं० २२

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

कर पास मे रखा जाय तो उत्तम है। तांबे के पत्रे पर तैयार कर प्रतिष्ठित करके तिजोरी मे रखना भी अच्छा है। जैसा जिसको अच्छा मालूम हो करना चाहिए ।। २२ ।।

मंत्राक्षर सहित चौंतीसा यंत्र ।। २३ ।।

यह चौतीसा यन्त्र बहुत चमत्कारी है। धन की इच्छा करने वाले और ऋद्धि सिद्धि जय विजय के इच्छुक लोगो की मनोकामना सिद्ध करने वाला यह यन्त्र है। इस यन्त्र को ताँबे

यन्त्र न० २३

ॐ	ह्री	श्री	क्ली	ध	न
कुरु	९	१६	८	१	दा
कुरु	६	३	१३	१२	य
द्धि	१५	१०	२	७	म
सि	४	५	११	१४	म
य	ज	द्धि	वृ	द्धि	ऋ

के पतडे पर तैयार कर प्रतिष्ठित करा लेवे और हो सके तो मंत्र एक लाख जाप यन्त्र के सामने धूप, दीप, रख कर लेवे। यदि इतना जाप नही हो सके तो साढे वारह हजार जाप तो अवश्य कर लेना चाहिये। जाप करते मत्र वोला जाय उसमे एक गुरु कम है वह यह है कि मत्र के अन्त मे स्वाहा पल्लव से जाप करता जाय अर्थात कुरु कुरु स्वाहा करना चाहिये जिसमे मत्र शक्ति वढ़ेगी और यत्र-मत्र नव पल्लववति जैसा होकर लाभ पहुँचायगा। जाप करते समय एक यंत्र भोज पत्र पर तैयार कर जाप करते समय तावे के पतडे वाले यत्र के पास ही रखे। जव जाप सम्पूर्ण हो जाये तव भोजपत्र वाले यन्त्र को नित्य अपने पास में रखे और तावे के यत्र को, दुकान मे या मकान मे स्थापित कर नित्य दीप, पूजा किया करे। इतना कर लेने के वाद हो सके तो मत्र को एक माला नित्य फेर लवे। और नही हो सके तो कम से कम २१ जाप तो अवश्य करना चाहिये। श्रद्धा रख कर इष्ट देव का स्मरण करता रहे। नीति से चले और दान पुण्य करता रहे तो लाभ होगा ॥ २३ ॥

प्रभाव प्रशंसा वर्धक चौतीसा यंत्र ॥ २४ ॥

चौतीसा यत्र वहुत प्रसिद्ध है। और व्यापारी वर्ग तो इस यत्र का बहुमान विशेष प्रकार से करते हैं। मेदा पाट मरु भूमि और मालव प्रात मे व्यापारी लोग अपनी दुकान पर

यन्त्र न० २४

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

दीवाली के दिन लिखते है प्राचीन काल मे ऐसी प्रथा चलती हैं। कि शुभ समय मे सिन्दुर से गणपति के पास लिखते है। दरवाजे पर, मकान की दीवार पर लिखना हो तो हडमची से लिखना चाहिए। इस यत्र को लिखने के वाद धूप, पूजा कर नमस्कार करने से व्यापार चलता रहता है। और व्यापारियो मे इज्जत वढती है प्रशसा होती है और ऐसे यत्र भोज पत्र पर लिख-

कर पास में रखने से व्यापारी वर्ग में आगे वान की गिनती में आ जाता है। हर एक कार्य में लोग सलाह पूछने आयेंगे। परन्तु साथ ही कुछ योग्यता, बुद्धिमान, धैर्यता और निष्पक्षता भी होना चाहिये। सस्कार न हो और मिलन सार भी न हो तो यंत्र से साधारण फल मिलेगा। और परोपकारी स्वभाव होगा तो विशेष फल मिलेगा ॥ २४ ॥

धन प्राप्ति छत्तीसा यंत्र ॥२५॥

इस छत्तीसे यत्र को दीवाली के दिन रात्रि में लिखना चाहिये। शुभ मे दुकान के अन्दर सामने दरवाजे या मगल स्थापना के दाहिनी और अथवा दुकान के अन्दर सामने की

यत्र नं. २५

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

दीवार पर सिन्दूर से लिखे तो व्यापार बढता है। व्यापार करते समय किसी प्रकार का भय, सकट आता हो तो मिट जायगा, प्रभाव बढेगा और इस यंत्र को भोज पत्र पर लिख कर पास मे रखना भी शुभ सूचक है ॥२५॥

सम्पत्ति प्रदान चालीसा यंत्र ॥२६॥

चालीसा यत्र दो प्रकार का है। दोनो उत्तम है जो सामने है इस यंत्र को किसी भी महिने की सुदी पक्ष की एकादशी के दिन अथवा पूर्णिमा के दिन पच गध से लिखना चाहिये पंच गंध (१) केसर (२) कस्तूरी (३) कर्पूर (४) चन्दन (५) गोरोचन इन पाचो को मिश्रित कर उत्तम गध बनाकर स्वच्छ भोजपत्र पर लिखना चाहिये। यह यत्र पास में हो तो चोर, भय, मिटता है और नदी के किनारे या तालाब की पाल पर बाव आसन बिछाकर बैठे।

शुभ समय मे यत्र लिखे। लिखते समय दृष्टि जल पर भी पडती रहे और लिखते समय धूप, दीप, अखड रखे तो मने इच्छा पूर्ण होती है। इतना स्मरण रखना चाहिये कि ब्रह्मचर्य पालन

यत्र न २६

१२	१६	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

मे सभ्यता का व्यवहार करने मे और शुद्ध सम्यक वृती से रहने मे किसी प्रकार से कमी नही होनी चाहिये। आचरण शुद्ध रखने से क्रिया साधन फल देती है।।२६।।

ज्वर पीड़ा हर साठिया यंत्र ।।२७।।

यह साठिया यत्र ज्वर ताप एकान्तरा तिजारी आदि के मिटाने के काम मे आता है इस तरह के डोरे धागे व यत्र वनवाने की प्रथा छोटे गावो मे विशेष होती है और जो लोग

यत्र न. २७

१	९	१	१८
६	१३	१७	४
१९	२	८	११
३	१६	१४	७

जिसमे श्रद्धा रखते है उनको मत्र तत्र यंत्र फलते भी है इस तरह के कार्य मे इस यत्र को अष्ट

गध से तैयार कराके पास मे रखने से पीडा दूर होती है शाति मिलती है। भोजपत्र पर अथवा कागज पर लिख पीडित के गले या हाथ पर बांधने से अथवा पास में रखने से लाभ होता है। इस यत्र को कासे के स्वच्छ पात्र मे अष्ट गध से लिखकर पी सकता है, उत्तम पानी से धोकर पानी पिलाने से सभी ज्वरादि पीडा नष्ट हो जाती है ।।२७।।

चोबीस जिन पेसठिया यंत्र ।।२८।।

अथ पंच पष्टि यत्र गर्भित चतुर्विशति जिन स्तोत्रम । वन्दे धर्मं जिनसदा सुख करं चन्द्र प्रभं नाभिज । श्री मन्दिर जिनेश्वर जय करं कुन्थुं च शाति जिनम् । मुक्ति श्री फल दायनन्त मुनिप बधे सुपार्श्वं विभुं । श्री मन्मेध नृपात्म जंच सुखद पार्श्वं मनाडे भीष्टदम ।।१।। श्री नेमीश्वर सुव्रतोच विमल पद्म प्रभ सावर सेवे सभव श गूर नमि जिन मल्लि जया नदनम् । बदे श्रीजिन शीतल च सुविध सेवेड जित मुक्ति द श्री संघ वतपञ्च विशति नभ साक्षा दर वैष्णवम् ।।२।। स्तोत्रं सर्वं जिनेश्वरे रभिगत मन्त्रेषु मत्र वर एतत् स सङ्कृत यत्र एव विजयो द्रव्यौ लिखित त्वाश ु भे. पार्श्वे सन्ध्रिरा भाणा सब सुखदो माङ्गल्यमाला प्रदो वामागे वनिता नारास्त दितरे कुर्वन्तुये भावत: ।।३।। प्रस्थाने स्थिति युद्धवाद करणे राजादि सन्दर्शने । वश्यार्थे सुत हेत वैधन कृते रक्षन्तु पार्श्वे सदा । मार्गे सविण मे दवाग्नि ज्वलिते चिन्ता दिनि नशिने । यत्रो ऽय मुनि नेत्रसिह कविता सङ्ग स्थित सौख्यद: ।।४।। इति पच षष्टि यत्र स्थापना ।।२८।। उपर बताया हुआ स्तोत्र बोलते जाइये और जिन तीर्थंकर भगवान के नाम का अंक आवे, उतनो अंक सख्या लिखने से पेसठिया यत्र तैयार हो जाता है। इस तरह के यत्र को, ताबे के पतडे पर तैयार कर शुद्ध

यत्र न. २८

२२	२९	२	७
६	३	२६	२५
२८	२३	८	१
४	५	२४	२७

कराने के वाद घर में स्थापित कर ऊपर बताया हुआ स्तोत्र नित्य पढे, स्तुति वोल कर नमन करना चाहिये। इस तरह के यत्र को भोजपत्र पर लिखवा कर पास मे रखने से परदेश

जाते समय अथवा परदेश मे रहते समय मे लाभ होता रहेगा। किसी के साथ वाद विवाद करने से जय प्राप्त होगी राजा के पास अथवा और किसी के पास जाने से आदर होगा। नि. सन्तान को पुत्र प्राप्ति होगी निर्धन को धन प्राप्त होगा। मार्ग मे किसी प्रकार का भय नही होगा चोरो के उपद्रव से बचाव होगा। अग्नि प्रकोप से पीडा न होगी और अकस्मात भय मे

यत्र न. २६

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
६	२	१५	१८	११

रक्षा होगी चिता नष्ट होगी प्रत्येक कार्य मे विजय प्राप्त होगी इसीलिये जो अपना भविष्य उज्जवल बनाना चाहते हैं उन पुरूषो को इस यत्र का आराधना करनी चाहिये। दूसरा चोवीस जिन पेसठिया यत्र ॥२६॥

पंचा षष्टि यंत्र गर्भित ॥२६॥

श्री चतुर्विशित जिन स्तोत्रम्। आदि नेमि जिन नौमी सभंव सुविध तथा, धर्म नाथ महादेव शाति शाति कर सदा ॥१॥ अनंते सुव्रत भक्तया नमि नाथ जिनोत्तमम्। अजित जित कन्दर्प चन्द्र चन्द्र समप्रभम् ॥२॥ आदिनाथ तथा देव सुपार्श्वं विमलंजिन। मल्लि नाथ गुणोपेत धनुपा पध विशतिम् ॥३॥ अरनाथ महावीर सुमति च जगद गुरूम् श्री प्रद्म प्रभ भान। वासुपूज्य सुरैर्नतम् ॥४॥ शीतल शीतल लोके श्रेयास श्रैयसेसदा। कुन्थु नाथ चवामेय श्री अभिनन्दन जिनम् ॥५॥ जिनाना नामभिर्वद्ध पचषष्टि समुद्भवा। यंत्रो ऽय राजते लोके श्रेयास यत्र तत्र सोख्यम् निरन्तरम् ॥२६॥ यस्मिन गृहे महा भक्तया यन्त्रो ऽय पूज्यते बुधैं। भूतप्रैतेपिशाचादि भय तत्र न विद्यते ॥७॥ सकल गुण निघान य त्र मेन विशुद्धम्। हृदय

कमल कोषे धी मता ध्येय रूपम् । जयतिलक गुरू श्री सूरि राजस्य शिष्यो वदति सुख निदान । मोक्ष लक्ष्मी निवासम् ॥८॥ दूसरे पेसठिये यंत्र की स्थापना ॥२९॥ इस यंत्र का जो स्तोत्र आठ श्लोक का बताया है उसका पाठ करते समय जिन तिर्थकर का नाम आवे उनकी सख्या का अंक लिखने से पेसठिया यत्र तैयार हो जाता है। इस यत्र का महात्मय भी बहुत है। यंत्र के

यत्र नं. २९

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	१९	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

विधानानुसार ही तैयार करना चाहिये। जिस घर मे एसे यंत्र की स्थापना पूजा हुआ करती है उस घर मे आनन्द मगल रहा करता है जो मनुष्य इस यंत्र की आराधना करते हैं उनको प्रत्येक प्रकार के सुख मिलते है। और जिस मकान मे स्थापना की हो वहां पर भूत-प्रेत पिशाच का भय नही होता। अगर हुआ हो तो नष्ट हो जाता है। इस यंत्र का जितना आदर करेंगे उतना ही अधिक सुख पा सकेंगे। इस यंत्र को निज के पास रखना हो तो भोज पत्र पर तैयार कराके रखना चाहिये। ऐसे यंत्र शुद्ध अष्ट गंध से लिखने से लाभ देते है ॥२९॥

लक्ष्मी प्रदान अडसठिया यंत्र ॥३०॥

यह अडसठिया यंत्र बहुत प्रसिद्ध है। कई लोग दीवाली के दिन शुभ समय दुकान के मगल के स्थान पर लिखते है। इस यत्र मे यह खूबी है कि लक्ष्मी प्राप्ति के हेतु चमेली की

यय न० ३०

२	२८	८	३०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

कलम लेकर अष्टगंध से लिखना चाहिये। और समेट कर रेशम लपेट कर निज के पास रखना और व्यापार करते समय तो य त्र को पास मे रख कर ही करना चाहिये ॥३०॥

नित्य लक्ष्मी लाभ दाता बहतरिया यन्त्र ॥३१॥

बहतरि यंत्र के लिये कई मनुष्य खोज करते है। म त्र का मिल जाना तो सहज बात है परन्तु विधान का मिलना कठिन बात है। इस य त्र को सिद्ध करते समय जहा तक हो सके सिद्ध पुरूष की सानिध्यता मे करना चाहिये और सिद्ध पुरूष का योग नही मिल सके तो किसी य त्र के जानकार की सानिध्यता मे करना चाहिये शुभ दिन देख कर शरीर व वस्त्र

यंत्र न० ३१

२५	२०	२६
२६	२४	२३
२१	२८	२३

शुद्धता का उपयोग कर अधिष्ठाता देव को सान्धिय समझ कर प्रात काल मे ढाई घडी कच्ची दिन चढे पहले अष्ट गध से कागज पर वहत्तर य त्र लिखना चाहिये। कलम जैसी अनुकूल

आवे चमेली की या सोने की निब से लिखे जब य त्र लिखने बैठे तब तक पूर्व दिशा की ओर मुख रखना चाहिये, आसन सफेद लेना चाहिये, उत्तम बताया है लिखते समय मौन रख कर लिखने के विधान को पूरा करले, वे जब यंत्र लेखन पूरा हो जाय जब य त्र को एक स्वच्छ पट्ठे पर स्थापन अगर बत्ती लगा देवे दीपक स्थापन करे और ढाई घडी दिन बाकी रहे तब अर्थात सूर्यास्त से ढाई घडी पहले लिखे हुये य त्रो को ऊचे रख कर पानी से धोकर कागज भी जलाशय मे डाल देवे। यह सब क्रिया समय पर ही करने का पूरा ध्यान रखे। एक विधान ऐसा भी है कि बहत्तर य त्र अलग-अलग कागज पर लिखना चाहिये। और कोई एक कागज पर लिखना बताते है। जैसा जिसको ठीक मालूम हो सुविधा अनुसार लिखे। इस प्रकार से बहत्तर दिन तक ऐसी क्रिया करना चाहिये। और बहत्तर दिन ब्रह्मचर्य पालना चाहिये सत्य निष्ठा से रहना और कुछ तपस्या करे जिससे क्रिया फलवती होगी। इस प्रकार से बहत्तर दिन पूरे हो जाय और तिहत्तरवे दिन १ प्रातः काल ही बहत्तर यंत्र लिखकर एक डब्बी मे लेकर दुकान में रख देवे या गल्ले मे, तिजोरी मे या ताक मे रखकर नित्य पूजा कर लिया करे। इस तरह करते रहने से धन की आय और इज्जत, मान, सम्मान की वृद्धि होगी। सुख और सौभाग्य बढता है। इष्ट देव के स्मरण को वीनत्य, सत्य, निष्टा धर्म नीति को नही छोडना चाहिये १ तिहत्तर दिन प्रात: काल यंत्र लिख कर डब्बी मे रख देवे य त्र की पूजा कर धूप, दीप, रखना, कुछ भेट भी रखना और दिन रात अखड जोत रखना ॥३१॥

सर्प भय हर अस्सीया यन्त्र ॥३२॥

इस यन्त्र का विशेष करके सर्प के उपद्रव मे काम आता है। जब सर्प का भय

यन्त्र नं० ३२

३२	३९	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

उत्पन्न हुआ या मकान मे वरावर निकलता हो अथवा घर नही छोडता हो तो अस्सीया यत्र सिन्दूर से मकान की दीवार पर लिख कर और जहाँ तक हो ऐसी जगह लिखना चाहिये कि जहाँ सर्प की दृष्टि यत्र पर गिर जाय अथवा कासी को थाली मे लिखा हुआ तैयार रखे सो जव सर्प निकले जव उसे थाली वता देवे सो सर्प का भय मिट जायेगा। और उपद्रव नही करेगा। विधान तो वताता है कि सर्प उस मकान को छोडकर ही चला जायगा। किन्तु समय का फेर हो तो इतना फल नही देता है तो भी उपद्रव भय तो नही रहेगा। ऐसा समय घर मे सर्प हर नाम की औषधि जो काश्मीर जिले में बहुतायत से मिलती है मगवा कर घर मे रखने से सर्प तत्काल निकल जायेगा। लेकिन सर्प को मारने की बुद्धि नही रखना चाहिये। सर्प को सताने से वह क्रोध कर के काटता है वह समझता है मुझे मारते है और सताया न जाय तो वह अपने आप चला जाता है ॥३२॥

भूत प्रेत हर पिच्चासिया यंत्र ॥३३॥

अक्सर (प्राय) जब मकान मे कोई नही रहता हो और वहुत समय तक बेकार सा पडा हो तो ऐसे मकान मे भूत प्रेत अपना स्थान बना लेते है और भूत प्रेत नही भी बसते हो और मकान मे रहने लगे उसके बाद कुछ अनिष्ट हो जाय तो उस मकान मे परिवार

यन्त्र न० ३३

३४	४२	२	७
६	३	३६	३७
४१	३५	८	१
४	५	३६	४०

के लिये वहम सा हो जाता है और मकान को खाली कर देते हैं। लोकवाणी फैल जाती है और ऐसे मकान मे कोई विना किराये भी रहने को तैयार नही होता है। ऐसी अवस्था

मे यत्र को पक्ष कर्दम से मकान की दीवार पर अन्दर के भाग में लिखें। और आवश्यकता हो तो प्रति मकान मे लिखना भी बुरा नही है। यत्र लिखने के बाद हाथ जोड कर प्रार्थना करे कि हे देव स्वस्थान गछ इस तरह करने से उपद्रव शात हो जायगा और सुख पूर्वक मकान मे रह सकेगे। देव धूप दिल से प्रसन्न होते और प्रार्थना स्वीकार करते है। इसलिये इक्कीस दिन तक सायकाल के समय एक घो का दोपक कर धूप खेव देनी चाहिये ॥३३॥

सुख शांति दाताः इक्याणवे का यन्त्र ॥३४॥

कभी कभी ऐसा बहम हो जाता है कि इस मकान मे आये बाद घर मे से बीमारी नही निकलती है या सुख से नही रहने पाते है। कोई न कोई आपत्ति आ ही जाती है। इस तरह के कारण से उस मकान को छोडने की भावना हो जाती है। ऐसा प्रसग आ जाय तो इस यत्र को यक्ष कर्दम से मकान के अन्दर व दरवाजे के बाहरी भाग पर लिखना चाहिये। सायकाल को धूप खेव कर प्रार्थना करना चाहिये कि यत्राधिष्ठायक देव सुख शाति कुरू २ स्वाहा' इस तरह से इक्कीस दिन तक करने से सुख-शाति रहेगी और बहम मिट जायगा ॥३४॥

यन्त्र नं० ३४

३७	४५	२	७
६	३	४२	४०
४४	३८	८	१
४	५	३९	४३

गृह क्लेश हर निन्यानवे का यन्त्र ॥३५॥

गृहस्थी के गृह सस्कारो व्यवसाय के लिये अथवा विशेष कुटुम्ब के कारण या यो कह दीजिये कि स्त्रियो के स्वभाव के कारण जरा सी बात पर मन मुटाव हो जाता है ओर उसे न सभाला जाय तो घर मे क्लेश बढ़ जाता है। जिस घर मे इस तरह के क्लेश होते है उनकी

आजीविका भी कम हो जाती है और व्यवसाय व व्यवहार मे शोभा भी कम हो जाती है। बाहर के दुश्मन से मनुष्य सम्भल के रह सकता है किन्तु घर का दुश्मन खडा हो तो आपत्ति रूप हो जाती है। धन, वैभव, मकान मिलकियत वही दस्तरे, खत, खतुन जिसके हाथ आई हो दवा देता है। ओर ऐसी अवस्था हो जाने से घर की इज्जत कम हो जाती है। इस तरह की परिस्थिति हो तब इस यत्र को यक्ष कदर्म से मकान के अन्दर और खास कर पणिहारे पर और चूल्हे के पास वाली दीवार पर लिखे और अगरवत्ती या धूप सायकाल को कर दिया करे। इस तरह से इक्कीस दिन तक करे और बाद मे आपस मे फैसला करने बैठे तो कार्य निपट जायगा। साथ ही स्मरण रखना चाहिये कि न्याय नीति और कर्तव्य पूर्वक कार्य करोगे तो सफलता मिलेगी। घर की बात को बाहर नही फैलने देना चाहिये। इसी मे शोभा है इज्जत की रक्षा है। जो लोग स्त्रियो के कहने मे आकर भ्रात प्रेम कुटुम्ब स्नेह और कर्तव्य को भूल जाते है। उनका दिन मान बिगडा समझना। प्रत्येक कार्य मे इष्ट देव को न भूलना चाहिये ॥३५॥

यन्त्र न० ३५

३६	२९	३४
३१	३३	३५
३२	३७	३०

पुत्र प्राप्ति गर्भ रक्षा यन्त्र ॥३६॥

यह सौ का यत्र है और इसको आशा पूर्ण यत्र भी कहते है। जिसको सन्तान नही हो या गर्भ स्थिति के बाद पूर्ण काल मे प्रसन्न होकर पहले ही गिर जाता है तो यह यत्र काम देता है। इस यत्र को अष्ट गध से लिखना चाहिये। अष्ट गध बनाने मे (१) केशर (२) कपूर (३) गोरोचन (४) सिन्दुर (५) हीग (६) खैरसार, इन सब को बराबर लेना परन्तु केशर विशेष डालना, जिससे लिखने जैसा रस तैयार हो जायगा इतना कार्य शुद्धता पूर्वक करके भोज पत्र पर दीवाली के दिन मध्यरात्रि मे तैयार कर स्त्री गले पर या हाथ पर जहाँ ठीक मालूम हो बाध देवे। पुत्र के इच्छुक हो तो पत्नि-पति दोनो को बाधना वैसे तो कर्म

यन्त्र न० ३६

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४[illegible]

प्रधान है। जैसे कर्म उपार्जन किये होगे वैसा ही फल मिलेगा-- परन्तु उद्यम उपाय भी पुरुषों को वताए हुए है, करने मे हानि नही है। अपने इष्ट देव को स्मरण करते रहे पुण्य प्राप्त करना सो क्रिया फल देगी। स्त्री गर्भ धारण करेगी, पूर्ण काल मे प्रसव होगा अपूर्ण समय मे गर्भ-पात नही होगा ऐसा इस यन्त्र का प्रभाव है। श्रद्धा विश्वास रखने से सर्व कार्य सिद्ध होते है। पुण्य धर्म साधन नीति व्यवहार से आशा फलती है ॥३६॥

ताप ज्वर पीड़ा हर एक सौ पांचवा यन्त्र ॥३७॥

यह एक सौ पाँचवा यन्त्र है। ताप ज्वर एकान्तरा तिजारी को रोकने से काम देता है।

यन्त्र नं० ३७

५६	७	४२
२१	३५	४९
२८	६३	१४

भोज पत्र पर या कागज पर लिख कर धागे डोरे से हाथ पर बाधने से ताप ज्वरादि मिट जाते

जाते हैं। यन्त्र तैयार हो जायेगा तव धूप से खेव कर इक्कीस वार ऊपर कर पीडा वाले को वाधने से ज्वर पीडा मिट जाय तव यन्त्र को कूए के पानी मे डाल देना, विश्वास रखना और इष्ट देव को स्मरण करते रहना ॥३७॥

सिद्धि दायक एक सौ आठवां यन्त्र ॥३८॥

इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र या कागज पर लिखना चाहिये। कलम चमेली की लेना चाहिए। सोने की नीव हो तो और भी अच्छा है। यत्र तैयार कर वाजोट पर रखकर धूप,

यन्त्र न० ३८

४६	५३	२	७
६	३	५०	४९
५२	४७	८	१
४	५	४८	५१

दीप, पुष्प चढा कर पूजन वास क्षेप तप से पूजा कर सामने फल नैवेद्य चढा कर नमस्कार कर यत्र को समेट कर पास मे रखो। यत्र जिस कार्य के लिये वनाया हो उसका सकल्प यत्र की पूजा करने के वाद खयाल कर नमस्कार कर लेवे और जहा तक कार्य सिद्ध न हो तव तक प्रात काल मे नित्य प्रति धूप से या अगरवत्ती से खेव लिया करे। इष्ट देव का स्मरण कभी न भूले। कार्य सिद्ध होगा ॥३८॥

भूत प्रेत कष्ट निवारण एक सौ छत्तीस यन्त्र ॥३९॥

इस यन्त्र को मकान के वाहर भी लिखते है और पास मे भी रखने को वताया जाता है। वैसे तो लिखने का दिन दीवाली की रात्रि को वताया है। परन्तु आवश्यकता अनुसार जव चाहे लिखने और हो सके तो अमावस्या की रात्रि मे लिखना जिसमे यन्त्र लाभ दायक होगा।

जब भूत प्रेत डाकिनी का भय उत्पन्न हुआ हो तो इस यन्त्र को बाधनेसे मिट जायगा ओर इसी

यन्त्र नं० ३६

४	५६	१६	६०
३२	४४	२०	४०
५२	८	६४	१२
४८	२८	३६	२४

तरह के कष्ट होगे तो वह भी इस यन्त्र के प्रभाव से कम हो जायेगे और सुख प्राप्त होगा। इस तरह यन्त्र को भोज पत्र पर या कागज पर अष्ट गंध से लिखना चाहिये और मकान की दीवार पर सिन्दूर से लिखना चाहिये ॥३६॥

पुत्रोत्पति दाता एक सौ सत्तरिया यन्त्र ॥४०॥

यह सौलह कोठे का यन्त्र एक सौ सत्तरिया है। इस यन्त्र से धन प्राप्ति मे जय विजय

यन्त्र नं० ४०

७७	८४	२	७
६	३	८१	८०
८३	७८	८	१
४	५	७६	८२

म, पुत्र प्राप्ति के हेतु वनाना हो तो अष्ट गध से लिखना चाहिये । भोज पत्र पर काला दाग न हो और स्वच्छ हो । कागज पर लिखे तो अच्छा कागज लेवे और शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा (पूर्णा) तिथि पचमी दशमी पूर्णिमा को अच्छा होगा देख कर तैयार करे । लेखनी चमेली की या सोने की नीव से लिखे और पास मे रखे तो मनोकामना सिद्ध होगी और सुख प्राप्त होगा । धर्म पर पावन्द रह पुण्योपार्जित करने से आशा शीघ्र फलती है । इष्ट देव के स्मरण को नही भूलना चाहिये ॥४०॥

एक सौ सत्तारिया दूसरा यन्त्र ॥०१॥

इस यन्त्र को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु जय विजय के निर्मित इस यन्त्र को भी काम लेते हैं । गर्भ रक्षा ओर अन्य प्रकार की पीडा मिटाने के लिये भी काम लेते है गर्भ रक्षा करने के लिए इस यत्र को अच्छे दिन शुभ समय मे अष्ट गध से भोजपर पत्र अथवा कागज पर लिखना चाहिये ।

यन्त्र न० ४१

४५	३६	५०	३९
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४९
४८	३१	४३	३८

ये एक सौ सत्तरिया दोनो यन्त्र लाभदायी है । नीति न्याय पर चलना चाहिए और इष्ट देव को स्मरण करते रहना जिससे यन्त्राधिष्टायक देव प्रसन्न होकर मनोकामना सिद्ध करेगे । यन्त्र मादलिया में रखे या मोम के कागज में लपेट कर पास मे रखो ॥४१॥

व्यापार वृद्धि दो सौ का यंत्र ॥४२॥

इस य त्र का दो विधान है । पहला विधान तो यह है कि दीवाली के दिन अर्ध रात्रि के समय सिन्दुर या हीगुल से दुकान के वाहर लिखे तो व्यापार की वृद्धि होती है । दूसरा

विधान यह है इस य त्र को भोज पत्र पर अथवा कागज पर पच गंध से लिखे जिसमे केशर, कस्तूरी कपूर, गोरोचन और चदन का मिश्रित हो उत्तम पात्र मे पच गध से तैयार कर चमेली की कलम से लिखे। यह य त्र विशेष कर दीवाली के दिन अर्ध रात्रि के समय लिखना चाहिये

यत्र न० ४२

६२	६६	२	७
६	३	६६	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

और ऐसा समय निकट नही हो और कार्य की आवश्यकता हो तो अमावस्या के अर्ध रात्रि के समय लिख, और जिसके लिये बनाया गया हो, उसी समय प्रात. काल दे देवे। य ंत्र को पास में रखने से ऋतु वीन्त का स्त्राव नही रूकता हो तो रूक जायेगा। गर्भ धारण करेगा और रक्षा होगी इष्ट देव का स्मरण नित्य करना चाहिये ।।४२।।

लक्ष्मी दाता पांच सो का यंत्र ।।४३।।

इस य ंत्र को पास मे रखने से लक्ष्मी प्राप्ती होगी और विधान इसका यह है कि

य त्र न० ४३

२४२	२४६	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

पुत्र की इच्छा वाले पति-पत्नी पास मे रखे तो आशा फैलेगी। शुभ कामना के लिये अष्ट गध से लिखना और वेरी, पुत्र पराजय के हेतु यक्ष कर्दम से लिखना चाहिये। कलम चमेली की लेना और यत्र मादलिया मे रख पास मे रखना अथवा कागज मे लपेट कर जेव मे रखना। धर्म के प्रताप से आशा फलेगी। दान पुण्य करना धर्म निष्ठा रखना ॥४३॥

सात सो चोबीस यंत्र ॥४४॥

इस यंत्र को एक सो इक्यासिया यत्र भी कहते है। इस यत्र को वशीकरण यत्रको

यत्र नं० ४४

१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१

चाँदी के पतडे पर तैय्यार करा कर प्रतिष्ठा कराकर पूजा कराने से भी लाभ होता है जिसको जैसा योग्य मालूम हो करा लेवे। धर्म पर श्रद्धा रखे। इष्ट देव का स्मरण किया करे ॥४४॥

लक्षिया यंत्र ॥४५॥

इस यत्र को सोना गेरू से लिख कर अपने पास रखने से अग्निभय से बचाव होता है। जिन लोगो को मातेहाती मे काम करना पडता है और उपरी अधिकारी वार २ नाराज होते है। तो इस यत्र को पच गंध से लिखकर अपने पास रखे तो अधिकारी की कृपा रहती है अक्सर कई जगह पति पत्नि के आपस मे वैमनश्व हो जाया करता है। वहमी भी अल्प समय मे हो तो दु खदायी नही होता। परन्तु वार २ क्लेश होता हो तो इस यत्र को कु कुम से लिख कर पुरूष पास मे रखे तो पत्नि के साथ प्रेम बढ़ता है। अक्सर ऐसे यंत्र दीवाली के दिन मध्य

यंत्र नं० ४५

४९९९२	४९९९९	२	७
६	३	४९९९६	४९९९५
४९९९८	४९९९३	८	१
४	५	४९९९४	४९९९७

रात्रि में लिखते है और धन प्राप्ति अथवा दूसरे किसी काम के लिये बनवाना हो तो पंच गंध से लिखते है, जिसमें केसर, कस्तूरी चंदन, कपूर, मिश्री का मिश्रण होना चाहिये ॥४५॥

लखिया यंत्र दूसरा ॥४६॥

इसको भी दीवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखते हैं और अष्ट गंध से लिख कर यंत्र जिसके लिये बनाया हो अथवा उसका नाम लिखकर पास में रखने से जय विजय होता है

यंत्र नं० ४६

४२०००	४९०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००]	४४०००	४७०००

व्यवसाय करते समय जिस गद्दी पर बैठते हैं उसके नीचे रखने से व्यवसाय में लाभ होता है। ऊपर बताया हुआ लिखिया यंत्र भी ऐसे कार्य में लाभ देता है। जिसको जो यंत्र ठीक लगे उसी

का उपयोग करे। इस य'त्र का एक विधान और भी है। वह हमारे संग्रह मे नही है। परन्तु विधान यह है कि दीवाली की मध्य रात्रि मे लिखकर उसके सामने एक पहर तक य'त्र का ध्यान करे। और फिर वन खड मे या वाग मे अथवा जलाशय के किनारे बैठकर यत्र के सामने एक पहर तक य त्र का ध्यान करे। जिससे य त्र सिद्ध हो जायगा क्रिया करते समय लोभान का धूप वनाकर रखना चाहिये तो य त्र सिद्ध हो जायगा और भी इन दोनो य त्र के कई चमत्कार है। श्रद्धा रखकर इष्ट देव का स्मरण करते रहना चाहिये जिससे कार्य सिद्ध होगा ।।४६।।

यन्त्र नं० ४७

५१	८	५३	६४	१	४६	६९	६	७१
४६	४४	६२	१९	३७	५५	२४	४२	६०
३५	८०	१७	२८	७३	१०	३३	७८	१५
६६	३	४८	६८	५	५०	७०	७	५२
२१	३९	५७	२३	४१	५९	२१	४३	६१
३०	७५	१२	३२	७७	१४	३४	७९	१६
६७	४	४९	७२	९	५४	६५	२	४७
२२	४०	५८	२७	४५	६३	२०	३८	५६
३१	७६	१३	३६	८१	१८	२९	७४	११

जयपता का यंत्र ॥ ४७ ॥

यह जयपता का यत्र है जिस व्यक्ति को महात्माओं की कृपा प्राप्त हो जाती है उसीको इस यत्र की आमनाय मिलती है। सामान्य से इस यत्र के लिये कहा है कि इस यत्र को पच गध अथवा अष्ट गध से लिखे और किसी खास काम पर विजय पाने के लिये बनाना हो तो यक्ष कर्दम से लिखे। लिखते समय इक्यासी कोठे मे पाच का अंक बनाकर चढते अक से लिखने को शुरू करे जैसे प्रथम पक्ति के पाचवा कोठे मे एक का अक लिखे। सातवी लाइन के आठवे कोठे मे दो का अक लिखे। चोथी लाइन के पाचवे कोठों में पाच का अक लिखे। प्रथम लाइन के आठवे कोठे मे ६ का अक लिखे। चोथी लाइन के आठवे कोठे मे सात का अक लिखे। प्रथम लाइन के दूसरे कोठे मे आठ का अंक लिखे। सातवी लाइन के पाचवे कोठे मे नौ का अक लिखे और तीसरी लाइन के छट्ठे कोठे में दस का अंक लिखे। इस तरह से सम्पूर्ण अक को चढते अक से लिखकर पूर्ण करे और तैयार हो जाने पर जिस मनुष्य के लिये बनाया हो उसका नाम व कार्य का संक्षेप नाम यंत्र के नीचे लिखे। इस तरह से तैयार कर लेने के बाद यत्र को एक बाजोट पर स्थापन कर अष्ट द्रव्य से पूजा कर यथा शक्ति भेट भी रखे और बहुत मान से यंत्र को लेकर पास मे रखे तो लाभदायी होता है। नीति न्याय को नही छोडे। चरित्र शुद्ध रखे। जिससे सफलता मिलेगी ॥ ४७ ॥

विजयपता का यंत्र ॥ ४८ ॥

इस यत्र के लिखने का विधान जयपताका की तरह समझना चाहिये। विशेष इस यंत्र मे यह विशेषता है कि प्रत्येक पक्ति के पांचवे खाने मे अताक्षर एक है चोथे मे अनुस्वर है और छठी पक्ति के प्रत्येक खाने मे अताक्षर दो का है आठवे कोठे मे अताक्षर तीन का है कही ६ का, कही आठ का अक अधिक बार आया है। इस यंत्र को विधि से लिख कर पास मे रखने से विजय मिलती है। वाद विवाद करते समय मुकदमे की वहस करते समय और सग्राम मे अथवा इसी तरह के दूसरे कामो मे प्रयास प्रमाण या प्रवेश किया जाय तब इस यत्र को पास रखने से सहायता मिलती है इस यत्र का लेखन अष्ट गध या पच गंध अथवा यक्ष कर्दम से हो सकता है बाकी विधान जयपताका यत्र की तरह समझ लेना चाहिये श्रद्धा से कार्य सिद्ध होता है विजय पाते हैं हिम्मत रखने से आशा फलती है ॥ ४८ ॥

यन्त्र न० ४८

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४९
५७	६८	७९	९०	११	२२	३३	४४	४६
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	५६
७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	६६
६	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	७६
१६	२७	२९	४०	५१	६२	७३	७५	५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	८२	४	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२५	३५

संकट मोचन यंत्र ॥ ४९ ॥

इस यत्र से यह लाभ है कि शरीर अस्वस्थ हो गया हो या पेट दर्द हो गया हो तो उस समय अष्ट गध से कासी की थाली मे यंत्र लिखकर, धोकर पिलाने से दर्द मिट जाता है। इस तरह के विधान है, सो समझ कर उपयोग करे ॥ ४९ ॥

यन्त्र नं० ४९

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१५६
१३९	१४०	१२४	११८	१४१	१४३	१४३
१४४	१२३	१४५	१२९	११९	१४६	१४७
१२२	१४८	१४९	१२६	१५०	१२०	१२१

विजय यंत्र ॥ ५० ॥

इस यंत्र को विजय यत्र और वर्द्धमान पताका भी कहते हैं हमारे सग्रह मे इसका नाम वर्द्धमान पताका है, परन्तु इस यंत्र को विजय राम यत्र समझना चाहिये क्योंकि यही नाम इस यत्र के मंत्र मे आया है। इस यंत्र को रविवार के दिन लिखना चाहिये। और ऐसा भी लेख है कि केपुसंडिया तारा का उदय हो तब लिखना चाहिये। जब यत्र तैयार हो जाय तब एक बाजोर पर स्थापन कर धूप दीप की जयणा सहित रखकर कुछ भेंट रखकर और नीचे बताये हुये मंत्र की एक माला फेरना। ॥ मत्र ॥ॐ ह्रीश्री क्ली नमः विजय मंत्र राज्यधार कस्य ऋद्धि वृद्धि जय सुखं सौभाग्य लक्ष्मी मम् सिद्धि कुरु २ स्वाहा ॥ जिसको जैसा विधान मालूम हो, उपयोग करे। इस तरह की माला फेरते पचामृत मिश्रित शुद्ध वस्तुओ का हवन करना भी बताया है। इस यंत्र के नौ विभाग बताये है प्रत्येक विभाग के अलग-२ यत्र भी है। जिसका वर्णन इस प्रकार है—

(१) प्रथम विभाग के यत्र से दृष्टि दोष, डाकिनी शाकिनी, भूतप्रेत आदि का भय नष्ट होता है।

(२) दूसरे विभाग के यत्र से अधिकारी आदि को प्रसन्नता रहती है।

(३) तीसरे विभाग के यत्र से अग्नि भय, सर्प का भय या उपद्रव नष्ट होता है।

(४) चौथे विभाग के यत्र से ताप एकान्तरा, तिजारी आदि नष्ट होती है।

(५) पाँचवे विभाग के यत्र से नवग्रह आदि पीडा नष्ट होती है।

(६) छठे विभाग के यत्र से विजय पाते है।

(७) सातवे विभाग के यत्र से मन्दिर आदि के दरवाजे पर लिखने से दिन-दिन मे उन्नति होती है।

(८) आठवे विभाग के यत्र से धनुष आदि शस्त्र पर वाधने से विजय पाते हैं।

(९) नवे विभाग के यत्र से दीवालो के दिन दीवार पर लिखने से जय विजय होती है। इस तरह से नो विभाग के यत्रो का वर्णन है। प्रथम विभाग के अक गिनती के अनुसार, प्रथम पक्ति के मध्य का समझना, इसी तरह से दूसरा, तीसरा आदि चढते हुए अंको से समझना चाहिए। इस यत्र का दूसरा विभाग इस प्रकार है कि विधि सहित यत्र तैयार करके एकान्त स्थान मे शुद्ध भूमि बनाकर कुम्भ स्थापना कर अखण्ड ज्योत रखे और चोकोर पाटे पर नन्दी वर्धन साथिया करे। चावल सवा सेर, देशी तेल के केसर से रंगे हुये अखण्ड हो, उनसे साथिया कर फल नैवेद्य और रुपया, नारियल चढावे फिर सामने बैठकर साढे बारह हजार जाप यत्र के सामने पूरे करले। वे नियमित जाप की सख्या प्रतिदिन एक सी हो इस तरह से विभाग कर जाप पाच दिन अथवा आठ दिन मे पूरा कर लेवे। जाप करने के दिनो मे चढने से पहले पूजा कर लेवे। भूमि सयन ब्रह्मचर्य पालन और आरम्भ का त्याग कर नित्य स्थापना कर स्थान मे ही करे। जिसदिन जाप पूरे हो जाय साथिया मे से चावल चूटि भर कर लेवे। और सिरहाने रखकर एक माला यन्त्र की फर कर सो जावे। रात्रि के समय स्वप्न मे शुभा शुभ कथन देव द्वारा मालूम होगे और धन वृद्धि होगी। कार्य सिद्ध होगा। आशा श्रद्धा से और पुण्य से फलती है। पुण्य, धर्म साधन से उपार्जित होता है। इसका पूरा ख्याल करे। ॥५०॥

यन्त्र नं० ५०

७१	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४७
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२५	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

यन्त्र नं० ५१

२५८	१
३६६	२
४७०	३
३६६	४
४७०	५
५८१	६
४७०	७
५८१	८
६६२	६
५८१	०-

सिद्धा यन्त्र ॥ ५१ ॥

यह सिद्धा यन्त्र, सिद्धा सटोरियो के काम का है। इस यन्त्र को पास मे रखने की आवश्यकता नही है। न ही दीप, धूप रखकर भोज पत्र मे लिखने की श्रावश्यकता है। यह यन्त्र तो जो इसकी गिनती के अनुभवी हैं उन्हो के काम का है। जो पुरुष इसका उपयोग समझ सकेगा, वही लोग ऐसे यन्त्रो से लाभ उठा सकेंगे और बिना अनुभव से कार्य करने वाला हानि उठाता है ॥ ५१ ॥

चौसठ योगिनी यन्त्र ॥५२॥

यह चौसठ योगिनी यन्त्र कई तरह के कार्य सिद्ध करने मे समर्थ है। इस यन्त्र के लिखने मे यह खूवी है कि एक का अक लिखे वाद दो अंक तिरच्छे कोठे मे, तिरच्छे एक कोठे के वीच मे छोड कर लिखा गया है। इसी तरह के तमाम अक तिरछे कोठे मे एक-एक छोडते हुए लिखे है और अन्त मे चौसठवे अक पर समाप्ति की है। इस यन्त्र की लेखन विधि को अच्छी समझ लेना चाहिये और यन्त्र लिख कर जिस कार्य की पूर्ति के लिए वनाया हो उसकी विगत

यन्त्र न० ५२

४६	७	२०	३३	४४	५	१८	३१
२१	३४	४५	६	१९	३२	४३	४
८	४७	६०	५७	६२	५३	३०	१७
३५	२२	६३	५४	५९	५६	३	४२
४८	९	५८	६१	५२	४१	१६	२९
२३	३९	५१	६४	५५	५८	१३	२
१०	४९	३६	२५	१२	१५	४०	२७
३७	२४	११	५०	३९	३६	१	१४

और जिसके लिये बनाया हो उसका नाम यन्त्र मे लिखना चाहिए। जब यन्त्र, विधि सहित तैयार हो जाये तब शुभ समय मे पास मे रखे और हो सके वहाँ तक कार्य सिद्धि तक धारण करना चाहिए। धूप नित्य देने से प्रभाव बढता है कष्ट भी शीघ्र मिटता है और भावना फलती है। इष्ट देव देवी की पूजा करना और दान पुण्य करना सो कार्य ठीक होगा ।।५२।'

दूसरा चौसठ योगिनी यंत्र ।।५३।।

२६० का यह यन्त्र वहुत से कार्य मे काम आता है। लिखने का विधान सर्वत्र समझना चाहिये। इस यन्त्र को तावे के पतडे पर वनवा कर पूजा करने से भी लाभ होता है। इष्ट देव की सहायता से कार्य सिद्ध होता है। मनुष्य का प्रयत्न करने का काम है ।।५३।।

यन्त्र न० ५३

७	८	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४२	४१	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

उदय अस्त अंक ज्ञाता यंत्र ।।५४ ।।

यह उदय अस्त अक ज्ञाता यन्त्र है। इसका ज्ञान जिसको है वह जान सकता है कि

भाव क्या खुलेगे ? और क्या बन्द होगे ? इस यन्त्र की गिनती किस प्रकार से करना चाहिए। इस यन्त्र की आम्नाय गुरू नाम से प्राप्त हो जाय तो कार्य सिद्ध होते देर नही लगती। इस यन्त्र को द्रव्य प्राप्ति हेतु चितामणि यन्त्र भी कह देना तो अतिशयोक्ति नही है। नसीब जोरदार हो तो देर नही लगती। यह यन्त्र विशेष करके सटोरियो के काम का है। इसकी गिनती का अभ्यास करने से जानकारी होगी। इष्ट देव के स्मरण को नही भूलना चाहिये। दान-पुण्य करने से इच्छाएँ फलती है ।।५४।।

यन्त्र नं० ५४

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	४००४ ७४३७	२९९२ ६८८१	४९२५ ०३३७	२५५२ ९३४२	२५५२ ६८९७	६३४१ ५७२५	६९५१ ५०९७	७४९७ ५२२५	९३३५ ०६२९	२५३७ ९६७४
२	६००५ ३६७८	७३५७ ४०००	६९०२ ८१४०	४७६९ ३०७०	८०७९ ५३५५	७३५३ ९५९१	४१९३ ६९७९	८३४६ ७०९७	९२१९ ३१०३	४९७९ २५४०
३	३६०४ ४१००	९७७९ २०२४	५३२६ ७५०४	४११५ ९३७०	०८५३ ९१९९	५०८१ २८८२	५९३५ २४०४	६०६४ १९८२	६८९३ ७१०३	३७६० ७३९६
४	५६६६ ३५८०	५७७५ ३००३	२८८६ ६९४४	६४४१ ५७७३	४५०४ ३३६८	७३३७ २८९१	१५१७ ६००७	२५९६ ३१३७	७३७५ ९५४६	३५३७ २९२४
५	६६०२ ३८८१	८००५ ७५९२	६००६ ५३८४	५५६० ८६७१	९५३७ ४१७०	६४६९ ६२३५	६३७९ ४६३४	५५३६ ६४५२	८७०० १५२९	९५०६ ७३५३
६	८३७० ६९१८	७३३१ ८५०५	६९३७ २६७१	७९०७ ३००३	९६९७ ५३६८	७००७ ३६६९	७५६४ ३९९२	७२५७ २५४१	४१७५ ९२०४	५३६९ ३९४२
७	४००४ ४७९६	३७०२ ४२०८	४००७ ७३९५	१८८१ ३७०२	२९०७ ९६१७	१८२८ ०३८६	३९६२ १९७३	३६७२ १९३१	३७०७ १०७४	३७४० ६३१९
८	५०८९ ७८३५	३००३ २९७३	४००५ ६९९७	८६३० ५७८०	३१२९ ६००६	२५५२ ५८६९	७००७ ६४४६	२५५७ २३४७	३७२९ ००७९	२५२६ ७४९३
९	१४०४ ९५९६	४५२८ ६०५७	४७७१ ११३६	८००४ २१९७	२५५२ ७००७	४१७० १३३६	४५०८ १८०१	७४३५ ९६०३	९२८६ ५२६०	८१६९ २९०४
१०	७१६४ ४६५२	६४२४ २०६९	३७७० ९२०९	६३९६ ४००८	३००४ ३९४६	२१६४ ५३१६	९२०५ ३१८३	९३७१ १८६०	५७०६ ५०३६	०१३० २५५३

यंत्र नं० ५५

इन दोनो यन्त्रो को रवि पुष्य, वा रवि हस्त को शुभ योग मे सोना, चादी, तावे के पत्रे पर खुदवा कर अनार की कलम से सुगन्धित द्रव्यो से लिखकर सफेद कपडा पहन कर उत्तर या पूर्व दिशा मे वैठ कर यन्त्र लिखे यन्त्र भोज पत्र पर भी लिख कर यन्त्र तावीज मे डाल कर गले मे या हाथ मे वाधे तो आठ भय से तथा सर्व रोग शात होते है। भूत, प्रेतादिक की पीडा

श्री	ग्रा	ह्रे	श्व	र	पा	श्र्वं	ना	था	य	न	म.	न	य	था	ना	श्र्वं	पा	ल	ला	या	जी	श्री
न											ण											ऊग
व										ज्र	वो	ह्रि										व
प									य	स	भ	ति	ब्म									ल्ल
ल्ल								ब्भ	ह्रि	स्र	पा	वं	ति	अ								म
व							न	र	ति	रि	स्र	सु	भि	जी	वा							पा
पा						म	षु	ओ	त	स्स	गा	ह	रो	ग	मा	री						श्र्वं
श्र्वं					इ	या	स	ह	र	बि	स	णि	ण्णा	सं	मं	डु	पा					ना
ना				व	ह्रो	स	वि	गा	ह्र	१	८	५	रं	पा	ग	ह्न	वं	मि				था
था			ह्रा	य	ला	जो	छ्रं	स	६४	२६	४३	५	४७	खं	ल	ज	ति	ग्वे	र			यं
य		दि	म	घा	फ	इ	मु	५	१५	३१	७४	३६	२८	१	क	रा	ण	णं	वि	म		न
न																						
म·	जि	व	ओ	प्प	हु	रे	ण	८	४६	३८		४२	५९	८	ह्रा	डं	द्रु	जी	वा	वे	चे	मः
न		दे	षु	क	ब	ध्रा	घ	१	२७	३६	३१	४८	१०	५	ण	ति	क्ष	का	रे	म		न
य			सं	णि	वि	ठे	ब्म	व	३३	२०	२७	५४	४१	पा	आ	उ	क्रो	अ	ण			य
घा				ब	मो	कं	क	भि	द्रा	५	८	१	वं	सं	वा	व	ह	स्व				था
ना					णा	लं	मं	ग	लि	फु	र	ह	स	वि	सं	सा	गं					ना
श्र्वं						प	ज्भ	तु	तो	मं	रे	दू	उ	ह्र	चि	मं						श्र्वं
पा							ता	चिं	छे	ल	ते	सं	सं	ह	तु							पा
णा								घ	द्र	णं	ठा	ईं	स	रा								णि
वा									ता	ण	स्र	य	हि									स
र										स	पा	वे										ता
व											त											घिं
श्री	अ	मी	ग्र	रा	पा	श्र्वं	ना	धा	य	न	म.	न	य	था	ना	श्र्वं	पा	ह्र	री	त	अं	श्रौ

शात होती है। लक्ष्मी लाभ, सन्मान, यश, राज्य मान्यता, कोर्ट मे विजय होती है कुष्ट, ज्वर, वायु रोग भी इस यन्त्र को धो कर पिलाने से नष्ट हो जाता है, सर्प का जहर उतर जाता है। एक वर्ण की गाय के दूध से यन्त्र का प्रक्षालन कर पिलाने से वध्या गर्भ धारण करती है।

जय माला सोना, चादी, प्रवाल रेशमी, सूत अथवा लीला, सफेद, रगनी रखना। शुभ चन्द्र मे मूल मन्त्र की छ मास मे सवा लाख जाप करना चाहिए। यथा शक्ति ब्रह्मचर्य पालना। जाप पूर्ण होने पर प्रतिदिन ६–१०८, २७ या १०८ बार जप करना। यथा शक्ति सप्त क्षेत्रो मे पूजन आदि मे द्रव्य खर्च करना। पाचो गाथाओ का १०८ बार प्रतिदिन जाप करने से सर्व कार्यो की सिद्धी, सर्व रोगो का नाश सुख सपत्ति की प्राप्ति होती है ॥५५–५६॥

यन्त्र ५६ का
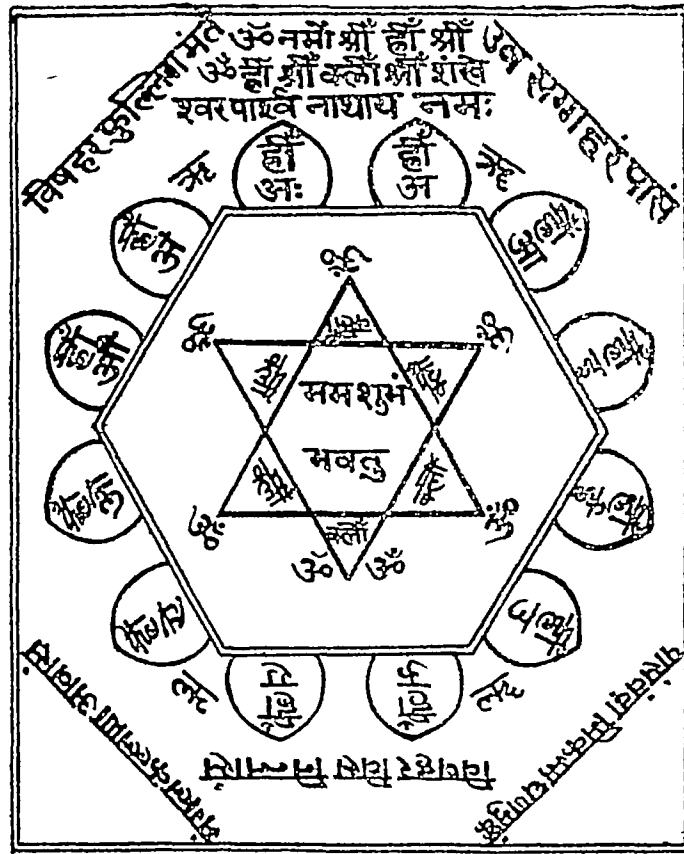
चोबीस तीर्थकरो का यंत्र

इस यत्र को सुवर्ण या चाँदी के पतड़े पर बनावे रविपुष्य नक्षत्र में। यत्र मे दिये हुए अंको के समान उन २ भगवान को नमस्कार करे। यत्र में लिखे यत्र का प्रातः कम से कम पाच माला जपे। घर मे अटूट धन, घर मे शान्ति रहती है ॥ ५७ ॥

यन्त्र नं० ५७

१६	१२	८	५	३	२
१	१४	१३	९	१०	४
६	७	११	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	१७	१५
ॐ	ह्री	श्री	क्ली	न	म
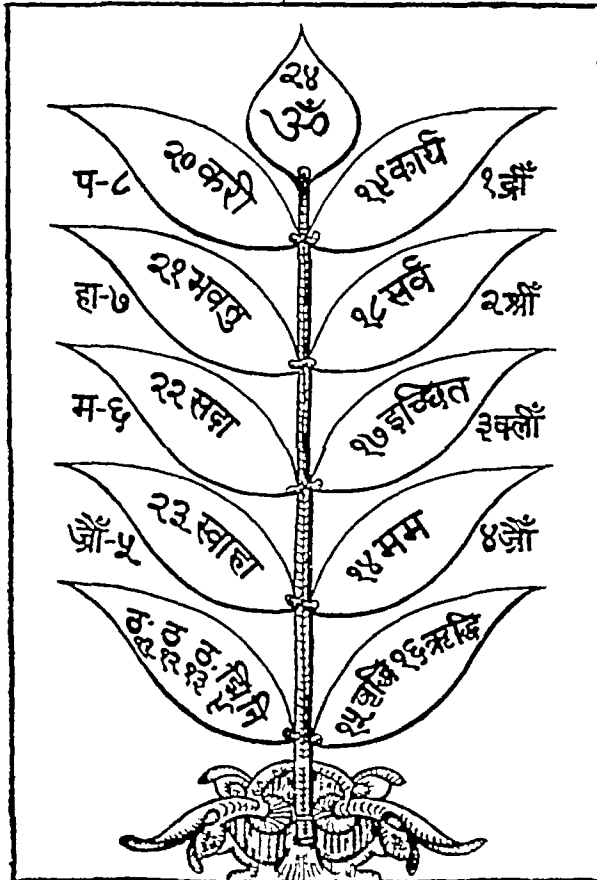
←यन्त्र नं० ५८

कल्प वृक्ष यंत्र

इस यन्त्र को रविपुष्य गुरुपुष्य रवि हस्त या रवि मूल मे शुभो प्रयोग मे सोना चादी के पतडे व भोजपत्र पर अष्टगध से लिखे, हमेशा पूजन करे, अक्षत से उन्हे अपने सिर पर डाले। मनुष्य मान सन्मान सत्कार पावे। रोजगार वृद्धि लक्ष्मी प्राप्ति। यन्त्र के एक एक अक्षर मे चौबी तीर्थंकर देवी का निवास है॥ ५८॥

यन्त्र नं० ५९
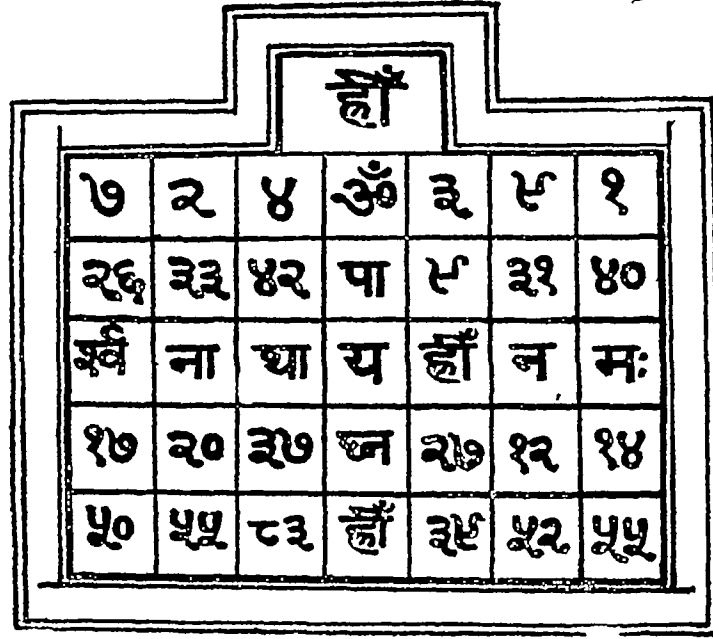
इस पार्श्वनाथ यन्त्र को पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याण के दिन तांबे के पतडे पर खुदवावे। सुगन्धी द्रव्य से लिखे एक धान का एकासन करे। फूल जाइके से पूजन करे। धरणेन्द्र पद्मावती प्रसन्न होय मन वांछित फल देवे ॥ ५९ ॥

सर्व मनोकामना सिद्ध यंत्र

इस यन्त्र को पास में रखने से सर्व मनोकामना सिद्ध होती है ॥ ६० ॥ ६१ ।,

यन्त्र नं० ६०

यन्त्र नं० ६१
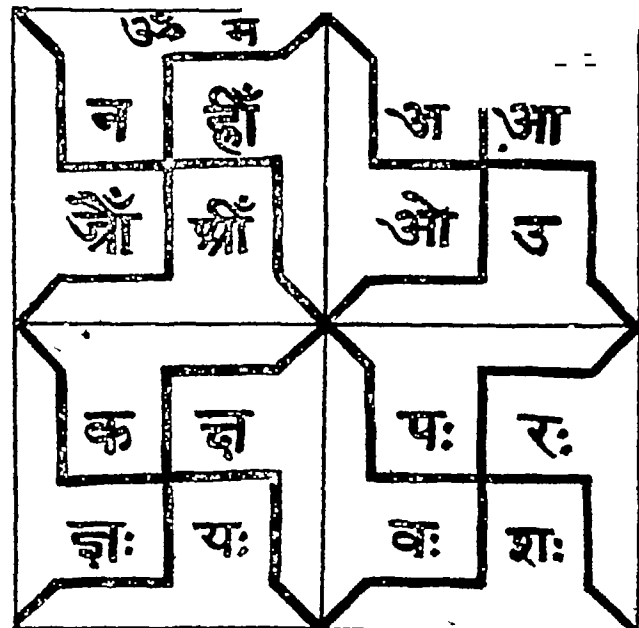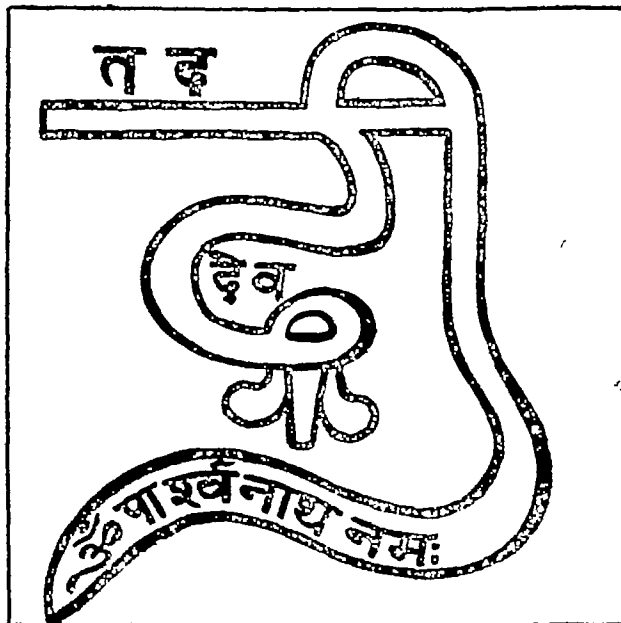
१३० को सर्वतो भद्र यन्त्र सिद्ध मन्त्र

मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं चतुर्दश पूर्वेभ्यो नमो नमः

विधि.—इस यन्त्र को रविपुष्य मे, शुभ योग मे बनावे। मन्त्र का सवालाख जाप करे। इससे महाविद्यावान तथा सर्व प्रकार सुखी होवे ॥ ६२ ॥

यन्त्र न० ६२

१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०
१३०	३४	४८	२	१६	३०	१३०
१३०	४६	१०	१४	२८	३२	१३०
१३०	८	१२	२६	४०	४४	१३०
१३०	२०	२४	३८	४२	६	१३०
१३०	२२	३६	५०	४	१८	१३५
१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०

अद्भुत लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को सोना चादि या ताँवे के पत्रे पर खुदाकर पूजन करे तथा ॐ ह्री श्री कली अर्हं नम महा लक्ष्म्यै धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ह्री श्री नम ॥ इस यन्त्र का १२५०० जाप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ६३ ॥

यन्त्र न० ६३

ॐ	ह्री	श्री	क्ली	महा
अ	र्हं	न	मः	लक्ष्मै
ध	र	णे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ह्री	श्री	न	मः	नम

यन्त्र न० ६४

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

इस यन्त्र को सोना व चाँदो, ताबा के पत्रे पर खुदावे। अष्ट गध से रविपुष्य मे लिखकर पूजै। व्यापार वृद्धि होय। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ६४ ॥

यन्त्र न० ६५

४२	७	५६
४९	३५	२१
१४	६३	२८

इस यन्त्र को सुगन्धी द्रव्यो से भोजपत्र पर लिखकर पूजै, विद्या बहुत आवे ।।६५।।

यन्त्र म ६६

यह यन्त्र लक्ष्मी दाता चमत्कारी है। रविपुष्य मे सोने चाँदी के भोजपत्र पर लिखकर हमेशा पूजन करे ।। ६६ ।।

यन्त्र ग्नं० ६७

१	०	०	०
०	०	०	१
०	०	०	०
१	०	०	०

इस यन्त्र को अष्ट गंध से लिखकर दीवाली के दिन रोहिणी नक्षत्र मे इसे घड़े मे रखकर, घर के भण्डार मे रखने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसे कुंभ मे लिख,कुंभ का पानी रोगी को पिलाने मे रोग नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

यन्त्र नं० ६८
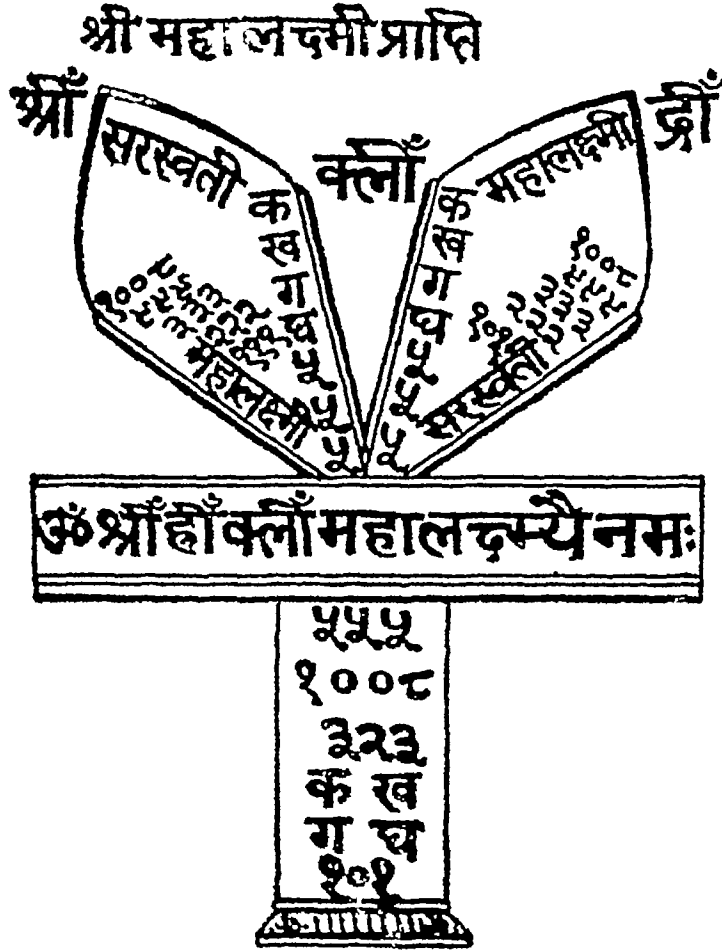
श्री महा लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

यह त्रिक (तीन) का यन्त्र लक्ष्मी पूजन का है। चांदी के कलश मे लिखकर घर मे स्थापित करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति अवश्य होती है ॥ ६८ ॥

॥ अद्भुत विद्या प्राप्ति यन्त्र नं. ६९ ॥

इस यन्त्र को रविपुष्य मे कांसी की थाली मे तैयार कर सुगन्ध द्रव्य से सुदी पंचमी से दशमी तक, चाँदनी रात्रि मे, थाली मे पानी भर कर रखे। प्रातः उस पानी को पीने से अज्ञान दूर होता है विद्या बहुत आती है ॥ ६९ ॥

यन्त्र न० ६९
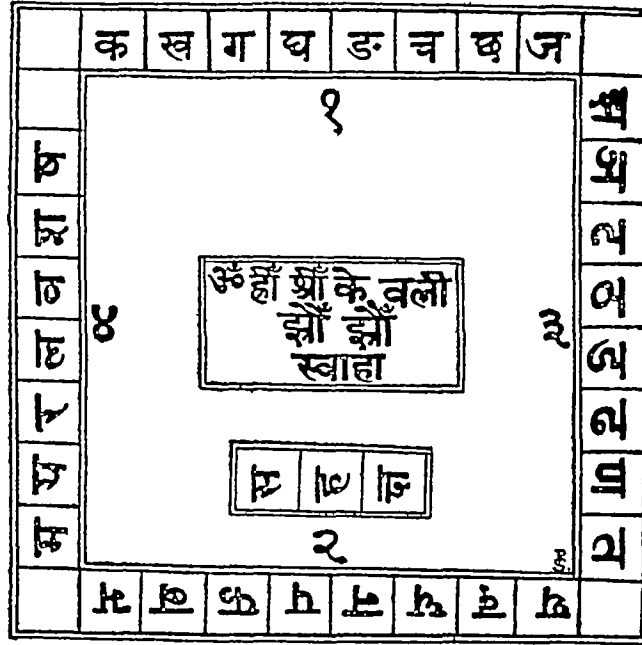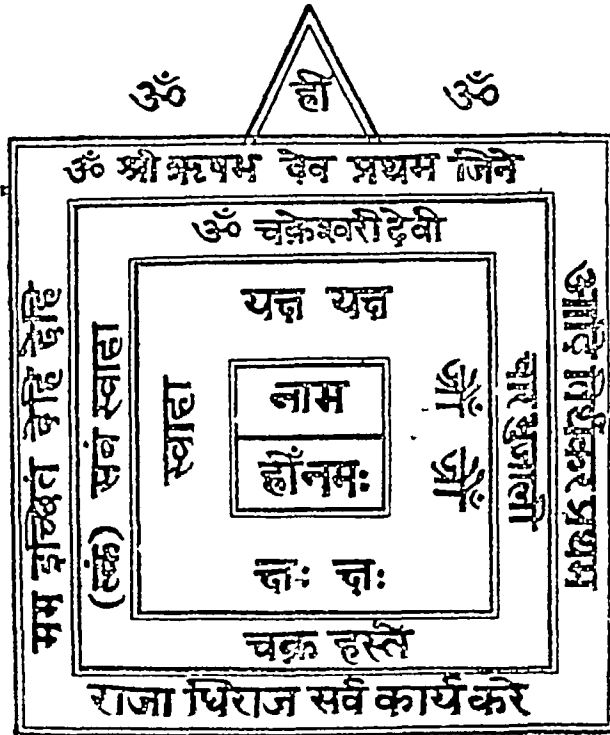
यन्त्र न० ७०

इस यन्त्र को दीवाली के दिन गुरु पुष्य मे अष्ट गध से जाई की कलम से लिखकर पूजन करे तो सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हो। गध से पूजकर तिलक करे मान सन्मान प्राप्त हो।। ७० ।।

यात्र नं० ७१

इस यन्त्र को तालड पत्र या भोज पत्र सोना, चाँदी व ताँबा के पत्रे पर गोरोचन, सिन्दूर, लाल चन्दन, कंकु और अपनी अनामिका अंगुली के रक्त से यन्त्र लिखना। भक्ति से पूजन कर निम्न मन्त्र से "हन ह्री कह ह्री सह ह्रीं ॥" का सवालाख जप करना चाहिए। जप अमावस्या से शुरू कर तीन पक्ष मे पूरे करे ॥ ७१ ॥

यन्त्र नं० ७२
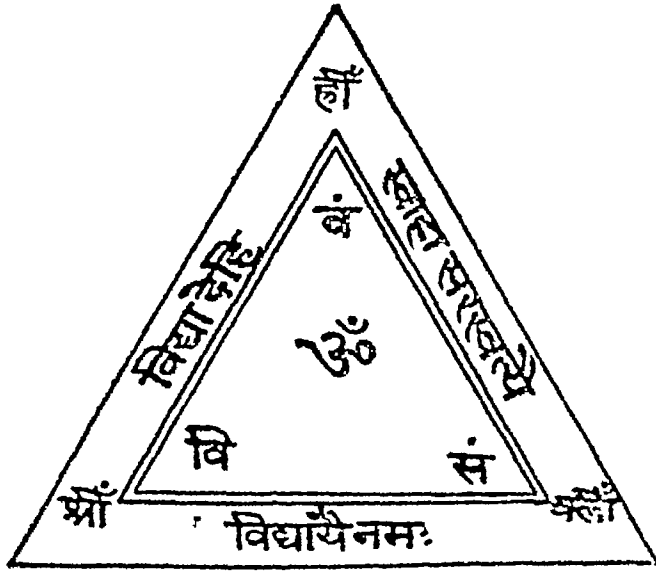
इस यन्त्र को अपने रक्त से भोज पत्र पर लिखकर कंठ या बाहु मे बांधे विद्यार्थी को विद्या की प्राप्ति होती है। ॥ ७२ ॥

यन्य नं० ७३
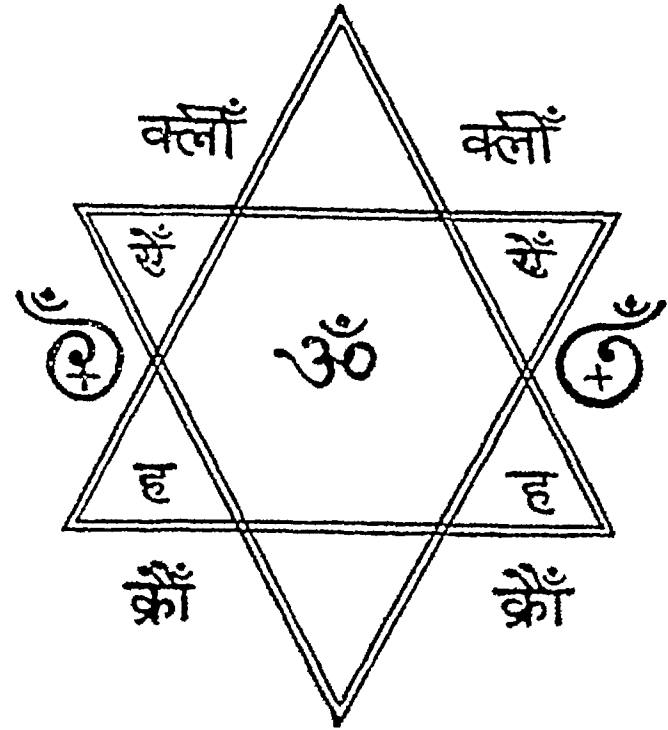
सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र श्री चक्रेश्वरी नमः

इस यन्त्र को रविपुष्य, गुरु पुष्य दीवाली मे भोजपत्र सोना चादी पर लिख पूजे, सर्व कार्य सिद्धि होय ॥ ७३ ॥

यन्त्र न० ७४
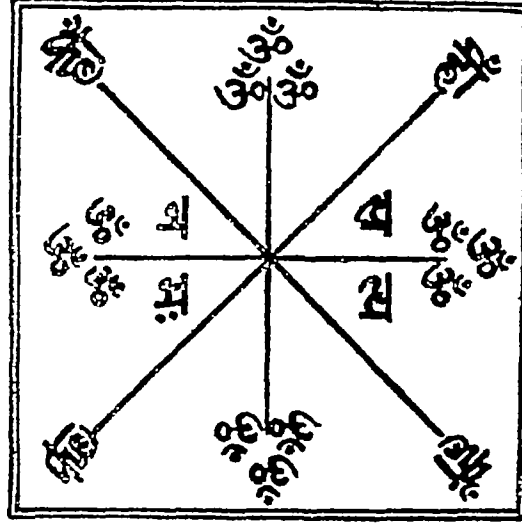
इस यन्त्र की विधि यन्त्र न.   समान है ॥ ७४ ॥

यत्र न० ७५

४३	५०	२	७
६	३	४७	४६
४९	४४	८	१
४	५	४५	४८

इस ऋद्धि सिद्धि यन्त्र को कुंकुम, गोरोचन, केशर से आबिया (आम) के पाटे पर लिखकर पूजन करे, ऋद्धि वृद्धि होय ॥ ७५ ॥

।। चिंतित कार्य सिद्धि यन्त्र ।। ७६ ।।

१	३२	३४	१२	९	२४	४२	५५
३८	५५	५	२८	४१	५१	१३	२८
३१	८	१४	३३	२३	१७	५३	४१
१७	३७	२७	१	५२	४५	१९	१४
३	३७	३१	६१	११	१२	४४	५६
४०	५७	७	२६	४६	४६	१५	१८
२९	४	६९	३५	२१	१२	६४	१८
५८	३९	२५	८	५७	४७	१७	१६

इस यन्त्र को रविपुष्य मे अथवा अपने चन्द्रस्वर मे भोजपत्र पर चाँदी, सोना या तावे के पत्ते पर सुगन्धी द्रव्य से लिखे। जो पूजन करता है उसका चितित कार्य सिद्ध हो जाता है ।। ७६ ।।

श्री घंटाकर्ण महावीर अद्भुत चमत्कारिक यन्त्र।।७७।।

ॐ	घ	टा	क	र्णो	म	हा	वी	र	स	र्व	व्या
तो	ऽक्ष	र	प	क्ति	भि	रो	गा	स्त	त्र	प्र	धि
खि	त्क्ष	य	शा	कि	नी	भू	त	वै	ता	ण	वि
लि	पा	स	र्पे	ग्ग	द	श्य	ते	ग्र	ल	स्य	ना
व	ज	च	घ	टा	क	र्ण	न	ग्नि	रा	ति	श
दे	र्णे	न	ह्री	र	ठ	ठ	मो	चो	क्ष	वा	क
सि	क	स्य	व्लू	वी	स्वाहा	ठ	स्तु	र	सा	त	वि
ष्ठ	न्ति	त	क्लो	र	न	ॐ	ते	भ	प्र	पि	स्फो
ति	या	ग्ग	श्री	ह्री	ॐ	स्ति	ना	यं	भ	त्त	ट
व	स्ति	र	म	ले	का	ना	न	न्ति	व	क	क
त्र	ना	य	भ	ज	रा	त्र	त	वा	घ्र	को	भ
य	ल	व	हा	म	क्ष	र	क्ष	र	प्ते	प्रा	य

इस यन्त्र को रवि पुष्य व शुभयोग मे भोजपत्र, चादी, ताबा के पतरे पर व कासी की थाली मे खुदवावे। रवि हस्त अथवा मुला गुरु पुष्य मे भी दीवाली के दिन बन सकता है। यन्त्र का पचामृताभिषेक कर, चन्दन पुष्पादि से पूजा करना चाहिये। जाई जुई के १०८ पुष्प रखे। मन्त्र बोल कर एक—एक फूल थाली मे चढावे। एक टुकडा अ्र गरबत्ती का लगावे और लकडी से एक टकोर थाली मे लगावे (बजावे)। १०८ बार होने पर थाली मे श्री फल, पंचरत्न की पोटली तथा रुपया एक चादी का रख दे। एक कासी की थाली मे यन्त्र लिखले। इन दोनो यन्त्रो को एक ही विधि है ।। ७७—७८ ।।

यन्त्र नं० ७८

ह्रीँ

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रौँ

ॐ घंटाकर्ण महावीर

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ॐ	ह्रीँ	श्रीँ	क्लीँ
हा	वीर		क्रौँ
म	ह्रीँ	ॐ	ॐ
र्ण	क	टा	घं

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ह्रीँ
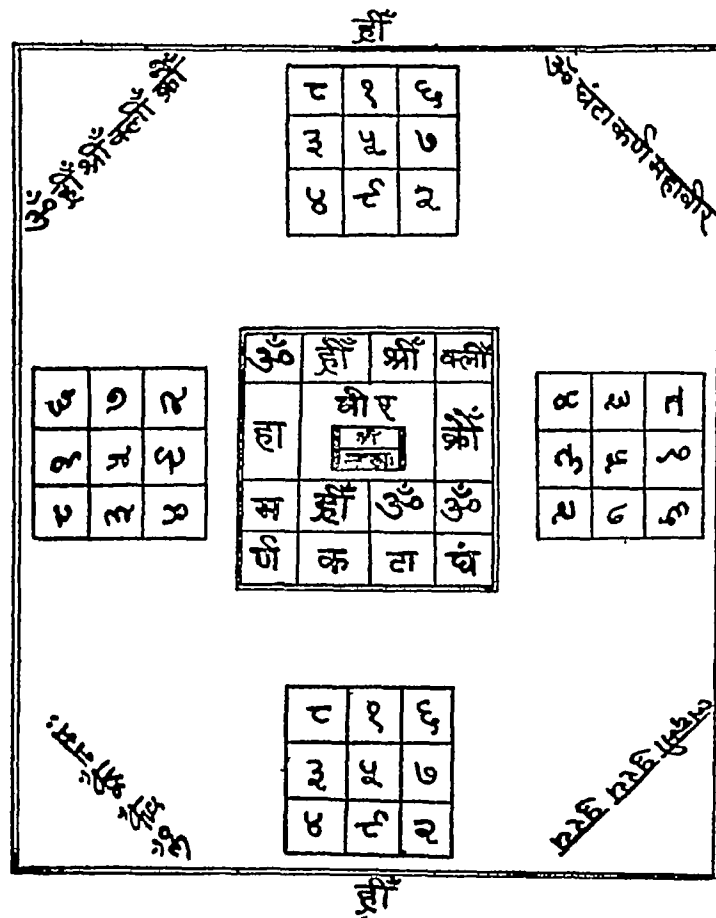
यन्त्र नं० ७९

इस चन्द्र यन्त्र को रूपा (चादी) के पतरे पर खुदवाना, अ्रष्टगन्ध से, चन्द्र ग्रहण मे लिख कर अपने घर मे रखे, फिर आवश्यकता पड़ने पर तीन दिन तक धोकर पिलावे तो रोग मिट जाये। शनिवार, रविवार, गुरुवार को इसे धोकर सवेरे पिलावे, कफ, गुल्म नष्ट हो जाये। इसका पूजन करने से जहाँ जाये, वहाँ जय होय सब काम सफल होय ।। ७९ ।।
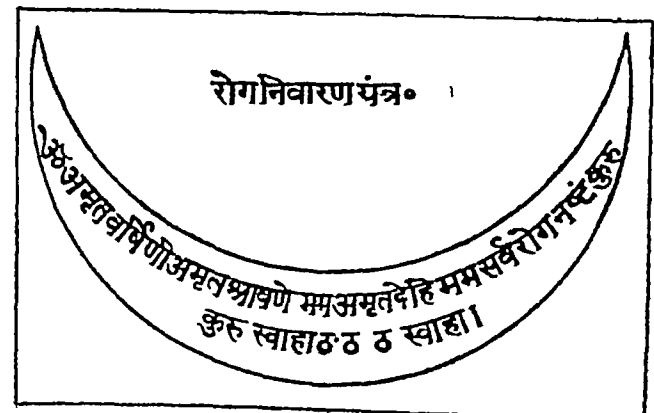
सर्व रोगनिवारण यन्त्र न० ८०

ॐ	ह्री	वि	स	ह	र	पा	स	नाह
ह्री	ॐ	ह्री	फु	लिं	ग	क	म	ठु
श्री	श्री	ध	र	णे	न्द्र	प	द्मा	व
क्ली	श्री	ती	मा	तृ	दे	वी	मम	विस
भ्रौं	श्री	रोग	शोकं	भय	द्वेष	जरा	मरण	विघ्न
झौं	श्री	विघ्न	रा	जा	दि	भ	य	चो
ह्री	श्री	श	दि	भ	य	व्या	घ्रा	दि
ह्री	श्री	भ	य	सिं	हा	दि	भ	य
ह्रूँ	क्षः	स	वँ	फु	ट	फु	ट	स्वा
ह	क्ष	हा	ठ	ठ	ठ	ठ.	ठ	स्वाहा

इस यन्त्र को रवि पुष्य या शुभ योग मे कांसी की थाली मे खुदवाना । अष्टगंध या केशर मे अक्षर अक्षर की पूजन कर सुखाना, पीछे उसे पानी से धोकर उस पानी को दिन मे तीन वार पिलाने से सर्वआधि, व्याधि रोग, पीडा भय, मिट जाता है ।।८०।।

यन्त्र नं० ८१

३६	३६	३६
३६	३६	३६
३६	३६	३६

इस छत्तीस यन्त्र को सुगंधित द्रव्य से लिख कर धारण करने से आधा शीशी नष्ट हो जाती है ।।८१।।

यन्त्र नं० ८२

७	६	०	१	०	०
८	०	०	३	०	०
२	०	०	०	०	०
५	६	७	८	९	१०
४	०	०	०	०	०
५	३	२	१	०	८

इस यन्त्र को भोजपत्र या साधा कागज पर लिख कर मादलिया तावीज में रख कर भुजा या गले में बाध दे तो आंधा शीशी जाये ।।८२।।

यन्त्र नं० ८३

ह्री	श्री	श्री	श्री
ह्री	दे	व	ह्री
श्री	द	त्त	श्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

इस यन्त्र को किसी भी प्रकार के रोग के लिए तथा वश करने के लिए सुगधित द्रव्य से लिखे। देवदत्त के स्थान पर अपना नाम लिखे ।।८३।।

गुमडा होने का यन्त्र यन्त्र नं० ८४

हा क स्वा ७	ख पा छ श्र्व
घ ८	३ ग
र ६ म ५	२ घ १ य
भ त	क्ष ध

इस यन्त्र को भोजपत्र या कागज पर सुगधित द्रव्य से लिख कर भुजा मे बाधने से सर्व प्रकार के फोडे गुमड मिट जाते है ।।८४।।

यन्त्र न० ८५

३८	४६	२६	७७
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	६

इस यन्त्र को रविवार के दिन भोज पत्र पर लिख कर बांधने से आधा शीशी का रोग जाय ।।८५।।

यन्त्र न० ८६
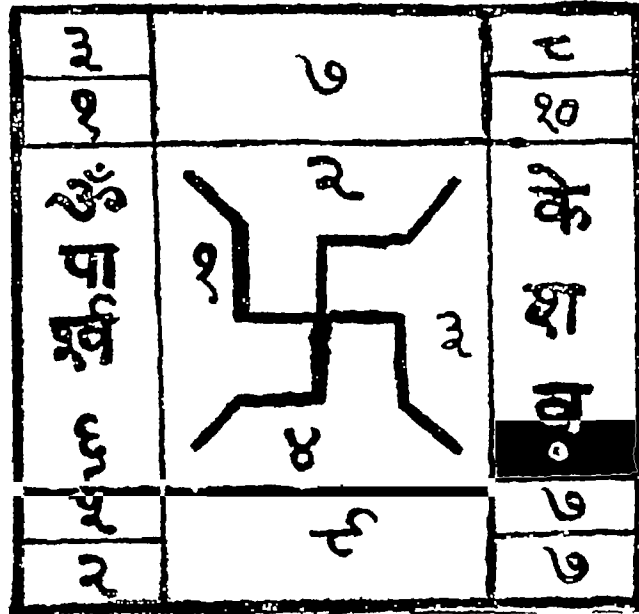
इस यन्त्र को हर ताल से बड के पत्ते पर मंगलवार के दिन लिख कर अपनी भुजा मे बाधे तो दुखता (मसा) हरस मिट जाय रक्त स्राव ।।८६।।

यन्त्र नं० ८७

२	१०	३
३	२	१०
१०	३	२

इस पद्रहरिया यन्त्र को लिख कर धोकर पिलाने से तुरन्त ही ज्वर-ताप उतर जाता है। भूत प्रेत वगैरह जाय। यह बडा चमत्कारी है ॥८७॥

यन्त्र नं० ८८

१ श्री ह्री २	क्ली ३ ४ ॐ
७ हा खा ८	हन ६ ५ क्ष

इस यन्त्र को मगलवार, गुरुवार या शनिवार को जाई की कलम से आक के पत्ते पर लिख कर भुजा या गले में बांधे या सिरहाने रखे तो सभी प्रकार का ताप ज्वर उतरे जावे ॥८८॥

भूत प्रेत पिशाच डाकिन वगैरह निवारण यन्त्र ॥८९॥

इस यन्त्र को हरताल मनसिल हिगुल तथा गोरोचन से आकड़ा के पत्ते पर लिख, धूप देकर जिसके गले, भुजा या कमर मे वाधे तो भूतादि वाधा नष्ट हो जाय ॥८९॥

व्यापार वर्द्धक यन्त्र नं० ६०

"ॐ ह्री श्री अर्हं नम" इस मत्र को १० माला रोज २१ दिन तक सफेद माला,

ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ठः	४२	३५	४०	फु
ठ	३७	३६	४१	फु
ठ	३८	४३	३६	फु
है	भुर	भुर	भुर	फु

सफेद आसन और सफेद पुष्पो से जपे। यत्र को चादी, सोना, ताबा के पत्रे पर खुदवा कर रखे। वदी चतुर्दशी से जाप करे, रात के समय जपे ॥ ६० ॥

यन्त्र नं० ६१

५६२	५६६	२	७
६	३	५६६	५६५
५६८	५६३	८	१
४	५	५६४	५६७

इस यत्र को चादी के पत्रे पर रवि गुरु पुष्य या रविहस्त मूला अथवा दिवाली के दिन जव अपना सूर्य स्वर चलता हो उस समय खुदवा कर प्रतिष्ठा कर रोज पूजन करे तो कोर्ट कचहरी आदि विषय मे जीत होय। यंत्र को जेव मे रखना ॥ ६१ ॥

यत्र न० ९२

इस यंत्र को रवि पुष्य के दिन सोना, चांदी, ताबा या भोजपत्र पर लिख प्रतिष्ठा कर लो। यत्र को ५, १०, १५ तिथि से प्रारम्भ कर साढे बारह हजार करना फिर रोज एक

ॐ	ह्री	श्री	क्ली	ब्लू	न	मि
उ	ण	सुर	अ	मुर	ग	रु
ल	भु	य	ग	प	रि	व
दि	ये	ग	ए	कि	ले	से
अ	रि	हे	सि	द्धा	य	रि
ये	उ	व	ज्भा	ये	स	व्व
सा	हू	ण	न	म	स्वा	हा

माला जपना। मन्त्र प्रारम्भ और अंत करने वाले दिन उपवास करना। सफेद वस्त्र, माला, आसन सफेद, एकाग्रचित से जप करे, मन वाछित कार्य सिद्ध हो, गृह देव प्रसन्न होय ॥ ९२ ॥

अकस्मात धन प्राप्ति यंत्र :—इस यत्र को सफेद चणोठी (सफेद गुंजा) के रस में

यंत्र नं० ६३

१	७	६	२	८	९	९
५	१	७	६	२	७	४
७	६	१	७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
१	२	४	५	७	९	१

जैतून की कलम से हर मगल को अ त की संख्या से लिखना। मौन से लिखे। २१ बार लिखने पर सिद्ध होय। पीछे अष्टगध से लिख दाए हाथ मे बाधे, अकस्मात धन लाभ होय ।। ६३ ।।

यंत्र नं० ९४
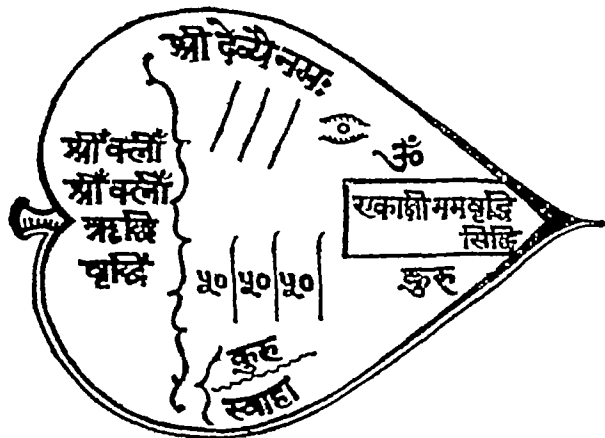
इस एकाक्षी नारियल पर सोना चादी का बरख लगाना। उस पर यह मंत्र ॐ श्री क्ली श्री देव्यै नम कुरु-कुरु ऋद्धि वृद्धि स्वाहा। अष्टगंध से लिखे। दिवाली के दिन १२,५०० हजार जप करे। १०८ बार गोला से हवन करना। सिद्ध कर इस नारियल को भंडार की पेटी में रखे, द्रव्य की प्राप्ति होय कोई भी विपत्ति नही आती ॥ ९४ ॥

पूर्व दिशा की ओर मुखकर ॐ ह्री श्री क्ली एकाक्षय भगवते विश्व रुपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय नम दीवाली के दिन १२,५०० हजार जप पद्मासन से
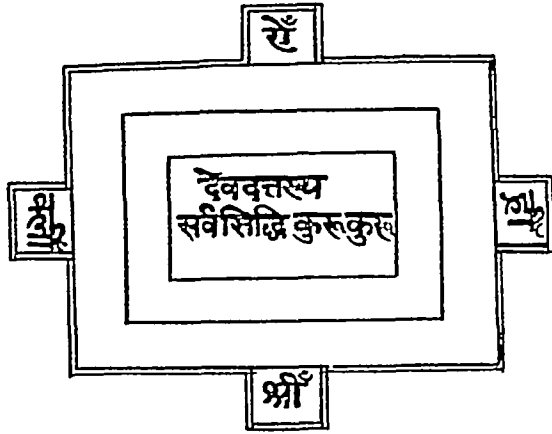
यंत्र न० ९५ यत्र न० ९६
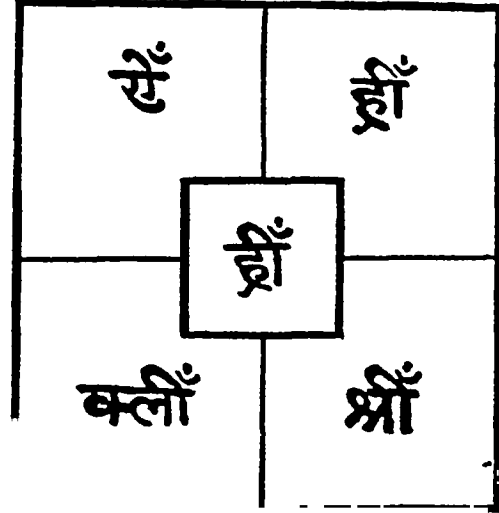
करे। माला प्रवाल की होनी चाहिये। पीछे होम करे, होम की विधि -बादाम १०८-अखोल( ) १०८—सुपारी १०८ लोवान सेर १॥, काली मिरच सेर १॥, दाख सेर ०।-गोला ०।-जव

यत्र नं० ९७
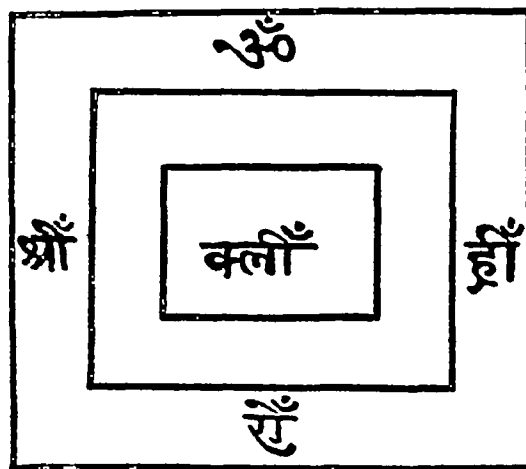
सेर ०।-घी सेर—२ वेर की लकडी, अर्द्ध रात्रि में उत्तर दिशा मुखकर हवन करना। चैत्र सुदी ८-ग्रासोद सुदी ८ दिवाली, होली और ग्रहण के दिन मे नारियल की पूजन करना। यत्र मे देव दत्त की जगह अपना नाम देना। तीनो यत्रो की विधि एक ही है॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥

यत्र न० ९८

इस पदरिया यत्र को रवि पुष्य, रवि मूल, रवि हस्त, गुरु पुष्य, दिवाली के दिन अपने चन्द्र स्वर के साथ। सोने, चादी के पत्रव भोजपत्र पर लिखे। "ॐ ह्री श्री ठ ठ ठ. क्रौ

स्वाहा" साढे बारह हजार बार यत्र लिखना और मत्र भी इतना ही जपना। प्रतिदिन एक हजार जप करना। सफेद वस्त्र पहनना, लवण, खट्टा मीटा, नही खाना, ब्रह्मचर्य पालना, जमीन पर सोना, एक बार भोजन करना पान खाना ॥ ९८ ॥

यंत्र नं० ९९ नवग्रह शान्ति पदरिया के साथ यत्र

इस यंत्र की विधि नही है ॥ ९९ ॥

यत्र न० १०० विजयपता का यत्र

इस यत्र की विधि नही है ॥ १०० ॥

यत्र न १०१

इस यत्र को लिखकर पास मे रखने से सर्वग्रह शॉत होते है ।। १०१ ।।
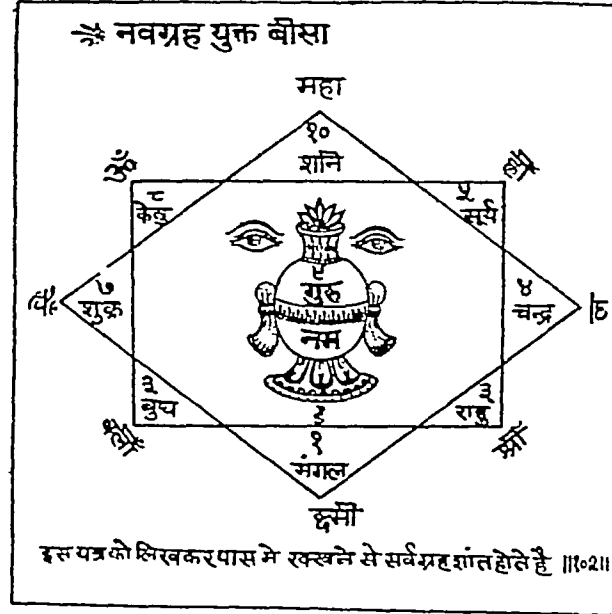
यत्र न० १०२

मूल यत्र —ॐ श्री ह्री क्ली "महा लक्ष्मै नम" भोजपत्र पर रोज एक यत्र लिखना अष्टगध से उस पर २१०० जाप करना धूप दीप फूल फल नेवेद्य धरना पीला वस्त्र पिली माला

महा लक्ष्मये	५		नमः
९	श्रीं		६
ॐ	१	४	ह्रीं
	७	८	
३	क्लीं		२

रखनी चाहिये । इस प्रकार ६२ यत्र ६२ दिन मे लिखना । ६३वाँ यत्र चाँदी के पत्ते का बनवाना । उसके पीछे ६२ यत्र भोजपत्र के रखना । श्री सुक्त (   ) से पूजा करनी चाहिये ।। १०२ ।।

यन्त्र नं १०५

बत्तीसा : लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

व्यापार तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए चालू विधि से तैयार करना ॥ १०५।

चौतीसा यन्त्र नं० १०६

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

॥ लक्ष्मी तथा व्यापार वर्द्धक यन्त्र है।

चौतीसा यन्त्र न० १०७

४	१४	१५	१
९	७	६	१२
५	११	१०	८
१६	२	३	१३

व्यापार तथा लक्ष्मी वर्द्धक यन्त्र है।

छत्तीसा यन्त्र न० १०८

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

व्यापार तथा लक्ष्मी वर्द्धक यन्त्र है।

उपरोक्त तीनो यन्त्रो को चालू विधि से लिखना ।। १०६—१०७—१०८ ।।

६५ या यन्त्र नं० १०९

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

६५ या यन्त्र नं० ११०

२४	३२	२	७
६	३	२९	२७
३१	२५	८	१
४	५	२६	३०

इस यन्त्र को कुलडी मे रख, सुपारी, रुपया, हल्दी, धनिया डालकर दुकान की गद्दी के नीचे गाढना, उस पर बैठना, तो व्यापार अधिक चलता है ॥ ११० ॥

यन्त्र नं० १११

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

यन्त्र न० ११२

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
९	२	२५	१८	११

६५ या यन्त्र का जप मन्त्र :—

(१) ॐ भ्रौं भ्रीं श्री क्लीं स्वाहा।

(२) ॐ ह्रा ह्री नमो देवाधिदेवाय अरिष्टनेमिय अचिन्त्य चिन्तामणि त्रिभुवन

जगत्रय कल्पवृक्ष ॐ ह्रा ह्री समीहित सिद्धये स्वाहा।

विधि :—पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र में जाप करना, १२,५०० (साढे बारह हजार) जप करे। फिर बाद मे एक माला रोज जप करते रहना ॥ ११०–१११—११२ ॥ इन तीनो ६५ या यन्त्र की विधि एक ही है।

यन्त्र नं० ११३

९	८	७	६	५	४	३	२	१
८	८	७	६	६	२	२	१	२
७	३	३	३	३	३	३	३	३
६	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५
४	६	६	६	६	६	६	६	६
३	७	७	७	७	७	७	७	७
२	८	८	८	८	८	८	८	८
१	९	९	९	९	९	९	९	९

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखे। काटे में बांधे के नाभि ठिकाने आवे ॥११३॥

यन्त्र न० ११४

ह २५	र ८०	क्षी	हु १५	ह ५०
स २०	र ४५	प	सु ३०	स ७५
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
ह ७०	र ३५	स्वा	हु ६०	हं ५
स ५५	र १०	हा	सुं ६४	सं ४०

इस यन्त्र को आधे बालक के गले मे बाधे तो सर्व रोग जाये, नजर न लगे ।।११४।।

यन्त्र न० ११५

३८	३१	२६
३१	३१	३७
३४	३७	३२

इसे अप्ट गन्ध से लिखकर,
पास रखे तो दुश्मन वश मे होय ।।११५।।

यन्त्र न० ११६

४	७	२	७
६	३	८	३
६	५	८	१
४	५	२	९

इस यन्त्र को बाधने से कागलो अच्छो होय ।।११६।।

यन्त्र नं० ११७।

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

इस यन्त्र को कमर में बाधे तो वायुगोला की पीड़ा न रहे तथा गले मे बांधे तो साप का जहर उतर जाता है ।।११७।।

यन्त्र नं० ११८

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

इस यन्त्र को लिख कर चरखे मे बाध कर उल्टा घुमावे, परदेश गया हुआ वापस आता है ।।११८।।

नोटः—पेज नं० ३२७ पर यंत्र नं० १०९ की विधि नीचे दी हुई है ।

"ॐ नमो गौतम स्वामिने सर्व लब्धि सम्पन्नाय मम अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा। प्रतिदिन १०८ बार जपिये। जय होय, कार्य सिद्धि होय।

"ॐ ह्नी धरणेन्द्र पार्श्वनाथाय नम ।

विधि —दर्शन कुरु २ स्वाहा। १२ हजार जप कर हाथ मुख पर, नेत्रो पर फेरे, जहाँ धन गडा होगा स्पष्ट दिखेगा।

यन्त्र न० ११९

४	११	२	७
६	३	८	७
१०	५	८	१
४	५	६	९

यन्त्र न० १२०

७७	१	१	५
२	७	५	१३
७	१३	१	५
१	५	१३	७

इन दोनो यत्रो को कुंकुम गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर गले मे बाघे, गर्भ स्तम्भन होय ।।११९, १२०।।

यन्त्र न० १२१

४३	४२
३११	७०

इस यन्त्र को स्याही से लिखकर माथे पर बाधे तो आंधा शीशी का जाय ।।१२१।।

यन्त्र नं० १२२

४२	४९	१४०	४३
६	३३	४६	४५
४९	४४	६	१
४१	४०१	देवदत्त	४१७

लोहे के ढोलने मे ताबीज घाल कर स्त्री के गले मे बाधे, गर्भ रहे ।।१२२।।

यन्त्र नं० १२३

४४	५१	२	८
७	३	४८	४८
४०	४४	६	१
४	६	४६	४९

कुमारी कन्या के हाथ पूणी कत्ताकर यह यन्त्र कागज पर दूध से लिखे। स्त्री के गले में बाधे, दूध घनो घनो होय ।।१२३।।

यन्त्र न० १२४

ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्रीं	देव	दत्त	ह्री
ह्री	मन्त्र	फुरै	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

यह मन्त्र पास रखे राजा, गुरु प्रसन्न होय अष्ट गंध से लिखे ।।१२४।।

यन्त्र नं० १२५

१३३	३	१२	१६
८	१५	११	६
४१८	१३	१०	१९
१	१३	४	४

यन्त्र बाधे शीतला जाय ।।१२५।।

यन्त्र न० १२६

७	१४	२	७
६	३	११	१०
१३	८	८	१
४	५	४	१२

इस यन्त्र को पान के उपर चूने से लिख, सभा वश्य होय ॥१२६॥

यन्य न० १२७

म	क्ष	ज	चं
क्षं	त	ज	ह
ह	ज	ह	च
न	क्षं	ज	ह

भोज पत्र पर लिख, सिरहाने रखे तो स्वप्न न आवे ॥१२७॥

यन्त्र न० १२८

ॐ	ऐं	श्री	ह्री
अ	दु	वा	च
र	ज	ग	म
वा	ली	न	नम.

अर्क के पत्तै लिखात्वा यस्य द्धारे स्थापत्ये तस्योच्चाटन भवति ॥१२८॥

यन्त्र न० १२९

१३२	३	१२	१६
८	१५	११	६
४१८	२	१०	१९
१	१३	४	४

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर हाथ मे बाधे शीतला जावे ॥१२९॥

यन्त्र न० १३०

१२	१४	१६	१८
१३	१५	१७	२०
२१	१३	१५	२७
१२	१४	१६	१८

इस यन्त्र को रविवार के दिन चूना से पान पर लिख कर खिलावे, वश्य होय ॥१३०॥

यन्त्र नं० १३१

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाढै, तो अति उत्तम व्यापार चले ॥१३१॥

यन्त्र न० १३२

३०	७	२६	८
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२	७

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिख कर बाधे, तो आधा शीशी जाय ।।१३२।।

यन्त्र न ० १३३

फल—कोई व्यक्ति धोका देकर जहर पिलावे, तो चल छ, लिख कर धोकर पिलावे तो विष उतरे ।।१३३।।

यन्त्र नं० १३४

८	१	४७	४२
४३	४६	४	५
२	७	४१	४८
४५	४४	६	३

गले की गाठ नाशक यत्र भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिख कर, गले मे बाधे, तो गले की गांठ का नाश होता है ॥१३४॥

यन्त्र नं १३५

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

हृदय घबराहट नाशक यन्त्र ॥१३५॥

यन्त्र न० १३६

२	७	६
९	५	१
४	३	८

उच्चारण निबार यंत्र ।।१३६।।

यन्त्र न० १३७

इस यन्त्र को तावे के पत्रे पर खुदवा कर मकान के चारो दीवार मे लगा देवे, तो धन की प्राप्ति, उपद्रव की शाती होती है ।।१३७।।

यत्र नं० १३८

श्री मणि भद्र महा यन्त्र से यन्त्र न० १०० का है। मणिभद्र महाराज का का है। जो मनुष्य ये यन्त्र दीवाली के दिन छट्ठ तप कारी सुगधि द्रव्य से रात मे लिखे, जो चणोटी का जड हो वहा जा कर यन्त्र को गाडे, फिर दूसरे दिन सुवह व्राह्म मुहूर्त मे निकाल लेना । मौनपूर्वक घर आकर इस यन्त्र का हमेशा श्रद्धा से पूजन करे, तो उसके घर मे लीला लहेर और म गलाचार होता रहे। अटूट लक्ष्मी का आवागमन होता है ।।१३८।।

यंत्र नं० १३९

विधि :—गुगल गोली १०८ होमयेत शत्रु, नादाह। इस यन्त्र को मशान की ठीकरी वौ × नीयत दोय परि लिखत्वाऽग्नि मध्ये प्रज्वाल्य तदोपरिकुर्यात् ॥१३९॥

यन्त्र नं १४०

१२	१९	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

यह यन्त्र रविवार के दिन लिख कर, माथे में राखै, तो मथवाय जाये तथा यह यन्त्र पृथ्वी में गाडे तो टिड्डी खेत को नही खावे ॥१४०॥

यंत्र न० १४१

या यन्त्र रविदिन श्राक का दूध, सो आमकी लेखनी से लिखै। पानी ऽ१।—घालिजै
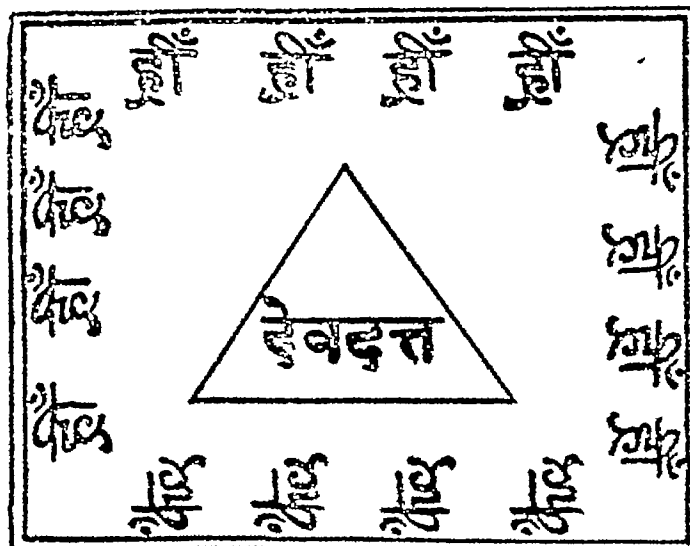
४ उड़द ऽ१ लीजै। हांडी में जंत्र डाले, औटावे। मुडै, मुदै डाकिनी आवै सही ॥ १४१ ॥

यन्त्र न० १४२
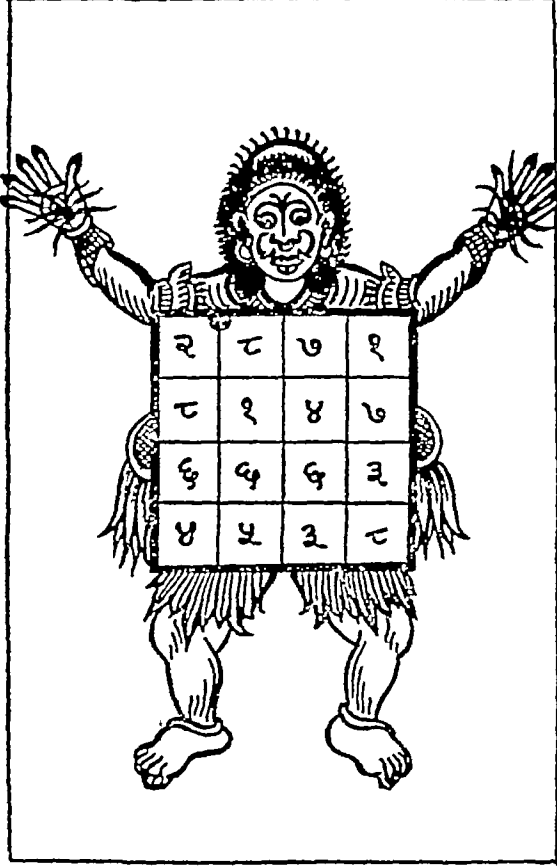
पलीतो मली भूत को स्याही सो लिख कर धूप दीजै, डील मे आवै सही । सत्य ।।१४२।।

यन्त्र न० १४३

यह यन्त्र होली दीवाली मे लिखै, पास राखे सर्व वश्य होय ।। १४३ ।।

ॐ ह्री	क्ष	स्वा	हा	प	क्षै
ह्रां	क्ष	स्वर्ह	क्ष	प	क्ष्मी
ॐ	ज	ह्रॉं	क	स्वा	क्ली

यन्त्र नं० १४४

यह यन्त्र अष्टगध सूं भोजपत्र पर लिखै । कनै राखै, तो घाव लगे नाही । फते होवै सही ।। १४४ ।।

६६	५५	२२	११
५५	११	२२	६६
२२	६६	५५	११
११	५५	६६	२२

यन्त्र नं० १४५

राजा रानी मोहन को नव प्रकर्ण यन्त्र है सत्य । इस यन्त्र को अष्टगध से लिख कर, पास में रखने से, राजा-रानी वश मे होते हैं ।। १४५ ।।
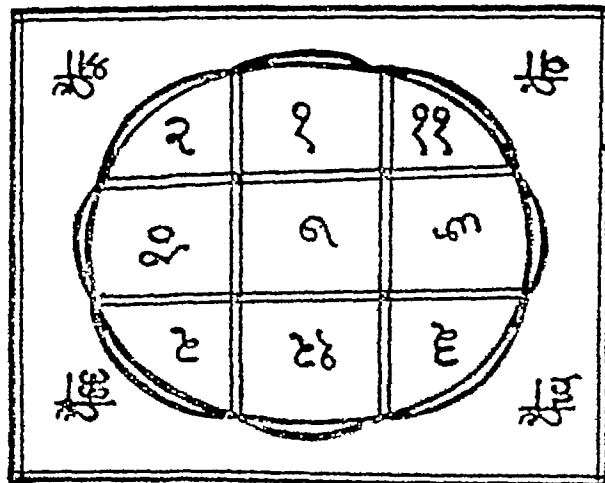
यन्त्र न० १४६

२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से, भोजपत्र पर लिखकर, डाकिनी के गले मे बाँधे, तो जिसको डाकिनी की वाधा है, वह दूर होगी ।। १४६ ।।

यन्य न १४७

६७८	६८५	२	७
६	३	६८२	६८१
६८४	६७६	८	१
४	५	६८०	६८३

इस यन्त्र को सुगन्ध द्रव्यवास सूँ लिखकर गले मे वांधना चाहिये, इस यन्त्र से भूत-प्रेत का डर कभी नही होय ।। १४७ ।।

यन्त्र नं० १४८

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५

यन्त्र नं० १४९

२३	१	२१	८
२	२६	८	२७
५	१८	२	२५
२२	६	२४	७

इस यन्त्र को थाली मे लिखकर, धोकर पिलावे सर्व ज्वर ठीक हो जावे ॥१४९॥

यह यन्त्र भोज पत्र पर अष्टगन्ध से लिखे, दीतवार (रविवार) के दिन पास मे रखे तो राड जीत कर घर आवे । सत्य व तथा यन्त्र को बालक के गले बांधे तो नजर न लगै ॥१४७॥

विजय यन्त्र न० १५०

ॐ	ह्री	दे	व	द	त्त	स्वा	हा
भै	ॐ	२८	३५	२	७	ॐ	भ
र	ह्रा	६	३	३२	३१	ह्रां	वा
वी	ॐ	३४	२९	८	१	ॐ	नी
न्म	ह्री	४	५	३०	३३	ह्रां	जी
श्री	प	द	मा	व	ती	स्वा	हा

यन्त्र रविवार के दिन आटे की गोली वनाकर मछलियो को खिलावे, तो जिस नाम से खिलावे, वह वश मे होता है। इस यन्त्र को सवा लाख वार लिखने से मनचिंचित कार्य की सिद्धि होती है।। १५० ।।

यन्त्र न० १५१

४८५	४८२	२	७
६	३	४२६	४८८
४६१	४२६	८	१
४	५	४८	४६०

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर पास मे रक्खे तो शस्त्र नही लगे, विजय हो ।। १५१ ।।

यन्त्र नं० १५२

८	१	६८१	१०
११	६८०	४	५
२	७	६	६८२
६७६	१२	६	३

ग्रहण मे लिख वाँधै, मृगी जाय ।।१५२।।

यन्त्र न० १५३

१४	२१	२	७
६	३	१८	१७
२०	१५	८	१
४	५	१६	१६

जन्त्र नजर निवारण को, भोजपत्र पर सुगन्ध सौ लिखकर गले मे वाँधे ।।१५३।।
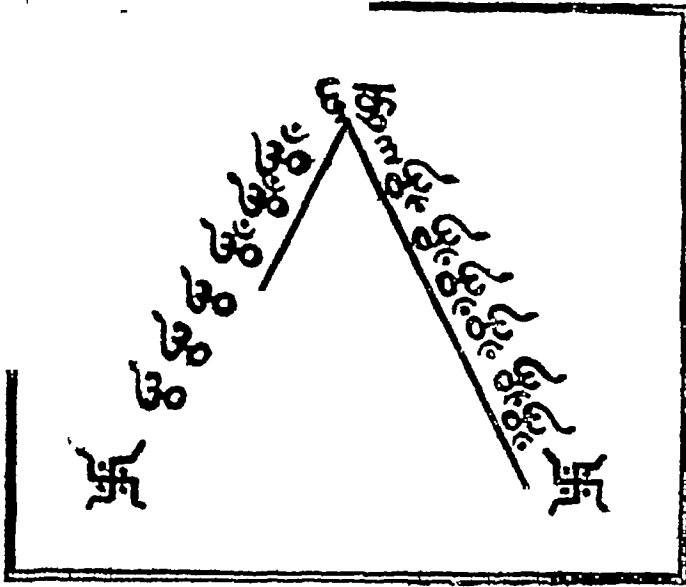
यन्त्र नं० १५४

इदं यन्त्र राई भर दीवा वालै तो जिन्द भूत जाय। निश्चय सेती इदं भूत नाशन यंत्रम् ।। १५४ ।।

यन्त्र नं० १५५

रविवार के दिन यन्त्र लिख, हाथ मे बाधे, तिजारी चढे नही ।। १५५ ।।

यन्त्र न० १५६

१०४	१०११	२	७
६	३	१०८	१०७
१०२	१०५	८	२
४	५	१०६	१०६

यह मन्त्र लिख पास राखे, काख अलाई अच्छी होय। विष न रहे ।। १५६ ।।

यन्त्र नं० १५७

૨૫	૨૨	૧૨	૫૬	૧૫	૮૭	૮૭
૩૭	૪૫	૫૬	૩૬	૩૭	૮૧	૫૬
૮૧	૧૭	૫૭	૪૩	૫૬	૨૫	૪૫
૭૭	૮૫	૮૭	૮૭	૩૪	૩૭	૨૫
૫૬	૪૭	૨૫	૨૫	૫૬	૨૫	૩૭
૨૫	૨૫	૪૨	૧૭	૯૭	૨૫	૪૫

यह यन्त्र अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर पास मे राखे, तो भूत मैली वीजासण लागे नही, कभी याको दखल होय नही ॥१५७॥

यन्त्र नं० १५८

३	८	२
२	६	७
१	३	८
६	३	१

यह यन्त्र रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखकर हाथ मे बाँधे, तो वेला ज्जर चढे नही ॥ १५८ ॥

यन्त्र नं० १५९

	माँ	माँ	माँ	मा	
८	९	७	२	६	३
५	१०	५	८	७	४
७	१२	२	३	८	६
७	८	२	३	६	५
	काँ	काँ	काँ	काँ	

इदं यंत्रं अष्टगंधेन भोज पत्रे लिखित्वा स्थापय, भरतार वश्यं ।

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर, पास में रक्खे या स्थापन करे, तो भरतार वश मे होता है ।। १५९ ।।

यन्त्र नं० १६०

११	७४	२	३
३	७	५	१०
३	८	४	५
४	५	६	५

यन्त्र नं० १६१

१२६	४१	६०	२७
२६	६१२	१६	३५
१४१	१२	४३	४५
१२	१५१३	२१	४१

यन्त्र रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखें, दुष्ट मूठ को भय कभी भी नहीं होय ।।१६०—१६१ ।।

यन्त्र न० १६२
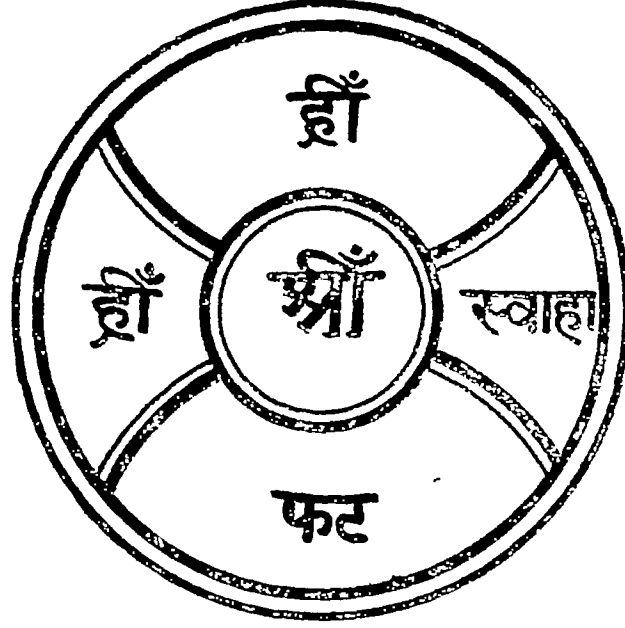
यन्त्र को पीपल के पान पर स्याही से लिखिये। इससे एकातरा ज्वर जाय ॥ १६२ ॥

यन्त्र न० १६३

९९	८८	७७	६६	५५
१०	९९	८८	७७	६६
१११	११०	१०९	१०८	१०७
६००	३००	६	७	६००
१०१	६९	९९	९७	८९

इस यन्त्र को लिखकर काजल कीजे, पाछे ७ दिन लीजै, अ जनि को करि भरतार कनै जावै वश्य भवति ॥ १६३ ॥

यन्त्र नं० १६४
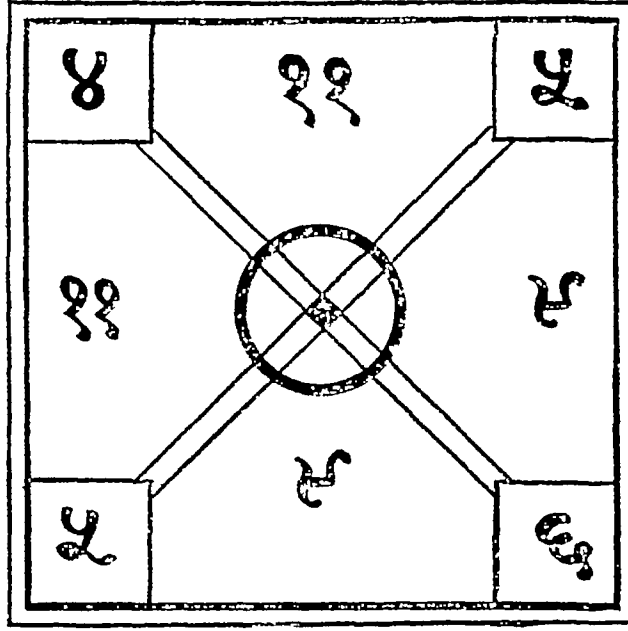
यह यन्त्र भोजपत्र पर लिख, माथा मे राखे, सभा वश होय सही ॥ १६४ ॥

यन्त्र नं० १६५

हनुमन्त की आज्ञा फुरे

१२	३	१९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	१३	४

हनुमन्त की आज्ञा फुरे

यह पद्मावती यन्त्र लिखकर विलोवनी के वाँधने से घी ज्यादा होता है ॥ १६५ ॥

यन्त्र न १६६

९८६ या यन्त्र

४८५	४९२	२	७
६	३	४८९	४८८
४९१	४८६	८	१
४	५	४८७	४९०

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से लिखकर पास मे रक्खे तो युद्ध मे जीत होय ॥१६६॥

यन्त्र न० १६७
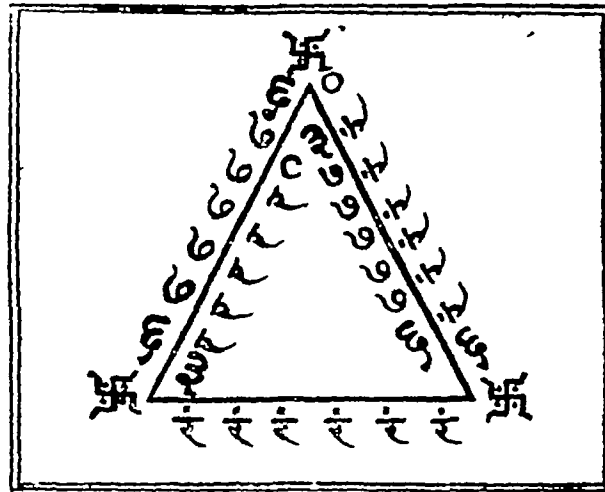
इस यन्त्र को कागज मे लिखकर जलावे, फिर सु घावे प्रेत वकारे जाय सही। इदं प्रेत व कारो यत्रोऽयम् ॥ १६७ ॥

यन्त्र न० १६८

केशर से थाली मे लिख धोय ॥ १६८ ॥

४	५	३१	३६
३५	३२	८	१
७	२	३४	३३
३०	३७	३	६

यन्त्र न० १६९

यन्त्र जाप मे स्त्री के सिरहाने राखै तो कोई वात का विघ्न नही सही ॥ १६९ ॥

५४	६१	२	९
७	३	४९	५७
६०	५५	८	१
४	६	५६	५९

यन्त्र नं० १७०

यन्त्र सुगन्धित द्रव्यो से लिखकर मकान कि देहली के ऊपर नीचे गाडे और उसको उलाघे तो स्त्री सासरे रहे सही ।। १७० ।।

६२	६९	२	८
७	३	६६	६५
६८	६३	९	९
४	६	६४	६७

यत्र नं० १७१

इस यन्त्र को केशर, सिन्दुर, से लोटा के नीचे लिख कर पानी पीलावे तो वश होता है ।। १७१ ।।
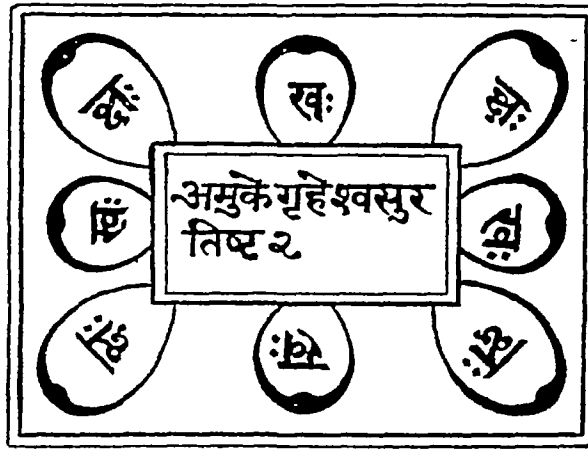
चौतीसा यन्त्र नं० १७२

यह यन्त्र क्रियाण मध्ये रखै, लाभ होय। कच्ची ईट मे लिख, गद्दी के नीचे गाडे, लाभ अवश्य होय ।। १७२ ।।
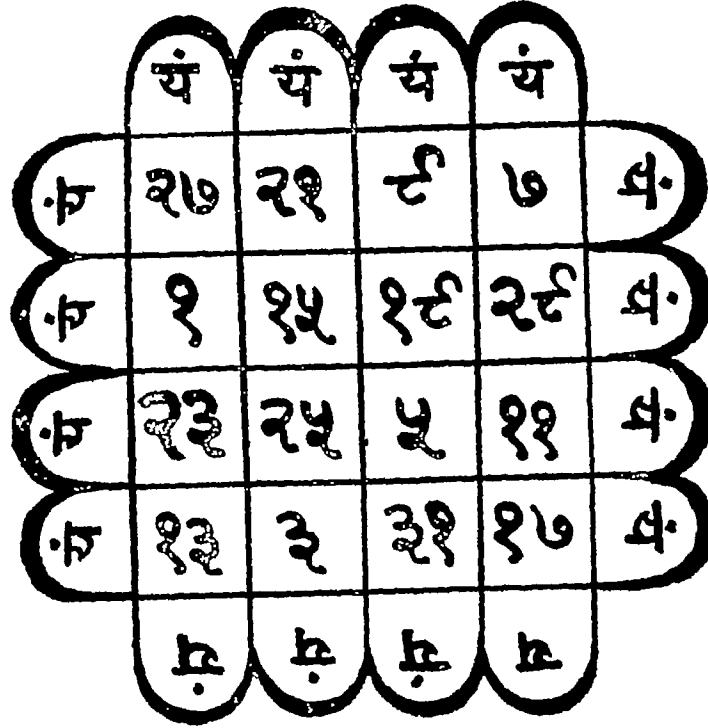
यंत्र नं० १७३

२	७	२४	४१
२२	२७	६	३
८	१	४०	२५
३६	३४	४	५

यन्त्र नं० १७४

५	९	६
७	१०	६
४	१	५

शाकिनी, डाकिनी, भूत भैसासुर लगै नही, पीपल के पान पर लिखि धूप दे, ताबीज मे मढि गले मे बाधे ।। १७३ ।।

यन्त्र न० १७५

२१	१८	१८	२५
२६	१७	३१	२०
२६	३२	२४	१६
१६	२७	२१	२

ॐ नमो आदेश गुरु को आधाशीशी आध (कपाली) कमाल माँग स वारो सारी रात एकून आया, हनुमत आया काई लाया सहसा-मणा को मुदगर लाया, सवाहाथ की धुरी हाक सुनी हनुमत की (आधा शोशो) जाय ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

यन्त्र न० १७६

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३६	४२

जन्त्र पीड को कागज पर स्याही से लिखै तो पीडा मिटै ॥ १७६ ॥

यन्त्र न० १६६

यन्त्र थालो मे लिख स्त्री को पिलावे, तो गर्भ ६ माह पोछै खलास होय ॥ १७७ ॥

य	य	य	य	य	य	यः
य	२४	३१	२	७	६	यः
य	६	६	२	८	२७	य
य	३	२५	८	१	३	यः
य	६	५	२	६	२६	य
यः	य	य	य	य.	य.	यः

यंत्र नं० १७८

२९	३६	२	८
७	३	३३	३२
३१	३०	९	१
४	६	३१	३१

यन्त्र लिख थल मै गाडै। रविवार के दिन उलघै तो गर्भ जाता है ॥ १७८ ॥

यन्त्र न० १७९

६७७	६८४	२	७
६	३	६८१	६८०
६८३	६७८	८	१
४	५	६७९	६८२

यन्त्र सुगध से लिखे। गाय के गले बांधै, बछडा होगा तथा स्त्री के गले मे बाधे तो भरतार वश्य होय ॥ १७९ ॥

यन्त्र न० १८०

३३	४०	२	८
७	३	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

यन्त्र माल कांगनी का रस सूँ जाका घर में गाडै ताके सर्प भय होय नाही ॥ १८० ॥

यन्त्र न० १८१

३७	४४	२	८
७	३	४१	४०
४३	३८	६	१
४	६	३६	४२

इस यन्त्र को मुर्गा की वीट से कागज पर लिख कर माथे पर रखे, तो वश मे हो ।। १८१ ।।

यन्त्र न० १८२

३४	४१	२	८
७	३	३८	३७
४०	३५	६	१
४	६	३६	३६

यन्त्र घर के सम्मुख हिरमिच सँ माडै, तो डाकिनी शाकिनी का भय नही होय ।। १८२ ।।

यन्त्र न० १८३

३६	४३	२	८
७	३	४०	३९
४२	३७	९	१
४	६	३८	४१

यन्त्र क्रौच का रस सूँ लिख, भोज-पत्र, ऊपर घर मे राखै तो सर्प, आवे नही ॥ १८३ ॥

यन्त्र न० १८४

४२	४८	२	९
७	३	४६	४५
४८	४३	९	१
४	६	४४	४७

यन्त्र पौलि के दरवाजे लिखै, शत्रु देख जल मरै । शत्रु वश होय सही ॥ १८४ ॥

यन्त्र न० १८५
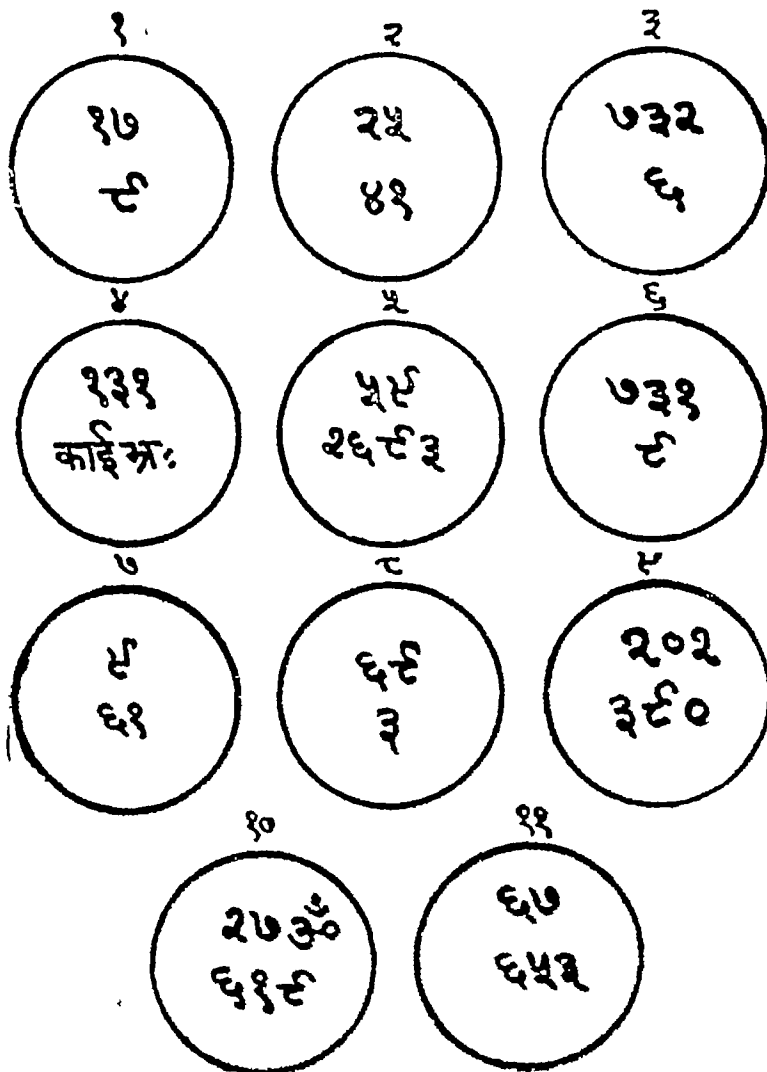
गेहूँ की रोटी आदित्यवार के दिन करावै । ११ तिह ऊपर यह यन्त्र लिखिये ते रोटी छाया मे सुखावे, पुरुप कुत्ती—स्वानती ते खिलावै तो स्त्री वश्य होय और स्त्री स्वान ने खिलावै तो पुरुष वश्य हो ॥ १८५ ॥

यन्त्र न० १८६

४४	५१	२	८
७	३	४८	४७
५०	४५	९	१
४	६	४६	४९

कुमारी कन्या के हाथ पूनी २।। को कतार कर ये यन्त्र कागज मे दूध से लिखै । स्त्री के गले बाधे, दूध ज्यादा होय ।। १८६ ।।

यन्त्र न० १८७

४५	५२	२	८
७	३	४९	४८
५१	४६	९	१
४	६	४७	५०

यन्त्र भोजपत्र पर दिवाली की रात लिख, गले मे राखै । मनुष्य व स्त्री, तो कामण इमण लागै नाही ।। १८७ ।।

यन्त्र नं० १८८

४२	४६	२	८
७	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	६	४४	४७

यंत्र, बाबरा का पान पर माडै, जाका नाम को सो यन्त्र वन में गाडै, तो वह भ्रमता फिरै ॥ १८८ ॥

यन्त्र नं १८६

५४	६१	२	८
७	३	५८	५७
६०	५५	६	१
४	६	५६	५६

यन्त्र जापा में स्त्री के सिरहाने राखै तो कोई बात का विघ्न नही, सही ॥ १८६ ॥

यन्त्र नं० १९०

६१	६८	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६६

यत्र बुझारी के माहि लिखकर के मशान मे गाडै, तो स्त्री की कूख बन्द होय ।। १९० ।।

यन्त्र न ० १९१

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

यत्र आक की जड सूँ लिख, माथे राखै, तो देवता प्रसन्न होय ।। १९१ ।।
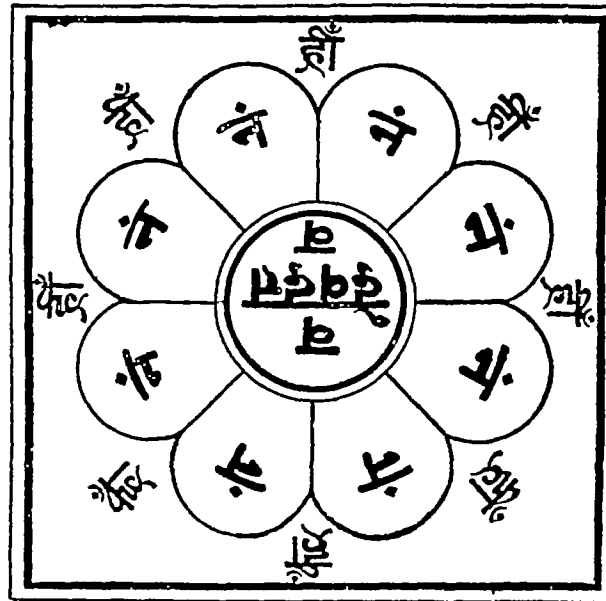
यन्त्र न० १९२

यह यन्त्र गर्म पानी में रखिये । तीन दिन मे शीत ज्वर जाय । शीतल पानी मे रक्खै शी ज्वर जाय, हाथ में बांधे वेला ज्वर जाय धूप खेवै, भूखो को जिमावै ।। १९२ ।।

यन्त्र नं० १९३

१ यन्त्र चौराहे में और १ यन्त्र शत्रु के द्वारे गाडै १ आक के वृक्ष मे बाधै। पहले दस हजार जपना, दशाश होम करना, उच्चाटन होय यन्त्र मन्त्र में है ॥ १९३ ॥

यन्त्र नं० १९४

हूँ	हूँ	हूँ	हूँ	हूँ	हूँ
हूँ	२७५	२७५	२७५	२७५	हूँ
हूँ	२७५	२७५	२७५	२७५	हूँ
हूँ	२७५	२७५	२७५	२७५	हूँ
हूँ	हूँ	हूँ	हूँ	हूँ	हूँ

नोट—इसकी विधि उपलब्ध नही हो सकी है।

यन्त्र नं० १९५

४२	४८	२	९
७	३	४६	४५
४८	४३	९	१
४	६	४४	४७

यन्त्र लोहे के तावीज मे घाल कर स्त्री के गले मे बाँधै गर्भ रहे ।। १९५ ।।

यन्त्र नं० १९६

यह यन्त्र श्मशान के कोयले से धतूरे की लेखनी से लिखै । मनुष्य की खोपडी पर अग्नि मे तपावै, शत्रु को ज्वर चढै । निकासै छुटे ।। १९६ ।।

यन्त्र नं० १६७

१०	२	८	८
३	७	६	६
४	६	१	१
६	५	८	८

जत्र भोजपत्र ऊपर हिगुल से लिख, गले मे वाधे तो ताव रोग जाय बालक का सही छै ॥१६७॥

यन्त्र न० १६८

२८	३५	२	८
७	३	३२	३१
३४	२६	६	१
४	६	३०	३३

जत्र थाली के ऊपर माढ स्त्री को दिखावे। उलंघो घोली प्यावे तो कष्टी का कष्ट छूटै ॥१६८॥

यन्त्र न० १६६

६०	६७	२	८
७	३	६४	६३
६६	६१	६	१
४	६	६२	६५

जन्त्र स्त्री ने दूध में घोल पिलावे, पुष्य नक्षत्र मे पावा आन पड़े ॥१६६॥

यन्त्र न० २००

ह्री	ह्री	ह्रीं	ह्री
ह्री	देव	दत्त	ह्री
ह्री	मन्त्र	फुरै	ह्री
ह्री	ह्री	ह्रीं	ह्री

यह यन्त्र पास राखे, राजा गुरू, प्रसन्न होय ग्रष्ट गन्व सूं लिखे ॥२००॥

यन्त्र न० २०१

४३	४२
३११	७०

इस यन्त्र को स्याही से लिख कर माथे पर बांधे, तो आधा शीशी जाय ॥२०१॥

यन्त्र न० २०२

५	२
३	७

इस य त्र को रविवार के दिन पीपल के पत्र पर लिख, हाथ मे बाधे तो अन्तरा ज्वर जाता है ॥२०२॥

यन्त्र न० २०३

१२	११	६६	१
६	१।	॥।	॥।

रवि दिन धोय पिलावे, स्त्री पुरुष वश्य होय ॥२०३॥

यन्त्र न० २०४

७७	१	१	५
२	७	५	१३
७	१३	१	५
१	५	१३	७

गर्भ स्तम्भन य त्र कु कुम गौरोचन सू भोज पत्र पर लिखे कठ मे बाँधे तो गर्भ का स्तभंन होता है ॥२०४॥

यन्त्र न० २०५

७	४५	१	७
२	४६	८	४४
४६	३	४३	५
४३	६०	४५	४

यह य त्र केशर सू लिख थाली मे लिख कर घोल कर पिलावे, तो प्रसव की वेदना मे छुटे ॥२०५॥

यन्त्र न० २०६

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

ये यन्त्र धोय पिलावे कष्ठी छूटे ।।२०६।।

यन्त्र न० २०७

यः	न	२प्र॰
ॐ	घ॰	ध.
स	सीः	द.

पीपल के पत्त पर लिखे, सिर पर बाधे, सिर दर्द जाय ।।२०७।।

यन्त्र नं० २०८

ॐ१	न ४	न ४
२म ८	त ८	र६
द ७	लं ८	ज ३

आंधा शीशी जाय ।।२०८।।

यन्त्र नं० २०९
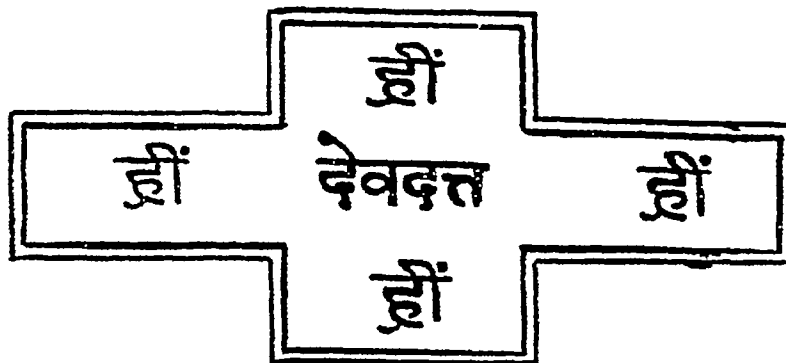
इद यन्त्र कुम कुमादिभि लिख्यते कठेध्रियतेशिरोर्ति रोग निवारयति रक्षा करोति ।।२०९।।

यन्त्र न० २१०
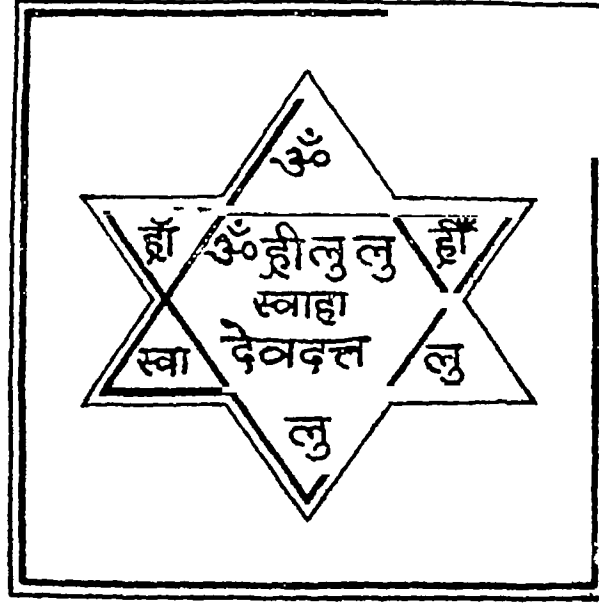
इस यन्त्र को बालक के गले मे बाधने से रोना दूर होता है ॥२१०॥

यन्त्र नं० २११

८	१	६
३	५	७
४	९	२

एक च धन लाभ च । द्वितीयं च धनं क्षय ॥
त्रितिय मित्र संयुक्त । चतुर्थं च कलह प्रिय ॥१॥
पच मे सुख लाभाय । षष्टभे कार्य नाशन ।
सप्तमे धन धान्य च । अष्टमे मरण ध्रुव ॥२॥
नव मे राज सन्मान । कथ्ति जिन भाषितं ।
केवली समाप्त ॥२११॥

यन्त्र नं० २१२

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यह यन्त्र १०८ वार मौन सो लिखि भजिमे पुष्ट वेडी भाजि पडे ॥२१२॥

यन्त्र नं० २१३

८	३	४
१	५	९
६	७	२

यह यन्त्र खडी सू थाली मे लिखि स्त्री ने दिखावे तो कष्ट सू छूटे ।२१३।

यन्त्र नं० २१४
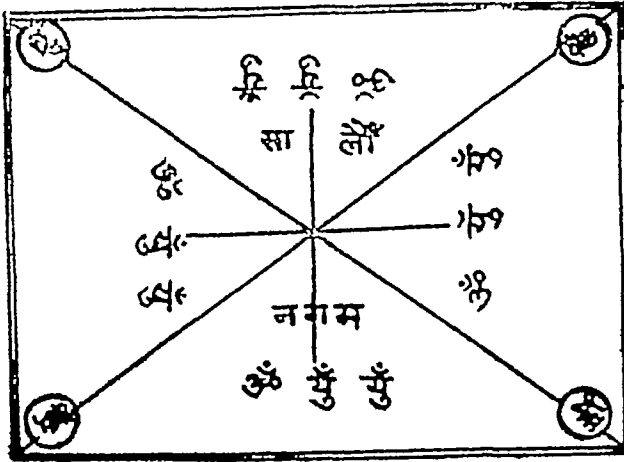
यह यन्त्र घृत पात्र के नीचे राखे। पात्र चालने तो मात्र माहि घृत वढे टूटे नही अष्ठ ग ध सो लिखे ॥२१४॥

यन्त्र नं० २१५

अमुक मार्ग पर चक्र पागत स्तभ भवति स्वाहा। सत्य कुरु स्वाहा प्रवल स्थभों भवति। भोज पत्रे लिख शत्रु दारे प्रवेशे स्थाने वा लिख तथा भोज पत्रे लिखित्वा सूत लपेटे आटा की गोली मध्ये घालिये मनुष्य कृपाले ॥२१५॥

यन्त्र न० २१६
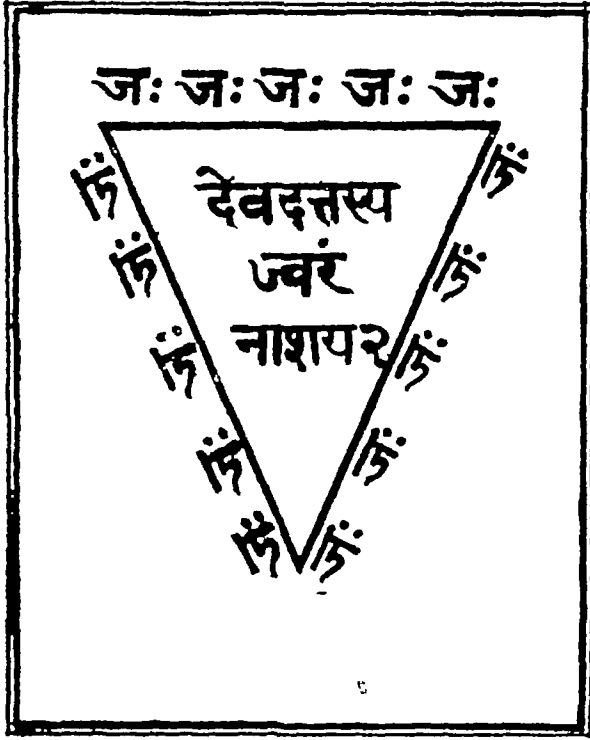
यन्त्र न० २१७
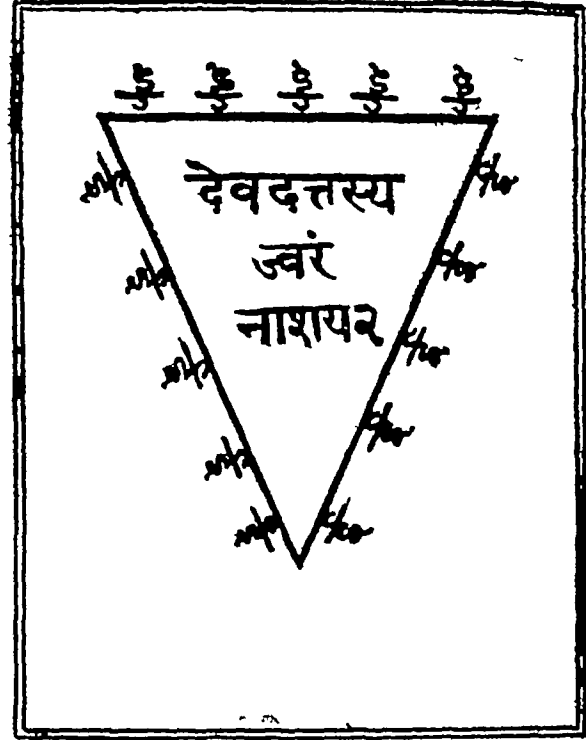
ये यन्त्र शीत ज्वर चढने के पूर्व अग्नि मे तपावै। जब तक वक्त टल जाय पानी के कटोरे मे डाल देवे सिरहाने राखै ज्वर जाय ॥२१६, २१७॥

यन्त्र न० २१८
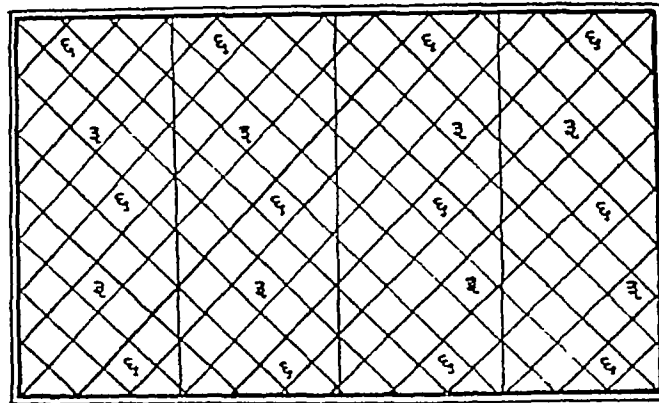
यन्त्र जजीरे का सिन्दूर से लिखे। दिखावै जलावै भूत व कारे सही ॥२१८॥

यन्त्र नं० २१९

४५	४१	५	२
५४	५४	४६	४२
४२	५१	४४	४१
४५	४२	५२	४१

इस य त्र को पान पर लिख स्त्री को खिलाने से प्रसुति मे कष्ट नही होता ॥२१९॥

यन्त्र नं० २२०

२७	३४	२	७
६	३	३१	३०
३३	२८	८	१
४	५	२९	३२

इस य त्र को वच्चे के गले मे बॉधने से दृष्टि दोष निवारण होता है ॥२२०॥

यंत्र न० २२१

८	१	४९८॥	४९३॥
४९४॥	४९७॥	४	५
२	७	४९३॥	४९९॥
४९६॥	४९५॥	६	३

इस यन्त्र से गर्भ स्तम्भन होता है ॥२२१॥

यन्त्र न० २२२

४	३	८
९	५	१
२	७	६

जमीन मे लिखे मेटे शत्रु उच्चाटन होय ॥२२२॥

यन्त्र न० २२३
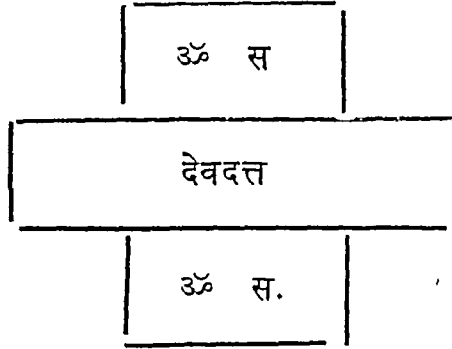
इस यन्त्र को पान मे रख खिलावे वश्य होय ॥२२३॥

यन्त्र न० २२४
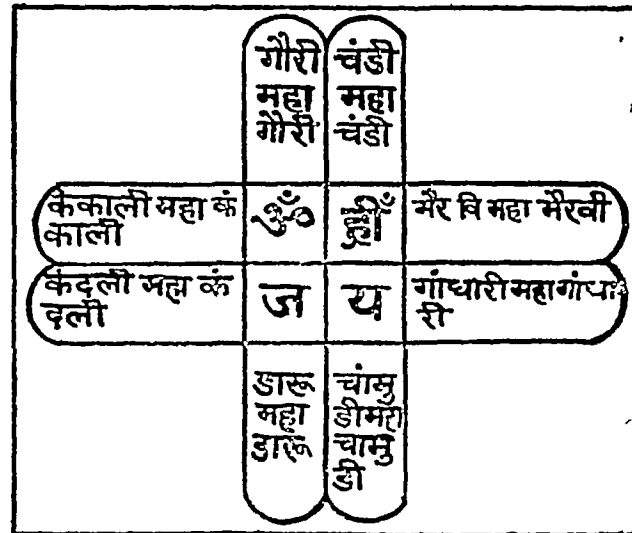
इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर कमर मे बाधे, तो सर्व वायु जावें ॥२२४॥

यंत्र नं० २२५

८३१	८२४	८२९
८२६	८२८	८३०
८२७	८३२	८२५

मृत वत्सा के मरे हुवे वच्चे होना
वंध हो ॥ २२५ ॥

यन्त्र न २२६

३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८

इस यन्त्र को गले वाधे, शाकिनी
जाये ॥ २२६ ॥

यन्त्र नं० २२७

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४२

पीपल के पत्ते पर लिख वांधै,
ज्वर जाय ॥ २२७ ॥

यन्त्र न० २२८

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

यह यन्त्र लिख कर, सीमा मे गाडै तो
टीड्डी नष्ट हो जाय ॥ २२८ ॥

यन्त्र न० २२९

१	८	१०	८२
८१	११	५	४
७	२	८३	९
१२	८०	३	६

यन्त्र लिख कर बाधै आंधा शीशी जाय ॥ २२९ ॥

यन्त्र नं० २३०

१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२।	१२॥

यन्त्र बाधै जुआ जीतै ॥ २३० ॥

यन्त्र न० २३१

४	३२	७	३७
३८	६	३५	१
३३	३	३६	८
५	३९	२	३४

यन्त्र लिखै बाधै शूल जाय ॥ २३१ ॥

यन्त्र न० २३२

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

यन्त्र लिख नीले डोरे से बाधै, सिर पीडा मिटै ॥ २३२ ॥

यन्त्र नं० २३३

१४	२१	२	७
६	३	१८	१७
२०	१५	८	१
४	५	१६	१९

यह यन्त्र लिख धोय पिलावै, सुख से प्रसव होय, कष्ट छूटै ॥ २३३ ॥

यन्त्र नं० २३४

१८	२५	२	७
६	३	२२	२१
२४	१९	८	१
४	५	२०	२३

पीपल के पत्ते पर लिख कर चर्खे से बाध उलटा घुमावै, परदेश गया हुआ आवें ॥२३४॥

यन्त्र न० २३५

य	क्षं	जं	चं
क्ष	तं	जं	ह
ह	जं	ह	चं
नं	क्षं	जं	हं

भोज पत्र पर लिख सिरहाने राखै तो स्वप्न आवैं नही ॥ २३५ ॥

यन्त्र न० २३६
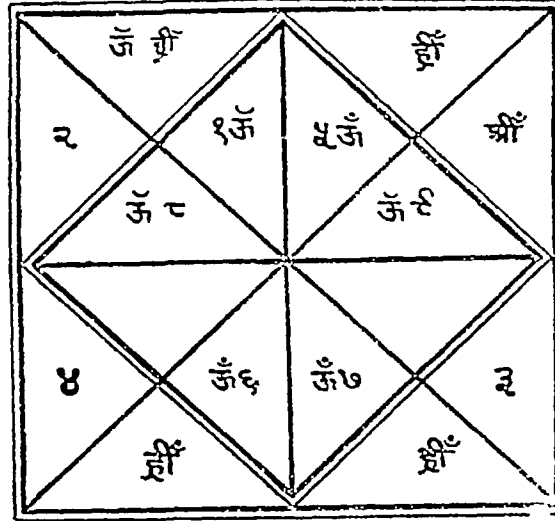
ॐ नमो पञ्चागुलि २ परम सरिसता मय गल वशीकरण लोहमइ डड मोहिणी वज्रमयी कोटा फाटनी चौपट कामण निह डणीरण मध्ये रावल मध्ये शत्रु मध्ये डाकिनी मध्ये नाम मध्ये जिको मु ड ऊपर विराउ करावइ जडई जडावई चिन्ते चिन्तावई मन धरई धरावई तीन मध्ये पचागु लि तणुवज्रनिर्घात पढई सत्यम् ।

ये मन्त्र यन्त्र के चारो तरफ लिखे । ये मन्त्र सर्वकार्य ऊपर श्रेष्ठ है । भुजा अथवा गले मे बाधे तो भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी की बाधा दूर हो । राजा प्रजा सर्व वश्य होते है धूप से पूजा करे ।।२३६।।

यन्त्र न० २३७
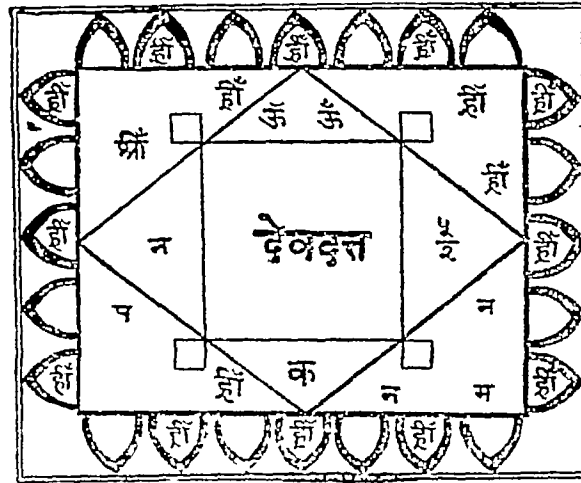
यह मन्त्र लिख बाधे शाकिनी, डाकिनी छाया भूतादि दोष जाये । वशी होय सही ।।२३७।।

यन्त्र नं० २३८

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाडे तो उत्तम व्यापार चले ॥२३८॥

यन्त्र न० २३९

ॐ

श्री (left) — ह्री (right) — क्ली (below)

८	१	६
३	५	७
४	९	२

क्ली

इस यन्त्र को पान पर, अथवा पीपल के पत्ते पर, भोज पत्र पर केशर से लिखे। ॐ ह्री क्ली श्री नम का जाप करै, दोप धूप रखकर प्रभात, सध्या, सोते समय यत्र सिरहाने राखे, शुद्ध पवित्र होकर रहे, अर्द्ध रात्री के पीछे सब शुभाशुभ मालूम हो ॥२३९॥

यन्त्र न० २४०

किसी पर चलाना होय तब शील सयम तथा त्रियोग शुद्धि के साथ लाल वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा मे मुख करके खडा हो। लाल माला से १२००० माला सवा पाच अंगुल की तावे की कील वाये हाथ मे लेकर ।।२४०।।

यत्र नं० २४१

इस यत्र को दुकान के तथा घर के दरवाजे पर लिखकर चिपका देवे तो चोरी कभी नही होती है, चोर भय मिटता है ।।२४१।।

यन्त्र नं० २४२

इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र पर लिखकर गले मे वाधे तो सन्तान पुत्र होता है। और होकर मर जावे तो जीवे, मूल नक्षत्र रविवार के दिन गूंजा के रस से भोज पत्र पर यत्र लिखकर पास मे रखे तो शत्रु मित्र हो जाय। सत्य ।।२४२।।

यन्त्र नं० २४३
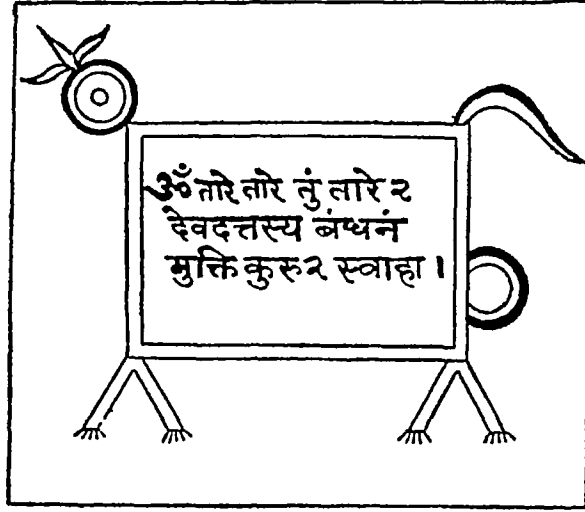
इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर, गले में बाधे तो राजा के बंधन से छूट जाय, बन्धि मोक्ष यन्त्र है ॥२४३॥

यन्त्र न २४४

ॐ १६	ह्री २	ह्री ३	ह्री १३
सु ५	स ११	व १०	ह्री ८
ॐ ६	ह्री ७	ह्री ६	ह्रं १२
स: ४	स. ४	ठ: १५	ह्री १

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिखकर घर मे वांधे तो शाकिन्यादि नष्ट हो और ध्वजा पर लिखे तो राजा शत्रु भागे, घर मे रखे तो घर का सर्व उपद्रव नाश हो सवेरे नित्य ही इस यन्त्र का दर्शन करे तो शुभ हो ॥२४४॥

यन्त्र न० २४५
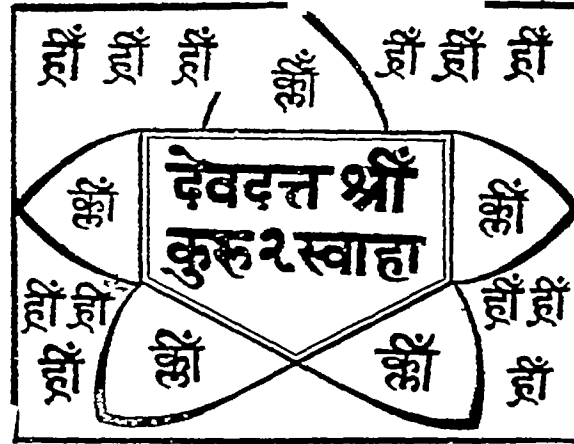
इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पर लिखकर बाघे, तो निर्धन को धन की प्राप्ति हो ॥२४५॥
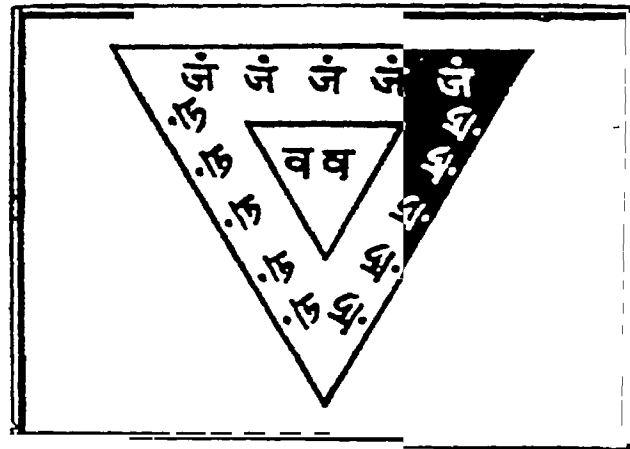
यत्र नं० २४६

चन्दन कस्तूरी, सिन्दूर, गौरोचन, कपूर, इस चीजो से थाली मे यन्त्र लिखे, फिर थोड़ा सा एक वरनी गाय का दूध डालकर रूई से उस यन्त्र को पोछ लेवे, फिर उस रूई की बत्ती बनाकर दीपक मे जलाना। जिसको प्रेत लगा हो वह आता है ॥२४६॥

यन्त्र न० २४७

ह्री ह्री ६ ह्री ह्री	ह्री ह्री १ ह्री ह्री	ह्री ह्री ८ ह्री ह्री
ह्री ह्री ७ ह्री ह्री	ह्री ह्री ५ ह्री ह्री	ह्री ह्री ३ ह्री ह्री
ह्री ह्री २ ह्री ह्री	ह्री ह्री ९ ह्री ह्री	ह्रीं ह्री ४ ह्री ह्री

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकं उच्चाट्य वषट् ।

विधि —इस मन्त्र का, १० हजार जप करके दशास होम करने से सिद्ध होता है, फिर इस यन्त्र को १०९ वार लोहे की कलम से जमीन पर लिखना और पूजन करना तब जत्र मत्र सिद्ध हो जायेगा । फिर एक चिमगादड पक्षी को पकड़कर लावे । उस चिमगादड के पख पर पीपल, मिरचु घर का धुआ, वन्दर का विष्टा, नमक, समुद्र फेन इनका चूर्ण कर स्याही वनावे । उस स्याही से यत्र मंत्र लिखकर उस चिमगादड पक्षी को उड़ा देवे, चिमगादड जिस दिशा मे उड़ेगा, उसी दिशा मे शत्रु भाग जायेगा । उसका उच्चाटन हो जाएगा ।।२४७।।

यन्त्र न० २४८

ह्री ह्री ह्री श्रं ह्री

देवदत्त	श्र श्रु

ये यन्त्र अष्ट गन्ध से लिखकर दरवाजे के चौखट मे बांधने से वह सासरे नही रहती हो तो रहे ।।२४८।।

यन्त्र न० २४९
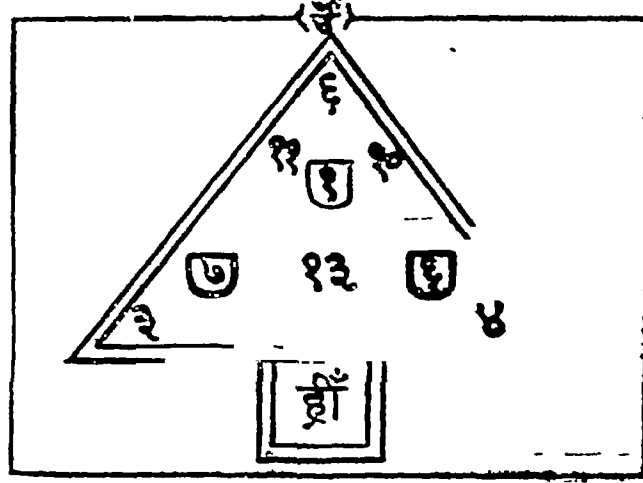
इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्टगध से लिखे और पगडी मे अथवा टोपी मे रक्खे तो छत्रधारी होता है ॥२४९॥

यन्त्र न० २५०

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

इस यन्त्र को १ लाख वार लिखकर सिद्ध करे । फिर कार्य पडे तव प्रयोग करे ॥२५०॥

यन्त्र न० २५१
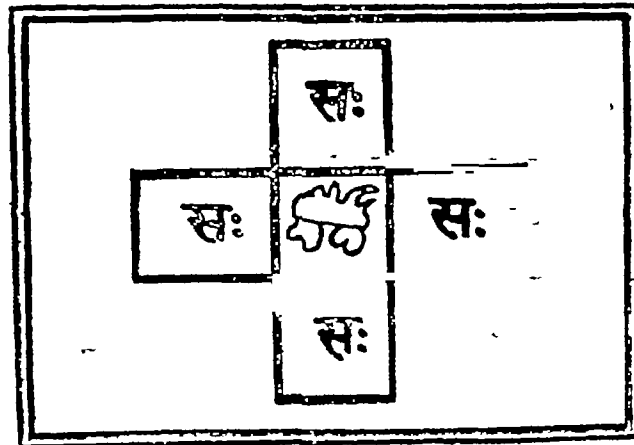
हस्त नक्षत्र रविवार के दिन भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर फिर पास मे रक्खे, राजा वश्य, शत्रु मित्र होय ।।२५१।।

यन्त्र न० २५२
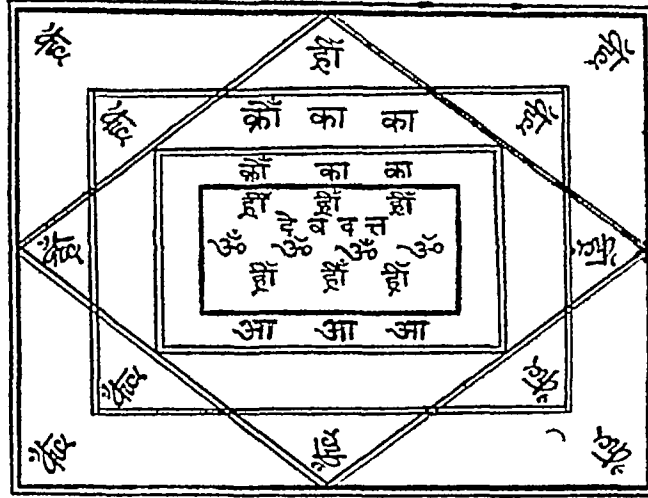
इस यन्त्र को लिखकर हडिया मे डाले, फिर उस हडिया मे पीपल की छाल, सखा होली आधा सेर पानी डालकर बबूल की लकडी से चूले पर उबालना तो शाकिनी की जो बाधा हो, तो दूर होती है, शाकिनी पुकारती आवे सर्व दोष मिटे । आवेश उतारन यत्र है ।।२५२।।

यन्त्र न० २५३

ॐ नमो लडी लडगीही मे द्रेई मसाण हिडई नागी पडर केशी मुहई विकराली अमकडा वी अगई पीडा चालई माजी मराती केर उरभ सई अमकडा के अगई . पीडा करै सही मात लडी लडगी तोरी शक्ति फुरई मेगी चाडसरई हु फट् स्वाहा ॥२५३॥

विधि —मोम का मनुष्याकार पूतला बनावे फिर जैसा यत्र मे है वैसा ही पूतले पर अक्षर स्थापन करे, फिर पूतले पर सिन्दूर चढाकर स्वय नग्न हो, लाल कनेर के फूल सो मत्र १०८ वार जपकर पूजा करे, फिर पूतला के जिस अग मे सूई चुबावे, शत्रु के उसी अग मे पीडा होती है। दूध दही से स्नान करावे तब अच्छा होता है। इसकी साधना एकान्त मे तथा श्मसान मे व रात्रि को निर्जन स्थान मे करे। विधि चूके तो वह स्वय मरे।

यन्त्र नं० २५४
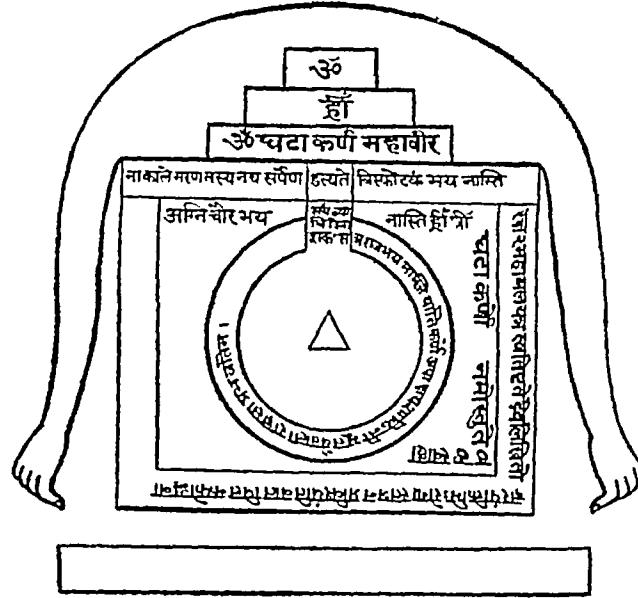
यह यत्र घटा कर्ण कल्प का है। इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोजपत्र पर लिखकर मत्र का साढे वारह हजार जप विधिपूर्वक करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होती है। विशेष विधि घटा कर्ण कल्प मे देख लेवे ॥२५४॥

यन्त्राधिकार

पन्द्रहिया यंत्र का विधि विधान

मूल मन्त्र :—ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

यन्त्र साधना के समय मूल मन्त्र की हर रोज एक माला का जाप करना चाहिए।

विधि:—योग्य शुद्ध व एकान्त स्थान मे पूर्व दिशा को ओर भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति की स्थापना करनी चाहिये। दशांग धूप या गुग्गुल की धूप करना चाहिए, घृत का दीपक होना चाहिए। प्रत्येक यन्त्र लिखने के बाद उसकी पूजन करे। चावल, पुष्प, खोपरे का टुकडा, पान, सुपारी अनुक्रम से चढाने चाहिए। उपरोक्त यन्त्रो को गिनती मे लिखने से अलग-अलग फल की प्राप्ति होती है।

(१) १० हजार—केसर कस्तूरी या गोरोचन की स्याही व चमेली की कलम से लिखे तो वशीकरण हो।

(२) २० हजार—चिता के कोयलों की स्याही व लोहे की कलम से श्मसान की भूमि पर लिखे, तो शत्रु का उच्चाटन हो, विनाश हो और धतूरे के रस व कौए की पाख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो।

(३) ३० हजार— हल्दी की स्याही व सेह की शूल से लिखे, तो शत्रु का स्तम्भन हो।

(४) ४० हजार-- केसर की स्याही व चादी की कलम से लिखे, तो देव दर्शन हो प्रसन्न हो।

(५) ५० हजार-- अष्टगन्ध स्याही व सोने की कलम से लिखे तो मोह न हो।

(६) ६० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चाँदी की कलम से लिखे, तो खोई अचल सम्पत्ति वापस प्राप्त हो ।

(७) ७० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चमेली की कलम से लिखे, तो द्रव्य प्राप्त हो ।

(८) ६० हजार—अप्टगन्ध स्याही व चमेली की कलम व ग्राम केला, वटवृक्ष के पत्ते पर लिखे तो महान् वने ।

(९) ९ लाख—अष्टगन्ध स्याही, चाँदी की कलम से लिखे तो भगवान की कृपा हो, सर्व कार्य सिद्धि हो ।

इन यन्त्रो के अक भरने की अलग-ग्रलग विधि है उसका फल भी अलग-अलग है जो निम्नलिखित हैं ।

(१) १ से ९ तक के अ क भरे, तो देव दर्शन हो, १ लिखे तो वशीकरण हो ।

(२) २ के अक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो वशीकरण हो ।

(३) ३ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १–२ लिखे तो भूमि प्राप्त हो । व्यापार वृद्धि हो ।

(४) ४ से ९ तक लिखे, फिर १–२–३ लिखे, तो द्रव्य प्राप्त हो, देव दोष दूर हो ।

(५) ५ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १–२–३–४ लिखे, तो यह अशुभ है । अतः इसे न लिखे ।

(६) ६ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १–२–३–४–५ लिखे तो कन्या प्राप्त हो । उस पर कोई मारण का प्रयोग नही कर सकेगा ।

(७) ७ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे, तो मोह न हो, अनेक लोग वश हो ।

(८) ८ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे तो शत्रु के उच्चाटन हो, अशुभ चितन करने वाला विपत्ति मे पडे ।

(९) ९ से प्रारम्भ करे, फिर १ से ८ तक के अ क लिखे, तो सर्व कार्य सिद्ध हो ।

पन्द्रहिया यंत्र कल्प

यह अति प्रसिद्ध व प्रभावशाली यन्त्र है । यह यन्त्र एक से लेकर नौ के अंक तक, नौ कोठो मे ही भरा जाता है । इसको जिधर से भी गिना जावे, योगफल १५ ही आयेगा । यह पन्द्रहिया यत्र मुख्यतया चार प्रकार का वनता है । इसकी अलग-अलग वर्ण व सज्ञा होती है ।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

वर्ण— ब्राह्मण सज्ञा :—वादी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र मिथुन, तुला, कुम्भ के चन्द्र में लाल चन्दन, हिंगुल या अष्टगन्ध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण— क्षत्रिय संज्ञा :—आलसी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र धन व मेष के चन्द्र मे काली स्याही व बरास (कपूर) मिला कर लिखा जाना चाहिए।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

२	९	४
७	५	३
६	१	८

वर्ण— वैश्य संज्ञा :—खाखी के नाम से पहचाने जाने का यह यन्त्र वृषभ के चन्द्र मे अष्टगन्ध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण— शूद्र संज्ञा —आवी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र वृश्चिक और मीन के चन्द्र मे काली स्याही से लिखा जाना चाहिए।

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इन चारो यन्त्रो के अलग २ फल है। ब्राह्मण जाति वाले यन्त्र का फल सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अत उसी के विधि विधान का यहा उल्लेख किया गया है। उसे सिद्ध करने मे निम्नलिखित वस्तुये की आवश्यकता होती है।

लापसी, पूरी, अनार की कलम, अष्ट गन्ध, स्याही, चावल, गुग्गुल, पुष्प, खोपरे के टुकडे २१, नागर बेल के पान २१, सुपारी २१, घृत का दीपक, एक कोरा घडा।

विधि —योग्य शुद्ध व एकात स्थान मे पहले पूर्व दिशा की ओर घडे की स्थापना करनी चाहिये। उसके सामने भोज पत्र बिछाना चाहिये। उसके ऊपर के भाग मे घृत का दीपक हो, नीचे के भाग मे धूप का धूपिया हो, जिसमे गुग्गुल का धूप करना चाहिए। लापसी, पूरी आदि को भोज पत्र के बाऐ आधा आधा रखना चाहिये। तत्पश्चात् अनार की कलम से भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से यन्त्र लिखना चाहिये। यह यन्त्र लिखते समय "ह्री या ॐ ह्री श्री" मन्त्र का जाप करते रहना चाहिये। यन्त्र लिखने के बाद उसका पूजन करे। फिर मन्त्र का ६,००० जाप करे। इस प्रकार २१ दिन करे, जिससे सवा लाख जाप पूरा हो जायेगा। मन्त्र और यन्त्र की सिद्धि हो जायेगी, अन्त मे, हवन, तर्पण आदि विधि पूर्वक करे।

इन यन्त्रो के अक भरने की अलग अलग विधि है। उसका फल भी अलग अलग है जो निम्नाकित है--

(१) १ से ९ तक के अक भरे, तो हनुमानजी के आकार का यक्ष दर्शन दे।

(२) २ के अक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो राज्याधिकारी वश मे हो।

(३) ३ मे ९ तक लिखे, फिर १–२ लिखे तो व्यापार वृद्धि हो।

(४) ४ से ९ तक लिखे, फिर १–२–३ लिखे तो जिसके ऊपर देवी-देवता का दोप हो गया या किसी उच्चाटन आदि कर दिया हो वह दूर हो जायेगा।

(५) ५ से ९ तक लिखे, फिर १–२–३–४ लिखे तो यह अशुभ है। स्थान भ्रष्ट कराता है। अत इसे न लिखे।

(६) ६ के अक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ५ तक लिखे, उस पर कोई मारण का प्रयोग नही कर सकेगा।

(७) ७ के अक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे, तो अनेक मनुष्य वश हो।

(८) ८ के अक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे, तो धन की वृद्धि हो।

इसको गिनती मे लिखने से अलग अलग फल की प्राप्ति होती है —

१००० लिखने से सरस्वती प्रसन्न होती है। विष का नाश होता है।

२००० लिखने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है। दु ख का नाश होता है। शत्रु वश मे होता है। उत्तम खेती होती है। मन्त्र तन्त्र की सिद्धि होती है।

३००० लिखने से वशीकरण होता है, मित्र की प्राप्ति होती है।

४००० लिखने से भगवान व राज्याधिकारी प्रसन्न होते है, उद्योग धन्धा प्राप्त होता है।

५००० लिखने से देवता प्रसन्न होते है, वध्या के गर्भ रहता है।

६००० लिखने से शत्रु का अभिमान टूटता है, खोई वस्तु वापिस मिलती है, एकान्तर ज्वर मिटता है, निरोग रहता है।

१५००० लिखने से मनवाछित कार्य मे सफलता मिलती हे।

शुभ कार्य के लिए शुक्ल पक्ष मे उत्तर दिशा की ओर मुह करके यन्त्र लिखना चाहिए। सफेद माला, सफेद वस्त्र तथा सफेद आसन होना चाहिये। साधना के दिनो मे ब्रह्मचर्य का पालन, सात्विक भोजन, शुद्ध विचार रक्खे जाने चाहिए।

लिखने के बाद एक यन्त्र को रखकर बाकी सभी को आटे की गोलियो मे भरकर मछलियो को खिला देना चाहिये या नदी मे बहा देना चाहिये।

चादी या सोने के मछलियो मे डालकर पुरुष को दाहिने हाथ और स्त्री को बाये हाथ मे या गले मे धारण करना चाहिये।

विधि :—यह चौसठ यौगिनियो का प्रभावक यन्त्र है। यह यन्त्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी रविवार या चतुर्दशी रविवार को सुर्य दिशा की ओर मुह कर, अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखना चाहिए। अथवा सोने, चादी या ताबे के पत्र पर खुदवा कर घर मे पूजन के लिये रखा जा सकता है। पूजन मे रखने के बाद नित्य धूप, दीप करना चाहिये।

शरीर की दुर्बलता, पुराना ज्वर तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिये

सात दिन तक नित्य एक वार चादी की थाली मे अष्ट गन्ध से लिखकर जल प्रक्षालित कर पिलाने से पूर्ण लाभ मिलता है। इस यन्त्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच

चौसठ योगिनी महायंत्र

चौ स ठ यो गि नी म हा यं त्र
श्री च उ स ठ दि व्यायै न मः

१ दिव्ययोगिनी	२ महायोगिनी	६२ घोरा	६१ विकटी	६० दुर्जटा	५९ प्रेतभक्षणी	७ काली	८ कालरात्री
९ निसाचरी	१० हुंकारी	५४ यंत्रवाहिनी	५३ कौमारी	५२ यक्षी	५१ भक्षणी	१५ महाकाली	१६ रक्तांगी
४८ यम दूती	४७ लक्ष्मी	१९ वीरभद्राक्षी	२० धूम्राक्षी	२१ कालिंप्रिया	२२ राक्षसी	४२ चक्री	४१ मोहिनी
४० कालाग्नि	३९ मंत्रयोगिनी	२७ कौमारकी	२८ चंडी	२९ वाराही	३० मुंडधारनी	३४ दुर्मुखी	३३ क्रोधी
३२ वज्रणी	३१ भैरवी	३५ प्रेतवाहिनी	३६ कंडकी	३७ दीर्घलम्बी	३८ मालिनी	२६ सेवरी	२५ भयंकरी
२४ विरूपाक्षी	२३ घोररक्ताक्षी	४३ कंकाली	४४ भुवनेश्वरी	४५ कुंडला	४६ तालुकी	१८ प्रेतकारी	१७ नरभोजनी
४९ करालनी	५० कौशीकी	१४ उर्ध्वकेशी	१३ भूतडामरी	१२ कलिकारी	११ सिद्धवेताली	५५ विशाला	५६ कामुका
५७ व्याघ्री	५८ यक्षणी	६ डाकिनी	५ प्रेताक्षी	४ जिनेश्वरी	३ सिद्धयोगिनी	६३ कपाली	६४ विपलांगुली

शाकिनी, डाकिनी व्यतर आदि देवो का दूषित प्रभाव अथवा दोष नही होते है। यन्त्र को पानी मे घोलकर वह पानी घर में चारो कोनो मे छिडकने से व्यतर देव सम्बन्धी दोष निवारण होता है। ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि का आगमन होता है। प्रतिकूल तान्त्रिक व मान्त्रिक प्रभावों को नष्ट करता है।

यंत्रों का आकार

स्तभन कर्मार्थ — चौकोर यन्त्र बनावे।
उच्चाटनार्थ — षट् कोण
विद्वेषण — त्रिकोण
वशीकरण — कमलाकर
शान्ति — गोलाकार

विद्या आने का यन्त्र

७४	८१	२	८
७	३	७८	७७
८०	७५	९	१
४	६	७६	७९

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष मे प्रत्येक दिन कासी की थाली मे केशर से लिखकर उस थाली में खीर डालकर यन्त्र को धोवे, उस खीर को खावे तो ज्ञान की वृद्धि होती है।

चौत्रीसिया यन्त्र कल्प

अथ चौत्रीस के जन्त्र मन्त्र का ब्यौरा —

१. आदि भवन चौत्रीस भराय, आदर रक्षा बहुत बढाय ॥ १ ॥

११	८	१	१४
५	१०	१५	४
२	१३	१२	७
१६	३	६	९

मन्त्र —ॐ ह्रीं श्री श्री काला गोरा क्षेत्रपाला जहाँ जहा भेजिये तहाई करवाला गाजत आया बाजत जाय। घोरत जाव उडत जाव, काला कलवा वाटका घट का चाले का भोव का पगइण का चुहड का चमारी का प्रगट करे इस घर की ग्रादर रक्षा वढाई करे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मत्र ईश्वरो वाचा।

दूजे घर तै जो ग्रनसरै रोग जहा लो सब परहरै ॥२॥

मन्त्र —ॐ ह्रीं श्री पद्मावती प्रसादात रोग दु ख विनास नाई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

तीजे ठास जात घर ग्रावे ॥३॥

मन्त्र —ॐ ऐ ता विथधारणी झगडा जतिनी कुरु कुरु स्वाहा, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

चौथे घर उच्चाट लगावे ॥४॥

मन्त्र —ॐ ह्रीं ब्राह्मणी र र र ठ ठ ठ।

विधि—लूण राई का होम मत्र जाप १०८ वार।

पचम घर थमण करै सब कोई ॥५॥

मन्त्र —ॐ अजता अजत सासताई स. पः ष अ अमुक मुख वधन कुरु स्वाहा।

छठे घर भट कचन फुन होय ॥६॥

मन्त्र :—ॐ नमो जहाँ २ जाए वेग कारज करु धनपुन वीर धन ले आव, वेग ले आव, धनपुन वीर की वाचा फुरः कुरु स्वाहा। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।

विधि :—१३६ यत्र लिखना। १३६ दिन में रोज १ यत्र लिखना, जबकि रोटी खाणी घीव, नहीं खाणा और उस यत्र को रोज आटे मे डालकर नदी मे बहा देना। १३७ वे दिन यत्र लिखकर दाहिने गोडे के नीचे दवाकर रखना। यत्र देवता ले जाएगा, कुछ रुपये रख जावेगा। मत्र जाप करता रहे।

सात मे घर मोहन करै नर नार ॥७॥

मन्त्र :—ॐ नमो सर्व मोहनी मेल राजा पाय पेल जो मै देखू मार मार करंता, सोई मेरे पांव पडंता, रावल मोह देवल मोह स्त्री मोह पुरुष मोह नार सिंह वीर तेरी शक्त फुरे, दाहिना चालै नार सीध बाया चाले, हनवत मेरे पिंड प्रान का रीछपाल होडी मोह जहा मेरा मन चालै तहा मोह गुरु की शक्त मेरी भक्त फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि —१३६ वार जाप करना जहा जावे वहां सफल होय।

आठवे घर तै होय उजाड ॥८॥

मन्त्र :—ॐ नमो ॐ लमोल वोटा हनवत वीर वज्र ले बैठा काकडा, सुपारी, पीले पान, मेरे दुश्मन घर उजाड करो, काढो प्राण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि —शत्रु के घर मे गाडना, उजाड़ होय।

नौ मे घर तै हाजरात कहावै ॥९॥

मन्त्र —ॐ नमो कामरू देश ने कामख्या आई, ता डड राता ही माई, राता वस्त्र पहरि आई राता जाप जपती आई, काम छै, काम धारणी रक्त पाट पहरणी परमुख वोलती आई वेग मन्त्र उतार लेही, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि —लडकी को लाल वस्त्र पहनाकर बैठावे, दीपक जलावे, अगूठे पर काजल लगाकर मत्र वोलकर हजरात चढावे।

दस मे घर फल उपजै सारा धरती, नारि, तीर जच विचारा ॥१०॥

मन्त्र :—ॐ नमो मन पवन पवन पठारा के राव बधै गरम रहै ॐ हठा ॐ कचे मासौ फुलै कपास पुरै मासे होई नीकास नदी अपुठी गगा बहे। अर्जुण साधे बाण पुरे मासे निकासे सही सतो हणवत जती की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि .—यन्त्र लिखकर कमर के वाँधे, सतान होवे, खेत मे गाड़े तो अनाज अच्छा ऊपजे।

ग्यारह मे घर तै लिखे जो कोई, लिख मेटे जीवे नही कोई ॥११॥

मन्त्र —काल भैरो ककाल का तो वाही कलेजा भुंज कली रात काला मै अरु चढ़े मसाण जिस हम चाहे तिस तु आण कडी तोड कलेजा फोड नौमे छार मे द्वार लोहु जोल आव तो छरै न आवतो कलेजा फुटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—११६ यन्त्र लिखे। मन्त्र की १०८ जाप करै। कौवे की पाख व श्मसान के कोयले की राख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो। इसे न करे।

वारह् मे घर तै लिख जो कोई टोटा नही नफा फुन होई ॥१२॥

मन्त्र —ॐ गणवाणी पत रह मसाणी सो मैं मागु ले ले आऊ काची नदी क व मै दीय फुल २ म्हा फुल जपै जगत्र दस कोस पच कोसी ग्राहक ले आऊ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि —१३६ यन्त्र लिखे, हाट मे गाडे वहुत ग्राहक आवे।

तेरहवा घर तै लिखे सुजान प्राणी सु करै है निदान ॥१३॥

चौदह् घर तै चौदह् विद्या कही लिख लिख पीव पडित हो सही।

मन्त्र ॐ ह्री श्री वदवद् वाग वादनी सरस्वती मम विद्या प्रसाद कुरु २ स्वाहा।

विधि —यन्त्र १३६ लिख लिख के पानी मे घोलकर पीवें तो पण्डित हो।

पन्द्रह घर ते लिखे मन लाय गुप्त ही आये गुप्त ही जाए।

मन्त्र ॐ नमो उच्छिष्ट चडालिनी क्षोभणी द्रव्य आणय पर सुख कुरु २ स्वाहा।

विधि —यन्त्र लिखके पावे। एक अपने पास रखे तो गुप्त आवे गुप्त जावे।

सोलह् घर तै कारज सव सरे आपा राखे भूल न करे।

इन जत्र को जानी भेष सव कोई करे तिसकी सेव ॥१६॥

मन्त्र —ॐ ह्री श्री ग्री प्री चउसठ जोगनी की रक्षा करेगी कुरु २ स्वाहा।

विधि — यन्त्र १३६ पीवणा एक आपणा पास राखणा रक्षा करे।
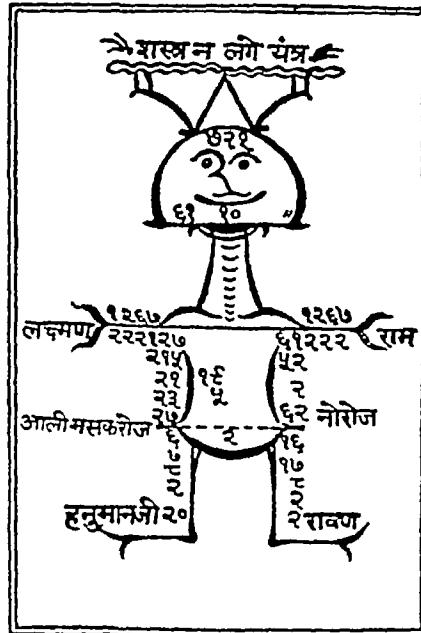
विधि —इस यन्त्र को प्रात जव तारे व सप्तर्षी मगल के उतारे का समय हो, स्नान कर,

नये वस्त्र पहनकर चीनी मिट्टी की प्लेट या टुकडे 'पर अष्ट गन्ध स्याही व अनार की कलम से पूर्व की ओर मुह करके लिखे। फिर अपने गले मे डाल ले। किसी प्रकार का शस्त्र उस पर नही चल सकेगा। शत्रु तलवार लेकर उस पर वार करे तो भी तलवार नही चलेगी।

अंडकोष वृद्धि रुके यन्त्र

४४२	४४९	२	७
६	३	४४६	४४५
४४८	४४३	८	१
४	५	४४४	४४७

विधि .—इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर रविवार को लिखकर दाहिने हाथ के बांधने से बढते हुए अण्डकोष की वृद्धि रुक जाएगी।

स्वप्नदोष मिटे यन्त्र

हा ॥	सा ॥	हो ॥
ल आ	ल आ	ल ओ
क ल	क ल	क ल
२	२५	३

विधि —पुष्य रविवार को भोज पत्र पर लिखकर कमर के वाधे तो स्वप्नदोष मिटे, स्तभन वढे।

मिरगी मिटे यन्त्र

४२	८२	२	॥ ७
४५	४३	७	७।
॥१४॥	॥१५॥	४४	४७॥
॥१४॥	॥१५॥	४४	४७॥

विधि अष्टगन्ध मे भोज पत्र पर यह यन्त्र लिखकर भुजा पर वाधे, तो मिरगी का रोग मिटे।

वैराग्योत्पत्ति यन्त्र
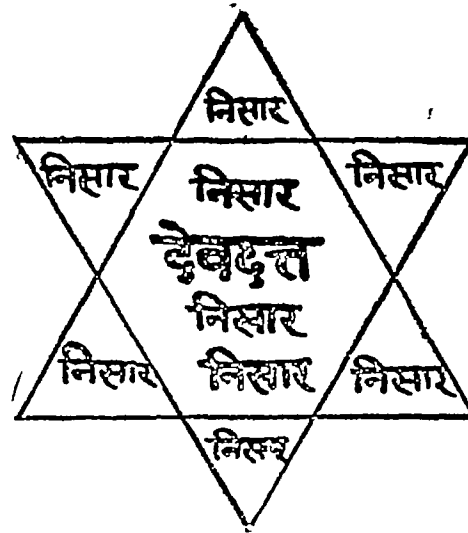
विधि —इस यन्त्र को अष्टगन्ध मे भोज पत्र पर लिखकर लोहे के मादलिए मे मढाकर मस्तक के वांधे दे तो धीरे-धीरे स्त्री व धन आदि से मोह से छूटकर वैराग्य की ओर

उन्मुखता होगी। अन्तत वह व्यक्ति योगी व सन्यासी वन जायेगा। देवदत्त के स्थान पर व्यक्ति का नाम लिखा जायेगा।

पंचांगुली महा यन्त्र का फल

शुभ मुहूर्त मे सफेद कपडा, सफेद आसन, से पूर्व की और मुह करके, अनार की कलम से अष्ट गन्ध स्याही वनाकर भोज पत्र पर लिखे, फिर इस यन्त्र को ताम्र पत्र पर खुदवाकर, मन्त्र का सात बार जप करे, फिर सर्वांग पर हाथ फेरे, इसके प्रभाव से हस्त रेखा विद की भविष्यवाणी सफल होगी, यह यन्त्र सौभाग्यशाली, रोग नाशक व भूत प्रेत, वाधा नाशक प्रभावापन्न यन्त्र है। मन्त्र यन्त्र के वाहर लिखा है।

विशेष मन्त्र साधना।

कार्तिक मास मे जब हस्त नक्षत्र प्रारम्भ हो, उस दिन से मन्त्र की साधना प्रारम्भ करे। मार्ग शीर्ष के हस्त नक्षत्र मे पूर्ण करे। प्रतिदिन एक माला का जाप करे। जप शुरू करने के पहले ध्यान मन्त्र का एक बार उच्चारण अवश्य करे।

ध्यान मन्त्र :—ॐ पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने।

अधिष्ठात्री करस्यासौ, शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ।।

फिर जप शुरू करे, जाप के वाद नित्य पच मेवा की दस आहुतियो से अग्नि मे हवन करे। इस प्रकार साधना करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। देवी का एक चित्र बाजोट पर रखकर उसके सामने बैठकर साधना करनी चाहिये। हस्त नक्षत्र रूप आधार पर स्थित हाथ की पाच अ गुलियो के प्रतीक स्वरूप देवी का एक चित्र वनवा लेना चाहिये।

चित्र कल्पना

शनि की अर्थात् मध्यमा ऊ गली के प्रथम पोरवे के आधे भाग पर देवी का मुकुट सहित मस्तक होगा। उसके पीछे सूर्य मण्डल होगा। देवी के आठ हाथ होगे, जिनमे दाहिनी तरफ पहला हाथ आशीर्वाद का हो, दूसरे हाथ मे रस्सी, तीसरे मे खड्ग, चौथे मे तीर हो, बाई तरफ पहले हाथ मे पुस्तक, दूसरे मे घण्टा, तीसरे मे त्रिशूल और चौथे मे धनुष। गले में आभूषण, ललाट मे तिलक, कानो मे कुण्डल कमर मे आभूषण व सुन्दर वस्त्र हो। पैर मे मणिबन्ध रेखा के नीचे तक आये। इस तरह देवी का चित्र वनाना चाहिये।

फल :—जो भी व्यक्ति इसकी एक वार भी साधना करले । फिर नित्य ही हाथ को इस मन्त्र से सात वार मन्त्रित कर, उसे सर्वा ग पर फेरे, तो इसके फलस्वरूप हस्तरेखा द्वारा जन्म कु डली वनाने मे हाथ देखकर, फल कहने मे ही सदा सफल नही होता, अपितु उसके सूक्ष्म रहस्यो को भी जान लेता है । पचागुलिदेवो हस्तरेखाओ की अधिष्ठात्री देवी है ।

देवीपंचांगुलीमहायंत्र

ॐ नमो पचागुली २ परशरी २ माताभमगल वशीकरणी

८	१	६
३	५	७
४	९	२

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

ॐ ब्रह्माण्यै नमः
ॐ कुमार्यै नम
ॐ वाराही नम
ॐ इन्द्रायै नमः
ॐ संकायै नम
ॐ कंकाली नमः
ॐ कराली नमः
ॐ काल ही नम
ॐ महाकालरी नम
ॐ चण्डाली नम
ॐ वालापुष्पे नमः
ॐ कामाक्ष नम
ॐ कामात्यै नम
ॐ भद्रकाली नम
ॐ इर्यायै नम
ॐ अंबकायै नम

महायन्त्र का साधन व मन्त्र विधि पूर्वक

यन्त्र रचना :—प्रथम अष्टदल का कमल वनावे, उसमे क्रमश अर्हत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र लिखे । फिर उसके ऊपर अष्ट दल फिर वनावे उन

आठो ही दलो मे अष्ट जया, विजया, अजिता, अपराजिता, जम्भे, मोहे, स्तम्भे, स्तम्भिनी, इन जयादि देवी को लिखे, फिर सोलह दल ऊपर और खीचे, उन सोलह दलो मे क्रमश रोहिणी, प्रज्ञप्ती वज्र श्रृ खला, वज्राकु शी, अप्रति चक्रा, पुरुषदत्ता, कालि, महाकालि, गान्धारी, गौरि, ज्वालामालिनी, वैरोटि, अच्युता, अपराजिता, मानसि, महा मानसि, इन सोलह विद्या देवी को लिखे, फिर उसके ऊपर चौबीस दल और बनावे, उन चौबीस दलो मे क्रमशः चौबीस यक्षिणीओ के नाम लिखे, चक्रे श्वरी आदि। फिर वतीस दल और बनावे, उन बतीस दलो मे क्रमश अमुरेन्द्र, नागेन्द्र आदि बत्तीस इन्द्रो के नाम लिखे, उसके ऊपर चौबीस वज्राग्र रेखा बनावे, उन चौबीस वज्र रेखा पर क्रमश चौबीस यक्षो के नाम लिखे, गौमुखादि। फिर ऊपर दश दिक्पालो के नाम लिखे, फिर नव ग्रहो के नाम लिखे। ऊपर से अनावृत मंत्र लिखे, ॐ ह्री आ क्रो हे अनावृत यक्षेभ्योनम। यह हुई यन्त्र रचना चित्र देखे।

यन्त्र व मंत्र की साधन विधि

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः असि आउसा मम् सर्वोपद्रव शांति कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का साधक १०८ बार जाप जपे, यह मूल मन्त्र है।

शान्ति कर्म

ज्वर रोग की शाति के लिए साधक, रात्रि के पिछले भाग मे श्वेतवर्ण से इस महा यन्त्र को भोजपत्र या आम के पाटिया पर लिखे, फिर उस यन्त्र की पूजा करके, पश्चिम की ओर मुखकर, ज्ञान मुद्रा, धारण कर पद्मासन से वैठकर, सफेद माला से, १०८ बार जप करे। इस तरह करने से तीन दिन या, पाच दिन के भीतर ज्वर दूर हो जाता है। इसी तरह अन्य रोगो के लिये भी अनुष्ठान करे।

पौष्टिक कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्री ह्र ह्रौ ह्रः असि आउसा अस्य देवदत्त नामधेयस्य मनः पुष्टि कुरु २ स्वाहा।

इस तरह पौष्टिक कर्म मे भी ऐसा ही करे। इतना विशेष है कि इस जप मे उत्तर की ओर मुह करके बैठे।

वशीकरण

मन्त्र —ॐ ह्रॉ ह्री ह्र ह्रौ ह्र असि आउसा अमु राजाना वश्यं कुरु २ वषट्।

इम वश्य कर्म मे, महायन्त्र को लाल रग से वनावे, लाल पुष्पो से यत्र की पूजा करे, स्वतीकासन से वैठे, पद्म मुद्रा जोडे, उत्तर की ओर मु ह करे पूर्वान्हि के समय वाये हाथ से जाप १०८ वार करे।

आकर्षण कर्म

मन्त्र —ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र असि आउसा एना स्त्रिया आकर्षय २ सबौषट्।

किसी का भी आकर्षण करना हो तो महायन्त्र को लाल वर्ण से यन्त्र बनावे, पूर्व दिशा मे मुख करे, दण्डासन से बैठे, अकुश मुद्रा जोडे, और मन्त्र का १०८ बार जप करे, इसी तरह भूत प्रेत वृष्टि आदि का आकर्षण करे।

स्तम्भन कर्म

मन्त्र —ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असि आउसा देवदत्तस्य क्रोध स्तम्भय २ ठ ठ।

क्रोध स्तम्भन के लिए, महायन्त्र को हल्दी आदि पीले रग से यन्त्र लिखे पूजा सामग्री भी पीली वनावे, माला भी पीली हो, वज्रासन से बैठे, शंख मुद्रा जोडे, मन्त्र का १०८ वार जप करे। इसी प्रकार सिंह आदि का क्रोध स्तम्भन करे।

उच्चाटन कर्म

मन्त्र —ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असि आउसा देवदत्त उच्चाटय २ हू फट् २।

उच्चाटन कर्म मे काले रग की माला, काला रग से ही महायन्त्र वनावे, दिन के पिछले पहर मे, वायव्य दिशा की ओर मुंह करके कुकुटासन से वैठे, पल्लव मुद्रा जोडे नीली माला से वा काली से मन्त्र १०८ वार जप करे। भूतादिक का उच्चाटन भी इसी प्रकार करे।

विद्वेष कर्म

मन्त्र —ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असि आउसा यज्ञदत्त, देवदत्त नाम धेयो परस्पर मतीव विद्वेप कुरु हू।

महायत्र को काले रंग से यन्त्र वनावे, मध्याह्न के समय, आग्नेय दिशा मे मु हकर, कुकुटासन से वैठे, पल्लव मुद्रा करे। काले जाप्य से मन्त्र १०८ वार जपे। किसी मे भी विद्वेप करना हो तो इसी प्रकार करे।

महामंत्र १
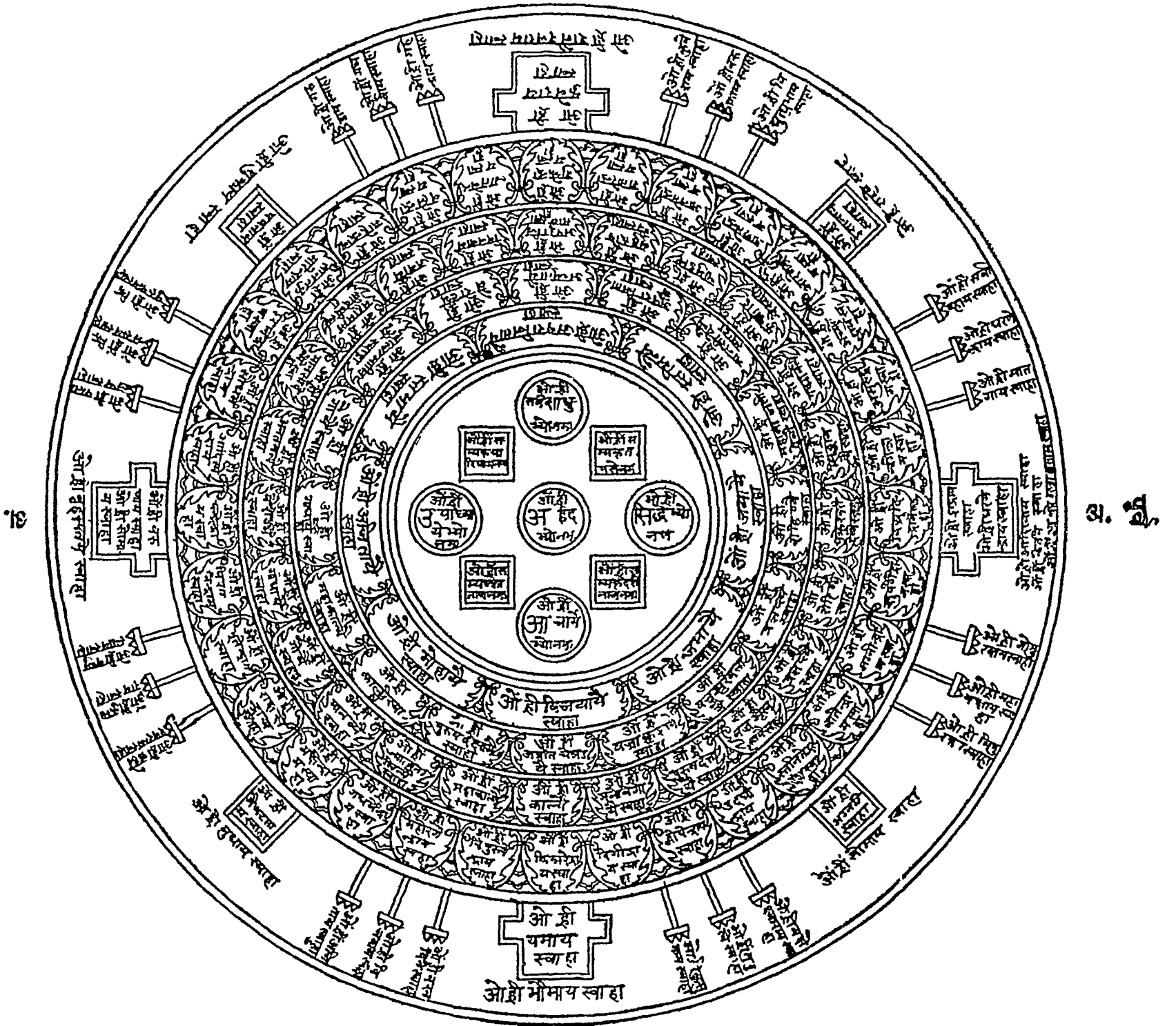
अभिचार कर्म

मन्त्र .—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अस्य एतन्नाम धेयस्य तीव्र ज्वरं कुरु २ घे घे ।

इस महायन्त्र को जहर से अथवा किसी मादक द्रव्य से मीश्रित काले रंग से यन्त्र लिखे, दोपहर के बाद, ईशान दिशा मे मुख करके, काले वस्त्र, भद्रासन से बैठे, वज्र मुद्रा बनावे, खदिरमणि की जपमाला से मन्त्र का, जप १०८ बार करे तो ज्वर चढे शिरो रोग हो। आदि, मा० ।

महायन्त्र २
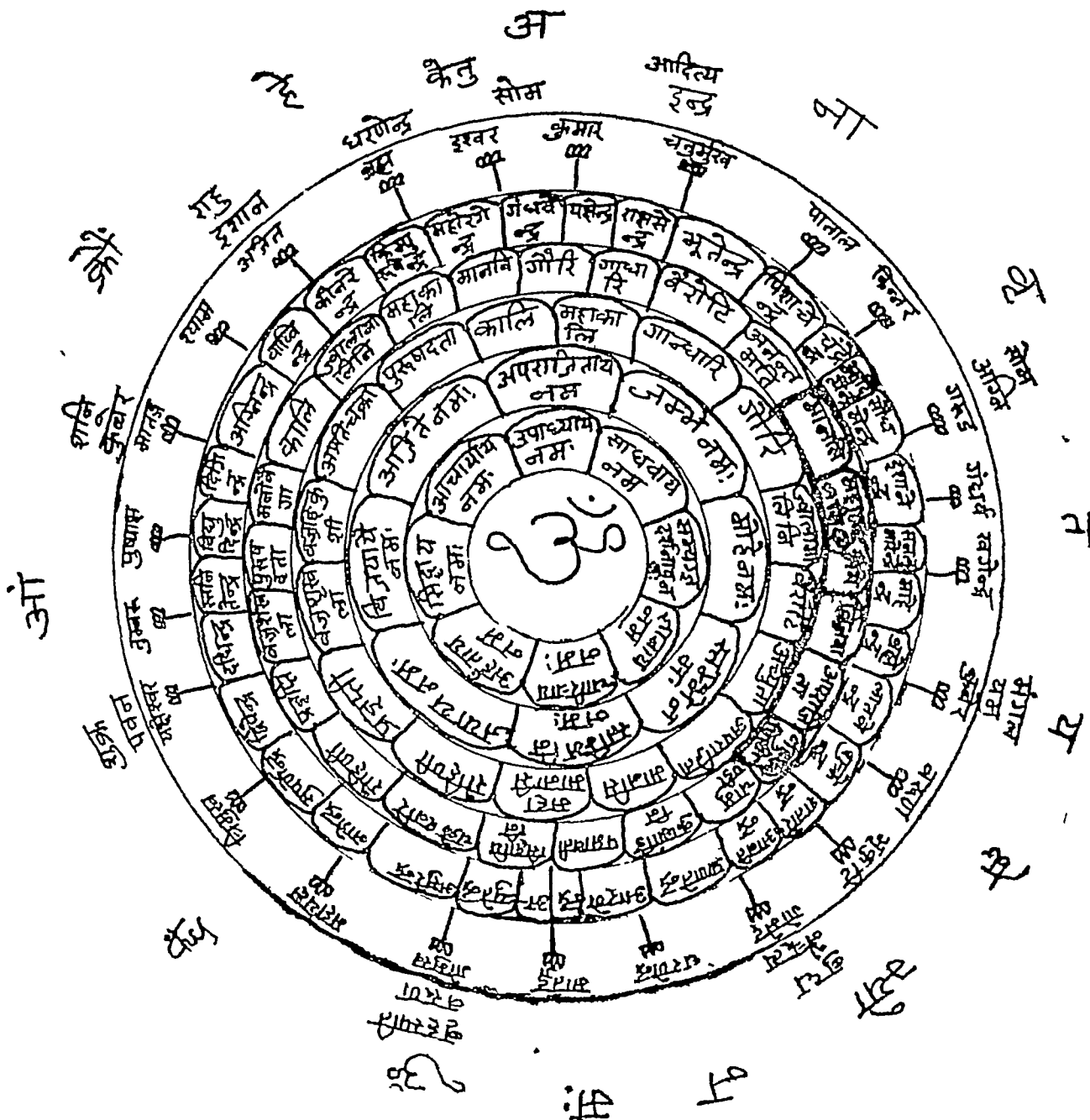
महायन्त्र का पूजा विधान

महायन्त्र का और जिन मूर्ति का पचामृताभिषेक करके, महायन्त्र की पूजा, अष्ट द्रव्य से करे।

पूजा मन्त्र —ॐ ह्रा ह्री ह्र ह्रौ ह्रः असि आउसा जलं चन्दन आदि।

अष्ट द्रव्य से क्रमश· चढावे।

फिर क्रमश अर्हंतसिद्ध, आचार्य, उपाध्याय साधु दर्शन ज्ञान चारित्र का अर्घ चढावे।

फिर द्वितीय वलय की जयादि देवियो का अर्घ चढावे, फिर १६ विद्या देविओ का अर्घ चढावे, फिर चौबीस यक्षिणीओ की अर्घ से पूजा करे, फिर बत्तीस इन्द्रो की पूजा करे, फिर चौवीस यक्षो की पूजा करे, फिर दश दिक्पाल को पूजा करे। फिर नवग्रह और फिर अनावृत यक्ष की पूजा करे। सबके पहले ॐ ह्री लगाना चाहिये।

इस प्रकार महायन्त्र की पूजा करके फिर मूलमन्त्र का १०८ बार जाप जपने से कार्य सिद्ध होता है। प्रत्येक कर्म मे जो विधि लिखी है। उसी विधि के अनुसार साधन करे तो ही कार्य सिद्ध होता है। लेकिन ध्यान रखे कि साधन करने से पहले महायन्त्र की पूजा करना परम आवश्यक है।

।। इति ।।

पद्मावती स्तोत्र को यंत्र मंत्र साधन विधान

प्रणिपत्य जिनं देवं श्री पार्श्वं पुरुषोत्तमम्।
पद्मावत्यष्टकस्याहं वृत्ति वक्ष्ये समासतः ।।

ननु किमिति। भवद्भि। मुनिभि सद्भि पद्मावत्यष्टकस्य वृत्ति विधयिते। यत साविरता कथं तस्या· सम्बन्धिनोऽष्टकस्य। भवता मुनिना सता वृत्ति कर्तुं पुज्यते। अत्रोत्तरमनुतर वीतराग यत सा ति भगवत। सर्वज्ञस्य तीर्थंकरस्य सर्वोपद्रव रक्षण प्रवीणस्य सकल कल्याणहेतो श्री पार्श्वनाथस्य शासन रक्षण कारिणी सर्वसत्व भय रक्षण परायण अविरत कथा, सम्यग्दर्शनयुक्ता जिन मन्दिर प्रवर्तिनी सर्वस्यापि त्रिभुवनोदर विवरवर्तिनी लोकस्य मानसानद विधायिनी। अष्टचत्वारिंश ।सहस्र परिवार समन्विता। एकावतारा श्रीपार्श्वनाथचरणार विंद समासाधनी। अत कथमीद्दशाया श्री पद्मावत्या. सम्बन्धिनोऽष्टकस्य वृत्तिम् पूर्वता अस्माक दूषणजालमारोप्यतो न भवता, तस्मान्नात्र दोष अथैव वदिष्यति। ज

पूजक सन् भवान् यदुत किमिति पूर्वाचार्य प्रणीतस्यास्य मत्र स्तोत्रस्य वृत्ति क्रियते, यतो भवता प्रयोजना भावात् ।

अत्रोच्यते प्रयोजनं हि त्रिविधं प्रतिपादयन्ति ।

१. परवादी कुन्जर विदारण मृगेंद्र सहृदय स प्रयोजनम्

२ पर प्रयोजन नववृत्ति प्रमाणस्य लोक प्रसिद्धस्य अस्य मन्त्र

३ उभय प्रयोजनं च स्तोत्रस्यार्थ स्मरण लक्षणं विद्यत एव स्व प्रयोजना: '

तथा परप्रयोजनमपि विद्यत एव । यतस्ते केचित् भविष्यन्ति मदतमा मतिपाठका येषामस्यापि वृत्त सकाशात् बोधो भविष्यत् अतएव उभयप्रयोजनमपि संभवत्येव । तस्मात् वृत्तिकरणेऽस्माक प्रयोजनमपि विद्यत एव । तत्राद्यं वृत्तमाह :—

पुरुषो मे उत्तम श्री पार्श्व प्रभु जिन देव को नमस्कार करके, पद्मावती अष्टक वृत्ति मे अच्छी तरह कहू गा ।

यहा पर प्रश्न किया गया है कि आप विरक्त मुनि होकर आपके द्वारा कैसे पद्मावती अष्टक वृत्ति लिखी जा रही है ? आपसे उसका क्या सम्बन्ध है । आपके द्वारा पद्मावती अष्टक वृत्ति क्यो लिखी जा रही है ? आप तो वीतरागी मुनि है और ये देवी पद्मावती रागी है आपका उनसे क्या प्रयोजन है ?

उत्तर—ये देवी वीतराग भगवान, सर्वज्ञ तीर्थ कर के सेवको का सर्वोपद्रव रक्षण करने मे प्रवीण और सकल कल्याण के हेतु श्री पार्श्वनाथ प्रभु के शासन की रक्षा करने वाली, सर्व जीवो का भय से रक्षण करने मे परायण है, इसलिये ये अविरत होते हुए भी इस देवी की यहा कथा है । ये सम्यग्दर्शन से युक्त, जिन मन्दिर प्रवर्तिनी है । सर्व तीनों लोक रूपी उदर ही है । बिल जिनका ऐसे जो लोग उनमें वर्तन करने वाली है । जन-जन को आनद देने वाली है । चौरासी हजार परिवार से समन्वित है और एकावतारी है अर्थात् एक भव लेकर मोक्ष जाने वाली है और श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के चरणो की अच्छी तरह से आराधना करने वाली है । इसलिये कैसे ऐसी श्री पद्मावती से सम्बन्धित अष्टक की वृत्ति को करने मे आप हमारे पर आरोप्य अथवा दूषण जाल आरोपण करते हो । इसलिए यहा पर कोई दोष नही है । यहा पर ही कहा जाता है तो फिर पूर्वाचार्यो के द्वारा प्रणित जो ये स्त्रोत्र है । उसका ही हम वृत्ति करते है ये ही हमारा यहा पर प्रयोजन है ।

प्रयोजन तीन प्रकार का यहा पर प्रतिपादन किया है ।

(१) पहला प्रयोजन प्रतिवादी रूपी हाथियो का विदारण करने मे सिह के समान है । सत् हृदय से यही प्रयोजन ।

(२) पर प्रयोजन। इस मन्त्र स्तोत्र की नई वृत्ति बनाना।

(३) दोनो ही प्रकार प्रयोजन उभय, स्तोत्र का अर्थ स्मरण लक्षण ही है जिसका ऐसा हा स्व का प्रयोजन है। इसमे पर का प्रयोजन भी देखा जाता है। कोई मन्द बुद्धि वाला शिष्य है तो उसको भी इस वृत्ति से बोध हो सकता है। इसलिये हमारा उभय प्रयोजन है। इस कारण से हमारे द्वारा वृत्ति का करना प्रयोजन भी देखा जाता है।

अथ श्री पद्मावती स्तोत्रम्

श्री मद्गीर्वाणचक्रस्फुट मुकुट तटी, दिव्य माणिक्य माला।
ज्योतिर्ज्वाला कराला, स्फुरति मुकुरिका, घृष्टपादारविंदे॥
व्याघ्रोरल्का सहस्रज्वलदनलशिखा, लोलपाशांकुशाढये।
आं क्रौं ह्रीं मंत्र रूपे, क्षपित कलिमले, रक्ष मां देवि पद्मे॥१॥

व्याख्या—रक्ष पालय हे देवि, पद्मावती शासन देवि। क मा स्तुतिकर्तार, कीदृशे देवि, श्रीमद्भि पादारविंदे श्री विद्यते येषाम् ते श्रीमत श्रीमंतो गीर्वाण श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटितानि च तानि मुकुटानि च स्फुटमुकुटानि। श्रीमद्गीर्वाणमुकुटानि तटे भवा तटि तेषा तटि श्रीमद्गीर्वाण चक्रस्फुट मुकुटतटि। दिव्यानि प्रधानानि माणिक्यानि दिव्यमाणिक्यानि तेषा माला, दिव्यमाणिक्यमाला। श्रीमद्गीर्वाण दिव्यमाणिक्यमाला। तस्य ज्योतिस्तेज-स्तस्या ज्वाला। श्रीमद्गीर्वाण ० माणिक्यमाला ज्योतिर्ज्वाला तया कराल स्फुरितमुकुरिका श्रीमद्गीर्वाण ० कराल स्फुरितमुकुरिका श्रीमद्गीर्वाण ० स्फुरित-मुकुरिका। श्रीमद्गीर्वाण ० मुकुरिकाया घृष्टपादवेवारविन्दे यस्या सा तस्या सबोधन श्रीमद्गीर्वाण ० घृष्टपादारविन्दे पद्मा त्रिदशनिकुरव स्पष्टकिरीट पर्यस्त-तटस्थ-प्रधानरत्न माला। व्याघ्रोरोल्कासहस्त्र ज्वलदनल शिखालोलपाशा-कुशाढये। व्याघ्रोराश्च ता उल्काश्च, व्याघ्रोरूल्का तासाम् सहस्त्राणि ज्वलश्चा-सावनलश्च ज्वलदनलस्तस्य शिखा ज्वलत् अनल शिखा, व्याघ्रोरोल्कासहस्त्राणि च ज्वलदनल-शिखा च पाशश्च अकुश च, पाशाकुशो लौले च, पाशाकुशे लोल पाशांकुशे ते च व्याघ्रोरोल्का लोल पाशांकुशा। तैराढ्य व्याघ्रो ० लोलपाशाकुशोढ्य तस्या सबोधन व्याघ्रो ० पाशाँकुशाढ्ये।

तारापतनज्वाला सहस्त्रदेदीप्यमानानलधाराचंचल पाशकरिकलभकु भविदारण प्रहरण इत्यर्थ। पुनरपि कीदृशे आ क्रौं ह्री मन्त्र रूपे। आ च, क्रौ च, ह्री च, आं क्रौं ह्री रूपा आ क्रौं

ह्ली रूपो य एव मन्त्र तत्स्वरूपे । आ क्रौं ह्लीं मन्त्र रूपे प्रतीते । पुनरपि को दृशे । क्षपित कलिमले ।

क्षपितः कलिमल यया सा तस्या मबोधनं । हे क्षपितकलिमले । विघटित-पाप मले । अस्य भाव माह् ।

श्री कार नाम गर्भ तस्य वाह्यपोडशदले लक्ष्मी बीजमालिख्य । निरतर ध्यानमान पिगलादि द्रव्यैं सौभाग्य भवति । द्वितीय प्रकारे षट्कोण अस्य चक्र मध्ये ऐंकारस्य नामगर्भितस्व वाह्ये क्लीकार दातव्य । वहिरपि ह्लौं सलिख्य कोणेषु ॐ क्लीं ब्लूं द्रा द्री द्रू सलिख्य मायाबीजे स्त्रिविधमावेष्टय निरतर सार्यमाणे काव्य शक्तिर्भवति ।

अथ तृतीय प्रकार षट्कोण चक्र मध्ये ऐं क्लीं ह्लौं नाम मध्ये तत्र कोणेषु ॐ ह्लीं क्लीं द्रवे नम ॐ ह्लीं क्लीं द्रावे नम ॐ ह्लीं द्रेनम ॐ ह्लीं उभाद्रे नम ॐ ह्लीं द्रवे नम ॐ ह्लीं द्रावे नम ॐ ह्लीं पद्मिनी नाम मालिख्य वहिरष्टदलेषु मायाबीज दातव्यम् वाह्येषु षोडशदलेषु कामाक्षर बीज दातव्य । वाह्येषुषोडशदलेषु ह्लौं सलिख्य वहिरष्टदलाग्रे माया बीज सलिख्य मध्येषु ॐ आ क्रौं ह्लीं जयायैं नम' अजितायैं नम अपराजितायैं नम जयन्ती नम विजयन्ती नम. भद्रायैं नम ॐ ह्लीं शांतायै नम आलिख्य वाह्यमाया बीज त्रिगुण वेष्टय माहेद्र चक्राँकितचडकोणेषु लकार लेख्य । इद चक्र कुकुम गोरोचनादि मुगधद्रव्यैं भूर्जपत्रे सलिख्यास्या मूल विद्या—

ॐ आं क्रौं ह्लीं धरणेंद्राय ह्लीं पद्म वती सहिताय क्रौं द्रं ह्लीं फट् स्वाहा ।

श्वेत पुष्पैर्पचाशत् सहस्त्रे (५००००) प्रमाण एकाँत स्थाने मानेन जापेन दशागहोमेन सिद्धिर्भवति । प्रथम वृत्तानतरं माला मत्रमनेक प्रकार सप्त पचमाह ।

पद्मावतीदेवी स्त्रोत्र संबन्धि यंत्र मन्त्र साधन का विवरण

(१) श्री कार मे, देवदत्त, लिखकर सोलह दल वाले कमल की रचना करे श्री कार के ऊपर फिर उस सोलह दल वाले कमल मे, प्रत्येक दल मे, लक्ष्मी बीज की स्थापना करे । लक्ष्मी बीज याने (श्री) लिखे । यह यन्त्र रचना हुई । देखिये इस स्त्रोत्र के प्रथम काव्य की यन्त्र नं० १

विधि :—उस यन्त्र को सुगन्धित पीले रंग के द्रव्य से लिखकर, निरन्तर सामने रखकर यन्त्र का ध्यान करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है । गोरोचन, कस्तूरी से यंत्र, भोज पत्र पर बनावे ।

(२) दूसरे प्रकार से —प्रथम ऐ कार लिखे, ऐ, कार मे देवदत्त लिखे, फिर उस ऐ कार ऊपर षट्कोणाकार रेखा खीचे। षट्कोण के प्रत्येक दल मे क्ली लिखे। फिर वाहर ह्री लिखें, फिर कोणो मे ॐ क्ली व्लू द्रा द्री द्रू लिख कर माया वीज याने (ह्री) कार से तीन घेरा लगावे। देखिये यन्त्र न० २।

विधि —इस यन्त्र को भोज पत्र पर गौरोचन, कस्तूरी, केशर आदि सुगन्धित द्रव्यो से लिखकर निरन्तर यन्त्र का ध्यान करने से, काव्य शक्ति बढती है।

(३) तीसरे प्रकार से यन्त्र की रचना —प्रथम षट्कोण वनाये, षट्कोण चक्र मे, ऐ क्ली ह्रौ तथा देवदत्त लिखे, उस षट्कोण के दलो मे क्रमश ॐ ह्री क्ली द्रवे नम ॐ ह्री क्ली द्रावे नम, ॐ ह्री क्ली द्रे नम, ॐ ह्री क्ली उभाद्रे नम, ॐ ह्री क्ली द्रवे नम, ॐ ह्री क्ली द्रावे नम, ॐ ह्री क्ली से पद्मिमी लिखे। फिर उस षट्कोण पर वलयाकार वनावे, उस वलय को अष्ट दल वनावे, उन अष्ट दलो मे माया वीज यानी (ह्री) वीज की स्थापना करे। फिर उसके ऊपर सोलह दल का कमल वनावे, उन सोला दलो मे काम वीज यानी (क्ली) वीज की स्थापना करे। उसके ऊपर एक सोलह दल वाला कमल और वनावे, प्रत्येक दल मे (ह्रौ) वीज की स्थापना करे फिर उसके उपर आठ दल वाला कमल वनावे, प्रत्येक दल मे क्रमश माया वीज (ह्री) लिखकर फिर क्रमश. ॐ आ क्रो ह्री जयायै नम, ॐ आ क्रो ह्री विजयायै नम, ॐ आ क्रो ह्री अजितायै नम, ॐ आ क्रो ह्री अपराजितायै नम, ॐ आ क्रो ह्री जयती नम, ॐ आ क्रो ह्री विजयति नम, ॐ आ क्रो ह्री भद्रायैनम, ॐ आ क्रो ह्री शातायैनम, लिखे, फिर ऊपर से ह्री कार को तीन गुणा वेष्टित करके माहेन्द्र चक्राकित चड कोण मे, (ल) कार की स्थापना करे। यह यन्त्र रचना हुई। देखे यन्त्र न० ३।

विधि —इस यन्त्र को भोज पत्र पर कुकुम गौरोचनादि सुगन्धित द्रव्यो से लिखकर इस मन्त्र का जप करे।

मन्त्र :—ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेंद्राय ह्रीं पद्मावती सहिताय क्रौं द्रें ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि – सफेद फूलो से ५०००० हजार जप, एकात स्थान मे मौन से करे। दशास होम करे तो सिद्ध होता है।

श्लोक नं० १

यंत्र नं० १
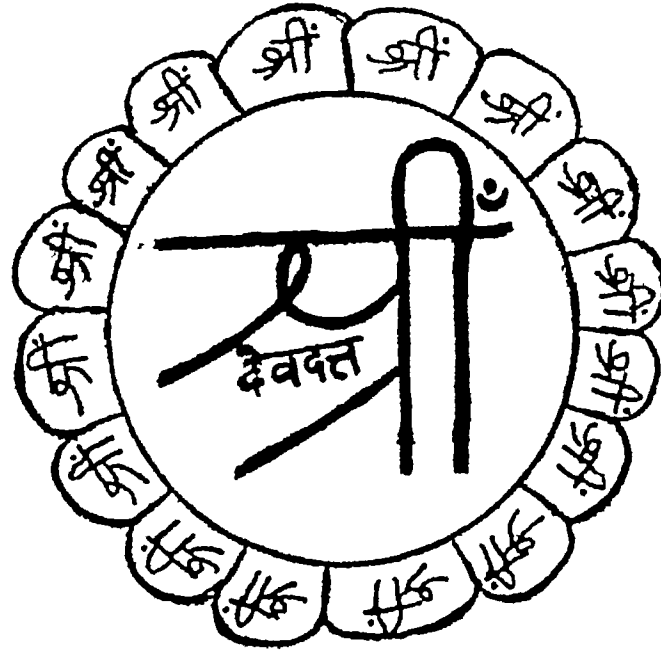
यत्र नं० २
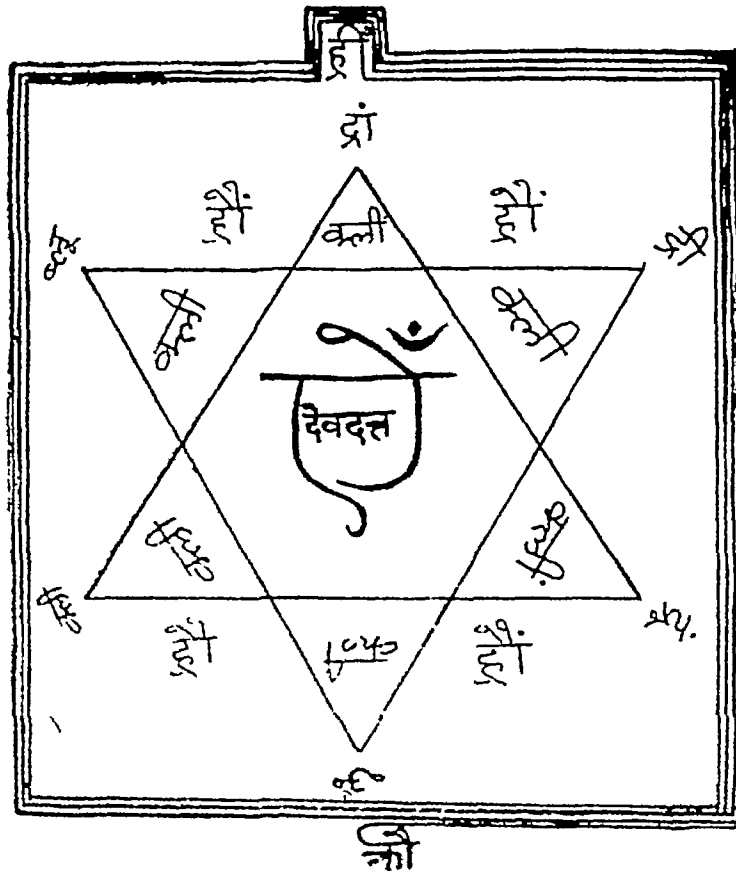
यन्त्र न० ३
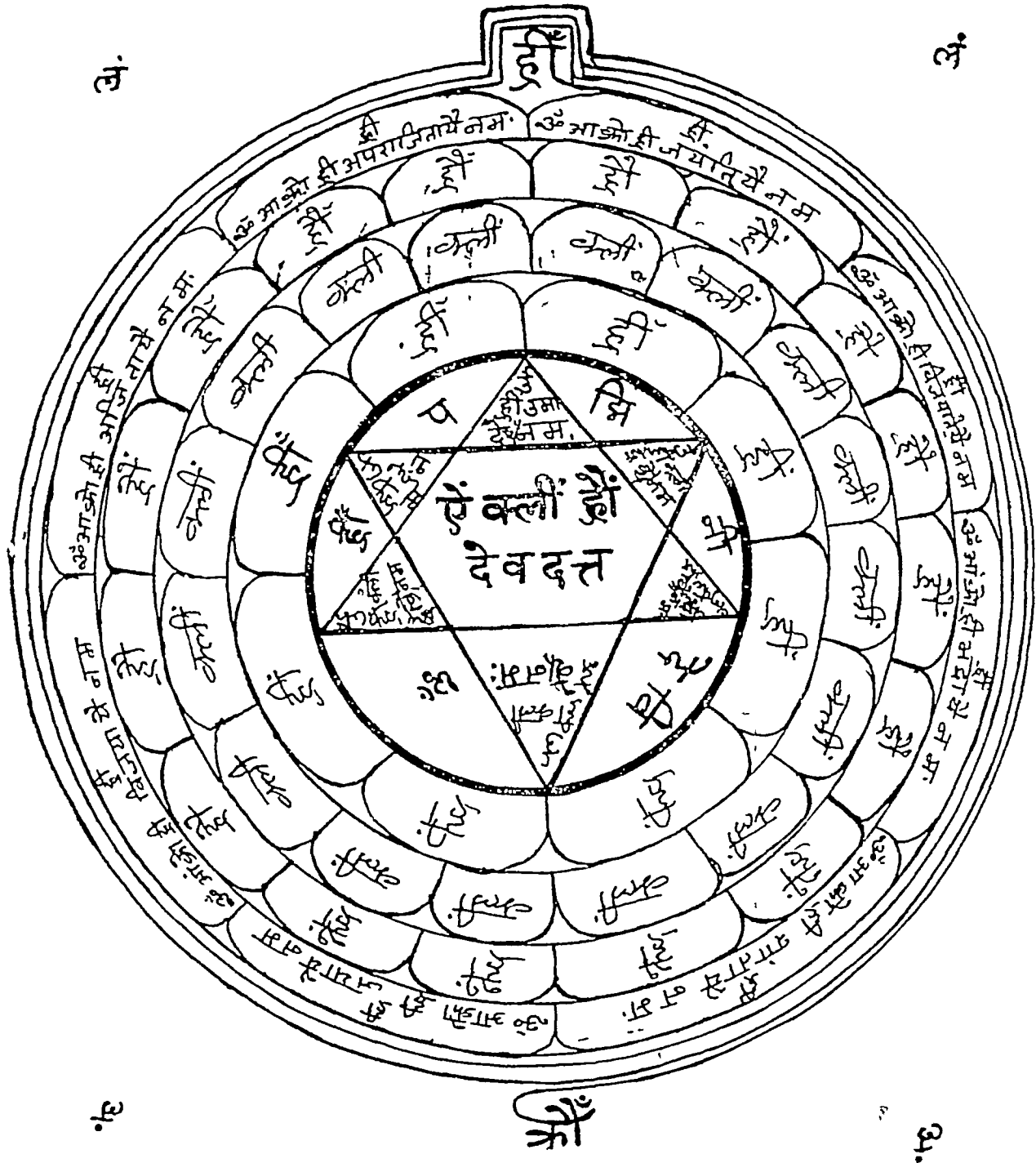
भित्वा पातालमूलं, चल—चल चलिते, न्यायलीला कराले ।
विद्यु द्दंड प्रचंडप्रहरणसहिते, सद्भुजैस्ताडयंती ॥

दैत्येन्द्रक्रू रदंष्टा, कट-कट घटितः स्पष्टभीमाट्टहासे ।
माया जीमूतमाला, कुहरितगगने रक्ष मा देवि पद्मे ।।२।।

रक्ष पालय हे देवी पद्मावती। शासन देवी। क मा स्तुतिकर्त्तार कीदृशी देवी, चल-चल चलिते चचल गमने इत्यर्थ कि कृत्वा, भित्वा विदार्य कि पाताल मूलं पातालस्य मूलं असुर भुवन मूल मित्यर्थ. पुनरपि कीदृशी व्याललीलाकराले। व्यालाना सर्पाणा लीला, व्याललीला, तया कराला, व्याललीला कराला, तस्या सबोधन हे। व्याललीला कराले। पुनरपि की दृशे। विद्युद्दंडप्रचड प्रहरण सहिते विद्युद्दडः तद्वत्प्रचडं चतत् प्रहरण च विद्युद्दड प्रचड प्रहरण तेन सहिता विद्युद्दडप्रचण्ड प्रहरण सहिता। तस्याः सबोधन विद्युद्दडप्रचण्ड प्रहरणसहिते सौदामिनीलकुट समर्थायुधयुक्तेत्यर्थ.। तथा तर्जयती ताडयंती क दैत्येन्द्र दानवेन्द्र,। कै सद्भुजै. शोभनदोर्दण्डै पुनरपि कीदृशे। क्रूरदष्ट्राकटकटघटित स्पष्ट भीमाट्टहासे क्रूरदष्टा कटकटघटित स्पष्टश्चासौ भीमश्च स्पष्यभीमः स्पष्टभीमश्चासौ अट्टहासश्च स्पष्टभीमाट्टहास क्रूर दष्ट्रा कटकटेन घटिते स्पष्ट—भीमाट्टहासो यया सा तस्य। सबोधन क्रूर द० हासे पुनरपि कीदृशे। मायाजी मूत मालाकुहरित गगने। माया शव्दे ह्री कार बीजमुच्यते। ह्रीकार नामगर्भित- तस्य बाह्येषु पोडशदलेषु मायावीज सलिख्य धारयेत्। ततो माया शव्देन माया—वीज ह्रीकार मुच्यते। तत्सप्तलक्षाणि जपेत्। सर्वकार्यसिद्धिर्भवति ।। १ ।।

माया एव जीमूता मायाजीमूता तेषां माला मायाजीमूत माला तया कुहरितं शव्दायमान गगन आकाश यया सा तस्या सबोधन- "मायाजीमूतमाला कुहरित—गगने" ह्रीकार जलधरख गर्जिता बरे इत्यर्थ. इदानी मायानाम गर्जितस्य बहिरष्ट—पत्रेषु ह्रीकारं दातव्यं, एतद्यंत्रम् कुकुमगोरोचनया लिखित्वा हस्ते बधात्सर्वजन प्रियो भवति ।। २ ।।

पुनरेतद्यत्र कुकुमगोरोचनया भूर्यपत्रे (भोजपत्रे) विलिख्य।
बांहौ धारणीय सौभाग्य करोति।

मत्र—ॐ नमो भगवति पद्मावती सुधारिणी पद्मसस्थितादेवि प्रचंडदौर्दंड खडितरिपुचक्रे किन्नर कि पुरुप गरुड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत, प्रेत, पिशाच महोरग—सिद्धि नाम मनुज पूजिते विद्याधर सेविते ह्री ह्री पद्मावती स्वाहा ।।

"ॐ एतन्मत्रेण मर्षपममिमत्र्य व्यदेकविंशातिवारान् वाम हस्तेन् वंधनीयम् सर्व-ज्वर नाशयति, भूतशाकिनी ज्वर नाशयति ।।

"ॐ नमो भगवति पद्मावती अक्षिकुक्षिमडिनीउ त वासिनी आत्म रक्षा, पर रक्षा भूत रक्षा, पिशाच रक्षा, शाकिनी, चोर वंधामि (य) ॐ ठः ठः स्वाहा" ।। १ ।।

१.	पूर्व द्वार वधामि	७.	उत्तरद्वार वधामि
२.	आग्नेयद्वार ,,	८.	ईशानद्वार ,,
३.	दक्षिणद्वार ,,	९.	अधोद्वार ,,
४.	नैऋतिद्वार ,,	१०	ऊर्ध्वद्वार ,,
५.	पश्चिमद्वार ,,	११.	वक्र ,,
६.	वायव्यद्वार ,,	१२.	सर्वग्रह (ग्रहान्) वधामि ।

चण्डप्रहरणसहिते सद्भुजैस्तर्ज्जयति । दैत्येन्द्र क्रूर दष्ट्रा कटकट घटित स्पष्ट—भीमाट्टहासे । मायाजीमूत माला कुहरित गगने रक्ष मा देविपद्ये । २ सर्व कर्म करी नाम विद्याज्वर विनाशिनी भवति ।

।। ॐ ह्री ह्री ज्वी ज्वी ला ज्वा प लक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ २ स्वाहा ।

एता विद्या अष्टोत्तर सहस्त्र श्वेत पुष्पैरष्टोत्तरशत जप्य श्री पार्श्वनाथ चैत्ये जपित सिद्धिर्भवति । स्वप्नमध्ये शुभाशुभ कथयति ।

।। ॐ नमः चडिकायै ॐ चामु डे उच्छिष्ट चडालिनी अमुकस्य हृदय भित्वा मम हृदय प्रविशायै स्वाहा ।।

ॐ उच्छिष्ट चडालिनी ए..... अमुकस्य हृदय पीत्वा मम् हृदय प्रविशेत—क्षणा दानय स्वाहा ।।

ॐ चामु डे अमुकस्य हृदय पिवामि । ॐ चामु'डिनी स्वाहा । सित्थय पडिम काउ सपुणंति अटुणतावेव—या होमे—सर्वर सिण वास कुण ।। मन्त्र ।।

ॐ उंतिम मातगिनी अपद्रुपिस्सेपइ कित्ति एइपत्तलग्गि चंडालि स्वाहा ।।

ॐ ह्र ह्री ह्र ह ।—एकान्तर ज्वर मत्र्य तावूलेन सह देयम् ।। ॐ ह्री ॐ नामाकर्षण । ॐ ग म ठ ठ गति वधः ह्री ह्री द्रं द्र । ॐ देवु २ मुखव ध २ । ॐ ह्री फट् क्रौ प्रोच्छि भी ठ ठ ठः कु डली करण । ॐ लोलु ललाट घट प्रवेश ॐ य विसर्जनीयं ओष्ठ कठ, जिह्वा, मुख - खिल्लउ तालु खिल्लउ ॐ जिह्वा खिल्लउ ॐ खिल्लउ तालू हगरु सुवहु चचृ २ हेर ठ ठ महाकाली योग कालो कुयोगम्मूह सिद्ध उए—कु सप्प मुह वधउ ठ ठः । इति सर्प मन्त्र. ।

ॐ भूरिसि भूति धात्री विविध चूर्णैरलक्षता स्वाहा ।
भूमि शुद्धि ।

डाकिनी मन्त्र —ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शाकिनी योगिनीना—मडल मध्ये प्रवेशय, आवेशय, सर्प शाकिनी सिद्धि सत्वेन सर्षपास्तारय स्वाहा । **इति सर्षप तारण मन्त्र ।**

ॐ नमो सुग्रीवाय ह्री खट्वांग, त्रिशूल, डमरू हस्ते तिस्तीक्ष्णक कराले वटेलानल कपोले लुचितं केश कपाल वरदे। अमृत सिर भाले। गंडे—सर्व डाकिनीना वशकराय सर्व मर्त्रछिदनी निखये आगच्छ भवित—त्रिशूल लोलय २ इ अरा डाकिनी बल ३।

शाकिनीनां निग्रह मन्त्र.—नरलइ किलइ फैत्कार मडलि असिद्धि ह इ निवारइ द्रोसममै आउसिपइ सइहाल षूलिमाइ २ रक्त सी पुत्तप—समं न करसी।

डाकिनी मन्त्र :

ॐ ह स ब क्षं कमल वजूँर्षु भा ह्री ग्ना ज फट्।

अश्वगधापसव सर्षप कर्पासिकानि अभिमन्त्र्य अवस्तूनि आछोते ऊसल मूसल वर्तिना वाला गरूडै सिंदुरै स्ताडयेत्। शाकिनी प्रगटा भवति त पात्र मोचयति। शाकिनी मत्र। किलट्ट मूल तदुलोदकेन गालयित्वा पात्रस्य तिलकं क्रियते। शाकिनीना स्तभो भवति। अतः परं प्रवक्ष्यामि। योगिनी क्षोभं मुक्तारि—संमत्र ससिद्धं श्री मत्सत्रै प्रपूजित ॥१॥

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय जने वा तराय स्वाहा। डाकिनी दिशा बंध पुत्र रक्षा च प्रवश्यं।

ॐ नमो सुग्रीवाय—भौ भौ मत्त मातंगिनी स्वाहा। मुद्रिका मन्त्रः। चक मुद्रा प्रेषित व्याग्रह गृहीतस्य मुद्रा दर्शना दैवागनिर्गच्छति॥ ॐ नमः सुग्रीवाय नम. चामुंडो तक्षिकालोग्रह विसत् हन २ भज २ मोहय २ रोषिणी देवी सुस्वाप स्वाहा॥ प्रोच्छादने विद्या। ॐ नमो सुग्रीवाय परमसिद्ध सर्व शाकिनीना प्रमर्दनाय—कुट २ आकर्षय २ वाम देव २ प्रेतान् दहममाहली रहि २ उसग्रत २ यसि २ ॐ फट् शूल चंडायनी विजयामामहन् प्रचंड सुग्रीवो सासपति स्वाहा॥ सर्व कर्म करो मन्त्रः।

ॐ नमो सुग्रीवाय वार्पिके सौम्ये वचनाय गौरीमुखी देवी शूलिनीज्जं २ चामुंडे स्वाहा।

अनया विद्यया सकलं परिजप्य कणवीरलतां सप्ताभिमंत्र्य उखल मुशलेन ताडयेत् यथा २ ताडयति २ योगिनी भूस्ताडिता भवति। प्रताडण विद्या अष्ट शतिको जाप। ॐ कारो नाम गर्भितों वाह्यश्च चतुर्दलमध्ये ॐ मुनिसुव्रताय संलिख्य वहि हर २ वेष्ट्यं। वहि कमादिक्ष-कार पर्यंत वेष्टय, मायाबीजं त्रिधा वेष्ट्य। यया द्वितीय वकारं नामगर्भित वाह्यश्चतुर्दले वकार दातव्यं, वहिरष्ट :—पत्रेषु उकार देय। यया तृतीय मायावीजं नामगर्भितं। वहिरष्टकारं वकारं देयं। वहिरगारेषु माया देया। एतद्यंत्र। कुकुमगोरोचनया भूर्ये संलिख्य दुष्ट—वश्यौपसर्गो दोष-

मुपशमयति ह्रीं नाम गर्भितोक्ष वेष्टय —माया त्रिधा वेष्टय वहिरष्टार्वे 'क्ष क्षी क्षू ह्रीं सलिख्य विदिग्गिगेपु 'देवदत्त'' देय । द्वितीय नाम गर्भिवहि स्वरावेष्टया वाह्ये—ॐ ह्री चामुडे वेष्ट्यः वाह्य वलय पूर्ग्येत् । एत-द्य त्र द्वय कु कम—गोरोचनया भूर्ये सलिख्य सूत्रेण वेष्टय वाह्रौ धारणीयम् । प्रथम मत्र वध्याया गुर्विणी मृतवत्सा धारयति । काकवध्या प्रसवति ।

सर्वभूतपिशाच प्रभृतीना रक्षा वाल गृह रक्षणे रक्षा भवति ।

मायानामगर्भितो वहिरष्टपत्रेपु र देय । यथा रक्षाद्वितीयप्रकारः ।

मायानामगर्भितो वहिरष्टार्घ मायावीज देय । यथा तृतीय ।

ह्री श्री देवदत्त ह्री श्री सलिख्य वाह्ये षोडशार्घ ह्री श्री देयम् एतद् यत्र कुंकुम-गोरोचनया भूर्ये सलिख्य कुमारी सूत्रेण वेष्ट्य वाह्रौ धारणीय। वालाना शातिरक्षा भवति । सर्वजन प्रिय । दुर्भगात्रीणा सौभाग्य भवति ।

'क्ष ज ह स म म ल व य्यूं' एतानि पिंडाक्षराणि मध्ये नामगर्भितानि सलिख्य कु कुम-गोरोचनया भूर्ये लिख्येत् । वाह्रौ धारणीय, वश्यो भवति ।

पट्कोण चक्रमध्ये माया नाम गर्भित पट् कोणेषु 'ह्री' स लिखेत । वाह्य ह्री देय । एतद्य त्र कु कुम—गोरोचनया सराव सपुट मध्ये प्रक्षिप्य स्थाप्य वश्यो भवति ।

माया श्री नाम गर्भितो वहि माया वेष्टय वहिरष्टार्घ माया देयम् कु कुम-गोरो-चनादिसुगध द्रव्यै भूर्ये लिखेत । वस्त्रे कठे वाह्रौ वा धारणीय आयुवृद्धि अपमृत्युनाश रक्षा, भूतपिशाच, ज्वरस्कद, अपस्मारग्रह गृहीतस्य वधितस्य तत्क्षणादेव शुभ भवति ।

मायात्रिविधावेष्टय ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्रः यक्ष । पट्कोण गर्भित एतत् कोणेषु 'ह्रू' ॐ ह्रू ८ वाह्ये ह्रा ह्री स्वाहा एतद्य त्र नागवल्लिपत्रेषु चूर्णेन लिखेत् । सप्ताभिमत्र्य एत द्दीयते । वेलाज्वर नाशयति । अथवा—ह्रा ह्री ॐ शुभै द्रव्यै भूर्ये सलिख्य माया त्रिविधा वेष्टय एतद्य त्र गौरोचनया भूर्ये विलिखेत् । कठे हस्त वध्वा चौरभय न भवति । अमोघविद्या करोति ।

ह्री स्र देव ह्री स्र नामगर्भितो ।

वहिश्चतुर्दल ह्री ह्रा स्र लिख्य एतद्य त्र गोरोचना नामिकारक्तेन सूर्ये सलिख्य एरडनालिकाया प्रक्षिप्य राज महामात्य प्रमृतीना वश्य भवति । कालिका प्रयोग । ह्री द्र नय र नृप क्षोभयति । य नामगर्भितो वहि ॐकारमयवेष्टय वाह्ये पोडशार्वे माया वीज वाह्ये माया त्रिवेष्टय एतद्य त्र कु कुम—गोरोचनादिशुम द्रव्यै भूर्ये लिखेत् । कुसुम रक्तसूत्रेण वेष्टयं रक्तकण

वीरपुष्पैरष्टोत्तरशतानि जापे क्रियमाणे पुरुषक्षोभो भवति । नामाक्षराणी नित्य जपेत् । नृप पुर ग्राम च क्षाभयति । पट् कोण चक्र मध्ये । य नामगर्भितो बाह्य सपुट-स्थकोणेषु र देय ज्वलन सहित, एतद्य त्र स्मशानागारे, काकपिच्छे स्मशाने कर्पटे वा लिखेत् स्मशाने निखनेत् सद्यः उच्चाटयति । अनेन मत्रेण सप्तामिमन्त्र्य यत्कृत्वा निखनयेत्। ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ फट् व. नाम ह्री नामगर्भित ठ वेष्ठय बहिरष्ट—ल री र रो २ रै रः सलिख्य वाय-सरूधिरेण यस्य नाम लिखेत् स महाज्वरेण गृह्यते । पट्कोणमध्ये 'य' नामगर्भितो कोणेषु य ६ बाह्ये निरतरम् पूरयेत । एतद्य त्र विषेण स्मशानागारेण पादपाशुना सह भूर्ये यस्य नाम आलिख्येत् प्रेतवन निर्जयतम् । ॐ कारम् वेष्ट्य बहिरर्ध 'य' देय । एतद्य त्र विष, कतक, रसेन ध्वजाग्रपट्टे यस्य नाम लिखित्वा स्मशाने निखनेत् उच्चाटयति । यस्य नाम मध्ये क्म्ल्व्र्यू सपुटस्थ बहिश्चतुर्द न 'य' देय । एतद्य त्र स्मशानागारेण निम्बपत्ररसेन ध्वजकर्पटे लिखित्वा ध्वजाग्रे बन्ध उच्चाटयति । य कार नाम अग्रथ मडलम् कोणषु 'र देय । स्वस्ति कामाना भूषित । इद यत्र िभो तकरसेन नाम मालिख्य खरमूत्रे स्थाप्यते सद्य उच्चाटयति । देवदत्त प्रसाद ह्रीवार च वारत्रय च वेष्टय एतद्य त्र तालपत्र २ कटकेन लेख्य कु भमध्ये स्थाप्य कु भे वसनेन आच्छाद्यते । मायाबीजो नामगर्भितो बहिरष्टार्ध माया देय एतद्य त्र कु कुमगोरोचनया भूर्ये लिख्य बाहौ धारणीय । ग्रह, भूत, पिशाच, डाकिनी, प्रभृतीना पीडा न भवति ।

मायाबीज नामगर्भितो न द्विपा प्रमाण अग्रे वज्राकितदिक्षु लकार वौषट् मध्येषु ह्रीकार प्रत्येकम् लिखेत् । एतद्य त्र कु कुम–गोरोचनया भूर्यपत्रे वा नाम—मालिख्य बाहौ धारणीय । भूत, प्रेत, पिशाच डाकिनी, त्रास, कम्प, विदाही उपशामयति । सिद्धोपदेशः । मायाबीज नामगर्भितो त्रेधावेष्ट्य सिकतामयी प्रतिमा कृत्वा लिखेत् उपयेत्स्थाप्य मादनकटके विद्धा सर्वा उनकटकेन लोहि शिलाकाया हारा बद्धा अ करे स्थापयेत् त । कूज० दिव्य० भास्व-द्वैडूर्यदड वा आकर्षयति ॥२॥

श्लोक नं. २ के यन्त्र मन्त्र का विधान

(१) ह्री कार मे देवदत्त गर्भित कर ऊपर सोलह पाखुडी का कमल बनावे, उन सोलह पाखुडी मे माया बीज (ह्री) की स्थापना करदे । यह मत्र रचना हुई। यत्र न० १ देखे ।

विधि :—इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखकर, ॐ ह्रीं नमः । इस मन्त्र का सात लाख विधि पूर्वक जपे तो, सर्व कार्य सिद्ध होते है । मनवाच्छित फल की प्राप्ति होती है ।

(२) ह्री कार मे देवदत्त गर्भित कर ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उस कमल की पाखुडी मे प्रत्येक मे ह्री बीज की स्थापना करे । ये यत्र रचना हुई। यत्र न० २ देखे।

विधि —इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर गोरोचनादि सुगन्धित द्रव्यो से लिख कर हाथ मे बाँधने से सर्व जन प्रिय होता है और सौभाग्य की वृद्धि होती है।

मन्त्र —ॐ नमो भगवति पद्मावति सुलधारिणी पद्म सस्थिता देवि प्रचडदौर्द ड खडित रिपु चक्रे किन्नर कि पुरुष गरूड गधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच महोरग सिद्धि नाग मनुज पूजिते विद्याधर सेविते ह्री ह्री पद्मावती स्वाहा ॥१॥

विधि —इस मन्त्र से सरसो २१ वार मन्त्रीत कर वाम हाथ मे बाधने से, सर्व ज्वर का नाश होता है और भूत, शाकिनी ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र —ॐ नमो भगवति पद्मावति अक्षि कुक्षि मडिनी उत वासिनी आत्म रक्षा पर रक्षा, भूत रक्षा, पिशाच रक्षा, शाकिनी रक्षा, चोर बधामिय ॐ ठ ठ स्वाहा।

पूर्व द्वारं बधामि	उत्तर द्वार बधामि
आग्नेय द्वार बधामि	ईशान द्वार बधामि
दक्षिण द्वार बधामि	अधो द्वार बधामि
नैऋत्य द्वार बधामि	ऊर्द्ध द्वार बधामि
पश्चिम द्वार बधामि	वक्र द्वार बधामि
वायव्य द्वारं बधामि	सर्व ग्रह (ग्रहान्) बधामि

सर्व कर्म करने वाली विद्या, सर्व ज्वर का नाश करने वाली है।

मन्त्र :—ॐ ह्री ह्री ज्वी ज्वी ला ज्वा प लक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ २ स्वाहा।

विधि :—इस विद्या का १००८ श्वेत फूलो से श्री पार्श्वनाथ के चैत्यालय मे भगवान के सामने जप करे, तो, सर्व मन्त्र विद्या की सिद्धि होती है। स्वप्न मे शुभा शुभ होने वाले भविष्य को कहती है।

ॐ नम चडिकायै ॐ चामुंडे उच्छिष्ट चंडालिनी…… " अमुकस्य हृदयं भित्वा मम हृयय प्रविशायै स्वाहा।

ॐ उच्छिष्ट चडालिनी ए ...... अमुकस्य हृदय पीत्वा मम् हृदय प्रविशेत क्षणादा नय स्वाहा।

ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदय पिबामि। ॐ चामुंडिनी स्वाहा।

विधि :—बालू की मूर्ति बनाकर अक्षुणता से उपरोक्त मन्त्र का जप करे, फिर होम करे, सर्व रसिणवास कुण।

मन्त्र —ॐ उ तिम मातगिनी अप द्रुपिस्सेपइ किति एंइ पत्त लग्नि चडालि स्वाहा ।।

ॐ ह्रू ह्री ह्र ह्र। एकान्तर ज्वर मत्र्य ताबू लेन सह देयम् ।।

विधि :—इस मन्त्र से ताबूल (पान) को २१ बार मन्त्रीत कर रोगी को खिला देवे, तो एकात ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र : ॐ ह्री ॐ नामाकर्षण। ॐ ग. मः ठ ठ गति वध. ह्री ह्री द्र द्र ॐ देवु २ मुख बध २ ॐ ह्री फट् क्रो प्रोच्छि२ भी ठ ठ ठः कु डलो करण। ॐ लोलु ललाट घट प्रवेश ॐ य. विसर्जनीय ओष्ठ कठ, जिह्वा, मुख—खिल्लउ तालु खिल्लउ ॐ जिह्वा खिल्लउं, ॐ खिल्लउ तालू हगरू सुबहुः चंचु २ हेर ठ ठः महा काली योग काली कुयोगम्मूह सिद्ध २ उए कु सप्प मुह बधउं ठः ठः।

ॐ भूरिसि भूति धात्री विविध चूर्णैर लक्षता स्वाहा। भूमि शुद्धि।

डाकिनी मन्त्र —ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शाकिनी योगिनी ना—मडल मध्ये प्रवेशय २ आवेशय सर्व शाकिनी सिद्धि सत्वेन सर्षपास्तारय स्वाहा।

सर्षपतारण मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय ह्री खट् वाग, त्रिशूल, डमरू हस्ते तीस्तीक्षणक, कराले वटेला नल कपोले लुचितं केश कपाल वरदे। अमृत शिर भाले। गडे। सर्व ड किनी ना वशंकराय सर्व मन्त्र छेदनी निरवये आगच्छ भवति—त्रिशूल लोलय २ इ अरा डाकिनी ३।

शाकिनी निग्रह मन्त्र —नरलइ किं लइ फेत्कार मडलि असिद्धि हइ निवारइ द्रोसम मै आउ सि पइ स इ हाल षुलिमाइ २ रक्त सी पुत्तप—सम न करसी।

डाकिनी मन्त्र —ॐ ह स बं क्ष कमल बर्जूषु भा ह्री ग्नां ज फट्।

विधि —अश्व गधापसव, सरसो, कपास को उपरोक्त मन्त्र से मन्त्रीत कर, अवस्तुनि आछोते ऊसल, मुमल, वतिना वाला गरूडैं, सिन्दूर से ताडित करे तो, शाकिनी प्रगट होती है, और उस पात्र को, यानी रोगी को छोड़ देती है।
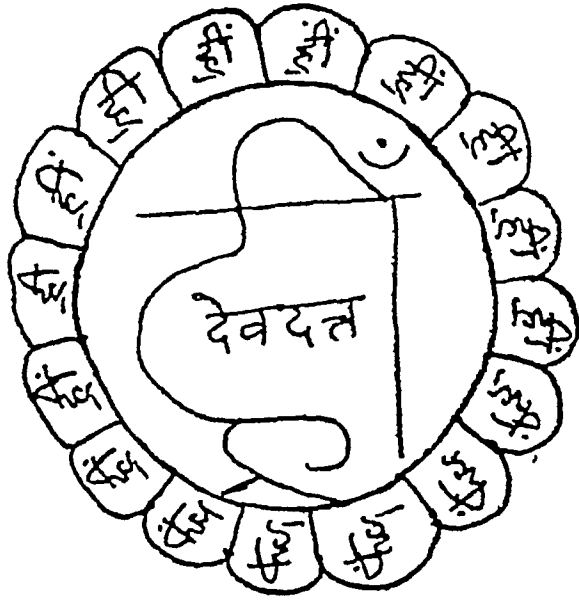
यन्त्र न० १ यन्त्र न० २
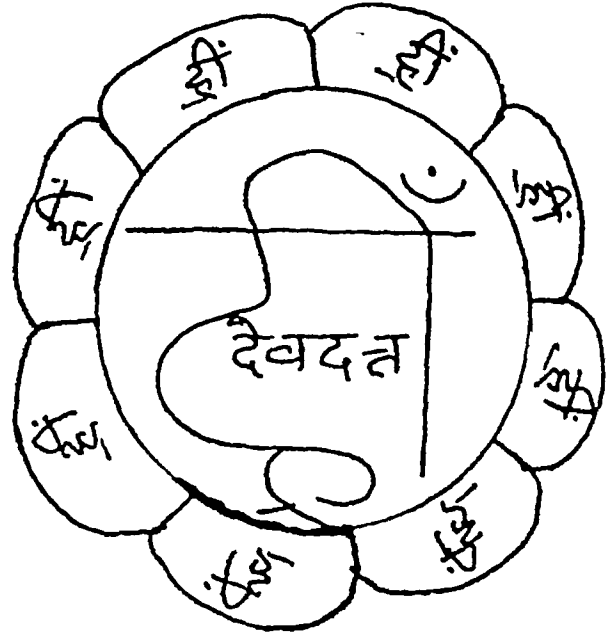
यन्त्र न० ३
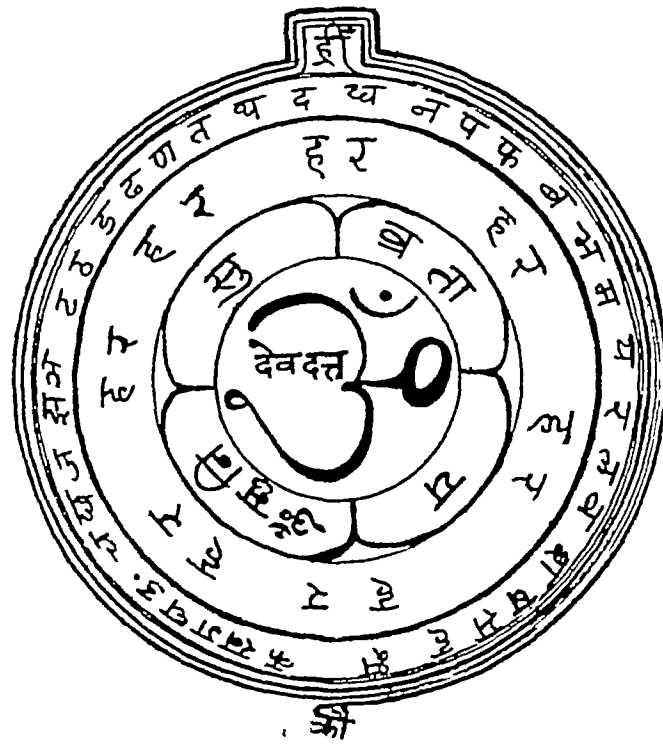
शाकिनी मन्त्र

विधि :—किलट्ट मूल तदु लोद केन गालयित्वा पात्रस्य तिलक क्रियते। शाकिनीनां स्तंभो भवति। अत परं प्रवक्ष्यामि। योगिनी क्षोभं मुक्तयरि-समंत्र ससिद्धं श्री मत्संघं प्रपूजित।

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय जनेवहतराय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को पढने से डाकिनी की दिशा बन्ध होती है। और पुत्र की रक्षा डाकिनी से अवश्य होती।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय भौ भौ मत मातंगिनी स्वाहा। यह मुद्रिका मंत्र है।

विधि —उपरोक्त मत्र को चक्र मुद्रा वना कर रोगी को दिखावे और मत्र का जप करे तो कोई भी प्रकार की भूत प्रेत ग्रह शाकिनी, डाकिनी आदि रोगी को छोड कर भाग जाती है।

मन्त्र :—ॐ नमः सुग्रीवाय नमः चामुंडो तक्षि कालोग्रह विसत् हन २ भंज २ मोहय २ रोषिणी देवि सुस्वाप स्वाहा। प्रोच्छादने विद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय परम् सिद्ध सर्व शाकिनां प्रमर्दनाय, कुटं २ आकर्षय २ वामदेव २ प्रेतान दह २ ममाहलि रहि २ उस ग्रत २ यसि २ ॐ फट् शूल चंडायनो विजमामहन् प्रचंड सुग्रीवोसासपति स्वाहा। सर्व करो मंत्र :—

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय वार्षिके सौम्ये वचनाय गोरीमुखी देवी शूलनी ज्जं २ चामुंडे स्वाहा।

विधि —उपरोक्त मंत्र से कनेर डाली को ७ बार मंत्रित कर, उखल में डाल कर मूसल से कूटे, जैसे २ कूटे, वैसे २ योगिनी भूत का ताडन होता है। लेकिन प्रताडन मन्त्र को १०८ बार जपना चाहिये।

यन्त्र रचना

(३) ॐ कार देवदत्त, गर्भित करके ऊपर चतुर्दल वाल कमल बनावे, उस चतुर्दल मे ॐ मुनि सुव्रताय लिखे, ऊपर एक वलय बनावे, उस वलय को, हर हर से वेष्टित करे। ऊपर फिर एक वलय बनावे, उसमे क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व श ष स ह क्ष, लिखे। ऊपर से ह्री कार से यन्त्र को तीन घेरे से सहित बनावे। ये य त्र रचना हुई। चित्र नं० ३ देखे।

(४) 'व' कार मे देवदत्त, गर्भित करे, ऊपर चार प खुडी का कमल बनावे, उन पाखुडीओ मे व कार की स्थापना करे। फिर ऊपर आठ दल का कमल बनावे, उन आठ दलो मे उ कार की स्थापना करे। यह हुआ य त्र का वरूप। यन्त्र न ० ४ देखे।

(५) ह्री कार मे देवदत्त, गर्भित करे, फिर आठ दल का कमल बना कर उसमे व कार की स्थापना करे, ऊपर ह्री कार का तीन घेरा देवे। ये हुई यत्र रचना यन्त्र न० ५ देखे। इस प्रकार के यन्त्रो को, केशर, गोरचन से भोजपत्र पर लिख कर धारण करे तो दुष्ट लोगो के द्वारा किया हुआ वशीकर उपद्रव शात होता है।

यन्त्र न० ४
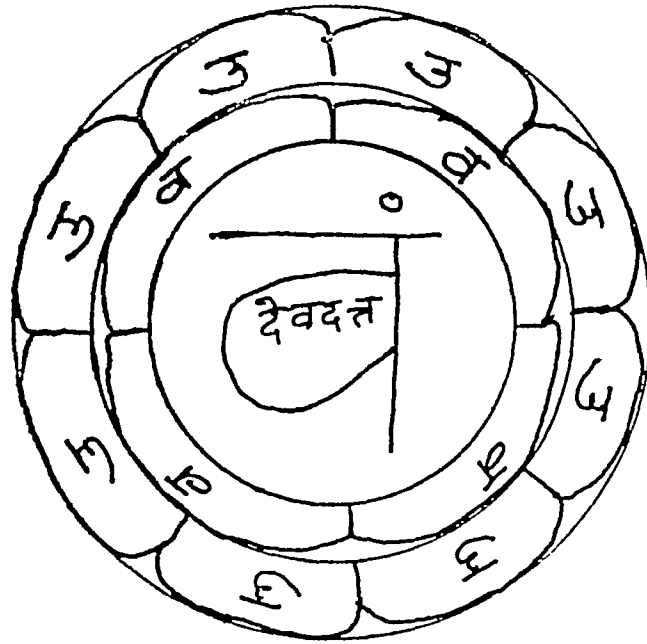
यन्त्र नं० ५
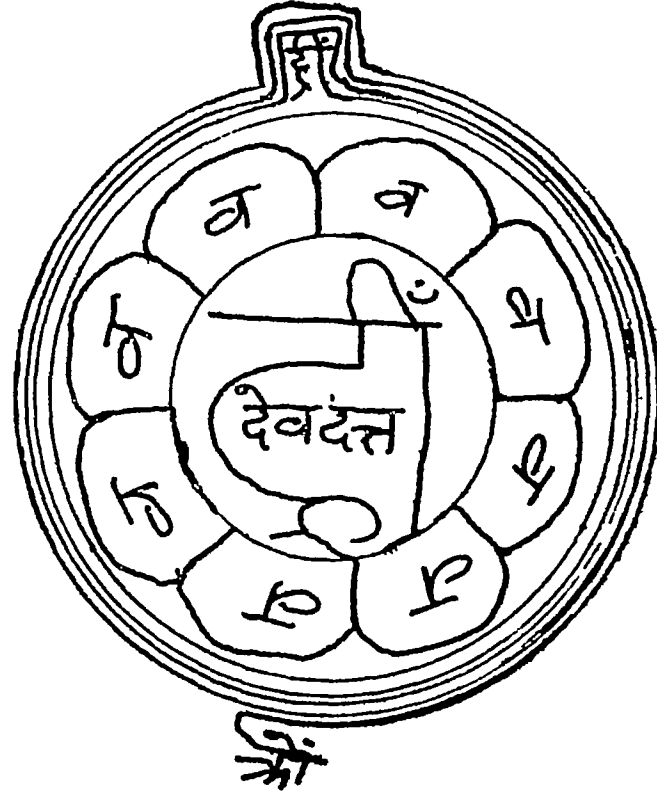
यन्त्र नं० ६
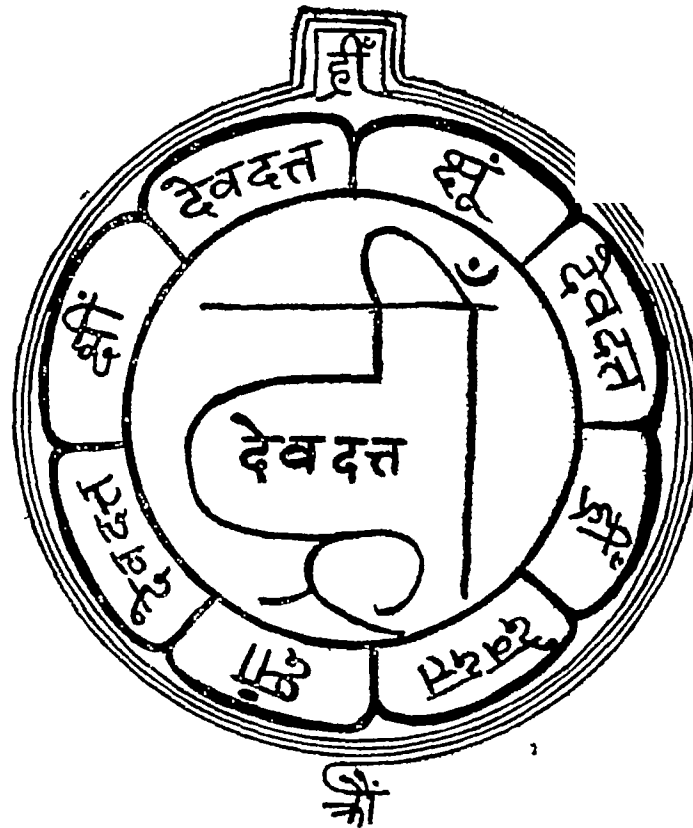
(६) ह्री कार मे देवदत्त गर्भित करके, ऊपर अष्ट पाखुडी का, कमल वनावे, फिर प्रथम क्षा लिखे। फिर देवदत्त फिर क्षी फिर क्षू, फिर ह्री लिखे। फिर ह्री कार का तीन घेरे देवे। यह यंत्र का स्वरूप वना। यन्त्र न० ६ देखे।

(७) देवदत्त लिखे, ऊपर एक वलय खीचे उस वलय मे क्रमश अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ये स्वर लिखे, फिर ऊपर से एक वलय और खीचे, उस वलय मे ॐ ह्री चामु डे, लिखे। ये हुआ यंत्र रचना। यन्त्र न० ७ देखे।

विधि —इन दोनो यंत्रो को केशर, गौरोचन से भोज पत्र पर लिख कर यंत्र को सूत्र से वेष्टित कर के हाथ मे वाधने से वध्या गर्भ धारण करती है और उसके गर्भ मे मरे हुये वच्चे कभी नही होगे। दूसरे यन्त्र के प्रभाव से काक वध्या भी प्रसव धारण करती है। सर्व भूत, पिशाच, प्रभृतिकादिक से वालको की रक्षा होती है।

(८) ह्री कार मे देवदत्त लिख कर, ऊपर अष्ट दल कमल वनावे, उन आठो ही दलो मे र कार लिखे। देखे यन्त्र न० ८ देखे।

(९) ह्री कार मे देवदत्त लिखे, फिर चतुर्थ दल का कमल वनावे, उन चारो ही, दलो मे माया वीज (ह्री) को लिखे। यन्त्र न० ९ देखे।

इन दोनो ही यन्त्रो की विधि भी उपरोक्त ही है।

(१०) ह्री श्री देवदत्त ह्री श्री, लिख कर ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उस कमल दल मे प्रत्येक मे क्रमश ह्री श्री लिखे। यन्त्र रचना इस प्रकार हुई। यत्र न. १० देखे।

विधि —इस यंत्र को केशर, गौरोचन से भोजपत्र पर लिख कर कुमारी कत्रीत सूत्र से यंत्र को वेष्टित करे, और भुजा मे धारण करावे, वच्चो को तो शाति रक्षा होती है। और सर्व जन प्रिय होता है। दुर्भाग्य स्त्रियो का सौभाग्य होता है।

(११) देवदत्त लिख कर ऊपर आठ दल का कमल वनावे, फिर प्रत्येक दल मे क्रमशः क्ष्म्ल्व्र्यूं, ज्म्ल्व्र्यूं, ह्म्ल्व्र्यूं, स्म्ल्व्र्यूं, भ्म्ल्व्र्यूं, म्म्ल्व्र्यूं, ल्म्ल्व्र्यूं, व्म्ल्व्र्यूं, लिखे यंत्र रचना इस प्रकार हुई। यन्त्र न० ११ देखे।

विधि —यंत्र को केशर गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर भुजा मे धारण करे तो सर्वजन-वशी होते है।

(१२) ह्री कार मे देवदत्त गर्भित करे, उसके ऊपर षट् कोण बनावे, षट कोण की कर्णिका के क्रमश ह्री, स, लिखे, बाहर ह्री २ लिखे। ये यत्र रचना हुइ। यन्त्र न० १२ देखे।

विधि.—इस यत्र को केशर, गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर (सराव सपुट के अन्दर डालकर स्थापना करे तो अच्छा बशीकरण होता है।

यन्त्र न० ७
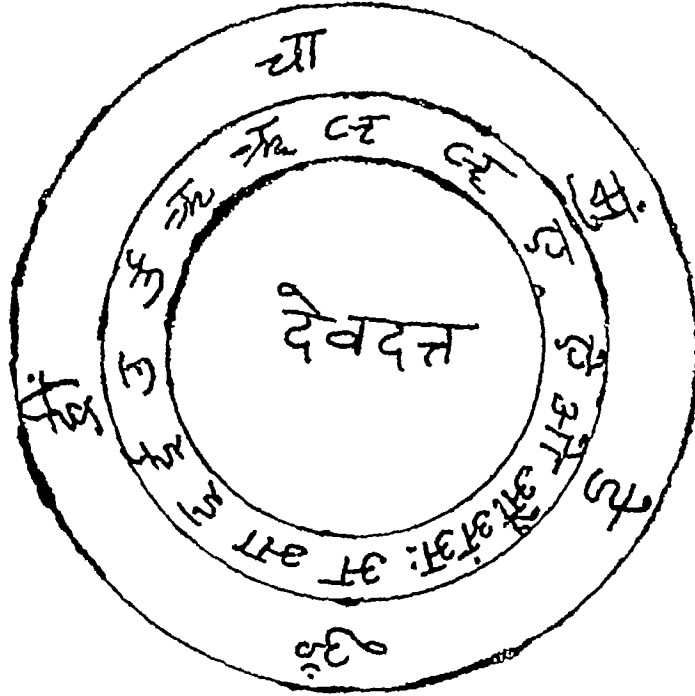
यन्त्र न० ८
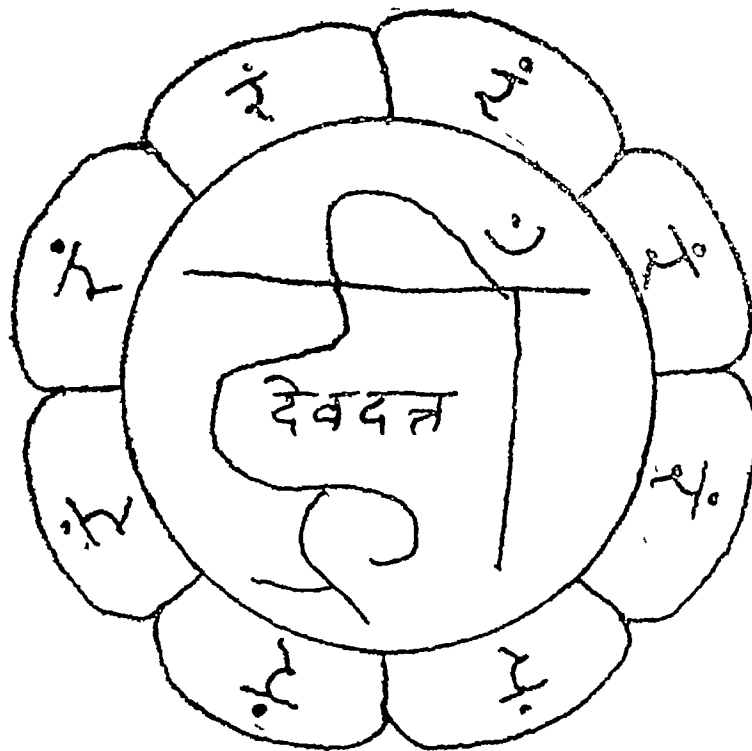
यन्त्र नं० ९

यन्त्र नं० १०
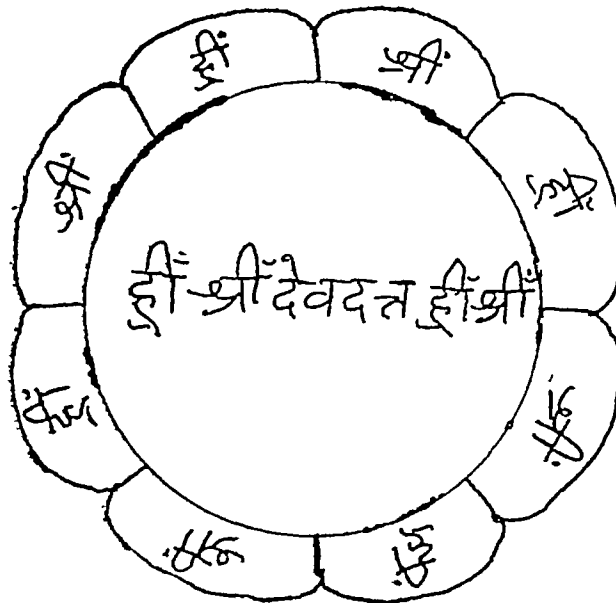
यन्त्र न० ११
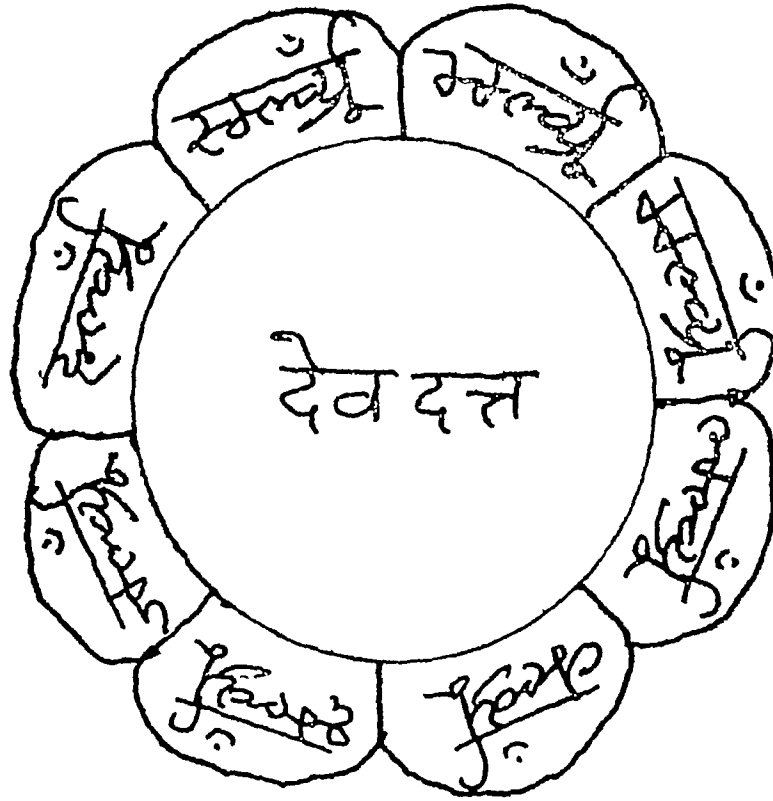
यन्त्र नं० १२

(१३) ह्री देवदत्त श्री लिखे, वाहर चार दल का कमल खीचे, उम कमल कर्णिका मे ह्री कार की क्रमश: स्थापना करे। यन्त्र न० १३ देखे।

विधि:—इस यन्त्र को केशर गोरोचनादि से भोज पत्र पर लिखे, यन्त्र को वस्त्र मे लपेट कर, गले मे अथवा हाथ मे धारण करने से, आयु की वृद्धि होतो है। अपमृत्यु नही होती है। भूत पिशाच, ज्वर स्कध, अपस्मार ग्रह, से पीडित रोगी को तत्क्षण ही छुटकारा मिल जाता है। रोगी अच्छा हो जाता है।

(१४) देवदत्त, लिख कर षट् कोणाकार बनावे षट् कोण के कर्णिका मे क्रमश ह्रू, ॐ, ॐ ह्रू, ह्रू ह्रू ह्रू लिखे, वाहर ह्रा ह्री स्वाहा लिखे, ऊपर एक वलयाकार वनावे उस वलयाकार मे ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र यक्ष। ह्री कार का तीन घेरा लगावे। ये वना। य त्र न० १४ देखे।

विधि —इस यन्त्र को नागर वेल के पत्ते पर, नागर बेल के पत्ते के रस से लिखे। उस पत्ते को रोगी को खिलाने से वेला ज्वर का नाश होता है। उस पत्ते रस को उपरोक्त मत्र से ७ वार म त्रित करे।

(१५) अथवा ह्रा, ह्री ॐ के वीच मे देवदत्त लिखे, ऊपर से ह्री कार को वेष्टित कर दे। यत्र नं० १५ देखे।

विधि —इस यन्त्र को गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर, गले मे या हाथ मे वाधने से चौर भय कभी नही होगा। ये अमोध विद्या है।

(१६) ह्री स्त्र देवदत्त ह्री स्त्रं, लिखे, ऊपर चतुर्थ दल कमल वनावे। उस कमल की पाखुडो मे क्रमश· ॐ ह्रा ह्री, स्त्र, लिख दे। यह यत्र रचना हुई। य त्र न १६ देखे।

विधि:—इस यंत्र को गौरोचन ओर अपनी अनामिका अ गुली के खून से, भोज पत्र पर लिख कर एरड की नली मे डाले तो, राज मन्त्री आदि के वश मे होते है।

मन्त्र:—ह्री द्र नय र, नृप (राजा को शोभित करता है।)

(१७) य कार मे देवदत्त लिख कर, उपर एक वलय वनावे, उस वलय मे ॐ २ लिखे, उपर अष्ट दल का कमल वनावे, उन आठो ही दलो मे ह्री कार आठ लिखे, उपर से ह्री कार का त्रिधा घेरा वनावे। य त्र रचना हुई। य त्र न० १७ देखे।

विधि —इस य त्र को केशर, गौरोचनादि शुभ द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे, कमल के धागे से यन्त्र को वेष्टित कर के, लाल कनेर के फूलो से १०८ वार जाप करने से, राजा पुरुष

आदि को भी शोभित करता है। नामाक्षर को नित्य ही जपे। नृप को, नगर को, गांव को शोभित करता है।

यन्त्र नं० १३
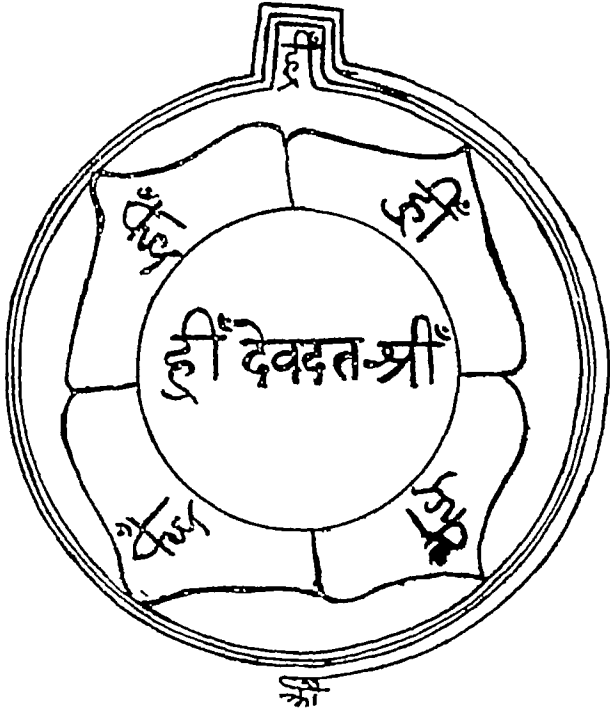
यन्त्र नं० १४
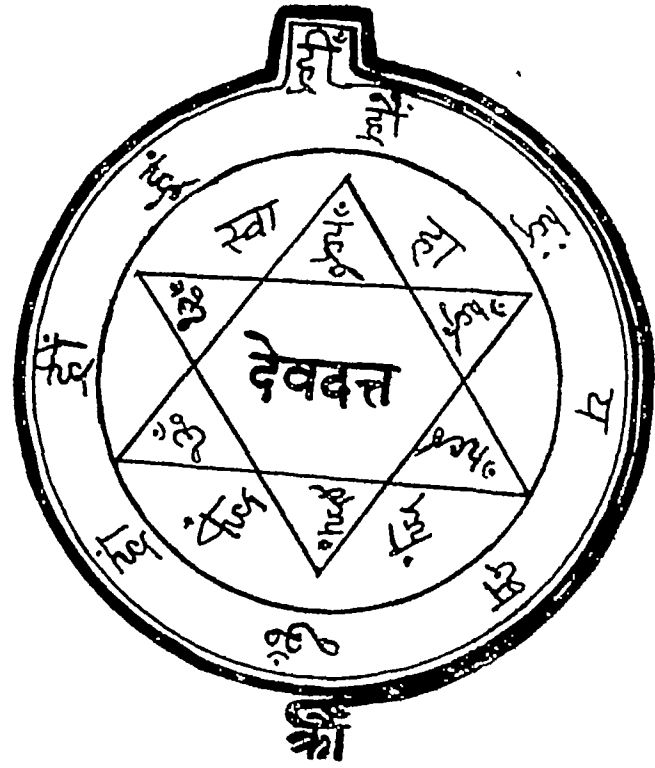
यन्त्र नं० १५
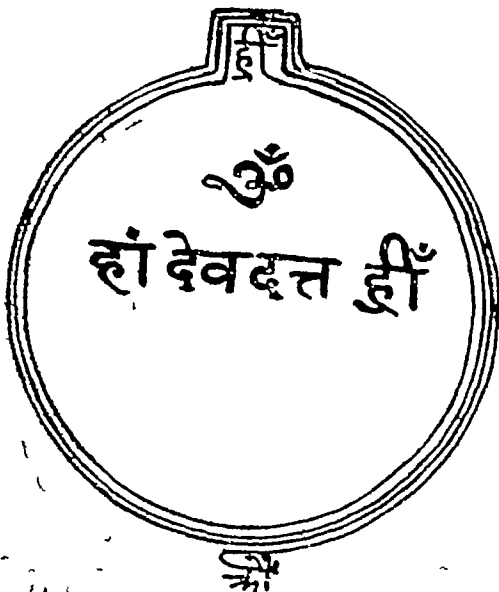
यन्त्र नं० १६
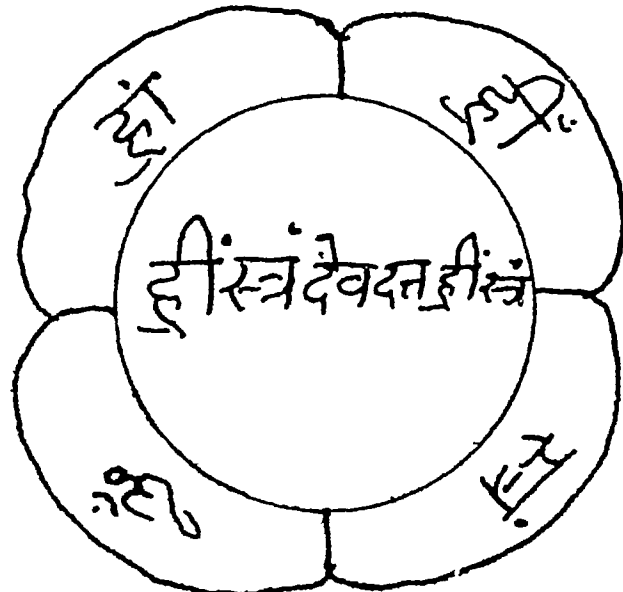
यन्त्र न० १७

(१८) य कार मे देवदत्त गर्भित करके, ऊपर षट कोणोकार वनावे, उस षट् कोण की कर्णिका मे र र लिखे। उपर अग्नि मडल वनावे। यत्र न १८ देखे।

विधि इस य त्र को श्मशान के कोयले से, कौआ के पख से कफन के टुकडे पर लिखे फिर श्मशान मे गाड देवे तो उच्चाटन होता है। य त्र गाडने के समय मंत्र को सात वार जपना चाहिये।

(१६) ह्री कार मे देवदत्त लिखे, ऊपर एक वलाया कार वनावे, उस वलय मे क्रमशः ॐ ह्रा ह्री ह्र ह्रौ फट् व देवदत्त लिखे, फिर एक वलय और वनावे, उस वलय को 'ठ' कार से वेष्टित करे, फिर आठ दल का कमल वनावे, उस कमल में ल री र रो रों रै रः यह य त्र रचना हुई। यन्त्र न० १६ देखे।

विधि —*इस यन्त्र को कौआ के रक्त से शत्रु के नाम सहित लिखे तो शत्रु को ज्वर पकड लेता है।*

(२०) य कार में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर षट् कोण वनावे, प्रत्येक षट्कोण की कर्णिका मे य २ लिखें। यह प्रथम य त्र रचना हुई। यन्त्र न० २० देखें।

विधि .—इस य त्र को विष, श्मसान का कोयला, और शत्रु के पाँव के नीचे की धूल, इस सव चीजो से भोज पत्र पर शत्रु के नाम सहित लिखे तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

(२१) यं कार मे देवदत्त लिख कर ऊपर षट् कोण बनावे, उन षट् कोण के कर्णिका मे यं २ लिखे. ऊपर एक वलय बनावे। उस वलय में ॐकार लिखे, फिर बाहर चार यः कार से वेष्टित कराये। यह हुई यंत्र रचना। यन्त्र नं० २१ देखे।

विधि·—इस यत्र को विष कनक फल के रस से ध्वजा के कपडे पर लिख कर, श्मसान मे गाड़ देवे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

(२२) क्म्ल्व्यूं पीडाक्षर मे देवदत्त, गर्भित करे ऊपर चतुर्थ दल का कमल बनावे, उन दलो मे य २ लिखे। ये हुई यत्राकार की रचना। यन्त्र न० २२ देखे।

विधि.—इस यत्र को श्मशान के कोयले से नीम के पत्तो के रस से लिखे, कौवे के पख की कलम से ध्वजा के कपडे पर लिख कर, उस ध्वजा को बास मे लगा कर बाध देवे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

(२३) य कार मे देवदत्त नाम गर्भित करके, फिर ऊपर अग्नि मण्डल बनावे, उस अग्नि मडल के तीनो कोण मे र कार लिखे,। बाहर तीनो ही कोणो मे स्वस्तिक लिखे ३। यन्त्र नं० २२ देखे।

विधि:—इस यन्त्र को विभितक के (हर्रें के) रस से लिख कर गधे के मूत्र मे क्षेपण करे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

यन्त्र न० १८
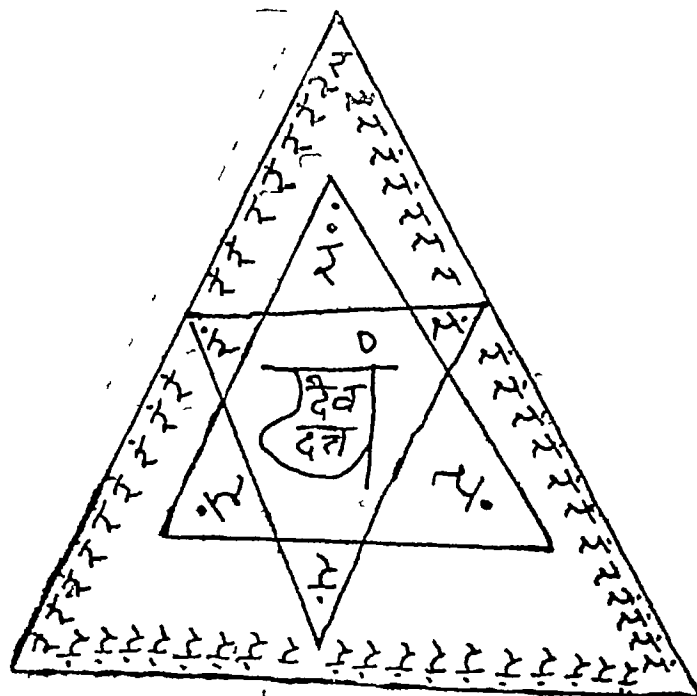
यन्त्र न० १९
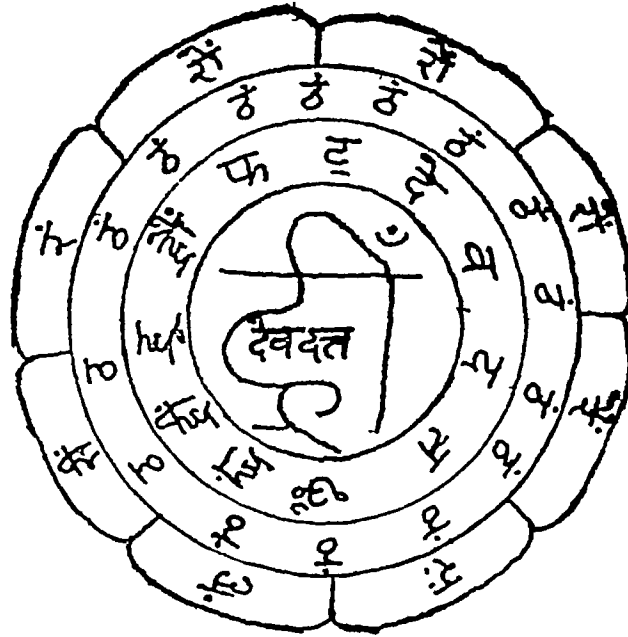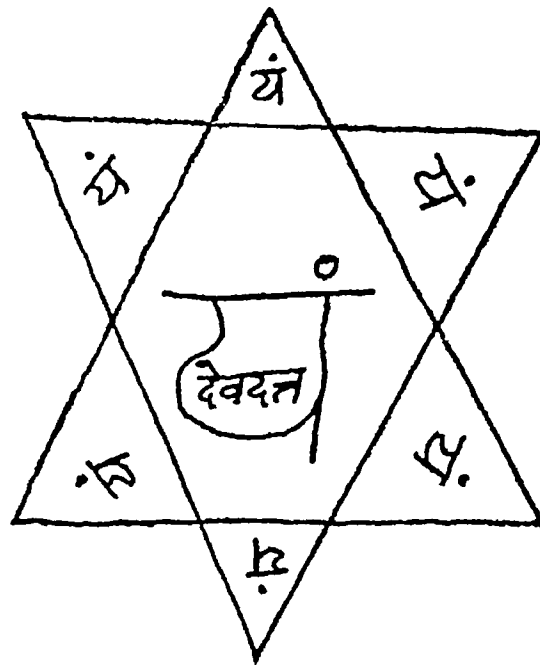
यन्त्र न० २०

यन्त्र नं० २१
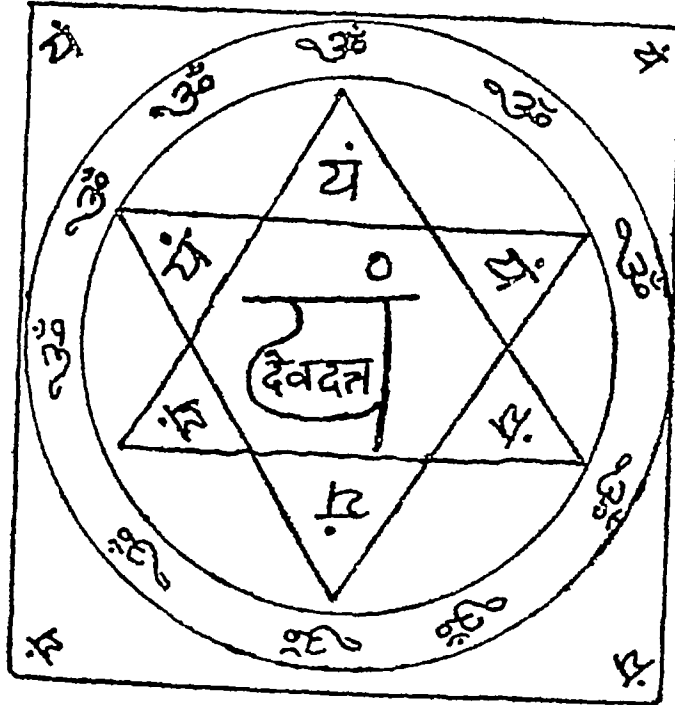
यन्त्र नं० २२
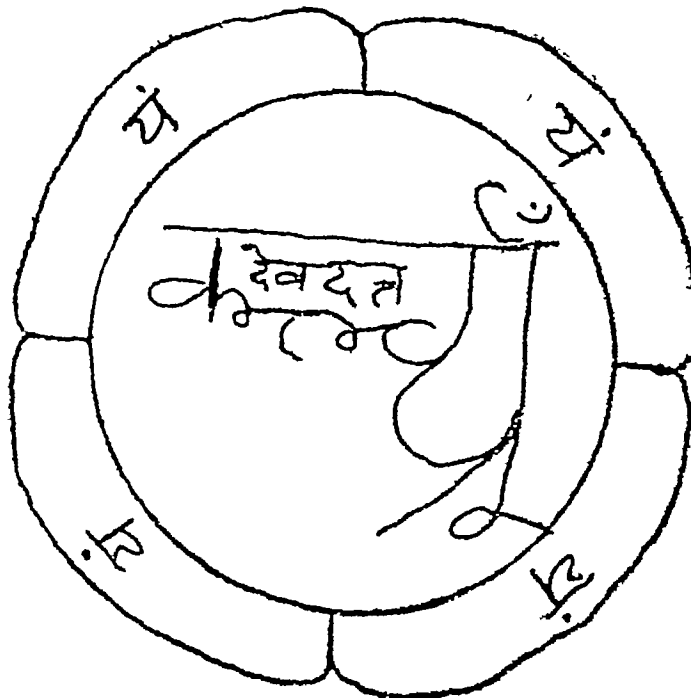
यन्त्र न० २३
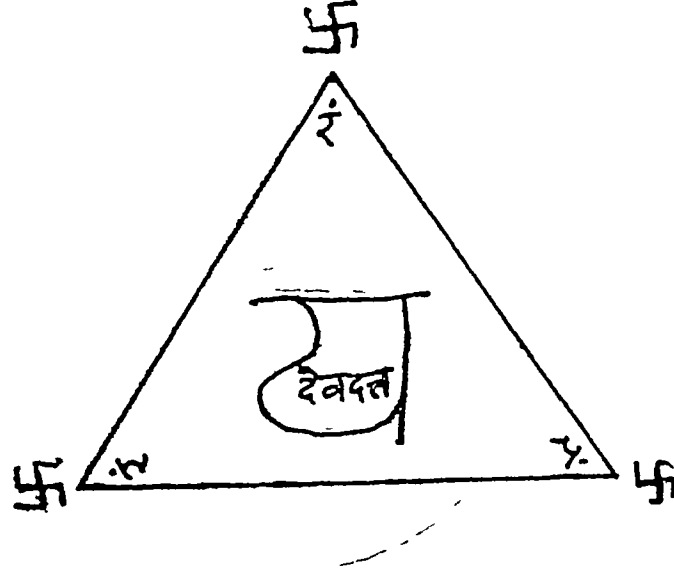
(२४) देवदत्त लिख कर ह्रीं कार को त्रिधा वेष्टय। ये यन्त्र हुआ। यन्त्र न० २४ देखे।

विधि .—इस यन्त्र को ताल पत्र के रस से, ताल पत्र के काटे की कलम से लिख कर घडे में डाले। उस घडे का मु ह कपडे से ढक देवे तो उच्चाटन होता है।

(२५) ह्री कार मे देवदत्त लिख कर, ऊपर चार दल का कमल बनावे, उन चारो ही दलो मे ह्री, की स्थापना करे। यह हुआ यन्त्र का स्वरूप। यन्त्र न० २५ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को केशर गौरोचन से भोजपत्र पर लिख कर हाथ मे धारण करने से, ग्रह भूत, पिशाच, डाकिनी, प्रभृतिना की पीडा नही होती है।

(२६) ह्री कार मे देवदत्त लिखे, ऊपर गोलाकार बनावे, उस गोला कार के उपर आठ वज्र का चिन्ह बनावे ऊपर ल् कार वौपट् मध्य मे प्रत्येक मे ह्री कार लिखे। ये यंत्र रचना हुई। यन्त्र न ० २६ देखे।

विधि —इस यन्त्र को केशर, गोरोचन से, भोजपत्र पर लिखे और भुजा मे धारण करे तो भूत प्रेत पिशाच डाकिनी आदिक के द्वारा पीडित व्यक्ति की, पीडा नष्ट हो जाती है। सिद्धोप देश है। यानी प्रसिद्ध पुरुषो ने ऐसा कहा है।

यन्त्र नं० २४

यन्त्र नं० २७

यन्त्र नं० २६
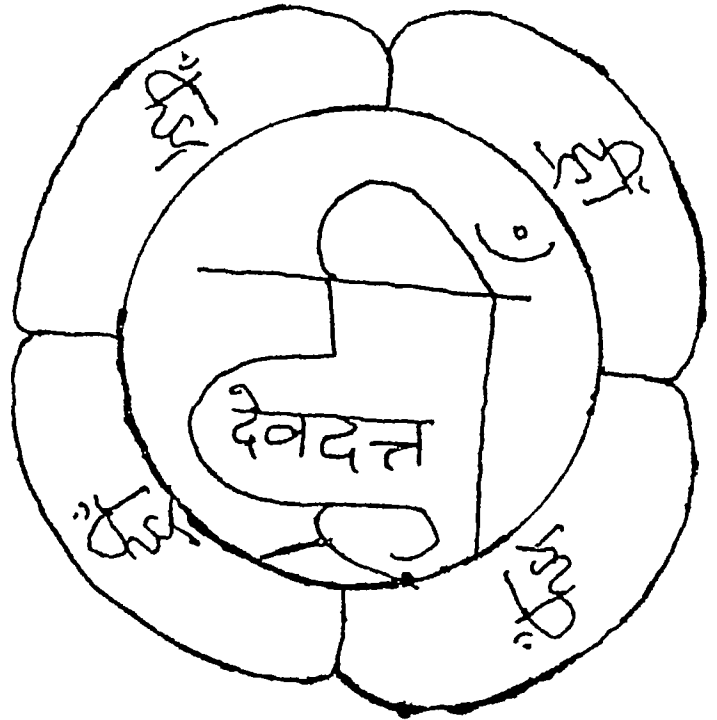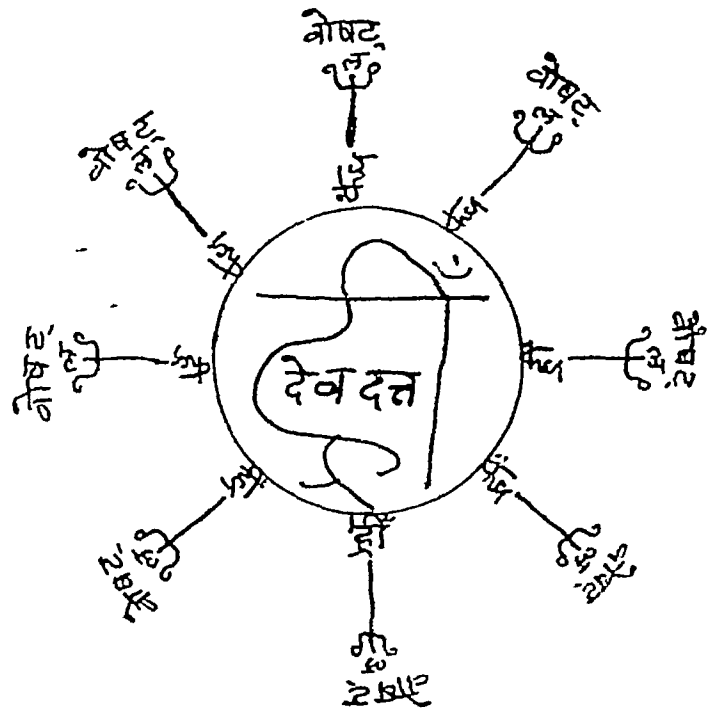
(२७) वालु की प्रसिमा वना कर उस प्रतिमां मे ह्री कार देवदत्त सहित लिखे। माया ह्रीं) वीज से त्रिघा वेष्टित करे। यहा विशेष कुछ समझ में नही आया है। अतः मंत्र शास्त्र के ज्ञाता विशेष समजे। यन्त्र न० २७ देखो।

"इदानी प्रहरणमेकप्रकार सप्रपचमाह ।'
कूजत्कोदडकाडो, डमरूविधुरित क्रूरघोरोसपर्गा ।।
दिव्य वज्रातपत्र, प्रगुणमणिरर्णत्क किणीक्वाणरम्य ।।
भास्वद्वैडूर्यदड, मदन विजयिनो, विभ्रती पार्श्वभर्त्तु ।।
सा देवो पद्महस्ता, विघटयनु महा, डामर मामकीनम् ।। ३ ।।

व्याख्या —विघटयतु विनाशयतु कासौ कत्रीदेवी पद्मावती किम् तत्कर्मता पन्न महाडामर महा विघ्न कथभूत मामकीन मदीय। कीदृशो देवी पद्महस्ता पद्मकरा कि कुर्वती बिभ्रती धारयती कि कर्मतापन्नम् वज्रातपत्र, व्रज्र च आतपत्र च वज्रातपत्र कस्य पार्श्वभर्तु. पार्श्वाभिधानयक्षस्य पुनरपि कि कर्मतापन्न 'कूजत्कोदडकडो डमरूविधुरित क्रूरघोरो-पसर्गा कोदडश्च काडश्च कोदडकाडौ कूजतौ, कोदडकाडौ कूजत्कोदडकाडौ तयोरु डमर कूजत्कोदड काडोडमर क्रूरश्च घोरश्च क्रूरघोरौ, क्रूरघोरौ उपसर्गो यस्यासौ क्रूरघोरोपसर्गा कूजत्को दड काडो डमरेण, विधुरित क्रूर-घोरौ–तत् क्रूर घोरोपसर्गाः गदाधनुर्वाणोडमरुविधुरित दुष्टरौद्रविघ्न न केवल बिभ्राणा कि तत् वज्रातपत्र दिव्य प्रधान तथा बिभ्राणा कि तत्–भास्वद्वैडूर्य दड, भास्वान प्रभा पुज सहितो वेडूर्य दडो येनासौ भास्व द्वैडूर्य दड त भास्वद्वैडूर्य दड देदीप्यमान रत्न विशेपम् तेल्लगुड कीदृश प्रगुणमणिरणत्किकिणी क्वाणरम्य । प्रगुणश्च ते मणयश्च, प्रगुण–मणय रणतश्च ता किकिण्यश्च रणत्किकिण्य प्रगुणमणि–रणत्किकिणी नाम् क्वाण प्रगुण मणि रणत्किकिणी क्वाण तेन रम्य, प्रगुन मणिरणत्कि किणी क्वाण रम्य। विशिष्टरत्ननिर्मितक्षुद्रघण्टि कारावरमणीय। कीदृशस्य पार्श्वभर्तु मदन विजयिन कामजयिन भावनाह। एना विद्यामार्ग भरे ७ सप्तवारान् अभिमत्र्याये धनुरा लिखेत्—चोरभय न भवति।

ॐ मदनविजयिनो विभ्रती पार्श्वभर्तु सा देवी पद्म हस्ता विघटयतु महाडामर मामकीन। भृङ्गी काली कराली, परिजन सहिते, चडि चामुण्डिनित्ये । क्षा क्षी क्षौ क्ष क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे ह्री महामत्रवश्ये ।। १ ।।

।। नमो धरणेद्राय खगविद्याधराय चल २ खड्ग गृण्ह २ स्वाहा ।। १ ।। अष्टोत्तर-सहस्रकरजापो मुख्यानि। वादिन भय सिद्धि ।

खड्गस्तभन मंत्र:—ॐ नमो कुबेर, अमुक चोर गृण्ह २–स्थापित दर्शय आगच्छ स्वाहा ।। १ ।।

भस्मना कटोरक पूरयित्वा पूजयेत्–चौर गृण्हापयति पूर्व सेवा दशलक्षाणि जपेत् तत सिद्धो भवति ।। ३ ।।

श्लोक ३

काव्य नं० ३ के यंत्र मन्त्र

मंत्र :—ॐ मदनवि यिनो त्रिभ्रतीपार्श्वभर्तुः सादेवी पद्महस्ता विघटतु महाडामरं मायकोनं, भृंगी काली कराली परिजन सहिते चंडि चांमुडि नित्ये, क्षां क्षीं क्षौं क्षः क्षणार्ध क्षतरिपुनिवहे ह्रीं महामंत्र वश्ये।

विधि —इस मत्र को सात वार पढकर, मार्ग मे धनुषाकार वना देवे, तो चौर भय नही होता है।

मंत्र :—ॐ नमोधरणेंद्राय खड्ग विद्याधराय चल २ खड्गं गृण्ह २ स्वाहा।

विधि – इस मत्र का १००८ वार जप करने से वादिओ को भय होता है।

खड्ग स्तंभनमंत्र :—ॐ नमो कुबेर .... अमुक चोरं गृण्ह २ स्थापितंदर्शय आगच्छ २ स्वाहा।

विधि —भस्म से कटोरा भरकर पूजा करे। चौर को पकडेगा। पहले मत्र का दस हजार जप करे तव मत्र सिद्ध हो जायगा।

"इदानी अनेक प्रकार शास्त्रं प्रतिपाद्य अधुना देवकुलरक्षा स्तभन, मोहन, उच्चारण, विद्वेपण, वशीकरण, भूत शाकिनी देवीनां अभिधानानि मत्राणि विद्याश्च सप्रपचमाह।"

भृगी काली कराली, परिजन सहिते, चडि चामुंडि नित्ये।
क्षाँ क्षी क्षू क्षो क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे, ह्री महामंत्रवश्ये।
ॐ ह्रा ह्री भ्रा भ्री भ्रू भ्रू भग संग, भ्रकुटि पुटतटः, त्रासितोद्दा। सदैत्ये।
स्त्रा स्त्री स्त्रू स्त्रौ (झ्रा झ्री झ्रू झ्रः) प्रचडे, स्तुति शतमुखरे, रक्ष। मां देविपद्मे ॥ ४ ॥

व्याख्या —रक्ष पालय हे देवी, पद्मे, पद्मावति। क मां स्तुतिकर्तारम्कीदृशी स्तुति शतमुखरे, स्तुतय श्री पार्श्वनाथ सत्रधिन्यस्तासा शतानि तै. मुखराः वाचाला तस्या. सबोधनं, स्तुतिशत मुखरे कीदृशे। भृगी, काली, कराली, परिजन सहिते, भृगी च काली च कराली च, भृगी काली कराली एवं परिजन परिवार तेन सहिते। संयुक्ते। पुन. कीदृशे। च डि चामु डि नित्ये। चांडिश्च चामु डिश्च, च डिचामु डि च डिचामुडिम्या

नित्ये युक्ते--च डिचामु डिनित्ये, लोक प्रतीते । क्षा च क्षी च क्षू च क्षो च, क्षा क्षी क्षू क्षो एतैरक्षरै क्षणस्यार्ध, क्षणार्ध तेन क्षणार्धेन क्षता हताः रिपूणा निवह. समूहा यया सा तस्या संवोधन क्षा क्षी क्षू क्षो क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे। पुन कीदृशे, ह्री महामत्र वश्ये । ह्री लक्षणो यो महामन्त्रस्तस्माद्वश्या, ह्री महामत्र वश्या तस्या सवोधन ह्री—महामत्रवश्ये । नरनारीप्रभृतय. । पुनरपिकीदृशे। ॐ ह्रा ह्री भ्रू भग ॐ ह्रा ह्री भ्रू भ्रूभगस्य सग ॐ ह्रा ह्री भ्रू भ्रू भग सग भृकुटिपुटतट । तेन भासिता उद्दामो दैत्या. यया सा। ॐ ह्रा ह्री भ्रू भ्रू भगसग भृकुटिपुटतट त्रासित्तोद्दामदैत्या । तस्या सबोधनं ।

ॐ ह्रा ह्री भ्रू भ्रू भग द्दामदैत्ये। विकटकटाक्षोच्चाटयेत्। दुष्टासुरे।

पुनरपि कीदृशे—स्त्रा स्त्री स्त्रू स्त्रौ प्रचड स्त्रा च स्त्री च स्त्रू च स्त्रौ च एतै प्रचंडा सा तथोक्ता तस्या सबोधन, स्त्रा स्त्री स्त्रू स्त्रौ प्रचडे समर्थेत्यर्थ अस्य भावतामाह। इदानी ॥ देव ग्रह यत्र मत्र ॥ क्म्ल्व्र्यू—ह्ल्व्र्यू—म्ल्व्र्यू । एतत् हि अष्टदलेषु सर्वाणि पिंडाक्षराणि सलिख्य वहिरष्टदलेषु ॐ भृगी नमः ॐ काली नम ॐ कराली नमः ॐ चड़ी नमः ॐ जभायै नम ॐ चामु डायै नमः ॐ अजितायै नम ॐ मोहायै नम । वाह्ये मायावीजम् त्रिधावेष्टय। पृथ्वी मडल चतुष्कोणेषु क्षिकारवज्राकित एतत् क्रमेण चक्र कु कुम—गारोचनया कूर्पूरादि सुगन्ध द्रव्यै मूर्जपत्रे सलिख्य कुमारी सूत्रेण वेष्ट्यम् वाहौ धारणीय सर्वभयरक्षा भवति। अथवा। एतद्यंत्र श्रीखड—कर्पूरादिना सलिख्य श्वेत—पुष्पै रष्टोत्तर शतै पूजयेत्। षण्मास यावद् लक्ष्मी सौभाग्य सर्व कार्यं सिध्यति।

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व लोकाभ्युदयकारिणी भृंगीदेवी सर्वसिद्धि विद्यावुधायिनी, कालिका सर्वविद्या, मंत्र, यंत्र, मुद्रा स्फोटना कराली, परद्रव्य योगचूर्ण रक्षणा जभापरं मौन्य मर्दिनी,नमो दानदरोग नाशिनी सकलत्रिभुवनानद कारिणी,भृंगी देवी सर्व सिद्ध विद्या वुधाइणी महामोहिनी, त्रैलोक्य संहारकारिणी चामुंडा। ॐ नमो भगवति पद्मावती सर्वग्रह निवारय फट् २ कंप २ शीघ्र चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय २ सर्वांग चालय २ लोलय २ धनु २ कंपय २ कंपावय २ सर्व दुष्टान विनाशय। जये विजये। अजिते। अपराजिते। जंभे। मोहे। अजिते। ह्री २ हन २ दह२ पच २ धम२ चल २ चालय२ आकर्षय २ आकंपय २ विकपय २ क्ष्म्ल्व्र्यू क्षा क्षी क्षू क्षौ क्ष फट्२ निग्रहं ताडय२ व्म्ल्व्र्यू स्त्रा स्त्री ह्रू क्रौ क्ष २ हं २ स २ ध २ स २ म्म्ल्व्र्यू ह्र २ घर २ ॐ ह्रा ह्री भ्रू

भ्रू भग सग—भृकुटि द्दामदैत्ये । स्त्रा स्त्री स्त्रू स्त्रौ प्रचड़े । स्तुतिशत-

मुखरे। रक्ष मां देवि पद्मे। पर २ कर २ ॐ फट् शंखमुद्रया मारय २ गाह्य २ क्ष्म्ल्व्र्यूं हर २ स्तुतिका मुद्रा ताडय २ र्म्ल्व्र्यूं रपरा प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धूमाधकारिणी रा २ प्रा२ क्ली २ ह्. व नद्यावर्तु मुद्रया त्रासय २ म्म्ल्व्र्यूं खचक्रमुद्रया छिंद २ म्म्ल्व्र्यूं ग त्रिशूल मुद्रया छेदय २ पर मंत्र भेदय २ घ्म्ल्व्र्यूं धम २ वधय २ मोचय २ हल–मुद्रया द्रावय २ व २ यं २ कुरू २ क्म्ल्व्र्यूं २ प्रा प्रू प्रौ प्र समुद्रे मज्झ २ व्म्ल्व्र्यूं छ्रा छ्री छ्रौ छ्रः मंत्राणि छेदय २ परसैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षा क्षः त्रकुत्र फट् २ परसैन्यम् –विध्वंसय २ मारय २ दारय २ विदारय २ गति स्तभय २ म्म्ल्व्र्यूं भ्रा भ्री भ्रू भ्रौ भ्र श्रावय २ रम्ल्व्र्यूं यः प्रेपय २ पछेदय २ विद्वेपय २ स्म्ल्व्र्यूं स्रा स्री स्रावय २ मम रक्षा रक्ष २ पर मत्र क्षोभ २ छेद २ छेदय २ भेद २ भेदय २ सर्वजभ स्फोटय २ भ २ म्म्ल्व्र्यूं म्रा म्री म्रू म्रौ म्र जामय २ स्तंभय २ दु.खय २ रवाय २ र्म्ल्व्र्यूं व्रा व्री व्रू व्रौ व्र हा ग्रीवा भाजय २ मोहय २ त्म्ल्व्र्यूं त्रा त्री त्रू त्रौ त्र.–त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ स २ सर्वदिशि बधय २ सर्व–विघ्न छेदय २ निकृंतय २ सर्वदुष्टान् ग्राह्य २ सर्वयत्रान् स्फोटय् २ सर्व शृंखलान् त्रोट्य २ मोटय २ सर्व दुष्टान् आकर्षय हम्ल्व्र्यूं ह्रा ह्री ह्रूं ह्रौं ह्र. शातिम् कुरू कुरु–तुष्टि कुरू २ स्वस्ति कुरू २ ॐ क्रौं ह्री ह्रौ पद्मावती आगच्छ २ सर्व भय मम रक्ष सर्व सिद्धि कुरू २ सर्व रोग नाशय २ किन्नर कि पुरूप गरूड गधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच वैताल रेवती दुर्गा च डी—कुष्माडिणी वाध सरय २ सर्व शाकिनी मर्दय सयोगिनी गण चूरय २ नृत्य २ गाय २ कल २ किली २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ घुलु २ कुल २ पुरू २—अस्माकं वरदे पद्मावती हन २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिंद २ ह्री क्ली –

ह्रां ह्री स्त्रूं द्रू भ्रू प्रूं ॐ ग्नी प्ली स्त्रां श्री वा म्री ह्री २ पां २ प्री २ ह्रां २ पद्मावती धरणेंद्र प्रासादयति स्वाहा। एप मत्र पठित सिद्ध. निरतर स्मर्यमाणेन सूत ग्रह ब्रह्मराक्षप वेताल प्रभृति–शाकिनी ज्वर रोग चोरारिमारि–निग्रहव्याल सर्प वृश्चिक मूपक लूत पातक च शिररोगो नाशयति।

ॐ भृंगो रेटी किरेटी जंभय २ क्ली पय २ घृत ट कं स्वाहा ।। १ ।।

ॐ चंडाली अमुकस्य रूधिर पितर २ सुहृदये भित्वा हिलि २ चंडालिनी, मातंगिनी स्वाहा ।। २ ।।

ॐ नमो भगवती काली महाकाली रुद्राकाली नमोस्तुते हन २ दह २ छिंद २ छेदय २ भिंद २ त्रिशूलेन ह २ स्वाहा ।। ३ ।। विद्यात्रयं सप्त वारानाभिमंत्र्य तद्दीयेत शूल नाशयति ।।

ॐ नमो भगवती कराली महाकराली, ॐ महामोह संमोहनीयं महाविद्ये। जंभय २ स्तंभय २ मोहय २ मुच्चय २ क्लेदय २ आकर्पय २ पाताय २ कुनरे संमोहिनी। ऐं द्री त्रीं ट्रीं

आगच्छ कराली स्वाहा ।।१।। एषा विद्या निरतर द्वादश सहस्त्राणि(१२०००) कर जापे सिद्ध' भवति । मोहनी विद्या ।।

ॐ क्रौ ह्री अजिताए आगच्छ ह्री स्वाहा । ॐ नमो जृंभे मोहे स्तभे । स्तभिनी स्वाहा । ॐ नमो भगवती गगा देवी कालिका देवो आह्वानन' । ॐ महामोहे स्वाहा ।

ॐ नमो च डिकायै योगवाहि प्रवर्तय महा मोहय योगमुखी योगीश्वरी महामाये । रूपिणी महा हरिहर भूतप्रिये । स्व स्वार्थ नृणातिखय जिह्वाग्ने सर्वलोकाना एष्य पुसरू २ दर्शय २ साधय स्वाहा ।। २ ।।

हस्ताकर्षणी नदी द्रह तडागे वा आकाशे चंद्रमडले वा खड्गे दीपशिखाया या अगुष्ठे, दर्पणे तथा । स्वप्ने, खड्गे तथा देवी अवतोर्य शुभाशुभ । एषा आकर्षणीविद्या ।। २ ।।

ॐ नमो च डिकायै योग वाहि २ इय वा । ॐ नमो चडि वज्रपाणये महायक्ष सेनाना गाधिपतये वज्रको वा दौष्ट्रोत्कट भैरवा एतद्यथा ।

ॐ नमो अमृतकु डली अमुक स्वाहि २ ज्वल २ कृद्म २ बध २ गज २ सर्व विघ्नौघ विनाशकाय महागणपति + + + अमुकस्य जीव हराय स्वाहा ।। २ ।।

शक्ते प्रेपण मत्र —ॐ नमो भगवति रक्त चामुडे मत्प्रजापाले कट २ आकर्षय २ ममोपरि चित भवेत फल पुष्प यस्य हस्ते ददामि स शीघ्रमागच्छतु स्वाहा ।। ४ ।। वश्याकर्पण वज्रपाणिमत्रेण विशेषण क्रियते । तस्य सहस्त्रजाप ।

कराभ्या शतपुष्पाणा सिद्धि भवति ।

प्रथम तावत् करन्यास. (हस्तन्यास)

ॐ ठ ठ कराभ्या शोधनीय, तर्जनागुल्निना, प्रत्येक सशोधन कार्य । तदनतर । क्षपादाभ्या स्वाहा । क्ष हृदये स्वाहा । क्षी शिरसि स्वाहा । क्षू ज्वलित शिखायै वौषट् । क्षां कवचाय वषट् । हु क्ष वाहुभ्या स्वाहा । क्षै स्कधाभ्या स्वाहा । क्षे नेत्राय वषट् । क्षौ कर्णाय वषट् । क्ष नेत्राय स्वाहा । क्ष अन्धाय स्वाहा । दश दिशाना रक्षा करोति ।

ॐ वाहुवलि लम्ब वाहु क्षा क्षी क्षू क्षौ क्षे क्षत्रुद्ध पुज कुरु २ शुभाशुभ कथय २ स्वाहा ।। १ ।।

एतन्मत्रेण कर जापेन दश सहस्त्राणि (१००००) सिद्धि र्भवति ।।

ॐ कट विकट कटे कटि धारिणो ठः ठः परि स्फुट वादिनी भज २ मोहय २ स्तंभय २ वादी मुख प्रति शल्य मुख कीलय २ पूरय २ भवेत् + + + अमुकस्य जयम् ।।२।। एष विद्या व्यवहार काले स्मर्यमाणा वादि मुख स्तभयति, विजय प्रयच्छति ।।२।। अवश्य प्लवा सदा कंट कारी वृक्षाणाँ अष्ट सहस्त्र (८०००) जपेतत. सिद्धो भवति । कटकारि महा विद्या ।

अधुना नामादिना मूर्ति मध्ये षट्सु दिक्षु क्रौ विदिक्षु च क्ली वहिर्बहि पुट कोष्ठेऽष्टौ जभे—मोहे समालिख्येत् । मोह पिशत दष्टाग्रा ब्रह्माकार मास्थितः । ॐ ब्लै धी त्रै वषट् फट् बाह्ये क्षिति मडल अष्टर्वालाछण च चड कोणेषु लकार मालिख्य, फलके भूर्य पत्रे वा लिखित्वा कु कुमादिभिर्पू जयेत् । य सदा यंत्र तस्य अवश्य जगत सर्व वश्य भवति ।।३।।

।।ॐ ह्री क्ली जभे मोहे + + + अमुक वश्य कुरु २ ते से षवद्वश्य यन्त्रम् ।। ॐ रम्ल्र्य्रूं र र व र स हा हा ॐ क्रौ क्षी क्ली ब्लू द्रा द्री पद्ममालिनी । ज्वल् २ हन २ दह २ पच २ इद २ भूर्य नि—र्दय २ धूम २ धूम्राधकारिणो । ज्वलनशिखे हु फट् २ य. त्रि मात्रा हतार्थान् हिना ज्वाला मालिनो आज्ञा पयति ।। स्वाहा ।। मत्रेण वेष्टयेत् त्रोटयत् इद पिड ललाटे व्याधि दग्निवण सिखागे भूत, ज्वर —ग्रह दोष शाकिनी प्रभृत नाशयति ।।४।।

ॐ नमो भगवते एषु पतये नमो नमोऽधिपतये नमो रुद्राय ध्वस २ खड्गरावण चल २ विहरनृपे २ स्फोट्य २ स्मशानभस्मनाचिता शरीर घटा कपाल माला धरा यथा व्याघ्र भ्रम परिधानाय शशाकित शेखराय कृष्ण सर्प यज्ञोपविताय चल २ चलाचल २ अनिवृत्तिक पिपीलिनी हन २ भूत प्रेत त्रासय २ ह्री मण्डल मध्ये कट २ वत्स कुशेममानमत्र प्रवेशय आवह प्रचंडधारासि देव रुद्रो आपेक्षय महारुद्रो आज्ञापयति ठ त्र स्वाहा ।। भूत मन्त्र ।। ४ ।।

।। ० ।।

श्लोक नं. ४ के यंत्र मंत्र

(१) देवदत्त लिखकर, प्रथम अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलो मे क्रमश- ह्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं ये पिडाक्षर लिखे, ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलो मे क्रमश ॐ भृगी नम, ॐ काली नम., ॐ कराली नम, ॐ चडी नमः, ॐ जभायै नम., ॐ चामु डायै नम., ॐ अजितायै नम, ॐ मोहायै नम । फिर ह्री कार के तीन घेरे से यन्त्र को वेष्टि करे ।

ऊपर से पृथवी मण्डल मे, क्षी कार वज्राकित वनावे। ये हुआ यन्त्र का स्वरूप। यन्त्र न० १।

यन्त्र न० १
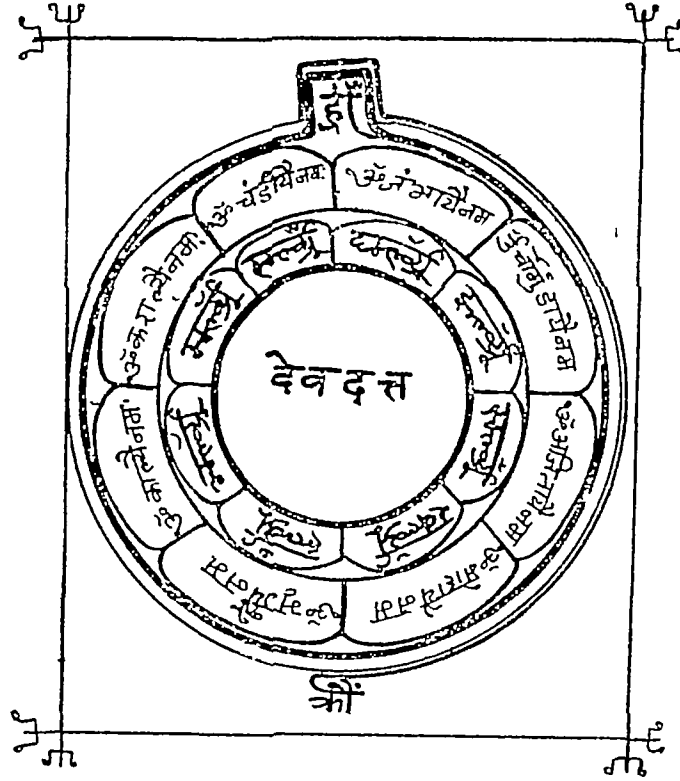
विधि —इस यन्त्र को केशर, गोरोचन, कर्पूरादि सुगन्धित द्रव्यो से भोज पत्र पर लिखे, फिर उस यन्त्र को कन्या कर्त्रित सूत्र से वेष्टित करके हाथ मे धारण करने से, सर्व भय की रक्षा होती है। अथवा इस यन्त्र को श्री खड कर्पूरादिक से लिख कर, सफेद फूलो से १०८ वार यन्त्र की पूजा, नित्य छह महीने तक करे, तो लक्ष्मी सौभाग्य को प्राप्ति, और सर्व कार्य की सिद्धि होती है।

माला मन्त्र

इस माला मन्त्र को पठित सिद्ध मन्त्र कहते है। इस मन्त्र को सिद्ध नही करना पड़ता है। नित्य ही पढने मात्र से सिद्ध हो जाता है। नित्य ही पाठ मात्र करने से भूत ग्रह ब्रह्म राक्षस वेताल प्रभृति-शाकिनी ज्वर रोग चोरारि मारि का निग्रह होता है। व्याल, सर्प, वृश्चिक, मूपक, लूत, पातक आदि शिरोरोग का नाश होता है।

मन्त्र —ॐ भृ गी रेटी किरेटी जभय २ क्लीं स्त्रा श्री वां म्री ह्री २ प्रा २ प्री २ ह्रा २ पद्मावती धरणेन्द्र प्रासादयति स्वाहा।

ॐ चंडाली अमुकस्य रुधिर पितर २ सु हृदये भित्वा हिलि २ चडालिनी मातंगिनी स्वाहा।

ॐ नमो भगवती काली महाकाली रूद्र काली नमोस्तुते हन २ दह २ छिद २ छेदय २ भिद २ त्रिशूलेन ह २ स्वाहा।

विधि :—इन तीनो ही मन्त्रो को सात बार पढ कर पानी पिलावे तो शूल का नाश होता है।

मन्त्र —ॐ नमो भगवती कराली महाकराली, ॐ महा मोह समोहनीय महा विद्ये जभय २ स्तभय २ मोहय २ मुच्चय २ क्लेदय २ आकर्षय २ पातय २ कुनरे समोहिनी ऐं द्री त्री ट्रौ आगच्छ कराली स्वाहा।

विधि .—इस मन्त्र का बारह हजार जप करने से ये मन्त्र सिद्ध होता है ये मोहनी विद्या है।

मन्त्र :—ॐ क्रौ ह्रीं अजिताए आगच्छ ह्रीं स्वाहा। ॐ नमो जृभे, मोहे, स्तभे स्तभिनी स्वाहा। ॐ नमो गगादेवी कालिका देवी आह्वानन.। ॐ महा मोहे स्वाहा।
ॐ नमो चडिकायै योग वाहि प्रवर्तय महा मोहय योग मुखी योगीश्वरी महा मायै रूपिणी महा हरी हर भूति प्रिये स्व स्वार्थ नृणातिशय जिह्वाग्ने सर्व लोकाना एष्य पुसरू २ दर्शय साधय स्वाहा। हस्ताकर्षणी नदी द्रह तडागे वा आकाशे चद्र मडलेवा खड्गे, दीप सीखाया या अँगुष्ठे, दर्पणे तथा स्वपने, खड्गे तथा देवी अवतीर्य शुभा शुभं। (ये आकर्षणी विद्या है।)

मन्त्र :—ॐ नमो चंडिकाये योग वाहि २ इयं वा, ॐ नमो चडि वज्र पाणये महायक्ष से नागाधिपतये वज्र कोवा दौंष्ट्रोत्कट भैरवा एतद्यथा।

ॐ नमो अमृत कु डली अमुक खाहि २ ज्वल २ कृदम २ बध २ गज २ सर्व विघ्नौघ विनाशकाय महा गणपति + + + अमुकस्य जीव हराय स्वाहा।

शक्ति. प्रेषण मन्त्र --ॐ नमो भगवति. रक्त चामुंडे मत्प्रजा पाले कट २ आकर्पय २ ममोपरि चित्तं भवेत् फल, पुष्पं, यस्य हस्ते ददामि स शीघ्र मागच्छ तु स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र को १००० जाप कर, फिर १०० पुष्पो से जप कर फल अथवा पुष्प को मन्त्रीत करे। फिर जिसको दिया जाय वह शीघ्र ही वश्य होता है।

करन्यास मन्त्र ॐ ठ. ठः कराभ्या शोधनीयम् तर्जनागुलिना प्रत्येक संशोधनं कार्यं। तदनतर। क्ष पादाभ्या स्वाहा। क्षं हृदये स्वाहा। क्षीं शिरसि स्वाहा। क्षूं ज्वलित शिखायै वौषट्। क्षा कवचाय वषट्। हुं क्ष बाहुभ्यां स्वाहा। क्षैं स्कधभ्यां

स्वाहा। क्षे नेत्राय व षट् क्षौ कर्णाय वषट् क्ष नेत्राय स्वाहा। क्षः ग्रन्धाय स्वाहा। दशो दिशाग्रो से रक्षा करता है।

मन्त्र :— ॐ ह्री वाहुवली लम्व वाहु क्षा क्षी क्षू क्षे क्षौ क्षत्रुर्द्ध पुजा कुरु २ शुभा शुभ कथय स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जाप करने से सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ कट विकट कटे कटिधारिणी ठः ठ परि स्फुट वादिनी भज २ मोहय २ स्तभय २ वादी मुख प्रति शल्य मुख कीलय २ पूरय २ भवेत् + + + अमुकस्य जय ।

विधि :— इस विद्या को कार्य पर जप करने से वादि का मुख स्तंभित होता है। और विजय प्राप्त होती है।

काँटे वाले वृक्ष के नीचे इस मन्त्र को ८००० जपने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। इसको कटकारि महा विद्या कहते है।

(२) देवदत्त की, मूर्ति का आकार बनावे, फिर छह दिशाओ मे क्रौ लिखे, विदिशाओ मे क्ली लिखे, फिर ऊपर आठ कोठो मे क्रमश. जृ भे, मोहे, ग्रादि लिखे, (मोह पिशत दष्टाग्रा ब्रह्मा कार मास्थित । ॐ ब्लें धी त्रै वषट् फट् वाह्ये क्षिति मडल अष्टवी लाछ्ण च चड कोणेषु लकार मालिख्य) इन पक्तिग्रो का ग्रर्थ समझ मे नही आया है, इसलिये यन्त्र रचना नही किया है।

विधि —पाटे पर अथवा भोज पत्र पर यन्त्र लिखकर केशर पुष्पादि से पूजा करे, जो सदा इस यन्त्र की ग्राराधना करता है, उसको तीनो लोक अवश्य ही वश मे रहते हैं।

मन्त्र —ॐ ह्री क्ली जंभे, मोहे + + + अमुकं वश्यं कुरु २ ते सेव वद्वश्यं यन्त्रम। ॐ र्म्ल्व्र्यूं र र व र स हा हा ॐ क्रो क्षी क्ली ब्लूं दां द्री पद्म मालिनी ज्वल २ हन २ दह २ पच २ इदं भूयं निर्दय धूम धूम्राध कारिणो ज्वलन शिखे हु फट् २ य त्रिमात्रा हतार्थान हिना ज्वाला मालिनी आज्ञा पयति स्वाहा।

विधि · इस मन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर पास मे रखने से, सिर दर्द मिटता है, भूत ज्वर, ग्रह दोष, शाकिनी, प्रभृति आदि नाश होती है।

मन्त्र —ॐ नमो भगवते एपुपतये नमो २ ऽधिपतये नमो रुद्राय ध्वस २ खड्ग रावण चल २ विहर नृपे २ स्फोट्य २ श्मसान भस्म ा चिता, शरी घटा कपाल माला र था व्याघ्र र्म परिधानाय शश।कित शेखराय कर्ण सर्प यज्ञोपविताय चल २ चलाचल

२ अग्नि वृतिक पिपीलिनी हन २ भूत प्रेत त्रासय २ ह्री मंडल मध्ये कंट २ वत्सं कुशेममानमत्र प्रवेशय आवह प्रचड धारासि देव रुद्रो—आपेक्षय महा रुद्रो आज्ञा पयति ठ त्र स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से ताडन करने से भूतादिक दोष शान्त होते है ।

इदानीं योगिनी चक्राणांतरं "कंदर्णवक्रं" सप्रपंचमाह ।।

चंचल्कांची कलापे, स्तनतन विलुठत्तार हारावलीके ।
प्रोत्फुल्ल पारिजात, द्रुमकुसुममहा, मंजरी पूज्यपादे ।।
ह्लां ह्लीं क्लीं ब्लूं समेते, भुवन वशकरी, क्षोभिणी द्रावणी त्वं ।।
आं ईं ऊं पद्महस्ते, कुरु कुरु घटने, रक्ष मां देवि पद्मे ।। ५ ।।

व्याख्या :—रक्ष पालय क मा स्तुतिकर्त्तार, कोदृशे । चचत्काचोकापे चंचत् देवीप्यमान. काच्या कलाप काचीकलापो मेखला यस्या सा तस्याः सबोधन । चचत्काची-कलापे । पुनरपि कीदृशे, स्तनतनविलुठत्तार हारावलीके, स्तनतने विलुठति तारा समुज्जवला हारावली, मुक्तावली, पक्तिर्यस्या सा तस्या सबोधन, स्तनतन० हारावली के । पुनरपि कीदृशे । प्रोत्फुल्ल पारिजातः द्रुमकुसुम—महामंजरी पूज्यपादे । प्रोत्फुल्लद्भि विकसद्भि पारिजात द्रुमाणां देवतरूणां व पारिजात नाम धेय कल्पवृक्षाणी कुसुमै पुष्पै रूप लक्षिताभिः महामजरीभि पूज्यौपादौ चरणौ यस्या सा तस्याः सबोधनं प्रोत्फुल्ल पारि० पूज्यपादे । पुनरपि कीदृशै ?। भुवनवंशकरी क्षोभिणी द्राविणी त्वं । त्रैलोक्यवश्यता धायनी चालयती अगं मोहयती द्रावयती तपयती । पुनरपि कीदृशे । ह्री ह्री क्ली ब्लूं समेते—ह्ला च ह्री च क्ली च ब्लू च यत्त तानि तै ह्रां ह्री क्ली ब्लूं समेतैः । एतावत्येतानि वीजा-क्षराणि भावना क्लाँ क्ली नाग गर्भितस्य लक्षकोणेपु रेफस्वस्तिका ज्वाला द्रातव्या-वहि: पोडश स्वरै वेंस्टनीय वहिरष्ट दलेषु कामिनी रंजिनी स्वाहा । ॐ ह्री आं क्रौ क्षी ह्री क्ली ब्लू द्रा द्री ....देवदत्ताभगं द्रावय २ मम वश्यमानय २ पद्मावति आज्ञापयति स्वाहा । अस्य वाम पाद पांशुः गृहीत्वा पुष्प वाम करे मासेन दक्षिणे निजकरे लिखेत् । तस्य वामकरं पीडयेत् करनिभवती । अद्युना—

ॐ चले चलचित्ते चपले मातंगी रेतं मुंच मुंच स्वाहा ।।

ॐ नमो कामदेवाय महानुभावाय कामसिरि असुरि स्वाहा ।।

अनेन मंत्रेणाभिमंत्र्य ताबूल दन्तकाष्ठ पुष्प फल वार २१ परिजाप्य यस्य दीयते स वश्यो भवति। अनेन मत्रेण रक्त कणवीर अस्टोत्तरशत अभिमत्र्य स्त्रिआग्रतोक्षेमयेत् सा क्षरति ।

ॐ नमो भगमाल्लिनी भगावहे चल २ सर २ ।। अनेन मत्रेण ७ वारानभिमत्र्य हस्त स्त्रिया भगस्योपरि दद्यात् सा क्षरति प्रवासे । अष्टसहस्त्राणि जपेत् य तद्दशाशे-नागोककुसुमैं हौम । पुन की दृशे। आ इ उं पद्म हस्ते अ च इं च उ च ते तथोक्ता मिति वीजाक्षराणि । भावनाह हु कार नाम गर्भितस्य वाह्ये ककार ते दातव्य । वाह्ये षोडश स्वराणि वेष्ट्य, वाह्ये पोडश दलेषु ॐ क्षा गं इं वा रें आ खा ला वा उ छो मा जी सी मा—सलिख्यदलाग्रे उ रा पूरयेत ।

माया वीजं त्रिगुणी वेष्ट्य वहि भुंज गद्वयमस्तके ग्रन्थ हृदये '' इ 'वा' सलिख्य एतद्य त्र कुकुमादिसुगन्धद्रव्यैर्भूर्ये सलिख्य वाहौ धारणीय सर्वभय रक्षा भवति। पद्मसदृशौ हस्तौ यस्या सा तस्या सवोधन पद्म हस्ते कमलपाणे कुरु कुरु लफलकं । सर्वशेष सुगम विष। तत्वं सारविषय प्रतिपाद्य अधुना विपहरण सौभाग्य अपुत्राण पुत्रजनन सस्तवक मत्रमाह ।

श्लोक नं० ५ के यन्त्र मन्त्र

(१) क्ला क्ली के अन्दर देवदत्त गर्भित करके, लक्ष कोण मे रेफ स्वस्तिक ज्वाला लिखे, वाहर सोलह स्वर वेष्टित करे, ऊपर अष्टदल का कमल वजावे, उस कमल के दलो मे कामिनी रजिनी स्वाहा लिखे।

मन्त्र —ॐ ह्री आ क्रौ क्षी ह्री क्ली व्लू द्रां द्री देवदत्ता भग द्रावय २ मम वश्य मानय २ पद्मावती आज्ञापयति स्वाहा ।

जिसका वाम पाव की धूलि को ग्रहण करके, पुष्प को वाम हाथ मे और दक्षिण मे (निज करे लिखेत) उसके वाम हाथ को दवादे तो (करनि भवति) ।

और भी—

ॐ चले चलचित्ते चपले मात्तंगी रेत्त मु च मु च स्वाहा ।

ॐ नमो कामदेवाय महानुभावाय कामसिरि असुरि स्वाहा ।

विधि . — इस मन्त्र से तांबुल अथवा दातुन अथवा पुष्प अथवा फल को २१ वार मन्त्रीत करके जिसको दिया जाय तो वह वश्य हो जाता है। इस मन्त्र से लाल कनेर को १०८

बार मन्त्रोत करके स्त्रिओं के आगे (आमयेत) वह शरण को प्राप्त होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगमालिलनी भगावहे चल २ सर २।

विधि :—इस मन्त्र से हाथ को ७ बार मन्त्रीत करके स्त्री के भग पर रखे तो वह शरण को प्राप्त होती है। प्रवास मे ८००० हजार जप करे। अशोक के फूलों से दशाँस होम करे।

फिर कैसा है—

आं इ उं पद्महस्ते अं च इ च उं च वे वीजाक्षर है।

(१) भावना ह हुंकार मे देवदत्त नाम गर्भित करके, बाहर में क, कार लिखे। ऊपर सोलह दल बनावे, उन सोलह दलो में सोलह स्वर लिखे, फिर सोलह दल बनावे, उन दलो मे क्रमश —ॐ क्षा गं इं वा रे आ खा ला वा उ छो मा जी सी मा लिख कर दल के अग्र भाग मे उ रा, लिखे। ये यन्त्र स्वरूप बना। लेकिन हमको कुछ समझ में नही आया है, विशेषज्ञ समझे। इसलिए हमने यन्त्र छोड दिया हैं।

(२) माया बीज ह्री कार को त्रिगुणा वेष्टित करके, बाहर भुजंग, दो के, मस्तक पर ग्रन्थ: हृदय पर 'इ' वां' लिखे।

विधि —इस यन्त्र को केशरादि सुगन्धित द्रव्या से भोजपत्र पर लिखकर हाथ मे धारण करने से सर्व भय रक्षा होती है।

लीला व्यालोल नीलोत्पलदल नयने, प्रज्वलद्वाडवाग्नि—
त्रुट्यज्ज्वाला स्फुलिंगस्फुरदरूण करोदग्र वज्राग्रहस्ते ॥
ह्रा ह्री ह्रूं ह्रौ हरंती हर हर ह ह ॐ कारगी मैक घोरे
पद्मे, पद्मासनस्थे व्यपनये दुरितं देवि । देवेन्द्रवंधे ॥ ६ ॥

व्याख्या :—व्यपनय—स्फोटय। किं ? तत् दुरित विघ्न कीदृशे—लीला व्यालोलनीलोत्पल—दलनयने। लीलया व्यालोलं नीलोत्पलस्य दलं लीलाव्यालोलं चतत् नीलो—त्पलदल च लीलाव्यालोल०—तत्सदृशे नेत्रे यस्या सा तत्संबोधन—लीला० नीलोत्पलदल नयने। क्रीडाशोभमानेन्दीवर नयने। पुन. कीदृशे प्रज्वलद्वाडवाग्नि त्रुटयज्ज्वाला स्फुलिगस्फुरदरूण करोदग्रवज्राग्रहस्ते। वाडवस्य अग्नि. वाडवाग्नि: प्रज्वलच्चासौ वाडवाग्निश्च प्रज्वलद्वाडवाग्नि: त्रुट्यती चासौ ज्वाला च त्रुट्यज्ज्वाला: प्रज्वलद्वाडवाग्ने। प्रज्वलद्वाडवाग्नि: त्रुट्यज्ज्वाला: तस्या: स्फुलिगा: । तेषां

स्फुरतश्च ते अरुणकराश्च तैरूदग्र प्रचंड यद्वज्र तदग्र हस्ते यस्या सा प्रज्वलद्वा-डवाग्नि । त्रुटयज्ज्वाला स्फुलिंगस्फुरदरूणकरोदग्र—वज्राग्रहस्ता, तस्या सवोधन—प्रज्वल० वज्राग्रहस्ते । जाज्वल्य मानवाडवज्वलत् ज्वाला—कलाप-समानशतकोटिविभूषित हस्ताग्रे । पुनरपि कीदृशे—"ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ हरती हर हर हह ॐकार भीमैकनादे । ह्रौ च ह्री च ह्रू च ह्रा च हरती हर हर हह ॐ कारास्तैर्भीमो भीषणम् । एकोऽद्वितीयो नादो यस्या सा तस्या सवोधन—ह्रॉ ह्री ह्रू ह्रौ भीमैकनादे ।। सर्वाणि एतान्यक्षराणि माला मन्त्र-यन्त्राणि सूचयति । लीला० ज्वाला० वाडवाग्नि । त्रुटयज्ज्वाला वज्राग्रहस्ते ह्रा ह्री० भीमैकनादे यद्यथा—

(१) ॐ नमो भगवती, अवलोकित पद्मिनी, ह्रा ह्री ह्रू ह्र वरागिनी चिंतित पदार्थ साधनी, दुष्ट लोकोच्चाटिनी, सर्वभूतवश्यकरी, ॐ क्रौ ह्री पद्मावती स्वाहा ।

(२) ॐ नमो भगवती पद्मावती सप्त—स्फुट विभूषिता, चतुर्दशदष्ट्राकराला व नर २ रम २ फुर २ एकाहिक, द्वयहिक, त्र्यहिक, चतुर्थ्यहिक ज्वर चातु-र्मासिक ज्वर, अर्द्धमासिक ज्वर, संवत्सर ज्वर पिशाच ज्वर मूर्त ज्वर, सर्वज्वर, विपमज्वर, प्रेतज्वर, भूतज्वर, गृहज्वर, राक्षस गृहज्वर, महाज्वर, रेवती-ग्रहज्वर, दुर्गाग्रहज्वर, किंकिणीग्रह ज्वर, त्रासय २ नाशय २ छेदय २ भेदय २ हन २ दह २ पच २ क्षोभय २ पार्श्वचन्द्राय ज्ञापयति, सर्वभयरक्षिणी २ ।

विद्या —मन्त्र द्वय एतदभ्यस्यते, ज्वरनाशो भवति । हरंति, नाशयति, अस्य भावना । ऐ ह्री क्ली ब्लू आ क्रौ श्री प्ली म्ले ग्ले सर्वांग सुन्दरी क्षोभि २ क्षोभय २ सर्वांग भाशय हू फट् स्वाहा ।

एपा विद्या निरंतर ध्यायमाना दुष्ट रोग नाशयति । हर हर इति साधना । माया बीज नामगर्भितस्य वहिश्चतुर्दलेपु पार्श्वनाथ सलिख्य वाह्ये हर हर वेष्टय वहि ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह ह वहि ककारादि क्षकार पर्यंता मातृका सलिख्यते । वहि भुजगपदा दातव्या एतद्यन्त्र कुंकुमगोरोचनया भूर्ये सलिख्य—कुमारी सूत्रेण वेष्टय निजभुजे धारयेत् । य पुरुप स स्वजनवल्भो भवति । श्रीमान्—

अपुत्रो लभते पुत्रं निदवो जीवित प्रजा ।
यन्त्र धारण मात्रेण, दुर्भगा सुभगा भवेत् ।। १ ।।

प्रभवति विष न भूतं सनिहांती पिटक भूताश्च ।
सस्मरणादस्य स्तुत्या पापमार्य विनाश मुपयाति ॥ २ ॥

द्वितीय :—हुकार नामगर्भितस्य वहि क्षकारं वेष्टयं । वहि षोडशदलेषु स्वरा: दातव्या । बाह्ये षोडशदलेषु—"ऐ ह्रा ह्री द्रा द्री क्ली क्ष. प्लु प्ली ह्रा ह्री ह्र ह्रौ ह्र: ठ ठ. ।"—आलिख्य बाह्यदलाग्रे ॐ कारं ह्री कार दातव्यं ।

एतद्यत्र कुंकुमगोरोचनया भूर्यपत्रे सलिख्य कुमारीकर्ततितसूत्रेण वेष्टय् मुच्यते । भींमेंकं घौरे प्रतीतनादंप्रल्हादे । कीदृशे—पद्मे, पद्मावति देविइति संबधः । पुनरपि कीदृशे । देवेन्द्रवद्ये । देवताना इन्द्रा. देवेन्द्रास्तैर्वंद्या वंदनीया देवेन्द्रवंद्यास्तस्या संबोधन देवेन्द्रवंद्ये ।

श्लोक न. ६ के यन्त्र मन्त्र

मन्त्र : - ॐ नमो भगवती, अवलोकित पद्मिनी ह्राह्री ह्र ह्र: वरांगिनी चितित पदार्थ साधनी दुष्ट लोकोच्चाटनी सर्व भूत वश्य करी, ॐ क्रौह्री पद्मावती स्वाहा ।
ॐ नमो भगवती पद्मावती सप्तस्फुट विभूषिता, चतुर्दश दष्ट्रा कराला व: नर: २ रम २ फुर: २ एकाहिक द्वयहिक त्र्यहिक चतुर्थ्यहिकं ज्वर, चातुर्मासिक ज्वर अर्द्ध मासिक ज्वर संवत्सर ज्वर पिशाच ज्वर, मूर्त ज्वर सर्वे ज्वर विषम ज्वर प्रेत ज्वरं भूत ज्वरं ग्रह ज्वर राक्षस ग्रह ज्वर महा ज्वर रेवती ग्रह ज्वर दुर्गा ग्रह ज्वर किंकिणी ग्रह ज्वर त्रासय २ नाशय २ छेदय २ भेदय २ हन २ दह २ पच २ क्षोभय २ पार्श्वचंद्रायज्ञापयति सर्वे भय रक्षिणो ॥२॥

विधि —इस मत्रो को पढने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है । हरण होता है । दोनों मन्त्रो को पढना चाहिये ।

मन्त्र :—ऐ ह्रीं कली ब्लू श्रां क्रौ श्री प्ली म्ले ग्लें सर्वां ग सुन्दरि क्षाभी २ क्षोभय २ सर्वांग भासय २ हू फट् स्वाहा ।

इस विद्या का नित्य ही स्मरण करने से दुष्ट रोगो का नाश होता है ।

(१) ह्रीकार मे देवदत्त गर्भित करके, ऊपर चार दलो का कमल बनावे उन चारो दलो मे क्रमश: पार्श्वनाथ, लिखे ऊपर एक वलय में हर २ लिखे, फिर ऊपर मे एक वलय और बनावे, उस वलय मे ह्र ह्रा ह्रि ह्री ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रो ह्रौ ह्र ह्र: लिखे, ऊपर एक वलय

और वनावे, उस वलय मे क ख ग घ ङ इत्यादि क्ष कार प्रयत लिखे, ऊपर भुजग पद लिखना। देखे यत्र न० १

यन्त्र न० १
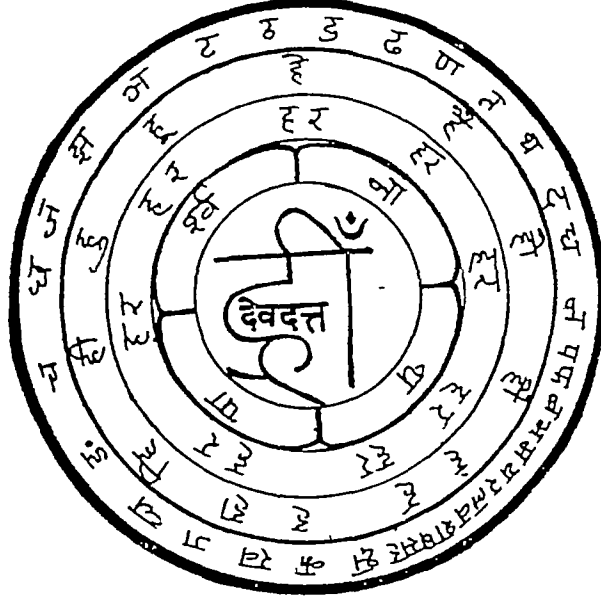
विधि – इस यत्र को केशर गौरोचन से भोज पत्र पर लिख कर, कन्या के हाथ से कता हुवा सूत्र से वेष्टित करके, अपने हाथ मे धारण करे तो वह पुरुष स्वजन वल्लभ होता है। जिसको पुत्र नही है वह पुत्र प्राप्त करता है। निर्धनो को धन प्राप्त होता है।
यन्त्र के धारण मात्र से ही दुर्भगा सुभगा होता है।
विप का असर नही होता है। भूत प्रेत, पिटक, आदि कभी भी असर नही करता है।
स्मरण मात्र से नाना प्रकार के पाप नष्ट होते है।

(२) हु कार मे देवदत्त गर्भित करके वाहर क्ष कार वेष्टित करे, ऊपर सोलह दलो वाला कमल वनावे, उन सोलह दलो मे सोलह स्वर लिखे, ऊपर सोलह दलो का एक और कमल वनावे, उनमे क्रमश. ऐ ह्रा ह्री द्रा द्री क्ली क्ष प्लु प्ली ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र: ठ ठः लिखकर वाहर ॐ कार और ह्री कार लिखना चाहिये।

विधि :- इस यन्त्र को केशर, गौरोचन से भोज पत्र पर लिख कर कन्या के हाथ से कता हुवा सुत्र से वेष्टित करके धारण करे।

इदानी शातिक पौष्टिक तुष्टिक यन्त्र विषहरयन्त्रं मन्त्र सप्रपच माह—

यन्त्र नं० २

कोपं वंझं सहंसः कुवलयकलितोद्दामलीला प्रबंधे ।
ज्वा ज्वी ज्व पक्षिबीजै शशिकरधवले प्रक्षरत्क्षीरगौरे।।
व्यालव्याबद्धजूटे, प्रबलबलमहा, कालकूटं हरती ।
हा हा हुंकारनादे कृतकर मुकुलं रक्षा मां देवि पद्मे ।।७।।

व्याख्या —रक्ष । पालय । क मां कासौ कर्त्री पद्मावती देवी कीदृशा कृत्त–कर मुकुल–विहितपाणि कमलमीलन विहितकरकुड्मल कीदृश कोपं वझं सहस । कोप च, वझं च, कोपवझ । सह हसेन वर्तते य·–सहसः । तत्राब्जपदस्य भावना । ॐ कोपं वंझ हंस वसह मन्त्रः ॐ क्षा सा हूं ज्वी स्वी हं स चक्रमुद्रया प्र पुंजात । पुनः कथं भूते कुवलयकलितोद्दामलीलाप्रबंधे । कुवलय अथवा कुवलयै नीलोत्पलै कलितः स्वीकृत. उद्दामः स्फारो लीला प्रबन्धं क्रीडा समहो यस्याः सा तस्याः सम्बोधनम् कुवलय लीला प्रबन्धे । तस्य मन्त्र – ॐ कुवलय हंसः कुसुममन्त्र पुनरपि कथं भूते। शशिकर धवले। शशिन करा शशिकरा तद्वतधवलाः तस्याः संवोधनम्–शशिकर धवले। कै कृत्वा ज्वां ज्वी ज्वः पक्षि बीजैः कृत्वा ज्वां च ज्वी ज्वः पक्षि बीजै ।अस्य पदस्य उपलक्षणत्वात चक्रं सूचयति तद्यथा–लं वं हुः पक्षिना नामगर्भितस्य वेष्टय बहि षोडश दल पमध्येअकार पर्यतानि सलिख्य वहिः वकार वेष्टय बहि· द्वादशदलेषु–ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह ह वहि ह कारद्वयसपुटस्थ वहि झ्वी क्ष्वी ह सः वेष्टयेत् । पुनः तद्वाह्ये एकारद्वय संपुटस्थम पुनर्मायिबीज त्रिगुण वेष्टय मन्त्रमिदं एतद्वक्ष्यमाण यन्त्र द्वय पूर्वोक्तं स्यात्

चैव यन्त्रस्य—

तद्यथा—क्रा खा गां घा चा छा ज्वी ज्वी नम । गरुध्वणजो नाम मन्त्र. ।

कर जाप सहस्त्रेण सिद्धि र्भवति। क्षि प ऊ स्वाहा। जी स्कं अभिमन्त्रयेत् वारि पश्चात्त् पातव्य, अजीर्ण विषं नाशयति। ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह हः अनेन मन्त्रेणोदक अभिमन्त्य श्रोत्राणि ताडयेत् अभिपिचयेत—निर्विषो भवति। ज च ज्व पक्षि वा स्वी हस मन्त्र माराधयेत्। श्वेताक्षतैः श्वेत पुष्पैर्वा श्रीखंडादिभि सुगंध द्रव्यै शराव सपुटे लिख्य, शाति पुष्टि तुष्टिर्भवति।' एतज्जल पूर्ण 'घटे प्रक्षिपेत्। शीत ज्वर वात ज्वर नाशयति, ग्रह पीडा निवारयति। सर्व रोगा न प्रभवति। दृष्टं प्रत्यय मिदम्। पुनरपि कीदृशे।--प्रक्षरत् क्षीर गौरे, प्रक्षरत् च तद् क्षीर च प्रक्षारत्क्षीर तद्वद् गौरा, प्र क्षरत्क्षीर गौरा, तस्या. संबोधन प्रक्षरत्क्षीर गौरे प्रक्षरतदुग्ध पाडुरे।

ॐ कारै विक्रकारै स र ह स अमृत्त हं स ॐ कोप व भं ह स ठ ठ ठ. स्वाहा। सर्व विषत्यजन मन्त्र —पुनरपि कीदृशे—व्यालव्याबद्ध जूटे। दंद शूक—बद्ध श्रोडके। "ॐ कुरु २ कुल्लेण उपरि मेरू वलि बिंदु—विनु पड मन्त्, गरुडा हि व हा हंस यक्ष मन्त्र। को पं वं भ हं स ॐ स्वाहा।" हा हंसः वृक्ष मन्त्र । तथा किं कुर्वती। हरंती। कं—प्रवलवल महा काल कूटं।—प्रवल वलं यस्यासौ प्रबल वलः प्रवलवल लश्चासौ महा काल कुटश्च, प्रवल वल महा काल कूटस्त प्रवल कूट। पुनरपि कीदृशे। हा हा हुकार नादे। हा हा हुंकार नादो यस्या सा तस्या सवोधन हा हा हुंकार नादे। हा हा इति दैत्य नाश हुंकार शब्देन परविद्या छेद सूच्यते नादे ह्ला महाकूट इत्यस्य भावना माह। 'स' स्वी क्ष्वी हसः पक्षिय प्रावय प्रावय विप हर हर स्वाहा। "डंकार वाम गर्भितं तकारे वेष्टय। पुनरपि वाह्ये वलया कार मन्त्रे षोडश स्वरै र्वेष्टप्य। वलयाकार वाह्ये द्वादश दलेषु मध्ये- ह हा हि ही हु हू हे है हो ही ह ह दातव्य। वाह्ये ह कार सपुट दातव्य। तस्य वाह्ये वलया कार मध्ये व भ ह सः पूरयेत् वकार द्वय सपुट।

ॐ नमो भगवती पद्मावती स्वाहा। पक्षे हसः विप हरय २ प्लावय २ विप हर २ स्वाहा। एतन्मन्त्र निरतर कर्ण जापेन विष नाशयति। हकार नाम गर्भितस्य वाह्ये ह स वारत्रय वेष्टय हा मस्तक हा अष्टागन्यास। तथा वाह्ये हस हस— वारत्रय लिख्य स्वकीय मडल स्थाप्य यथा ॐ क्षी सा हू ज्वी क्षी ह्रौ ह स। विप हरण मन्त्र। ॐ कारनाम गर्भित ॐ कारसपुटस्थ वज्राष्ट भिन्न वज्र—ॐ कार लिखेत्। वज्र पर्यंते लकार मालि खेत्। सर्वेपामपि। अथवा ॐ कार नाम गर्भितो तस्य वाह्ये। ॐ कार द्वय सपुटस्थ तस्य वाह्ये स्वरा

वेष्टय, दिशि विदिशि वज्राष्ट भिन्न वज्रेण, ॐ कारं मध्ये सकारं सर्वत्र वज्रेषु द्रष्टव्य ।

एतद्यंत्र शुभैर्द्रव्यै कस पात्रे दर्भाग्रेण यत्रमालिखेत् । यथाश्वेत पुष्पै रष्टोतरं शतं प्रमाण जाप क्रियतेऽनेन पर विद्या मन्त्र, यन्त्र रक्षा छेदन करोति अधुना पूर्वोक्त कसपात्रे सुगध द्रव्यै ॐ कार नाम गर्भितस्य तस्य वाह्ये षोडश स्वरा वेष्टि तस्य वाह्ये ॐ कार वैष्टय वहिः ॐ कलि कु डाय स्वाहा—लिखेत् तस्यैव यत्रस्य श्वेत पुष्पै रष्टोत्तर सहस्त्र प्रमाणे रक्षतैर्वलिः धूप दीप प्रभृतिभिः गृहीतस्य पूर्वोक्त कस पात्र पानीयेन प्रक्षालयेत् । तत् पानीय च भूतादि गृहीत रोगा क्रात चुलुकत्रिक पायेत् । सर्व ग्रहरोग निर्मुक्तो भवति ।

श्लोक नं. ७ के यन्त्र मन्त्र

(१) लं व हु पक्षिना में देवदत्त गर्भित करके वेष्टित करे, फिर सोलह दलो वाला कमल वनावे, उन दलो मे क्रमश अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अ अः लिखकर वाहर व' कार से वेष्टित करे, फिर वारह दल का कमल वनावे । उन दलो मे क्रमश ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह ह· वाहर लिखे । ह कार दोनो सपुट करे, वाहर झ्वी क्ष्वी हं स वेष्टित करे । फिर वाहर ए कार द्वय सपुटस्थ करके माया वीज को त्री गुणा वेष्टित करे । इस मन्त्र को कहा गया जो यन्त्र पूर्वोक्त है । उसी प्रकार क्रा खा गा घा चा छा ज्वी ज्वी नमः ।

इस मन्त्र को गरुड ध्वज मन्त्र कहते हैं । एक हजार जप से मन्त्र सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—क्षिप ॐ स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को पढकर पानी मन्त्रीत करके पिलाने से अजीर्ण विप नाश होता है ।

मन्त्र :—ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं ह· ।

विधि —इस मन्त्र से पानी मन्त्रीत करके उस पानी से कान को ताड़न करे, तो मनुष्य निर्विप होता है ।

मन्त्र : जंच ज्व. पक्षि वा स्वी ह स । इस मन्त्र की आराधना करे ।

श्वेत अक्षत श्वेत पुप्प से श्री खंडादि सुगन्धित द्रव्यो से, सराव सपुट मे लिखे तो शाति पुष्टि तुष्टि होती है ।

इसको जल से भरे हुये घड़े में डालने से, शीत ज्वर, वात ज्वर, का नाश होता है ।

यन्त्र नं० १

ग्रह पीडा को निवारण करता है। सर्व रोग नही होता है। अनुभूत है।

मन्त्र —ॐ कारै विक्र कारै स र ह स अमृत ह स ॐ कोप व भ्र ह स ठ ठ ठ स्वाहा।
इससे सर्व प्रकार के विष नाश होते है।

(२) ड कार मे देवदत्त गर्भित करके त कार वेष्टित करे, फिर बाहर एक वलय बनावे, उस वलय मे सोलह स्वर लिखे, फिर बारह दल के कमल मे क्रमशः ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह ह लिखे, बाहर ह कार सपुट देवे। उसके बाहर वलयाकार मध्ये व भ्र ह स लिखे, व कार द्वय सपुट करे।

मन्त्र .—ॐ नमो भगवती पद्मावती स्वाहा। पक्षे ह स. विष हरय २ प्लावय २ विष हर २ स्वाहा।

विधि —इस मन्त्र का निरतर कान मे जप करने से विष का नाश होता है।

यन्त्र – ह कार मे देवदत्त गर्भित करके बाहर ह स वार तीन वेष्टित करे, हा मस्तक, हा अष्टाग न्यास। तथा बाहर हस हस व र तीन लिखकर, स्वकीय मडल मे स्थापना करे।

मन्त्र .—ॐ क्षी सा ह्र ज्वी क्षी ह्रौ ह स.। ये विप हरण मन्त्र है।

(३) ॐ कार में देवदत्त गर्भित करके ॐ कार से सपुट करे। अष्ट वज्राकित करके ॐ कार लिखे। वज्र पर्यंत ल कार को सब में लिखे।

और भी ॐ कार मे देवदत्त गर्भित करके, उसके बाहर ॐ कार द्वय सपुट, उसके बाहर में स्वरों को लिखे, दिशा विदिशाओ मे वज्राष्टिभिन वज्र के द्वारा, ॐ कार मे सर्वत्र स कार वज्र ही दिखना चाहिए।

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यो से कस पात्र मे दर्भाग्र से लिखे। श्वेत पुष्पों से अष्ठोतर-शत १०८ बार जप करने से, पर विद्या मन्त्र यन्त्र से रक्षा होती है और उनका छेदन करता है।

(४) ॐ कार में देवदत्त गर्भित करे, फिर उसके बाहर सोलह स्वर लिखे, उसके बाहर ॐ कार को वेष्टित करे, फिर बाहर ॐ कलि कुंडाय स्वाहा। लिखे।

विधि —इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यो से कासे के पात्र मे लिखकर श्वेत पुष्पो से १००८ बार जपे, श्वेत पुष्प अक्षत (बलि) नैवेद्य धूप दीप प्रभृतिक से यन्त्र की पूजा करे। फिर उस यन्त्र को पानी से धोकर, उस पानी को भूदादिक से गृहीत रोगाक्रात व्यक्ति को तीन अजुली प्रमाण पिलावे। सर्व ग्रह रोग से निर्मुक्त होता है।

इदानी पर विद्याछेदानतर चक्र प्रकार देव कुल माह।
प्रातर्बालार्करश्मिस्फुरित धन महा साद्र सिन्दूर धूलीः ॥
सध्या रागारुणागीः त्रिदशवरवधूवंद्यपादार विंदे ॥
चचच्चडासि धारा प्रहतरि पुफुले, कु डलोद्घृष्टगल्ले ॥
श्रा श्री श्रू श्रौं स्मरती, मदगजगमने रक्ष मा देवि पद्मे ॥८॥

व्याख्या .—रक्ष। पालय। देवी पद्मावती। क ? मा की दृशे, प्रातर्बालर्करश्मिः स्फुरितघन महा साद्र सिंदुरधुलीः सध्यारागारूणागीः प्रात प्रभाते बालो नवोग्दतो यो अर्कः तस्य रेशुर्मयः किरणा- तेषा स्फुरित देदीप्यमानम् वा प्रकाश रूप प्रातर्बालार्क रश्मि स्फुरितो घनो बहुः महास्त्राद्रौ निविडो यः सिंदूर तस्य धूलि. चूर्ण. सन्ध्याया राग. सध्या राग प्रातर्बालार्करश्मयश्च घनमहासाद्र-सिंदूरधूली च सन्ध्यारागश्च ते प्रातर्बा० तद्वदरूणा। रक्तवर्ण अगो यस्याः सा, प्रातर्बा० सन्ध्यारागा रूणांगी। पुनरपि कीदशे। त्रिदशवरवधूवद्यपादार विंदे वराश्च ता वध्वश्च वरवध्वः त्रिदशानां

देवाना वरवध्व त्रिदशवरवध्व ताभिरभि–वद्ये पादारविंदे यस्या सा तस्या. सम्बोधन त्रिदशवरवधू वद्य पादार विंदे। अमर वरागनानमस्यमान चरणपकेरूहे। कीदृशे। चचच्चडासिधारा प्रहतरि पुफुले। चडाचासौअसिधारा चच्चडा० सिधारा चचती चासौ चडा सिधारा च चचच्चडासिधारा तया प्रहत विनाशित रिपुकुल शत्रु समूह यया सा चचच्चडा० रिपुकुल तस्याः सम्बोधन, चचच्चडा रिपुकुले देदीप्यमान प्रचण्ड मण्डलाग्रधारा व्यापादित पुनरपि कीदृशे। कु डलोद्घृष्ट गल्ले। कु डलाभ्या उद्घृष्टौ गल्लौ गडौ यस्याः सा तस्या सबोधनम् कु डलोद्घृष्ट गल्ले। कर्ण वेष्ट कोदघृष्टमाण गडस्थले। पुनरपि कीदृशे श्रा श्री श्रू श्रौ स्मरती श्रा च, श्री च श्रू च श्रो च तानि स्मरंतो ध्या यती एतेषाम् पचाक्षराणा मत्र दर्शयन्नाह क्म्ल्व्र्यू नामगर्भितस्य वाह्ये घ्म्ल्व्र्यू वेष्टय च वाह्ये षोडश स्वरान् लिखेत्। वहिरष्ट दलेषु क च छ य ट र भ म ल व यूँ पिडाक्षराणि दातव्यानि वहि क्म्ल्व्र्यूँ च्म्ल्व्र्यू छ्म्ल र्यू झ्म्ल्व्र्यू य्म्ल्व्र्यू र्म्ल्व्र्यू भ्म्ल्व्र्यूँ म्म्ल्व्र्यूँ अष्ट दलेषु ब्रह्माणी १ कुमारी २ ऐद्राणी ३ माहेश्वरी ४ वाराही ५ वैष्णवी ६ चामु डा ७ गाधारी ८ ॐ कार पूर्व मत्रमालिख्यते। वाह्ये स्म्ल्व्र्यू हा ह ह आ क्ली ब्लू द्रा द्री पद्मावती श्रा श्री श्रू श्रौ श्रः हु फट् स्त्री स्वाहा। एषा विद्या अष्टौत्तर सहस्त्र प्रमाण काजापेन क्रियमाणेन दशदिनपर्यं ते सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति। पूनरपि कीदृशे मदगजगमने मदनोपल क्षितो गजो मदगज तद्वग्दमन गतिर्यस्या सा तस्या सवोधन मदगज गमने ॥८॥ सा प्रत्तसुपसहरन्नाह ॥

श्लोक नं० ८ के यन्त्र मन्त्र

(१) क्म्ल्व्र्यू मे देवदत्त गर्भित करके, वाहर घ्म्ल्व्र्यू वेष्टित करे, ऊपर वलय वनावे। उस वलय मे सोलह स्वर लिखे, ऊपर से एक अष्ट दल का कमल वनावे, उन दलो मे क्रमश क्म्ल्व्र्यू च्म्ल्व्र्यू छ्म्ल्व्र्यू झ्म्ल्व्र्यू टम्ल्व्र्यू र्म्ल्व्र्यू भ्म्ल्व्र्यू म्म्ल्व्र्यू लिखे। ऊपर से अष्ट दल का कमल और वनावे, उसमे भी क्रमश· ब्रह्माणी, कुमारी ऐद्राणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी, चामु डा, गाधारी, लिखे। ॐ कार पहले मन्त्र को लिखे। वाह्य मे स्म्ल्व्र्यू हा ह ह आ क्ली ब्लू द्रा द्री पद्मावती श्रा श्री श्रू श्रौ श्र हु फट् स्त्री स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र विद्या को एक हजार आठ प्रमाण जप, नित्य दस दिन तक करने से सर्व कार्य सिद्ध होते है ।

दिव्य स्त्रोत पवित्रं पटुतरपठता, भक्ति पूर्वं त्रिसध्यम् ।
लक्ष्मी सौभाग्य रूप दलितकलिम ल, मगल म गलानाम् ।
पूज्य कल्याणमान्य, जनयति सतत पार्श्वनाथप्रासादात् ।
देवी पद्मावती सा प्रहसित वदना या स्तुता दानवेद्रैः ॥६॥

व्याख्या : - जनयति उत्पादयति कासौ कर्त्री इय देवी पद्मावती कीदृशी ? प्रहसित वदना प्रहृष्टानना कस्मात् पार्श्वनाथ प्रसादात् या स्तुता कैः ? दानवेद्रैः. दैत्य पुरूहूतैः. किं जनयति लक्ष्मी सौभाग्य रूप कीदृश तत् दलित कलिमल निर्दलित पाप मलं। तथा मगल जनयति । केषाम् मगलाना निःश्रैयसानामपि मध्ये विशिष्ट निःश्रेयस जनयति इत्यर्थ ।पुनरपि कथभूत पूज्य अर्च्य पुनरपि कीदृश कल्याण मान्यं, कुशल-युत । कथ ? सतत निरतर केषु ? पटुतर पठता स्पष्टतर भूर्णता पठेता कथ ? भक्ति पूर्व बहुमानपूर्वं न केवल भक्ति पूर्व त्रिसध्य च, कि कर्म भो मत स्तोत्र स्तवन की दृश ? दिव्य प्रधान पुनरपि कीदृशम् पवित्रम् ।

अस्या पार्श्वदेव मणि विरचिताया पद्मावत्यष्टक वृत्तौ यत् किमपि वद्य पठित तत्सर्वं सर्वाभिर्क्षंतव्य । देवताभिरपि ।

वर्षाणा द्वादशकि शतैः गतैः त्र्युतेरैरिय वृत्ति १२०३ वैशाखे सूर्ये दिने समयिता शुक्ल पंचम्या, ॥१॥ अस्याक्षरस्य गणनाम् पचशतानि द्वाविशदक्षराणि च सदनुष्टुप छदसां प्राप ॥२॥ इति श्री पार्श्व देवमणिविरचिता पद्मावत्यष्टक वृतिः सपूर्ण ॥

सवत् १९२२ रा मिती ज्येष्ठ वद १३ कुजवासरे योधपुर नगरे लिपि कृत पं० राम चन्द्रेण स्वात्मार्थे ।

॥ इति ॥

श्लोक नं० ९

इस दिव्य पवित्र स्रोत को बुद्धिमान, तीनो संध्याओ में भक्ति पूर्वक पढता है। उसको लक्ष्मी की प्राप्ति सौभाग्य, की प्राप्ति, होती है । मगलो मे मगल होता है । कलीमलो का

नाश होता है । जो देवी प्रहसत वदन है । क्योकि जिनका मन पार्श्व जिनेन्द्र की भक्ति मे ही रत हे । इसलिये, दानव इन्द्रो के द्वारा वदित हैं । इसलिए सब को कल्याणकारी है ।

इस स्त्रोत जो की आ पार्श्वदेव मणि विरचित पद्मावती अष्टक वृत्ति को जो कोइ भी वधन करता है, पढता है वह सर्व प्रकार के सर्व ग्रभिसिप्त प्राप्त करता है ।

इति श्री आ० पार्श्व देवमणि विरचित पद्मावत्यष्टक वृत्ति सपूर्ण ।

॥ ० ॥

॥ ॐ ह्री नम ॥

श्री पद्मावती देवी स्त्रोत यन्त्र मन्त्र विधि सहित

काव्य नं० १

श्री मद् गीर्वाण चक्रस्फुट मुकुट तटि दिव्य माणिक्यमाला ।
ज्योति र्ज्वाला कराला स्फुरित मुकुरिका घृष्ट पादार विन्दे ॥
व्याघ्रो रूल्का सहस्र स्फुरज्ज्वलन शिखालोल पाशां कुशाढ्ये ।
आ क्रो ह्री मन्त्र रूपे क्षपित कलि मले रक्षमा देवि पद्मे ॥१॥

यन्त्र रचना

चतुर्थ दल कमल कृत्वा, तन्मध्ये ह्री बीज लिखेत दल मध्ये ॐ आ क्रों ह्री नमः एतत्मत्र लिखेत् तदुपरि ॐ ह्री श्री क्ली महा लक्ष्मं नमः लिखेत् तदुपरि काव्य लिखेत् अय प्रकारेण यन्त्र कृत्वा, पार्श्व रक्षणीयात् राज्य भयादि नश्यन्ति ।

फल

प्रथम काव्यस्य ह्री बीज षडाक्षरै मन्त्र, ॐ आँ क्रों ह्री नम अथवा ॐ ह्री श्री क्ली महा लक्ष्मै नमः, अनेन मन्त्रेण पूर्व दिग मुख शुक्लासन शुक्ल माला, अष्टोतर शत जाप्य कृत्वा, गुगलस्य धूप दत्वा दीप घृतस्य धृत्वा जाप्य कुर्यात जाति पुष्पेन जाप्पं, तर्हि राज्य भय, दुष्टादि भय, अग्नि भय, कुर्यात् नश्यन्ति ।

इस काव्य के यन्त्र मन्त्र को पास में रखने से व मंत्र का १०८ बार पूर्व दिशा में मुख करके और सफेद आसन, सफेद माला अथवा जाइ (चमेली) के फूल से गुगुल का धूप घी का दीपक रख कर जाप करने से राज्य भय, दुंष्टादि भय, अग्नि भय, आदि नाश होते हैं। लक्ष्मी लाभ होता है ।

मन्त्र :—ॐ आँ क्रो ह्रीं नमः ।

काव्य न० १

यन्त्र न० १
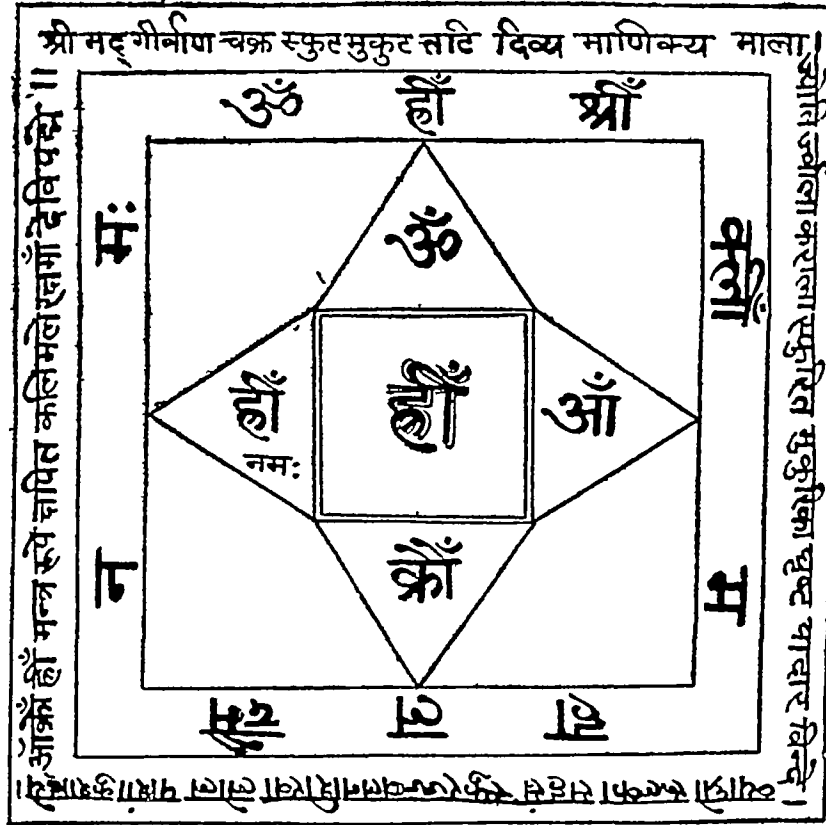
काव्य नं० २

भित्वापातालमूल चल चलिते व्याल लीला कराले ।
विद्यु छण्ड प्रचन्ड प्रहरणसहितै सद्भू जैस्तर्जयन्ति ।
देत्येन्द्र क्रूरदष्ट्राकिटकिट घटिते स्पष्ट भीमाट्टहासे ।
माया जी मूत माला कुहरित गगने रक्षमादेवी पद् मे ॥ २ ॥

यंत्रनं०२
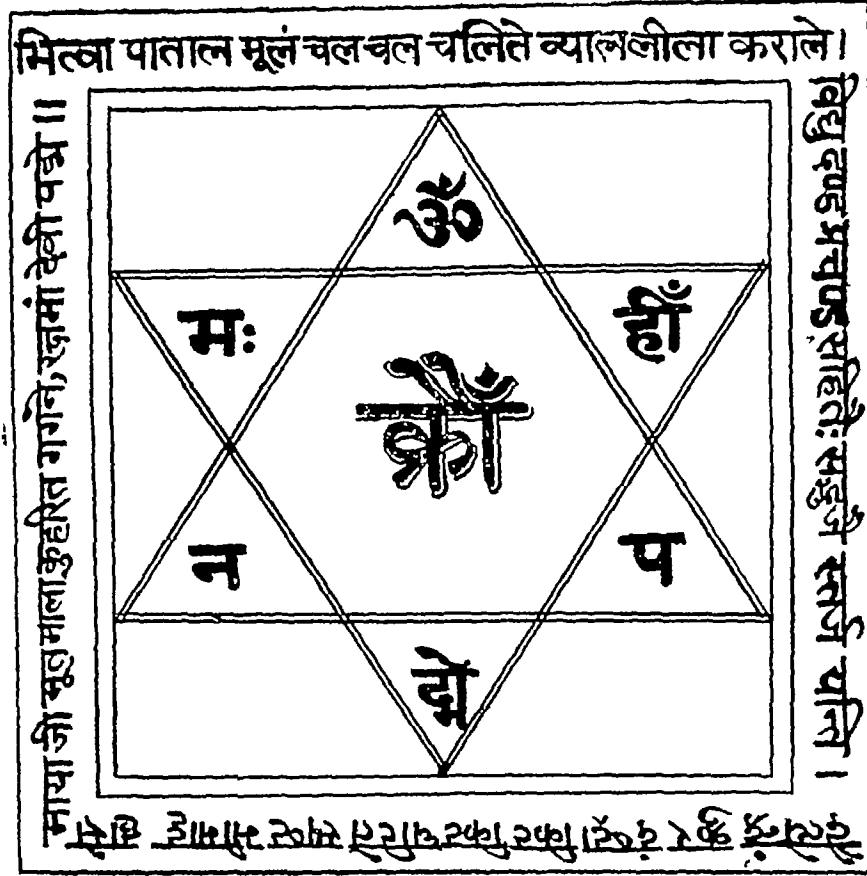
यन्त्र रचना

षट्कोण आकार कृत्वा, तन्मध्ये क्रौ बीजं लिखेत्, पदुपरि प्रत्येक कोणेमन्त्राक्षरं लिखेत् ॐ ह्री पद्मे नम. एतत् मंत्र लिखेत् तदुपरि काव्य लिखेत् । पश्चात्पार्श्वं रक्षणियात् ।

फल

द्वितीय काव्यस्य क्रौ बीजं, षडाक्षरै मन्त्र, ॐ ह्री पद्मे नम. अनेन् मत्रेण कुबेरदिग् मुख कृत्वा रक्तपुष्पेन् अष्टोतर शत (१०८) जाप्यं कृत्वा, लक्ष्मी लाभ तथा चिंतित कार्यस्य सिद्धि र्भवति, यन्त्रस्य रक्त पुष्पेन् पूजां कुर्यात् ।

इस यन्त्र मन्त्र काव्य को भोजपत्र वा सोना, चाँदी, ताँबा, के पत्र पर लिखकर लाल पुष्प से पूजा करे। मन्त्र का १०८ बार जाप करे तो लक्ष्मी का लाभ होता है। चिंतित कार्य की सिद्धि होती है। भोज पत्र पर यन्त्र लिखना हो तो, सुगन्धित द्रव्य से लिखे ।

जपने का मन्त्र - ॐ ह्री पद्मे नमः। इस मन्त्र की १ माला उत्तर दिशा मे मुख करके नित्य फेरे—

श्लोक नं० ३

कूजत्को दड कांडो डमर विधुरित क्रूर घोरोप सर्गं । —— --

दिव्यं वज्रातपत्र प्रगुण मणि रणत्किंकिणी क्वाणरम्य ।

भासद्वैडूर्य दड मदन विजयिनो विभ्रतीपार्श्वभर्तु ।

सादेवी पद्म हस्ता विघटयतु महा डामर मामकीन ॥ ३ ॥

यन्त्र विधि अस्य काव्यस्य, श्री वीज, अष्टाक्षरै मन्त्र, ॐ ह्री पद्म वज्रे नम । अनेन मन्त्रेण एकशन जाप्य कृत्वा दक्षिणाभिमुखं, रूद्राक्षमाला जाप्यं कृत्वा, घोरोपसर्ग नाशन भवति. अष्टदल कमलं यंत्रं कृत्वा, तन्मध्ये श्री वीजं लिखेत् । ॐ ह्री पद्म वज्रे नमः, अनेन मन्त्रेण अक्षर यन्त्र स्थाप्यं । पीत पुष्पेन यन्त्र पूजनं कृत्वा नमस्कारं कुर्यात ।
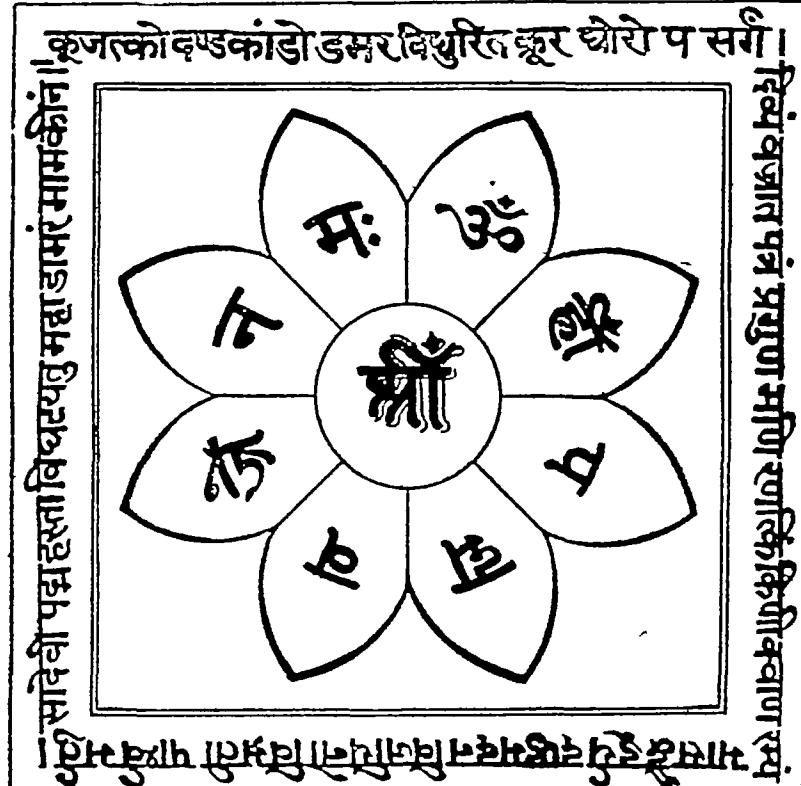
उपर्युक्त विधि के अनुसार सोने अथवा तांबे अथवा चाँदी वा भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्य से यन्त्र लिख कर, ॐ ह्री पद्म वज्रे नम. इस मन्त्रको १०८ बार नित्य जपे, रूद्राक्ष की माला से दक्षिण की ओर मुख कर जपने से और यन्त्र मन्त्र को पास में रखने से सर्व घोरोपसर्ग दूर होवे, सुख हो महाभय दूर हो।

श्लोक

भृंगी काली कराली परिजन सहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये।
क्षां क्षी क्षूं क्ष: क्षणार्द्धेक्षतरिपुजिवहे ह्री महामन्त्र रूपे।
भ्रा भ्री भ्रू भ्र भृ गसग भृकुठि पुट तटे त्रासि तोछाम दैत्ये।
भ्रा भ्री भ्रू भ्र. प्रचण्डे, स्तुति शत मुखरे रक्ष मा देवी पद्मे ॥ ४ ॥

यन्त्र नं० ४

टीका
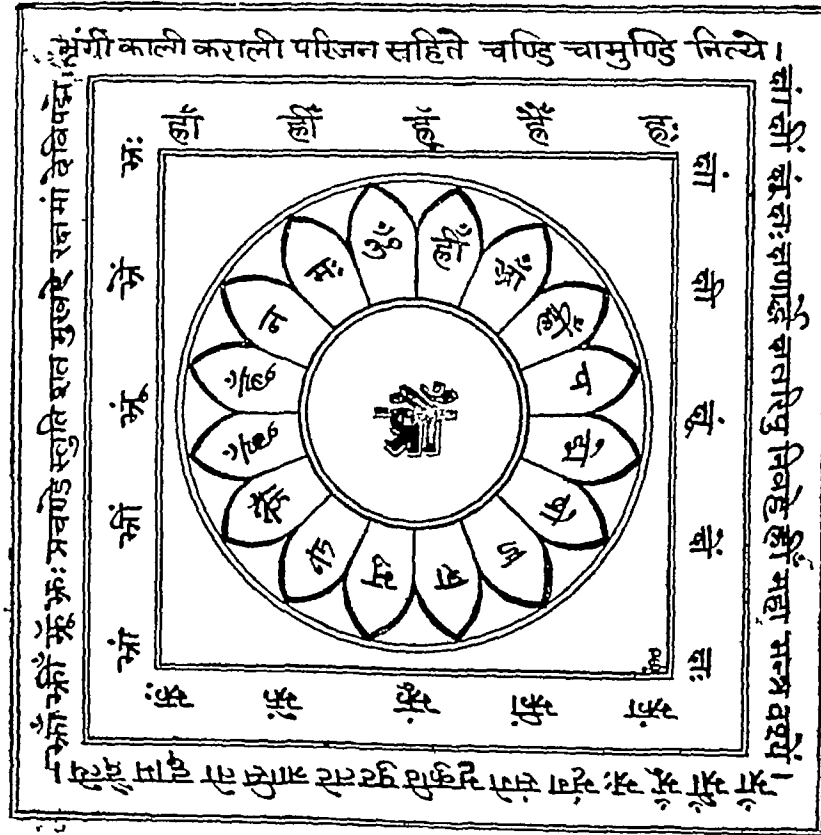
चतुर्थ काव्यस्थ, प्रौ, बीज षोडशा क्षरै मन्त्र। ॐ ह्री भ्रां ह्री पद्मे षोडश भुजे

प्रीं ह्ल्ू ह्ल्ू नम , अनेन मन्त्रेण पूर्वादि ग् मुखम्. रक्तासन, रक्तमाला १०८ शत जाप्य कृत्वा स्थान लाभ भवति ।

यन्त्र रचना

षोडशदल कमल कृत्वा तन्मध्ये, प्रो, बोज लिखेत्, दल मध्ये क्रमश , ॐ ह्री आ ह्री पद्मे पोडश भुजे प्री ह्ल्ू ह्ल्ू नम , एतत्मन्त्र लिखेत् तदुपरि पूर्वे, क्षा क्षी क्षू क्षे क्ष., पश्चिमे भ्रा भ्री भ्रू भ्रे भ्र , दक्षिणे भ्रॉ भ्री भ्रू भ्रे भ्र , उत्तरे ह्ला ह्ली ह्लूं ह्लें ह्ल लिखेत्, अयं प्रकारेण यत्र कृत्वा । काव्य मन्त्र यन्त्र पार्श्वे रक्षणात्, राजा प्रसन्न भवति शत्रु नाशनं भवति, स्त्री पुरुप वश्य भवति ।। ४ ।।

इस चतुर्थ काव्य के यन्त्र मन्त्र व काव्य को सुगन्धित द्रव्य से लिखे, भोज पत्र अथवा सोना चाँदी ताँबा के ऊपर लिख कर पास मे रखने से स्थान लाभ होता है, राजा प्रसन्न होता है, शत्रु का नाश होता है और स्त्री पुरुष वश्य होते हैं। मन्त्र का १०८ बार जाप पूर्व दिशा मे मुख कर लाल माला से, लाल आशन पर बैठ कर जाप करे।

काव्य नं० ५

चचत्काची कलापे स्तन तट विलुठ त्तार हारा वली के ।
प्रोत्फुल्ल त्पारिजात द्रुम कुसुम महा मजरी पूज्यपादे ।
द्राँ द्री क्ली ब्लू ब्री समेते भुवन वसकरी क्षोभिणी द्राविणीत्व ।
आँ ऐं ओ पद्महस्ते कुरू २ घटने रक्षमा देवो पद्मे ।। ५ ।

यन्त्र लेखन विधि

षोडश दल कमल कृत्वा, तन्मध्ये, क्लो बीज दलेषु । ॐ ह्रो श्री हं सू क्ली त्रिभुवन वस्य कराय ह्री नम , एतन्मन्त्र लिखेत् तदुपरि द्राँ द्री द्रू द्रे द्र एतत्पंच वर्णो पूर्वे लिखत्। क्लो ब्लू क्ली ब्लू क्ली उत्तरेलिखेत् । आ ई आ ई आ, दक्षिण लिखेत्, ॐ ॐ ॐ रक्ष पश्चिमोलिखेत्, अनेन् प्रकारेण यत्र कृत्वा, नाना प्रकारै पुष्पै अष्टद्रव्ये पूजन कार्य ।

यंत्र नं० ५

फल

क्ली बीज षोडसा क्षरै मत्र। ॐ ह्री श्री ह्स्वली त्रिभुवन वश्य-कराय ह्री स्वाहा। अनेन मन्त्रेण उत्तराभि मुखंकृत्वा, कमल बिजस्य मालास्तु कमलासन कृत्वा शुद्ध वस्त्रं तु जाप्यं द्वादश सहस्त्रेन् १२००० जाप्य कृत्वा, सर्वजन प्रीतिर्भवति, राजसभा सर्वजन वश्य भाग्य सर्व लक्ष्मी लाभो भवति यन्त्र मन्त्र काव्य प्रभावात्सुखं भवति।

इस यन्त्र को सुगन्धी द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर अथवा सोने चाँदी वा ताँबे के पत्रे पर लिख कर मन्त्र का १२००० जाप करे। उत्तर की तरफ मुख करे, कमल बीज की माला और कमलासन शुद्ध वस्त्र से मन स्थिर करके, जाप करने से और यन्त्र की पुष्पो से और अष्ट द्रव्य से पूजा करने से सर्वजन प्रिय होता है। राजसभा मे सर्व जन वश्य होते है। भाग्य खुलता है। लक्ष्मी का लाभ होता है। जपने वाला मन्त्र—ॐ श्रीं ह्री ह्स्क्ली त्रिभुवन वश्यंकराय ह्री स्वाहा॥ ५॥

काव्य नं० ६

लीला व्यालोल नीलोत्पल दलनयने प्रज्वल द्वाड वाग्नि ।
उद्यज्ज्वाला स्फुलिग स्फुरु दरुण करुदग्र वज्रांग हस्ते ।।
ह्राँ ह्री ह्रू ह्रौ ह्र ह रति हर हर हर हू कार भीमैक नादे ।
पद्मे पद्मासनस्ये व्यय नय दुरित रक्षमा देवी देवेन्द्र व घे ।।६।।

यन्त्र रचना विधि

एकोन विशंति दलै कमल कृत्वा, तन्मध्ये प्ल्रौ वीज लिखेत् दले अष्टादशा क्षरै मन्त्रलिखेत् । ॐ नमो पद्मावती सर्व कामना सिद्धि ह्रा ह्री नम., लिखेत्, तदुपरि ह्रा ह्री ह्रौ ह्र हर हर हूँ आँ क्रो नम:, एतत् अक्षराणा यन्त्र वेष्टयेत् अष्ट द्रव्येन पूजन कृत्वा मन्त्र जाप्यकुर्यात् ।।

यन्त्र न० ६

फल
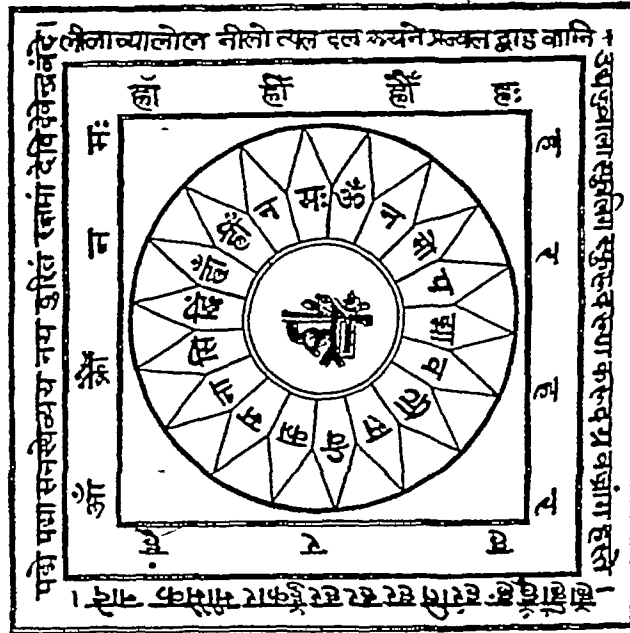
पष्टम् काव्यस्य प्ल्रौ वीज, अष्टादशाक्षरै मन्त्र, अनेन मन्त्र काव्य यन्त्र प्रभावेन

विद्या सिद्धि र्भवति सर्प विष शत्रू भय नाशन भवति, अनेन मन्त्रेण पूर्वाभिमुख कृत्वा तथा रक्त माला रक्तासन, अष्टोत्तर सत जाप्य कुर्यातविद्यासि द्धिर्भवति ।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अथवा सोना चाँदी, ताँबे के पत्रे के ऊपर लिख कर सुगधित द्रव्य से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे । १०८ बार मन्त्र का जाप करे तो विद्या सिद्ध होती है सर्प विष शत्रु भय नाश होता है । मन्त्र पूर्व दिशा मे मुख कर, लाल आसन पर बैठ कर लाल माला से जाप करे जाप का मन्त्र –ॐ नमो पद्मावती सर्वकामना सिद्धि ह्रॉं ह्रीं नमः ।

काव्य नं० ७

कोपं व ज स ह सः कुवलय कलितोद्दाम लीला प्रबधे ।
झ्रा झ्री झ्रू झ्रः पवित्र शशिकर धवले प्रक्षरक्षीर गौरे ।
व्याल व्याबद्ध जूटे प्रबल बल महाकाल कूट हरति ।
हा हा हूँ कार नादेकृत कर कमले रक्षमा देवी पद्मे ।। ७ ।।

यन्त्र रचना

सप्तम काव्यस्य, क्म्ल्व्र्यूँ बीज, अष्टादशा क्षरै मन्त्र, ॐ ह्री धरणेन्द्र पद्मावति विद्या सिद्धि

यन्त्र न० ७
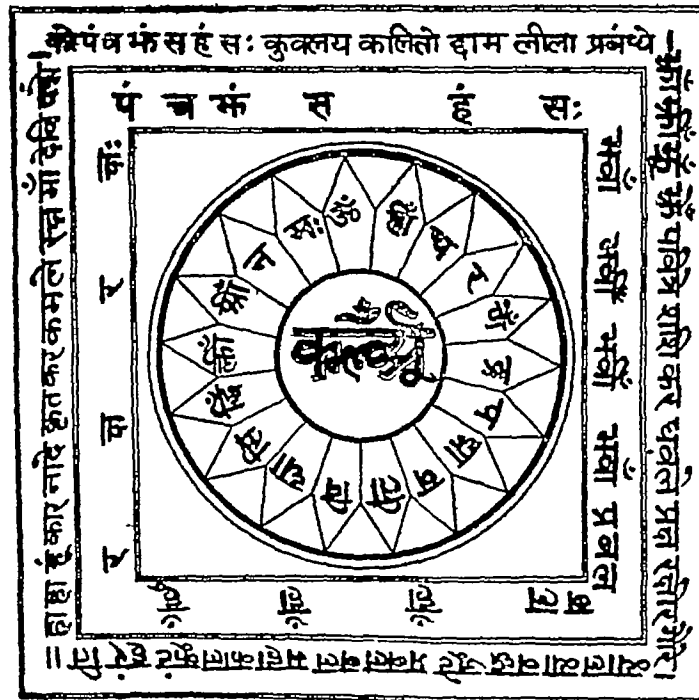
क्ली श्री नम. । अनेन मन्त्रेण पूर्वदिग् तथा उत्तराभिमुख कृत्वा, माना सहस्त्र जाप्य कृत्वा। वुद्धि प्रवल भवति सौभाग्य विस्थाप्य, दलेषु अप्टा दशाक्षरै । ॐ ह्रीं धरणेद्र पद्मावति विद्या सिद्धि क्ली श्री नम , लिखेत्, तदुपरि प च भ स ह् स ह्वा ह्वी ह्वा ह्वा प्रवल वल ह्राँ ह्राँ ह्रू रक्ष रक्ष, एतत् अक्षरेन वेष्टयेन् ।

फल

यन्त्र रचना सप्त मोयन्त्र अष्ट द्रव्येन पूजन कृत्वा, काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् राज कोपरोगादि भय व्यतरादि दोष उच्चाटनादि भय नष्ट भवति वदि मोक्ष वल पराक्रामस्य वृद्धि भवति ।

इस यन्त्र के प्रभाव से राज्य का कोप मिटे। रोगादि भय नाश होय। व्यतरादि दोष का और उच्चाटनादि दोष का भय दूर हो। वदिखाना से छुटे। बल पराक्रमा की वृद्धि होय। इस यन्त्र को सुगधित वस्तुओ से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे।

काव्य नं० ८

प्रतर्वाला वर्त्तरस्मिछुरित घन महा सॉद्रसिंदूर धूली ।
सध्या रागारूणागी त्रिदश वर वधू वंद्य पादार विंदे ।
चचच्चडासिधारा प्रहृतरिपु कुलेकुं डलो घृष्ट गंडे ।
श्रा श्री श्रू श्र स्मरति मद गज गमने रक्षमाँ देवी पद्मे ।। ८ ।।

यन्त्र रचना

दशदल कमल कृत्वा तन्मध्ये म्ल्व्र्यूँ स्थाप्य, कमलेषु, ॐ ह्रीं पद्मे श्रा श्री श्रू श्र नम , एतत् मन्त्र लिखेत् तदुपरि चतुर्दश ह्रों कारेन वेप्टयेत् तदुपरि काव्य लिखेत् तत्पश्चात् अष्ट द्रव्येन पूजन कृत्वा, काव्य, मन्त्र, यन्त्र, पार्श्व रक्षणात् अस्य प्रभावेन् सर्वलोके पूजनीक भवति, धन धानयसस्य वृद्धिभवति सर्व भय नश्यति, देव समसुखि भवति ।

फल

अष्टम काव्यस्य म्ल्व्र्यूँ वीज, दश.क्षरै मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मे श्राँ श्री श्रू श्र. नम , अनेन् मन्त्रैण, अष्टात्तर शत् १०८ दिने कमल पुष्प मध्ये वीजाक्षर मन्त्राक्षर सयुक्त लिखेद्, कर्पूर कस्तूरिकाया, प्रात समये भक्षण कृत्वा, तस्य पुरूषस्य आयुचिर भवति,लक्ष्मी लाभ भवति निश्चयेन ।

यंत्र नं० ८
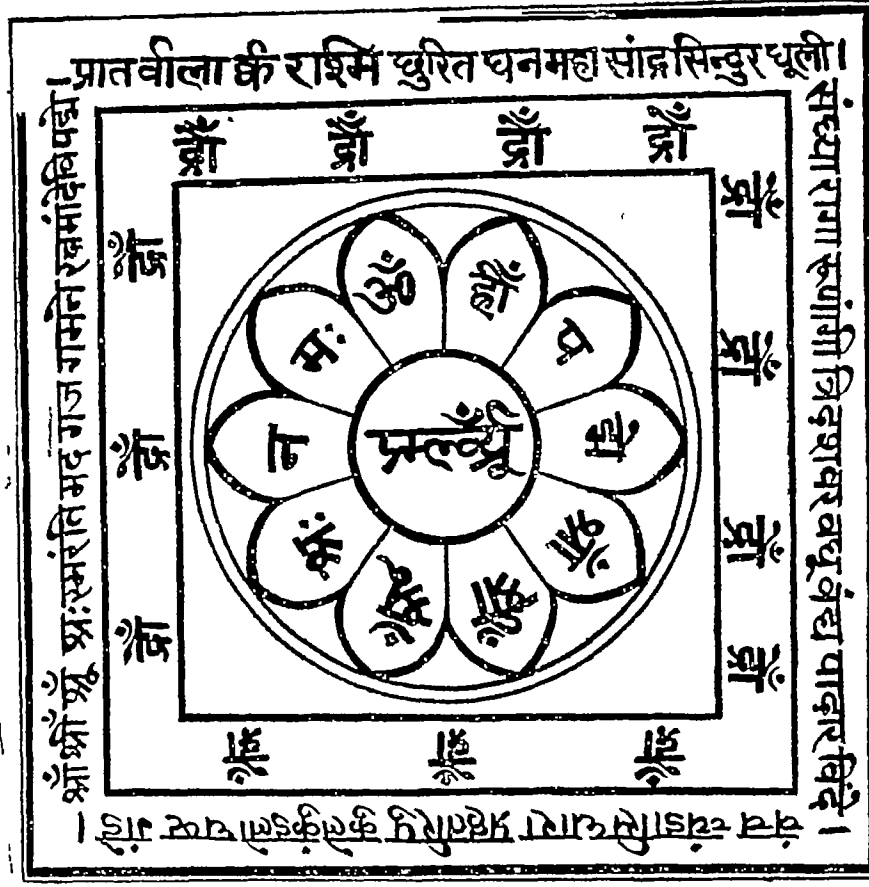
इस यन्त्र मन्त्र काव्य को सुगन्धि द्रव्य से लिख कर, फिर अष्ट द्रव्य से यन्त्र की पूजा कर, पास में रक्खे, यन्त्र को ताँबे अथवा चाँदी सोना वा भोजपत्र पर लिख कर पास मे रक्खे तो, सर्वलोक मे पूजा को प्राप्त होता है। यश की प्राप्ति होती है, धन धान्य की वृद्धि होती है। देवता समान पूजा को प्राप्त होता है, सुखी होता है, और किसी भी बात का भय नही रहता है।

विशेष मन्त्र - ॐ ह्री पद्मे श्रा श्री श्रू श्र: नम इस मन्त्र को १०८ दिन मे, कमल पुष्प के अन्दर बीजाक्षर और मन्त्राक्षर कर्पूर और कस्तूरी से १०८ दिन तक लिखे फिर प्रात: समय १०८ दिन तक भक्षण करे तो उस पुरूष की आयु बढती है। लक्ष्मी लाभ होता है, राजद्वार मे मान्यता मिलती है। और अत्यत सुखी होता है।

नोट जहाँ आयु बढाने की यन्त्र विधि लिखी है उस विधि मे ऐसा भी अर्थ बनता है, कि कर्पूर कस्तुरी को भक्षण करके १०८ दिन, मे बीजाक्षर सहित मन्त्र को कमल पुष्प के अन्दर १०८ दिन तक प्रतिदिन लिखे।

काव्य नं० ९

विस्तीर्णे पद्मपीठे कमल दल निवासोचिते काम गुप्ते ।
लां ता ग्री श्री समेते प्रहसित वदने दिव्यहस्ते प्रशस्ते ।
रक्ते रक्तोत्पलाङ्गि, प्रतिवहसि सदावाग्भवं काम बीज ।
हसा रूढे, त्रिनेत्रे भगवति वरदे, रक्षमा देवी पद्मे ।। ९ ।।

यन्त्र रचना

विंशति दल कमल कृत्वा, तन्मध्ये प्लो बीज स्थाप्य, दल मध्ये, ॐ ह्री श्री धरणेन्द्र पद्मावति बल पराक्रमाय नम एतत्मन्त्र लिखेत् । तदुपरि ॐ ह्री श्री पद्मावति ला ता ग्री श्री क्री द्रौ र रौ भ्रौ भ्री ह्री ह्रा ह्री वाग्भवे नम, एतत् अक्षरेन यन्त्र वेष्टयेत् यन्त्रस्य अष्ट द्रव्येन पूंजन कृत्वा । काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् सर्व क्षेम कुशल भवति ।

यन्त्र नं० ९
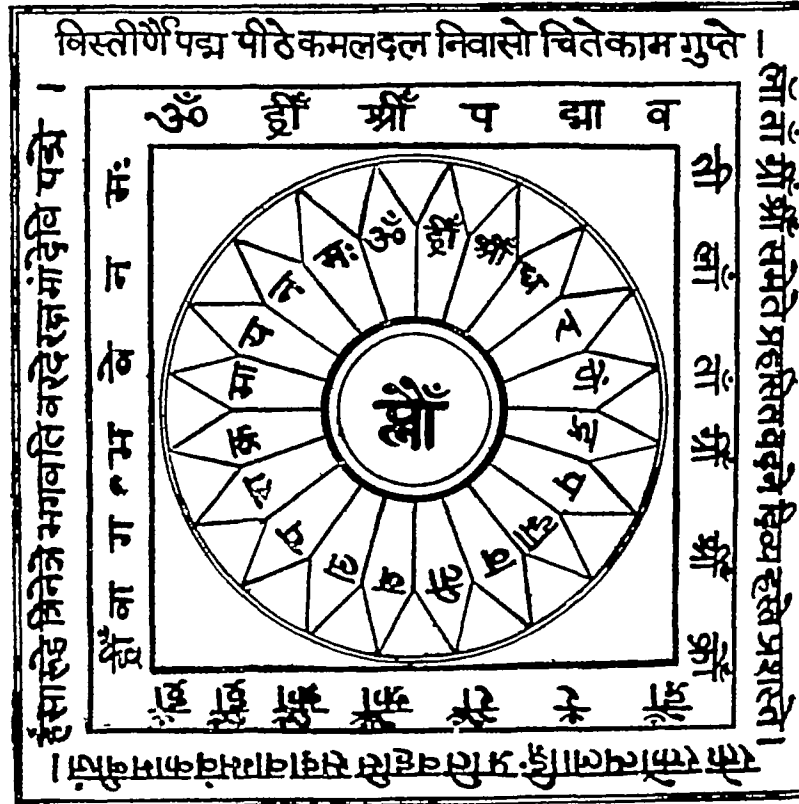
फल

नवम काव्यस्य प्लौं बीजं विसत्यक्षरै मन्त्र। ॐ ह्री श्री धरणेंद्र पद्मावति बल पराक्रमाय नम। अनेन् मन्त्रेण पूर्वाभि मुख पीत वस्त्र, पीतासने सहस्त्र द्वयं जाप्यं कृत्वा एक विंशति दिने मन्त्र सिद्धि र्भवति, राज्य स्थानलाभं भवति।

इस यन्त्र के मन्त्र को पूर्व में मुख करके पीला वस्त्र पहन कर पीली माला से दो हजार जाप पीले आसन पर बैठ कर २१ दिन तक करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है फिर यन्त्र पास मे रक्खे। यन्त्र सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे और यन्त्र की अष्ट द्रव्य से पूजा करे। काव्य मन्त्र यन्त्र का नित्य ही स्मरण करे, तो नया स्थान का लाभ हो और नाना प्रकार की संपदा का लाभ होता है। शत्रु तो सन्मुख भी इस यन्त्र के प्रभाव से नही आवे। मन्त्र जपने का—ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्र पद्मावति बलपराक्रमाय नमः।

काव्य नं० १०

षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणव वरयुते वाग्भवे। काम राजे।
हसारूढे सविन्दो विकसित कमले कर्णिकाग्रे निधाय।
नित्ये क्लिन्ने मदाद्रे द्रवयसि सततं सां कुसे पास हस्ते।
ध्यानात् सक्षोभयन्ति त्रिभुवन वशकृद् रक्षमाँ देवी पद्मे॥ १०॥

यन्त्र रचना

षट कोण यत्रं कृत्वा, ऐ बीजं मध्ये स्थापयेत, तत्पश्चात् क्लीं ऐं ह्री श्री नमः स्थापयेत् तदुपरि षट् कोणे एकविंशति क्ली कारेन वेष्टयेत् अष्ट द्रव्येन पूजन कृत्वा एकाग्रचित्तेन साधयेत्। काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् तथा यन्त्र पार्श्वे रक्षणियात् अस्य प्रभावेन लक्ष्मी लाभो भवति राजा प्रसन्न भवति, देव आशोर्वाद ददाति प्रत्यक्ष भवति अस्य प्रभावात्।

फल

दशम काव्यस्य ऐ बीज वाग्भव शक्तिः दशाक्षरै मन्त्र ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं ह्लां ह्लीं ह्लू नम, अनेन् मंत्रेण जाप्य कृत्वा वृहस्पति समानं भवति द्वादश सहस्त्रं श्वेत जाति पुष्पेन् जाप्य कृत्वा। वृहस्पति समबुद्धि र्भवति। एक त्रिंशदिन मध्ये ब्रह्मचर्यात् जाप्यं कुर्यु एक स्थाने स्थित्वा, एकासन कृतत्वा द्वादश सहस्त्र जाप्यं कृत्वा।

यन्त्र न० १०
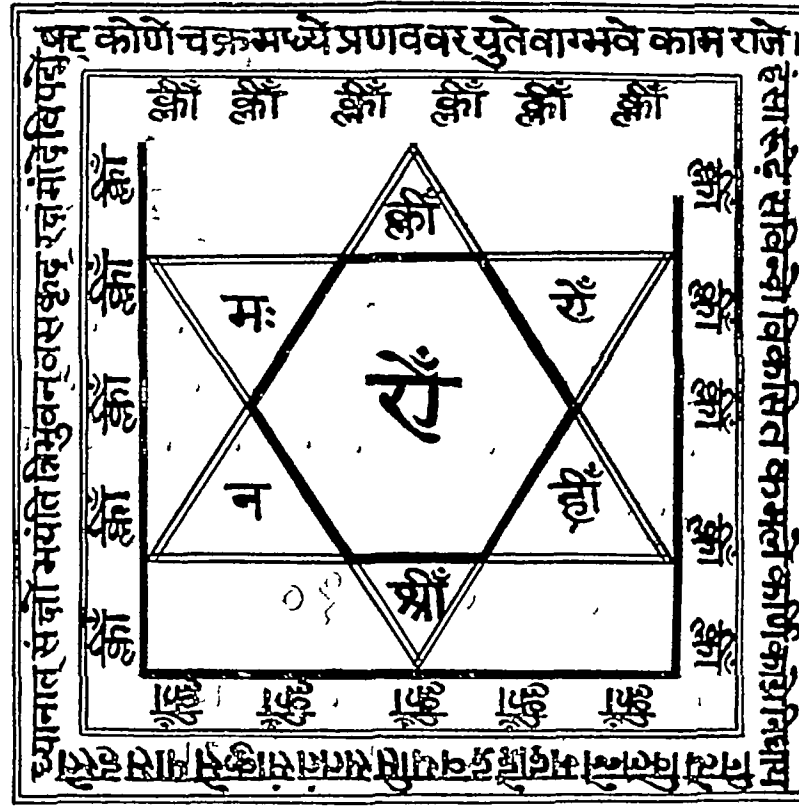
इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे अथवा सोना, चाँदी, ताँबा के पत्रे पर लिख कर अष्ट द्रव्य से यन्त्र की पूजा करे फिर मन्त्र का जाप ३१ दिन मे १२००० (बारह हजार) जाप एकासन करता हुआ दीप धूप विधान से ब्रह्मचर्य रखता हुआ जाति पुष्प (जाइ) फूल से करे तो वृहस्पति समान बुद्धि होती है। यन्त्र को पास मे रखने से अत्यत लक्ष्मी लाभ होता है। राजा प्रसन्न होता है। देव प्रत्यक्ष होकर वरदान देता है।

काव्य नं० ११

आ क्रो ह्री पच वर्णे लिखित प्रवर षट् चक्र मध्ये हस क्ली।
क्रो क्रो प्रश्रा तगले स्वरपरि कलिते वायुना वेष्टि तागी।
ह्री वेष्टया रक्त पुष्पै र्जप्ति दल महा क्षोभणी द्राविणीत्व।
त्रैलोक्य चालय ति सपदि जनहिते रक्षमा देवी पद्मे ॥ ११ ॥

यन्त्र रचना

षट दल कमल कृत्वा प बीज, मध्ये स्थापयेत् षट क्षरै ह स क्ली क्रों क्रा ह्री बीजा क्षरैन् वेष्टयेत् आ क्रो ह्री श्री पद्मे एतत् अक्षरेर्न् पट् दल कमल मध्ये लिखेत्। तदुपरि षोडश ह्री कारेन् वेष्टयेत् वायुतत्व मध्ये, यत्र साधयेत् रक्तपुष्प अष्ट द्रव्येन पूजन कृत्वा यन्त्र मन्त्र साधनात चितित कार्यस्य सिद्धि भवति, शत्रु क्षययाति लक्ष्मी लाभो भवति, सद्गति प्राप्ति भवति।

यन्त्र न० ११
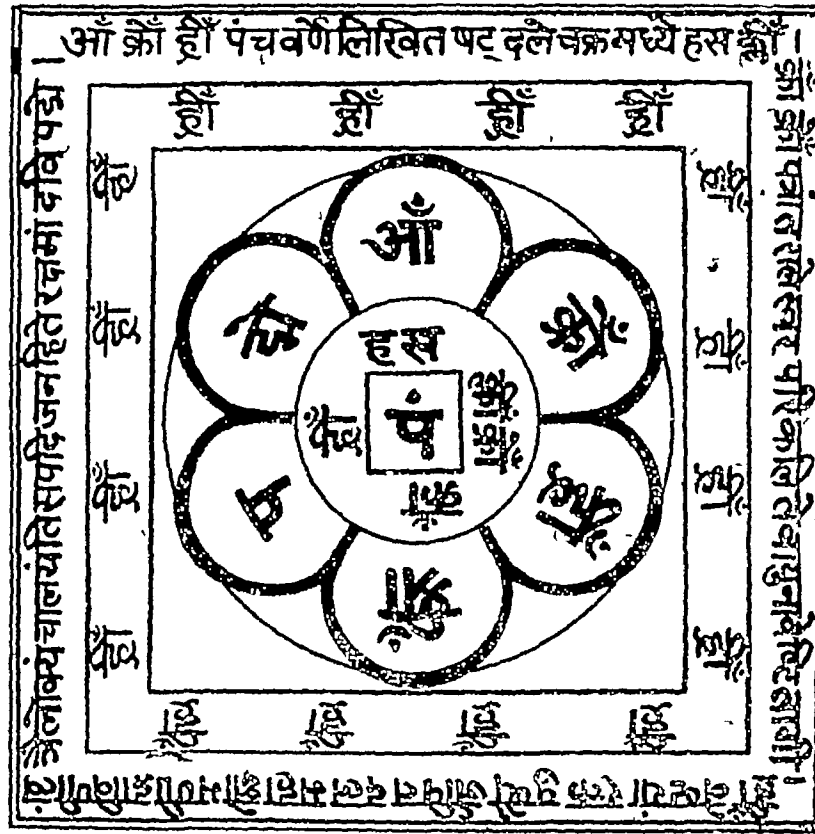
फल

एकादशम काव्यस्य पं बीज, द्रो, शक्ति षोडशाक्षरै मन्त्र, ॐ ह्री श्री आ क्रो ह्री क्ली क्रो ह्री ए पद्मावती नम, अनेन मत्रेण पूर्व दिशा मुख कृत्वा द्वादश सहस्त्र जाप्य १२००० रक्त पुष्पेन् कृत्वा, मन्त्र सिद्धिर्भवती मन्त्र प्रभावात् सर्व जनप्रियो भवति, अस्य प्रभावात् चक्रवर्ति समान भवति, सर्व जन वशी भवति। भाग्योदय भवति।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखे, अथवा सोना, चादी, तावा, के पत्रे पर अष्ट द्रव्य से खुदवा कर और लाल पुष्प से यन्त्र की पूजा करे तो, चिंतित कार्य की सिद्धि होती है। शत्रु नाश को प्राप्त होता है। लक्ष्मी का लाभ होता है। सद्गति की

प्राप्ति होती है। ॐ ह्री श्री भ्रा क्रो ह्ली क्ली क्रो ह्रो ऐ पद्मावति नम, इस मन्त्र को पूर्व दिशा मे, मुख करके बारह हजार लाल फूल से जाप करे तो मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के प्रभाव से समस्त पृथ्वी के लोग चरणो मे आकर पडे, चक्रवर्ति के समान भाग्यो दय करता है।

काव्य नं. १२

ब्रह्माणी कालरात्री भगवती वरदे चडि चामु डि नित्ये।
मात गाधारि गौरी धृति मति विजये कीर्ति ह्री स्तुत्य पद्मे ।
संग्रामे शत्रु मध्ये ज्वलद नल जले वेष्टि तैर्स्यै. सुरास्त्रै.।
क्षा क्षी क्षु ं क्ष क्षणार्द्धे क्षतरिपु निवहे रक्षमा देवी पद्मे ॥ १२ ॥

यन्त्र रचना

षोडश दल कमलं कार्य, मध्ये क्ष्म्ल्व्यूं स्थाप्य, दले षोडश देव्या । ॐ ब्रह्माणी ॐ कालरात्री, ॐ भगवते, ॐ सरस्वती, ॐ चडी, [ॐ चामुडायै, ॐ नित्यायै, ॐ मातायै, ॐ गांधारी, ॐ गौरी, ॐ धृति, ॐ मति, ॐ विजय, ॐ कीर्ति, ॐ ह्री नमः, ॐ पद्मावत्यै नम, लिखेत् पश्चात् यन्त्रस्योपरि चतुर्कोणे क्षा क्षी क्षू क्ष, लिखेत् तदुपरि काव्य लिखेत् यन्त्रस्य अष्ट द्रव्येन् पूजन कृत्वा, काव्य, यन्त्र, मन्त्र, पठनात् शत्रु भय न भवति, शत्रु उन्मत भवति नाश भवति शत्रुस्य मरण भवति यन्त्र साधन प्रभावात मन्त्रात् मिरचकाया म त्रित्वा होम कुर्यात् शत्रुस्य निश्चयेन मरण भवति।

फल

द्वादश काव्यस्य क्ष्म्ल्व्यूं बीज, माया शक्ति पंचविंशति अक्षरै मत्र ॐ ह्री श्री प्रौ प्रौ क्ली क्रौ पद्मावति धरणेंद्र सहिताय क्षा क्षी क्षू क्ष नम अनेन् मन्त्रेण, हस्तार्क, वा मूलार्क वा पुष्पार्क दिने पंचविंशति सहस्त्रेण २५००० दक्षिणदिशा साधन कृत्वा कृष्ण पुष्पेन होम, कृष्ण माला जाप्य कृत्वा, शत्रुस्य मरण भवति, सग्राम विषये जय भवति।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखे अथवा सोना, चादी, तादा के पत्रा पर खुदवा कर यन्त्र की अष्ट द्रव्य से पूजा करे फिर मन्त्र की साधना करे, मन्त्रः—ॐ ह्री श्री प्रौ प्रौ क्ली क्रो पद्मावती धरणेन्द्र सहिताय क्षा क्षी क्षू क्ष नम इस मन्त्र को काली

यन्त्र न० १२
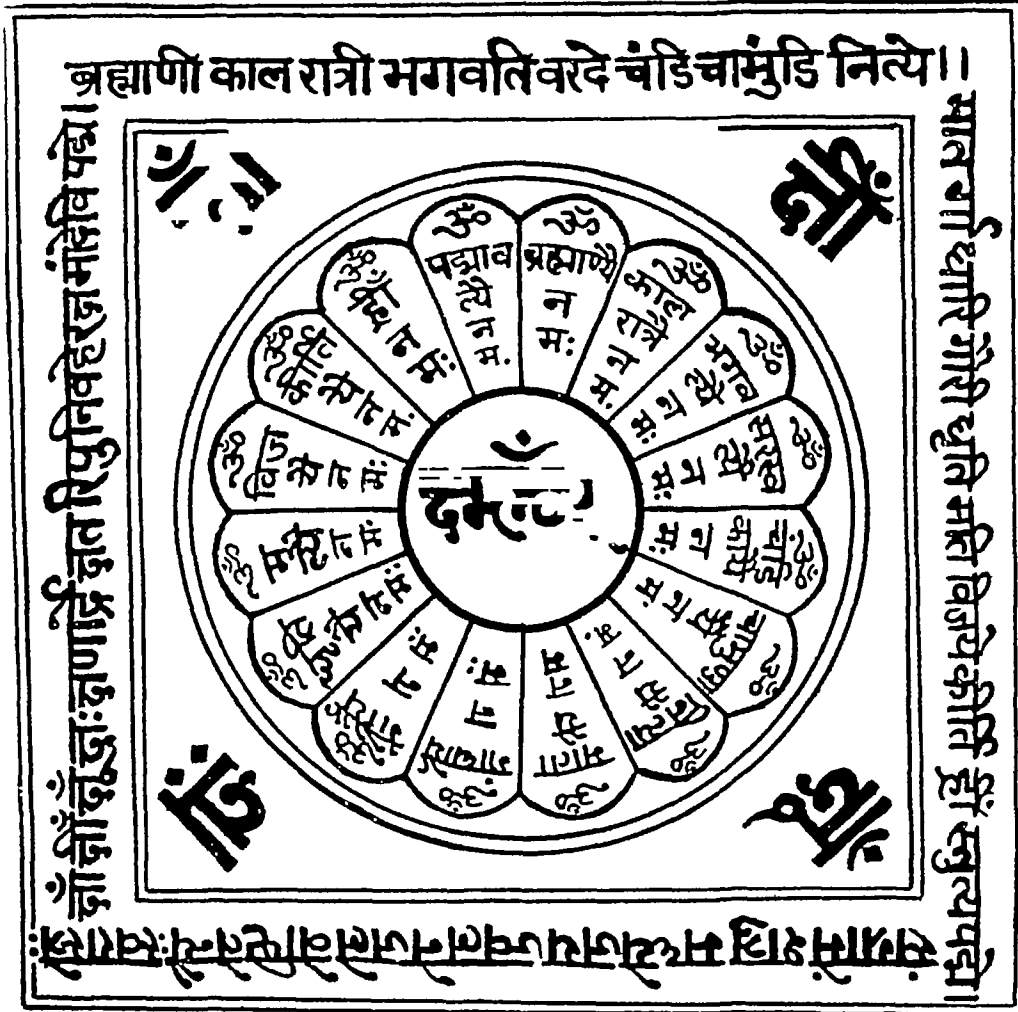
माला से और काले पुष्प से पचीस हजार (२५०००) रविहस्त नक्षत्र मे अथवा रविमूल नक्षत्र मे वा रवि पुष्यामृत दिन मे जाप करे काले फूल से होम करे, तो शत्रु मरे और सग्राम मे जय हो। काव्य, यन्त्र, मन्त्र, के पढने से और पूजन करने से शत्रु मरे वा भृष्ट होय, शत्रु पागल हो जाय, और मन्त्र से मिर्च मत्रीत कर होम करे, तो शत्रु का मरण हो जावे।

काव्य नं. १३

खड्गै को दंड कांडै मुसल हलधरै वाण नाराच चक्रै।
शक्त्या सल्य त्रिशुलै वर फण ससरै मुद्गरैर्मुष्टि दडै।
पासैपापाण वृक्षै वर गिर सहितैरिष्ट शस्त्रै र्मल्यै।
दुष्टानां दारयंति वर भुज ललिते रक्षमा देवी पद्मे ।। १३ ।।

यन्त्र रचना

अष्टदल कमल कृत्वा भम्ल्व्यूं मध्ये स्थाप्य, अष्टाक्षर मन्त्र, ॐ ऐं द्रां ह्रीं भ्रां ज्ञीं ह्रूं लिखेत् तदुपरि, ॐ शक्ति नम, ह्रीं शक्ति नम, श्रीं शक्ति नम क्लीं शक्ति नम, चतुर्दिक लिखेत्, अष्ट द्रव्येन च रक्त पुष्पै यन्त्रस्य पूजनं कृत्वा, एकाग्रित्तेन् यन्त्र मन्त्र साधन कुर्यात, अस्य प्रभावात् सर्व वाछासिद्धि भवति दिव्य दृष्टि भवति सर्व लोकस्य वशीकरण भवति।

यन्त्र न० १३
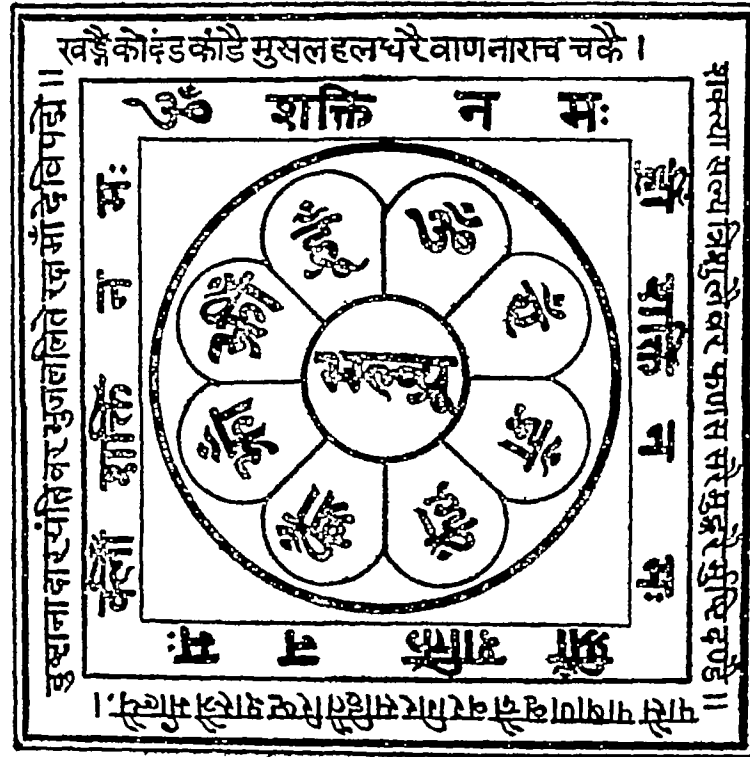
मन्त्र साधन विधि

त्रयोदश काव्यस्य भम्ल्व्यूं बीज, दड शक्ति चतुर्विशति अक्षरै मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मावति उपसर्ग भय निवारय ह्रां प्रौं क्लीं ह्रीं नम, अनेन मन्त्रेण द्वादश सहस्त्रेन १२००० उत्तरदिशा जाप्य कृत्वा हीखणीस्य—होम कुर्यात्तर्हि विद्या सिद्धि भवति, चिंतित कार्य भवति, होमस्य भस्म तथा मिष्ठान्नसह खादयेत् तर्हि स्त्री पुरुष वश्य भवति।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर लाल फूल और अष्ट द्रव्य

से पूजन करे। एकाग्र मन से मन्त्र की साधना करे तो मन वांछित कार्य की सिद्धि होय। दिव्य दृष्टि होय वशीकरण होय।

ॐ ह्री पद्मावति उपसर्ग भय निवारय ह्रा प्रौ क्ली ह्री नम, इस मन्त्र का बारह हजार उत्तर दिशा मे मुख करके जाप करे (हीखणी) का होम करे तो विद्या सिद्धि होय। मन मे चिन्तन करे तो कार्य होय, मिष्ठान्न और होम की राख दोनो मिलाकर जिसको खिलावे, पुरूष वा स्त्री वश्य होय।

नोट—इस यन्त्र मन्त्र की विधि मे हीखणी द्रव्य का होम करे, लिखा है सो (हीखणी) क्या वस्तु है सो अर्थ समाज मे नही आया है। हमने भी जैसा था, वैसा लिख दिया है।

(हीखणी) शब्द का अर्थ मेवाडी भाषा में नाशिका सु गने वाली को कहते है। और गुजराती भाषा मे ही वणी कपास होता है। यहा हीरवणी कपास ही होता है। उसका होम करे।

काव्य नं. १४

यस्या देवै नरेंद्रै र मरपतिगणै किन्नरै दानवेंद्रैः।
सिद्धै र्नगेन्द्र यक्षै र्वर मुकुट तटै धृष्ट पादारविंदै।
सौम्ये सौ भाग्य लक्ष्मी दलित कलिमले पद्म कल्याणमाले।
अबे काले समाधि प्रकट्य परम रक्षमा देवी पद्मे॥ १४॥

यन्त्र रचना

एक विंशति दल कमल त्रित्वा, मध्ये, अ्म्ल्व्यूं स्थाप्य, कमल दले, ॐ ह्री श्री पद्मावती सर्व कल्याण रूपे रा री द्रां द्री द्रों नम: लिखेत्, तदुपरि षोडश श्री कारवेष्टयेत् तदुपरि काव्य लिखेत्, नानाप्रकारेन् अष्ट द्रव्यै यन्त्र पूजन कृत्वा, बीज मन्त्र यन्त्र प्रभावात् स्वर्ग लोकस्य, यक्ष, किन्नर, देव, भूत भैर वादि सिद्धि भवति, राजा प्रजा, स्त्री, पुरूषादिक सर्व वश्य भवति, सौभाग्य लक्ष्मी ददाति। वद्धि मोक्ष भवति॥ १४॥

फल व साधन विधि

चतुर्दश काव्यस्य अ्म्ल्व्यूं बीज, माया शक्तिमेएक विंशति अक्षरै। मन्त्र–ॐ ह्री श्री पद्मावति सर्व कल्याण रूपे रा री द्रा द्री द्रो नमः। अनेन मत्रेण एक विंशति सहस्त्रेण २१००० जाप्य कृत्वा, उत्तर दिशा मुख कृत्वा, पीत वस्त्र परिधान्य। पीत पुष्पे सरसप च घृत

सयुक्त होमयेत् सहस्त्र एक विंशति । ४६ दिन मध्ये विद्या सिद्धि भवेत् । अस्य विद्या प्रभावात् देवा. प्रसन्नं भवति सौभाग्य, लक्ष्मी, प्राप्ति भंवति ।

इस यन्त्र को सुगधित द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे अथवा सोना, चादी, तावा के पत्रे पर यन्त्र लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे तो यन्त्र मन्त्र के प्रभाव से स्वर्ग लोक के देवता यक्ष, किन्नर, देव, भूत, भेरव की सिद्धि होय। राजा, प्रजा, स्त्री, पुरूषादिक सर्व वश्य होय, सौभाग्य, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, बधिखाने से छूटे ।

ॐ ह्रो श्री पद्मावति सर्व कल्याण रूपे रा री द्रा द्री द्रो नम । इस मन्त्र का २१००० (हजार जाप उत्त' दिशा मे मु ह करके पीले वस्त्र पहन कर जाप करे, पीली सरसो, पीले फूल और घी मिला कर २१००० हजार मन्त्र से होम ४६ दिन तक करे तो विद्या की सिद्धि होती है। प्रसन्न होय, सोभाग्य लक्ष्मी की प्राप्ति होय ।

यन्त्र न० १४
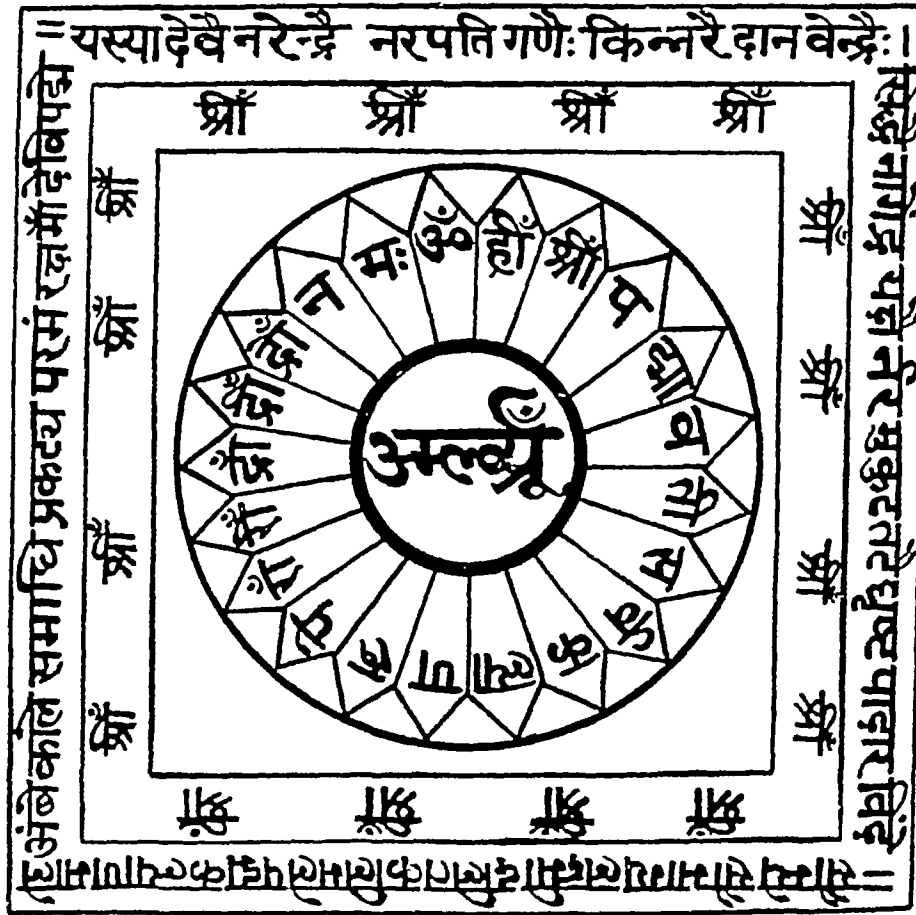
काव्य नं १५

धूपै श्चंदन तदुलै शुभ महागधैश्च मन्त्रालिकः।
नानावर्ण फलै विचित्र सरसै दिव्य मनो हारिभिः।
दीपैनै वेद्य वस्त्रैर नुभवनु करै भक्ति युक्त प्रदत्वा।
राज्यं हेत्वा ग्रहाण भगवति वरदे रक्षमां देवी पद्मे ॥ १५ ॥

यन्त्र रचना

चतुर्दश दल कमलं कृत्वा झ्म्ल्व्र्यूं बीजं मध्ये, स्थाप्य दलेषु मन्त्र। ॐ ह्री पद्मे राज्य प्राप्ति ह्री क्ली कुरू २ नम, लिखेत्। तदुपरि षोडश द्रों कारेन वेष्टयेत् तदुपरि काव्यं लिखेत्। पश्चात धूप दीप नैवेद्य, पुष्पेन पूजन कृत्वा, राज्य लाभं संतान प्राप्ति भंवति।

मन्त्र साधन विधि

पंच दशम काव्यस्य झ्म्ल्व्र्यूं बीजं रक्त दंता शक्ति चतुर्दशाक्षरै।

यन्त्र नं० १५
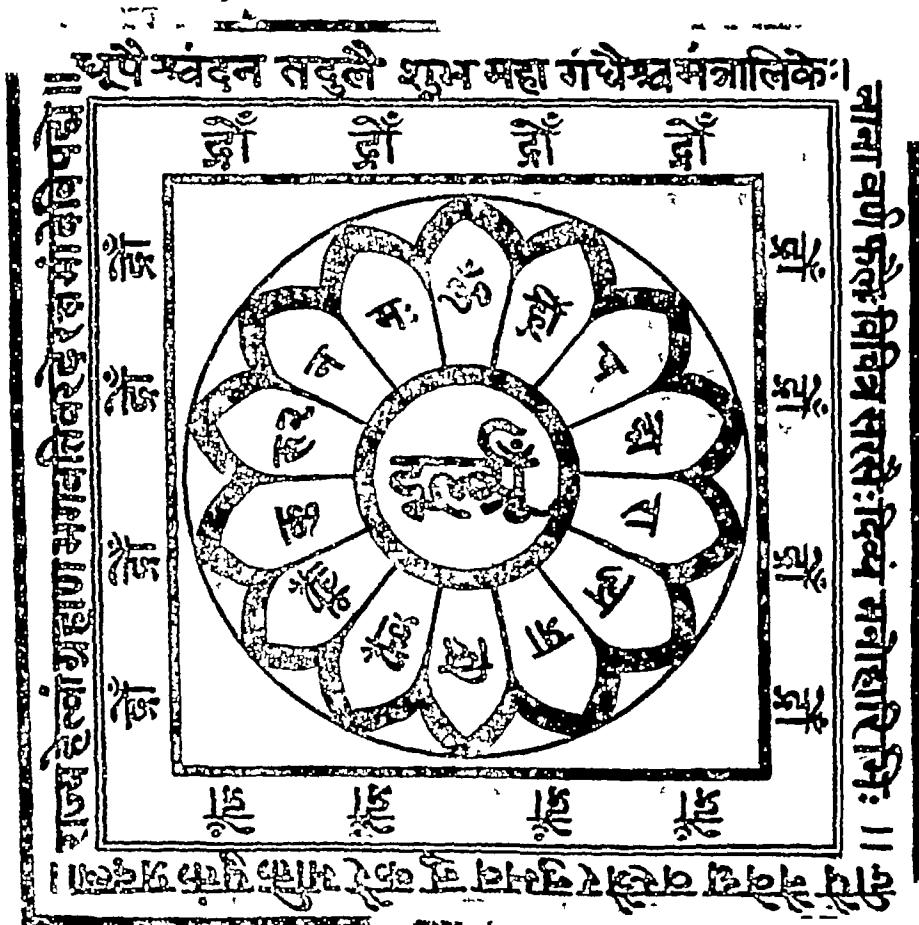
मन्त्र —ॐ ह्री पद्मे राज्य प्राप्ति ह्री क्ली कुरु २ नम । अनेन् मन्त्रेण पोडश सहस्त्र जाप्यं साधयेत, मास द्वयेन राज्य प्राप्ति भवति ।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर वा सोना चादी के पत्रे पर लिख कर धूप दीप नैवेद्य पुष्पो से यन्त्र की पूजा करे, तो राज्य का लाभ, सतान की प्राप्ति होती है। और मन्त्र का जाप सोलह हजार करके मन्त्र सिद्ध कर लेवे, तो दो मास मे राज्य की प्राप्ति होती है।

काव्य नं. १६

गर्ज्जन्नीरद गर्भ निर्गत तडित् ज्वाला सहस्त्र स्फुरित् ।
सद्वज्राकुश पास प कज करा भक्त्या मरै रचिता ।
सद्यपुष्पित पारिजात रूचिर दिव्य वपु विभ्रति ।
सामापातु सदा प्रसन्न वदना पद्मावती देवता ।। १६ ।।

यन्त्र रचना

प चविंशति दल कमल कृत्वा, म्ल्व्र्यूं मध्ये स्थाप्य, वीज दल मध्ये मत्राक्षर। ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय ह्री श्री व्रा व्री क्षा क्षी प्रो ह्री नम॰ लिखेत् । तदुपरि षोडश ॐ कारेन वेष्टयेत् पश्चात ऊपरि काव्य वेष्टयेत् वेष्टन कृत्वा । अष्ट द्रव्येन पूजन कुरु, यन्त्र, मन्त्र, प्रभावात् कुबुद्धिनाश भवति तथा पर कृत मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषनादिक कर्मनष्ट भवति दुष्टाना नाश भवति ।

मन्त्र साधन व फल

षोडशम काव्यस्य म्ल्व्र्यूं वीज, श्री शक्ति, प चविंशति म त्राक्षरे । ॐ नमो भगवते धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय ह्री श्री व्रा व्री क्षा क्षी प्रो ह्री नम । अनेन मन्त्रेण, अष्टादश सहस्त्रेन १८००० जाप्य कृत्वा श्वेत पुष्प श्वेत, सिद्धार्थ, व नारिकेल सयुक्त दिने होम कृत्वा, तत्मत्र सिद्धि भवति, तस्य प्रभावेन, वंध्या पुत्रवति भवति, नव प्रकारेन् वह्निभय न भवति ।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे। अथवा सोना, चांदी, व तावा, के ऊपर खुदवा कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे । तो दुर्बुद्धि का नाश होता है। और परकृत मारण, मोहन, उच्चाटनादिक कर्म का नाश होता है और दुष्टो का नाश होता है।

यन्त्र नं० १६
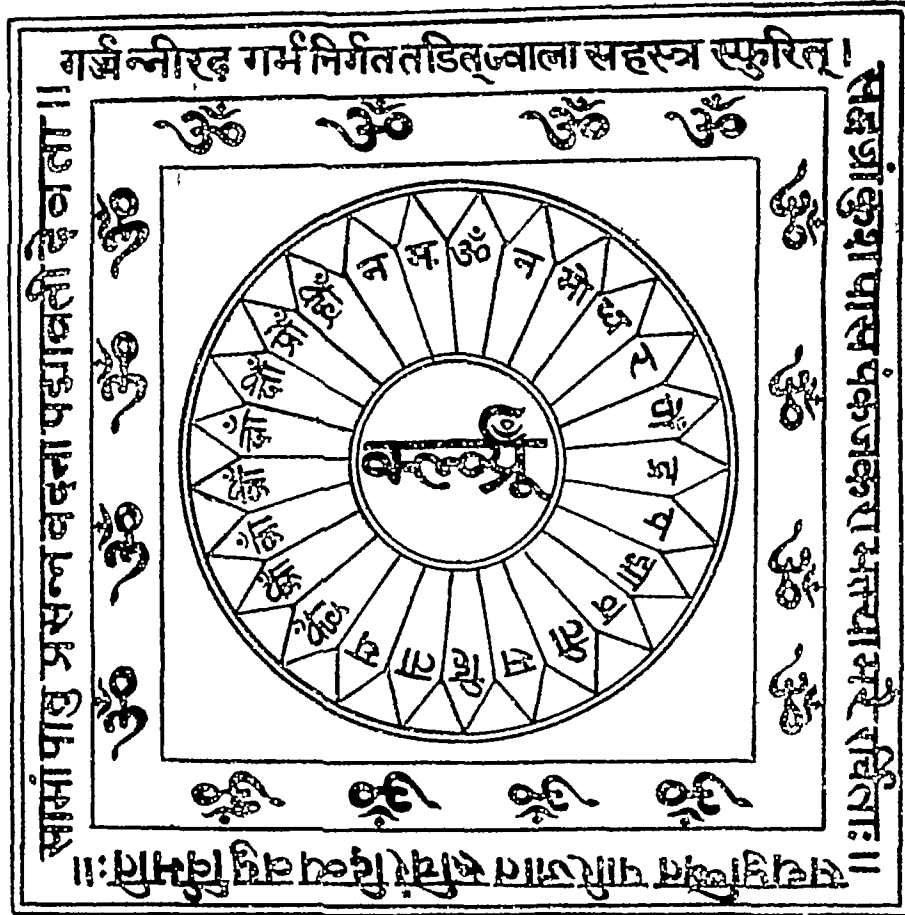
मन्त्र का जाप अठारह हजार (१८०००) जाप करके फिर सफेद फूल और सफेद सरसो और नारियल का गोला तीनो को मिलाकर होम करे, तो मन्त्र की सिद्धि होती है। मन्त्र के प्रभाव से वध्या स्त्री पुत्रवान होती है, और नो प्रकार की अग्नि का नाश होता है। यन्त्र मन्त्र और काव्य को पास मे रक्खे।

काव्य नं. १७-१८

तारात्व सुगता गमे भगवती गौरीति शैवागमे।
वज्रा कौलिक शासने जिनमते पद्मावति विश्रुता।

गायत्री श्रुत शालिन प्रकृति रित्युक्तासि साख्यागमे ।
मातर्भारति किं प्रभूत भणितै व्याप्त समस्त त्वया ।। १७ ।।
सजप्ता कणवीर रक्त कुसुमै. पुष्पेश्चिर सचितै ।
सन्मिश्रै घृत गुग्गुलोघ मधुभि कु डैत्रिकोणै कृत. ।
होमार्थं कृत षोडशागुल शताम वन्हौ दशास जपेत् ।
त वाच वदसिह देवी सहसा पद्मावति देवता ।। १८ ।।

अस्य काव्यस्य, ह , शक्ति, म्म्ल्व्यूँ बीज एकोन विशति क्षरैः । मन्त्र —ॐ ह्री श्री ऐ क्ली ह्रा प्रो आ क्रो पद्मावति रक्त रूपे नम । अनेन मन्त्रेण सवालक्ष १२५००० जाप्य कृत्वा, अष्टाग धूप, दीप, नैवेद्येन ।

यन्त्र रचना

पद्मावति स्वरूप रक्त वर्ण चतुर्भुजा, पद्मासना, अ कुश त्रिशूल, पास, कमल, हस्ते, देव्यापरि नवदल कमल कृत्वा, तत कमल परिदेप्यादलैः । ॐ ह्री श्री क्ली ऐ ह्रा प्रो ह्र र लिखेत् । अनेन मन्त्रेण, ॐ ह्री श्री ऐ क्ली ह्रा प्रो आ क्रो पद्मावति रक्त रूपे नम वेष्टयेत् तत् अग्ने होम कुड कृत्वा दशास होम कुरू ।

इस यन्त्र को पद्मावति के आकार का बना कर ऊपर नो कमल दल बनावे । उसमे ॐ ह्री श्री क्ली ऐ ह्रा प्रो ह्र र लिखे, ऊपरि ॐ ह्री श्री ऐ क्ली ह्रा प्रो आ क्रो पद्मावति रक्त रूपे नम लिखे, फिर होम कुंड बनावे। होम कु ड चोकोन अगुल २५ उसका विस्तार अगुल १०० उसके मध्ये मे योन्याकार कु ड अ गुल ६४ विस्तार मध्य मे करे । लाल कनेर के फुल, गुग्गुल, घी, कर्पूर, सहित मिष्टान, तिल, ये सब मिलाकर होम करे, । जितना जाप मन्त्र का किया हो उसका दशास होम करना, तब देवता प्रसन्न होना है, और अपना भक्ष मामता है। हलवा, पुरी, २५ सेर, लड्डू ५ सेर, मेवा ५ सेर, खीर ५ सेर, इत्यादिक भक्ष दीजीये, तब पद्मावति प्रत्यक्ष होकर कहे, की वर मागो तब जो इच्छा हो सो देवो से वर माग लेना, कार्य सिद्ध होता है । पद्मावति देवी को छहो सिद्धान्त वाले अलग २ नाम से पुकारते व पूजा करते हैं । ॐ ह्री श्री ऐ क्ली ह्रा प्रो आ क्रो पद्मावति रक्त रूपे नमः । इस मन्त्र का सवा लक्ष १,२५,००० जाप करे । अष्टाग धूप दीप नैवेद्य से करे । यन्त्र मे देवी की मूर्ति बनावे ।

क्र. नं० २७ व २८ का यंत्र

काव्य नं० १९-२०

पाताले क्रुसता विष विषधरा धूर्मं ति ब्रह्माडजा ।
स्वर्भू मी पति देव दानव गणा सूर्ये न्दु जोतिर्गणा ।।
कल्पेन्द्रास्तुत पाद पकज नता मुक्तामणि श्चू बिता ।
सात्रै लोक्य नता मितिस्त्रि भुवनस्तुल्यास्तुना सर्वदा ।।१९।।

ह्री कारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्त्त पूर्णे ।
बाह्ये कठेर वेष्टयां कमलदलयतम् मूल मन्त्रं प्रयुक्तं ।
साक्षात् त्रै लोक्य वश्य पुरुष वसक्कत मंत्रराज्येद्र राज्यं ।
एतत्तत्व स्वरूपं परम पदमिद पातुमां पार्श्वनाथ ।।२०।।

अस्य द्वय काव्यस्य, स्म्ल्व्य्रूं बीजं सं शक्ति, त्रिशत् अक्षरेन् मन्त्र ।
ॐ ह्री ऐं धरणेन्द्राय विषहर पन्न गरूपाय श्रा श्री श्रू हर हर ह्रा ह्रूं ह्रे नम. ।

इस विद्या मन्त्र का एक लाख (१०००००) जाप पूर्व की तरफ मुख करके बहत्तर (७२) दिन तक जाप करे, मन्त्र सिद्ध हो जायगा। मन्त्र सिद्ध होने के प्रभाव से साधक को पाताल वासी विषधर, देव, भूमिजा स्वर्गादि देव, दानव, यक्ष, राक्षस, कल्पेन्द्र, सूर्यादि ग्रह गरा, समस्त साधक के चरण कमलो की पूजा करते है ।

यन्त्र रचना

कस्यै देवा, धरणेद्र देवेन कथं भूत धरणेन्द्रादि विष हर पन्नग पुरुषाकार स्वरूप द्विभुजा सर्प्पाकार मस्तके अर्द्ध चन्द्राकार, तन्मध्ये ह्री कारे स्थाप्य, पुनरपि षोडश वर्णेन मन्त्रेना ॐ ह्री विषहर पन्नग धरणेन्द्राय नम लिखेत् कठ देशे रविक री स्थाप्य मूर्ति अष्टदल कमल मन्त्रेन ॐ ह्री ऐ धरणेन्द्राय विष हर पन्नग रूपाय श्रां श्री श्रू हर हर ह्रा ह्रू ह्रे नमः वेष्टयेत् अनेन प्रकारेन धरणेन्द्र स्वरूपं कृत्वा ।

ये यन्त्र साक्षात् पुरुष त्रैलोक्य को वशी करता है। मन्त्र का राजा धरणेन्द्र है। लक्ष्मी मनोकामना को देने वाला है ।

नोट :—इस १९-२० के श्लोक की विधि मे हमे कुछ अशुद्ध पाठ नजर आता है। क्योकि जहा

श्लोक मे—"वाह्यै कठेर वेष्टया कमल दल युत मूल मन्त्र प्रयुक्त ।" ऐसा पाठ है। किन्तु हमारी समझ से तो यहाँ— बाह्यै ठ कार वेष्टय होना चाहिये। समझ मे नही आता कि कहाँ पाठ बदल गया है। जव यक पूर्ण प्रमाण नही मिले तव तक पाठ वदलना ठीक नही जमता है। हमने जैसा पाठ था वैसा ही यन्त्र बना दिया। विशेष विद्वान लोग समझे। जितने आजकल उपलब्ध पाठ है, उसमे ऐसा ही पाठ है।

काव्य नं० २१

क्षुद्रोपद्रव रोग शोक हरनी दारिद्र विद्रावनी ।
व्याल व्याघ्र हरा फण त्रय धरा देह प्रभा भ सुरा ॥
पातालाधिपते प्रिया प्रणयती चिंतामरिग प्राणिना ।
श्रीमत्पार्श्वजिनेश शासन सुरी पद्मावती देवता ॥२१॥

इस काव्य का पाठ करने से क्षुद्रोपद्रव, रोग, शोक, दारिद्र, दुख, दुर्बुद्धि, व्याघ्र, सर्प्प, विष, राज भय, दुष्ट कर्म, मारण, उच्चाटन इत्यादिक धरणेन्द्र पद्मावती, जो पाताल वासी देव है, वह दूर करते है।

भक्तयाना देहि सिद्धि मम सकल कलिमल देवि दूरी कुरुत्व ।
सर्वेषा धार्म्मिकाना सतत नियमित वाछित पूरयस्व ॥
ससाराब्धौ निमग्न प्रगुण गुण युत जीवराशि च त्राहि ।
श्री ज्जैनेन्द्र धर्म्म प्रगटय विमल देवि पद्मावति त्व ॥२२॥

मात पद्मनि पद्मराग रुचिरे पद्मप्रसूनानने ।
पद्मे पद्म वनस्थिते परि लसत्पद्माक्षि पद्मालये ॥
पद्मा मोदिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनार्चिते।
पद्मोल्लासिनि पद्म नाभि निलये पद्मालये पाहिमा ॥२३॥

दिव्य स्तोत्र पवित्र पटुतर पठित भक्तिपूर्व त्रिसध्यं ।
लक्ष्मी सौभाग्य रूप दलित कलिमल मंगल मगलाना ॥
पूज्या कल्याण माला जनयति सतत पार्श्वनाथ प्रसादात् ।
देवी पद्मावती न हसित वदना यस्तुता दानवेद्रै ॥२४॥

काव्य यंत्र नं० १९-२०
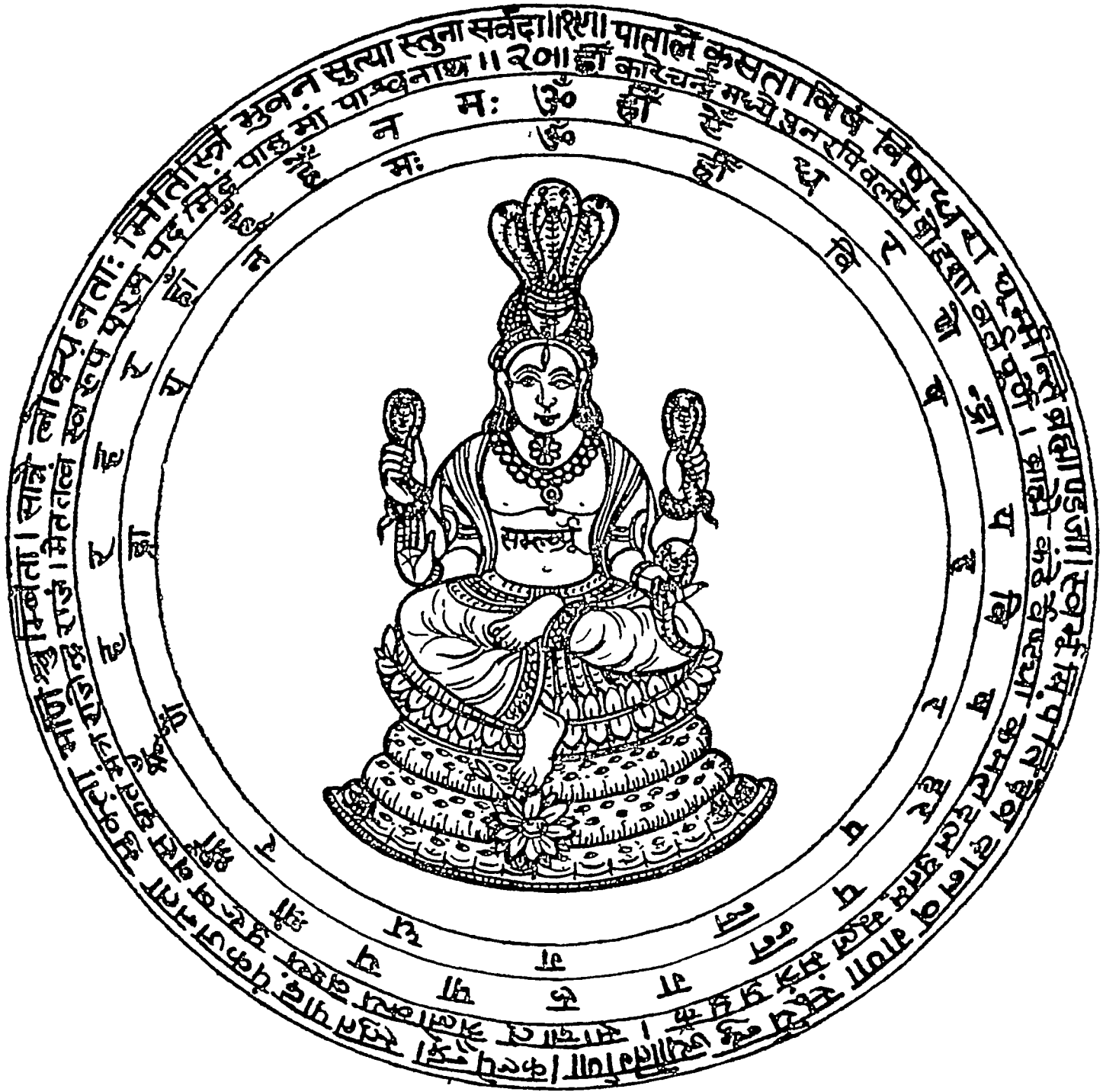
नोट:- कंठ में अष्ट दलकमल है उसमें ये मंत्र लिखें- ॐ ह्रीं ऐं धरणेंद्राय -

श्री चक्रेश्वरी देवी

या देवि त्रिपुरा पुरात्रयगता शीघ्रासि शीघ्रप्रदा ।
या देवी समया समस्त भुवने सगीयते कामदा ।।
तारामान विमर्दनी भगवति देवी च पद्मावती ।
सारंता सर्वगतास्त्वमेव नियता मातेति तुभ्य नमः ।।२५।।

पद्मासना पद्मदलाय ताक्षी पद्मानना पद्म कराहि पद्मा ।
पद्म प्रभा पार्श्व जिनेन्द्र यक्ष्या पद्मावती पातुफणीन्द्र पत्नी ।।२६।।

पठित भणित गुणित जय विजय पराजित धन परमं ।
जय च सर्व व्याधि हर जयति श्री पद्मावती स्त्रोत ।।२७।।

प्रथम हरति घोरोपद्रव दुर्न्निवार ।
द्वितीय मपि च हन्या घातिघात समस्त ।।

तृतिय हरति मारी तुर्य्यकं शत्रु शोकम् ।
शर जकुनवशकारी षष्ट कोच्चाटनघ्न ।।२८।।

मुनि युग विष नाशं चाष्मो द्वेगहन्यात् ।
मन वच वपु गुह्या भावयुक्तेन नित्यं ।।२९।।

स्मरति न मति पादयो विदध्यात् त्रिकाल ।
स भवति मति पूर्ण पापपकै र्विमुक्तः ।।३०।।

सुख धन यश लाभो पुत्र कामाप्ति निष्टो ।
मनसिज वरकामा देवि ध्यानाद् भवन्ति ।।३१।।

सद्ध्यानाद् देवि जातात्सुर नर भुजगैश्वर्य मारोग्य मुक्तं ।
नागेन्द्रै स्त, ग देह मद गलति कट कोप युक्तं द्विरेफैः ।।३२।।

वाजिनां द्व द्व वृंदैर्जल भुवि खचर वायु वेगं मनोज्ञं ।
तारुण्य दिव्य रूप सुर युवतिनिभं भत्त् चेतोनुगम्य ।।३३।।

त्वन्ना मस्मरणाद् भवन्ति भुवने वागीश्वराणा विभु. ।
लक्ष्मी निर्भर माप्नुवंति च यशोहसाज्ज्वलं निर्म्मल ।।३४।।

त्वत्पादार्चनया नमन्ति च स्वय भूमिश्वराणा प्रभुः ।
पुत्राप्तिर्वर वन्धु गोत्र विमलं वस्त्र च नाना विध ।।३५।।
त्वन्नाम स्मरणाद् व्रजति नितरा हारति च दुर्जना ।
भूत प्रेत पिशाच राक्षस सुरा दुष्टाग्रहा व्यन्तरा. । ३६ ।
डाकिन्योऽसुर दुष्ट शाकिनी गणा सिद्धादयश्चोरगो ।
दन्ती वृश्चिक दुष्ट कीटक रूजाः दुर्भिक्ष दावानल ।।३७।।
त्रुटयंति श्रृंखल वन्धन वहुविधै पाशेश्च यन्मोचन ।
स्तम्भे शत्रु जलाग्नि दारुण महि नागारि नाशेभयम् ।।
दारिद्रय ग्रहरोग शोक शमनं सौभाग्य लक्ष्मीप्रद ।
ये भक्त्या भुवि सस्मरन्ति मनुजास्ते देविनाम ग्रहम् ।।३८।।
यां मन्त्रागम वृद्धिमान वितनोल्लास प्रसादार्पणां ।
या दुष्टाशय क्लृप्त कार्मणगण प्रध्वस दक्षाङकुशां ।।
आयु वृद्धिकरा जरामय हरा सर्वार्थ सिद्धि प्रदा ।
सद्य प्रत्यय कारिणी भगवती पद्मावती सस्तुवे ।।३९।।
आह्वान नैव जानामि न जानामि विसर्जन ।
पूजामर्चा न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ।।४०।।
अपराध सहस्त्राणि क्रियान्ते नित्य शोमया ।
तत्सर्वं क्षम्यता देविप्रसीद परमेश्वरी ।।४१।।
आज्ञा हीन क्रिया हीन मन्त्र हीन च यत्कृतं ।
तत्सर्वं क्षम्यता देवि प्रसीद परमेम्वरी ।।४२।।
।। इति ।।

ॐ

श्री चक्रेश्वरीदेवी स्तौत्र यन्त्र मन्त्र (हिन्दी) विधि सहित

स बीज मन्त्र यन्त्र गर्भित चक्रेश्वरी स्तोत्रं लिख्यते ।।

श्री चक्रे चक्र भीमे ललित वर भुजे लीलया लालयन्ती ।

चक्रं विद्युत्प्रकाश ज्वलित शत शिखे खे खगेन्द्राधिरूढे ।।
तत्त्वै रूद्भूत भासा सकल गुण निधे मन्त्र रूप स्वकान्ते ।
कोट्यादित्य प्रकाशे त्रिभुवन विदिते त्राहि मां देवि चक्रे ।।१।।

टीका :—हे चक्रे 'देवि' त्व 'मा' त्राहि रक्ष पालय, कथ भूतं हे चक्रे, श्री चक्रे 'चक्रेण भीमे, भयकरे पुनर्ललित वर भुजे, चक्र 'लीलया' लालयन्ती, कथं भूतं, चक्र, विद्युद्वत्प्रकाशा, यस्य तत्, पुनर्ज्वलित, शतशिखं, ज्वलिता दीप्ताः, शतशिखां, शताग्नि, शिखा, यस्मिन्, तत् पुनः कथं भूते, देवि खे, आकाशे, कोट्यादित्य प्रकाशे, कोटि सूर्य प्रकाशे पुन खगेन्द्राधिरूढे, गरुडा रूढे, पुन, स्तत्त्वै, स्सप्त तत्त्वै रूद्भुताया भास, स्तया सकलगुण निधे, हे मन्त्र रूप स्वकान्ते, हे त्रिभुवन विदिते त्रिलोक प्रसिद्धे त्व 'मा' त्राहि योजनीय चेति पदार्थ. ।

शान्ति कर्म

।। यन्त्रोद्धार ।।

अस्य 'तत्व' समुद्ध्रियते 'श्रीचक्रे' अंतश्चक्रे, अभ्यतर कर्णिकाया 'खे' चक्र भीमा गरुडा रूढा भुजे 'चक्र' लालयन्ती इ 'रूपा' लक्ष्मी रूपा त 'तत्वं श्रीचक्रे अष्टार चक्रे श्री बीज लेखनीय चक्रशब्देनाष्टार चक्र—गृह्यते पुनस्तत्त्वै स्सप्त तत्व बीजै रूद्भूता 'या' कान्ति, स्तया, सकल गुण निधे, रितिपदेन कलाभिः षोडश कलाभिः गुणैरष्ट बीजाक्षरै स्तथा निध्या-क्षरै स्तथा, मूल मन्त्रेण रूपं वेष्टियित्वा ध्यातव्या ।

अस्य मन्त्र :

ॐ ऐं श्री चक्रे चक्रभीमे ज्वल २ गरुड पृष्टि समारूढे ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः स्वाहा ।

विद्युद्बीजं 'ऐं' तत्वानि आमादीनि चेतिज्ञेय ।।

अथ विधि :

पूर्वादिक् 'आसन' 'पद्मासन' प्रभातः काल. वरद मुद्रा इत्यादि को ज्ञेय । शान्तिः कर्मणः फल सकल गुण लाभो निधि लाभश्चेति ज्ञेयः ।

यन्त्र नं० १

बीजोत्पत्ति समुद्देशः

सूच्यते 'वीज कोशत , विज्ञानार्थ प्रतीत्यर्थ,' फल, तेषा, पृथक २ तत्वानि, कानी' सप्तैव, आ वा हा ता रां ला धा इति च भवन्ति, गुणा अष्टौ के असि आउसा ह्री श्री क्ष्वी गुण अष्टौ प्रकीर्त्तिताः इत्युक्ते नव निध्यंक्षराणि इह कानि सति जिनागमे गूढानि, चान्य शास्त्रेपु विना विद्यानुशासनात् । ह्री क्ली ब्लू द्राँ द्री द्रू आ क्रो क्षी, एतानि नव वीजानि निधिना चार्थ सज्ञया नव भेदा. प्रणीता स्यु, कर्म्मणा च पृथक प्रदा इत्युक्ते कान्ति बीज (क्ली) भवेच्च सर्व कामार्थ साधक च चक्रे वीज माख्यात चक्रे चक्रे पृथक २ इत्युक्ति गूंढा अथैतेपा फलोदग माह आकार मूरि वर्गस्यात मकार साधुवर्गे तत्सयोग भवा सिद्धि प्रथमे तत्व वीजके ।१।

व कारो वरूण पक्षी, गगन सज्ञया स्मृता स्तत्सयोगेन शात्यैश्य पुष्टि कर्म्म प्रदोप्यय ।२।

ह् कारोदिविज् भारव्ये कर्माणी व्योम शून्ययो स्तत्स योगेन, वशोकार कार्य सिद्धि करो भवेत् ।३।

त कार स्तस्कर प्रोक्तस्तद्रोधे, 'पाश' बीज युक्त तत्प्रभावेन चौर्यादि दुष्ट घात करो भवेत् ।४।

र कामानिल वन्हीना त्रिस्वरूपेणंव सस्थित तत्सयोग भवेदेष सर्व कामार्थ साधनः ।५।

लः कामोल पृथिव्याख्य स्तभन बीज मुक्तम तत्सयोगादिद जाये ताग्न्यादि स्तभ कारणं ।६।

ध धनेधः समादाने सयोगेन निधिप्रद इत्युक्ते सप्त बिजाणी कार्य कराणि च। ।७।

संयोगत समुद्दिष्ट देवता 'ससप्त एव च आचार्यो वरूणो पाशो 'शक्र' सोमो' यमो भवेत् ।८।

कुबेर इति सज्ञाताः सप्त देवा इमे स्मृता इति वीज कोशात् गुणोत्पत्तिः कथ्यते ।

अकारोर्हन् सिर्भवेत् सिद्धे आचार्ये उरूपाध्याये सा साधौ इत्युक्तेः ।

ह्री श्री क्ली कथ सिद्धा इत्युक्ते श्चेत् कथ्यते क्षत् जस्थ, व्योम वक्त्र धूम्र भैरव्य ल कृत नाद बिन्दु समायुक्त वीज प्राथमिक स्मृत ।१।

क्षतजो 'र कार ' व्योम वक्त्र ' ह् कार ' धूम्र भैरवी ई इत्येभि ' ह्री सिद्ध फल च पञ्च वर्णात्मक ध्यानस्य यत्फल तत् ज्ञेय श्री चण्डीश, क्षतजारूढ धूम्र भैरव्य ल कृत नाद बिन्दु समायुक्त बीज पद्मालयात्मक ।२।

श्री चडीशः शकार (शेप पूर्ववत्) सयुक्त धूम्र भैरव्या रक्तस्य वलि भायुत नाद बिन्दु समायुक्त वीज स्याद्भूत भैरवी ।३।

ब्वी फल च वारूणी शान्ति स्तुष्टि पुष्टि वितन्य ते इत्यष्ट गुणोत्पत्ति फल नव निधि फलोत्पत्ति सूच्यते तद्यथा ह्री तु सूचित मेव पर तु वर्णान्त आदि जिनोयोरेफ स्त लगत स गोमुख राट् तूर्य स्वर स विन्दु सभवेच्चक्रेश्वरी सज्ञ इत्यभिधानार्थ पुनरूक्तम ने नैव क्रमेण वर्णान्ति पार्श्व जिनोयो रेफस्त लगत 'स' धरणेन्द्र स्तुर्य स्वर. स विन्दु सभवेत्पद्मावती सज्ञ.—

इत्यभिधानमपि सगत कथं अ वा ज्वालामुखी काली चक्रा पद्मावती ति 'च' लक्ष्मी

सरस्वति दं व्यो 'जैनाः' शासन भाक्तिका. शक्ति रूपा एक रूपा ध्यातव्या वर देवता यासा प्रतीति सिद्धयर्थं पुरु नैभ्यत्य सम्मती. इति विद्यानुशासनोक्त. मल्लिषेणाचार्य. ।।

क्ली क्रोधीशो वल भेदी च धूम्र भैर व्यल कृत नाद विन्दु समायुक्त कामराज पर. स्मर । क्रोधीशः वकारा वलभेदी 'लकारः' व्लूं व भय करो दलभिलदा युक्तो नाद युतो भवेत् विदारी भूषितो भूत. सज्ञया द्रावणो मत. ।

द्रा द्री द्वयं काम युग रति काम द्वयं प्रद उत्पति बीज कोशाच्च मोहने कर्म्मणि स्मृता ।४।

आ 'बीजं' पाश वीज स्यात् क्रो वीज त्वं कुशाह्वयं क्षी वीज पृथ्वी वीज त्रिण्यापि प्रीति कारणं ।

चण्डेन 'कविना' प्रोक्ता निधियो' 'नव' कि न च, लिखिताश्चेति प्रश्नेचोत्तर शृणत भाक्तिकाः ।

ह्रां ह्री क्षां क्षी क्षू क्षे ह्रू ह्रौ ह्रः इत्येता निधियो मता । वश्याकर्षण उन्मादोच्चाटन स्थम्भनानि च तुष्टि पुष्टि शरीरस्य धातु वर्द्धन कारिका, इत्युक्ते स्ता कथ ने 'त्युर-माहा, काव्येऽस्मिन नव कर्माणि नोक्तान्य स्मात् कृतानि च, मोहना कर्षणे शान्ति पुष्टि मुस्कान सन्ति चात पृथक, उक्तानि, इति सक्षेपतो वीज विषयं फल प्रथम काव्यस्य गत ।।

यन्त्र रचना

यन्त्र रचना इस प्रकार करे । वलया कार छ घेरे वना कर वीच कर्णिका मे, गरुडा रुड अष्ट भूजा वाली चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति वना कर अष्ट दल वाला प्रथम वलय मे कमल वनावे । और कमल के प्रत्येक दल मे श्री, वीज की स्थापना करे, आठो ही दल मे आठ श्री वनावे। द्वितीय वलय मे क्रमश आं वा हा ता रा ला धा की स्थापना करे । तृतीय वलय मे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अ अ, इन सोलह स्वरो की स्थापना करे । चोथा वलय मे क्रम से, असि आउसा ह्री श्री श्वी, इन वीजाक्षरो को लिखे। पचम वलय मे ह्री क्ली व्लू द्रा द्री द्रू (ह्रू) आ क्रो क्षी इन नो नीधि रुप वीजाक्षरो को लिखे, फिर सप्तम वलय मे मूल मन्त्र इस श्लोक का है वह लिखे ।

मूल मन्त्र – ॐ ऐ श्री चक्रे चक्र भीमे ज्वल २ गरुड पृष्टि समा रुढे ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र: स्वाहा ।

इस मन्त्र को लिखे। इस स्तोत्र के प्रथम काव्य का यह न० १ यन्त्र का स्वरूप वना।

इस प्रकार के यन्त्र को तावा, सोना, चादी, अथवा भोज पत्र के ऊपर खुदवा कर यन्त्र सामने रख कर, मूल मन्त्र का पूर्व दिशा में पद्मासन से प्रात काल, वरद मुद्रा से साढे वारह हजार जप करे, यन्त्र पास मे रखे तो सर्व शाति होती है, सर्व गुणो का लाभ होता है ओर नाना प्रकार की निधि का लाभ होता है। धन की वृद्धि होती है। भोज पत्र पर यन्त्र लिखना हो तो सुगन्धि द्रव्य से लिख कर पास रखे, तावीज मे धारण करे।

मूल मन्त्र :—ॐ ऐ श्री चक्रे चक्र भीमे ज्वल २ गरूड पृष्टि समारूढे ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र स्वाहा।

इसी मूल मन्त्र का साढे वारह हजार जप करना है।

अथः द्वितीय श्लोक

क्ली क्लीन्ने क्लि प्रकीले किलि-किलि त खे दुंदभिध्नाननादे।
आ हु क्षु ह्री सु चक्रे क्रमसि जगदिद चक्र विक्रान्त कीर्त्ति॥
क्षा आ ऊ भासयति त्रिभुवन मखिलं सप्त तेज प्रकाशे।
क्षा क्षी क्षू विस्फुरन्ति प्रवल वल युते त्राहि मां देवि चक्रे।२।

टीका —हे चक्रे, देवि, त्व मा त्राहि रक्ष २ कथ भूते चक्रे क्ली क्लिन्ने क्लीमित्यस्य 'कोर्थः' नित्ये काम साधिनि पुन. कथ भूते क्लिन्ने काम रूपे मनोभिष्ट साधिनि पुनः कथ भूते क्लि प्रकोले मुखात् क्लिं प्रकथके थ 'त' एव किलि-किलि त खे सज्ञा शव्द. किलकिलोति सजा रूप स जातो यस्मिन् स. किलकिल तो र वः शव्दो यस्याः पुन· कथ भूते दुं दुभि ध्वान नादे, दु दुभि ध्वानवत् नादो यस्या. सा त्व चक्र विक्रान्त कीर्ति. दश दिशा व्याप्त कीर्ति आ हुं क्षु ह्री सु चक्रे इदं जगत क्रमसि है सप्त तेजः प्रकाशे वल वीर्य पराक्रम द्युति मति पुष्टि तुष्टि सप्त तेजासि तेपाप्रकाशे क्षा आ उँ त्रिभिर्व्वीजै स्त्रि भुवन "भाव्यन्ति ई रूपा' सि क्षा क्षी क्षूं प्रवल वलयुते विस्फुरन्ति दशी 'त्व' म सीत्यर्थ —

अथ यन्त्रोद्धार

चक्र वित्रान्त कीर्ति रिती पदेन पट् कोण चक्रे कर्णिकाया समूर्ति कीर्ति.। कोणेषु पट्सु आ हु क्षु ह्री चक्रे इति पट् वीजानि उपरी क्लि क्लिन्ने क्लि नित्ये किलि किलि इति क्षा

आ उँ इति दक्षिणे उत्तरे सप्त तेजासि लेख्यानि अथ. क्षा क्षी क्षू प्रवल वलेति पदानि चेत्यु-द्धार ।

अथ मन्त्रोद्धार:

ॐ क्ली क्लिन्ने क्लि नित्ये नम १ उँ आ हु क्षु ह्री नम २ ॐ क्षा आ ॐ नम ३ ॐ चक्रे क्षा क्षी क्षू प्रवल वल स्वाहा ४

एत्तानि मन्त्राणि चत्वारि अस्मिन् काव्ये सन्ति ।

अथ विधि

पुष्टि कर्मण सप्त दश नियमा ज्ञातव्या. फल च तेज प्रताप वृद्धि दिव्य वाचा लाभ श्चेति ज्ञेय ।

अथ बिजोत्पत्ति

क्ली स्वरूप क्रोधीशं वल भी सस्थ धूम्र भैरव्य ल कृत 'विद्वि दु सयुत' वीज द्रावण क्लेदन स्मृत इति ।

प्रथमस्य काम वीजस्य क्लि 'क्रोधीश' बल भी सस्थ रुद्र भैरव्य ल कृत विद्विन्दु सयुत वीज चड कर्म फल स्मृत, इकारो गर्ज्जिनी चण्डा तथा च रुद्र भैरवी त्युक्ते प्रेत्यस्य मकारस्तु कपर्द्दी स्यात् 'र कार' क्ष तेजो भवेत् ।

सयोगेन भवे द्वश्य कारी प्रो वीज उत्तम क्लि २ क्रोधीशो, व न भेदी, चण्डी, वीजेण सयुतः फलेन काम रूपत्व मोहने वश्य कर्मणि, इत्युक्ते, आकारे नाम सी काले नाद विन्दु समाश्रिते, पाश वीज फल दुष्ट निग्रह प्रति पादित मित्युक्ते हू व्योमास्य काल वज्राढय नादिनी विन्दु सयुत, हूँ फलं निधि प्रदान च 'क्ष' त्रैलोक्य ग्रसन वीज कॅाल वक्त्रान्वित पर क्षु वीज सार्द्धं विद्वि क फलंच कर्षणं पर चेति 'ह्री' युक्त फल त्रैलोक्य ग्रसन ध्येय, पाश वीज समन्वितं तेज प्रताप सिद्धयर्थ पाश, प्रणव, सयुत सप्त तेजा सिर वीज सप्तकं वा थ वेदक तस्या पि सप्त क वोध्य ग अ व र त क ग इति क्षा क्षी क्षू आं काल रात्रि ई धूम्र भैरवी 'ऊ' विदारी च सयोगात् फलानि च 'तेज' प्रतापादिव्य वाचा लाभश्चेति वोध्य ।

मूल मन्त्र :—ॐ क्लि क्लिन्ने क्लि नित्ये नम. ।१।

ॐ आ हु क्षुं ह्री नम ।२।

ॐ क्षा आ ॐ नमः ।३।

ॐ चक्रे क्षां क्षीं क्षूं प्रवल वल स्वाहा ।४।

इस श्लोक मे व यन्त्र मे, ये चार प्रकार का मन्त्र पाया जाता है। इन मन्त्रो का जाप पुष्टि कर्म के लिए जपना चाहिये। इसके लिये १७ प्रकार के नियम जानना चाहिए।

यत्र नं० २
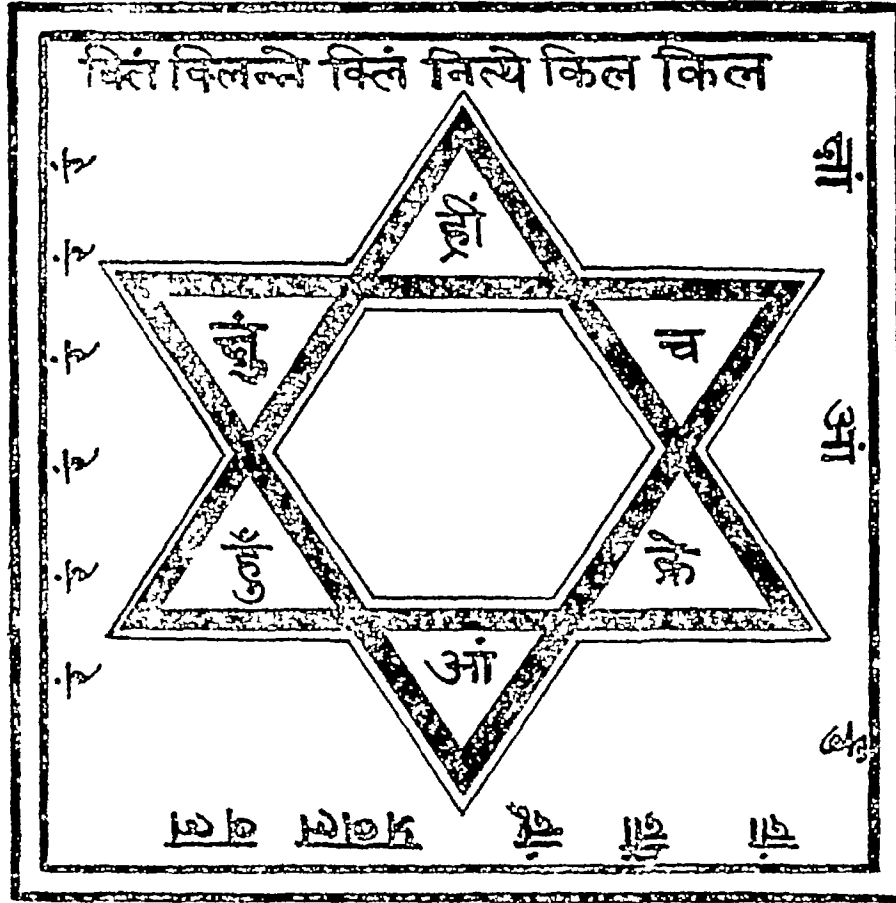
यन्त्र लेखन विधि

पहले पट् कोणा कार वनावे। बीच मे चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति का आकार वनावे, फिर पट्कोण की कणिका मे क्रमशः नीचे वाली प्रथम कणिका मे आं लिखे फिर दूसरी कणिका मे 'हु' लिखे, तृतीय कणिका मे 'क्षु' लिखे, चतुर्थ कणिका मे 'ह्री' लिखे, पचम कणिका मे 'च' लिखे, छठी कणिका मे 'क्रे' लिखे। पट् बीजो के ऊपर क्लि क्लिन्ने क्लि नित्ये किलि किलि, लिखे, क्षा आ उं लिखे, दक्षिण मे और उत्तर मे सात र र र र र र र कार तेज वीज को लिखे, नीचे क्षा क्षी क्षूं प्रवल वल लिखे। ये यन्त्र रचना इस प्रकार हुई।

इस यन्त्र को तावा, सोना या चादी पर खुदवा कर, पास रखने से, वाक् सिद्धि (वचन सिद्धि) होती है। तेज बढ़ता है। प्रताप बढता है।

मूल मन्त्र जो उपरोक्त चार प्रकार के है, उनका जप पुष्टि कर्म के लिए विधि पूर्वक करना चाहिये। जप करते समय गुरू से पूछ कर पूर्ण विधि विधान ज्ञात कर जप करे। प्रत्येक मन्त्र का सवा सवा लाख जप करने से, तेज व प्रताप बढ़ेगा और दिव्य वचन का लाभ होगा।

अथ तृतीय काव्य

मोहन कर्म

श्रू झ्रौ द्रू प्रूं प्रसिद्धे सुजन जन पदाना सदा कामधेनुः।
गू क्ष्मी श्री कीर्ति बुद्धि प्रथयति वरदे त्व महा मन्त्र मूर्ते।
त्रैलोक्य क्षोभयति कुरु कुरु हरह नीर नाद प्र घोषे।
क्ली क्लि ह्री द्रावयन्ती द्रुत कनक निभे त्राहि मा देवि चक्रे ॥३॥

टोका —हे चक्रे देवि त्व 'मा' त्राहि रक्ष रक्षेति श्रू झ्रौ द्रू प्रू इति मन्त्रेण। 'प्रसिद्धे' हे चक्रे देवि त्व सुजन जन पदाना सुष्ट जना सुजना स्तेषाये जन पदा देशाः तेषा त्व सदा सर्व स्मिन् काले 'काम धेनु रसि' पुन कथ भूते, हे वरदे हे महा मन्त्र रु मूर्ते त्व गू क्ष्मी श्री इति त्रिभिर्म्म त्र बीजाक्षरैः श्री कीर्ति बुद्धि प्रथयसि 'पुन' कथ भूते हे नीर नाद प्रघोषि जलद् नाद शद्वे कुरु २ हर ह इति मन्त्रेण त्रैलोक्यं क्षोभयती हे द्रुत कन कनि भे द्रुत तप्त षोडश वर्णिक स्वर्ण कान्ते क्ली किल ह्री स्त्री द्राव यन्ति त्यसि चास्मिन् काव्ये चतुर्भि पादै काम धेनु त्व प्रथम पदेन मनोभिप्सित कार्ये साधने द्वितीय पदेन श्री कीर्ति बुद्धि प्रथनत्व तृतीय पदेन त्रैलोक्य क्षोभणत्व तूर्य पदेन स्त्री द्रावण त्व सूचित मित्यर्थः।

अथ यन्त्रो द्धार

षट कोण चक्रं स मूर्तिक पूर्ववत् कृत्वा पश्चादुपरि श्रू झ्रौ द्रू प्रूं लिख्यते गूं क्ष्मी श्री दक्षिणे उत्तरे हर ह कुरु २ अधः क्ली क्लि ह्री चक्रे इति यन्त्रो द्धार।

अथ- मन्त्रो द्धार

ॐ श्रू झ्रौ द्रू प्रू गू क्ष्मी श्री कुरु २ हर २ ह क्ली क्लि ह्री चक्रे स्वाहा।

मोहन कर्मण. सर्वौं ज्ञातव्यः फलं श्री कीर्ति बुद्धि विस्तृति, क्षोभण, द्रावण, वशी करणानि च ज्ञातव्यम् ।

अथ बीजोत्पत्ति

श्रूं शश्चडीश रः क्षतजः ॐ विदारी 'म' महाकालः चतुः सयोग फलं वशीकरणं भ्रौ भ्रू वाल मुख र· क्षतज· ॐ डाकिनी म महाकालः' चतुः संयोग फलं डाकिनी तिरस्कारः दः वलि. रक्षतजः ॐ विदाराम· 'काल' इति चतुः संज्ञ. काम वीजात् द्रावणं फल पः 'कपर्दी' रः क्षतजः ॐ विदारी म. महाकाल इति चतु संयोगात् ग श्वड ॐ विदारी मः महाकालः त्रि संयोगात् वर सिद्धि फल, क्षः त्रैलोक्य (ग्रसित) ग्रसन मः महाकाल ई धूम्र भैरवी 'म.' महा काल क्ष्मी शत्रु संहार फल श्री लक्ष्मी वीज साधनं पूर्वं मुक्त ह् श्रून्य र· अग्नि वीज हं व्योम वक्त्रं फल ह्र है त्रयाणा, लोक शून्यं 'फल क्लो क्लि ह्लो पूर्वं मुक्त फल साधना । इति ·—

यंत्र न० ३
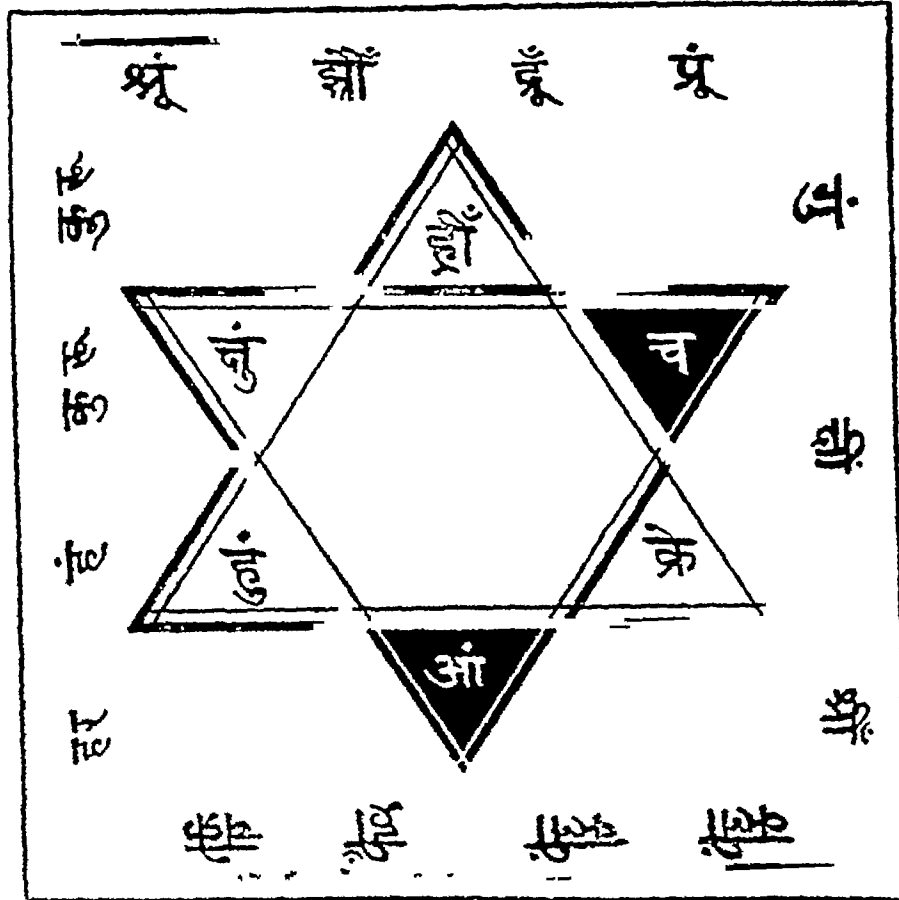
मन्त्र, यन्त्र रचना व फल

इसमे पहले षट्कोण रचना करे, फिर बीच मे चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति बनावे। षट् कोण की कर्णिकाओ मे नीचे से क्रमश आ, हु, क्षु, ह्री, चं, क्रे, लिखे, पटकोण चक्र के ऊपर श्रू, झ्रौ, द्रू, प्रू, दक्षिण मे गूं क्ष्मी श्री लिखे, उत्तर मे ह र ह कुरु २ लिखे, नीचे क्ली क्लि ह्री चक्रे इति यन्त्रो द्धार ।

मूल मन्त्र —ॐ श्रू भ्रौ द्रू प्रू गू क्ष्मी श्री कुरु २ हर २ ह क्ली क्लि ह्री चक्रे स्वाहा ।

इस मन्त्र का साढे बारह हजार, यन्त्र ताबे के पत्रे पर बनाकर सामने रख कर, विधि सहित जाप करे, तो मोहन कर्म, विशेष होता है, श्री कीर्ति बुद्धि का विस्तार होता है, क्षोभरण, द्रावण, वशीकरण भी होता है ।

मोहन, शोषण, विजय, उच्चाटनार्थ

चतुर्थ काव्य

ॐ क्षु द्रा ह्री सु बीजैः प्रवर गुण धरै र्म्मोहिनी शोषणी त्व । शैले-शले नटन्ती विजय जयकरी रौद्र मूर्ते त्रि नेत्रे ।। वज्र क्रोधे सु भीमे 'रहसि' करतले भ्रामयन्ति सु चक्र । रु रुं रौ ह कराले भगवति वर दे त्राहि मा देवि चक्रे ।।४।।

टीका :—हे चक्रे देवि त्व मा पाहि त्राहि रक्ष २ कथ भूते चक्रे ॐ क्षू द्रा द्री ह्री सु बीजैः मोहनी त्व मसि 'प्रवर' गुण धरै बीजै त्व शोषिणी कर्म शोषण्यसि शैले २ पर्वते 'नटन्ती' श्री श्ली पदेन श्ले श्लै पदेन विजय जय करी है रौद्र मूर्ते हे त्रिनेत्रे हे वज्र क्रोधे हे सु भी मे भ्रा भ्री भ्रू भ्रौ भ्र. सु भीमे 'त्व' कर तले हस्त तले चक्र, भ्राम यन्ति 'रटसि' पठसि रु रु रौ ह कराले हे चक्रे भगवति वर दासि इति हे वरदे त्व मा रक्षेत्यर्थ ।

अथ यन्त्रो द्धार-

प्रथमा नु क्रमेण 'चक्रेश्वरी' मूर्ति रभ्यन्तरे लेख्या षट्कोरण केषु पूर्व व द्वी जाति व्यवस्थाप्य तदुपरि ॐ क्षु द्रा ह्री मोहय २ मोहनि श्ली श्ली श्ले श्ले विजये जय २ दक्षिणे उत्तरे च भ्रा भ्री भ्रं भ्रौं भ्र चक्र भ्रामय २ अध श्च रू रु रौ ह कराले वरदे रक्ष २ इति ।

अथ मन्त्र:

ॐ क्षुं द्रां ह्रीं असि आउसा झ्वीं क्लीं ब्लीं मोहय २ मोहिनी स्वाहा ॐ असि आउसा झ्वीं ब्लीं कर्माणि शोषय २ रं रं रं र रं धग २ ज्वालय २ स्वाहा।

'ॐ श्ली श्ली श्लं श्लं विजये जये रौद्र मूर्ते त्रिनेत्रे स्वाहा। ॐ वज्र क्रोधे चक्रेसु भीमे भ्रां भ्रीं भ्रू भ्रौं भ्र. चक्र भ्रामय २ स्वाहा। इत्येव चत्वारि मत्राणि मोहन शोषण विजयो उच्चाटनाना पचमो वरद: विधि पञ्च कर्मणा ज्ञेय फल लिखित मेव।

अथ बीजोत्पत्ति

ॐ अ अरिहंत अ शरीर 'अ' आचार्य 'आ' स वर्ण दोर्घ त्वा 'दा' उपाध्यायस्य ऊ पदेन ओ इतिमुने मंकारस्य' अनुस्वारेण कृते, सिद्ध फल-मिति मोक्ष रूप क्ष त्रैलोक्यग्रसन उ काल वक्त्रा क्षोभण, फल द्रा काम वीज 'ह्रीं' मोहन वीज (श) श्वडीश. स. ल: बल भेदी 'ए' ऊर्द्धकेशी ऐ उग्र भैरवो श्ले श्लैं फल आलिगनादि करणत्व फल र क्षत ज काल

यन्त्र न० ४
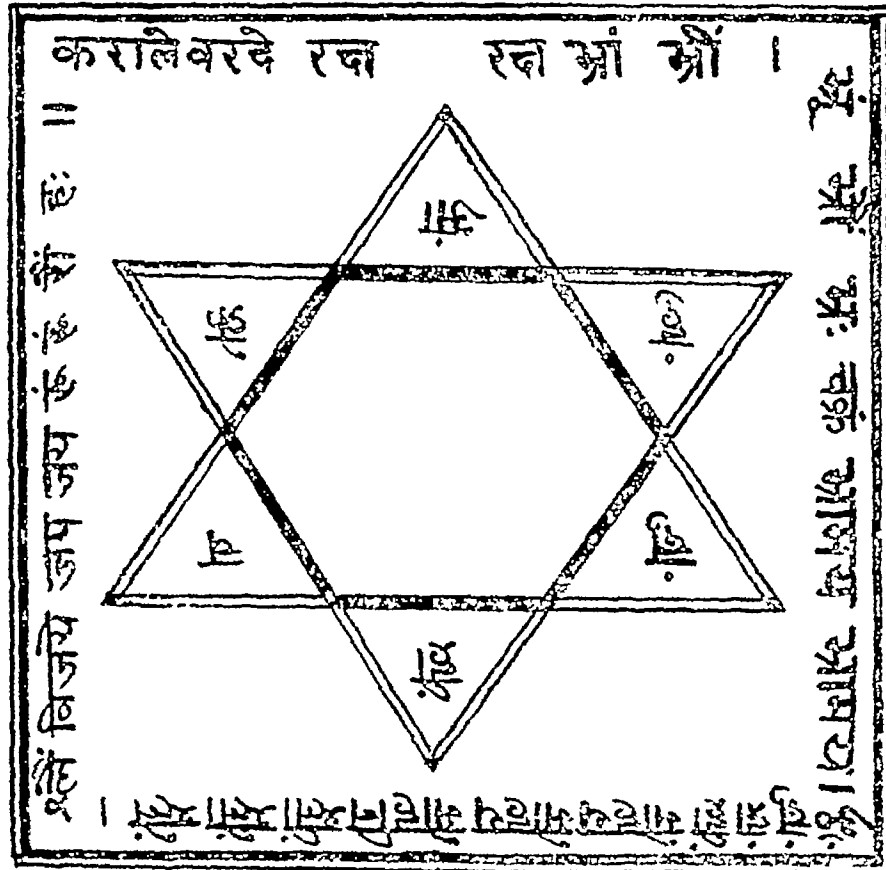
वक्त्रा 'ऊ' विदारी ऊ डाकिनी वीजं एतत्त्रय मोहन वीज रू गोपण वीजं रू' उच्चाटन वीजं रो ह. सकल शून्य। 'इति' च फलं।

पूर्वोक्त प्रकार से षटकोणाकार यन्त्र रचना करे। षट्कोण के प्रथम कर्णिका से क्रमश आ, हु, क्षु, ह्री, च, के, लिखे, फिर यन्त्र के चारो तरफ मूल मन्त्र लिखे।

ॐ क्षु द्रा ह्री मोहय २ मोहनी। श्ली श्री श्ले श्लं विजये जय जय। रूं रू रौ ह. कराले वरदे रक्ष २। भ्रा भ्री भ्रू भ्रौ भ्र चक्र भ्रामय २।

इन वीजाक्षरो को षट् कोण यन्त्र के चारो तरफ लिखे।

इस यन्त्र को चादी के ऊपर खुदवा कर, मन्त्र का साढे बारह हजार जप यन्त्र के सामने जप करे, प्रत्येक कार्य के लिये प्रत्येक मन्त्र का साढे बारह हजार जप करे तो क्रमश मोहन, शोषण, विजय उच्चाटन, होता है। मन्त्र पहले इसी काव्य मे लिखा है।

अथ पंचम काव्य वशीकरणार्थं

ॐ ह्री हु हुं सुहर्षे ह ह ह ह हिम कुन्देन्दु स काश बीजै।
ह्रा ह्री ह्रू क्ष सुवर्णै कुवलय नयनेद्विद्रुमा द्रावयन्ती॥
हं हो ह क्ष स्त्रिलोकी ममृत जलधरा वारुणै. प्लावयन्ती।
भ्रा भ्रा ह्रू स सु वीजै प्रबल बल भया त्राहि मा देवि चक्रे॥५॥

टीका :—हे देवि चक्रे त्वं मा त्राहि 'रक्ष २' कस्मात् भयात्। कथ भूते झ्रा झ्रा ह्रु स प्रवल बलेति सु बीजै. भय—नाशके पुन कथ भूते चक्र हिम कुन्देन्दु सकाश वीजै ध्यातै ॐ ह्रा ह्री ह्रु ह्रू लक्षणै सुहर्षै 'पुन' कथं भूते, ह्रा ह्री ह्रु क्ष. सुवर्णै द्वि द्रु द्रु द्रू द्रू सर्व जनान योषि तश्च आद्रावयन्ती मोहयन्ती 'पुन' कथ भूते हं ही ह क्ष पदा किते अमृत जलधरा वारुणै त्रिलोकी प्लावयती त्व रक्षत्यर्थ।

अथ यन्त्रोद्धार:

पूर्ववत् स मूर्तिक षट् कोण चक्र मारभ्य स बीज कृता, ऊपरि ॐ ह्रा ह्री ह्रु ह्रू ह ह ह हेति विलिख्य दक्षिणे ह्रा ह्री ह्रु क्ष द्रुं द्रू चेति विलिख्य 'उतरे' च, हं हो हं क्ष त्रिभुवन बीजानि च अधश्च भ्रा भ्रा ह्रु स प्रवल वलेति चेति सलिख्य अमृत वीजेन वेष्टयित्वा जलधरा वारुणै प प्लावयन्ती तिध्यातव्येत्यर्थ।

मन्त्रोद्धार:

ॐ ह्रा ह्री ह्रुं ह्रू ह ह ह ह द्रू ह्रा ह्री ह्रूं क्ष द्रावय २ मोहय २ स्वाहा।

ॐ ह्र ह्रा ह्री ह्र क्ष भ्रां भ्रा ह्र ्स प्रबल बल चक्रे स्वाहा ।

वशीकरण विषयोऽपिसर्व्वो विधि वोंधव्या फल च द्रावण आकर्षण मोहन वशीकरणानिचेति सवोध्यं ।

अथ बीजोत्पत्ति

ॐ अ विद्युजिह्वा 'उ' काल वक्त्रा सयोगे द्वयोः उईति म महाकालः उं इति शत्रु क्षय कारक त्वेनानदोत्पादकत्व पल ह्री क्षतजस्थ व्योम, ववत्र धूर्म भैरव्यलं कृत नाद बिन्दु

यन्त्र न० ५
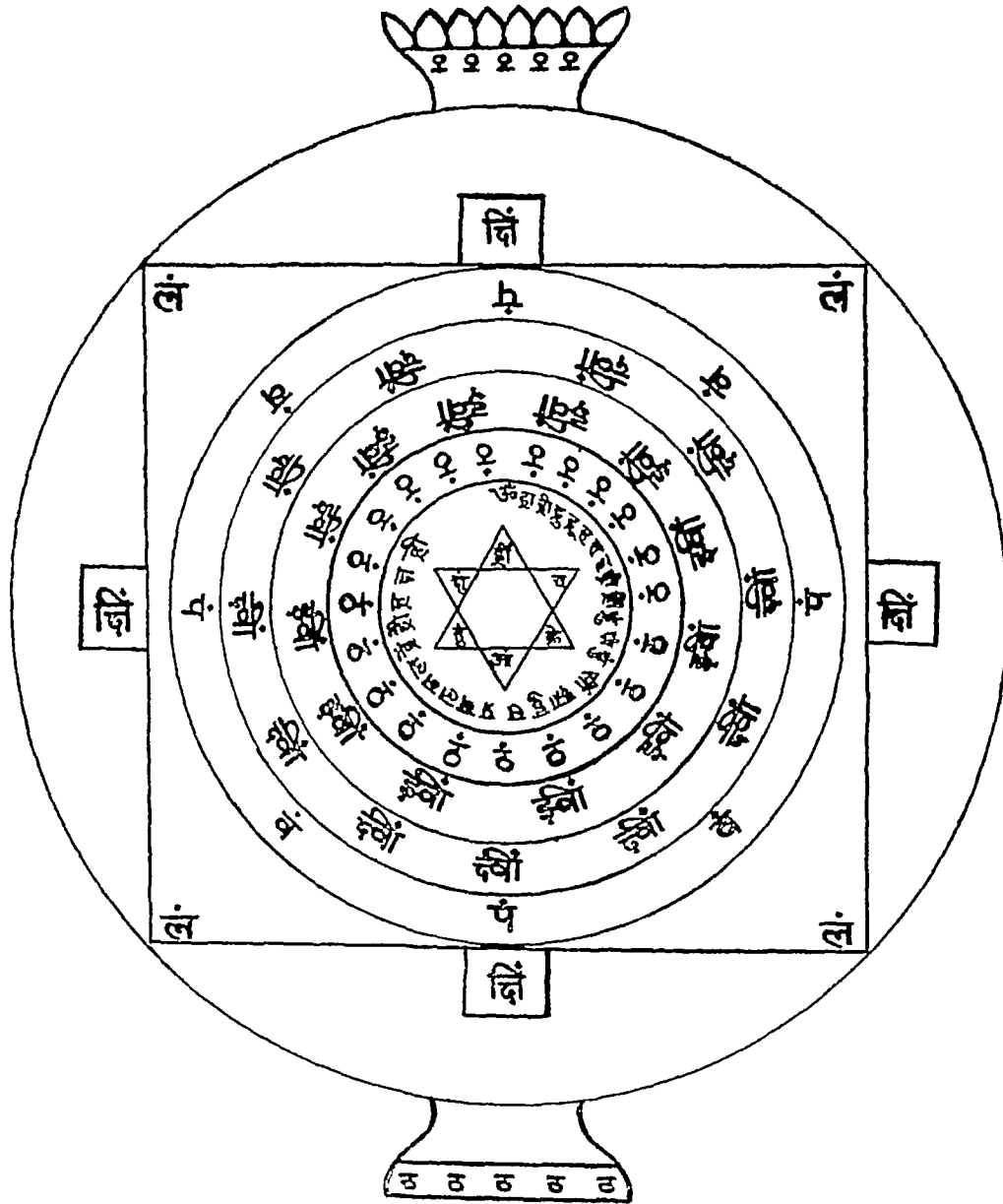
समायुक्तं बीज प्राथमिकं स्मृत, षट् कर्म सिद्धि करण फल ज्ञेयं । हुं काल वक्त्र युकफलं च स्तम्भन ज्ञेय र कार तदा कर्षण हू मोहनात्मक विदारी युक्त व्योमास्य रूद्र डाकिन्य ल कृत

नाद विन्दु समायुक्तं हं ह बीजद्वय भवेत् । चतु. शून्य हकार स्यात्फल क्रोधाग्नि वारुण विषाना स्तभ करण विज्ञेय विजकोशत द्रु द्रु कामरतीख्याते ह्ला ह्ली ह्रू क्ष उक्तफला ह ह्रां ह रूद्र डाकिनी भीमाक्षी चण्डिका तयोगात् त्रिलोक वशीकरणात्मका झ्रा झ्रा ह्रु स झ्रां याल-मुख आ कालरात्री तत्फल वलभय हरण झ्रो वालमुख र क्षतज श्रा काल रात्री फल रोग हरण ह्रु फलमाकर्पणं स धूम ध्वज स विसर्गस्तत्फल परदेश गमन फल इति ।

इस यन्त्र को ताँबे के पत्रे पर या चाँदी सोने के पत्रे पर खुदवा कर पूजन करे पश्चात् ऊपर लिखित दोनो मन्त्रो का पृथक २ जप करे, जिसका कार्य के लिये जपना है। वशीकरण विधि मे भी सर्व प्रकार की विधि जानना चाहिये । इन दोनो मन्त्रो को अलग २ जप साढे बारह हजार करने से द्रावण, आकर्षण, मोहन, वशीकरण आदि होता है। जप विधि पूर्वक करना चाहिए ।

शोभनार्थं षष्टम काव्यम

श्रा क्रो ह्री क्षुयुतांगे प्रलय दिन करास्तस्य कोटि प्रकाशे ।
श्रष्टौ वक्राणि धृत्वा विमल निज भुजै पद्ममेक फल च ।।
द्वाभ्या 'चक्र' कराल निशित चल शिख तार्क्ष्य रूढा प्रचण्डा ।
ह्राँ ह्री ह्रौ क्षोभ कारी र र र र रमणे त्राहि मा देवि चक्रे ।।६।।

हे चक्रे देविटेव मा त्राहि 'रक्ष रक्ष' कथ भूते आ क्रो ह्री क्षु युतान्य गानि यस्य आ क्रो ह्री क्षु युतांगे आनाभ्यु परि 'क्रो' ललाटे ह्री 'ह्रार्द' क्षु कर्ण द्वय पुन क थभूते प्रलया चल सवध्यऽस्ताचलस्य कोटि दिन कर प्रकाशे पुन. कथ भूते विमल निज भुजैरष्टभि अष्टौ चक्राणि धृत्वा पद्मर्क नवम् भुजे दशम भुजे प्यर्क फल द्वाभ्या एकादश द्वादश भुजाभ्या 'कराल" विक-राल' निशिता तीक्ष्णा 'चला' चचला शिखायस्य तत ईदृश चक्र धृत्वा प्रचण्डाऽसि पुन. कथ भूता तार्क्ष्य रूढा गरुढा गरूढा पुन कथ भूते चक्रे ह्रा ह्री ह्रौ क्षोभकारी र र र रमणो हे 'चक्रे' देवित्वं मां रक्ष रक्ष रक्ष इत्यर्थ ।

श्रथ यन्त्रोद्धार

द्वादश भुजा चक्रेश्वरी लिखित्वा गरढारूढा उक्त स्थानेपु वीजाति संलेख्य ह्रां ह्री ह्रौं इति त्रिभि वींजै वेप्टयेत् पश्चात् रं र र र वीज त्रय वेप्टितेऽग्नि पुटेस्थाप्य ध्यातव्येत्यु-द्धार ।

अथ मन्त्र .— ॐ आँ क्रौ ह्री क्षु ह्लाँ ह्री ह्रौ स्वाहा । इति मन्त्र ।

विधि .—क्षोभ कर्मण सर्वोज्ञेय फलं च त्रैलोक्य क्षोभत नाम सज्ञेयम् ।

अथ बीजोत्पत्ति :—आ आ काल रात्रि शत्रु सहार कारिका क: क्रोधीश: र: क्षतज औ 'सयोगात्' विद्वेषण फल ह्री मित्युक्त फल क्ष त्रैलोक्य ग्रसनात्मक 'उ' 'उ' काल वक्त्राम: महाकाल त्रिसयोगी क्षुं फन्चाकर्षण कर ज्ञेय ह्ला ह्री ह्रौ आ काल रात्री: ई गर्ज्जनी श्रो डाकिनो शेष पूर्ववत् फलं च क्षोभण र र र र चतुष्कस्य फलं चाग्नि बीजं चतुष्कं तु शत्रु क्रोध जलानतोच्चाटन फलं विज्ञेयं ।

यन्त्र न० ६
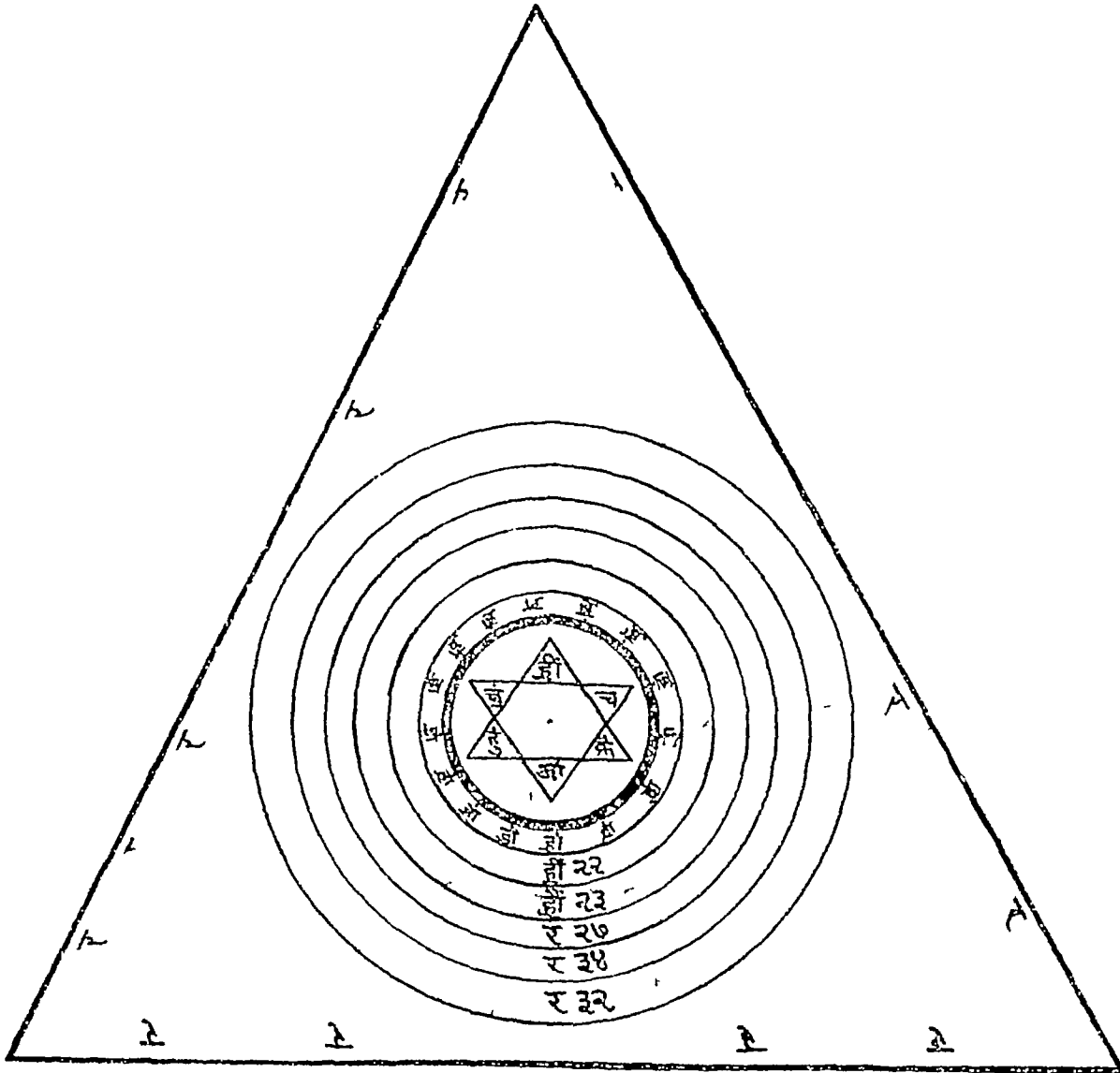
इस यन्त्र को इस प्रकार बनावे । प्रथम षट् कोणाकार बनावे । षट् कोण के प्रथम

कर्णिका मे आ, द्वितीय में हु, तीसरे मे क्षु, चौथे में ह्री, पचम मे च, छटे में क्रे लिखे फिर, पट्कोण के बीच मे चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति लिखे। षट् कोण के ऊपर ६ वलय खेंचे। प्रथम वलया कार मे १४ ह्रा, लिखे। द्विनीय वलय मे २२ ह्री लिखे। तीसरे वल्य मे २३ ह्रौं लिखे। चोथे वलय मे २७ र कार लिखे। पचम मे ३४ र, कार लिखे। छटे मे ३२ र कार लिखे। फिर वलया कार पर त्री कोण रेखा खीचे। त्री कोण के अन्दर १२ र कार खीचे। इस प्रकार यन्त्र वनावे।

सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर यन्त्र लिखे, चादी अथवा तावे के ऊपर खुदवा कर यन्त्र सामने रख कर मन्त्र का विधि पूर्वक जप करे, साढे बारह हजार तो, तीनो लोक मे क्षोभ होता है। ये यन्त्र मन्त्र त्रैलोक्य क्षोभन है।

तुष्टि कर्मंणार्थ सप्तम काव्यम्

स्रू ं क्षु हु क्षु विचित्रे त्रि नयन नयने नाद बिन्दूग्र नेत्रे।
च चं च वज्र धारा ल ल ल ल ललिते नील के शालि केशे।
च च च चक्र धारा चल चल चलिते नू पुरै लेलि लीले।
श्री स्र ्ह्रा ह्री सु कीर्ति. सुर वर नमिते त्राहि मा देवि चक्रे ।।६।।

टीका —हे चक्रे देवि त्व मा त्राहि रक्ष २ रक्ष कथ भूते चक्रे स्तु क्षुं हु क्षु विचित्रे पुन कथ भूते त्रि नयने स्त्राभि लोचने नंयन वस्तु प्रापणं यस्या· सापुन· कथ भूते नाद विन्दूग्र नेत्रे अर्द्ध चन्द्राकार विन्दुभि रूग्र नेत्रे च च च वज्रधारी ल ल ल ल ललिते नूपुर विराजमाने पुन कथ भूतै नूपुरै· च च च चक्र धारया चल चलिते पुन कथ भूते लोल चचला लीला यस्या सा पुन कथ भूते श्री स्र ्ह्रा ह्री सु कीर्ति रसि पुन कथ भूते सुर वर नमिते त्व रक्षत्ये त्यर्थ.।

यन्त्रोद्धार

षट्कोण चक्रमध्ये पूर्ववत मूर्ति विलिख्य ऊपरि स्रू क्षुं हु क्षु लिखत दक्षिणे च च च च ल ल ल ल इति उत्तरे च चं च च चल चल। इति अधएव श्री स्रू ह्रा ह्री इति विलिखते पश्चात् भूपुर विलिख्य वज्रोपरि ल ल ल ल इति लिखेत्।

मूल मन्त्रो द्वार .—ॐ स्रू क्षुं हु क्षु श्री स्रू ह्रा ह्री नम स्वाहा।

विधि .—अस्य तुष्टि कर्मणोवोध्यः फल यशो लाभोऽभ्युदयश्चेति वोधव्य.।

अथ बीजोत्पत्ति :—स्त्रू क्षुं हुं हुं-संस्तु धूमध्वजो, 'रः' क्षतज. उ काल वाक्याम महाकाल स्त्रू दहन बोज 'फल' शत्रु दहनादि क्ष क्षितिबीज 'उ' काल वक्त्रा सयोगात् 'व्यापकत्व' फलं क्षुं क्ष त्रैलोक्य ग्रसन बीज सयोगात् दा कृष्टि कृत्फलं च 'त्रयस्य' फल क्षेय ज्वल ज्वल ज्वलेति च ज्वाला मुख सज्ञात्वात् ल ल ल ल चतुष्कस्य फल प्रवल प्रवल इति चतुष्कं लस्य वल भेदि सज्ञात्वात् चं चड रूपं पुनश्च काल रूप पुनश्चं चामुण्डा रूप सिह वाहनत्व श्री लक्ष्मी बीज 'स्त्रू' दहन बोज ह्रा आर्ष बीज ह्री मूल बीजं ।इति। श्री स्त्रू ह्रा ह्री ।।इति।। रत्न चतुष्कं बिख्यात बीजकोशात् परिज्ञेयं ।

षट् कोण चक्र में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति लिख कर, फिर षट् कोण चक्र की कर्णिका में क्रमश. आ, हु, क्षु, ह्री, च, क्रे लिखे, फिर, षट् कोण चक्र के ऊपर चतुष्कोण रेखा खीचे। ऊपर आधा इंच का अंतराल छोड कर एक रेखा चतुष्कोण और खीचे, दोनों रेखाओ के बीच मे ऊपर स्त्रू क्षु हूं क्षु लिखे। दक्षिण मे चा चा चा चाँ ल ल म ल लिखे। उत्तर में चां चा चां चल चल लिखे, नीचे 'श्व' श्री स्त्रू ह्रा ह्री लिखे। फिर भू पुर को लिख कर वज्र के ऊपर ल ल ल ल लिखे।

यन्त्र नं० ७
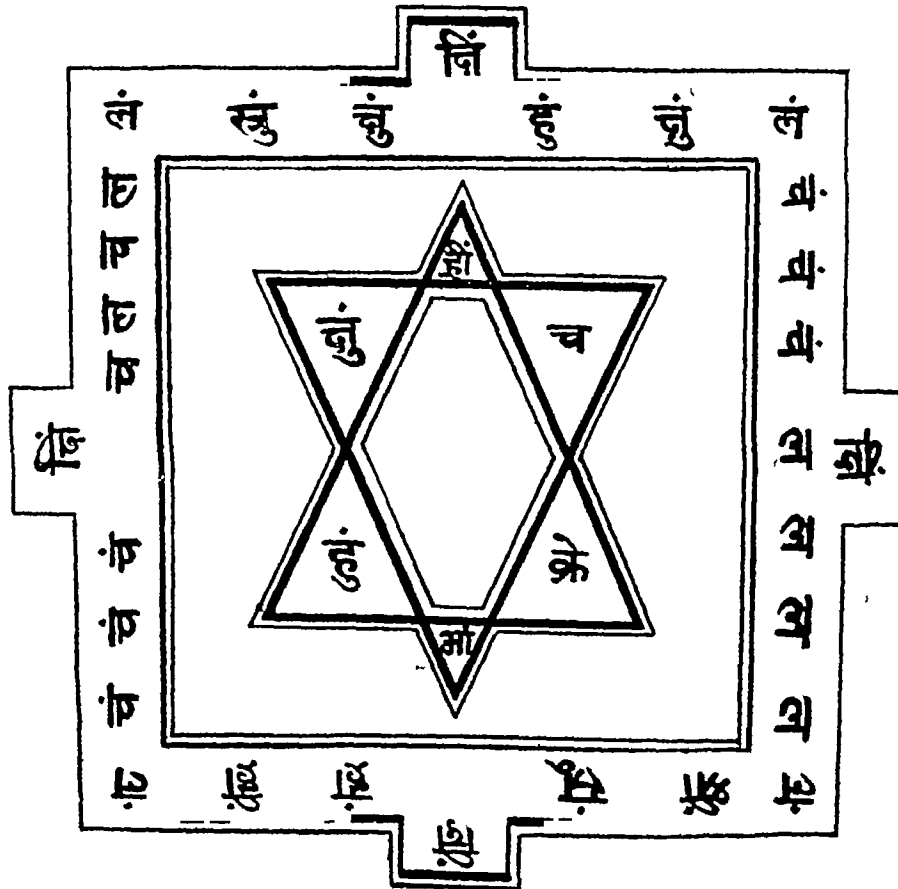
इस यन्त्र को चादी के ऊपर खुदवा कर पास मे रखे । और मन्त्र का सत्रा लक्ष जप विधि विधान पूर्वक करे तो यश का लाभ, अभ्युदय की प्राप्ति होती है ।

ये तुष्टि कर्म के लिए है ।

वश्य, मोहनार्थं अष्टम काव्य

ॐ ह्री फट्कार मन्त्रे हृदय मुपगते रूंधि वश्याधिकारे
ह्रा ह्री क्ली क्लि सु घोषे प्रलय घन घटा टोप शब्द प्रनादे ।।
वा फां क्रोध मूर्ते धगधगित शिखे ज्वालिनि ज्वाल माले ।
रौद्रे हु कार रूपे प्रकटित दर्शने त्राहि मा देवि चक्रे ।।८।।

टीका :—हे चक्रेदेवित्त्व मॉ त्राहि रक्ष रक्ष कथं भूते चक्रे ॐ ह्री फट् कार मन्त्रे हृदय सुपगत रूधि वश्याधिकारे ॐ ह्री फट् इत्येनेन रूधो त्यनेना कर्षण वशीकरणाधि कारे ह्रा ह्री क्ली क्लि सुघोषे सु शब्दे पुन. कथ भूते प्रलय घन घटा टोप शब्द वन्नादे पुन कथ भूते वा का क्रोधमय मूर्त्ते प्रनः कथ भूते धग धार्गताऽग्निसिखे हे ज्वालिनि हे ज्वाला माले हे रौद्रे हु कार रूपे हू वेष्टित मन्त्र 'रूप प्रकटित दर्शने' प्रकरित दते हे चक्रे देवित्वं मा त्राहि रक्षत्येर्थः ।

अथ मन्त्रोद्धार·—अस्मिन् अभ्यन्तरे ॐ ह्री फट् इति लिखेत् तदुपरि मूर्ति प्रलिख्य तदुपरि ह्रा ह्री क्ली क्लि लिख्यते दक्षिणे वा का ह्री लिखेत् उत्तरे च धग धग ज्वल ज्वल रूद्रे अधश्च ज्वालिनि दहर हु हुं इति विनिस्याऽग्नि मण्डलं कृत्वा ध्यायेदित्युद्धार ।

मूल मन्त्र .—ॐ ह्री फट् इति मन्त्र

वश्ये ॐ ह्रा ह्री क्ली क्लि वा फा ह्री धग २ ज्वालिनि ज्वल २ रूद्रे हु फट् चक्रे स्वाहा ।

विधि —अत्र वश्य मोहनाकर्षणानां कर्मणा वोध्य ।

कल मपि तदात्मक मेव संवोध्य इति ।

अथ वीजोत्पति – अ विद्युत 'उ' काल म. महाकाल ॐ सिद्ध फल शत्रु क्षय ह्री ह व्योम र मग्नि. ई धूम्र भैरवी सयोगात् ह्री वश्याधिकारे फट् इति वश्य वीज ह्रा

आर्ष बैंज फल मोहन ह्री मूल बीज माया मायाफल क्ली काम बीज क्लि क्लिन्ना बीज फल वश्य द्रावणोचेति व भयकर 'आ' काल रात्रिम. पूर्व सज्ञा फल मारण फल ह्री हकार शून्य रकार दहन हंकारः धूम्र भैरवी तत्सयोगात् 'तदेव' पूर्ववत् णग फल इत्यस्य मध्येघ इत्यस्य उग्र शूल सज्ञाग इत्यस्य चड संज्ञा णग इत्यनेनापि दह्लल फल वोध्य हु विद्वेषऽपि फट् वश्यात्म के जय शत्रु क्षय करोऽपिचेति बोध्य इत्येव बीज निष्पत्ति व्वेद्धिव्या बीज कोशत परत. स्वेन कि प्रोच्य तदेकान्वय युक्तित ।

य स्तोत्र रूप पठति निज मनो भक्ति पूर्व शृणोति त्रैलोक्य तस्य वश्य भवति बुध जने वाक्य पटुत्व च दिव्य । सोभाग्य स्त्रिषु मध्ये खगपति गमन गौरवत्वत् प्रशादात् । डाकिन्यो गुह्य कावा विदद्यति न भयं चक्र देव्या स्तवेन ।

यन्त्र नं० ८
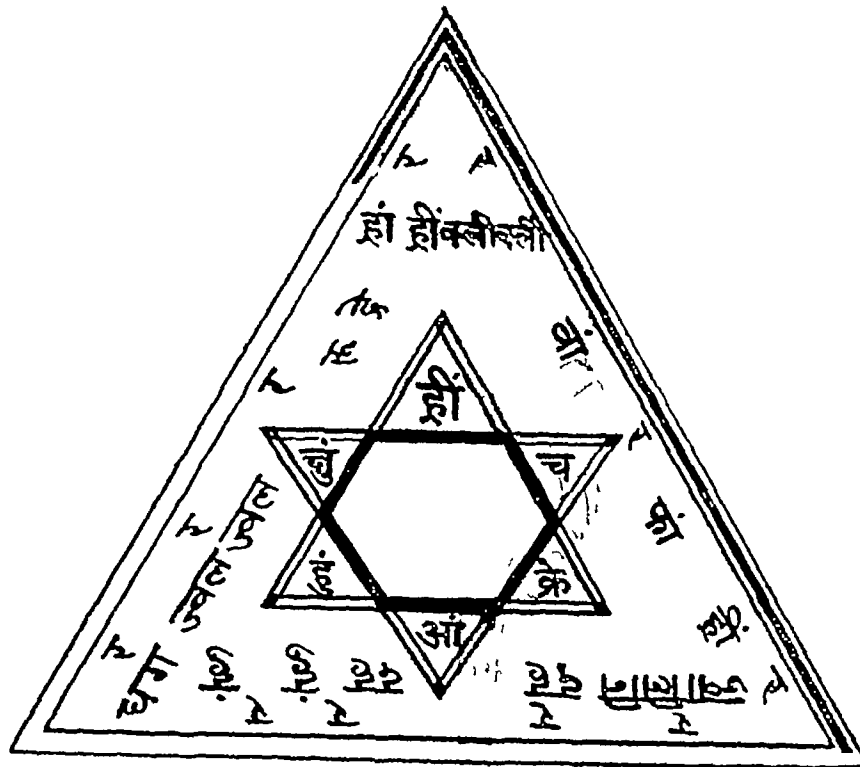
इस यन्त्र को प्रथम षट् कोण कार खीचे, षट् कोण मे चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति के उदर पर ॐ ह्री फट् लिखे । षट्कोण की कर्णिका मे क्रमश. आं ह क्षु ह्री, चक्रे लिखे । षट्कोण के ऊपर ह्रा ह्री क्ली क्लि, लिखे दक्षिण मे वा फा ह्री लिखे, उत्तर मे धग ज्वल २ रूद्रे लिखे,

और नीचें ज्वालिनि दह् दह् हु हु लिखे, पस्चात् अग्नि मन्डल वनावे याने ऊपर त्री कोणाकार रेखा खीच कर अन्दर तीनो तरफ र, कार लिखे। करीव तीनो तरफ मिला कर बारह, र, लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को सोना, चादी, व ताबे के पत्रे पर खुदबा कर शुद्धि करवा कर, मन्त्र का सवा लक्ष जप करके यन्त्र पास रखे तो सर्व जन वश्य होय और सर्व कार्य सिद्ध होता है। बस बडा मन्त्र भी है। सो बडा मन्त्र का साडे बारह हजार जप करना चाहिए। उससे भी वशी करण होता है। ये दोनो ही मन्त्र अन्तिम श्लोक के मूल मूल हैं।

इस स्तोत्र रूपी काव्य को जो कोई पढता है, अपने मन मे, भक्ति पूर्वक सुनता है उस पुरुप के तीनो लोक वशी हो जाते है। बुद्धिमान पुरुषो के सामने देवो के समान वाक् पटुता होती है। सौभाग्य की प्राप्ति होती है। स्त्रिवो मे विद्या घरो के समान गौरव को प्राप्त होता है। चक्रेश्वरी देवी के स्तवन से शाकिनी डाकिनी आदि का भी भय नही होता है।

विभिन्न प्रकार के रोग एव कष्ट निवारण हेतु यन्त्र

यन्त्र नं० १

२९	३६	२	७
६	३	३३	३२
३५	३०	८	१
४	५	३१	३४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गध से लिख कर पास मे रखने से दुष्ट मनुष्य का मुख स्तंभन होता है ।। १ ।।

यन्त्र नं० २

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर पास मे रक्खे तो स्त्री का गर्भ अधुरा नही गिरे ।। २ ।।

यन्त्र नं० ३

४१	४६	२	७	४०	१७
४२	६७	६७	३७	७६	४२
०८	३७	६७	३८	देवदत्त	४ २२
४६	७३	७३	४९	४	५

इस यन्त्र को रविवार के दिन अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर ताबीज में डाल कर गले में पहने तो मृत-वत्सा गर्भ रहे ।। ३ ।।

और नीचे ज्वालिनि दह् दह् हु हु लिखे, पस्चात् अग्नि मन्डल वनावे याने ऊपर त्री कोणाकार रेखा खीच कर अन्दर तीनो तरफ र, कार लिखे। करीव तीनो तरफ मिला कर बारह, र, लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को सोना, चादी, व तावे के पत्रे पर खुदबा कर शुद्धि करवा कर, मन्त्र का सवा लक्ष जप करके यन्त्र पास रखे तो सर्व जन वश्य होय और सर्व कार्य सिद्ध होता है। वस वडा मन्त्र भी है। सो वडा मन्त्र का साडे बारह हजार जप करना चाहिए। उससे भी वशी करण होता है। ये दोनो ही मन्त्र अन्तिम श्लोक के मूल मूल हैं।

इस स्तोत्र रूपी काव्य को जो कोई पढता है, अपने मन मे, भक्ति पूर्वक सुनता है उस पुरुष के तीनो लोक वशी हो जाते है। वुद्धिमान पुरुषो के सामने देवो के समान वाक् पटुता होती है। सौभाग्य की प्राप्ति होती है। स्त्रिवो मे विद्या घरो के समान गौरव को प्राप्त होता है। चक्रेश्वरी देवी के स्तवन से शाकिनी डाकिनी आदि का भी भय नही होता है।

विभिन्न प्रकार के रोग एव कष्ट निवारण हेतु यन्त्र

यन्त्र न० १

२९	३६	२	७
६	३	३३	३२
३५	३०	८	१
४	५	३१	३४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गध से लिख कर पास मे रखने से दुष्ट मनुष्य का मुख स्तंभन होता है ।। १ ।।

यन्त्र नं० २

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर पास मे रक्खे तो स्त्री का गर्भ अधुरा नही गिरे ।। २ ।।

यन्त्र नं० ३

४१	४६	२	७	४०	१७
४२	६७	६७	३७	७६	४२
०८	३७	६७	३८	देवदत्त	४ २२
४६	७३	७३	४९	४	५

इस यन्त्र को रविवार के दिन अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर ताबीज में डाल कर गले में पहने तो मृत वत्सा गर्भ रहे ।। ३ ।।

यन्त्र न० ४

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

इस यन्त्र को लिख कर जो, सुपारी, घृत, अजवाइन, इन चिजो सहित कुलडी (छोटा मीट्टी का घडा) के अन्दर रख कर गद्दी के नीचे गाडे और ऊपर बैठकर व्यापार करें तो व्यापार अधिक चलता है ॥ ४ ॥

यन्त्र न० ५

१०	१०	१०	१०
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

इस यन्त्र को रविवार के दिन रोटी बनाकर, उस रोटी पर यन्त्र लिखे, धान मे उस रोटी को रखे तो अनाज कभी भी नही सडता है ॥ ४ ॥

यन्त्र नं० ६

६	१३	२	७
६	३	१०	९
१२	७	८	१
४	५	८	११

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर स्त्री के गले मे बाधे तो रक्त स्त्राव रुक जाता है ॥ ६ ॥
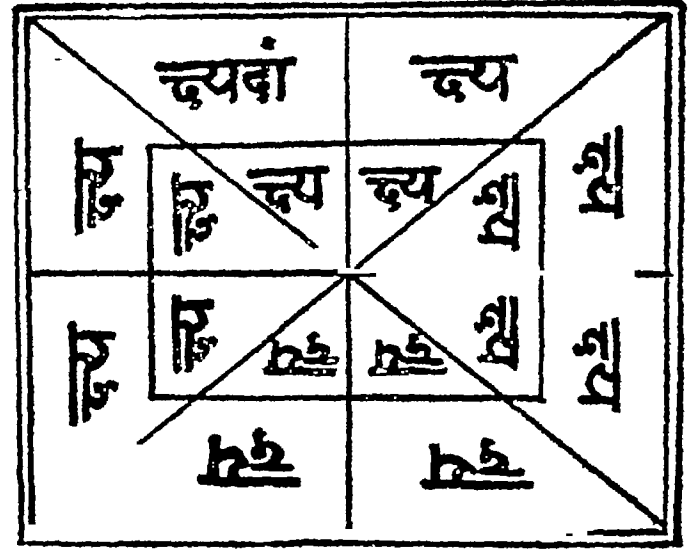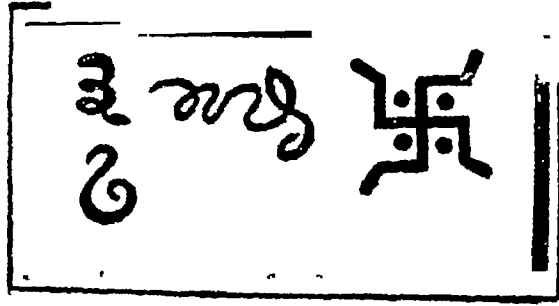
यन्त्र नं० ७

इस यन्त्र को लिख कर लोहे की कील से ठोके तो दाढ दुखती अच्छी हो जाती है ॥ ७ ॥

यन्त्र नं० ८

इस यन्त्र को सूत कातने वाले रेहटीये मे (चरखा) बाध कर उल्टा १०८ वार घुमावे परदेश गया शीघ्र आवे ॥ ८ ॥

यन्त्र नं ९

इ कु	हे	आ फ	का स्त्री स्त	ह म
४४ आका	वके सि	४५ अ व क	४ व इ	म श्री

इस यन्त्र को वसुले पर (लकडी काटने वाले वसुले) लिख कर यन्त्र के दोनों वाजु जिनमे झगडा करवाना हो उनका नाम लिखे फिर उस वसुला को आग में तपावे, तो दोनो की जुदाई होती है। याने मन मुटाव हो जाता है। अथवा वंध्या स्त्री को पुत्र पेदा होता है ॥ ९ ॥

यन्त्र नं० १०

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ट ५७	[illegible]	ट ३	ट११
५ ६	[illegible]	उ	३२

इस यन्त्र व सोला उपरि लिखी अग्नि मध्ये धमोजे पद्दै उपरिति राध करा वो वध्या छूटूइ ॥ १० ॥

यन्त्र न० ११

७	४	७	४
९	६	ऽ।	ऽ।
७७	७	५	ऽ।
९२	ऽ।	७	२१

इस यन्त्र को वसोला पर लिखि कर अग्नि मध्ये धमीजै स्त्री व ध्या छु्टूइ। याने पुत्र होगा ॥ ११ ॥

यन्त्र नं० १२ ॥
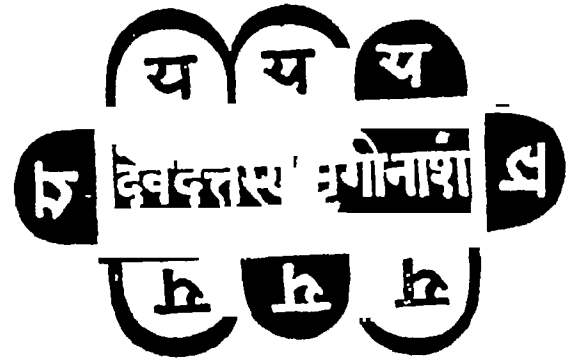
इस यन्त्र को लिख गले मे वाघे तो मृगी रोग जाय ॥ १२

यन्त्र नं० १३

२७	२०	२५
२२	२४	२६
२३	२८	२१

इस यन्त्र २० से लिखना शुरु करे। क्रम २ से सख्या बढाते हुवे लिखे तो डाकिनी शाकिनी दोष दूर होता है ।। १३ ।।

यन्त्र नं० १४

७५	७५	११	११	११	११	११	११
१५	३५	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११

इस यन्त्र को लिख कर धान के अंदर डाल कर रक्खे, तो धान सुलता (सड़ता) नही है ।।१४।।

यन्त्र नं० १५

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर गले मे वाधने से डाकिनी शाकिनी दोप दूर होता है, और दृष्टिदोप निकल जाता है ।। १५ ।।

यन्त्र न ० १६

१०	१७	२	७	ल
६	३	१४	१४	ल
१६	११	८	१	ल
४	५	१२	१५	ल

इस यन्त्र को केशर से थाली मे लिखकर धोकर पिलाने से कष्टि स्त्री, कष्ट से छूट जाती है, याने प्रसूती अच्छी तरह हो जाती है ।। १६ ।।

यन्त्र नं० १७

६	१३	२	७
६	३	१०	९
१२	७	८	१
४	५	८	११

इस यन्त्र को लिख कर ताबिज मे डालकर गुगुल का धूप लगाकर, माथे पर धारण करने से, मार्ग मे किसी प्रकार का भय नही होता है ॥ १७ ॥

यन्त्र नं० १८

४२	४९	२	७
२१	३	४६	४४
४८	४३	८	१
४	५	४१	४७

इस यन्त्र को लिख कर पशुओं के गले में बाधने से पशुओ को किसी प्रकार का रोग नही होता है ॥ १८ ॥

यन्त्र नं० १९

१२	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१९	३२

इस यन्त्र को लिख कर गले मे बाधने से दृष्टि दोष, शाकिनी, भूत, प्रेत., डाकिनी: सिंहारी सर्व दोप मिटे ॥ १९ ॥

यन्त्र नं० २०

२८	७	४	३३
३५	२	५	३०
६	३१	३४	१
३	३२	२९	८

इस यन्त्र को लिख कर माथे पर रक्खे तो झगडे पर, विजय हो और नामर्द मर्द होई ॥ २० ॥

यन्त्र न० २१

क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं
क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं
देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त
क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं
क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं	क्ष्म्ल्व्यूं

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोज पत्र पर लिखकर पास रक्खे तो डाकिन्यादि सर्व रोग जाता है ।। २१ ।।

यन्त्र न० २२

क्ली क्ली

क्ली ८	क्ली १	क्ली ६
क्ली ३	क्ली ५	क्ली ७
क्ली ४	क्ली ९	क्ली २

क्ली क्ली

ह्री यत्र नं० २३ ह्री

ह्री ८	ह्री १	ह्री ६
ह्री ३	ह्री ५	ह्री ७
ह्री ४	ह्री ९	ह्री २

ह्री सकट निवारण ह्री

श्री यंत्र नं० २४ श्री

श्री ८	श्री १	श्री ६
श्री ३	श्री ५	श्री ७
श्री ४	श्री ९	श्री २

श्री रोजगार कर श्री

इन तीनो यन्त्रो मे से जिसका जो काम हो वह यन्त्र भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख कर हाथ या भुजा मे बाधे तो उसका वह कार्य सिद्धि होती है ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

यंत्र नं० २५
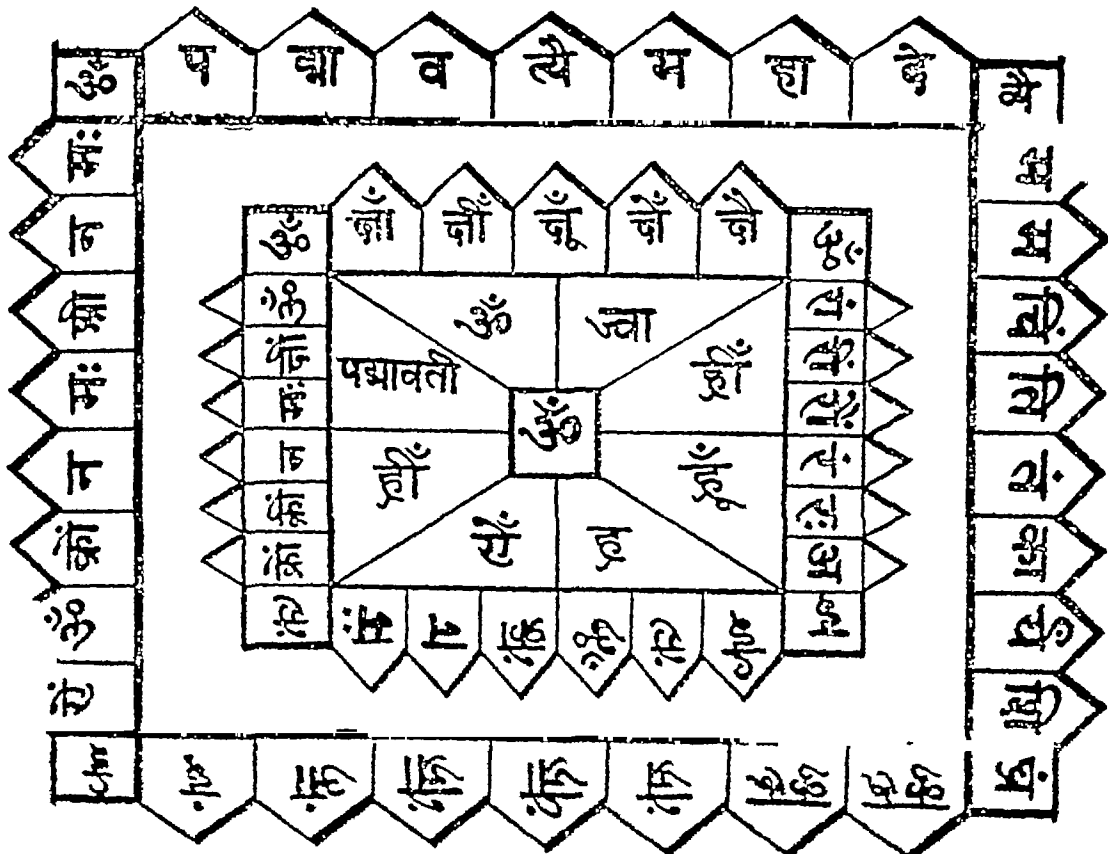
इद यत्र श्री चिन्तामणि सर्व कार्य-कर्म कर। इद यत्र सुरभि कर्पूर कस्तूरी, केशर, गोरोचनादि लिख्यते। सुवर्ण रूप मृदगेन भिवेष्टित कृत्वा मस्तके अथवा बाहु धारयते। सदा सर्व जन प्रथो भवति। सर्वेपि वशी स्यात्। यस्य कस्यापि कारमणन प्रभवन्ति। नागवली पत्रेण चदनेन यत्रं लिखित्वा वन्ध्या स्त्री दीपते ऋतु वेलाया प्रत्रो प्रसूति गर्भ धारयति। नान्यथा पश्चात् गौ दुग्ध चावल दीयते, दृष्ट प्रत्यय आत्म पार्श्वे स्थाप्यते, सकल जन मोहोत्या धत। ।। इति श्री चिन्तामणि यत्र प्रभाव सत्य छै ।। यस्य कस्याऽपि न दातव्य ।। २५ ।।

पंदरिया यन्त्र विधि

इस १५ वा यन्त्र को शुभ तिथि, शुभ वार देख कर पुरुष ॐ ह्री श्री क्ली मम देहि वाञ्छित स्वाहा।

यन्त्र न० २६

६	७	२
१	५	९
८	३	४

ब्राह्मण के लिये भोजपत्र पर, वैश्य के लिए ताडपत्र पर, अथवा कागज पर लाल चन्दन, कस्तुरी आदि से लिखना। वश करने के लिए लाल चन्दन से लिखना, दुकान के लिए कस्तूरी से, स्तम्भन के लिए हल्दी से, देव दर्शन के लिए केशर से, मारण के लिए धतूरे से, उच्चाटन के लिए श्मसान के कोयले से, विद्वेपण के लिए सफेद चन्दन से, शाति के लिए दिव्य रस से कलम मुसल स्याही से लिख, सब काम ऊपर एक अंगुल प्रमाण ५ अंगुल प्रमाण, दो अंगुल प्रमाण, आठ, तीन, दस, चार तथा १५ अगुल प्रमाण कलम होनी चाहिये। सोना की १, चादी की २, साँभर पक्षी के पंख की ३, कौवा के पख की ४, लौह की ५-६।

विधि —लाल आसन, लाल वस्त्र, लाल पुष्प, लाल चन्दन, ब्रह्मचर्य से रहना, जमीन पर सोना, लोभ छोड़ना। मोक्ष के लिए १० हजार जप करना, नष्ट राज्य की प्राप्ति के लिये २० हजार जाप करना, जीतने के लिए ३० हजार जप करना, पाप दूर करने के लिये तीन सौ चालीस हजार या पचास हजार से वचन सिद्धि, ६० हजार से जल में प्रवेश, ७० हजार से सर्व वश होय, सवा लक्ष (सवा लाख) से मनुष्य शिव सुख के समान हो।

अंक भरने की विधि. लाभ तथा सुख के लिए १ अङ्क से भरना, जीतने के अर्थ भरे तो २ से भरना, क्षय करना हो तो ३ अंक से भरना, वश करने के लिये ४ अक से भरना। परदेश से बुलाना हो तो ५ के अक से भरना, उच्चाटन करना हो तो ६ के अक से भरना, मोहन करना हो तो ७ के अंक से भरना, सर्व कार्य सिद्धि के लिये ८ से और सतान तथा गर्भ स्तम्भन, रोग दूर करना हो तो ९ के अक से भरना ॥ २६ ॥

बीसा यन्त्र कल्प

यन्त्र नं० २७
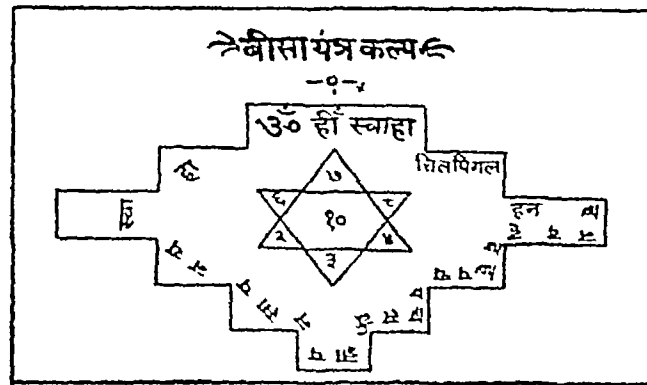
वीसा यन्त्र :—वीसा यन्त्र कल्प जिसके साथ विधान, यन्त्र और मन्त्र का मिलना भाग्योदय से होता है। यन्त्र के साथ मन्त्र होने से आराधना करने वाले को जल्दी सिद्धि होती है। पहले यन्त्र वना देते हैं। यन्त्र को ठीक प्रकार से समझ लेना चाहिये। ऊपर वताये हुये यन्त्र का आलेखन अष्ट गन्ध से करना चाहिये। और जब सब कोठे तैयार हो जाये। तब बीच में जो यन्त्र हो, खुणिया वताया है। उनमें प्रथम बांयी तरफ के कोठे में दो का अंक लिखना, फिर तीन का, चार का, छै, सात,

आठ और दस का अङ्क लिख, यन्त्र लेखन को पूरा करने के वाद वाजू मे मन्त्र लिखना चाहिये।

मन्त्र :—ॐ ह्री चित पिंगल दह २ ज्ञापन, हन २, पच २ सर्व सापय स्वाहा ।

विधि —इस मन्त्र को प्रथम ऊपर कोठे मे से प्रारम्भ कर वताये मुताबिक लिखे, जैसे— ॐ ह्री लिखा, वाद मे दूसरे कोठे मे चितपिंगल, तीसरे के नीचे कोठे मे दह, चौथे के वायी तरफ के कोठे मे ज्ञापन लिखे, और नीचे दाहिनी ओर के कोठे में हन २ लिखे, नीचे वायी ओर के कोठे मे, के कोने मे पच २ लिखे, सर्व भी लिखे, ऊपर के वायी ओर के कोठे मे सापय लिखना, और ऊपर के दाहिनी ओर के कोने मे स्वाहा लिखे। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवाना चाहिये। यन्त्र को सिद्ध करते समय किसी एकान्त जगह मे निर्जन्तुक स्थान को देखे, जो पीपल पेड के नीचे हो, वहा अखण्ड दीपक जलाकर यन्त्र सिद्ध करे। तुम्हारे यन्त्र सिद्ध करने मे किसी प्रकार की वाधा नही आवे, इसलिये दो नोकर साथ मे ले जाना चाहिये। इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर १०८ वार लिखना चाहिये, लिख कर उन पत्तो मे पीपल की लकडी से घी लगावे, फिर रख देवे, मन्त्र का जप प्रारम्भ करना, मन्त्र साढे वारह हजार करना, फिर जप किया हुआ मन्त्र का दशास होम करना, होम करते समय, पीपल की लकडी के साथ, जो पीपल के पत्ते पर यन्त्र लिखे थे, उन पत्तो को भी एक २ मन्त्र के साथ आहुती देते जाना, पीपल की लकड़ी के साथ, कपूर, दशाग, धूप, भी लेना आवश्यक है। इस तरह से ४० दिन तक १०८-१०८ वार क्रिया करना, खाना मे केवल चालीस दिन तक दूध या दूध की वस्तु ही वनी हुई, गरम पानी ठण्डा कर पीये, भूमि शयन, ब्रह्मचर्य पाले, उनके वस्त्र पर शयन करे, पिछली रात्रि मे जप करे, वैसे मन्त्र जप त्रिकाल कर सकते हैं। सध्या के समय वरावर साधना और देव की, फल, नैवेद्य से नित्य ही पूजा करे, पुष्प गुलाव के या मालती के चढाना, इस तरह करते समय रात्रि मे जव स्वप्न आवे उसका ध्यान रखना। जव सिद्धि प्राप्त हो तव यन्त्र सामने रख कर, मन्त्र की एक माला फेर कर सो जाने से स्वप्न मे शुभाशुभ मालूम होगा। व्यापार के अर्थ अक भी स्वप्न मे मालूम होगा। कुछ यन्त्र भोजपत्र पर या कागज पर सिद्ध करते समय सामने रखना चाहिये। भोजपत्र पर लिखे हुये मे से १ यन्त्र अपने पास रख कर व्यापार करने से वहुत लाभ होगा। वाकी यन्त्र

दूसरों को भी दे सकते है । उपकारार्थ । धर्म, नीति, न्याय, श्रद्धा को नही छोडे, धर्म से विजय पा सकते है ॥ २७ ॥

यन्त्र नं० २८
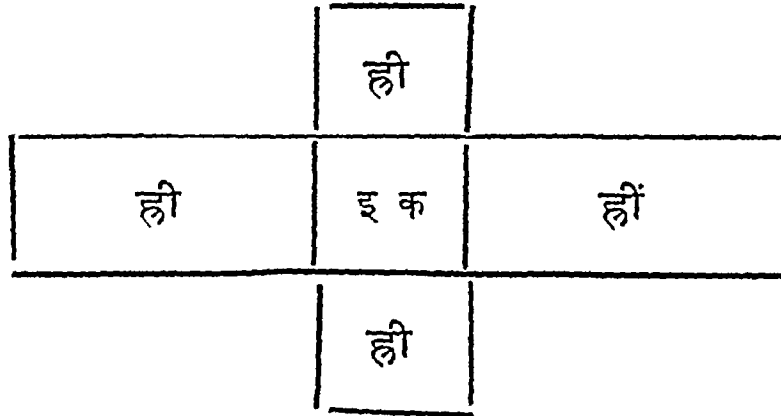
इस यन्त्र को लिखकर शत्रु के सोने की जगह पर गाढ देवे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है ॥ २८ ॥

यन्त्र नं० २९
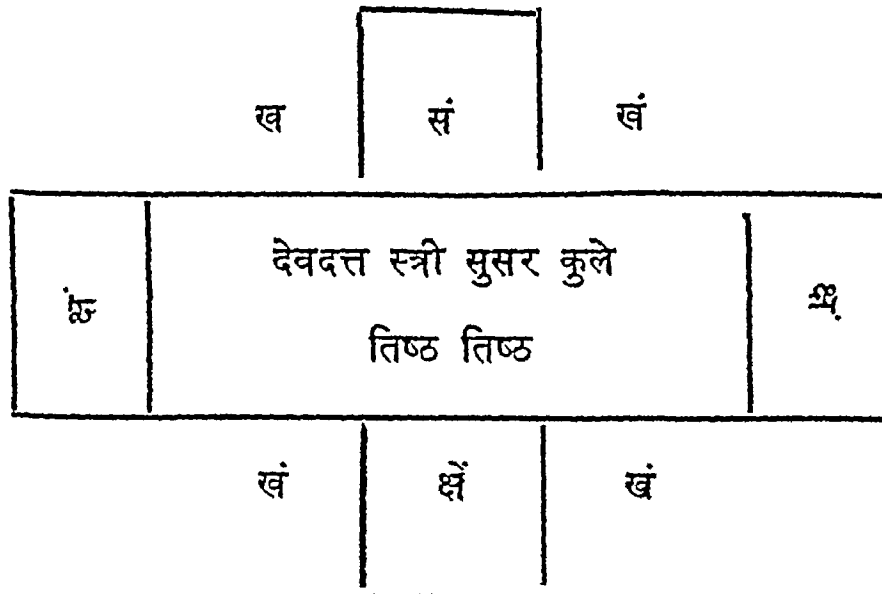
इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से लिख, तावीज में डाल कर गले मे बांधे, तो स्त्री सासरे में रहती है ॥ २९ ॥

यन्त्र न० ३५

२५	८०	ह	१५	५०
२०	४५	र	३०	७४
स	र	ह्री नाम	सुं	स
७०	३५	हूं	६०	५
५०	२३ ७८	ह	६५	४०

इस यन्त्र को सुरभि द्रव्यो से लिखकर पास मे रखने से शत्रु वश मे होता है। और डाकिनी शाकिनी आदि दोष दूर होते हैं। और चोर भयादिक नही होते हैं ॥३५॥

यन्त्र नं० ३६

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर सोने के मादलिया मे डालकर, अथवा चादी के मादलिया मे डालकर पास रखे, फिर ११ सेर आटे की रोटी बना कर कुत्तों को खिलावे, देव गुरु के पाव पूजे तो राजा वश होय, ॥३६॥

यन्त्र नं० ३७

७१	४०	२५	४६	६	१२
८०	७७	८८	६६	६०	१४
१५	१८	२०	२७	२६	४४
४६	५५	५७	३४	४५	४८
क	स्वा	श्री	ऐ	न	ह्री
२१	३१	६०	६०	१५	५७
२४	४४	६७	६२	६६	६६

ॐ ह्री श्री क्ली ऐं द्राय आसन वज्र ड ड सही करि। सिद्ध सुखं फुट् स्वाहा नमः। इदं यन्त्र मन्त्र भोज पत्रे रवि दिन मे अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखे तो शत्रु स्वयं का दास होता है ॥३७॥

यत्र न. ३८

इस यन्त्र को लिखकर ३ दिन तक गर्म पानी मे डाले तो शीत ज्वर दूर होता है। और शीतल जल मे डाले तो ताप ज्वर दूर हो। हाथ मे वाधे तो वेला ज्वर दूर होता है ॥३८॥

ह्रीं

व

देवदत्त

व
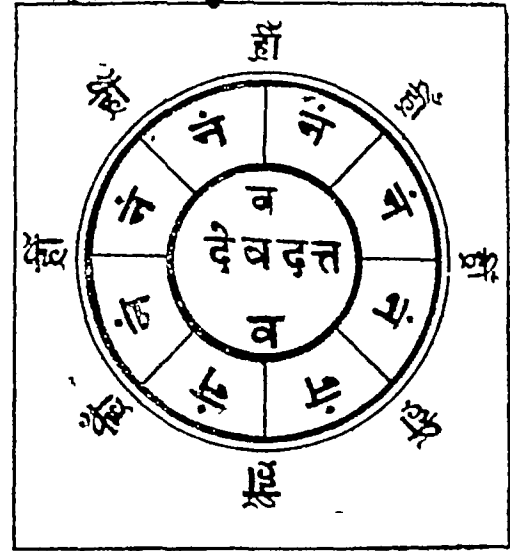
यन्त्र नं० ३९

			२	६	२१		
			२१	३१	३		
			ज	२५	द		
३	स्व	स्व आ स्व	२१	६	डा	स्व ग्नि श्र ध्र	ल
३	ज	इ व्री ग्नी	श्री	डा	ष्य	रो स्व ग्रा र	ह
३	स्वा	दी ई. २०	ह्री	स्वा	र्द्ध	स्व र्गा ग्नि	ल
			म३०	२३१	श्रघ्र		
			श्री	३३	१८		
			३	३	३		

इस यन्त्र को अपने पहनने के कपड़े पर, नाम सहित लिख कर, कपड़ा जलावे, फिर उसकी राख (भस्म) को खिलावे तो वश्य होय ॥३९॥

यन्त्र नं० ४०

त	य	द	लं
ल	तं	प	दं
दं	प	तं	दं
तं	पं	दं	लं

इस यन्त्र को बाँस की कलम से जमीन पर लिखे, तो मित्र समागम होता है ॥४०॥

यन्त्र नं० ४१
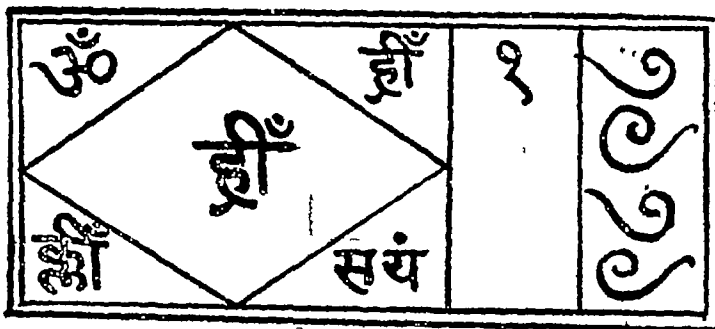
इस यन्त्र को गेहूँ की रोटी पर लिखकर काली कुत्ती को खिलावे, तो सासु वश में होती है। काले कुत्ते को खिलाने से ससुर वश में होता है ॥४१॥

यंत्र न० ४२

२	६	२१
२१	३१	३
ज	२५	छ
स	स्व	आ
ज	स्व	स्व

इस यन्त्र को चन्दन, सिन्दुर, से भोजपत्र पर लिखकर पास मे रखे तो बाण, (तीर) नही लगता है। केशर किस्तुरी से लिखे, तो सर्व वश होते हैं ॥४२॥

यन्त्र नं० ४३

१	१५१	३५	२३
३१॥	२७॥	३॥५	॥३६
१॥	६॥	२४॥	१४॥
२४	३४॥	५॥	४॥

रा	३८	ॐ
॥	ॐ	ह
छ	छ	श्री

इस यन्त्र को बच्चो के गले मे बांधने से दांत सुख पूर्वक आते है ॥४३॥

यन्त्र न० ४४
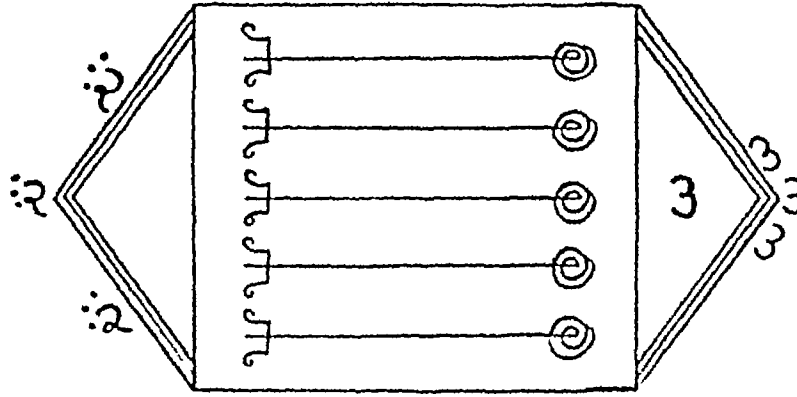
इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर पास रक्खे, तो भूत प्रेत हा हा कार करके भाग जाये। (अग्नि सुं जाय सूध छै) ।।४४।।

यन्त्र नं ४५
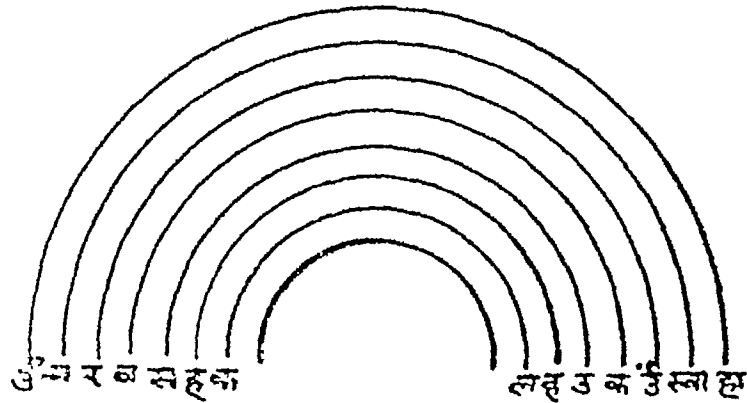
इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर कमर में बाधने से गर्भ का स्थंभन होता है ।।४५।।

यंत्र नं० ४६

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिख कर सिर पर धारण करे, तो राजा वश मे होता है ।।४६।।

यन्त्र न० ४७

इस यन्त्र को रविवार के दिन घी से कागज पर लिखे, फिर दीपक मे यन्त्र को जलावे तो नर वश्य मे होता है । तस्य (उसके) कपडे पर तेल, मीश्री, मोठा (नमक) से लिख कर प्रतिदिन १ जलावे, तो परस्पर का स्नेह नाश होता है । अगर पूरे हो सात दिन जलावे तो शत्रु का शय होता है । किन्तु ऐसा करे नही ।।४७।।

यन्त्र न० ४८

इस यन्त्र को अर्क (आकडा) के पत्ते पर लिख, ऊपर नीचे पत्थर से दवावे याने एक पत्थर के नीचे रखे फिर ऊपर यन्त्र रखे, फिर यन्त्र के ऊपर पत्थर रखे देवदत्त की जगह शत्रु का नाम लिखे शत्रु का नाश हो किन्तु ऐसा करे नही महान हिंसा का दोष लगेगा ।।४८।।
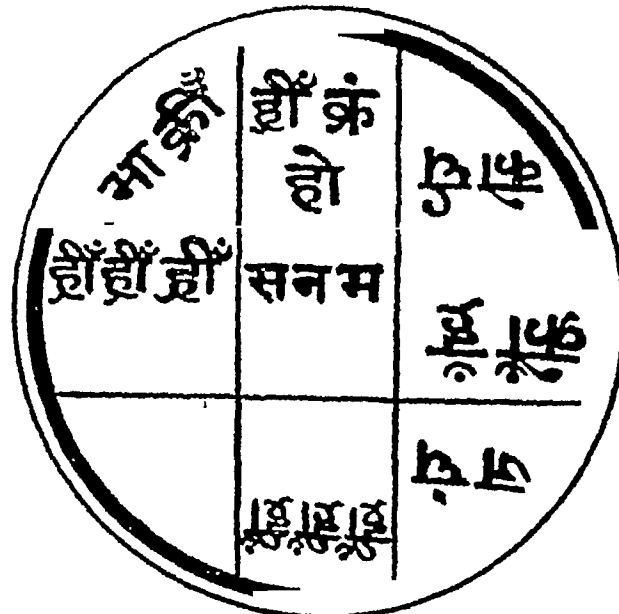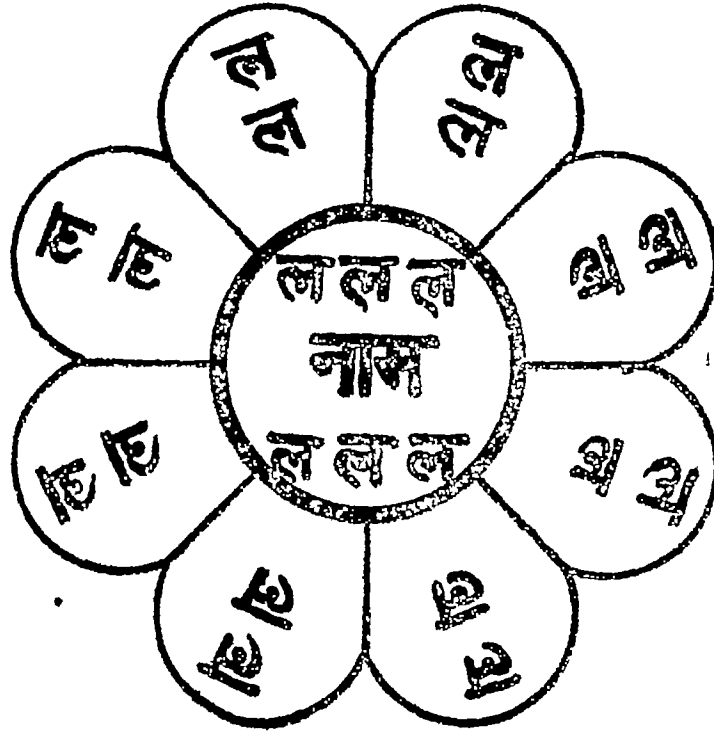
यन्त्र न० ४६

इस यन्त्र को हल्दी से लिख, शिला संपुट कर अधोमुख कर के रखे, तो शत्रु का मुख स्थम्भन होता है ।।४६।।

यन्त्र न० ५०

इस यन्त्र को नागरवेल के पत्ते पर आक के दूध मे अखरोट ३ पीस कर साथ मे राइ भी मिलावे, और यन्त्र इससे लिख कर दीप शिखा मे दिन तीन तक जलावे तो रम्भा भी वश से हो जाय। तो अन्य स्त्री की तो वात ही क्या ? दृष्ट प्रत्यक्ष ॥५०॥

यन्त्र नं० ५१

एस यन्त्र को आक के पत्ते पर अष्ट गन्ध से लिखकर ऊपर शीला, नीचे शीला, वीच मे यन्त्र रखना, तो शत्रु वश्य होता है ॥५१॥

यन्त्र नं० ५२

इस यन्त्र को थाली के अन्दर सुगन्धित द्रव्यो से लिख कर ३ दिन त्रिकाल पूजा करके, चौथे दिन दूध से थाली धोकर पीये तो स्त्री के निश्चय से गर्भ रहे ।।५२।।

यत्र नं० ५३

इस यन्त्र का मन्त्र —ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्री धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय, अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षिप्रं क्षुद्रान् स्थंभय २ जृंभय २ स्वाहा ।

विधि :—इस यन्त्र को शुभ दिन मे पवित्र होकर सुगन्धित द्रव्यो से लिखे, फिर सफेद वस्त्र पहन कर पूर्व दिशा व उत्तर दिशा मे बैठकर पद्मासन से बैठकर १२००० हजार सफेद पुष्पो से जप करे, यन्त्र पार्श्व नाथ पद्मावती के सामने स्थापित करके जप करे । रविवार से ले कर रविवार तक, १३०० जाप नित्य करे, तव मंत्र सिद्ध होता है। जव कार्य पडे तव इस प्रकार करे, प्रथम शातिक, पौष्टिक, मंगलीक, कार्य मे सफेद माला, सफेद धोती, सफेद फूल सुगन्धित से, दिन मे १०८ वार जपे तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल ध्यान करे।

लक्ष्मी प्राप्त पर जरद धोती, जरद माला, जरद आसन, जरद फूल, पद्मासन से बैठ कर उत्तर दिशा मे मुंह करके श्री पार्श्वनाथ प्रभु के सामने चपा के पुष्प १०८ से जप करे, रविवार से लेकर आठ दिन पर्यंत नित्य ही केशर, चन्दन, अगर कपूर से यन्त्र पूजा करे, लक्ष्मी लाभ होगा, पीत वर्ण का ध्यान करे।

वश्य करने के लिये लालासन, लाल माला, लाल कपडा, पूर्व दिशा मे मुख या उत्तर दिशा मे मुख पद्मासन से पार्श्व प्रभु के सामने रविवार से लेकर आठ दिन पर्यन्त, कनेर के १०८ फूलो मे नित्य करे, सर्ववश्व होगा, फूल नित्य ही ताजा चूने हुये होने चाहिये। लाल ध्यान करे।

भूत प्रेत, शाकिनी, डाकिनी का उपद्रव हटाने के लिए, काला आसन, काला कपडा, काली माला, पंच वर्ण के पुष्पो से लोह रक्षा करते हुए, षटकोण यन्त्र, सामने रख कर, पूर्व दिशा मे बैठकर १०८ वार २ जप आठ दिन पर्यन्त नित्य जप करे। भूतादि दोष नष्ट होते है ॥५३॥

परविद्या छेदन **कलि कुंड यन्त्र**

यन्त्र न० ५४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर से लिख कर गले या हाथ मे बाधे, तो परकृत विद्या, मूठ कामण, से रक्षा होती है। यन्त्र मे लिखे हुये मन्त्र क साढे बारह हजार जप करे, और तदशास होम करे ॥५४॥

ज्वरोपशम
कुलिकुड
यन्त्र

यत्र नं० ५५
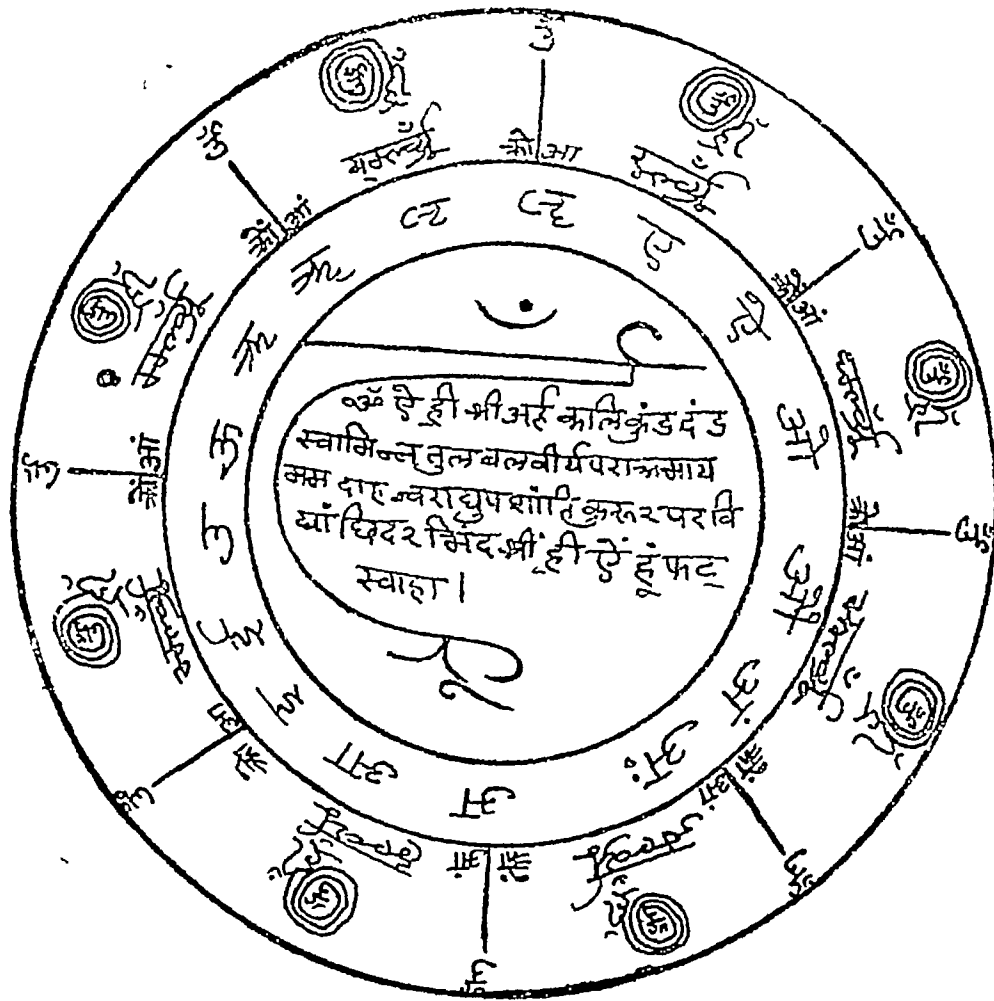
लघु सिद्धचक्र यंत्र नं० ३५८
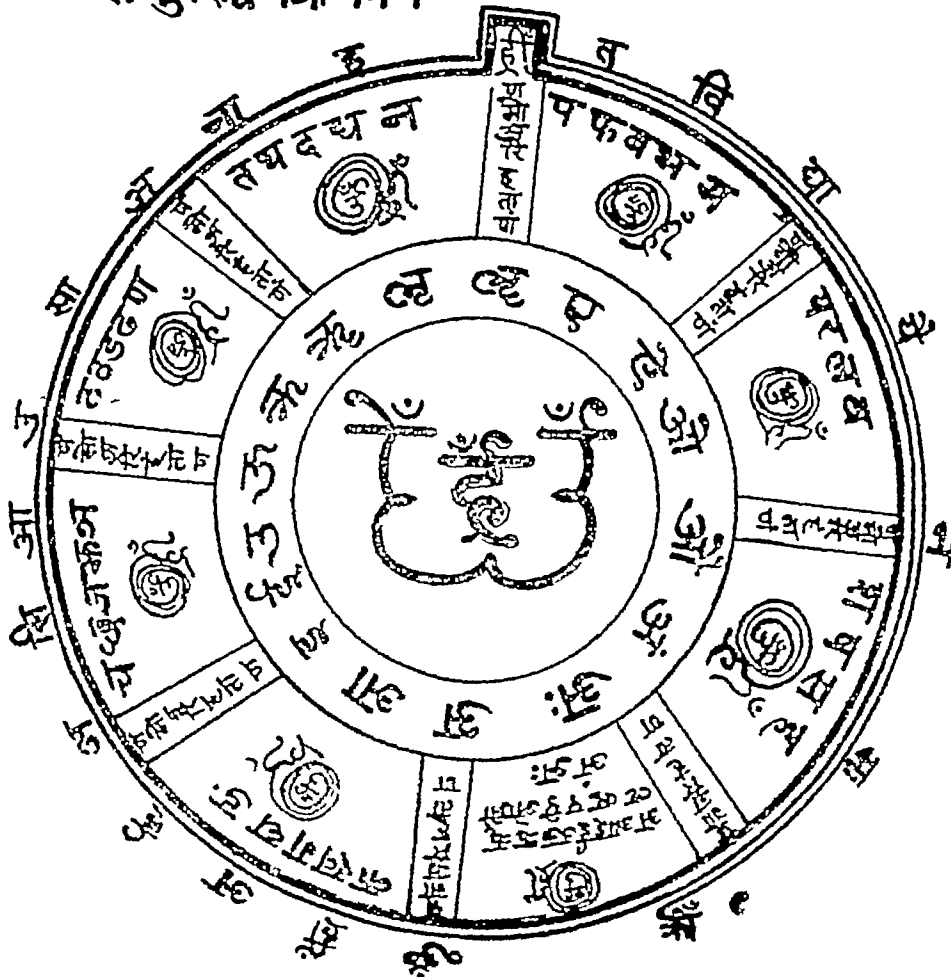
यंत्र नं० ५६

शान्किन्यादि निवारण कलि कुण्ड यन्त्र यत्र न० ५७
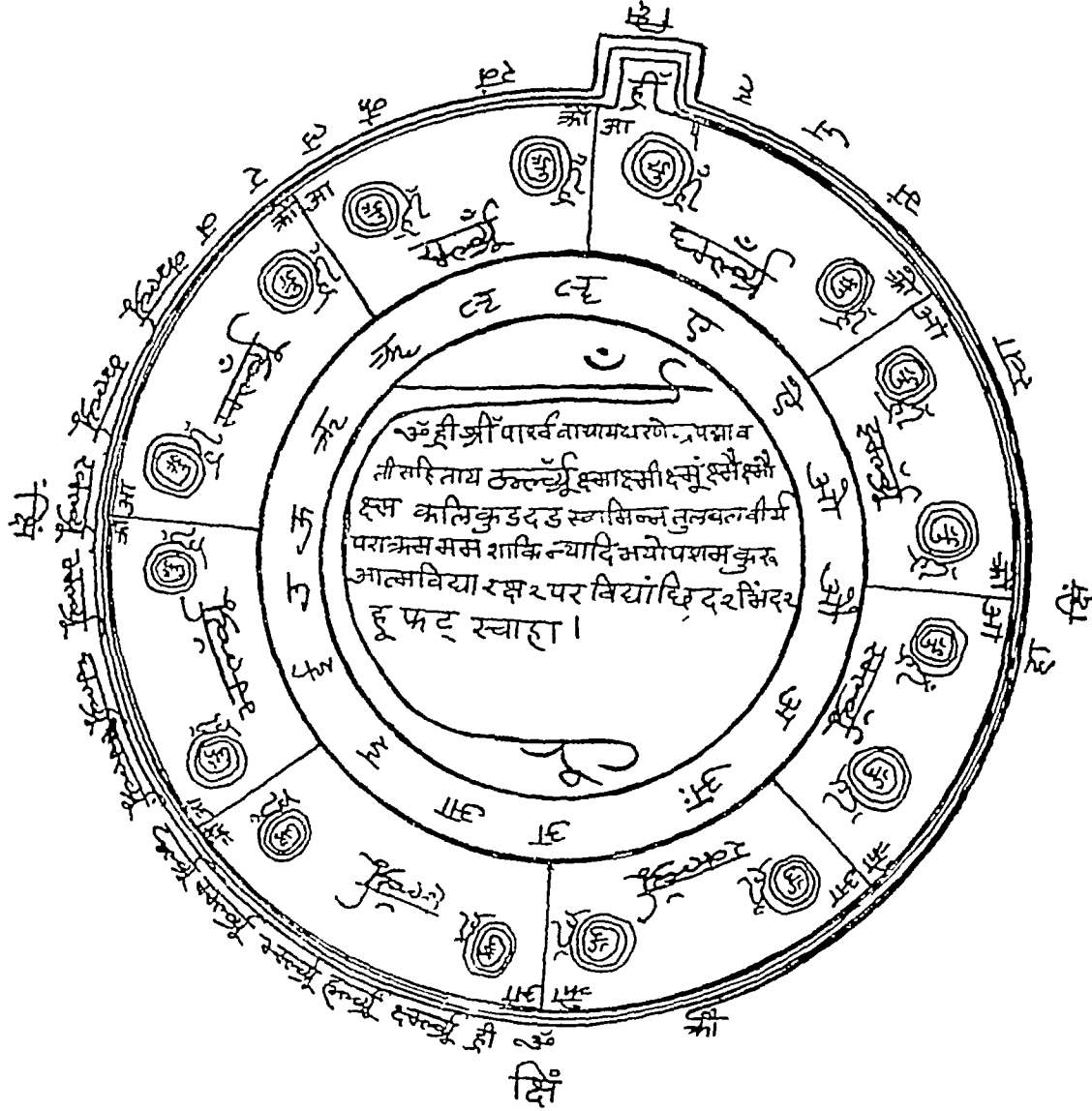
इस यन्त्र को तावे के पत्रे पर खुदवा कर प्रतिष्ठा करवा ले, फिर किसी भी प्रकार के ज्वर से आक्रान्त रोगी के सिरहाने गरम पानी मे डालकर यत्र रक्खे तो शीत ज्वर जाता है और ठडे पानी मे डालकर सिरहाने रक्खे तो ताप ज्वर जाता है। ५५।

इस लघु सिद्ध यन्त्र को तावे के पत्रे पर खुदवा कर यन्त्र पर लिखा हुआ मन्त्र का सवा लक्ष जप कर एक यन्त्र भोज पत्र पर लिखकर पास मे रक्खे, दशास होम करे, तो सर्व कार्य सिद्ध होता है, सर्व रोग दूर होते हैं, सर्व प्रकार की परविद्या का छेदन होता है। लक्ष्मी लाभ होता है। चिंतित सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। यह यन्त्र मन्त्र चिंता मणि है। इसके प्रभाव से मोक्ष लाभ होता है। ५६।

इस शाकिन्यादि को दूर करने के यन्त्र को अष्ट गध से भोज पर लिखकर उस यन्त्र को एक चोकी पर स्थापन कर, विधि पूर्वक यन्त्र मे लिखे हुये मन्त्र का साढे बारह हजार जप करे यन्त्र की पूजन नित्य करे, जब जप पूरे हो जाय तब दशास आहुती देवे, यन्त्र को गले में या हाथ में बाधने से भूत, प्रेत, राक्षस, शाकिनी, डाकिनी की बाधा दूर होती है। ५७।

अथ घन्टा कर्ण मन्त्र संक्षेप विधि

ॐ धटाकर्णो महावीर सर्व व्याधि विनाशक', विस्फोटक भय प्राप्ते, रक्ष २ महाबल यत्र त्वं तिष्ठ से देव लिखितो क्षर पक्ति भि रोगास्तत्र व्रणश्यति वातपित्त कफोद्भवा। तत्र राज भय नास्ति, याति कर्णे जराक्षय, शाकिनी, भूत, वैताला. राक्षसा प्रभवति न ॥३॥ ना काले मरण तस्य न च सर्पेण डस्यते। अग्नि चोर भय नास्ति ॐ घटा कर्णो नमोस्तुते।

विधि —शुभ दिन देखकर रवि पुष्य या रवि मूल या और कोई शुभ दिन मे कोरे धुले हुयें कपडे पहन कर महावोर प्रभु को प्रतिमा के आगे दीपक जलाकर नैवेद्य चढाकर आठ जाति के धान्य को अलग ढेर लगा कर, एक मुक्त आहार करे, ब्रह्मचर्य व्रत पाले, और मन्त्र का साढे बारह हजार जप करना, दिन १४ में अथवा २१ मे पूरा करना, तब मन्त्र सिद्ध होगा, सर्व कार्य सिद्ध होय, इस मंत्र को तीनो काल मे पढने से मृगी रोग घर मे कभी भी नही आवे, सोते समय तीन बार पढकर तीन बार ताली बजा कर सोवे तो, सर्प्व भय, चौर भय, अग्नि भय, जल भय इत्यादि नही होता है। अछुता पानी को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत कर छाटा देने पर, अग्नि नही लगेगी। तथा एक वर्णि गाय के दूध को २१ बार मन्त्रीत कर छाटा देवे तो अग्नि बुझ जायगी। मन्त्र को कागज पर लिख कर घंटा में बाधे तो और धटा बजावे तो जहां जहा आवाज जाय वहा २ के उपद्रव सब मिटते है। कन्या कत्रीत सूत्र में ७ गांठ लगाते हुये मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत कर, बच्चे के गले मे बाधने से नजर नही लगती है। कन्या कत्रीत सूत्र को २१ बार मन्त्रीत कर धूप देकर हाथ में बांधे तो एकांतरा ज्वर जाता है।

इसी मन्त्र की दूसरे प्रकार से विधि कहते हैं —
दीवाली की रात्री तथा शुभ मुहुर्त मे प्रारंभ कर भगवान महावीर के सामने ब्रह्मचर्य पालन करते हुये पूर्वोक्त विधि से १२ दिन में साढे बारह हजार जप पूरा करें। फिर गुग्गुल आढाई पाव, लाल चन्दन, घृत, वित्तौला (कपास के बीज), तिल, राई सरसो, दूध, दही, गुड, रक्त कनेर के फूल, सब चीजो को मिलाकर, साढे बारह हजार गोली बनाना फिर एक २ मन्त्र के साथ एक २ गोली आग मे खेवना, इस प्रकार साढे बारह हजार जप पूरा कर, फिर दशांस होमकरना, तब मन्त्र सिद्ध होगा, नित्य ही भगवान की पूजा करना, माला लाल चन्दन की होनी चाहिए।

राज द्वार मे जाते समय मन्त्र को तीन वार पढकर मुख पर हाथ फेरे, राज सभा वश मे होती है। खाने की वस्तु को २१ वार मन्त्रीत कर जिसको खिलावे वह वश होता है। पिछली पहर को गुग्गुल खेय कर मन्त्र १०८ वार पढकर मुख पर हाथ फेरे तो वाद विवाद झगडे, आदिक मे वचन ऊचे रहे, याने सब उसकी ही बात माने। पहले गुग्गुल आदिक को १०८ वार मन्त्रीत कर होम करना, फिर रोगी को झाडा देना तो भूत प्रेत सर्प्यादि दोष सर्व जाते रहते हैं। विशेप विधि घटा कर्ण कल्प मे देखे।

ज्वाला मालिनी यन्त्र ५८

<table>
<tr>
<td>द्म्ल्व्र्यूं द्म्ल्व्र्यूं द्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ द द
द्रैं दौं द्रौ द्र दुष्टान वारय वारय
स्वाहा श्री नम</td>
<td>ह्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह ह
ह्रो ह्री ह्र ह्र सर्व दुष्ट जीवान्
वश्य कुरु कुरु फट् स्वाहा</td>
<td>क्ष्म्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
क्षक्षा क्षिक्षी क्षुक्षू क्षेक्षै क्षोक्षौ क्षक्ष
सर्व जन वश्य दुष्ट जन वश्य
कुरु कुरु स्वाहा</td>
</tr>
<tr>
<td>भ्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
भभा भिभी भुभू भेभै भोभौ भभ
सर्व जन वश्य दुष्ट जन वश्य
कुरु कुरु स्वाहा श्री नम</td>
<td>म्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
ममा मिमी मुमू मे मै मो मौ म म
सर्व जन वश्य दुष्ट जन वश्य
कुरु कुरु स्वाहा श्री नम</td>
<td>ज्म्ल्व्र्यूं ज्म्ल्व्र्यूं ज्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
जजा जिजी जुजू जेजै जोजौ जज
सर्व जन वश्य कुरु कुरु स्वाहा
श्री नम</td>
</tr>
<tr>
<td>य्म्ल्व्र्यूं य्म्ल्व्र्यूं य्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
यया यियी यूयू येयै योयौ य य
सर्व जन वश्य दुष्ट जन वश्यं
कुरु कुरु स्वाहा श्री नम</td>
<td>घ्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
घ्रो घ्रैं घ्रैं घ्रौं दुन घ्रो घ्र.
शशण्टान् त्रय २ य य न न श्री
घोरा क्षेयम सुरस्य नम.
स्वाहा</td>
<td>क्म्ल्व्र्यूं क्म्ल्व्र्यूं क्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
क्रा क्री क्र क्रैं क्रौ क्र दुष्टा
घ भन् २ पर्य बन्ध पराण् नीट
ॐ फुट् स्वाहा।</td>
</tr>
<tr>
<td>ख्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
खो खें खे खौ ख दुष्ट जनान्
वश्यं जट नम नाग्री भजय २
स्वाहा कुरम्य नम</td>
<td>च्म्ल्व्र्यूं च्म्ल्व्र्यूं च्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रों
ज्वाला मालिनी देवी नम
च्रा च्री च्रें च्र च्रैं च्रो दुष्टान्
क्र जतात्रान् मथ २ छेदय २
ॐ ह्री फुट् स्वाहा श्री नम</td>
<td>व्म्ल्व्र्यूं व्म्ल्व्र्यूं व्म्ल्व्र्यूं
क्रो क्रो क्रो
ज्वाला मालिनी देवी नम
व्रा व्रैं व्रो व्रो व्र व्र दुष्टा
नानि वदना विरुघ वर रम काय
कार फुट् २ स्वाहा श्री नम</td>
</tr>
</table>

लक्ष्मीः इदं यन्त्रम् । विधि —दीप मालिकायां कृष्ण चतुर्दश्यां षष्ठ व्रत तपः कृत्वा पवित्री भूत्वा अष्टा गन्ध केन अगुरु धूपोत्क्षेपण पूर्वकं सदश पीताम्बरं परिधाय स्वर्ण लेखिन्या लिखनोयम् । ततः षट्कोर्णेक कुण्डं कृत्वा अष्टोत्तर शत सख्येयनालीकेर पूगील वग जाती फल एलादिक पञ्चा मृतं सार्द्ध पञ्च पञ्च सेर संख्याकं अग्नौजुहुयात् ।

इस यन्त्र को अष्ट गध से भोज पत्र पर लिख कर विधिवत् पूजा करने से और यन्त्र पास मे रखने से मन चिंतित सर्व कार्य को सिद्धि होती है । शरीर निरोग रहता है । परकृत दुष्ट विद्या का परकोप नही होता । डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, व्यतरादिक की पीडा शात होतो है । लक्ष्मो का लाभ होता है ॥ ५८ ॥

ज्वर नाशक यन्त्र नं० ५९

इस यन्त्र को लिखकर गर्म पानी में डालकर रखने से, शीत ज्वर शात होता है । ठण्डे पानी मे डाल कर रखने से उष्ण ज्वर शात होता है ॥ ५९ ॥

नोट :—जहा बीच में देवदत्त लिखा है, उस जगह 'स' लिखकर फिर वीच मे देवदत्त लिखे ।

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर सामने रखें, फिर ॐ ह्री श्री अर्हं नम । इस मन्त्र का पीला ध्यान करने से स्तम्भन होता । अरुण वर्ण का ध्यान करने से वशीकरण होता है। मूगे का रग जैसा ध्यान करने से क्षोभ होता है। काला ध्यान करने से विद्वेषण होता है। कर्म का क्षय करने के लिए चन्द्रमा के समान ध्यान करे।

इस मन्त्र का १२००० हजार विधि पूर्वक जप कर दशास होम करे, तब मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र का रहस्य सबसे ऊचा है ॥६०॥

यन्त्र न० ६०
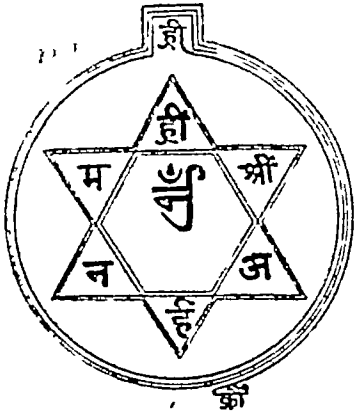
यन्त्र न० ६१

इस यन्त्र को कपूर, अगरू, कस्तुरी, कुंकुम आदि सुगन्धित द्रव्यो से जाइ की कलम बना कर शुभ समय मे लिखे। कन्या कत्रित सूत मे यन्त्र को लपेट कर हाथ मे बाधने से सौभाग्य आदि सुखो की प्राप्ति होती है ।। ६१ ।।

यत्र न० ६२
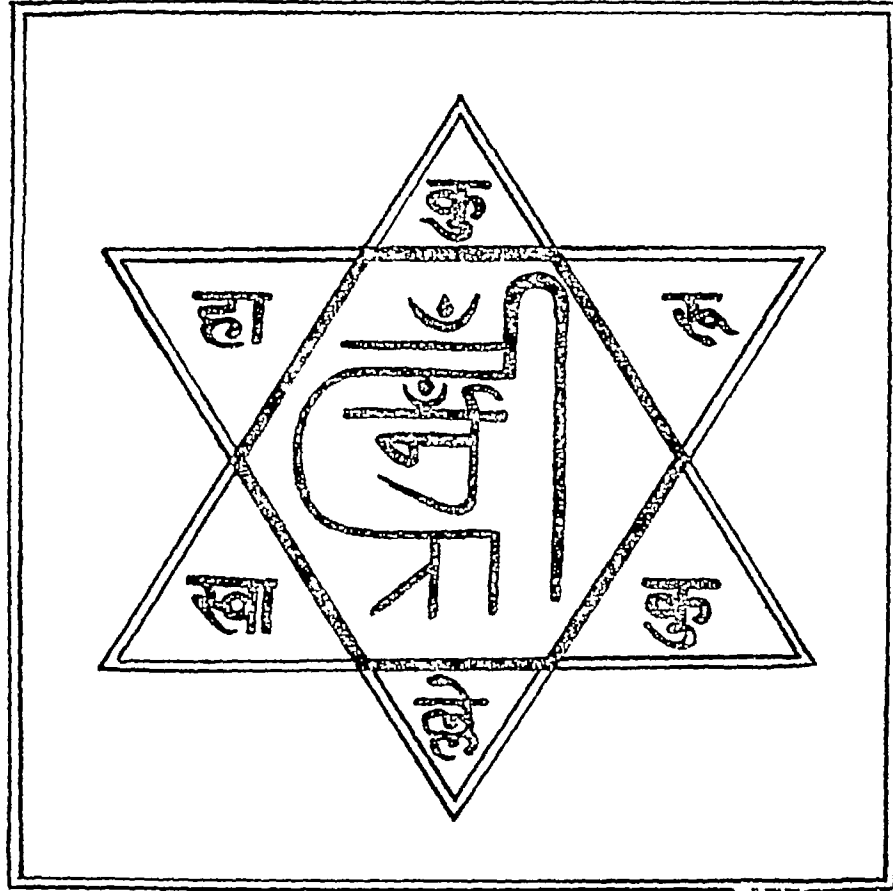
इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर, ॐ ह्री देवी कुरू कुल्ले अमुक कुरू २ स्वाहा। इस प्रकार के मन्त्र का १०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है, इस मन्त्र का जप करने के लिये, अच्छा दिन, अच्छा योग, चन्द्र बल, वगैरह का निर्णय करके जप करे, अष्ट द्रव्य ते यन्त्र पूजा करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इस मन्त्र के प्रभाव से कोढ रोग का नाश होता है। कुए का खारा पानी मीठा अमृत जैसा बन जाता है। सर्प, फूल की माला जैसा बन जाता है। भाला का अग्र भाग फूल जैसा हो जाता। अग्नि, पानी की बाढ के समान बन जाती है। विष, अमृत के समान वन जाता है। गर्मी के दिन, शरद ऋतु जैसे बन जाते है। सूर्य चन्द्रमां के समान लगता है । नित्य ज्वर, एकांतर, और तीसरे दिन आने वाला बुखार ठीक हो जाता है। विषेले जन्तु तो आज्ञा मात्र से ही दूर हो जाते है ।। ६२ ।।

यंत्र न० ६३

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यो से भोज पत्र पर लिख कर, सुगन्धित द्रव्यो से पूजा करे, फिर कन्या कत्रीत सुत मे लपेट कर हाथ मे बाधे तो, भूत वगैरह दोषो को दूर करता है। स्त्रियो को सन्तान की प्राप्ति कराता है। सौभाग्य वगैरह गुणो को देने वाला है ॥ ६३ ॥

यत्र न० ६४

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

इस यन्त्र को लिखते समय, प्रथम १ कलश पानी से भर कर विधि से रक्खे, फिर आम के पत्ते पर कु कुम बिछा कर अनार की कलम से यत्र लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे। मन मे कामेश्वरी देवी का ध्यान करे, यन्त्र को लिखते समय ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथाय नमः। यन्त्र लेखन कार्य जब पूरा हो जाय तब पूजन करने के उपरा। इस मन्त्र का जप करता रहे ।

ॐ नमो कामदेवाय महाप्रभाय ह्री कामेश्वरी स्वाहा।

इस मन्त्र का ७२ बार जप करे, मन्त्र जपने के बाद लिखा हुआ यन्त्र मिटा दे, इस प्रकार पुन लिखे पुन ि‍टा ये प्रतिदिन, इस तरह २४ यन्त्र लिखे। २४ वे यन्त्र के बाद मन्त्र की २१ माला जपे, प्रतिदिन इसी ि.यम से करता रहे। एक दिन के लिखे यन्त्र को गेहू के आटे मे थोडा सा मीठा (मिश्री) मिलाकर घी, और बुरा मिलाकर गोली बाध कर नदी मे बहादे। साधक जौ कि रोटी, वथुआ के साग को खाये। पृथ्वी पर शयन करे, तथा ब्रह्मचर्य पालन करे, सत्यादि निष्टा से रहे। ७२ दिन तक इसी क्रिया को करता रहे। और इसी अवधि मे सवालक्ष जप पूरा करे। जब जप पूरा हो जाय, तब दशास होम करे। यतीओ को दान दे। उसके बाद प्रतिदिन एक २ यन्त्र लिख कर उस य त्र की पीठ पर ७२ टके चलन बाजार दे। उसे अपने बैठने के आसन पर रख कर ७२ य त्र जप ले। ७२ टके बाजार मिले तो किसी से कहे नही, कहेगा तो देना बध हो जायगा। यदि आसन के निचे नही आयेगे तो किसी तरह से कुटुम्ब के पालन के लायक खर्च करने को धन प्राप्त होता रहेगा। इसके उपरात यन्त्र को आसन के नीचे से उठाकर पगडी मे रखले तथा दूसरे दिन गोली बनाकर नदी में बहादे। जो यन्त्र किनारे पर आ जाये, उसे एक आले मे रख दे तथा उस पर सफेद वस्त्र का पर्दा डाल दे और प्रति दि पुष्प चढाकर धूप दे दिया करे ।। ६४ ।।

पंचांगुली यन्त्र व मन्त्र की साधन विधि, यन्त्र नं० ६५ की विधि

प्रथम-मन्त्र :—ॐ ह्री प चागुली देवी देवदत्तस्य आकर्षय २ नम स्वाहा ।

विधि —इस यन्त्र को अष्ट गध से लिख कर, मध्य मे देवदत्त का नाम लिख कर, फिर उपरोक्त मन्त्र का १०८ वार जप करे, फिर बडे बास की भोगली के अ दर यन्त्र डाले, तो ४१ दिन के अन्दर हजार गउ से मनुष्य अथवा स्त्री का आकर्षण होता है। शुक्ल पक्ष की अष्टमी से आरभ करे।

द्वितीय मन्त्र—ॐ ह्री प चागुली देवी अमुको अमुकी मम वश्य श्र श्रा श्री स्वाहा।

विधि :—इस यन्त्र को देवदत्त के कपड़े पर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हिंगुल, गौरोचन, मूग के

पानी के साथ स्याही बना कर लिखे। लाल चन्दन का धूप जलावे, दीपक में घी जलावे, फिर इस यन्त्र को मकान के छप्पर मे अथवा छत में बाधे, सोने के समय उपरोक्त मन्त्र १०८ बार १३ दिन तक, जपे, फिर (उवात्रए हावरणीनी मारवो) मन की इच्छा पूर्ति हो। इच्छित व्यक्ति वश मे हो।

तृतीय-मन्त्र—ॐ ह्री क्ली क्षां क्ष फुट् स्वाहा।

विधि :—इस यन्त्र को शत्रु के वस्त्र पर, रजेकरी श्मशान के कोयले से लिख कर फिर इस मन्त्र का १०८ बार जप करे, धूप श्मसान रक्षा डोडढीषापट जाग पंख, उल्लु का पंख, लेकर हवन करे, इस रिती से करके यन्त्र काले कपडे में बाधकर, एक पत्थर में बाधे, फिर उसको कुए मे प्रवेश करा देवे याने कुऐं में डाल देवे, फिर नित्य १०८ बार जपे ४१ दिन तक उपरोक्त धूप जलावे तो विद्वेषण होगा।

चतुर्थ मन्त्र—ॐ ह्रों पचांगुला अस्य उच्चाट्य २ ॐ क्ष क्ली क्ष घे २ स्वाहा।

विधि :—इस यन्त्र को धतुरे के रस से लिख कर पृथ्वी मध्ये कोयला से ये उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करता हुआ यन्त्र को पृथ्वी मे गाढे, और उस यन्त्र के ऊपर अग्नि जलावे। दिन ७ के अदर उच्चाटन होता है। भूत प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, चूडेल चुडावली, जीद, झोंटीग, के लिये इस यन्त्र को विष से लिख कर कटि में बांधे तो सर्वबाधा का नाश होता है। सर्व गुणो की प्राप्ति होती है।

पंचम मन्त्र—ॐ ह्री ष्पा ष्पी ष्पू ष्पौ ष्प मम शत्रुन् मारय २ पचांगुली देवी चूसय २ नीराधात वज्रेनपातय २ फुट् २ घेघे।

विधि :—मारण कर्म के लिये इस यन्त्र को काले कपड़े पर श्मसान के कोयले से लिखे, ॐ कार के नीचे शत्रु का नाम लिखे। संध्या में इस मन्त्र का जप करे १०८ बार, धूप भेसा गुग्गुल का जलावे (आ यन्त्र गरीयल डोरे) फिर इस यन्त्र को रेशमी डोरे से लपेट कर एकात स्थान मे गाढ देवे, तीर्थ की धारा छोडे, धूप गुग्गुल का जलावे, जिस जगह यन्त्र गाढा हो, उस कोने में उपरोक्त मन्त्र का जाप करे १०८ वखत, शत्रु के पाव के नीचे की धूल, और गुग्गुल, के साथ मे जलावे, २१ दिन तक करने से शत्रु का नाश हो जायगा। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन करे। अगर शत्रु परेशान होकर पावो मे आकर पड़े, तब गढ़ा हुआ यन्त्र को निकाल कर, दूध में उस यन्त्र को भीगो-

कर दी, धूप जलाता हुआ ॐ ह्री पंचागुली रक्ष २ स्वाहा। इस मन्त्र का जप १११ वार करे तो शत्रु को फिर से शान्ति मिले सर्व विघ्न दूर हो।

बाकी के तीन मन्त्र और यन्त्र के बीच मे और आजु बाजु लिखे हुये हैं। उन मन्त्रो के फल भी जैसा मन्त्र मे शब्द विवरण आया हुआ है वैसा ही समझना।

पंचांगुली मूल मन्त्र —ॐ ह्री श्री पचागुली देवी मम सरीरे सर्व अरिष्टान् निवारणाय नम स्वाहा, ठ ठ।

इस मूल मन्त्र का पूर्ण विधि विधान से सवालक्ष जप करे तव पचागुली देवी सिद्ध होगी, सर्वकार्य की सिद्धि होती है ।। ६५ ।।

ज्वाला मालिनी यंत्र विधि

मन्त्र —ॐ ह्री श्री अर्हं चद्र प्रभु स्वामिन्न पादपकज निवासिनी ज्वाला मालिनी स्वाहा नित्य तुभ्य नम।
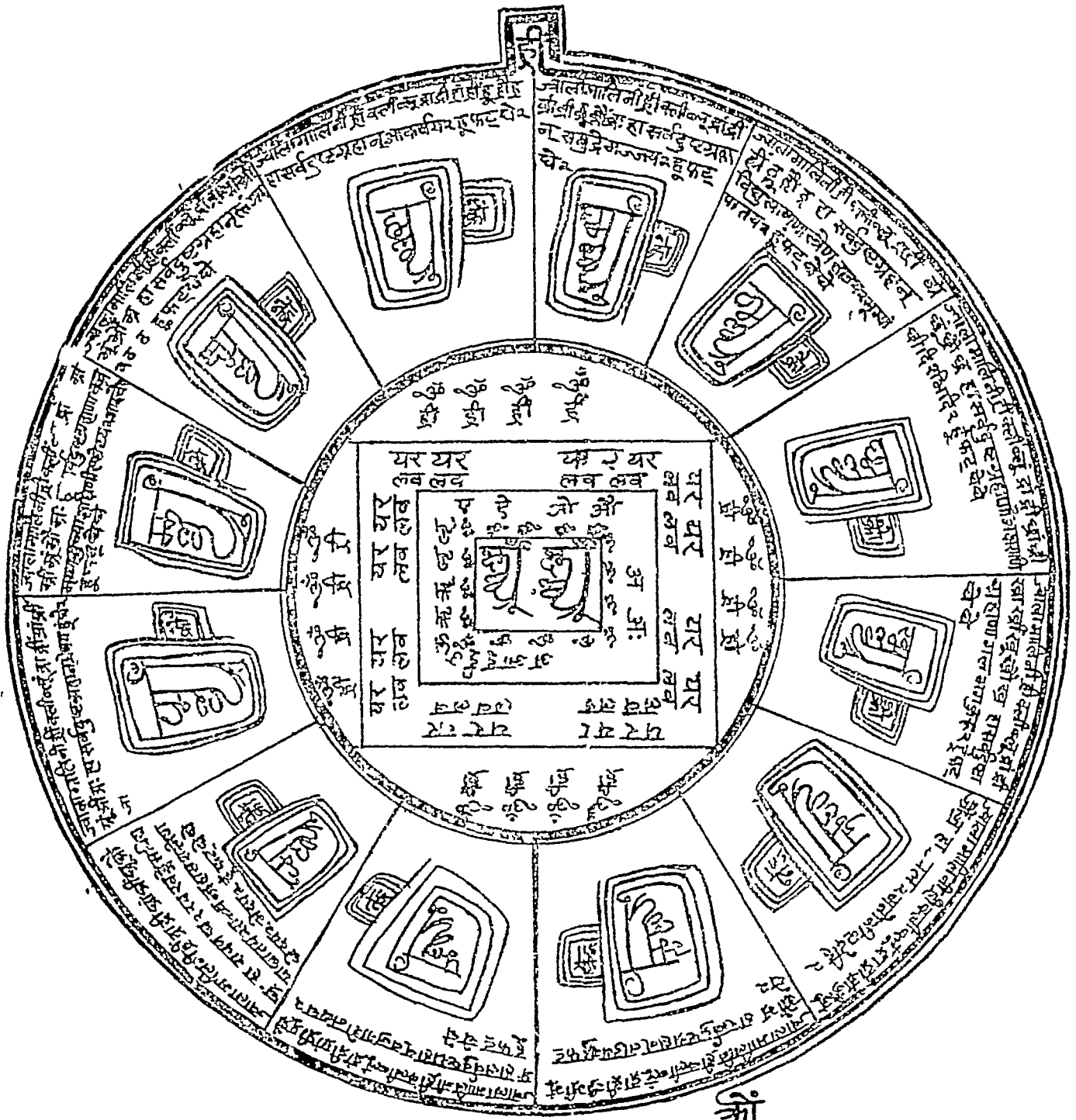
इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यो से भोज पत्र पर लिख कर, उपरोक्त मन्त्र का जप सवालक्ष विधि विधान से करे तव सर्व कार्य की सिद्धि हो, सर्व रोग शात हो, महादेवी श्री ज्वाला मालिनी जी का वरदान प्राप्त होता है। पश्चात विशेष कर्म के लिये अलग २ पल्लव जोड कर मन्त्र का जप करने से वैसाही कार्य सिद्ध हो। एक यन्त्र तावा, अथवा चादी, अथवा सोना, अथवा कासे पर खुदवा कर यन्त्र प्रतिष्ठा करके घर मे स्थापित करने से सर्व विघ्न वाधा दूर दूर हो। जो भोज पत्र पर लिखा हुआ यन्त्र है उसको स्वय के हाथ मे तावीज मे डाल कर वाधे, सर्व कार्य सिद्ध हो ।। ६६ ।।

मृत्यु जय ज्वाला मालिनी यन्त्र मन्त्र की विधि

मन्त्र –ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र हा आ क्रौं क्षी ह्री क्ली ब्लूं द्रा द्री ज्वाला मालिनी सर्वग्रह उच्चाटय २ दह २ हन २ शिघ्र २ हू फट् घे घे।

विधि . —उपरोक्त मन्त्र का जप सवालक्ष, प्रमाण विधि विधान से करे पश्चात ज्वाला मालिनी विधान मंत्र का दशास होम करने से सर्व प्रकार की अपमृत्यु का नाश होता है। यन्त्र भोज पत्र अथवा कोई भी धातु के पत्रे पर खुदवा कर, प्रतिष्टा करके घर मे स्थापित करने से यन्त्र को धोकर पीने से, सर्वरोग शोक शात होते हैं ।। ६७ ।।

यंत्र नं० ६६

ज्वाला मालिनी यंत्र नं

श्री महा मृत्युं जय ज्वाला मालिनी यत्र न० ६७
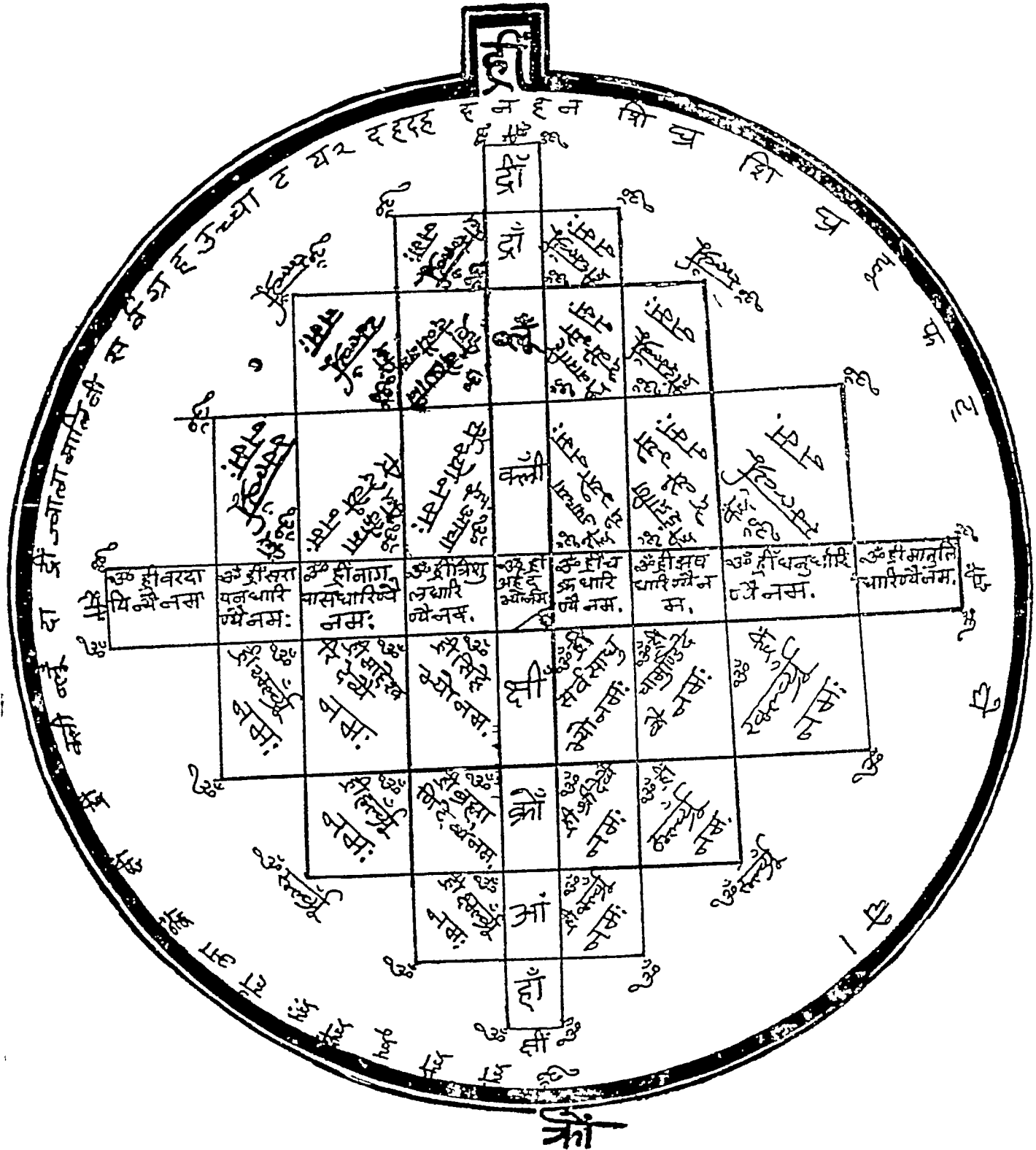
यन्त्र मे लिखित मत्र का सवालक्ष प्रमाण विधि पूर्वक जप करने से सर्व प्रकार की अपमृत्यु का नाश होता है ।

ऋषि मण्डल यन्त्र विधि

मन्त्र —ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रे भ्यो ह्रीं नमः ।

विधि —ऋषि मण्डल यन्त्र को भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखकर हाथ या गले मे वाधने से सर्व प्रकार के रोग, शोक, ऊपरी हवा नष्ट होती है। परकृत विद्या का नाश होता है। सर्व कार्य सिद्ध होते है। किन्तु प्रथम ऋषि मण्डल मन्त्र को विधि-विधान पूर्वक सिद्ध करे, जैसे प्रथम एक ताम्र पत्र पर अथवा सुवर्ण पत्रे पर अथवा चादी के पत्रे पर अथवा कासे के पत्रे पर यन्त्र खुदवा कर शुद्ध करावे, फिर उस यन्त्र को एक सिंहासन पर विराजमान करके, सामने दीप, धूप रखकर उपरोक्त मन्त्र का ८००० हजार जप करे, आठ दिन मे, सयम से रहे, आचाम्ल तप करे, ब्रह्मचर्य पाले, मन्त्र का जप समाप्त होने के बाद शुभ दिन मुहूर्त मे ऋषि मण्डल विधान करके दशास आहुती देवे तो मन्त्र के प्रभाव से मन चिंतित कार्य सिद्ध हो। सर्व उपद्रव मिटे। लक्ष्मी लाभ हो, विशेप मन्त्र का छह महीने तक नित्य ही आचाम्ल तप पूर्वक आराधना करने से स्वय के मस्तक पर अर्हंत विंव दिखेगा। जिसको अर्हंत विम्ब दिख जायगा। उसको निश्चय ही सातवें भव मे मोक्ष हो जायगा। साधक को किसी प्रकार का भय, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, परकृत विद्या, इन चीजो का उपद्रव कभी नही होगा। वैसे मन्त्र की एक माला फेर कर, स्त्रोत का पाठ करने से ही सर्व प्रकार के रोग, शोक वाधाऐ मिटती हैं। इस काल मे ये मन्त्र, यन्त्र की साधना कल्प वृक्ष के समान चिंतित पदार्थ को देने वाला है। विशेप क्या कहे ॥ ६८ ॥

यंत्र नं ६९
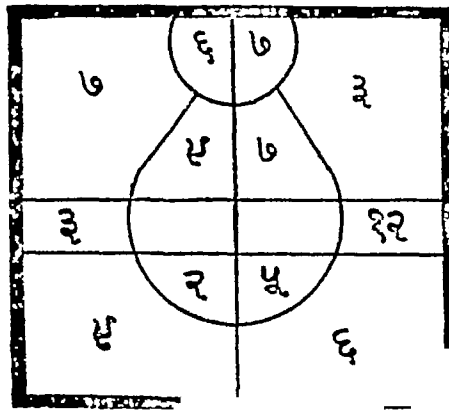
इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर वाधने से मूठ नही लगती। इस यन्त्र को होली की रात्रि मे नगे होकर धतूरे के रस से लिखना चाहिये ॥६९॥

छुहारा गुण यन्त्र

जिस छुहारे मे दो गुठली हो उसे उठाकर रखले, फिर दीवाली के दिन अनार की कलम से, इस यन्त्र को पहले १०८ बार पृथ्वी पर लिख कर, सिद्ध करे,

यन्त्र न० ७०

८	१	६
३	५	७
४	९	२

तत्पश्चात् भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजनकर छुहारे की दोनो गुठली को यन्त्र के साथ लपेट कर चादी के तावीज मे मढवाकर रखले। कार्य पडे तब तावीज की धोकर पिलाने से कष्टी स्त्री का कष्ट दूर होता है। रोगी का रोग दूर होता है। बाझ स्त्री के कमर में बाधने से गर्भ रहता है। पास में रख कर राज दरबार मे जाने से सम्मान प्राप्त होता है। यन्त्र के प्रभाव ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होकर सभी इच्छायें पूरी होती है।। ७०।।

यत्र नं० ७१

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
३६	८१	९	१
४	६	२२	२५

इस यन्त्र को लिखकर, खेत मे गाढ देने से तथा क्षेत्रपाल की पूजा करने से, खेत मे अधिक अन्न उत्पन्न होता है ॥ ७१ ॥

यन्त्र न० ७२

८३	८६	२	७
६	७६	७९	७८
८५	७५	८	१
४	५	७७	८२

इस यन्त्र को आश्लेषा नक्षत्र मे शत्रु की हाट मे लिखने से हाट उजड जाती है ॥ ७२ ॥

यंत्र न० ७३

६४	६१	२	८
७	३	६८	६८
७०	६५	९	१
४	६	६६	६९

इस यन्त्र को कौच के वीज से लिख कर घर मे रखने से चूहे कपडे को नही काटते है ॥ ७३ ॥

यन्त्र नं० ७४

७६	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	६	१
४	६	७३	७६

इस य त्र को थूहर के रस में (दूध) स्वाति नक्षत्र मे लिख कर, पुरुष अपनी कमर में धारण करे तो शुक्र का स्तम्भन होता है ।। ७४ ।।

यन्त्र नं० ७५

१६	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	६	१
१	६	२१	२३

इस य त्र को सेही के काटे से, पशु के खू टे पर लिख देने से तथा खू टे को गाढ़ देने से गया हुआ पशु वापस लौट आता है ।।७५।।

यन्त्र न० ७६

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

इस य त्र को केवडे के रस से लिख कर, सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न मे भूत ही भूत दिखाई पडते है ।।७६।।

यंत्र न० ७७

७७	८४	२	८
७	३	८१	८३
७४	७८	९	१
४	६	७९	८५

इस य त्र को लाख के पानी मे थूहर के पत्ते पर लिखकर, वगीचे मे गाढ देने से अधिक फूल आते है ।।७७।।

यन्त्र नं० ७८

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	६	१
४	६	७७	८०

इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र मे लिखकर स्वय के पास रखने से भोग इच्छा खत्म हो जाती है ॥७८॥

यन्त्र नं० ७९

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

इस यन्त्र को कुम्हार के आवे की ठीकरी पर लिख कर, किसी के घर मे डाल देने से, उस घर में कलह होना आरम्भ हो जाता है ॥७९॥

यन्त्र नं० ८०

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित गधे के मूत्र से लिख कर, ऊपर से जूता मारने से शत्रु का मुँह सूज जाता है ।८०।।

यन्त्र नं० ८१

९६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

इस यन्त्र को कुलिंजन के रस से लिख कर तावीज मे मढवा कर पास रखने से वचन सिद्धि होती है ।।८१।।

यन्त्र नं० ८२

४१	१८	११
१०	२०	३०
१६	२३	३२

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिखकर सरसो के तेल में जलाने से परस्पर की प्रीति नष्ट होती है ॥८२॥

यन्त्र नं० ८३

तं	तं	तं	तं
त	तं	तं	तं
तं	त	त	त
तं	तं	तं	त

इस यन्त्र को श्मसान के कोयले से शत्रु के वस्त्र पर लिखने से उसको परदेश भाग जाना पड़ता है ॥८३॥
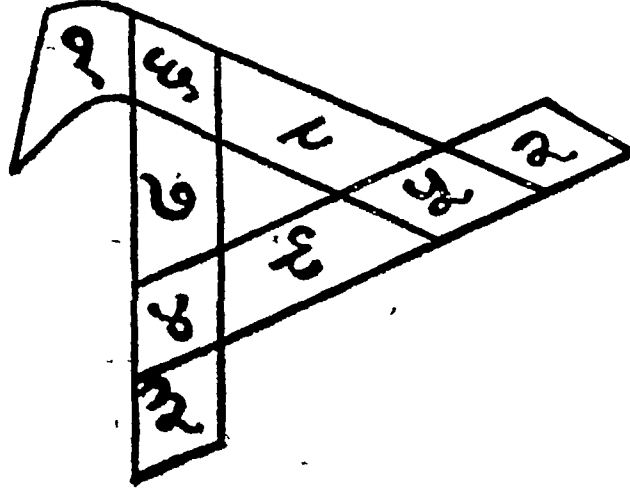
यन्त्र न० ८४

इस यन्त्र को लक्ष्मी पूजा के दिन वसने वदलने के दिन वही खातो पर हल्दी से यन्त्र मन्त्र लिखे, तो लक्ष्मी लाभ होगा। ॐ ह्री श्री क्ली ब्लू' अर्हं नम.। इस मन्त्र का १०८ वार नित्य जप करे ॥८४॥

यन्त्र नं० ८५

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर गले मे वाधने से मसान का रोग शात होता है ॥५८॥

यंत्र नं० ८६

हं	सं	खं	फं
षं	द	धं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	द

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर सोते समय सिरहाने रख लेने से बुरे स्वप्नो का दिखना वन्द हो जाता है ॥८६॥

यन्त्र नं० ८७
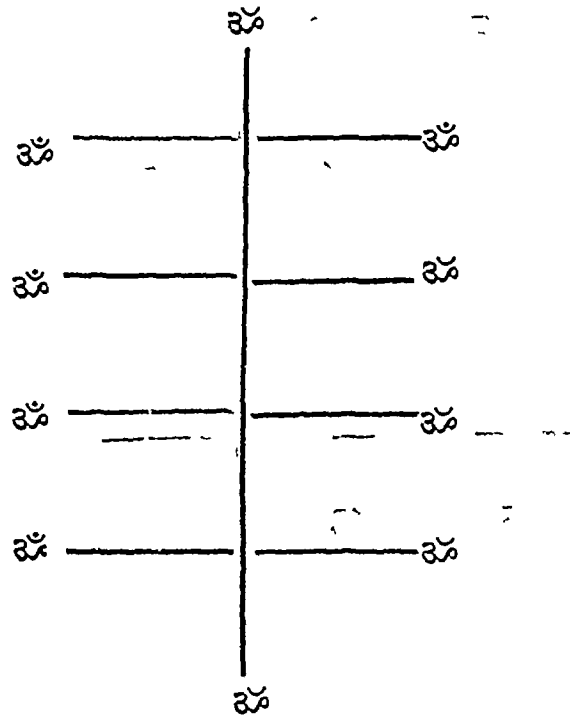
इस यन्त्र को कागज पर लिखकर लोबान की धूप देकर, ओखली में धर कर कूटे। डाकिनी का मस्तक फूट जायेगा और वह चिल्लाकर सब कुछ वताने लगेगी और रोगी को छोड़ कर भाग जायगी ॥८७॥

यंत्र नं० ८८

ह्ली	ह्ली	ह्ली
ह्ली	ह्ली	ह्ली
ह्ली	ह्ली	ह्ली

नये खप्पर पर खडिया मिट्टी से यन्त्र को लिख कर पुष्पादि से पूजा कर धूलि से पूर्ण अग्नि मे रखकर खैर को अग्नि से प्रज्वलित करे। इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादिक, रोते कापते हुये वालकादिक को अथवा कोई भी हो छोड कर भाग जाते हैं। उस देश मे ही वास नही करते हैं ॥८८॥

यन्त्र नं० ८९

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर, भुजा मे बाधने से दोनो प्रकार के खूनी और वादी बवासीर दूर हो जाता है ॥८९॥

यन्त्र नं० ९०

१२	११
३	३

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर लपेट कर रोगी को सुंघाने पर तथा इस यन्त्र में राई भर कर जलने से भूत जिन्न उत्तर जाते हैं ।।९०।।

यन्त्र नं० ९१

श्रीं	श्रीं	श्री
श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर गले में बांधने से शीतला (चेचक) नही निकलती है । जिसको निकली है उसकी शांत होती है ।।९१।।

यन्त्र नं० ९२

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर दायी भुजा मे बाधने से, तिजारी बुखार दूर हो जाता है ।।९२।।

यन्त्र नं० ९३

७२	७९	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

इस यन्त्र को मार्ग की वालू पर लिख कर ऊपर कोड़ा मारने से, गया हुआ मनुष्य घर लौट आवे ।।९३।।

यन्त्र नं० ९४

२२	२९	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	९	१
३	६	२४	२१

इस यन्त्र को अनार के रस से लिखकर कान में वाध देने से, कान मे दर्द नही है ।। ९४ ।।

यन्त्र नं० ९५

=		=	।।।
–	b	=	≡
।।	।।।।	≣	।।।।
।।।।	।।।।	=	।।।

इस यन्त्र को आम वृक्ष के नीचे वैठकर सवा लक्ष लिखने से अम्बिका देवी प्रसन्न होती है ।।९५।।

यन्त्र नं० ९६

ग	छ	ज	च
छ	न	ज	ठं
ठ	ज	ठं	च
न	छ	जं	ट

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर, गुगुल का धूप देकर, गले मे धारण करने से दुष्ट स्वप्नो का दीखना बन्द हो जाता है।।९६।

यन्त्र नं० ९७

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	३९	८	१
४	५	३०	३३

इस यन्त्र को केशर, गोरोचन अथवा रोली से भोजपत्र पर लिखकर, गाय के गले मे और भेस के सीग मे गूगल की धूप देकर बांधने से वह बच्छे को लगाने तथा बहुत दूध देने लगती है ।९७।
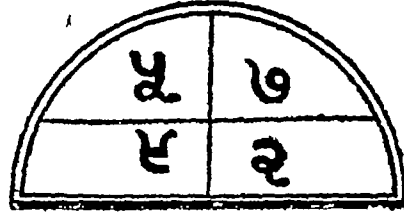
यन्त्र नं० ९८

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर, रविवार के दिन, सूर्य के सामने पानी मे धोकर पीने से वायु गोला का दर्द तुरन्त दूर हो जाता है।९८।

यन्त्र नं० ९९
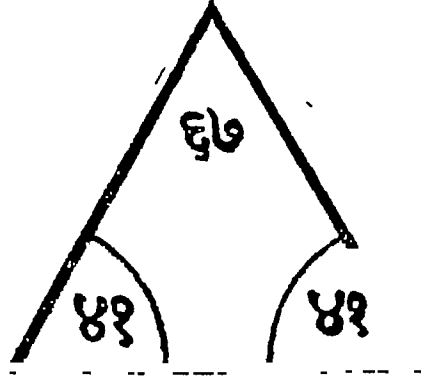
इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर रखने से कुत्ते का विष दूर होता है।९९।

यन्त्र नं० १००

६२३	१ स	८६
७ सी	५ पू	३७
२ म	९८	४ स

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर कमर मे बाधने से धरन ठिकाने पर आ जाती है।१००।

यन्त्र नं० १०१

६	७	२
१	५	६
८	३	४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर घोडे के गले मे वाधने से उसका पेट दर्द दूर होता है। पंशाव वन्द हो जाय, तो होने लगता है। सर्व कष्ट दूर हो जाता है। १०१।

यन्त्र न० १०२

४	५	७४	७७
७६	७२	८	१
६	३	७६	६५
७२	३८	२	८

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर कमर मे वाधने से नपुसक व्यक्ति की नपुस-कता दूर होती है।१०२।

यन्त्र नं० १०३
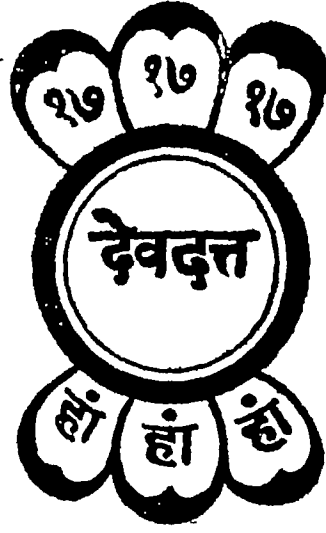
इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर बांधने से पीलिया रोग दूर होता है ।१०३।

।। यन्त्राधिकार इति ।।

भगवान महावीर के अहिंसा का सार :—

"तुम स्वयं जीओ और जीने दो ।"

पढ़ लेने से धर्म नहीं होता, पोथियों और पिच्छी से भी धर्म नहीं होता, किसी मठ में भी रहने से धर्म नहीं है और केशलोंच करने से भी धर्म नहीं कहा जाता । धर्म तो आत्मा में है उसे पहचानने से धर्म की प्राप्ति होती है ।

भजन

सकलनकर्त्ता—शान्ति कुमार गंगवाल

महावीर कीर्त्ति गुरु स्वामी, दु ख मेटो जी अन्तरयामी ।। टेर ।।

(१) रतनलाल के पुत्र कहाये, बूदा देवी जी के जाये ।
सबसे नेहा तोडा, जग से मुँह को मोडा, दीक्षा धारी—दु ख... ....

(२) वीर सागर से क्षुल्लक दीक्षा धारी,
आदी सागर से मुनि दीक्षा धारी ।
शेढवालमे आ, सबसे आग्रह पा,
पदवी आचार्य की पाई दु ख. . —मेटो जी अन्तरयामी

(३) पाँचो रस का तो त्याग किया है,
त्याग स्वारथ को भी कर दिया है ।
अठारह भाषा के ज्ञाता, सारे शास्त्रो के वेत्ता,
गुरु स्वामी—दु'ख.... . मेटो जी अन्तरयामी

(४) लाखो वार तुम्हे शीश नवाऊं,
मुनीराज दरश कव पाऊं ।
सेवक व्धाकुल भया, दर्शन विनयेजिया,
लागे नाही—दु ख ... मेटो जी अन्तरयामी

भजन

सारे जहाँ से न्यारे, मुनिराज है हमारे ।
झाको तो इनके अन्दर, तन-मन से ये दिगम्वर,
वैभव के हर नजारे, इनको लुभा के हारे—सारे जहाँ से ....थोग
इनको न मोह मठ से, रखते न पर से यारी,
धूणी न ये रमाते, होते न जटाधारी ।
टीका तिलक से हटकर, इनके स्वरूप न्यारे—सारे जहाँ .... थोग
सेवक से न खुश हो, दुश्मन से न द्वेष करते ।
कोई भी फिर सताये, ये क्षमा भाव धरते ।
हर क्षण क्षमा का दरिया, वहता है इनके द्वारे—सारे जहाँ से...... थोग

।। समाप्त ।।
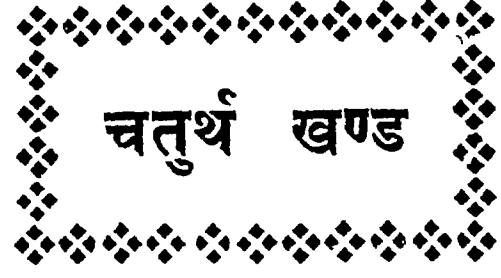
इस खण्ड मे (४—१ से ४—२४)

प्रत्येक तीर्थंकर के काल मे उत्पन्न शासन रक्षक
यक्ष यक्षणि के चित्र सहित स्वरूप
व होम विधान

चतुर्थाधिकार

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन

रक्षक यक्ष यक्षिणी के

चित्र सहित स्वरूप व होम विधान

(१) श्री आदिनाथ जी (बैल का चिन्ह)

गौ मुख यक्ष—स्वर्ण के समान, कांति वाला, गो मुख सदृश वाला, वृषभ वाहन वाला, मस्तक पर धर्म चक्र, चार भुजा वाला ऊपर के दाहिने हाथ मे माला, बाऐ हाथ में फरसा तथा नीचे वाले दाहिने हाथ में वरदान, बांऐ हाथ में विजौरे का फल धारण करने वाला होता है। (चित्र नं० १)

"चक्रेश्वरी यक्षिणी" (अप्रतिहत चक्रा) :—स्वर्ण के जैसे वर्ण वाली, कमल पर बैठी हुई गरुड़ की सवारी, १२ भुजा वाली, दोनो हाथों में दो वज्र, दो तरफ के चार चार हाथो में आठ चक्र, नीचे के दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली, नीचे के बांऐ हाथ मे फल। प्रकारान्तर से चार भुजा वाली भी मानी है। ऊपर के हाथों मे चक्र, नीचे के बाऐ हाथ मे बिजोरा, दाहिने हाथ मे वरदान धारण करने वाली है। क्षेत्रपाल ४ जय, विजय, अपराजित, माणि भद्र। (चित्र न० २)

(२) श्री अजितनाथजी (हाथी का चिन्ह)

"महायक्ष"—जिन शासन देव—स्वर्णसी कांति वाला, गज की सवारी चार मुख व आठ भुजा वाला है। बाऐ चारों हाथों में चक्र, त्रिशूल, कमल और अकुश तथा दाहिने चारो हाथो मे तलवार, दंड फरसा और वरदान धारण करने वाला है। (चित्र न० ३)

"रोहणि यक्षिणी"—स्वर्ण समान कांति वाली, लोहासन पर बैठने वाली चार भुजा

वाली हाथो मे शख, चन्द्र अभय और वरदान युक्त है। (चित्र न० ४)

क्षेत्रपाल—४ क्षेम भद्र, क्षाति भद्र, श्री भद्र, शान्ति भद्र।

(३) श्री संभवनाथजी (घोड़े का चिन्ह)

"त्रिमुख यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला, मोर वाहन वाला, तीन नेत्र व तीन मुख वाला, छह भुजा वाला, बाऐ हाथो मे चक्र, तलवार व अकुश और दाहिने हाथो मे दड, त्रिशूल, और तीक्षण कतरनी को धारण करने वाला है। (चित्र न० ५)

"प्रज्ञप्ति यक्षिणी"—श्वेत वर्ण, पक्षी की सवारी छह हाथ वाली हाथ मे अर्द्ध चन्द्रमा, फरसा, फल तलवार, तूम्बी और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र न० ६)

क्षेत्रपाल—४ वीर भद्र, वलि भद्र, गुण भद्र, चन्द्राय भद्र।

(४) श्री अभिनन्दन नाथजी (वानर का चिन्ह)

"यक्षेश्वर यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला. गज की सवारी, चार भुजा वाला, बाऐ हाथ मे धनुप और ढाल, दाहिने हाथ मे बाण और तलवार धारण करने वाला है। (चित्र न० ७)

'वज्र शृखला यक्षिणी"—स्वर्ण सी काति वाली, हंस वाहिनी, चार भुजा वाली, हाथो मे नाग पाश, विजोरा फल, माला और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र न० ८)

क्षेत्रपाल—४ महा भद्र, भद्र भद्र, शत भद्र, दान भद्र।

(५) श्री सुमतिनाथजी (चकवे का चिन्ह)

"तुम्वरु यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला, गरुड की सवारी और यज्ञोपवति धारण करने वाला, चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनो हाथो मे सर्प, नीचे दाहिने हाथ मे वरदान तथा बाऐ हाथ मे फल धारण करमे वाला है। (चित्र न० ९)

"पुरुष दत्ता यक्षिणी"—(खड्गवरा) स्वर्ण के वर्ण तथा हाथी की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथो मे वज्र, चक्र, और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र न० १०)

क्षेत्रपाल—४ कल्याण चन्द्र, महा चन्द्र, पद्म चन्द्र, नय चन्द्र।

(६) श्री पद्मप्रभुजी (कमल का चिन्ह)

"पुप्प यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला, हरिन वाहन, चार भुजा वाला। (वसु नन्दि

प्रतिष्ठा कल्प मेर भुजा वाला) है। दाहिने हाथ मे माला व वरदान तथा बाऐं हाथ मे ढाल और अभय को धारण करने वाला है। (चित्र न० ११)

"मनोवेगा (मोहनी) यक्षिणी"—स्वर्ण वर्ण तथा अश्व वाहन वाली, चार भुजा वाली है। हाथो मे वरदान, तलवार, ढाल और फल को धारण करन वाली है। (चित्र न १२)

क्षेत्रपाल—४ कालाचन्द्र, कल्पचन्द्र, कुमुत चन्द्र, कुमुद चन्द्र।

(७) श्री सुपार्श्वनाथजी (स्वस्तिक का चिन्ह)

"मातङ्ग यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला, सिह की सवारी करने वाला, टेढा मुंह वाला, दाहिने हाथ मे त्रिशूल, बाऐ हाथ मे दण्ड को धारण करने वाला है। (चित्र न० १३)

"काली देवी (मानवी) यक्षिणी" यक्षिणी—श्वेत वर्ण वाली, बैल की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है। हाथों मे घटा, फल, त्रिशूल और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र न० १४)

क्षेत्रपाल—४ विद्याचन्द्र, खेमचन्द्र, विनयचन्द्र।

(८) श्री चन्द्र प्रभुजी (चन्द्रमा का चिन्ह)

"श्याम यक्ष"—कृष्ण वर्ण, कबूतर (कपोत) की सवारी करने वाला, तीन नेत्र तथा चार भुजा वाला है। बाऐ हाथ मे फरसा ओर फल, दाऐ हाथ मे माला और वरदान युक्त है। (चित्र न० १५)

"ज्वाला मालिनी (ज्वालिनी) यक्षिणी"—श्वेत वर्ण भैंसा (महिष) की सवारी करने वाली तथा आठ भुजा वाली है। हाथो मे चक्र, धनुष नाग पाश, ढाल, बाण, फल, चक्र, और वरदान है। (चित्र न० १६)

क्षेत्रपाल—४ सोम काति. रविकाति, शुभ्र काति, हेम कांति।

(९) श्री पुष्पदन्तजी (मगर का चिन्ह)

"अजित यक्ष"—श्वेत वर्ण वाला, कछुआ की सवारी तथा चार हाथ वाला है। दाहिने हाथो मे अक्ष माला है और वरदान तथा बाऐ हाथो मे शक्ति और फल को धारण करने वाला है। (चित्र नं १७)

"महाकाली (भ्रकुटि) यक्षिणी"—कृष्ण वर्ण वाली, कछवा की सवारी तथा चार

भुजा वाली है हाथो मे वज्र, फल, मुग्दर और वरदान युक्त है। (चित्र नं० १८)

क्षेत्रपाल—४ वज्रकाति, वीरकाति, विष्णुकाति, चन्द्रकाति।

(१०) श्री शीतलनाथजी (कल्प वृक्ष का चिन्ह)

"वाह्य यक्ष जिन शासन देव"—श्वेत वर्ण, कमल आसन, चार मुख और आठ हाथो वाला है। वाऐ हाथ मे धनुप, दण्ड, ढाल और वज्र तथा दाहिने हाथ मे वाण, फरसा तलवार और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र न० १९)

"चामुण्डा देवी (मानवी चामुण्डी) यक्षिणी"—हरे वर्ण वाली, काले सूवर की सवारी, चार भुजा वाली है, हाथो मे मछली माला, विजोरा फल और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र न० २०)

क्षेत्रपाल—४ शतवीर्य, महावीर्य, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य।

(११) श्री श्रेयांसनाथजी (गैडे का चिन्ह)

"ईश्वर यक्ष"—श्वेत वर्ण, वैल की सवारी करने वाला, त्रिनेत्र तथा चार भुजा वाला है। वाऐ हाथ मे त्रिशूल और दण्ड तथा दाहिने हाथ मे माला और फल को धारण करने वाला है। (चित्र न० २१)

"गौरी यक्षिणी"—स्वर्ण वर्ण तथा हरिन की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथो मे मुग्दर, कलश, कमल, ओर वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र न० २२)

क्षेत्रपाल—४ तीर्थ रुचि, भाव रुचि, भव्य रुचि, शान्ति रुचि।

(१२) श्री वासुपूज्यजी (भैंसे का चिन्ह)

"कुमार यक्ष"—श्वेत वर्ण तथा हस की सवारी करने वाला है। त्रिनेत्र और छह भुजा वाला है। वाए हाथ मे धनुप, नोलिया और फल तथा दाहिने हाथो मे वाण गदा और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र न० २३)

"गान्धारी (विन्धुन्मालिनी) यक्षिणी"—हरित वर्ण, मगर वाहिनी तथा चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनो हाथ मे कमल, फल, वरदान युक्त है। (चित्र न० २४)

क्षेत्रपाल—४ लब्धि रुचि, तत्व रुचि, सम्यक्त रुचि, तूर्य वाद्य रुचि।

(१३) श्री विमलनाथजी (सूवर का चिन्ह)

"चतुर्मुख यक्ष"—वर्ण मुख, हरित वर्ण वाला, मोर की सवारी करने वाला चार

गौमुख यक्ष नं. १
चक्रेश्वरी यक्षणी नं. २
महायक्ष नं. ३
रोहिणि यक्षणी नं. ४

त्रिमुख यक्ष नं. ५

प्रज्ञप्ति देवी नं. ६

यक्षेश्वर यक्ष नं. ७

वज्रश्रृंखला यक्षणी नं. ८
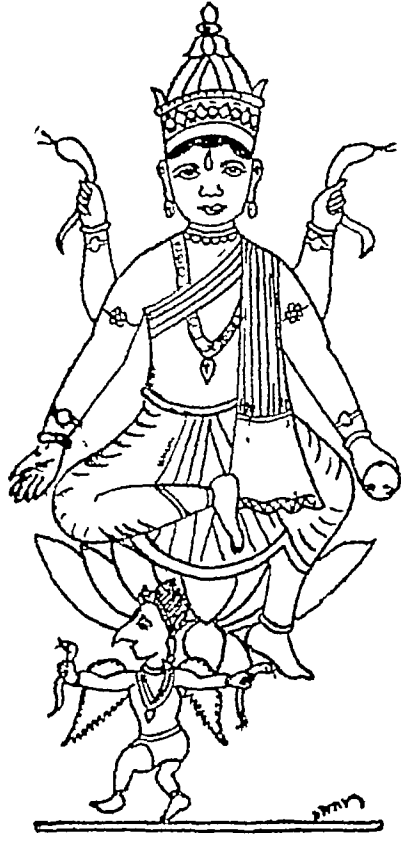
तुम्बरु यक्ष नं. ९

पुरुषदत्ता यक्षणी न १०

पुष्प यक्ष नं. ११

मोहिनी यक्षणी न. १२

मातंग यक्ष नं. २३

काली यक्षणी नं १५

श्याम यक्ष नं. २५

ज्वाला मालिनी यक्षणी नं. २६

अजितयक्ष नं. १७

महाकाली यक्षणी नं. १८

ब्रह्मयक्ष देव नं. १९

चामुण्डादेवी नं. २०

ईश्वर यक्ष नं• २१
गौरी देवी नं २२
कुमार यक्ष नं• २३
गान्धारी यक्षणी २४

षणमुख यक्ष नं॰ २५

वैराटी दवी नं॰ २६

पाताल यक्ष नं॰ २७

अनन्त मती यक्षणी नं॰ २८

किन्नर यक्ष नं. २९

मानसी यक्षणी नं ३०

गरूड यक्ष नं. ३१

महामानसी यक्षणी न. ३२

मुख, बारह भुजा वाला है। ऊपर के आठ हाथो मे फरसा तथा बाकी के चारों हाथो मे तलवार, ढाल, माला और वरदान धारण करने वाला है। प्रतिष्ठा तिलक मे छह मुख वाला है। (चित्र न० २५)

"वैराटी देवी यक्षिणी"—हरे वर्ण वाली सर्प वाहिनी, चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनो हाथो मे सर्प, नीचे के दाहिने हाथ मे बाण बाऐ हाथ मे धनुष को धारण करने वाली है। (चित्र न० २६)

क्षेत्रपाल—४ विमल भक्ति, आराध्य रुचि, वैद्य रुचि, भावस्य वैद्य वाद्य रुचि।

(१४) श्री अनन्तनाथजी (सेही का चिन्ह)

"पाताल यक्ष" लाल वर्ण तथा मगर की सवारी करने वाला और तीन मुख वाला, मस्तक पर सर्प की तीन फणि को धारण करने वाला तथा छह भुजावाला है दाहिने हाथ मे अकुश त्रिशूल और कमल तथा बाऐ हाथ मे चाबुक हल और फल धारण करने वाला है। चित्र नं० २७।

"अन्नतमति यक्षिणी" स्वर्ण वर्ण वाली, हंस वाहनी, चार भुजा वाली है हाथो में धनुष, बीजोरा फल बाण और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० २८।

क्षेत्रपाल ४ स्वभाव नामा, पर भाव नामा, अनौपम्य, सहजानन्द।

१५. श्री धर्मनाथजी (वज्र का चिन्ह)

"किन्नर यक्ष"—मू गे (प्रवाल) के वर्णमाला मछली की सवारी करने वाला, त्रिमुख और छह भुजा वाला है बाए हाथो मे फरसा वज्र और अकुश तथा दाहिने हाथ मे मुग्दर माल, और वरदान को धारण करने वाला है। चित्र न० २९।

"मानसी यक्षिणी"—मू गे जैसी लाल काति वाली व्याघ्र की सवारी करने वाली,छह भुजा वाली है। हाथो में कमल, धनुष वरदान, अकुश बाण और कमल को धारण करने वाली है। चित्र न० ३०।

क्षेत्रपाल—४ धर्मकर, धर्माकारी, सातकर्मा (सातृ कर्मक) विनय नाम।

१६. श्री शान्तिनाथजी (हरिन का चिन्ह)

"गरूड़ यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला टेढा मुख वाला (सूवर का सा मुँह वाला) सूवर की सवारी करने वाला चार भुजा वाला है। नीचे के दोनो हाथो मे कमल और फल तथा ऊपर के दोनो हाथो मे वज्र और चक्र लिए हुये है। चित्र नं० ३१।

"महामानसी (कंदर्पा) यक्षिणी"—मयूर वाहिनी चार भुजा वाली तथा स्वर्ण के समान वर्ण वाली है। हाथो मे चन्द्र, फल, वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र न० ३२।

क्षेत्रफल—४ सिद्धसेन, महासेन, लोक सेन, विनय केतु।

१७. श्री कुन्थनाथ जी (बकरे का चिन्ह)

"गंधर्व यक्ष"—कृष्णा वर्ण वाला, पक्षी की सवारी करने वाला तथा चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनो हाथो मे नागपाश नीचे दोनो हाथो मे क्रमश: धनुष और वाण है। चित्र न० ३३।

"जया गान्धारी" यक्षिणी—स्वर्ण वर्ण वाली, काले सूवर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है हाथो मे चक्र शख, तलवार और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र न० ३४।

क्षेत्रपाल ४ यक्षनाथ, भूमिनाथ, देशनाथ, अवनिनाथ।

१८. श्री अरहनाथजी (मत्स्य का चिन्ह)

"रवगेंद्र यक्ष"—शंख की सवारी करने वाला त्रिनेत्र तथा छह मुख वाला है वाए हाथो मे क्रमश धनश, कमल, माला, वीजोराफल, वडी यक्ष माला और अभय को धारण करने वाला है। चित्र न० ३५।

"तारावती यक्षिणी"—स्वर्ण वर्ण वाली हस वाहनो, चार भुजा वाली है। हाथो मे सर्प हरिण वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र न० ३६।

क्षेत्रपाल ४ गिरिनाथ, गह्वरनाथ, वरूणनाथ मैत्रनाथ।

१९. श्री मल्लिनाथजी (कलश का चिन्ह)

"कुवेर यक्ष"—इन्द्र धनुष जैसे वर्ण वाला, गज वाहिनी चार मुख आठ हाथ वाना है।

"अपराजिता देवी यक्षिणी"—हरित वर्ण वाली, अष्टापद की सवारी करने वाली चार भुजा वालो, हाथो मे ढाल फल तलवार और वरदान को धारणा करने वाली है। चित्र न० ३८।

क्षेत्रपाल—४ क्षितिप, भवप, क्षातिप, क्षेत्रप (यक्षप)।

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथजी (कच्छप का चिन्ह)

"वरूण यक्ष"—श्वेत वर्ण तथा बैल की सवारी करने वाला जटा के मुकुट वाला, आठ मुख वाला, प्रत्येक मुख तीन तीन नेत्र वाला और चार भुजा वाला है। बाए हाथ मे ढाल और फल तथा दाहिने हाथ में तलवार और वरदान है। चित्र नं० ३९।

"बहुरुपिणी (सुगन्धनो देवी) यक्षिणी"—पीत वर्ण, कृष्ण सर्प की सवारी करने वाली और चार भुजा वाली है हाथो मे ढाल फल तलवार और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० ४०।

क्षेत्रपाल—४ तंद्रराज, गुणराज, कल्याणराज, भव्यराज।

२१. श्री नमिनाथजी (नील कमल का चिह्न)

"भ्रकुटि यक्ष"—रक्त वर्ण वाला, बैल की सवारी करने वाला चार मुख तथा आठ हाथ वाला, हाथो में ढाल, तलवार, धनुष, बाण, अकुश कमल चक्र और वरदान है। चित्र न० ४१।

"चामुण्डा (कुसुममालनि) यक्षिणी"—हरित वर्ण वाली मगर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली, हाथो मे दण्ड, ढाल, माला और तलवार है। चित्र नं० ४२।

क्षेत्रपाल ४ कपिल, वटुक, भैरव, भैरव, सल्लाकारव्य।

२२. श्री नेमिनाथजी (शंख का चिन्ह)

"गोमेद यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला तीन मुख तथा पुष्प के आसन वाला मनुष्य की सवारी करने वाला और छह हाथ वाला है हाथों में मुग्दर फरसा, दण्ड, फल, चक्र और वरदान है। चित्र न० ४३।

"आम्रा (कुष्माण्डनी) यक्षिणी"—सिंह वाहनी आम की छाया मे रहने वाली दो भुजा वाली है बाए हाथ मे प्रिय पुत्र की प्राप्ती के लिए आम्रा की लूम को धारण करने वाली है तथा दाहिने हाथ मे शुभकर पुत्र को धारण करने वाली है। चित्र न० ४४

क्षेत्रपाल ४ कौकल, खगनाम, त्रिनेत्र कलिग।

२३. श्री पार्श्वनाथजी (सर्प का चिन्ह)

"धरणेन्द्र यक्ष" आकार के समान नीले वर्णवाला, कछुआ की सवारी करने वाला,

मुकुट मे सर्प का चिन्ह और चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनो हाथो मे सर्प और व नीचे के वाऐ हाथ मे नागपाश और दाहिने हाथ में वरदान को धारण करने वाला है। चित्र न० ४५।

"पद्मावती देवी यक्षिणी"—कमल (आशाधर पाठ मे कुक्कुट)सर्प की सवारी करने वाली कमलासानी माना है मस्तक पर सर्प के तीन फणो के चिन्ह वाली माना है। मल्लि-षेणाचार्य कृत पद्मावती कल्प मे चारो हाथो मे पाश फल वरदान को धारण करने वाली भी माना है। प्रकारान्तर मे छह और चौवीस भुजा वाली भी माना है। छह हाथों मे पाश, तलवार, भाला बाल चन्द्रमा गदा और मूसल को धारण करती है। तथा २४ हाथो मे शंक तलवार, चक्र, बाल चन्द्रमा, सफेद कमल, लाल कमल, धनुष, शक्ति, पाश, अकुश, घटा, वाण, मूसल, ढाल त्रिशूल, फरसा वज्र, माला, फल, गदा पान नवीन, पत्तो का गुच्छा और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र न० ४६।

क्षेत्रपाल ४ कीर्तिधर, स्मृमिधर, विनयधर, अञ्जधर (अञ्जारव्य)।

२५. श्री महावीरजी (सिंह का चिन्ह)

"मातंग यक्ष"—मूगे के जैसे वर्ण वाला, गज वाहन मस्तक पर धर्म चक्र को धारण करने वाला और दो भुजा वाला है। वायें हाथ मे विजोराफल, दाहिने हाथ मे वरदान है। चित्र न० ४७।

"सिद्धायिक यक्षिणी"—स्वर्ण के समान वर्ण वाली भद्रासनी, सिंहवाहनी, दो भुजा वाली वायें हाथ मे पुस्तक व दाहिने हाथ मे वरदान युक्त है। चित्र न० ४८।

क्षेत्रपाल ४ कुमुद, अजन, चामर, पुष्पदता।

॥ इति ॥

गंधर्व यक्ष नं. ३३
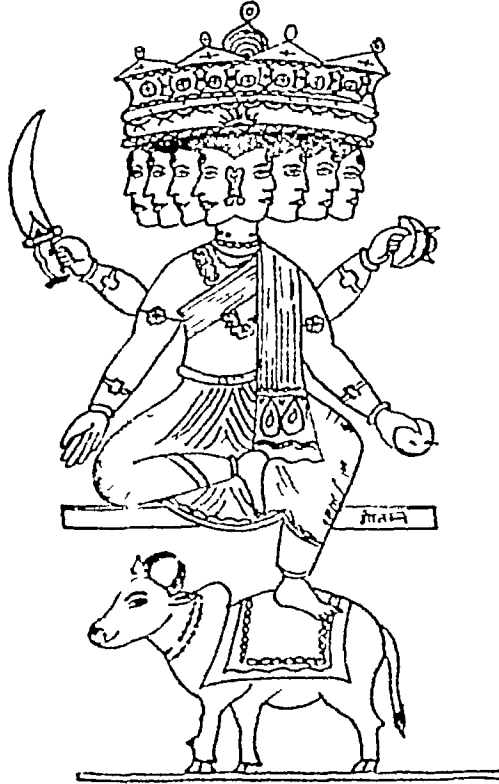
जया गांधारी यक्षणी नं. ३४

खगेन्द्र यक्ष नं. ३५

तारावती यक्षणी नं. ३६

कुबेर यक्ष नं. ३७

अपरा जिता देवी नं. ३८

वरुण यक्ष न ३९

बहुरूपिणी यक्षणी नं ४०

भ्रकुटी यक्ष नं·४१
चामुण्डा यक्षणी नं·४२
गोमेद यक्ष नं·४३
आम्र(कुष्माण्डनी यक्षणी नं· ४४

धरणेन्द्र यक्ष नं. ४५

पद्मावती देवी यक्षणी नं. ४६

मातङ्ग यक्ष नं. ४७

सिद्धायिका देवी नं. ४८

अष्ठमातृका स्वरूप वर्णन

१-(ब्रह्माणी) देवी पद्मराग वर्णवाली, पद्मवाहन, मूसल का आयुध धारण करने वाली है।

२-(माहेश्वरी देवी) सुकर का वाहन, दड और वरदान, आयुध को धारण करने वाली और श्वेतवर्ण वाली है।

३-(कौमारिदेवी) विद्रुम वर्ण वाली, मयुर का वाहन (खड्ग) तलवार का आयुध धारण करने वाली है।

४-(वैष्णविदेवि) इन्द्रनील वर्ण वाली, चक्रायुध धारण करने वाली, और गरूड वाहन वाली है।

५-(वाराहिदेवी) नील वर्ण वाली, वराहका (सुकर) वाहन वाली, हल का आयुध धारण करने वाली है।

६-(इन्द्राणि देवी) सुवर्ण वर्ण वाली, वज्रायुध धारण करने वाली, हाथी का वाहन वाली है।

७-(चामुंडिदेवी) अरूण वर्ण वाली, व्याघ्र वाहन वाली, शक्ति आयुध को धारण करने वाली है।

८-(महालक्ष्मीदेवी) सर्वलक्षणो से पूर्ण गदा का आयुध, चूहे का वाहन, और श्वेत वर्ण।

अष्टजयाद्यादेवता स्वरूप

१-(जयादेवी) पाश, असि, खेटक, और फल, सोने के समान वर्ण वाली, पीतांबर को धारण करने वाली, फूल की माला पहने हुये, चार भूजा वाली।

२-(विजयादेवी) छ हाथ वाली कोदंड, बाण, असि, गदा, सरोज, फल, के आयुध धारण करने वाली रक्त वर्ण वाली, रक्ताम्बर वाली।

३-(अजितादेवी) श्वेत वर्ण वाली, सूवर्ण वस्त्र, मत्स्य का वाहन, दो भुजा वाला, एक हाथ मे कृपाण एक हाथ फल।

४–(अपराजितादेवी)कृष्ण वर्ण वाली, कृष्णांवर धारण करने वाली ६ भुजा वाली खेट, कृपाण स्चक, अभय, गदा, पाश, के आयुध को धारण करने वाली।

५–(जभादेवी) लाल वस्त्र को धारण करने वाली, श्वेत वर्ण वाली, अष्ट भुजा वाली, धनुष, वाण, कृपाण, गदा, वर, माला, फल, अबुरूह।

६–(मोहादेवी) रक्तवर्ण वाली, श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली, सिहाधिरूढ, चार भुजा वाली, माला, अभय, अभोज, (कमल), वरद, को धारण करने वाली है।

७–(स्तभादेवी) सूवर्ण वर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, हाथी की सवारी, छह हाथ वाला, खडग, त्रिशूल, उतल, मातुलिंग, वरद, अभय के आयुध वाली है।

८–(स्तभिनीदेवि) रक्तवर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, ४ भुजा वाली, फल, असि, पुत्रीपरिका, अभय के आयुधो को धारण करने वाली, द्विरदाधि रूढ।

सोलह विद्या देवियों के नाम

रोहिणी १ प्रज्ञाप्ते २ वज्र शृखला ३ वज्राकुशे ४ अप्रतिचक्रे ५ पुरूषदता ६ कालि ७ महाकालि ८ गान्धारि ९ गौरि १० ज्वालामालिनि ११ वैरोटि १२ अच्युते १३ अपराजिते १४ मानसि १५ महामानसि १६।

सोलह विद्या देवियो के वाहन व आयुध २४ यक्षिणीचो अन्तर्गत ही है इसलिये अलग से नहः दिया है। २४ यक्षिया के चित्र सहित वर्णन कीया है।

चतुःषष्टि योगिनीयों के नाम

दिव्ययोगिनी १ महायोगिनी २ सिद्धयोगिनी ३ जिणेश्वरी ४ प्रेताशी ५ डाकिनी ६ कालो ७ कालरात्रि ८ निशाचरी ९ हुंकारी १० सिद्धवैताली ११ ह्रीकारी १२ भूतडामरी १३ ऊर्ध्वकेशी १४ विरूपाक्षी १५ शुक्लाङ्गी १६ नरभोजिनी १७ पट्कारी १८ वीरभद्रा १९ धूम्राक्षी २० कलहप्रिया २१ राक्षसी २२ घोररक्ताक्षी २३ विश्वरूपा २४ भयंकरी २५ वैरी २६ कुमारिका २७ चण्डि २८ वाराही २९ मुण्डधारिणी ३० भास्करी ३१ राष्ट्रटकारी ३२ भीपणी ३३ त्रिपुरान्तका ३४ रौरवो ३५ ध्वसिनी ३६ क्रोधा ३७ दुर्मुखी ३८ प्रेतवाहनी ३९ खट्वाङ्गी ४० दीर्घलवोंष्ठि ४१ मालिनी ४२ मन्त्रयोगिनी ४३ कालिनी ४४ त्राहिनी ४५ चक्री ४६ ककालि ४७ भुवनेश्वरी ४८ कटी ४९ निकटी ५० माया ५१ वामदेवाकर्पदिनी ५२ केशमर्दी ५३ रक्ता ५४ रामजैघा ५५ महर्पिणी ५६ विशाली ५७ कार्मुकी ५८ लोलाकाक
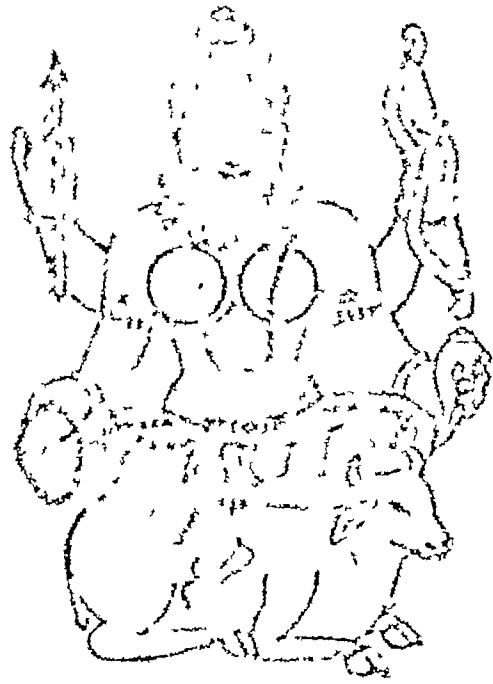
४ वज्रांकुशा (दिग०)

४ वज्रांकुशा (श्वे०)

५. जाम्बूनदा (दिग०)

५ अप्रतिचक्रा (श्वे०)

६ पुरुषदत्ता (दिग०)

६ पुरुषदत्ता (श्वे०)

१० गाधारी (दिग०)

१० गाधारी (श्वे०)

११ ज्वालामालिनी (दिग०)

११ ज्वाला (श्वे०)

१२. मानवी (दिग०)

१२. मानवी (श्वे०)

१६ महामानसी (दिग०)

१६. महामानसी (श्वे०)
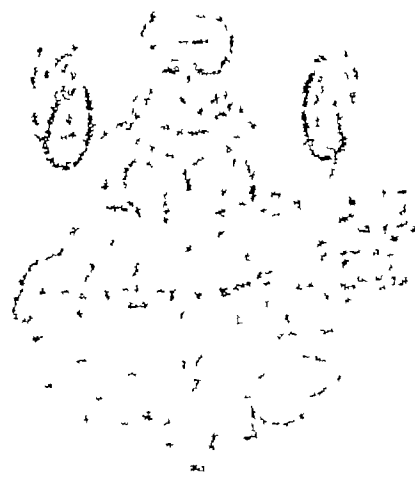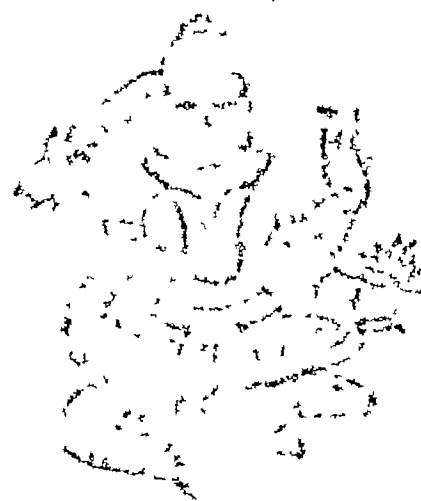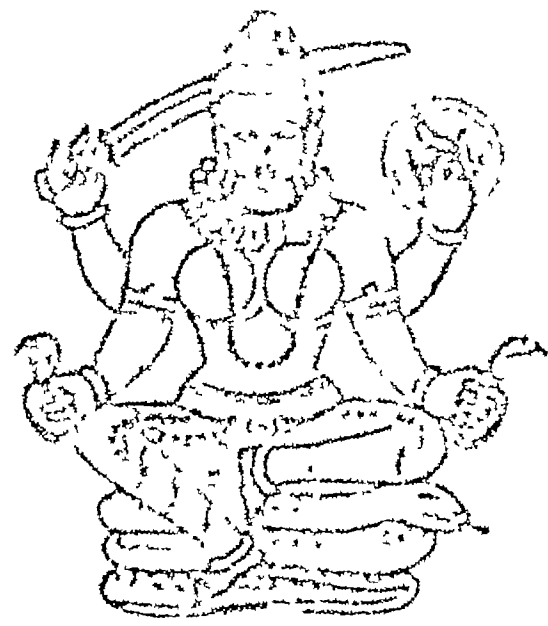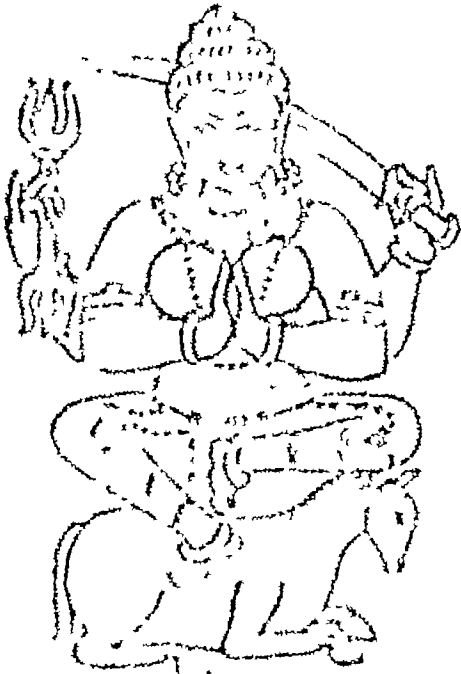
दृष्टि रधोमुखी ५६ मडोग्रधारिणी ६० व्याघ्री ६१ भूतादिप्रेत नाशिनी ६२ भैरवी, महामाया ६३ कपालिनो वृथाङ्गनी ६४ ।

यक्ष अथवा यक्षिणीयों की पंचोपचारी पूजा का क्रम

प्रथम सकलीकरण करे, फिर अष्टद्रव्य सामग्री शुद्ध अपने हाथ से धोकर, यक्ष अथवा यक्षिणी की पचोपचारी पूजा भक्ति से श्रद्धानपूर्वक करे ।

ॐ आ क्रों ह्री नमोऽस्तु भगवति अमुक यक्ष अथवा अमुक यक्षिणी एहि २ संवौषट् ।

इति आह्वान मंत्र

ॐ आ क्रों ह्री नमोऽतु, भगवती, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, तिष्ठ २ ठ. ठ :

इतिस्थापन मंत्र

ॐ आं क्रो ह्री नमोऽतु भगवति, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, ममसन्निहिता भव २ वषट् ।

इति सन्निधीकरण मंत्र

ॐ आ क्रो ह्री नमोऽतु भगवति अथवा भवावते, अमुकयक्ष अथवा अमुक यक्षिणी, जल-गंध अक्षत् पुष्पादिकान् गृण्ह २ नम ।

उपरोक्त मंत्र से प्रत्येक द्रव्य को चढाते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करे। प्रत्येक द्रव्य से पूजा हो जाने के बाद विसर्जन करे ।

इति द्रव्य अर्पण मंत्र

ॐ आं क्रो ह्री नमोऽतु, भगवति अथवा भगवते, यक्ष, अथवा अमुक, यक्षिणी स्वस्थान गच्छ २ जः ज. ज. ।

इति विसर्जन मंत्र

इस प्रकार यक्ष अथवा यक्षिणी की पूजा करनी चाहिये ।

होम विधि

पहले शकली करण के बाद होम शुरू करे

तद्यथा—ॐ ह्रीं क्ष्वीं भु स्वाहा पुष्पाञ्जलिः ॥ १ ॥

इस तरह के मन्त्र जाप के विधान को पूर्ण कर दशांस अग्नि होम करे इसका विधान इस प्रकार है ।

"ॐ ह्रीं क्ष्वीं" इस मन्त्र का उच्चारण कर पुष्पांञ्जलि क्षेपण करे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ क्षेत्रपालबलिः ॥ २ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर क्षेत्रपाल को वलि देवे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वायु कुमाराय सर्व विघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा ॥ भूमि सम्मार्जनम ॥ ३ ॥

इस मन्त्र को पढकर भूमिका सम्मार्जन-सफाई करे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मेघ कुमाराय धरा प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं झं यं क्षः फट् स्वाहा ॥ भूमि सेचनम् ॥ ४ ॥

यह मन्त्र पढकर भूमि पर जल सींचे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अग्नि कुमाराय ह्म्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वल तेजः पतये अमित तेज से स्वाहा ॥ दर्भाग्निप्रज्वालम ॥ ५ ॥

यह मन्त्र पढकर दर्भ से अग्नि सुलगावे ॥ ५ ॥

ॐ ह्री क्रौं षष्ठि सहस्त्र संख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा नागतपर्णम ॥ ६ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर नागो की पूजा करे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं भूमिदेवते इदं जलादिकमर्चनं गृहाण स्वाहा । भूम्यर्चनम् ॥ ७ ॥

यह मन्त्र पढकर भूमि की पूजा करे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अर्ह क्षं वं वं श्रीं पीठ स्थापनं करोमि स्वाहा ॥ होम कुण्डाऽप्रव्यक पीठ स्थापनम ॥ ८ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर होम कुण्ड से पश्चिम की ओर पीठ स्थापन करे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं समग्दर्शनज्ञानः चारित्रेभ्यः स्वाहा ॥ श्री पीठार्चनम ॥ ९ ॥

इस मन्त्र को पढकर पीठ की पूजा करे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्व शान्ति कुर्वन्तु श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् करोमी स्वाहा ॥ श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् ॥ १० ॥

यह मन्त्र पढकर श्री पीठ पर प्रतिमा स्थापन करे ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्टिभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मकेभ्य स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनाधिनिधनेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं नमो नृसुरासुर पूजितेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तज्ञानेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त दर्शनभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽअनन्तबोर्येभ्य स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त सौख्येभ्यः स्वाहा इत्यष्टभिर्मन्त्रैः प्रतिमार्चनम्ः ।। ११ ।।

इन आठ मन्त्रो का उच्चारण कर प्रतिमा की पूजा करना चाहिये ।। ११ ।।

ॐ ह्रीं धर्म चक्रायां प्रतिहत तेज से स्वाहा ।। चक्रत्रयार्चनम ।। १२ ।।

इस मन्त्र को पढकर तीनो मन्त्र से चक्रो की पूजा करे ।। १२ ।।

ॐ ह्रीं श्वेतच्छत्रत्रयश्रियै स्वाहा ।। छत्रत्रय पूजा ।। १३ ।।

इस मन्त्र का उच्चारण कर छत्र त्रय की पूजा करे ।। १३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ह्सौ २ सर्व शास्त्र प्रकाशनि वद् वद् वाग्वादिनो अवतर अवतर। अश्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संनिहिता भव भव वषट् क्लूं नमः सरस्वत्यै जलं निर्वपामि स्वाहा ।। एवं गन्धा क्षत पुष्प चरु दीप धूप फल व स्त्राभरणादिकम् । प्रतिमाग्रे सरस्वती पूजा ।। १४ ।।

ॐ ह्री श्री इत्यादि मन्त्र पढकर सरस्वती का आव्हान स्थापन और सन्निधिकरण करे "क्लू" इत्यादि पढकर जल गन्ध अक्षत पुष्प नवैध दीप धूप फल और वस्त्राभरणादिकसे प्रतिमा के सामने सरस्वती की पूजा करे ।। १४ ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पवित्रतरगात्र चतुर शीत लक्षण गुणाष्टा दश सहस्त्र शील गणधरचरणाः आगच्छत २ संवौषट इत्यादि गुरु पादुका पूजा ।। १५ ।।

"ॐ ह्री" इत्यादि पढकर गणधरो की पादुका की पूजा करे ।। १५ ।।

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्ध दुर्मार्ग विनाशन परम सन्मार्ग-परिपालन भगवन् यक्षेश्वर जलार्यनं गृहाण गृहाण इत्यादि जिनस्य दक्षिणे यक्षार्चनम ।। १६ ।।

"ॐ ह्री" इत्यादि पढकर जिन भगवान के दक्षिण की ओर यक्षो की पूजा करे ।। १६ ।।

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्ध दुमार्ग विनाशिनि सन्मार्ग प्रर्वातनि भगवती यक्षी देवते जलाद्यर्चनं गृहाण गृहाण । इत्यादि बामे शासन देवतार्चनम ।। १७ ।।

यह मन्त्र पढकर जिन भगवान की बाई ओर शासन देवताओ की पूजा करे ।। १७ ।

ॐ ह्रीं उपवेशनभूः शुद्यतु स्वाहा ।। होम कुंड पूर्व भागे दर्भपूलेनोपवेशन भूमि शोधनम् ।। १८ ।।

यह मन्त्र पढकर होम कुंड के पूर्व भाग मे दर्भ के पूले से बैठने की जमीन को शुद्ध करे ।। १८ ।।

ॐ ह्रीं पर ब्रह्मणे नमों नमः ब्रह्मासने अहमुपविशामि स्वाहा । होम कुण्डाग्रे पश्चिमाभिमुखं होता उपयिशेत।। १९ ।।

यह मन्त्र पढकर होता (होम करने वाला) होम कुंड के अग्र भाग मे पश्चिम की ओर मुख करके बैठे ।। १९ ।।

ॐ ह्री स्वस्तये पुण्याहकलशं स्थापयामि स्वाहा ।।
शाली पुञ्जोपरि फल सहित पुण्याह कलश स्थापनम् ।।२० ।।

यह मन्त्र पढकर चावलो के ढेर पर पुण्यावाचन के कलश स्थापन करे और उनके ऊपर नारियल आदि कोई सा फल रक्खे ।। २० ।।

ॐ ह्रां ह्री ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्मसहा पद्मतिगीच्छ केसरि पुण्डरिक महापुंडरिक गंङ्गा सिन्धु रोहिद्रोहिता स्याहरिद्वरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नर कान्ता सुवर्ण रूप्य कूलारक्तारक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुर्वण घट प्रक्षालित वर रत्न गन्धाक्षत पुष्पा चितमा सोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं भ्रौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः इति जलेन प्रसिञ्चय जल पवित्री करणम् ।। २१ ।।

यह मन्त्र पढकर जल सीचकर पूजा करने के जल को पवित्र करे ।। २१ ।।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषटम ।। कलशार्चनम ।। २२ ।।

यह मन्त्र बोलकर कलशो की पूजा करे ।। २२ ।।

ततो यजमानाचार्यः वाम हस्तेन कलशं धृत्वां सव्यहस्तेन पुण्यहवाचनां पठित्वा कलशं कुंडस्य दक्षिणे भागे निवेशयेत् ।। २३ ।।

इसके बाद यजमान आचार्य बांये हाथ मे कलश लेकर दाहिने हाथ से पुण्याहवाचन को पढता हुआ भूमि का सिंचन करे ॥ २३ ॥ और पुण्याहं पुण्याह प्रीयन्ता प्रीयन्तां इत्यादि पुण्याहवाचन को पढता हुआ कलश को कुण्ड के दाहिने भाग मे स्थापन करे ॥ २३ ॥

ततः ॐ ह्रीं स्वस्तये मङ्गलकुंम्भ स्थापयामि स्वाहा वामे मङ्गलकलश स्थापनं तत्र स्थालि पाक प्रोक्षण पात्र पूजाद्रव्य होम द्रव्य स्थापनम् ॥ २४ ॥

इसके बाद "ॐ ह्री स्वस्तये" इत्यादि पढकर कुंड के बाये भाग मे कलश स्थापन करे और वही पर स्थालीपाक गन्ध पुष्प अक्षत फल इत्यादि को से सुशोभित पांच पंच पात्री' प्रेक्षणपात्र, पूजाद्रव्य और होम द्रव्य को स्थापन करे ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं परमेष्ठिभ्यों नमो नमः इति परमात्म ध्यानम् ॥ २५ ॥

इसे पढकर परमात्मा का चिन्तवन करे ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ध्यातृ भिरभीप्सित फलदेभ्यः स्वाहा परम पुरुष स्यार्ध्य प्रदानम् ॥ २६ ॥

यह पढकर परमात्मा को अर्ध्य दे ॥ २६ ॥

तत इदं यन्त्रं कुण्ड मध्ये लिखेत् ॐ ह्रीं नीरज से नमः ॐ दर्पमथनाय नमः । इत्यादि ॥ जलैर्दर्भै र्गन्धाक्षतादिभि होम कुण्डार्चनम ॥ २७ ॥

इसके बाद कुण्ड के बीच मे ॐ ह्री नीरज से नमः ॥ "दर्पमथनाय नम" इत्यादि जिसे पीछे पूर्ण लिख आये है उस मन्त्र को लिखे जल गन्ध अक्षत दर्भ आदि से होम कुण्ड को अर्चना करे ॥ २७ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि स्थापयामि स्वाहा ॥ अग्नि स्थापनम् ॥ २८ ॥

इसे पढकर कुंड मे अग्नि को स्थापना करे ॥ २८ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं दर्भ निक्षिप्य अग्निसन्धुक्षणं करोमी स्वाहा ॥ २९ ॥

यह पढकर कुंड मे दर्भ डालकर अग्नि जलावे ॥ २९ ॥

ॐ ह्री क्ष्वीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रां हं सः स्वाहा ॥ आम नम ॥ ३० ॥

यह मन्त्र पढकर आचमन करे ॥ ३० ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असि आ उ सा अर्हं प्राणायामं करोमि स्वाहा ॥ त्रिरुच्चार्य प्राणायाम् ॥ ३१ ॥

इस मन्त्र का तीन वार उच्चारण कर प्राणायाम करे ॥ ३१ ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसन्दभार्य केवल ज्ञान दर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रं दर्भ परिस्तरणमुदुम्बर समित्परिस्तरणं च करोमि स्वाहा ॥ होम कुण्डस्य चतुर्भुजेषू पञ्च पञ्च दर्भ वेष्टितेन परिधि बन्धनम् ॥ ३२ ॥

"ॐ नमोऽर्हते" इत्यादि पढ़कर कु ड के चारो कोनो पर पाच पाच दर्भ को एक साथ बाधकर परिबन्धन करे, दक्षिण और उत्तर के कोने पर रक्खे हुये दर्भों की नौंके पूर्व दिशा की ओर करे और पूर्व पश्चिम के कोने पर रक्खे दर्भों की नोके उत्तर की ओर करे ॥ ३२ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ र र र र अग्निकुमार देव आगच्छागच्छ इत्यादि ।

इत्यादिदेव माहूय प्रसाद्य तन्मौल्युद्भवस्याग्नेरस्य गार्हपत्येनामधेयमन्त्र संकल्प्य अर्हद्दिव्यमूर्तिभावनया श्रृद्धानरूपदिव्य शक्ति समन्वित सम्यग्दर्शन भावनया समभ्यर्चनम ॥ ३३ ॥

"ॐ ॐ ॐ ॐ" इत्यादि मन्त्र पढकर अग्नि देव (अग्निकुमार) का आह्वान करे उसे प्रसन्न करे, अर्थात् अग्नि जलावे, 'गाह्पत्य' इस नाम की कल्पना करे और अर्हन्त भगवान की दिव्य मूर्ति की तथा श्रद्धान रूप दिव्य शक्ति युक्त सम्यग्दर्शन की भावना कर पूजा करे ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्त वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधूचिन्ह सपरिवाराः पञ्चदश तिथिदेवताः आगच्छत आगच्छत इत्यादि कुण्डस्य प्रथम-मेखलायामं तिथि देवतार्चनम ॥ ३४ ॥

" ॐ ह्रीं क्रौं" इत्यादि मन्त्र को बोलकर कु ड को प्रथम मेखला पर पन्द्रह तिथि देवताओ की पूजा करे ॥ ३४ ॥

"ॐ ह्रीं क्रौं" प्रशस्तवर्णसर्व लक्षणसम्पूर्णस्वायुध वाहन वधू चिन्हस परिवारा नवग्रह देवता आगच्छत आगच्छतत्यादि । उर्ध्वमेखलायां द्वात्रिंशदि दिन्द्रार्चनम ॥ ३५ ॥

यह मन्त्र पढ़कर तीसरी मेखला पर बत्तीस इन्द्रो की पूजा करे ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं स्वर्ण सुवर्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहनवधू चिन्ह सपरिवार इन्द्रदेव आगच्छा अगच्छेत्यादि इन्द्रार्चनम ।। ३६ ।।

एवं लघ पीठेषु दशदिक्पाल पूजा करे ।। ३६ ।।

ततः ॐ ह्रीं स्थालिपाक मुपहयमि स्वाहा । पुष्पाक्षतैरुपहार्य स्थाली पाक ग्रहणम ।। ३७ ।।

इसके वाद "ॐ ह्री स्थालीपाक मुपहयमि स्वाहा" यह पढ़कर पुष्पअक्षतों से भरकर स्थालि पाक को अपने पास रखे ।। ३७ ।।

ॐ ह्रीं होम द्रव्य मादधामि स्वाहा । ।। होम द्रव्याधानम्।।३९।।

इसे पढ कर होम द्रव्य अपने पास रखे ।

ॐ ह्रीं आज्यपात्रस्थापनम् ।।४०।।

यह पढ कर होम करने के घी को अपने पास रखे स्थापन करे ।।४०।।

ॐ ह्रीं स्वमुपस्करोमि स्वाहा ।। स्रुववस्तापनं मार्णनं जलंसेवन पुनस्तापनमग्रे निधापनं च ।।४१।।

यह मन्त्र पढ कर स्त्रुक (सूची) अर्थात् घी होमणे के पात्र का संस्कार इस प्रकार करे कि प्रथम उसे अग्नि पर तपावे. सेके इसके बाद उसे पौछे इसके बाद उस पर जल सीचे पुनः अग्नि पर तपावे और अपने सामने रखे ।।४१।।

ॐ ह्रीं स्त्रुवमुपस्करोमि स्वाहा ।। स्त्रुपस्थापनं तथा ।।४२।।

यह मन्त्र बोलकर स्त्रुव अर्थात् होम सामग्री को होमने के पात्र को सूची की तरह संस्कार करे, स्थापना करे ।।४२।।

ॐ ह्रीं आज्यामुद्वासयामि स्वाहा ।। दर्भपिण्डोज्वलेन आज्यस्यो द्वासन मुत्पाचनमवेक्षणंम च ।।४३।।

यह मन्त्र पढ कर घी को तपावे वह इस तरह कि दर्भ के पूले को जलाकर घी को उठावे उत्पाचन (तपावे) और अवेक्षण (देखे) करे ।।४३।।

ॐ श्रीं पवित्रतर जलेन द्रव्यशुद्धिं करोमि स्वाहा होम दुष्टा प्रोक्षणम ।।४४।।

यह मन्त्र पढ़ कर द्रव्य शुद्धि करे ।।४४।।

ॐ ह्रीं कुशमाददामि स्वाहा । दर्भपूलमादाय सर्वद्रव्य स्पर्शनम ॥४५ ।

यह मन्त्र पढ कर दर्भ के पूले को उठाकर सव द्रव्य से छुवावे ॥४५॥

ॐ ह्रीं परम पवित्राय स्वाहा ॥ अनामिकांगुल्यां पवित्रधारणं ॥४६॥

यह मन्त्र पढ कर अनामिका उ गली मे पवित्र पहिने ॥४६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा ॥ यज्ञोपवीतधारणम् ॥४७॥

यह मन्त्र पढ कर यज्ञोपवित पहने ॥४७॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय परिषेचनं करोमि स्वाहा । अग्निपर्युक्षणम् ॥४८॥

यह मन्त्र पढ कर कु ड के चारो ओर पानी की धार छोडे ॥४८॥

ततः ॐ ह्री अर्ह अर्हत्सिकेवलिभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं पञ्चदशतिथि-देवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्री नवग्रहदेवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं दशलोकपालेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा षड़ेतान् मन्त्रानष्टादशकृत्वः पुनरावर्तनेनोच्चारयन् स्त्रुवेणप्रत्येक माज्याहुति कुर्यादित्या-ज्याहुतयः ॥४६॥

इसके वाद "ॐ ह्री अर्ह" इत्यादि छह मत्र को अठारह वार दोहरा कर वोले प्रत्येक मन्त्र को वोल कर स्रूची घृताहुति करे। इस तरह एक सौ आठ आहुति हो जाती है इसे घृता-हुति कहते है ॥४६॥

ॐ ह्रां अर्हत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनस्तर्प-यामि स्वाहा ॥ ह्रौं उपाध्यायपरमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रः सर्वसाधुपर-मेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ अवांतरे पंचतर्पणानि "ॐ ह्रां" इत्यादि मन्त्र पढ़ कर मध्य में पाँच तर्पण करे ॥५०॥

यह तर्पण हर एक द्रव्य का हो और होम हो चुकने के वाद किया जाता है। इसलिये इसे अवान्तर तर्पण कहते हैं।

ॐ ह्रीं अग्नि परिषचयामि स्वाहा ॥ क्षीरेणाग्निपर्युणक्षम ॥५१॥

यह मन्त्र पढ कर अग्नि को दूध की धार देवे ॥४४॥

अथ समिधाहुतय ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रो ह्र असि आउसा स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेण समिधाहुतय करेण होतव्या इति समिधा होम १०८॥ तत. पडाज्या हुतय पञ्च तर्पणानि पर्युक्षणच ॥५१॥

अब समिधाहुति कहते है। "ॐ ह्रा" इत्यादि मन्त्र के द्वारा हाथ से समिधा की एक सौ आठ आहुतिया देवे। मन्त्रोच्चारण भी एक सौ आठ बार करे, इसके बाद पूर्वोक्त छह धृताहुति देवे। पाँच तर्पण करे और अग्नि पर्युक्षण करे। अग्नि के चारो ओर दूध की धार देने को पर्युक्षण कहते है ॥५२॥

अथ लवगाद्यातुय ॥ ॐ ह्रा अर्हदभ्य स्वाहा। ॐ ह्री सिद्धेभ्य स्वाहा ॐ ह्रूं सूरम्य स्वाहा। ॐ ह्रौं पाठकेभ्य स्वाहा ॐ ह्रः सर्व साधुभ्य. स्वाहा ॥ ॐ ह्री जिन धर्मेभ्यः स्वाहा ॐ ह्री जिनागमेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्री जिनालयेभ्य स्वाहा। ॐ ह्री सम्यग्दर्शनाय स्वाहा। ॐ ह्री सम्यकज्ञानाय स्वाहा। ॐ ह्री सम्यकचारित्राय स्वाहा। ॐ ह्री जया धृष्ट-देवताभ्य स्वाहा। ॐ ह्री षोडश विद्यादेवताभ्य स्वाहा। ॐ ह्री चतुर्विशतिय क्षीभ्यः स्वाहा। ॐ ह्री चतुदर्शभवन वासिभ्य स्वाहा। ॐ ह्री अष्टविधव्यन्तरेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्री चतुर्वि-ध्योतिरिन्द्रेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्री द्वादशविधकल्पवासिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्री अष्टविधकल्पवा-सिभ्य स्वाहा। ॐ ह्री नवग्रहेभ्य स्वाहा। ॐ ह्री अष्टविध कल्पवासिभ्य स्वाहा। ॐ ह्री अग्निद्राय स्वाहा। ॐ स्वाहा भू स्वाहा। भुव स्वाहा स्वः स्वाहा। एतान् सप्तविशन्ति मन्त्राश्चतुवारानुच्चार्य प्रत्येक लवंग गन्धाक्षतगुग्गुलुतिलशालिकुङ्कुमकर्पूरलाजा गुरु शर्करामि राहुति. सरुचा जुहुयात् इति लवङ्गाद्याहूतय. ॥

"ॐ ह्री अर्हदभ्य" इत्यादि सताइस मन्त्रो का चार-चार बार उच्चारण कर हर एक मन्त्र को लोग गन्ध अक्षत–गुग्गुल–कुंकम–कर्पूर लाजा (भुने चावल) अगुरु और शक्कर इनकी सूचो से आहूतियाँ देवे। इस प्रकार १०८ आहूति देवे ॥५३॥

॥ पूर्ववत् षडाज्याहुति पञ्चतर्पणैकपर्युक्षणानि ॥५४॥

इसके बाद पहिले की तरह छह धृताहूति पचतर्पण और एक पर्युक्षण करे इनके करते समय पूर्वोक्त मन्त्रो को बोलता जावे ॥५४॥

॥ अथ पीठिका मन्त्राः ॥

ॐ सत्यजाताय नमः। ॐ अर्हज्जाताय नमः। ॐ परमजातायः नमः। ॐ अनुपम-जाताया नमः। ॐ स्वप्रधानाय नमः। ॐ अचलाया नम ॐ अक्षयाय नमः। ॐ अव्या-बाधाया नम। ॐ अनन्तज्ञानाय नम.। ॐ अनन्तदर्शनाय नमः। ॐ अनन्तवीर्याय नम। ॐ अनन्तसुखाय नम.। नीरज से नम.। ॐ निर्मलाय नम.। ॐ अच्छे-द्याय नम.। ॐ अभेद्याय नमः। ॐ अजराय नम। ॐअपराय नम. ॐ अप्रमेयाय नमः। ॐ गर्भ-

वामाय नम । ॐ अविलीनाय नमः ॐ परमनाथाय नम । ॐ लोकाग्रनिवासने नम । ॐ परमसिद्धेभ्य नम ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नम । ॐ केवलि सिद्धेभ्य नम ॐ अनन्तकृत्सिदेभ्य नम. । ॐ परपरासिद्धेभ्य नम । ॐ अनादिपरमसिदेभ्य नम । ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्य नम । ॐ सम्यक्दृष्टे आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्ह अग्निन्द्राय स्वाहा ।। सेवाफलपट परम स्थान भवतु अपमृत्युनाशनं भवतु ।। पीटिकामन्त्रा ।। पीठिकामन्त्रेरेतै पटत्रिंशभेदभिन्ने. प्रतिमन्त्र त्रिवारमुच्चारितै शाल्यन्नक्षीरघृत–भक्ष्यपायस शर्करारम्भाफलैर्मिलितैरन्नाहूति । स्रुचा जुहुयात पुनराज्याहुतितर्पणपर्युक्षणानि ।।५५।।

"ॐ सत्यजाताय नम" इत्यादि छत्तीस पीठिका मन्त्रो का हर एक का तीन तीन वार उच्चारण करे प्रत्येक के अन्त मे, शाली, अन्न दूध, घी, दूसरे खाने के पदार्थ, खोवा, शक्कर और केले इन सवको मिलाकर सूची के द्वारा अन्नाहूति देवे यह भी १०८ वार हो जाती है इसके वाद जीतने मन्त्र जप किया हो उसका दशास होम लवगादि द्रव्य से करे फिर छह घृताहूति, पाच तर्पण एक पर्युक्षण करे ।

।। अथ पुर्ण आहूति ।।

ॐ तिथि देवा पञ्चदशधा प्रसीदन्तु, नवग्रह देवा प्रत्यवापहरा भवन्तु । भावनादयो द्वात्रिश द्देवा इन्द्रा· प्रमोदन्तु । इन्द्रादयो विश्वे दिवपाला पालयन्तु । अग्निन्द्रामोल्य द्भूवाऽप्यानि देवता प्रसन्ना भवंतु । शेपा सर्वेऽपि देवा एते राजान विराजन्तु दातर तर्पयन्तु सघ श्लाघयन्तु वृष्टि वर्षयन्तु । विघ्न विघातयन्तु मारी निवारयन्तु । ॐ ह्री नमोऽर्हते भगवते पूर्ण ज्वलित ज्ञानाय सम्पूर्ण फलार्घ्या पूर्णाहुति विदध्महे ।।इति पूर्णाहूति ५६।।

"अति तिथि देवा" इत्यादि मत्रो के द्वारा पूर्णाहूति देवे । पूर्णाहूति मे फल और पूजा का द्रव्य होना चाहिए । पूर्णाहूति के मन्त्र पूर्ण हो, वहा तक वरावर एक सरीखी घी की धार छोडता रहे ।।५६।।

ततो मुकलित कर —ॐ दर्पणो घोत ज्ञान प्रज्वलित सर्व लोक प्रकाशक भगवन्नर्हन् श्रृद्धा मेघा प्रज्ञा बुद्धि श्रिय वल आयुष्य तेज आरोग्य सर्व शान्ति । विधेहि स्वाहा । एत पटित्वा सम्प्रार्थ्य शान्ति धारा निपात्य पुष्पाजलि प्रक्षिप्य चैत्यलादि भक्ति त्रय चतुर्विशति स्तवन वा पठि वा पञ्चाग प्रणम्य तदिव्य भस्म समादाय ललाटा दौ स्वय धृत्वा अन्यानपि दद्यात् ।।५७।।

इसके वाद हाथ जोडकर "ॐ दर्पणो घोत" इत्यादि मन्त्र पढे, प्रार्थना करे, शान्ति धारा दे पुष्पांजलि क्षेपण करे चैत्यलय वगैरह की तीन भक्ति अथवा चौवीस तीर्थ करो की स्तुति

पढे और पचांग नमस्कार कर होम की दिव्य भस्म को लेकर ललाट वगैरह स्थानो पर लगावे, और औरो को भी देवे ॥५७॥

शाति धारा शान्ति पूर्वक भक्ति से पढे। फिर पहले स्थापित कलश लघू पूण्याह वाचन कर, स्थापित जिनेन्द्र-प्रभु की मूर्ति को स्वस्थान पर विराजमान करके मगल कलश को बाजे, गाजे के साथ अपने घर मे ले जावे।

। इति होम विधान ।

अथ पुन्याह वाचन

ॐ स्वस्ति श्री यजमानाचार्य प्रभृति समस्त भव्यजनानां सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्धिरस्तु।

अद्य भगवतो महापुरूषस्य श्री मदादि ब्रह्मणो मते त्रैलोक्य मध्यं मध्यासीने मध्य लोके श्री मदनावृत यक्ष स सेव्य माने, दिव्य जम्बू वृक्षोपलक्षित, जबू द्वीपे, महनीय महामेरोर्दक्षिण भागे, अनादि काल स सिद्ध भरत नाम धेय प्रविराजित षट् खन्ड मण्डित भरत क्षेत्रे, सकल शलाका पुरूष स भूति सम्बन्ध विराजितार्य खण्डे, परम धर्म समा चरण अस्मिन् देशे, अस्मिन् विनेय जनताभिरामे,............ग्रामे श्री दिगम्बर जैन मूल सघे, सरस्वती गच्छे, बलात्कार गणे श्री मद् कुन्दकुंदाम्नाये महा शाति कर्मणोचित्ते, अत्र .... दिव्य महा चैत्यालये, प्रदेशे एतदव सर्पिणी कालावसाने प्रवृत्त सुवृत्त चतुर्दश मनूपमान्वित सकल लोक व्यवहारे, श्री वृषभ स्वामी पौरस्त्य मगल महापुरुष परिषत्प्रतिपादित परमोपशम पर्व क्रमे, वृषभ सेन सिंह सेन, चारू सेनादि गणधर स्वामी निरूपित विशिष्ट धर्मोपदेशे, दु.खम सुखमानंतर प्रवर्तमान कलियुगा पर नाम धेय दुःखमाभिधान पंचम काल प्रथम पादे, महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरोपदिष्ट सधर्म व्यति करे, श्री गौतम स्वामी प्रतिपादित सन्मार्ग प्रवृत्त माने, श्रेणिक महा मंडलेश्वर समा चरित सन्मार्गा विशेषे, विक्रमाक नृपाल पालित प्रवृत मानानुकूल शक नृप काले...... वर्षसमिते, प्रवृतमान...... सवत्सरे, अमुक मासे अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरै, प्रशस्त तारका योग करणद्रे काण होरा मुहूर्त लग्न युक्तायां, अष्ट महा प्रातिहार्य शोभित श्री मद अर्हत्परमेश्वर सन्निधौ श्री शारदा सन्निधौ, राजर्षि परर्षि ब्रह्मर्षि सन्निधौ, विद्वत्सामाज सन्निधौ, अनाधि श्रोतृ सन्निधौ, देव ब्राह्मण सन्निधौ, सुब्राह्मण सन्निधौ, याग मडल भूमि शुद्धयर्थं, द्रव्य शुद्धयर्थ, पात्र शुद्धयर्थं, क्रिया शुद्धयर्थ. मन्त्र शुद्धयर्थ, महा शाति कर्म सिद्ध साधन यत्न मंत्र तंत्र विद्या प्रभाव संसिद्धि निमित्त विधियै मानस्य अमुक

क्रिया महोत्सव समये, पुण्याह् वाचन करिष्ये। सर्वे. सभाजनैरनु ज्ञायता विद्वद्विशिष्ट जनैरनु ज्ञायता, महाजनैरनु ज्ञायता तद्यथा।

प्रस्थमात्र तदुलोपरि ह्री कार सवेष्टित स्वस्तिक यन्त्रे मन्त्र परिपूजित मणिमय मगल कलश सस्थाप्य, यजमानाचार्यो ऽपसव्य हस्तेन् घृत्वा पुण्याहमन्त्रमुच्चारन् सिचेत्। ॐ स्वस्तिक कलशं स्थापन करोमि।

पास मे छपे हुये यन्त्रानुसार करीब एक सेर चावल लेकर जमीन मे यन्त्र बनावे, फिर उसके ऊपर जल से भरा हुआ कलश रखकर उसमे नागर बेल का पत्ता रखे और पुण्यहवाचन पढते जावे और कलश का पानी उस पत्ते से दाहिने हाथ से छिडकते जावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त गंगा सिध्वादि नदी नद तीर्थ जलं भवतु स्वाहा। जलपवित्री करणं।

ॐ ह्री पुण्याह कलशार्चन करोमि स्वाहा।

साथिया के ऊपर के कलश मे अर्घ चढावे।

ॐ पुण्याह २ प्रियता २ भगवतोऽर्हंत सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः त्रिलोकनाथा त्रिलोक प्रद्योतनकरा वृपभ अजित-सभव अभिनदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ पुष्पदत, शीतल श्रेयो वासुपूज्य विमल अनत धर्म शाति कुथु अर मल्लि मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व श्री वर्द्धमाना शाता. शातिकरा सकलकर्मरिपु विजय कातार दुर्गविपयेपु रक्षतु नो जिनेंद्रा. सर्वविदश्च॥ श्री ह्री घृति कीर्ति काति बुद्धि लक्ष्मी मे धाविन्य· सेवा कृपि वाणिज्य वाद्य लक्ष्य मन्त्र साधन चूर्णिप्रयोग स्थान गमन सिद्धि साधन.या प्रतिहत शक्तयो भवतु नो विद्या-देवता। नित्यमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु वश्च भगवतो न प्रियता २ आदित्य सोमागार बुद्ध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु ग्रहाश्च न प्रियता २। तिथि करण मुहूर्त लग्न देवता. इहचान्य ग्राम नग रादिपु अपि वास्तु देवताश्चता सर्वागुरू भक्ता अक्षिण कोप कोष्टागारा भवेयुर्दान तपोवीर्य नित्यमेवास्तु नः प्रियता २ मातृपितृ भ्रातृ सुत सुहृत्स्व जन सबधी बधुवर्ग सहिताना धनधान्यैश्वर्य द्युति बलयशो वृद्धिरस्तु। प्रमोदोस्तु शाति र्भवतु पुष्टि र्भवतु सिद्धि र्भवतु काम मागल्योत्सवा. सतु शाम्यतु घोराणि शाम्यतु पापानि पुण्य वर्द्धताम् धर्मोवर्द्धताम् श्रायुर्पीवर्द्धताम् कुलगोत्र चाभिवर्द्धताम् स्वस्ति भद्र चास्तु न. हता स्तेपरिपथिनः शत्रव.

शमयतु । निष्प्रति घमस्तु । शिव मतुलमस्तु । सिद्धा सिद्धि प्रयच्छतु न । ॐ कर्मणः पुण्याहं भवतो ब्रुवतु इति प्रार्थयेत् । प्रार्थितविप्राः पुण्याह कर्मणोऽस्तु " इतिब्र ूयु । ॐ कर्मणेस्वस्ति भवतो ब्र ुवतु । स्वस्ति कर्मणेऽस्तु कर्मऋद्धि भवतो ब्रुव तु " कर्मऋद्धिस्तु ।

विशेष :—अगर होम नही करना है तो जितना जप किया, उतने जप का दशांस, जप चौगुना जप, ज्यादा कर लेना चाहिये । जैसे—एक हजार जप का दशास १०० जप हुआ, उस १०० जप को चौगुना जपने से, याने ४०० बार जप कर लेने पर होम की पूर्ति हो जाती है । फिर अग्नि होम करने की आवश्यकता नही पड़ती है ।

मन्त्र जप के बाद दशांस होम करने के लायक होम कुण्डों का नक्शा

होम कुण्ड नीचे दिये गये नक्शे के मुताबिक बनावे, और होम कुण्ड के लिये ईटें कच्ची होनी चाहिये । वध, विद्वेषण, उच्चाटन कर्म मे आठ अंगुल लम्बी समिधा ले (लकडी) । पुष्टि कर्म में नौ अ गुल, शान्ति, आकर्षण, वशीकरण में, स्तम्भन, कर्म मे बारह अ गुल की लकडियाँ हों । लकडियाँ दूध वाले वृक्ष की हो ।

तीर्थङ्कर कुण्ड (१)
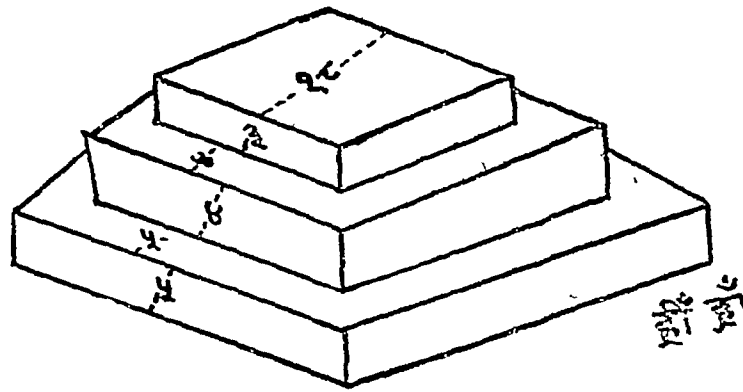
गार्हपत्याग्नि

गणधर कुण्ड (२)
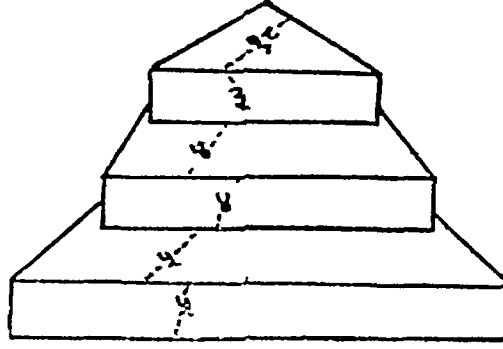
आह्वनीय

केवली कुण्ड (३)
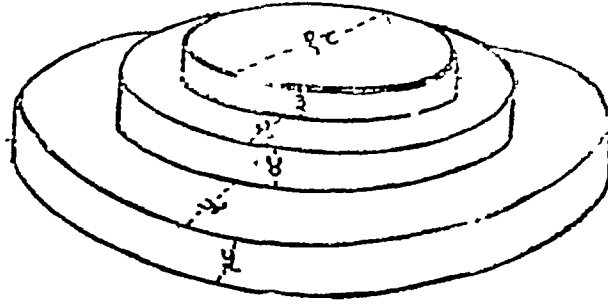
दक्षिणाग्नि

इस खण्ड में

(५—१ से ५—५६)

तन्त्राधिकार

पंचम तंत्राधिकार

अश्विनी नक्षत्र मे अर्द्ध रात्रि को नग्न होकर अपामार्ग की जड़ को लावे, फिर कण्ठ में धारण करे तो राज सभा वश होय। १।

भरणी नक्षत्र मे संखा होली की जड लावे, ताबीज में रक्खे (पर) स्त्री वश में होय। २।

कृत्तिका नक्षत्र में रोहिस की जड लावे, पास रक्खे तो अग्नि नही लगे। ३।

रोहिणी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि मे नग्न होय, नेगद बावची की जड लावे और पास रक्खे तो वीर्य चाले नही। ४।

मृगशिर नक्षत्र मे महुवा की जड लावे तो रात्रि मे चोरी नही होय। ५।

आद्रा नक्षत्र में अर्क की जड लाय, ताबीज में डालकर पास रक्खे तो, झूंठी बात सच होय। ६।

पुनर्वसु नक्षत्र में मेहदी की जड को लेकर पास रक्खे तो अपने शरीर मे अच्छी सुगन्ध आती है। ७।

पुष्प नक्षत्र मे नागरवेल की जड लेकर पास रक्खे तो, दुष्ट वाक्य से कभी भय नहीं होता है। ८।

आश्लेषा नक्षत्र मे धतूरा की जड लेकर देहली मे रक्खे तो, सर्प घर में आने का भय नही रहता है। ९।

मेघा नक्षत्र मे पीपल की जड लेकर पास रक्खे तो रात्रि में दुस्वप्न नही आते हैं। १०।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मे आम की जड लाकर दूध मे घिस कर पिलाने से बांझ स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है। ११।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे नीम की जड को लाकर पास रक्खे तो लडकी से लड़का होता है। १२।

हस्त नक्षत्र में चम्पा की जड़ लाकर गले मे बाधने से भूत प्रेत नही लगता है। १३।

चित्रा नक्षत्र मे गुलाव की जड लेकर पास रक्खे तो शरीर मे नष्ट नही होता है । १४ ।

स्वाति नक्षत्र मे मोगरा की जड लेकर भैस के दूध मे घिस कर पीने से काले से गोरा होता है । १५ ।

विशाखा नक्षत्र मे वबूल की जड को लाकर पास मे रक्खे तो नित्य ही चोरी करने पर प्रकाशित नही होता है ।

अनुराधा नक्षत्र मे चमेली की जड को लाकर सिर पर रखखे तो शत्रु मित्र हो जावे । १७ ।

जेष्ठा नक्षत्र मे जामुन की जड को लाकर पास रक्खे तो राजा के द्वारा सन्मान को प्राप्त हो । १८ ।

मूल नक्षत्र मे गूलर को जड लेकर पास रक्खे तो दूसरे का द्रव्य मिले । १९ ।

पूर्वापाढा नक्षत्र मे शहतूत की जड लेकर स्त्री को पिलावे तो योनि सकोच होती है । २० ।

उत्तरापाढा नक्षत्र मे कलगरामा की जड लेकर हाथ मे वाँधे तो पहलवान से युद्ध मे जीते । २१ ।

श्रवण नक्षत्र मे ग्रावली की जड, नागरवेल के रस मे पीवे तो स्त्री नव यौवनवान हो । २२ ।

धनिष्ठा नक्षत्र मे वबूल की पत्ती अ जन आँख मे करे तो सोना, चादी की परीक्षा मे सफल होय, याने परख ज्यादा करे । २३ ।

शतभिषा नक्षत्र मे केले की जड लेकर शहद के साथ पीवे तो चाप न होय । २४ ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र मे तुलसी की जड लेकर मस्तक पर रक्खे तो मुरदा कभी नही जलता है । २५ ।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे पीपल की जड लेकर पास रक्खे तो चतुर मनुष्य युद्ध मे जीत कर आता है । २६ ।

रेवती नक्षत्र मे वड की जड लेकर माथे पर रक्खे तो दृष्टि चौगुनी होय । याने अगस दृष्टि होती है । २७ ।

हिगुल १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला एकत्र कर रुद्रवती के रस मे घोट कर चादी के पत्रे पर लेप कर पुट दीजे तो सुवर्ण होता है । २८ ।

स्वर्ण माक्षिक ८ माशा, पारा ४ माशा, ताबा ४ माशा, सुहागा ४ माशा, इन सब चीजो को एक साथ गलाने से शुद्ध चादी होती है। २९।

शुद्ध गन्धक को प्याज के रस मे १०८ बार तपा कर भुजावे तो, फिर उस गन्धक को चादी के पत्रे पर गलावे तो सोना होता है। ३०।

मेनशिल, सिंधब, गोरोचन, भृ गराज के रस मे इन चीजो को घिस कर वाम हाथ पर, जिसको वश करना चाहे, उसका नाम लिखे, फिर अग्नि में तपावे तो वशी होता है। ३१।

हस्त नक्षत्र रविवार के दिन अ धाहुली को लेकर राजा के माथे पर डाले तो राजा वश होता है और दुष्ट व्यक्ति भी स्नेह करने लगता है। ३२।

अधोमुखा च जला च स्वेता च गिरि कर्णिका गोरोचन समीयुक्त, तिलकं विश्व मोहन। ३३।

चिता भस्म विष युक्त, धतुर चूर्ण मिश्रित, यस्यागे विक्षिप्ते सद्योयातीय मालयम। ३४।

मनुष्य की हड्डि का चूर्ण, जिसको पान मे रखकर खिला देवे तो, मनुष्य मर जाता है। ३५।

भरणी नक्षत्र मगलवार को चिता की लकड़ी लेकर आवे, शत्रु के दरवाजे पर गाड़ देवे तो शत्रु शीघ्र मर जाता है। ३६।

काले साप की वसा, काचली की बत्ती बनाकर धतूरे के तेल मे भिगोकर, दीपक जलावे फिर मनुष्य की खोपडी पर काजल उपाड कर और चिता की भस्म, पाच प्रकार का निमक इन सब चीजो को सम भाग मिला कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जावे। ३७।

बीछू का मांस और कटक का चूर्ण कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जायेगा। अमावस के दिन चिता की भस्म से यन्त्र लिखकर चिता मे ही डाल देवे तो शत्रु मर जाये। ३८।

उल्लु की विष्टा और विष को मिला कर जिसके अंग पर डाल देवे वह शीघ्र मर जाता है।३९।

गधे का विष्टा और विष दोनो को जिसके ऊपर डाल देवे वह, शीघ्र मर जावे।४०।

शत्रु की विप्टा मनुष्य की खोपडी मे भर कर एकान्त वन मे गाड देने से ज्यो ज्यो गडी विष्टा सुखेगी त्यो २ शत्रु मरेगा ॥४१॥

ककलास की वसा का तेल १ वीदु भी जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह मर जायगा ।४२।

तुलसी के वीज का चूर्ण सहदेवी की जड के रस मे रविवार के दिन घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ।४३।

हरिताल, और असगध को केला के रस मे गौरोचन सहित घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ।४४।

शृ गी, चन्दन, वच, कूट, ये चारो चीज की धूप वनावे फिर अग्नि मे उस धूप को डाल कर अपने शरीर मे धुआ लगावे और अपने मुख मे भी धुआ लगाने से और वस्त्र मे धुआ लगाने से राजा प्रजा पशु पक्षी जो देखे सर्व मोहित हो ।४५।

पान की जड का तिलक करने से मोह नही होता है ।४६।

मैनसिल, कपूर, कोकेला के रस मे घिस कर स्नान करे तो मोह नही होय ।४७।

सेंदूर, वच, असगध, पान के रस में घिस कर स्नान करे और तिलक करे तो मोह न होय ।४८।

भगराया, चिचिडा, छुइमुइ, सहदेई, इन चारो चीजो का तिलक लगाने से मोह न होता है ।४९।

डमरू के फूल की वाती नैनु के साथ रात्रि को जलाय काजल उपाड कर अंजन करे तो मोह न होता है ।५०।

सफेद घु घची का रस वह्मदडी की साथ घिस कर शरीर मे लेप करने से मोह नही होता है ।५१।

सफेद दूव के रस मे हरिताल को घिस कर तिलक लगाने से मोह नही होता है ।५२।

सफेद अकुआ की जड और सफेद चन्दन को घिस कर तिलक लगाने से मोह न होता है ।५३।

वेलपत्र छाया मे सुखा कर, कपिला गाय के दूध मे घिस कर तिलक लगाने से मोह नही होता है ।५४।

भाग के पते, सफेद सरसो, इन दोनो को कुट कर शरीर मे लेप करने से मोह नही होता है ।५५।

तुलसी के पत्ते को छाया मे सुखा कर चूर्ण करे, असगध, और भाग का बीज सम भाग मिला कर कपिलाधाय के दूध मे घिस कर गोली बनावे, उस गोली का तिलक लगाने से मोह नही होता है और उस गोलीको शस्त्र मे लेपन करने से शत्रु की सेना उस शस्त्र को देख कर ही भाग जाती है ।५६।

विष्णु काता का बीज मे से तेल निकाले यन्त्र से, फिर उस तेल मे विष भी मिलावे तेल, और अफीम, गधे का पेशाब, धतुरे का बीज का चूर्ण, हरताल, मेनसील, गन्धक, इन सब को लेकर घोटकर पाच छटाक का गोला बनाकर रख लेवे जब युद्ध का काम पड़े तब अपने शस्त्र पर उस गोले का लेप कर युद्ध मे जावे तो शत्रु की सेन्य उस शस्त्र को देखते ही भय-भीत होकर भाग जावे, और अपने पर दूसरो का शस्त्र चल नही सकता है ।५७।

श्मशान की राख को १ मिट्टी के बर्तन में भर कर शत्रु का नाम लेकर नील के रग मे रगे हुये डोरे से उस बर्तन को बाध कर गाड देवे तो शत्रु की सेन्य का स्तभन हो जाता है ।५८।

ऊट की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण कील जहाँ गाडे वहाँ गाय भैंस नही जाती है, उनका स्तंभन हो जाता है ।५९।

रजस्वला स्त्री का कपडा और गौरोचन, दोनो चोज को लेकर शत्रु का नाम लेकर गडे मे डालने से शत्रु का स्तभन हो जाता है ।६०।

दो इंट श्मशान की आग सहित लेकर जगल मे गाड देवे तो मेघ का स्तभन होता है ।

मूलं गृन्हाति मधुक, पिष्टानिशि समाचरेत् । निद्रास्तभन मेतद्धि, मूल देवेन भाषित ।

भरवा क्षीर काष्टाना कील पचागुलिक्षिपत्नौकास्त भन मेतन्मूलदेव न भाषित ।

रविवार के दिन सती होने वाली स्त्री की चिता मे इंट धर आवे फिर तीसरे रवि-वार जाकर उस इंट को ले जिसके घर मे डाल दे अथवा खोद दे तो उसके घर में पत्थर बरसने लगते है ।

उल्लू का पित्तो और कालि जो, मशान की भस्म, गाय की लूणी, इन सब चीजों को मिला कर गोली बनावे उस गोली को सोने या चादी के ताबीज मे भर कर पास रखे तो अदृश्य होता है । स्वय सबको देखता है और स्वयं को कोई नही देख पाता ।

एक वर्ण का काला कुत्ता को पकड़ कर उपवास करावे, स्वय भी उपवास करे, दूसरे दिन दूध, और काला तिल, उस कुत्ते को खिलावे, जब कुत्ता टट्टी करेगा, उस टट्ठी मे

से काले तिल को निकाल कर तिल में से तेल निकाल कर यन्त्र मे नही गया, उपास की वत्ती वना कर उस वत्ती को डाल कर दीपक जलावे और काजल पाडकर आख मे अ जन करे तो मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

धौली (सफेद) चिणोठी, (गु जा) सफेद रीगणी, (सफेद भट कटैआ) की जड लेकर चूर्ण करे फिर मनुष्य की खोपडी पर काजल उपाड कर नैत्र मे अ जन करने से अदृश्य होता है।

नागार्जुनप्रणित अंतर्ध्यान विधि:

सफेद सुरमा १, सेवार कटक १, सोना मुखी १, जेठी मध १, ये चारो वस्तु वरावर लेकर कन्या के प्रथम मासिक धर्म का रक्त मे गोली वनावे, उस गोली को सोना, चादी के तावीज मे डाल कर उस तावीज को मुह मे रखे तो मनुष्य अदृष्य होता है।

शुक्ल एक रग की विल्ली को तीन दिन भूखी रख कर चोथे दिन कपिला गाय के घी को खिलावे, तव विल्ली तत्काल उल्टी करेगी उस घी को लेकर, कपास के फल मे से रुइ निकाल कर उसकी वती वनावे दीपक जलावे मनष्य की खोपडी पर काजल उपाडकर नेत्र मे अजन करे तो अदृश्य होता है।

शिवालयेतु कन्यार्क, शिलायाशिलया सह, ललाटे तिलक दत्वा, दृश्यो भवति तत्क्षण।

लोद्र विभितिक, आमलक, वा रुइ के फूल, इन सवको चतुर्था स जल घोटे और आख मे अ जन करे तो आख मे फूला का नाश होता है। रात्रिघता का नाश होता है।

पिडी, तगर की जड, गोरोचन के साथ ताम्वे के वर्तन मे रगड कर आख मे आजने से अक्षिपुष्प नाशयति) याने आख का फुला नष्ट हो जाता है।

लाल चन्दन, मिरच, सम भाग लेकर पानी मे पीस कर लेप करने से विस्फोटक का नाश होता है।

गडुची, हरिद्रा, दूर्वा, वूर्य से, समभाग, गुटिका क्रियते से सर्व व्रणोपशम करोति प्रलेपन।

रवि के दिन सफेद कनेर की जड को लेकर कुसुम्भ डोरे से वाध कर वाम हाथ मे वांधने से (मर्कटिका) का नाश होता है।

अश्विनी नक्षत्र मे घोडे की पाव की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण शत्रु के घर मे फेकने से शत्रु के कुल का उच्चाटन हो जाता है।

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रे स्वान (कुत्ते) की पाव की हड्डी अंगुल पाच जिसके घर में डाल दिया जाय वह चक्षुहीन हो जाता है।

वालउनागवोलिन पुन. पत्राणि ग्राह्याणि जलेन घृष्टवापीयते भ्रूणो न भवति।

हीगु, सिधव, का काढा बना कर पीने से (गर्भो न भवति)।

श्वेतगिरि कर्णिका की जड को योनी मे डालने से गर्भ का नाश होता है।

मधु, कर्पूर, पदै पूगीफल पूरयित्वा सुरत समयेभक्षयेत (पुत्रो भवति)

पार्श्वपिप्पल फलानि एक वर्णे गो दुग्धेन प्रस्तावे स्त्रिय पानेदात व्यानि (पुत्रोत्पत्ति कृत)

काक जगा की जड को एक वर्ण की गाय के दूध मे पीवे, निश्चित ही गर्भ रहे।

भृगराज रस, पली १ (एक छटाक) काच कर्पूर गठियाणउ १ (कपूर) गाठियउ १ ऋतु स्नाने दिन त्रयस्त्रीपाय्यतेत्तद्दिनत्रये श्वेत वर्ण गो दुग्धक्षीरेयी भोजनं कार्यं अन्यकेकिमपिन भोक्तव्य पुत्रोत्पत्तिर्भवति दृष्टप्रत्यय।

मातुलिग (बिजोरा) के वीज की दूध के साथ २ खीर वनाकर घी के साथ पीवे तो स्त्री को निश्चित ही गर्भ रहे किन्तु ऋतु समये तीन दिन खाना चाहिये।

गेरू, (ह्री-डमीस) विद्र ग, पीपली, समभाग लेकर पीसे फिर सभोग के समय पान करने से स्त्री गर्भवान होती है।

रविवारे अष्टमी निशीथ समसे वाटिकाया जाती पत्र सरडक मेक गृहीत्वा एक वर्ण गोक्षीरेण सहपीयतेरितु समये गर्भ धारयति।

वासक, त्रिफला, शर्करा, मुलेठी, को समभाग लेकर पीसकर रितु समय मे यदि स्त्री पीये तो गर्भवान हो।

श्वेत रीगणी मूल पुष्य नक्षत्र मे लेकर एक वर्ण की गाय के दुध मे पीवे तो वन्ध्या भी पुत्रवान होती है।

मयुरशिखा की जड को दिन ३ दूध के साथ पीने से स्त्री पुत्रवान होती है। लक्षमरणा भाग ३ उभयलिगी भाग ४ विरहाली भाग ६ सब एकत्र करके गाय के दुध मे पीसकर ऋतु समय मे स्त्री को पीलाने से पुत्र होता है।

श्वेत पुनर्नवा मूल को दूध के साथ पीस कर पिलाने से स्त्री को गर्भ रहता है।

(पद्विद्र प्राणिविशेप) तथा हल्दी दोनो का चूर्ण कर वकरे के मूत्र मे भावना देकर मनुष्य को खिलाने से नपुंसक हो जाता है।

तिल चूर्ण गोक्षुर चूर्णपतौ समभाग करके वकरे के मूत्र मे काथ करे जव काथ ठडा हो जाय तब माक्षिक के साथ खिलाने से नपुसकता का नाश हो जाता है।

उदस्ट्र हवड मध्ये मानुपास्थि प्रक्षिप्य मिथुनस्य शिरोदेशे स्थापयेत् रेत स्तभो-भवति।

यस्यलिंगे पापाण निरोधोभवति (जिसके मूत्राशय मे पथरी हो) तस्य (कालानमक) कृष्णलवणेन सहसुरापान दीयत्तं साम्यत्र जत्ति।

अपकतिल नाल भस्म गृहीत्वा दुग्धेन माक्षिकेन सहपान दी'ते स एव पाखापान लिंग पीडा नाशयति।

सखाहुली की जड और गाय का शृ ग (सीग) को वाधने से स्तन रोग का नाश होता है। काक जगा की जड और उपलउ (पाषाण) दोनो को जल के साथ पीस कर नस्य दे अववा पिलावे तो सर्प का जहर उतर जाता है।

कविट्ठ की जड, नमक, और तेल, इनको पीलाने से विच्छु का जहर उतर जाता है। तिल की जड, अनार की छाल, समभाग लेकर ठडे जल से पीस कर गुटीका वनावे पीलावे वीछु के जहर का नाश करता है।

वध्याकर्कोटिका सर्प दृष्टस्य जलेन धर्पयित्वामध्येपान तस्य च देय भद्रो भवति।

गु गची की जड को (पाय तरे) वाधे तो व्यवहार मे अपराजित होता है याने उसको कोइ जीत नही सकता है।

कु दमूल पुष्पेणोत्पाद्य प्रसार के धर्त्तव्य प्रभूतत्रिया भवति।

कृष्णा निर्गु ंडी का मूल मागसिर मधि पुष्यार्के उत्पाद्य तस्मिन्नवदिने मूले श्वेत सर्प पाश्व ग्र थौ वध्यतेहदेव्यवहारो घनो भवति दृष्ट प्रत्यय।

काक जगाहाथ मे वावने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है।

पिटारी, (काकश्री) की जड को सध्याकाल मे लेकर कमर मे वाधने से हर्प रोग (मस्सा) का नाश होता है लेकिन जड को चौदश के दिन दीप धूप विधान से लेवे।

उपरोक्त औपधि की लकडी अठारह अ गुल प्रमाण लेकर (दतपवनेन) तो सर्वप्रकार के ज्वर का नाश करता है।

विशाखा नक्षत्र मे पिंडी तगर की जड को चांवल के पानी के साथ पीवे से स्त्रियों का रक्त स्त्राव, बन्ध हो जाता है।

इमली के बीज २ बहेडा के बीज २ हरडे का बीज २ इन बीजो की गुटिका बनाकर पानी के साथ आख में अंजन करे तो (तिमिरंगच्छति) ज्योति ज्यादा बढती है।

काक, पारावत, मयुर, कपोतना, विष्टागृह्यते, तत्पश्चात, खर, (गधा) रूधिर सहिता निगडानि लपयेत् तत्क्षणत्रुटयति।

सियाल के आख का चूर्ण अपने आख (नेत्र) मे अंजन करने से रात्रि मे बडे बडे भूत नजर आते है उन भूतो से नही डर कर जो उनसे इच्छा करे वही चीज वो भूत लोग लाकर देते है।

मनुष्य करोडि मघ्ये अर्कतूल सत्कदीवरि महिषी सत्क नव नीत दीपे प्रज्वाल्य मीष-पाततेह् जेक्रियतेऽदृश्यो भवति।

विल्ली की जरा को (जो बच्चा पेदा होने के समय निकलती है) त्रिलोह के ताबिज में डाल कर पास रखे तो अदृश्य होता है।

मुखे निलोत्पलंनाल, केशरश्वेत पद्मिनिपुष्प मधु शर्कराधृतेन नाभिलेपोदीयतेवीर्य-स्तम्भ छीत प्रोइ गृहीत्वा छो हरि दुग्धेन भावयित्वा पादौलेपयेत् वीर्य स्तम्भः।

श्वेतसर प खा की जड को नाभि पर लेप करने से वीर्य का स्तंभ होता है।

मयगु मयण हलु मणसिल एकीकृत्य लिगं लेपयेत वीर्यं स्तभो भवति।

श्वेतसरप खा की जड को कमर मे बाधने से और दक्षिण जंघाप्रदेश मे स्थापित करने से वीर्य का स्तंभन होता है।

श्वेतपुनर्नवा की जड को दूध के साथ घिस कर पिलाने से स्त्रियो को गर्भ रहताहै। सावलि (सालमली) (सेमर) काष्टपादुका क्रियते वज्रापरिवृते मुत्रवाग्गिमध्ये प्रक्षिप्य लेपोदिय ते अलग पादुकाभि चंक्रम्यते।

सफेद कनेर की जड को रविवार के दिन ल कर कुसुंभ र ग के डोरे में वामहस्त में बांधने से (मर्कटिका) रोग नष्ट होता है

कोलिका गृहद्रय मुत्याद्य सूक्ष्म व स्त्रेण वेष्टियित्वा तैलेन स्निग्धं कृत्वा कोरक शरावे (कोरामिट्टी का घडापर) कज्जल पात्यते तेनाक्षि अजयेत् एकातर, द्वयतर चातुर्थिक ज्वराना-शयति। गोघृतेन दीपक दातव्य तस्य दीपकस्य शिखाया सूचीकापोइ (सुइपीरोना) अरीवादह्

नीय, गोसत्क माथुअरीवा घर्षणीय जीरक मगध, पिपल, नमक सेधा, मध्ये घपणीय ताम्र भाजने घर्षण कर्तव्य अक्षिरोगो नश्यति ।

सरसो, हिंगुल, नीम के पत्ते, वच, साप की काचली, को धूप वनाकर खेने से शाकिनी का उच्चाटन होता है और सर्व प्रकार की ऊपर की वाधाएं दूर होती है ।

वणिमूल, हिंगुल, मु ठि, इन सब चीजो को वरावर मात्रा मे लेकर पानी के साथ पीसकर मु घाने मे शाकिन्यो नश्यति ।

वहेडावीज सैंधव, शखनाभि सममात्रा चूर्णेन अक्षिभरण चक्षुफुल्लोपशम ।

वंदा कल्फ

नंदिषेणाचार्य कृत

वदाकल्प प्रवक्ष्यामि नन्दिपेण मुनि भाषित, यस्यविज्ञान मात्रेण, सर्वसिद्धि प्रजायते । अश्विनी नक्षत्रे पलास (डाक) वदा सगृह्यहस्ते वध्वा सर्पभयनिवारयति । भरणी नक्षत्रे आयिली (इमली) वा आवल, वदा सगृह्य हस्ने वध्वा सग्रामेराजकुले अपराजितो भवति सर्वजन प्रियोभवति और इसी नक्षत्र को, कुश, वदा सगृह्यद्रव्य मध्येधान्य राशौवाध्रियते अक्षयो भवति ।

कृतिकानक्षत्रे वध्या कर्कोटी मूल उत्तराभिमुखोभूय उत्पाद्यते हस्तेवध्यते सर्व प्रकारस्य ज्वरयाति । और इसि नक्षत्रको तु वरि (उ वरि) वदा सगृह्य दुग्धेन सहपिवेत् महापुष्टिकारक भवति ।

रोहनी नक्षत्रे विल्ववदागृह्यहस्ते वध्यते सर्वदोप्रग्रहान् निवारयति । मृगशिरनक्षत्रे शन्वपुष्फिमूल दक्षिणाभिमुखीभूत्वा उत्पाट्य कर्णे दत्वाफू किते वृश्चिकविप नाशयति ।

आद्रानक्षत्रे जातीमूल (　　　　) वायव्याभि मुखीभूय उत्पाट्य हस्ते वध्वा सर्वजन प्रिय भवति । इसी नक्षत्र मे जाति मुन वाय व्याभि मुख भूप उत्पादय ल्हिसोडा वदा सगृह्य द्रव्यमध्ये धान्यराशोवा स्थापयेत् अक्षयो भवति ।

पुनर्वसु नक्षत्रे मदार (अकौआ) वदा सगृह्य हस्तेवध्वा सर्व ज्वर नाशयति । इसी नक्षत्र मे कटिका मूलनैऋत्याभिमुखी भूय उत्पाट्यते वीदकृत्वा हस्ते वध्वा सर्व जनप्रियो भवति । इसी नक्षत्र मे वट वदा वीज कृतायाया स्त्रीऽपुत्रिणी भवति स तस्या पुत्रो भवति । पुष्य

नक्षत्रे श्वेतार्कमूल सगृह्य राजा सन्मुखराई सहित सहस्त्र जाप कृत्वाऽग्नि मध्येहोम कारयेत् सप्तरात्रेण उच्चाटयति ।

इसी नक्षत्र मे कुशवदा संगृह्य कटिवध्वा षोडश कन्या रमते ।

अश्लेषा नक्षत्रे पुनर्नवा मूल ईशानदिशाभिमुखी भूय उत्पाट्यते बीज क्रियते सर्व कर्माणि करोतिविषं नाशयति ।

मघानक्षत्रे मदारक मूल पूर्वाभिमुखी भूयोत्पाद्यते सर्वकर्माणि करोति । यदाविनाय ऋ्‌करिमस्तके प्रक्षिप्यते पूज्यते, तदा मनश्चिततकार्य भवति ।

मघानक्षत्रे मघुवदा सगृह्य क्षेत्र मध्ये तथा चतु कौणे स्थापयेत् मूषकायाति ।

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रे दाडिम (अनार) वदाहस्ते वध्वाज्वर नाशयति ।

उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रै उ वरि मूल (तु वरि) उत्तराभिमुखो भूयत्पाट्यते हस्तेवध्वा सर्वकार्याणि करोति ।

चित्रानक्षत्रे वदरी (बैर) वदाहस्तेवद्धा सग्रामे राजकुले अपराजितो भवति ।

स्वातिन नक्षत्रे धातकी वदा हस्ते वध्वा यास्त्री रमते सा वश्या भवति ।

विशाखा नक्षत्रे वोरि वदा सग्रह्यवणिजे, दूते, (जुएमे) अपराजितो भवति ।

अनुराधा नक्षत्रे आविली (इमली) वदा संगृह्य यस्पृशेत् सवश्यो भवति ।

ज्येष्टानक्षत्रे मधूक, निंव, कपिथ, वदा संगृह्य यः स्पर्शते सवश्यो भवति ।

मूलन क्षत्रे खदीर वंदाय हस्य गृहे ध्रियते सवश्यो भवति ।

पूर्वाषाढा नक्षत्रे अमिलोडवदा अजाक्षिरेण सह य पिवतित्तस्य वातरोगनाश यति ।

उत्तराषाढा नक्षत्रे मदारक वंदाहस्ते वध्यते सर्व जनप्रियो भवति ।

श्रवणनक्षत्रे कमोलिवदाहस्ते वध्वा सर्वेषां विष नाशयत्ति ।

धनिष्ठा नक्षत्रे बवूल वदा कटिं वध्वा हरिषा (बवासिर) नाशयति ।

शतभिखा नक्षत्रे ककोलिका वदा अजाक्षीरेण सहपीवेत् कुष्टयाति । इसी नक्षच में शखपुष्पी मूल उत्तराभिमुखी भूयोत्पाट्यते पीष्यते स्त्री रितुकाले दिन ३ क्षीरेण सहपीवति सा स्त्री पुरूष सग मे गर्भवति भवति ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे चपकवदा (चपा) सगृह्य तिलक कृत्वा य इच्छति तंभवति ।
उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे पलासवदा (ढाक) सगृह्य क्षीरेण सहपीवति वध्या पुत्रं प्रशवति ।

रेवति नक्षत्रे अश्वत्थ वदकं सगृह्य हस्ते वध्वा लोकेश्वर पुत्रं जनयति ।

॥ इति ॥

अथ कलकोशं प्रवक्ष्यामि
धन्वंतरी कृत

श्वेत् अपराजिता, मूलं नाश्यदेयं सर्वग्रहं नाशयति ।

वंध्या ककोडी मूलं तंदुलोद केनसहा पीषयेत् सर्वविषं नाशयति ।

श्वेतगिरी कर्णिकामूलं नाश्यदेयं शिरोरोगं नाशयति ।

मयुरशिखा मूलं कर्णेविध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।

अपामार्ग मूलं भृगाराज संयुक्तं हस्तेवध्वा सर्व जनप्रियो भवति ।

शरपंखा मूलं हस्ते वध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।

कासमद्दकामूलं तंदुलोद के नसह पीवेत् नीद्रा नाशयति ।

अपामार्ग मूलं तंदुलोदकेन सहपिवेत काम्बलं नाशयति ।

तुलसीमूलं कर्णेवध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।

मूंडिमूलं कर्णेवध्वा शिरलेपोदीयते शिरवायो नाशयति ।

वालामूलं हस्ते वध्वारात्रि ज्वरं नाशयति ।

सिवलमूलं कर्णेवध्वा एकोत्तशत्त ज्वरं नाशयति ।

वहेडामूलं कर्णेवध्वा सर्वं ज्वरं नाशयति।

श्वेतार्कमूलं कर्णेवध्वा सर्वविषं नाशयति ।

संखपुष्पिका मूलं पुष्य नक्षत्रे उत्पाट्य हस्तेवध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।

श्वेतगुंजा मूलं मुखे प्रक्षेप्यः कालसर्पोवारयति ।

गुडौचीमूलं हस्तेवध्वा सर्व सहस्त्रांक्षी भवति ।

उंट कटालां मूलं मूखेप्रक्षेप्यं सर्वलोकानां स्तंभयति ।

च मूलं गुर्विणी संपेठ उत्परे धारयति सुखं शीघ्रं प्रसवोभवति ।

दूधिका मुलं कर्णेवध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।

गोखुरीका मूलंकठे वध्वा उष्ण वातं नाशयति ।

सुहंजण मूलं कर्णेवध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।

कटशेलुवा मूलं वध्वा ज्वरं नाशयति ।

दम्पणा मूलं कर्णे वध्वा अग्नि उदीपयति ।

श्वेरऐरंड मूलं कटिवध्वा श्रुकं नाशयति ।

जोडासीयनी चूर्ण कृत्वा मुखेपीणंदीयतै मरी नाशयति ।

सतावरी मूलं हस्ते वध्वा महावलं भवति ।

उंट कटाला मूलं तंदुलोदकेन लेपोददाति गंडमाला नख प्रमाणे नाशयति ।

काक जंगामूलं करे वध्वा क्षयं नाशयति ।

कंठ सेलुआ मूलं करे वध्वापीत ज्वरं नाशयति ।

श्वेत कटाइ मूलं पुष्प नक्षत्रे उत्पाटयेत् एक वर्ण गोक्षिरेण सहापिवेत वंध्यायापुत्रो भवति ।

पलास मूलं खारं हरिताल चूर्ण, प्रलेयेत् रोमनाशयति ।

जाती मूलं, तंदुलोदकेन, सहपिवेत्, वातज्वरं नाशयति ।

आत्मश्रुक्रेण स्त्रिया वामपादं लिप्यतेस शीघ्रं वशी भवति ।

॥ ० ॥

अयलजालु कल्प

शनिवार सध्या को जहा छुइमुइ (लजालु) का पेड हो वहा जाकर १ मुट्ठी चावल, सुपारी रक्खे, फीर उस पेड को मोली धागा वाधे, अपनी छाया पेड पर नही पडने दे, सवेरे तुमको अपने घर ले जायेगे, ऐसा कहे। फिर प्रभात ही पिछली रात को जाकर छायारख कर उस पेड को उखाड लावे, उखाडते समय इस मत्र को २१ बार पढ़े ॐ भ्रूभ्रुव मम कार्य प्रत्यक्षौ भवतु स्वाहा। फिर जिसको वश करना हो उसके घर में रखवादे तो वह वश में हो जाता है। लजालु पचाग १ छटांक, घी २ छटाक, गिरकं रणो छटाक ३ स खा होली छटांक ३ सव चीज एकत्र कर गोली वनावे, फिर जिसको वश करना हो उसके खाने पीने की चीजो मे

मिलाकर खिला देवे तो वश होता है। वाद, विवाद, झगडे आदिक मे पास रख कर जावे तो सब लोग उसकी बात मानते हैं। गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करे तो राजा प्रजा सर्व-लोक वश होते हैं।

॥ ० ॥

अथ श्वेतगुंजाकल्प

शुक्ल पक्ष मे श्वेतगु जा को दशमी के दिन पूरी जड सहित ले, पचाँग ले, फिर उसकी जड को पान के साथ जिसको खाने देवे वह वश होय स्त्री वश हो। पानके साथ मे घिस कर गोरोचन से टीका करे, फिर जिसका नाम ले, वह वश मे होता है अथवा गुंजा चंदन मणसिल से तिलक करे जिसका नाम लेवे वह वश मे होता है। गु जा प्रियगु, सरसो इन चीजो को जिसके माथे पर डाले वह वश मे होता है, गु जा की जड को पीसकर लगावे अथवा पीवे तो वातरोग का नाश होता है। गु जा की जड को पानी के पीने से मूत्र कुछ नही होता है। गु जा की जड को घिस कर पानी के साथ पिलाने से वा लगाने से साप, विच्छुवा अन्य विषैले जन्तुओ के द्वारा काटने से विष फैल जाता है उस विष को दूर करती है। गु जा की जड को गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करने से जो २ देखता है वह वश मे होता है। गु जा की जड को स्त्री के कमर मे बाधने से सुख से प्रसव होता है। गु जा की जड को घटके मुखेक्षिपत जयभवति। पास रखकर राजा के पास जावे तो राज्यसभा वश होती है।

॥ ० ॥

सरपूंखा कल्प

पुष्प नक्षत्र मे सूर्य उदय के समय नग्न होकर सरपखा को ले, फिर उसको छाया मे मे सुखावे, जडसहित उखाडे, (मासाश्वेरीत जड लिजड) अथ पचाग लीजई। छाया मे सुकावे। फिर उसका चूर्ण करके दुध के साथ अपने शरीर मे लेप करे तो सर्व शत्रुओ का स्तभ न होता है। सरपखा के तिल का गोरोचन के साथ तिलक करे तो राजप्रजा सर्व वश होते है। दुकान पर बेठे तो व्यापार अधिक चले। सरपखा के पचाँग की गोली को गाय के दुध के साथ २१ दिन तक पिलावे तो गर्भ धारण करे।

शुभ मुहूर्त मे सोने या चादी के ताबिज मे रखकर बाधे तो शस्त्रादिक की धार बद हो। श्वेत सरपखा को लेने के समय २ आदमी हाथ मे नंगी तलवार लेकर खड़े रहे एक

आदमी दीपक लेकर खडा रहे १ आदमी तीर छोडे, जव तक तीर जमीन पर न गिरने आवे तब तक सरपखा को उठाले और घर लेकर आजावे छाया मे सुका देवे ।

॥ ० ॥

पमाड कल्प

अश्वनी नक्षत्र मे उत्तर दिशिमुख करके पवित्र हो सूर्योदय पहले पमाडीये की जड लेना, नग्न होकर, छाया पडने नही देवे, घर लाकर, कपूर, कस्तुरी, केशर, के साथ अपने पास रखना राजा प्रजा सर्व वश होते है सर्व कार्यों की सिद्धी होती है । जिसके हाथ मे बाधे, उसका बेलाज्वर, तीजारो ज्वर आदिक नष्ट होते है और मक्खन के साथ जिसको खाने को देवे वह वश मे होता है ।

॥ ० ॥

तार ताम्र सुवर्ण च इदु अर्क षोडशभी ।
पुष्यार्के घटिता मुद्रा दृढ दारिद्र नाशिनी ।

३ रती सोना, १२ रती, ताबा १६ रती चांदी, सब मिला ले । २६ रती हुआ, इनकी अ गुठी बनवावे रविवार पुष्प नक्षत्र के योग मे, उसी रोज वनवाना, उसी रोज पार्श्व प्रभु का पचा मृत अभिषेक करके उसमे वह अगुठी धोकर, याने गधोदक से धोकर धूप खेवे, फिर अगुठे के पास वाली तर्जनी अगुली मे पहने तो तीर्व दारिद्र का नाश होता है, लक्ष्मी का लाभ होता है । अगुठी जमणे हाथ मे पहनना चाहिये । भोजन करते समय अगुठी को नीकाल देना, फिर पहन लेना । ध्यान रहे उसी रोज अगुठी बने उसी रोज अगुली मे पहन लेना चाहिये । भक्तामर जो के प्रथम काव्य के मंत्र का १०८ वार जप करे ।

॥ ० ॥

विल्ली के ऊपर की दाढ और कुत्ते के नीचे की दाढ को, भक्तामर के काव्य का न बर वाला मत्र से मत्रीक करके शत्रु के घर मे गाड देने से शत्रु का घर टुट जाता है महान उत्पात होता है ।

सफेद सरसो सफेद चदन, उपलेट ( ) वच तथा कपुर, इन सवको दूसरा रविपुष्य के दिन इक्कट्ठा करके गोली वनाकर रक्खे, जव जरूरत पड़े तव उस गोली को घीस-कर तीलक करे तो दृष्टि दोप का नाश होता है । पशुओ के आख मे अजन करने से दृष्टिदोष दूर होता है ।

अथ एक गुंजा कल्प

पुष्प होय आदित्य को, तव लीजिये यह मूल।
सुकर वारी रोहड़ी, ग्रहण होय अनुकूल ॥ १ ॥
कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जो होय।
चौदह स्वाति शत भिषा, पूनों को लेय सोय ॥ २ ॥
अर्द्ध निशा कारज सरे, मन की संज्ञा खोय।
धूप दीप कर लीजिये, धरे धूल लो सोय ॥ ३ ॥
जो काहू नर नारी कूँ विष कोई को होय।
विष उतरे सब तुरंत ही, जड़ी पिलावे धोय ॥ ४ ॥
जो तिलक लगावे भाल पर, सभा मध्य नर जाय।
मान मिले स्तुति करे, सब ही पूजे पाय ॥ ५ ॥
हांजी हांजी सब करे, जो वह कहे सो सांच।
एक जड़ी के जुगत से, सब नचावें नाव ॥ ६ ॥
ताके मूल मढाये के, वांधे कमर के सोय।
नव मासे व नारी के, निश्चय बेटा होय ॥ ७ ॥
ऋतुवती के रक्त सो, अंजन आंजे कोय।
देखत भाजे सैन सब, महा भयानक हो ॥ ८ ॥
काजल हूं घिस आजिये, मोहे सब संसार।
गाली दे दे ताडिये, तोय लगा रहे लार ॥ ९ ॥
मधु सुं अंजन आंजिये, देखे वीर वैठाल।
जो मंगावे वस्तु कू, ले आवे सो हाल ॥ १० ॥
जो घिस कर लेपन करे, दूध संग सब अंग।
भूत प्रेत सब यक्ष गण, लगे फिरत सब संग ॥ ११ ॥

घिसके रुई लगाइये, बती घरे बनाये ।
फिर भिगोवे तेल में, दीपक देय जलाय ।। १२ ।।
करे अच मों सब नमें, घर श्मसान दरसाय ।
सात महल के बीच सूं लावे पलंग उठाये ।। १३ ।।
जो घृत में घिस के करे, लेप मूत्र नर ताय ।
भोग शक्ति बाढ़े अमित, मन अति मोद उठाय ।। १४ ।।
अजा मूत्र में रगड़कर, बेंदा दे जो हाथ ।
करे दूर की बात वो, रहे यक्षणि साथ ।। १५ ।।
गोरोचन के साथ घिस, लिखिये जाको नाम ।
मृत्यु होय बाकी तुरंत, नहीं देर को काम ।। १६ ।।
लिग पत्र के अर्क सु, घिसिये केवल नाम ।
भूत प्रेत व डाकिनी, देखस नसे तमाम ।। १७ ।।
स्याउ संग वा रगड़ के, तलुवे तले लगाये ।
आँख मीच के पलक में, सहस, कोस उड़ जाय ।। १८ ।।
जो घिस आंजे पीस के, बंदी छोड़ कहाय ।
बन्दी पड़े छुटे सभी, बिना किये उपाय ।। १९ ।।
जो गुलाब संग याहिं घिस, नाड़ी लेप कराय ।
घड़ी चाट कूं जी पड़े, मुरदा सहज सुभाय ।। २० ।।
फेर अंकोल के तेल में, घिस के आंजे कोय ।
धन दीखे पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय ।। २१ ।।
जो वाधिन के दुध में, घिस चौपड़े सव अंग ।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, वद कर जीते जग ।। २२ ।।
घिस कर तिल के तेल में, मर्दन करे शरीर ।
दीखे सब संसार कू, महावीर रणधीर ।। २३ ।।

जो अलसी के तेल में, घिसिये हृतश मिलाय ।
कोडि के लेपन करे, कंचन तन हो जाय ।। २४ ।।
जो कोई संसार में, अंधा आवे जे कोय ।
सात दिवस तक आंजिये, दृष्टि चौगुनी होय ।। २५ ।।
श्याम नगद सग रगड़ के, वीसो नख लिपटाय ।
जो नर होय कुमारजी, देखत वश हो जाय ।। २६ ।।
कस्तूरी सू आंजिये, प्रात समय लो लाय ।
मौत जो लिखिये सवन की, काल पुरुष दरशाय ।। २७ ।।
गंगाजल सू आंजिये, दोनों नेत्र जु मांही ।
वरसा वरसे धूल की, या मे संशय नाही ।। २८ ।।
जो आंजे निज रक्त सूं भर के दौऊ कोय ।
देखे तीन लौक कूं, अपनी आँखन सोय ।। २९ ।।
जो आजे निजरक्त, खुले रागनी राग ।
जो घिस पावे दूध सू, होय सिद्ध सू भाय ।। ३० ।।
रक्त गुंजा यह कल्प है, सूक्ष्म कहियो बनाय ।
जो सीधे सो सिद्ध हो, या मे संशय नाय ।। ३१ ।।

नोट – इस रक्त गुंजा कल्प के दोहे का अर्थ इतना सरल है कि कम पढा लिखा हुआ व्यक्ति भी अच्छी तरह जान लेता है । इसलिए यहा पर इसका हिन्दी अनुवाद करना उचित नही है ।

।। इति ।।

मनुष्य की खोपडी पर, रताजन, भीमसेन कपूर, तथा रविपुष्य के रोज जिस स्त्री के पहली बार प्रसूति मे लडका पदा हुआ हो उस स्त्री के दूध मे रवि पुष्य के दिन गोली बनावे, काम पडे तब तीन दिन आख मे अजन करने से, आंख का सर्व रोग नाश को प्राप्त होते हैं ।

शरद पूर्णिमा को ब्राह्मी का रस, वच, और कपिला गाय का घी इन तीनो चीजो को बराबर २ लेकर, कासे की थालो मे इन चीजो को खूब गाढा २ लगावे, फिर उसमे भक्तामर का ६ न० का यन्त्र लिखे, उपर अष्टगन्ध से ॐ ह्री श्री क्ली ब्लू वद् वद् वाग्वादिनी लिखे, फिर चन्द्रमा के प्रकाश मे रात्रि भर उस थाली को एक ऊचे पाटे पर विराजमान कर रक्खे, सवेरे एक २ अक्षर को खावे, तो सरस्वती वश मे होती है। महान् बुद्धिमान होता है।

ब्रह्म दडी को शनिवार के दिन श्याम को अक्षत, सुपारी, को रखकर कुकुम के छीटे लगाकर नोत दे, फिर रविवार की शाम को नग्न होकर धूप खेवे, फिर ब्रह्मदन्डी का पचाग ले, फिर कपडे पहनकर घर ले आवे, उस ब्रह्म दन्डी को कैसा भी घाव हो, व्रण हो, किसी भी प्रकार का गडगुमड हो, उसके उपर लेप करने से शीघ्र ही आराम हो जाता है।

रवि पुष्य के दिन जिस स्त्री को पुत्र पैदा हुआ हो, उस स्त्री की जेर, लेकर छाया मे सुखा देवे। एकान्त में फिर उस जेर को रूई के अन्दर लपेटकर बत्ती बनावे। दीपक में रख कर जलावे, तो घर में मनुष्य ही मनुष्य ही दिखते है। चोर चोरी नही कर सकते है।

रवि पुष्य को (लजालु) छुइमुइ का पचाग को ग्रहण करके छाया मे सुखाले, फिर जो मनुष्य कई दिनो से खो गया है, उस मनुष्य के कपडे मे लजालु को बाँध कर, त्रिकाल उस वस्त्र मे कोडा लगावे तो खोया हुआ मनुष्य शीघ्र ही आता है।

१२ भाग ताबा, १६ भाग चादी, १० भाग सोना, इन तीनों का प्रथक २ तार खिचवा कर, रविपुष्य या गुरु पुष्यामृत योग रहते २ अंगुठी बनवाना और पचामृत से जिनेन्द्र प्रभु का अभिषेक करके, उस अभिषेक मे उस अगुठी को धोकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में पहनना चाहिये, जिससे सर्व प्रकार का तिव्र दारिद्र नाश होता है। किन्तु रवि या गुरू पुष्यामृत योग मे ही अगुठी बनवाना चाहिये और उसी ही योग के रहते २ ही पहन लेना चाहिये। तब ही कार्यकारी हो सकती है। **आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी** इस द्रारिद्र नाशिनी अगुठी के लिए सबको कहा करते थे।

लोग, केशर, चन्दन, नाग केशर, सफेद सरसो, इलायची, मनशिल, कूठ, तगर, सफेद कमल, गोरोचन, लालचन्दन, तुलसी, पिक्कार, पद्मास्वा, कुटज, को पुष्प नक्षत्र मे बराबर लाकर, सबको धतूरे के रस मे कुमारी कन्या से पिसवाकर, उसका चन्द्रोदय होने पर तिलक करने पर ससार मोहित होता है।

मयूर शिखा, सफेद गुन्जा, गोरंगा (गोभी) आक का पत्ता, कीटक का मल, ओर

अपने पाचो मलो का चूर्ण। इन सव चीजो को जिस स्त्री को खिला दिया जाय वह वश मे हो जाती है।

कान, आख, दात, जीभ, तथा वीर्य को पच मल कहते है।

लाल कनेर के पुष्प, भुजगाक्षि जटा, ब्रह्मदन्डी, इन्द्रायन, गोवन्धनी (अधो पुष्पिया प्रियगु) लज्जावती के चूर्ण की गोलिया वनावे, उन गोलियो को वरावर नमक सहित एक वर्तन मे डालकर अपने मूत्र मे पकावे। इन गोलियो को भोजन आदि के साथ खिलाने से स्त्री वश मे होती है।

वड, गूलर, पीपल, पिलखन, अजीर के दूध तथा पंडुकी (पोतकी) के अडे के रस मे कपास, आक, कमल सूत्र, सेमल की रुई, सन की वनी हुई वत्ती को भावना देकर काले तिलो का दीपक जलाने से तीनो लोक वश मे होते है।

निगुण्डी और सफेद सरसो घर के द्वार पर अथवा दुकान के द्वार पर रखी जावे तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

जो स्त्री काचिका (सौवीर) के साथ जवे के फूल को मल कर ऋतु काल मे पीती है। वह फिर मासिक से नही होती है यदि हो भी जावे तो गर्भ धारण तो कभी भी नही करती है।

लज्जारिका, और मेढक की चरवी को हाथ पर लगा लेने से अग्नि का स्तम्भन होता है, और श्वास निरोध से तुला दिव्य का स्तम्भन होता है।

उत्तर दिशा मे उत्पन्न होने वाली कौच की जड को गो मूत्र मे पीस कर उसका मस्तक पर तिलक करने से शाकिनी उसमे अपना प्रतिविम्ब देखती है।

रवि पुष्यामृत के योग मे ब्राह्मी, शतावरी, शखा होली, अधा जारा, जावत्री, केशर मालकागणी, चित्रक, अकलकरो और मिश्री का चूर्ण करके सर्व सम भाग लेकर, सवेरे १८ कोमल अदरख के रस मे २१ दिन तक खाने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

पुष्यार्क योग मे काला धतुरे की जड अथवा सफेद धतुरे की जड शनिवार को निमन्त्रण देकर, रविवार को सध्या काल मे नग्न होकर ग्रहण करे, फिर कन्या कत्रीत सुत्र लपेट कर, धूप खेवे, फिर उस जड़ को अपने कमर मे वाधने से स्वप्न मे वीर्य का कभी स्खलन नही होता है।

पुष्यार्क अथवा हस्तार्क मे रुद्रवति और (   ) का पचांग लेकर पानी मे गोली बनाकर रक्खे, जब कार्य पडे तब अपने शरीर मे लेप करने से अग्नि शीतल के समान लगती है। याने अग्नि मे नही जलता है।

मूलार्क योग मे सर पखा का पचाग, बीसरवपरा का पचाग, इन्दवारूणी का पचांग शिव लिगी का पंचाग, इन सब को एकत्र करके पेट पर लेप करने से उदर रोग शात होते हैं।

पुष्यार्क योग मे लज्जालु पचाग, शख पुष्पी पचाग, (   ) पचाग लक्ष्मण पचाग, श्वेत गुजा पचाग इन सब चीजो को ग्रहण करके गोली बनावे, जब कार्य पड़े तब स्वय के थूक मे उस गोली को घिस कर तिलक करने से पर विद्या का छेदन होकर, आजीविका की प्राप्ति होती है।

रवि पुष्या मृत योग मे दुब पचाग का रस लाकर अष्ट गध मिलाकर दाया हाथ की अनामिका अंगुलो से माथे पर निरन्तर तिलक करने से सर्व जन वश मे होते है।

पुष्यार्क योग मे जाइ पुष्प का पचाग और समुद्र फेन, गधेडा के मूत्र मे गोली करके आंख मे अजन करने से भूत प्रेत, व्यंतरादि सर्व दोष का नाश करता है। स्त्रिओ के भग पर लेपन करने से सुभागी हो जाता है।

पुष्यार्क मे धन्वंतरि पचांग, लक्ष्मणा पचांग, शिवलिगी पचाग इन तीनो का चूर्ण करके सूघने से आधा शीशो तथा सूर्य वात का नाश होता है।

पुष्यार्क योग मे एक डडी पचांग, पुत्र जारी पंचाग को तीन धातु के तावीज मे डालकर हाथ मे बाधने से, सर्व जाति को अग्नि ठडी हो जाती है।

पुष्यार्क योग मे मुरगे की विष्टा, मयुर की विष्टा लोमड़ी की विष्टा, चीमगादड की विष्टा और चतुष्पद पशुओ रज, सबको इकट्ठा करके शत्रु के माथे डालने से उसका नाश होता है।

पुष्यार्क योग मे सरपखा पचांग, चक्रांग पंचाग, मयुर शीखा पचाग इन सब चीजो को पानी के साथ पिलाने से सब जाति के विष से कभी मरण नही होता है।

पुष्यार्क योग मे चक्राग पंचाग, काक जघा पचाग, पिलाने से अन्दर गांठ और गोलादिक शूल की शाति होती है।

पुष्यार्क मे सहदेवी का पंचाग तीन धातुओं के तावीज में डालकर धारण करने से असमय मे गर्भपात कभी नही होता है।

पुष्यार्क मे सूअर की विष्टा जमीन पर नही गिरे, उसके पहले ही गहण करके मिष्टान्न के साथ मे हाथी को खिलाने से हाथी वश मे होता है।

पुष्यार्क योग मे सफेद अकौआ जडको, की जो गणेशाकार होती है उसको लाकर द्रव्य के साथ मे रखने से अष्ट सिद्धि ग्रोर नव निधि की प्राप्ति होती हैं।

गगा पार की ताम्बा लाकर चने मे मिलावै ग्रौर कूट कर गुदा मे धूनी दे तो बवासीर का रोग शात होता है।

सर्प की केचुली को मस्से के नीचे बाधे तो बवासीर ठीक होता है।

दाये हाथ की बीच की ग्रगुली मे लोहे की ग्रगूठी पहनने से पथरी रोग शात होता है।

सुबह के समय दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ मे गुड की डली लेकर उसे दातो से काट कर चौराहे पर फेक देने से आधा सीसी का रोग शात होता है।

गाय के घी मे सोरा मिलाकर सू घने से आधा सीसी रोग दूर हो जाता है।

दूध के दात जिसके गिरे हो उस दात को तावीज मे मडवा कर पास रखने से दात पीडा शात होती हे।

रेशम के डोरे मे जायफल की माला गू थ कर रोगी के गले मे बाधने से मृगी रोग शात होता है।

गाय के बाये सीग की ग्रगूठी बनवा कर, दाये हाथ की कनिष्ठा ग्रगुली मे पहनने से मृगी का दौरा आना जल्दी बन्द हो जाता है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे उत्तर दक्षिण की ओर वाले पवित्र स्थान से, व्याघ्र नखी, बूटी की जड उखाड लावे और उसे स्त्री के कमर मे बाधने से प्रदर रोग शात होता है।

काली मूसली की जड को हाथ वा पाव मे बाधने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।

जेष्टा नक्षत्र मे अडुसे की जड लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर मे बाधने से नष्ट पुष्पा स्त्री ३० दिन के भीतर फिर, रजस्वला होने लगती है।

तील की जड ब्रह्मदण्डी की जड, मुलहठी, काली मिर्च ग्रौर पीपल इन सबको जौ कुट का काढा बनाकर पीने से बन्द मासिक धर्म फिर से होने लगता है।

शिव लिगी के बीज को गुड के साथ गोली बना कर ऋतु स्नान के बाद तीन दिन खाकर मैथुन करने से गर्भ ठहर जाता है।

निर्गुण्डि के रस मे गोखरू के बीज डालकर सात दिन तक पीने से स्त्री गर्भ धारण करती है।

श्रवण नक्षत्र मे काले एरण्ड की जड लाकर, उसे धूप, दीप देकर वन्ध्या स्त्री के गले मे बाँधने से वन्ध्यात्व दोष दूर हो जाता है। वह गर्भ धारण करती है।

नीबू के पुराने वृक्ष की जड को दूध मे पीसकर घी मे मिला कर पीने से दीर्घ जीवी पुत्र की प्राप्ति होती है।

रजो धर्म से निवृत होने के बाद पाच दिन तक, जो स्त्री पान की जड को घोट कर पी लेती है। उसे गर्भ नही रहता है।

स्त्री की योनि पर हाथी की लीद रखने से गर्भ नही रहता है।

रवि पुष्या मृत मे धतूरे की जड को लाकर रख ले, कार्य पड़े तव गर्भवती स्त्री के कमर मे बाध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

सफेद सोठ की जड को गर्भिणी स्त्री के योनि मे रखने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

गर्भिणी स्त्री के हाथ मे चुम्बक पत्थर रख देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

स्त्री के कमर मे बांस की जड बाधने से प्रसव सुख से होता है।

नीम की जड स्त्री के कमर मे बाधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है।

उत्तर दिशा मे उत्पन्न ईख की जड को स्त्री के नाप के डोरे में बाध कर कमर मे बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होना है।

आवला और मूलहठी को गाय के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तंभन होता है।

धतूरे की जड को कमर मे वॉधने से गर्भ स्त्राव नही होता है।

अकरकरा को सूत मे लपेट कर वच्चे के गले में वाधने से मृगी रोग शात होता है।

दूध पिलाने वाली मा अथवा धाय के कपड़े मे से एक टुकडा फाड कर, पानी मे भिगोवे, फिर वच्चे के माथे पर रख देने से हिचकी रोग शान्त हो जायगा।

कपूर के डलिओ की माला वनाकर बच्चे को पहनाने से सुखपूर्वक दॉत आयेगे।

वच्चे के हाथ मे लोहे अथवा तावे का कडा पहनाने से दात सुखपूर्वक आवेगे और वच्चे को दृष्टि दोष नही होगा।

काली सरसो और काली मिर्च को पीसकर अंजन करने से भूत वाधा नष्ट होती है।

अश्विनी नक्षत्र मे घोडे के खुर का नख लेकर रखले, उस नख को अग्नि मे डाल कर धूनी देने से भूत प्रेत आदिक भाग जाते है।

अनार का वाधा ज्येष्ठा नक्षत्र मे लाकर घर के दरवाजे पर वाध देने से वालको के दुष्ट ग्रहो का निवारण हो जाता है।

काशीफल के फूलो के रस मे हल्दी को पीस कर पत्थर के खरल मे खूब घोट कर अजन वनाले। इस अजन को आँख मे लगाने से भूतादि की वाधा अवश्य दूर हो जाती है।

रविवार के दिन सफेद कनेर की जड को दाये कान पर वाधने से विषम ज्वर दूर होता है और दायी भुजा मे वाधने पर शीत ज्वर दूर होता है।

चौलाई की जड सिर मे वाधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

मकडी के जाले को गले मे लटकाने से ज्वर उतर जाता है।

रविवार के दिन आक की जड को उखाड कर कान मे वाधने से सभी तरह के ज्वर दूर हो जाते है।

नारियल की जड को (लॉगली मूल) को गले मे वाँधने से महा ज्वर दूर हो जाता है।

वृहस्पति की जड को मस्तक पर रखने से, वाधने से महा ज्वर नष्ट होता है।

अपा मार्ग की जड को रोगी के भुजा मे वाधने से भूत ज्वर नाश होता है।

रीठे के फल को धागे मे गू थ कर वच्चे के गले मे वाँधने से उसे नजर नही लगती तथा हिचकी रोग शान्त होता है।

भेडिये के दात को वालक के गले मे वाधने से वालक का अपस्मार रोग शात होता है।

कबूतर की वीट को शहद के साथ पीने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

घू घची की जड को कान मे वाधने से दाढ के कीडे भड जाते है।

रविवार के दिन सर्प की केचुल लाकर थोडे मे गुड मे १ रत्ती भर केचुलि मिला कर देने से नाहरू रोग शाँत हो जाता है।

सूकी मिट्टी का डला सू घने से नाक का रक्त वन्द हो जाता है। नकसीर ठीक होती है।

प्याज की माला को क ठ मे धारण करने से तिल्ली और जिगर दूर हो जाता है।

आबा हल्दी, सेधा नमक, कूठ को सम भाग लेकर नीबू के रस में पीस कर लेप करने से मुह के धब्बे दूर होते है।

तज, धनिया और लोध को सम भाग पीस कर मस्सो तथा मुहासो पर लेप करने से वे दूर हो जाते है।

सरसो, सेधा नमक, लोग और बच—इन सबको कूट कर मुंह पर लेप करने से मुह पर होने वाली छोटी २ कीले फुन्सिया ठीक होती हैं।

सफेद साठी की जड को घी मे पीस कर आखो मे अजन करने से बहता हुआ पानी रुक जाता है।

बादाम, कपूर, आधी २ रत्ती लेकर खूब महीन पीस ले, फिर अंगुली से अंजन करने पर दुखती हुई आखे ठीक हो जाती है।

रागे की अंगूठी मध्यमा उंगली में पहनने से मोटापा कम हो जाता है।

सोते समय सूखा नमक पिसा हुआ शिर में मलने से झडते हुए शिर के बाल बन्द हो जायेगे।

शुभ नक्षत्र मे (अपामार्ग अथवा अधाभार) की जड़ लाकर व्यक्ति के दाये कान मे बाधने से सर्प-बिच्छू का जहर उतर जाता है।

सर्प के काटे हुए स्थान पर सफेद सोठ की जड का लेप करने से जहर उतर जाता है।

मयूर के साबूत पङ्ख को चिलम मे भर कर फूक लेने से तुरन्त सर्प का जहर उतर जाता है। किन्तु इस प्रयोग को छः-सात बार करना चाहिये, सर्प दष्टा व्यक्ति अगर बेहोस हो गया हो तो अन्य व्यक्ति स्वय फूंक लेकर सर्प दष्टा के नाक मे जोर से धुआ फेकने से विष उतर जायगा।

ऊट के बालो की रस्सी बनाकर, अपनी जाघ मे बाध ले तो जब तक उस रस्सी को नही खोलेगा तब तक वीर्य स्खलित नही होगा।

कमल गट्टे को शहद के साथ पीस कर नाभि पर लेप करने से वीर्य स्खलित नही होगा।

पुष्य नक्षत्र में आक और धतूरे का ऊपरी भाग एवं कटेली की जड लाकर, सबको मिलाकर चूर्ण करे, इस चूर्ण को जिसके शिर पर डाल दिया जाय, उससे इच्छित वस्तु प्राप्त की जा सकती है।

ताल को मट्ठे मे पीस कर मिट्टी सहित पुतली वनाए। उस पुतली को जिसके घर मे गाड दिया जाय उस घर का ग्रह क्लेश का नाश हो जाता हैं।

शुक्ल पक्ष मे पुष्य नक्षत्र पडे तब घू घची की जड लाकर उसे शैय्या के सिरहाने बाँध-कर सोने से चौरो का भय नही रहता है।

कृति का नक्षत्र मे कैथ का बांधा लाकर मुह मे रखने से शस्त्र के आघात का भय दूर हो जाता है।

अ कोल के फल का तेल निकाल कर उसमे तगर के फल का चूर्ण मिलावे इसे आखो मे आजने से जहा तक दृष्टि जायगी वहा तक देवी-देवता ही दिखाई पडेंगे। वाद मे केवल तगर के तैल का अ जन करने से पुन मानुषि दृष्टि प्राप्त होती है।

आकोल का तेल दीपक मे भर कर घर मे जलाने से भूत प्रेत दिखाई देते हैं।

मीठे तेल मे गधक डाल कर दीपक जलाने से घर मे भूत प्रेत दिखाई देते हैं।

रविहस्त को पमाड की जड, शनिवार को न्योतकर रविवार को प्रात उसे लाकर दाई भुजा मे बाँधने से जुआ मे जीत होती हैं।

सफेद घू घची को पानी मे पीस कर विना खू टी वाली खडाऊ पर गाढा लेप कर ले फिर उस पर पाव जमा कर चले तो खडाऊं पाव से अलग नही होगी।

मूली के पत्तो का रस हाथ मे लेकर विच्छु पकडने से वह डक नही मारता है।

गोखरू वकरी का सीग, ताल बुखारा, शूकर की विष्टा और सफेद घू घची इन सव को पीस कर रसोई घर मे डाल देने से मिट्टी के वरतन सव फुट जायेंगे।

रविवार के दिन प्रात काल लाल एरण्ड को न्यौत आवे। शाम के समय उसे एक झटके मे तोड लाये कि उसके दो टुकडे हो जायँ। एक टुकडा नीचे गिर पड़े, दूसरा हाथ मे रहे फिर दोनो टुकडो को अलग-अलग रख ले। फिर जिसे पीढे (पाटा) पर वैठा हुआ देखे, उसके शरीर से जो टुकडा नीचे गिर पडा हो, तो वह आदमी पाटे से चीपक जायगा। हाथ मे जो रह गया था, उसको स्पर्श करा देने पर वह चिपका हुआ आदमी छूट जायगा।

आक के दूध मे चावलो को भीगो कर आग पर चढाने से चावल कभी भी नही पकते है।

भिलावे का रस मे घू घची, विष, चित्रक, और कौंच को मिला कर देने के शत्रु को

भूत लग जाता है। चन्दन खस माल कांगनी, तगर, लाल चन्दन और कूठ को एक में पीस कर शरीर में लेप करने से भूत उतर जाता है।

शुभ तिथि, शुभ वार के नक्षत्र को काली गाय के दूध को जीभ पर रखे और उसके घी को दोनो आँखों में अ जन करे तो पृथ्वी मे गड़ा हुआ द्रव्य दिखेगा।

जहा पर कौए मैथुन करते हो और सिह आकर बैठता हो वहा अवश्य ही धन गड़ा हुआ है समझना।

बहेडे के वृक्ष को साम को नोत आवे, सवेरे उसका पत्ता लाकर पाव के नोचे दबा कर भोजन करने से बीस तीस आदमी का भोजन अकेले ही खा जाता है।

बहेड़े का पत्ता तथा सफेद कुत्त का दात इन दोनों को कमर में बाध कर खाने बैठने से बहुत भोजन करता है।

भैंस के दूध मे तथा घी मे अपा मार्ग के बीजो की खीर बना लर खाने से १ महीने तक भूख नही लगती है।

पमार के बीज, कसेरू तथा कमल की जड को गाय के दूध में पका कर खाने से एक महीने तक भूख नही लगती।

गोरोचन तथा केशर को महावर के साथ घिस कर, उसके द्वारा भोज पत्र के ऊपर शत्रु का नाम लिख ने से उसका स्तम्भ न हो जाता हैं। और वह सदैव वश मे रहता है।

पके और सुखे हुए लभेडे (लिहसौड़े) के फल को खूब महीन पीस कर पानी मे डालने से पानी बंध जाता है।

दो हांडियो मे श्मसान के अ गारे भर कर दोनो का आपस मे मुंह मिला कर जंगल में गाड देने से मेघ का स्तंभन हो जाता है।

चौलाइ की जड को चान्दी के ताबीज में डाल कर अपने मुंह में रखने से शत्रु का मुख स्तभित रहता है।

ऊंट के रोमो को किसी पशु पर डाल देने से वह जहाँ का तहां ही स्तभित हो जाता है। कटेली की जड को और मुलहठी को समभाग लेकर पीसे, फिर नाक में सुंघने से निद्रा का स्तंभन हो जाता है।

ऋतुमती स्त्री की योनि के वस्त्र पर जिस मनुष्य का नाम गोरोचन से लिख कर घड़े में बन्द कर दिया जाय, उसका स्तभन हो जाता है। फिर वह चल फिर नही सकता है, एक ही स्थान पर पड़ा रहता है।

जलते हुए भट्टे मे घोडे का खुर और वेत की जड को डाल दिया जाय तो अग्नि का स्तभन हो जाता है। फिर खाली धुआ उठता रहता है।

रविपुष्यामृत नक्षत्र मे सफेद आकडे की जड को लेकर दाई भुजा मे वाधने से व्याघ्र का स्तभन होता है।

ऊट की हड्डी को जिस व्यक्ति का नाम लेकर पृथ्वी मे गाड दिया जाय तो, उस मनुष्य की गति स्तभित हो जाती है।

एकाक्षी नारियल कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्री श्री क्ली ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरुपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः।

पूजन विधि :—प्रथम हस्त में पानी लेकर सकल्प करे—अत्राद्य सवत् मिलाव्दे महामागलाय फलप्रद – अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे इप्ट सिद्धये वहुधन प्राप्तये एकाक्षि श्रीफल पूजन मह करिस्यमि। इस प्रकार कह कर पानी छीटे फिर उपर्युक्त मन्त्र को वोलते हुये श्रीफल का पचामृताभिपेक करे, अष्ट द्रव्य चढावे रेशमी वस्त्र ओढाए, पूजन करे। उसके वाद सोने की वा मूगेकी अथवा रूद्राक्ष की माला से जप शुरू करे। जप १२५०० हजार हो जाय, फिर नित्य प्रति एक माला फेरे, दीवाली, सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय पूजन करे।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्री क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्वसिद्धि कुरु २ स्वाहा।

यह मन्त्र रेशमी कपडे पर अप्ट गध से अथवा केसर से लिखा। अनार की कलम से उस वस्त्र के उपर एकाक्षि श्रीफल रखा मन्त्र से प्रात और सध्या को अप्ट द्रव्य से पूजा करे, मूल मन्त्र की एक माला फेरे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्री ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मन्त्र की एक माला फेरे गुलाव के फूल १०८ चढावे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मन्त्र की १० माला पाच दिन तक प्रति दिन फेरे। तथा कनेर के २१ फूल चढाए। जिज्ञासित का स्वप्न मे उत्तर प्राप्त होगा।

फलप्राप्ति :—

इस श्रीफल सु घाने मात्र से स्त्री गर्भ, के कष्ट से छु टे, तुर त प्रसव हो।

वंध्याँ स्त्री को ऋतु स्नान के बाद घोल कर पानी पिलावे तो संतान हो।

श्री फल को सात बार पानी में डुबो कर सात बार ही मन्त्र पढे, फिर उस पानी को घर में छीटने से भूत- प्र त, का उपद्रव शाँत होता हो।

लाल कनेर का फूल लेकर, दक्षिण दिशा मे बैठकर शत्र का नाम लेते हुए एक माला फेरे, फूल शत्रु के सामने फेके तो शत्रु का नाश हो।

दक्षिणावर्त शंख कल्प

शंख ३ तोले का उत्तम २५ तोले का अत्युत्तम है। शंख शुक्ल वर्ण का ही उत्तम माना गया है।

यदि शख को पानी मे नमक डाल कर उस पानी में डाल दे, फिर सात दिन तक पानी मे ही रहने दे, अगर शंख फटे नही तो समझो असली शख है नही तो नकली है।

प्रयोग फल :—

शंख मे पानी भर कर मस्तक पर नित्य ही छीटे तो पाप का क्षय हो।

शख में पानी लेकर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न हीती है।

पूजन के पश्चात् शंख मे दूध भर कर वन्ध्या स्त्री पिए तो उसके सन्तान होती है।

जिस घर में शंख हो उस घर मे सर्व मगल होता है। रोग शोक मोह का नाश, प्रतिष्ठा बढती है। मान सम्मान राज्य मे होता है।

पूजन विधि :—

स्नान करके, सफेद वस्त्र धारण करे, प्रतिदिन 'दूध से फिर पानी से शख को स्नान करावे। फिर चादी, अववा सोने के पत्र पर उस शख को सोने मे मढाना चाहिये, फिर अष्ट-द्रव्य से सोडसो प्रचार पूजन करना चाहिए,। पूजन करने के पहले सकल्प करे।

ॐ अद्य अमुक वर्षे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ मम मनोवाञ्छित कार्यसिद्धये ऋद्धि सिद्धि प्राप्यर्थ मह दक्षिणा वर्त शखस्य पूजन करिष्याम।

पूजन मन्त्र :—

ॐ ह्री श्री क्ली श्रीधर करस्थायपयोनिधि जाताय श्री दक्षिणवर्त शखाय ह्री श्री क्ली श्रीकराय पूज्याय नम ।

इस मन्त्र को पढते हुए अष्ट द्रव्य से सुगन्धित इत्र चढाए, नैवेद्य चादी के वरतन मे रखे, उससे दूध, चोनी, केशर, कस्तूरी वादाम, इलायची डाले, साथ मे केला रखे, जो भोजन शाला मे वस्तु वनी हो उसे चढाए, कपूर से आरती उत्तारे।

ध्यान मन्त्र :—

ॐ ह्री श्री क्ली श्रीधर करस्थाय पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तितार्थ सपादकाय श्रीदक्षिणावर्त श खाय श्री कराय, पूज्याय क्ली श्री ह्री ॐ नम. सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यायङ्गोपाङ्गसयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव नीधिरूपाय चतुर्दश रत्न परिवृताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता श्री कृष्णदेव करतल लालिताय श्रीशंख महानिधये नम ।

जप मन्त्र

ॐ ह्री श्री क्ली ब्लू दक्षिण मुखाय शखनिधये समुद्रप्रभवाय श खाय नम । प्रतिदिन एक या दसमाला फेरे। जप करने के वाद मन्त्र के साथ पानी आकाश की ओर छाट दे।

गौरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हन हन ॐ ह्रीं हन ॐ ह्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रां ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—गौरोचन की टिकडी वनाये—२१ उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शुद्ध जगह रख दे, जव भी जरूरत हो उपरोक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके प्रयोग में लावे, गुगुल का धूप खेवे।

प्रयोग :—१ ललाट पर तिलक कर राज्य सभा मे राज्य प्रमुख के पास व सरकारी किसी भी कार्य के लिए जावे तो मनोकामना सफल हो।

२ हृदय पर तिलक करके जहाँ भी जावे, तो मनोकामना सफल हो, किसी स्त्री के पास जावे, तो वश मे हो।

३. मस्तक पर तिलक करके जावे तो रास्ते मे सिंह, व्याघ्र, चोर आदि का भय मिटे, स्त्री-पुरुप सव वश हो, लोक प्रिय हो।

तंत्राधिकार : रुद्राक्ष कल्प

भोग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले चारो वर्गो के लोगो को रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। उत्तम रुद्राक्ष असख्याय समूहो का भेदन करने वाला है। जाति भेद के अनुसार

रुद्राक्ष ४ तरह के होते है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। उन ब्राह्मणादि जाति के रुद्राक्षों के वर्ण श्वेत, रक्त पीत तथा कृष्ण जानना चाहिये। मनुष्यो को चाहिये कि वे क्रमश. वर्ण के अनुसार अपनी जाति का ही रुद्रास धारण करे। जो रुद्राक्ष आवले के फल के बराबर होता है। वह समस्त अनिष्ठो का विनाश करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर होता है, वह उतना छोटा होते हुए भी लोक में उत्तम फल देनें बाला तथा सुख सौभाग्य वृद्धि करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष गुजांफल के समान बहुत छोटा होता है वह सम्पूर्ण मनोरथो और फलों की सिद्धि करने वाला होता है। रुद्राक्ष जैसे-जैसे छोटा होता है वैसे-वैसे अधिक फल देने वाला होता है। एक-एक बडे रुद्राक्ष से एक-एक छोटे रुद्राक्ष को विद्वानो ने दस गुना अधिक फल देने वाला बतलाया है। अतः पापो का नाश करने के लिए रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक बताया है। रुद्राक्ष के समान फलदायिनी कोई भी माला नही है। समान आकार प्रकार वाले चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टक युक्त (उभरे हुए छोटे २ दानों वाला) और सुंदर रुद्राक्ष अभिलबित पदार्थो के दाता तया सदैव भोग और मोक्ष देने वाले है। जिसे कीडो ने दूषित कर दिया हो, जो टूटा फूटा न हो जिसमें उभरे हुए दाने न हो, जो व्रण युक्त हो तथा जो पूरा पूरा गोल न हो इन पाच प्रकार के रुद्राक्षो को त्याग देना चाहिये। जिस रुद्राक्ष मे अपने आप ही डोरा पिरोने योग्य छिद्र हो गया हो, वही उत्तम माना गया है, जिसमे मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य जिस फल को पाता है उसका वर्णन सैकडो वर्षों मे भी नही किया जा सकता, भक्तिमान पुरुष साढे पाच सौ रुद्राक्ष के दानो का सुन्दर मुकुट बनाले और उसे सिर पर धारण करे तीन सौ साठ दानों के लम्बे सूत्र मे पिरोकर एक हार बना ले। वैसे-वैसे तीन हार बनाकर भक्ति परायण पुरुष उनका यज्ञोपवीत तैयार करे और उसे यथा स्थान धारण किये रहे।

कितने रुद्राक्ष की माला–कहाँ धारण की जाऐ—छ रुद्राक्ष की माला कान में, बारह की हाथ मे, पन्द्रह की भुजा मे, बाईस की मस्तक मे सत्ताईस की गले मे, बत्तीस की कठ में (जिससे झूल कर वह हृदय को स्पर्श करती रहे) धारण करनी चाहिये।

कौनसा रुद्राक्ष कहां धारण करना चाहिए—छः मुखा रुद्राक्ष दाहिने हाथ मे, सात मुखा कठ मे, आठ मुखा मस्तक मे, नौ मुखा बाये हाथ मे, चौदह मुखा शिखा मे, बारह मुखा वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश मे धारण करना चाहिये। इसके धारण करने से आरोग्य लाभ सात्विक प्रवृति का उदय, शक्ति का अविर्भाव और विघ्ननाश होता है।

रुद्राक्ष के मुखों के अनुसार उसका फल निम्न प्रकार से है—

(१) एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भोग व मोक्ष रूप फल प्रदान करता है। जहाँ इसकी

पूजा होती है, जहाँ से लक्ष्मी दूर नही जाती। उस स्थान मे सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वहाँ रहने वाले लोगो की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती है

(२) दो मुख वाला रुद्राक्ष देव देवेश्वर कहा गया है। वह सम्पूर्ण कामनाओ और फलो को देने वाला है। गर्भवती महिलाओ की कमर या बाँह पर सूत से बाध देने पर गर्भावस्था नौ महिने के अन्दर किसी भी प्रकार की बाधा, भय, बेहोशी, हिस्टीरिया, डरावने स्वप्न आदि दोष नही होगे साथ मे एक रुद्राक्ष बिस्तर पर तकिए के नीचे एक डिबिया मे रख देना चाहिये।

(३) तीन मुख वाला रुद्राक्ष सदा साक्षात् साधन फल देने वाला है, उसके प्रभाव से सारी विद्याये प्रतिष्ठित होती है तीन दिन के बाद आने वाला ज्वर इसके धारण करने से ठीक हो जाता है।

(४) चार मुख वाला रुद्राक्ष के दर्शन और स्पर्श से शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारो पुरुषार्थो की सिद्धि देने वाला है इससे जीव हत्या का पाप नाश हो जाता है।

(५) पाच मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् कालाग्नि रूप है वह सब कुछ करने मे समर्थ है सब कष्टो से मुक्ति देने वाला तथा सम्पूर्ण मनोवाछित फल प्रदान करने वाला है उसके तीन दाने धारण करने से लाभ होता है।

(६) छः मुखो वाला रुद्राक्ष यदि दाहिनी बाह मे उसे धारण किया जाये तो धारण करने वाला मनुष्य विद्याओ का स्वामी होता है ओर पापो से मुक्त हो जाता है यह विद्यार्थियो के लिए उत्तम है।

(७) सात मुख वाला रुद्राक्ष अनंग स्वरूप और अनग नाम से हो प्रसिद्ध है उसको धारण करने से दरिद्र भी ऐश्वर्य शाली हो जाता है। सभी रोगो का नाश होता है।

(८) आठ मुख वाला रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव रूप है। असत्य भाषण का पाप नष्ट करता है। उसको धारण करने से मनुष्य पूर्णायु होता है और मृत्यु के पश्चात् शूल धारी यक्ष हो जाता है।

(९) नौ मुख वाले रुद्राक्ष को भैरव का प्रतीक माना गया है अथवा नौ रूप धारण करने वाली माहेश्वरी दुर्गा उसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गई है जो मनुष्य अपने बाये हाथ मे इसको धारण करता है वह सर्वेश्वर हो जाता है।

(१०) दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भगवान रूप है। उसको धारण करने से मनुष्य की

सम्पूर्ण कामनाएे पूर्ण हो जाती है वह भूत प्रेत बाधा तथा सभी प्रकार की बीमारियों को हरण करने वाला है।

(११) ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्र रूप है, उसको धारण करने से सर्वत्र विजयी होता है इसे पूजा गृह अथवा तिजोरी मे मगल कामना के लिए रखना लाभ दायक है यह सबको मोहित करने वाला है।

(१२) बारह मुख वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करे, उसको धारण करने से मानो, मस्तक पर आदित्य विराजमान हो जाते है।

(१३) तेरह मुख वाला रुद्राक्ष विश्व देवो का स्वरूप है, उसको धारण करके, मनुष्य सम्पूर्ण अभिष्ठो को पाता है तथा सौभाग्य और मगल लाभ प्राप्त करता है।

(१४) चौदह मुख वाला रुद्राक्ष परम शिव रूप है, उसे भक्ति पूर्वक मस्तक पर धारण करे, इससे समस्त पापो का नाश होता है। इस तरह मुखो के भेद से रुद्राक्ष के मुख्यतः चौदह भेद बताये गये है।

रुद्राक्ष धारण करने के मन्त्र निम्नलिखित रूप मे है।

१–४–५–१०–१३ इन पाँचों का मन्त्र—ॐ ह्री नमः है।

२–१४ इन दोनो का मन्त्र—ॐ नमः। है।

३–इसका मन्त्र—क्ली नम। है।

६–९–११ इन तीनो का मन्त्र—ॐ ह्री हू नमः। है।

७–८ इन दोनो का मन्त्र—ॐ हु नम.। है।

१२–इसका मन्त्र—ॐ क्रौ क्षौ रौ नम। है।

उपरोक्त चौदह ही मुखो वाले रुद्राक्षो को अपने अपने मन्त्र द्वारा धारण करने का विधान है रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा द्रोहकारी राक्षस आदि सर्व दूर भाग जाते है।

एक मुखी रुद्राक्ष को साधने का मन्त्र :—

श्री गौतम गणपति जी को नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एक मुखाय भगवते-ऽनुरूपाय सर्व युगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम फलं प्रदाय नमः।

विधि :—चैत्र शुक्ला अष्टमी को १०८ रक्त वर्ण के पुष्पो से पूजन करे। धूप, दीप, प्रसाद करे केशर चन्दन कपूर का तिलक करे। प्रत्येक पुष्प पर एक मन्त्र पढ़े। फिर इसी तरह

दीपावली के दिन करे तत्पश्चात् तिजोरी मे रख दे या सोने मे मड़। कर गले मे धारण करे।

जिनमे एक मुखी रुद्राक्ष जिसका मूल्य ५-१० हजार रुपये तक भी हो जाता है। विशेष रूप से नकली आते है। लेते समय सावधानी रखनी चाहिए। किसी विज्ञ व्यक्ति से पहचान करवा कर लेना चाहिये।

वहेड़ा कल्प

शनिवार को सध्या को वृक्ष के पास जावे, "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" इस मन्त्र का उच्चारण करे, वस्त्र, चावल, पुष्प, नैवेद्य धूप, द्वीप द्वारा उसका पूजन करे व मोली वाध कर आ जावे। दूसरे रोज रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन सूर्योदय से पहले जावे और निम्नलिखित मन्त्र पढकर मूल व पत्ते ले आवे।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व भूताधिपतये ग्रस शोषय भैरवोऽवाज्ञापयति स्वाहा।

घर पर लाकर पंचामृत से धोकर अच्छी तरह स्थापना कर, उपरोक्त मन्त्र मे फिर अभिमन्त्रित करना चाहिये तत्पश्चात् प्रयोग मे लाया जा सकता है।

जैसे —(१) दाहिनी जाघ के नीचे रखकर भोजन करे, तो अपनी खुराक से वीस गुना ज्यादा भोजन कर सकता है।

(२) तिजोरी मे रखे तो अटूट भडार रहे।

निर्गुण्डी कल्प

विधि —रात्रि के समय अकेला निर्गुण्डी वृक्ष के पास जावे और २१ प्रदक्षिणा निम्नलिखित मन्त्र को बोलते हुये सात रात्रि तक बराबर दे, तो वृक्ष सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो गौतम गणेशाय कुवेरये कद्रि के फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् सातवे रोज वृक्ष का पचाग ले आवे। फिर धूप द्वीप मे पूजन करे। पचामृत से धो कर शुद्ध जगह रखकर उपरोक्त मन्त्र की एक माला से अभिमन्त्रित कर निम्नलिखित प्रयोगो मे काम ले।

जैसे —(१) पुष्य नक्षत्र मे निर्गुण्डी और सफेद सरसो, दुकान के द्वार पर रखी जाये, तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

(२) वृक्ष की छाल का चूर्ण, जीरे का चूर्ण सम भाग आठ दिन तक सेवन करने से हर प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है ।

(३) एक महीने तक सेवन करने से भूमिगत द्रव्य दिखाई देता है ।

(४) चालोस दिन तक सेवन करने से आयुष्य मे वृद्धि होती है ।

(५) पचास दिन तक सेवन करने से शरीर मे बल अत्यन्त बढता है । मृत्यु पर्यन्त निरोग रहता है इसका सेवन करते समय हल्का भोजन, खिचडी आदि खाना चाहिये ।

हाथा जोड़ी कल्प

शुभ दिन शुभ योग मे ले, और निम्नलिखित मन्त्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले ।

मन्त्र :—ॐ किलि किलि स्वाहा ।

योग :—(१) किसी भी व्यक्ति से वार्ता करने मे साथ रखे, तो बात माने ।

(२) जिसको भी वश करना हो उसका नाम लेकर जाप करे तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति वशीभूत होगा ।

(३) प्रयोग के बाद चांदी की डिबिया मे सिन्दूर के साथ रखे ।

विजया कल्प

इसका भिन्न भिन्न मास मे भिन्न भिन्न अनुपान से सेवन करने से अलग अलग फल है जो निम्न प्रकार से है :—

१ चैत्र मास मे पान के साथ खाने से पडित बने ।

२ वैशाख मास में अकलकरा के साथ खाने से जहर नही चढेगा ।

३ ज्येष्ठ मास मे नीबू से खाने से, ताबे के से रग का शरीर हो ।

४ आषाढ मास मे चित्र वल से खाने से, केश कल्प हो ।

५ श्रावण म स मे शिवलिगी से खाने से, वलवान बने ।

६ भाद्र मास मे रुद्रवती से खाने से, सबका प्रिय होता है ।

७ आश्विन मास मे माल कागनी से, खाने से अमरी उतरे स्वस्थ हो ।

८ कार्तिक मास मे बकरी के दूध के साथ खाने से, सभोग शक्ति बढे ।

९ मार्ग शीर्ष मास मे गाय के घृत के साथ खाने से, दृष्टि दोष मिटे ।

१० पोष मास मे तिलो के साथ खाने से जल के भीतर की वस्तु भी दृष्टि गोचर हो

११ माघ मास मे मोथा की जड के साथ खाने से शक्तिशाली हो।

१२ फाल्गुन मास मे आवला के साथ खाने से पैदल यात्रा की शक्ति बढे।

यक्षिणी कल्प

(१) विचित्रा (२) विभ्रमा (३) विशाला (४) सुलोचना (५) बाला (६) मदना (७) धूम्रा (हसनी) (८) मानिनी (६) शतपत्रिका (१०) मेखला (११) विकला (१२) लक्ष्मी (१३) काल करणी (१४) महाभय (१५) माहिन्द्रीका (१६) श्मसानी (१७) वट यक्षिणी (१८) चन्द्रिका (१६) चक्रपाली (घंटा कर्णि) (२०) भीषणा (२१) जनरजिका (२२) विशाला (२३) शोभना तथा (२४) शखिनी।

विचित्रा—मन्त्र :—ऐं विचित्रे विचित्र रूपे सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करने से, विचित्रा नामक यक्षिणी सिद्धि होती है।

प्राप्ति —अजरामरत्व का वरदान देती है।

विभ्रमा—मन्त्र :—ॐ ह्रीं भर भर स्वाहा।

विधि —एक लाख जाप करे तथा तीन कोनो का यज्ञ कुड बनाकर उसमे दुग्ध, घृत व मधु से दशास हवन करे तो विभ्रमा नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।

प्राप्ति —साधक के स्त्री रूप मे रहती है तथा चितित अर्थ देती है।

विशाला—मन्त्र :—ऐं विशाले ह्रीं ह्री क्ली एहि एहि ह्रां विभ्रम भुये स्वाहा।

विधि —श्मसान मे दो लाख जाप करे। गुग्गुल व घृत का दशास हवन करे।

प्राप्ति – साधक के स्त्री के रूप मे रहे। ५०० व्यक्तियो तक का भोजन दे। साधक अन्य स्त्री के साथ सगम न करे।

सुलोचना—मन्त्र :—ॐ लै लै सुलोचने सिद्धं देहि-देहि स्वाहा।

विधि —पर्वत पर या नदी के किनारे तीन लाख जाप करे। घृत से दशास हवन करे, तो सुलोचना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति —आकाश गामिनी दो पादुकाएं भेट करे जिससे जहाँ चाहे जा सके।

मदना—मन्त्र :—ऐं मदने मदन बिंटदिनी आत्मीय मम देहि २ श्री स्वाहा।

विधि :—राज द्वार पर एक लाख जाप करे तथा जाति पुष्प व दूब से दशास हवन करे ता मदना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :–एक गुटिका भेट करे, जिसे मुह मे रखने से अदृश्य हो जाने की शक्ति प्राप्ति होती है।

मानिनी—मन्त्र :—ऐं मानिनी ह्रीं ऐहि-एहि सुन्दरि हस-हस समीह में सगमकं स्वाहा।

विधि —जहाँ चौपाये जानवर रहे। वहाँ बैठकर १,२५,००० जाप करे व लाल फूल व तीन मधुर वस्तुओ से दशास होम करे, तो मानिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :–साधक के पास स्त्री रूप मे आकर उससे संभोग करे। उसके बाद एक तलवार भेट दे। जिससे वह विद्याधर बनने की शक्ति प्राप्त करे।

हंसिनी—मन्त्र :—हंसिनी हंसयनि क्लीं स्वाहा।

विधि :—नगर द्वार पर एक लाख जाप करे व कमल पत्र से दशांस हवन करे तो हसिनी नामक यक्षिणी सिद्व हो।

प्राप्ति —साधक को अजन भेट करे, जिससे पृथ्वी के अन्दर की वस्तुये देखी जा सके।

शतपत्रिका—मन्त्र :—शतपत्रिके ह्रां ह्रीं ध्वीं स्वाहा।

विधि —वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करे व घृत से दशांस हवन करे, तो शतपत्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति —पृथ्वी मे गडे खजाने को वताये।

मेखला —मन्त्र :—ह्रूं मम मेखले ग ग ह्रीं स्वाहा।

विधि :—पलाश वृक्ष के नीचे १४ दिन तक जाप करे, तो मेखला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति —प्रतिदिन ५०० रुपये तक भेट दे।

विकला—मन्त्र :—विकले ऐ ह्रीं श्रीं ह्रूं स्वाहा।

विधि —घर मे तीन मास तक जाप करे, तो विकला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :–अणिमा (छोटा होना) आदि विद्या दे।

लक्ष्मी —मन्त्र :—ऐ कमले कमल धारिणी हंस स्वाहा।

विधि —लाल कनेर के फूलो से एक लाख जाप करे। कुंड मे गग्गुल से दशांस हवन करे। इससे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—पाच विद्या दे तथा मनवाछित धन दे।

कालकर्णि—मन्त्र :—क्रौं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा।

विधि :—ब्रह्म वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करे, मधु-मिश्रित दशाश हवन करे, तो कालकर्णि नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति –सैन्य स्तभन, अग्नि-स्तभन, मधु-स्तभन तथा गर्भ-स्तभन की विद्या दे।

महाभय—मन्त्र :—ह्रीं महाभय एहि स्वाहा।

विधि —श्मशान मे जहाँ मुर्दा जलाया गया हो, वहाँ बैठकर एक लाख जाप करे तो महाभय नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—रसायन दे, जिसके खाने से वृद्धावस्था नही आये व वृद्धावस्था हो तो युवा हो जाये।

माहिन्द्री—मन्त्र—माहिन्द्री कुल-कुल युल-युल स्वाहा।

विधि :—इन्द्र धनुप के उदय के समय निर्गुण्डो वृक्ष के नीचे बैठ कर १२,००० जाप करे, तो माहिन्द्री नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति —आकाश गामिनी, पाताल गामिनो, नगर प्रवेश, वचन सिद्ध, देव, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, वेताल, सोटिंग, आदि को दूर करने की शक्ति दे।

श्मसानी मन्त्र —ह्रा ह्रीं स्यु श्मशान वासिनी स्वाहा।

विधि —श्मसान मे नग्न हो कर ४ लाख जाप करे, तो श्मसानी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति —एक पट्ट दे, जिससे अदृश्य होकर तीनो लोको मे घूम सके।

वट्यक्षिणी मन्त्र —ऐ कपालिनी ह्रा ह्री क्ली क्लू हस ह्म्क्ली फुट् स्वाहा।

विधि —वट वृक्ष के नीचे बैठ कर चादनी रात मे तीन लाख जाप करे, तो वट नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति —साधक की स्त्री के रूप मे रहकर वस्त्र, अलकार, स्वर्ण, गन्ध व पुष्प आदि दे।

चन्द्रिका मन्त्र :—ॐ नमो भगवती चन्द्रिकाय स्वाहा।

विधि —शुक्ल पक्ष की रात्रि मे एक लाख जाप करे, तो चन्द्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति अमृत रसायन दे, जिससे हजार वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त हो।

घंटाकर्णि मन्त्र :—ऐं घटे पुर क्षोभय राजा नाम क्षोभय क्षोभय भगवती गंभीरः स्वरप्लीं स्वाहा।

विधि – बजते हुये घण्टे के साथ बीस हजार जाप करे, तो घटाकर्णि यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति – इतनी शक्ति दे कि पूरे नगर को भयभीत कर सके।

भीषणा –जनरजिका विशाला।

मन्त्र :—भीषणा क्षपेत माता छिते चिरं जीवितं कर्मव्या, साधकेन भगिन्या जन-रंगिनी कालोंजन रंगि के स्वाहा ।

विधि —एक लाख जाप से भीषणा सिद्ध हो जायेगी । उसके सिद्ध होने से जनरजिका सिद्ध हो जायेगी । ५० हजार और अधिक जाप से विशाला सिद्ध हो जायेगी ।

प्राप्ति —विशाला स्त्री के समान तथा जनरजिका, दासी के समान रहेगी तथा भीषणा इन दोनों के प च की स्थिति मे रहेगी ।

शोभना मन्त्र :—ॐ अशोक पल्लवा क्राटकर तले श्रीं क्षः स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र व माला से तीनो समय १४ दिन तक जाप करे, तो शोभना नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति —साधक की स्त्री के समान रहेगी ।

शंखिनी मन्त्र :—ॐ शंख धारिणी शंखा भरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ग्लीं श्रीं स्वाहा ।

विधि :—सूर्योदय के समय शख माला से १० हजार जाप करे, कनेर के फूल, सफेद गाय के घृत तथा आठ प्रकार के धान्य सहित दशास हवन करे, तो शखिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :—अन्न व पॉच रुपये प्रतिदिन दे ।

रत्न, उपभोग, फल व विधि

भारत मे भिन्न २ ग्रहो की दशा मे भिन्न भिन्न रत्नो को धारण करने का विधान है । इस सम्बन्ध मे निम्नाकित बाते विशेष रूप से ज्ञातव्य है ।

माणिक्य (मानिक) कौन धारण करें —माणिक्य सूर्य का रत्न है । यदि किसी के जन्म के समय सूर्य अनिष्टकारी हो तो उसे माणिक्य धारण करना चाहिये ।

धारण विधि —कम से कम ३ रत्ती का माणिक्य होना चाहिये । अपने जन्म मास की १, ९, १० या २८ वी तारीख को या रविवार को प्रात काल ग्रीवा, भुजा, या अ गुली में इसे धारण किया जाता है । लालडी (सूर्य मणि) को भी चादी मे जडवाकर रविवार को मध्यान्ह में धारण किया जाता है ।

माणिक्य को धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है —

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानों निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

मोती कौन धारण करें :—मोती चन्द्रमा का रत्न है। यदि किसी को जन्म के समय चन्द्रमा निर्वल है तो उसे मोती धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—२, ४, ६, ११ रत्ती का मोनी होना चाहिये। ७ या ८ रत्ती का मोती नही पहनना चाहिये। मोती को चादी मे जडवा कर शुक्ल पक्ष, सोमवार को सध्या के समय ग्रीवा, भुजा, या अ गुलो मे धारण करना चाहिये। इसे धारण करने का निम्माकित मन्त्र है —

ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय

महते ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय,

इम मनुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमष्यै विष एष वोडमी

राजा सोमोऽस्मांक ब्राह्मणानां राजा।

मूंगा कौन धारण करें —मूंगा मगल ग्रह का रत्न है। अत' मगल ग्रह की दशा मे इसे धारण करना चाहिये।

धारण विधि —जन्म कु डली मे मगल ग्रह ४, ८ या १२ वे स्थान पर हो तो ८ रत्ती का मू गा, सोने की अ गूठी मे पहनना चाहिये। चन्द्र मगल के योग मे चादी मे, मू गा जडवाकर पहनना चाहिये। ५ या १४ रत्ती का मू गा कभी नही होना चाहिये। मगलवार के दिन सूर्योदय से एक घटा पश्चात् ग्रीवा, भुजा या तीसरी अ गुली मे इसे धारण करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है —

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम्।

अपा रेतांसि जिन्वति।

पन्ना कौन धारण करें —पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। अत बुध की दशा मे ५ केरेट का पन्ना धारण करना चाहिये।

धारण विधि —पन्ने को स्वर्ण को मे जडवाकर अपने जन्म मास की ५, १४ या २३ तारीखको या बुधवार के दिन सूर्योदय के दो घटे पश्चात् ग्रीवा, भुजा, या मध्यमा अ गुली मे धारण करना चाहिते।

इसे धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है —

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जाग्रहित्व मिष्टापूर्त संसृजेथामयं च । अस्मि-
न्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।

पुखराज कौन धारण करे —पुखराज गुरु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। गुरु की दशा में पुखराज धारण करना चाहिये ।

धारण करने की विधि —७ या १२ कैरट का पीला पुखराज सोने की अंगुठी मे जडवाकर गुरुवार को साय सूर्यास्त से एक घटे पूर्व ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में धारण करना चाहिये । ६, ११, १५ रत्ती का पुखराज कभी धारण नही करना चाहिये ।

इसे धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है -

ॐ बृहस्ते अति यदिर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवश ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

हीरा कौन धारण करे : - हीरा शुक्र ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शुक्र की दशा मे हीरा धारण करना चाहिये ।

धारण विधि · —शुक्रवार की प्रात ग्रीवा, भुजा या अंगुली में धारण करना चाहिये ।

इसे धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है :—

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतों रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्
क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं
विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ।

नीलम कौन धारण करें —नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शनि की दशा में नीलम धारण करना चाहिये ।

धारण विधि .—५ या ७ रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए। शनिवार को सूर्योस्त से दो घटे पहले से ४० मिनट बाद तक इसे एक नीले कपड़े मे बाध कर भुजा पर धारण कर, तीन दिन परीक्षा करनी चाहिये यदि अनुकूल सिद्ध हो, तो धारण किये रहना चाहिये। हृदय पर धारण करने से यह उसे शक्ति प्रदान करता है।

इसे धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है .—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु, पीतये शंयो रभिस्त्रवन्तु नः ।

गोमेद कौन धारण करें —गोमेद, राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। राहु की दशा में इसको धारण करने से लाभ होता है।

धारण विधि —गोमेद ६, ११ या १३ कैरट का होना चाहिये। ७, १० या १६ रत्ती का कभी नही होना चाहिये। इसे धारण करने का समय सायकाल के अनन्तर दो घटे रात तक है।

गोमेद को धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है —

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता।

लहसुनिया कौन धारण करें —लहसुनिया, केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। केतु की दशा मे इसे धारण करना लाभ प्रद है।

धारण विधि —३, ५ या ७ कैरट का लहसुनिया धारण करना चाहिये। २, ४, ११ या १३ रत्ती क निषिध है। इसको चादी मे जडवाकर अर्द्ध रात्रि मे धारण करना चाहिये।

लहसुनिया को धारण करने का निम्नाकित मन्त्र है —

ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेषसे। समुषद्भिरजायथाः।

॥ ० ॥

श्वेतार्क कल्प

विधि —शनिवार के दिन वृक्ष के पास न्यौता देने जाये तो सर्वप्रथम 'मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" यह मन्त्र वृक्ष के सामने हाथ जोडकर बोले और चदन, चावल, पुष्प, नैवेद्य से पूजन करे, धूप दे और मोली बाधकर आ जाये। दूसरे रोज रवि पुष्य नक्षत्र को सुबह से पहले २ वृक्ष के पास नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जाये [और निम्न मन्त्र बोलकर वृक्ष की जड को वर ले आवे। जड पूर्व या उत्तर की ओर मुह करके लेनी चाहिये।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॐ संजु स्वाहा।

इस मन्त्र से मूल को लाकर पचामृत से धोकर ऊचे व शुद्ध स्थान पर रख दे, तत्पश्चात् पुष्य नक्षत्र रहते उस जड से भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति बनावे व निम्नलिखित मन्त्र से पूजा करे। इससे श्री गौतम गणेशजी की मूर्ति भी बनाई जाती है।

मन्त्र —ॐ नमो भगवति शिव चक्रे ! मालिनो स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फि किसी भी कार्यवश साथ मे लेकर जाये, तो अवश्य सफल हो इस सम्बन्ध मे निम्नाकित बाते और ज्ञातव्य है।

(१) जहा सफेद आक होता है कहते है कि वहा आसपास गडा हुआ धन होना चाहिए।

(२) सातवी ग्रन्थि मे ऐसी गाठ पडती है कि उससे गणेश जी कि सू डवाली आकृति बनती है। यदि दक्षिणावर्ती सू डवाली आकृति के श्री गणेश मिल जाये, तो बहुत चमत्कारी होती है।

(३) पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बाये हाथ मे इसे बाधने से सौभाग्य व लाभ होता है। ऐसा माना जाता है।

(४) वध्या स्त्री की कमर मे बाधने से सतान की प्राप्ति होती है।

(५) मूल को ठण्डे पानी मे घिसकर लगाने से विच्छू आदि का जहर व हर प्रकार का जहर उतरता है।

(६) मूल मे गोरोचन मिलाकर गुटिका कर तिलक करे तो सर्वजन वश हो।

(७) यह मूल, वच, हल्दी तीनो बराबर मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश मे हो।

(८) मूल, गोरोचन, मैनासिल भ्र गराज चारो मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश मे हो।

(९) मूल, हल्दी, कुट (लाज कुरी) स्वरक्त से भोज पत्र पर लिखकर हाथ में बाधे, सर्वजन वश हो।

(१०) मूल, वीर्य भ्र ंगराज, मिलाकर अंजन करे, तो अदृश्य हो।

(११) मूल का मेघा नक्षत्र मे कस्तूरी मे अजन करे, तो अदृश्य हो।

(१२) मूल का वच के साथ घिसकर हाथ के लेप करे तो हाथ नही जले।

(१३) मूल को छाया मे सूखाकर, चूर्ण कर घृत के साथ आधा रत्ती की मात्रा में खाने से भूत, प्रेत दूर होते है। स्मरण शक्ति बढती है। देह की क्राति कामदेव के समान हो जाती है। ४० दिन थोडी मात्रा मे सेवन करे। ऊष्णता का अनुभव हो, तो छोड दे।

पंचांग — फल, फूल, जड, पत्ते व छाल को पचाग कहते है।

पंचमैल :—कान, दात, आख, जिह्वा, और स्ववीर्य को पाच प्रकार का मैल कहते है।

मूल :— किसी भी पेड की जड को मूल कहते है।

बदा .—एक वृक्ष पर दूसरा वृक्ष निकल आता है। उसे बदा कहते है। उस वृक्ष की गांठ लेना चाहिये।

अपनी मा का नाम कागज पर लिखकर, मस्तक के नीचे दवाकर सोने से स्वप्न दोष कभी नही होता है। और यह रोग मिट जाता है।

काले धतूरे की जड ६ मासा प्रमाण चूर्ण कर कमर मे बॉधने से, स्वप्न दोप कभी नही होता है और बवासीर रोग ठीक होता है।

ह्रीं कार कल्प

सवर्ण पार्श्वं लय मध्य सिद्ध मधिश्वरं भास्वर रूप भासम् ।
खन्डेन्दु विन्दु स्फुट नाद शोभं, त्वां शक्ति बीज प्रमना प्रणौमि ॥१॥

अर्थ —जिसके पार्श्व मे (स) वर्ण है (ऐसा, 'ह') 'ल' और 'य' के मध्य मे सिद्ध विराजमान है। ऐसा 'र' उसके अन्दर इ' स्वर है जिसकी कान्ति दैदिप्यमान सूर्य के जैसी है, और जो अर्थ चन्द्र (कत) विन्दु और स्पष्ट नाद से शोभा पा रहा है। ऐसा यह शक्ति वीज है। मैं तुमको उल्हासपूर्वक मन मे भावपूर्वक स्तुति करता हू ॥१॥ नमन करता हूं।

ह्रीं कार मेकाक्षर मादि रूपं, मायाक्षरं कामद मादि मन्त्रम् ।
त्रैलोक्य वर्ण परमेष्ठि बीज, विज्ञाः स्तुवन्तीशभवन्त मित्यम ॥२॥

अर्थ —हे ईश ह्री कार आपकी विद्वान पुरुष ह्री कार, एकाक्षरी, आदि रूप मायाक्षर कामद, आदि मन्त्र, त्रैलोक्य वर्ण और परमेष्ठि वीज, ऐसे विशेषणो से स्तुति, करते हैं।

शिष्यः सुशिक्षां सु गुरोर वाप्य, शुचिर्वशी धीर मनाश्च मौनी ।
तदात्म बीजस्य तनोतु जाप मुपांशु नित्यं विधिना विधिज्ञः ॥३॥

अर्थ —सद्गुरु के पास पूर्ण आज्ञा प्राप्त करके, विधि को जानने वाले शिष्य को पवित्र होकर सर्व इन्द्रियो को वश मे कर पूर्ण रूप से, मन मे धर्य धारण कर, मौन रखकर इस आत्म वीज ह्री कार का विधियुक्त उपाशु जाप नित्य करना चाहिये ॥३॥

विशेष —ह्री कार के जाप व ध्यान करने वाले को प्रथम गुरु से आज्ञा प्राप्त करना चाहिए। फिर स्वय पूर्णरूपेण शुद्ध होकर धैर्यपूर्वक इन्द्रियो को वश मे करता हुआ मौन से उपाशु जाप करे। जाप करने के पहले सकलीकरण करना परम आवश्यक है। यहा उपाशु जाप का अर्थ है कि विना वोले मन्त्र पढना, जिस मे होठ हिलते रहे। जाप १ लक्ष करना चाहिये। जाप करने का स्थान श्वेत खडी से रगा हुआ मकान हो, सफेद ही कपडा हो, सफेद ही अन्न का भोजन करे, सफेद ही माला हो, जाप करने वाले को अपने शरीर मे सफेद चदन का विलेपन करना चाहिये। पक्ष भी शुक्ल हो, पहले एक ताम्र पत्र अथवा सोना, चाँदी वा कासे के ऊपर ह्री कार खुदवा ले, फिर ह्री

कार यत्र का पचामृत अभिषेक कर के, उत्तमोत्तम अष्ट द्रव्यो से पूजा करे, फिर ॐ ह्री नम की आराधना शुरू करे। जाप करने वाले को एकासन अथवा उपवास करना जरूरी है। उपवास कृष्णपक्ष की अष्टमी वा चतुर्दशी को करके विद्या आराधना करे शुक्ल पक्ष मे भी कर सकते है। षट् कर्मो के लिये कोष्टक को देख लेवे। उपवास करने वाले साधक को दस हजार जाप से भी विद्या सिद्ध हो जाती है। विद्या सिद्ध हो जाने के वाद इस माया बीज ह्री कार को कौन-कौन कार्य के लिये किस किस वर्ण का ध्यान करना चाहिये सो कहते है। ('सफेद रग का ह्री" का ध्यान करने का फल")।

त्वांचिन्तयन् श्वेत करानुकारं, जोत्स्नामयीं पश्यतिया स्त्री लोकोत्मा।

(म) श्रयन्ति तंतरक्षणतोऽनवद्य विद्या कला शान्तिक पौष्टि कानि ॥४॥

अर्थ .—चन्द्रमा के समान उज्ज्वल ह्री का ध्यान करने वाले को सर्व विद्याए, सर्व कलाए और शातिक पौष्टिक कर्म तत्क्षण सिद्ध हो जाते है। जो ह्री को तीनो लोक मे प्रकाशमान होता हुआ ध्यान करता है। और शुक्लवर्ण का ध्यान करता है। उसकी विपत्ति का नाश होता है। अनेक रोगो का नाश, लक्ष्मी और सौभाग्य की प्राप्ति, बधन से मुक्ति। नये काव्य की रचना शक्ति प्राप्त होती है। नगर मे क्षोभ पैदा करना व सभा मे क्षोभ पैदा करने की शक्ति और आज्ञा ऐशवर्यफल की प्राप्ति होती है ॥४॥

"रक्त ह्रीं कार के ध्यान का फल"

त्वामेव बाला रुणमण्ड लाभं स्मृत्वा जगत् त्वत्कर जाल दीप्तम्।

विलोक तेयः किल तस्य विश्वं विश्वं भवेद्वश्यम वश्यमेव ॥५॥

अर्थ—हे ह्री कार तुम उदित हुए बाल सूर्य की कान्ति के समान अरुण हो। आपके अरुण मण्डल मे सारा ससार विहिन है। जो इस रूप मे आपका ध्यान करता है उसके वश मे समस्त ससार अवश्य हो जाता है। अन्य आचार्यो के मतानुसार लाल वर्ण के ह्री कार का ध्यान करने से समोहन, आकर्षण और अक्षोभ भी होता है ॥५॥ स्त्री आकर्षण के लिए स्त्री के योनि के मध्य मे ध्यान करना।

पीतवर्णी ह्रीं कार के ध्यान का फल

यस्तप्त चामी कर चारु दीपं, पिङ्ग प्रभं त्वां कलयेत् समन्वात्।

सदा मुदा तस्य गृहे सहेलिं, करोतिकेलिं कमला चलाऽपि ॥६॥

अर्थ —जो पीले कान्ति सहित तुमको तप्त सुवर्ण के समान सुन्दर सर्वत्र प्रकाशमान ध्यान करता है। उसके घर मे चलाय मान लक्ष्मी भी आनन्द और लीला सहित क्रिडा करती है। वह स्तभन कार्य और शत्रु के मुख बन्धन मे उत्तम कार्य करता है ॥६॥

'श्याम वर्ण ह्रीं के ध्यान का फल'

यश्यामल कज्जलमेचकाम, त्वां वीक्षतेवा तुष धूम धूम्रम

विपक्ष पक्षः खलु तस्यवाना, तताऽभ्रवद्या त्यचिरेण नाशम् ॥७॥

अर्थ —जो साधक ह्रीं कार मायावीज को काला काजल के समान श्याम वर्ण रूप अथवा छिलके के धुआ के समान ध्यान करता है। उसके शत्रु समुह क्षण भर मे नाश को प्राप्त हो जाते है। जैसे पवन से मेघ विखर जाते है। नि सन्देह शत्रु को मरण प्राप्त करा देता है। और नील वर्ण का (ह्रीं) तुम्हारा ध्यान करने से विद्वेषण और उच्चाटन करता है ॥७॥

कुडली स्वरूप ह्रीं के ध्यान का स्वरुप

आधार कन्दोद्गत् तन्तु सूक्ष्म लक्ष्यद्भोवं ब्रह्म सरोज वासम्।

योऽध्यायति त्वां सर्व बिन्दु बिम्बा मृतं स च स्यात् कवि सर्व भौमः ॥८॥

अर्थ जो मूलधार कन्द मे से निकलता हुआ तन्तु के समान सूक्ष्म सुषुम्ना नाडी मे रहने वाले लक्ष्यो (चक्रो) को भेद कर ऊपर जाता हुआ अन्त मे सहस्रार कमल मे रह स्थिर हो कर वहाँ चन्द्रमा के विम्व के समान अमृत झर रहा हो ऐसा ह्रीं कार माया बीज का ध्यान करता है वह साधक कविओ मे श्रेष्ठ चक्रवर्ति होता है ॥८॥

पल श्रुति षड् दर्शनि स्व स्व महादलैपैः स्वे 'दैवतं त (त्व) न्मय बीज मेव। ध्यात्वा तदाराधन वैभवेन. भवदे जेयः परिवादि वृन्दैः ॥९॥

अर्थ :—षडदर्शन के जान कार अपने अपने इष्ट देवता ह्रीं कार वीज का ध्यान करके वे आराधना के वैभव से प्रविष्ट होकर वादिओ के समुह से अजेय वन जाते है। ऐसा इस माया वीज का अतिशय है।

किं मन्त्र यन्त्रै विविधागमोलैः दुःसाध्यसं
नीति फलाल्प लाभैः

सुसेव्यः वः (सद्यः सुसेव्यः) फलचिन्ततार्याश्चिक प्रदश्च (त) सिंचेत्व मेकः
॥१०॥

अर्थ :—साधक के हृदय मे एक ह्री बार अगर विद्यमान है, तो अन्य यन्त्र मन्त्र जिनका कि अल्पफल है और दू साध्य है, ऐसे मन्त्रो अथवा यन्त्रो का क्या प्रयोजन है। अन्यत्र आगम मे जिनका वर्णन है ॥१०॥

चौरारि-मारि-ग्रह-रोग, लूता भूनादि दोषा नल बन्ध नोत्थाः ।

भियः प्रभावात् तव दूर मेव नश्यन्ति पारीन्द्रखारि वेभा ॥११॥

अर्थ जैसे वनराज सिह की गर्जना से हाथी दूर भाग जाते है, वैसे ह्री कार तुम्हारे प्रभाव से चोर, गाग़ु मारी, ग्रह, रौग ह्लता रोग तथा भूत, व्यतर, राक्षस, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी पिशाचदी दोष और अग्नि तथा बन्धन से उत्पन्न होने वाला भय दूर हो जाते है ॥११॥

प्राप्नोत्यपुत्रः सुतमर्भहीनः श्री दायते पतिरपोशतीह ।

दूःखो सुखी चाऽभ भवेन्न किं किं, त (त्व) द्रुपचिन्ता मणिचिन्तनेन ॥१२॥

अर्थ —चिन्तामणि समान तुम्हारे रूप का चितन करने से क्या-क्या प्राप्त नही होता ? जिसको पुत्र नही है उसको पुत्र की प्राप्ति होती है, जिसके पास लक्ष्मी नही है उसको लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। सेवक भी स्वामी बनता है दु खी भी अत्यत सुखी होता है ॥१२॥

विशेष—इस ह्री कार को साधक सालबन ध्यान से निरालबन ध्यान करे फिर निरालवन ध्यान मे से पराश्रित ध्यान करे, उसके बाद उल्टा पराश्रित ध्यान मे से निरालंबन और निरालबन मे से सालवन ध्यान करे, इस प्रकार ध्यान करने से अनेक सिद्धिया प्राप्त हो जाती है। सल बन बाह्य पर आदि आलबन सहित ध्यान ॥ निरालबन—बाह्य आल बन विना केवल मन के द्वारा ह्रीकार की आवृतिका ध्यान करना। पराश्रित ह्री कार से वाच्य ऐसे परमात्मा के गुणादिका ध्यान करना।

पुष्पादि जापामृतहोम पूजा, क्रिया धिकारः सकलोऽस्तुदूरे ।

य केवल ध्यायति वीज मेव. सौभाग्य लक्ष्मी वृणुत स्वयंतम् ॥१३॥

अर्थ :—पुष्प वगैरह के जाप से क्या, घी के होम से भी क्या, पूजा वगैरह समस्त क्रियाओ का अधिकार दूर रहा, किन्तु केवल तुम्हारे वीज रूप ध्यान से समस्त सौभाग्य रूपी लक्ष्मी स्वय वरण, करती है ॥१३॥

महिमा :—

त्वतोऽपि लोकः सु कृतार्थ काम, मोक्षान पुमर्भाश्चतुरो लभन्ते ।
यास्यन्ति याता अथ यान्तिये ते, श्रेय परं त्वमहिमा लवः सः ॥१३॥

अर्थ —तुम्हारे प्रभाव से लोक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थो की प्राप्ति करते हैं। जो मोक्ष का स्थान है उसको प्राप्त कर रहे है, कर गये है और आगे भी करेगे। वे सव तुम्हारी महिमा का अ श मात्र है। क्योकि एक ह्री कार माया वीज के अन्दर चौवीस तीर्थ कर, चौविस यक्ष, चौवीस यक्षिणी, समाविष्ट है। ह्रीकार को सिद्ध परमेष्ठि वाचक भी कहा है, और इस ह्री कार मे धरणेन्द्र पद्मावती पार्श्वनाथ प्रभू का भी वास है। मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक को ह्री कार का कैसे स्थान चाहिये सो वताते है।

वृक्ष, पर्वत, शिलाओ से रहित क्षीर समुद्र के समान जो सम्पूर्ण वाधाओ से रहित आनन्द दायक शात अद्वितीय क्षीर से परिपूर्ण जैसे क्षीर का महासागर हो ऐसी इस पृथ्वी का चितवन करे। फिर ऐसी पृथ्वी के वीच अष्ट दल कमल, कमल दल पर ह्री कार उसके वीच कणिका मे स्वयं मै उज्ज्वल कान्तिमान पद्मासन लगा कर वैठा हू ऐसा चितवन करे। फिर स्वय को चतुर्मुख तीर्थ कर, के समान समवसरण सहित ध्यान करे, चारो गतियो का विच्छेद करने वाला सर्व कर्मो से रहित पद्मासन से वैठा हुआ श्वेत स्फटिक के समान शोभा को प्राप्त कर रहा हू उसके वाद ब्रह्मरध्र मे स्थापन किया हुआ स्फटिक के समान वर्णवाला ह्री कार के वीच अपनी आत्मा को वैठा हुआ देवे फिर ह्री कार के प्रत्येक अ ग से अमृत झर रहा है। और उस अमृत से मेरी आत्मा का सिचन हो रहा है, ऐसा चितवन करे, ऐसा ध्यान करने से साधक तद भव मोक्ष सुख पा लेता है, अथवा तीन चार भव मे नियम से मोक्ष पा लेता है।

विधामय. प्राक प्रणवं नमाऽन्ते, मध्येक (च) वीजननु जग्नपाति
तस्यैक वर्णा वितन्योतय वन्ध्मा, कामार्जुमी कामित केव विद्या ॥१४॥
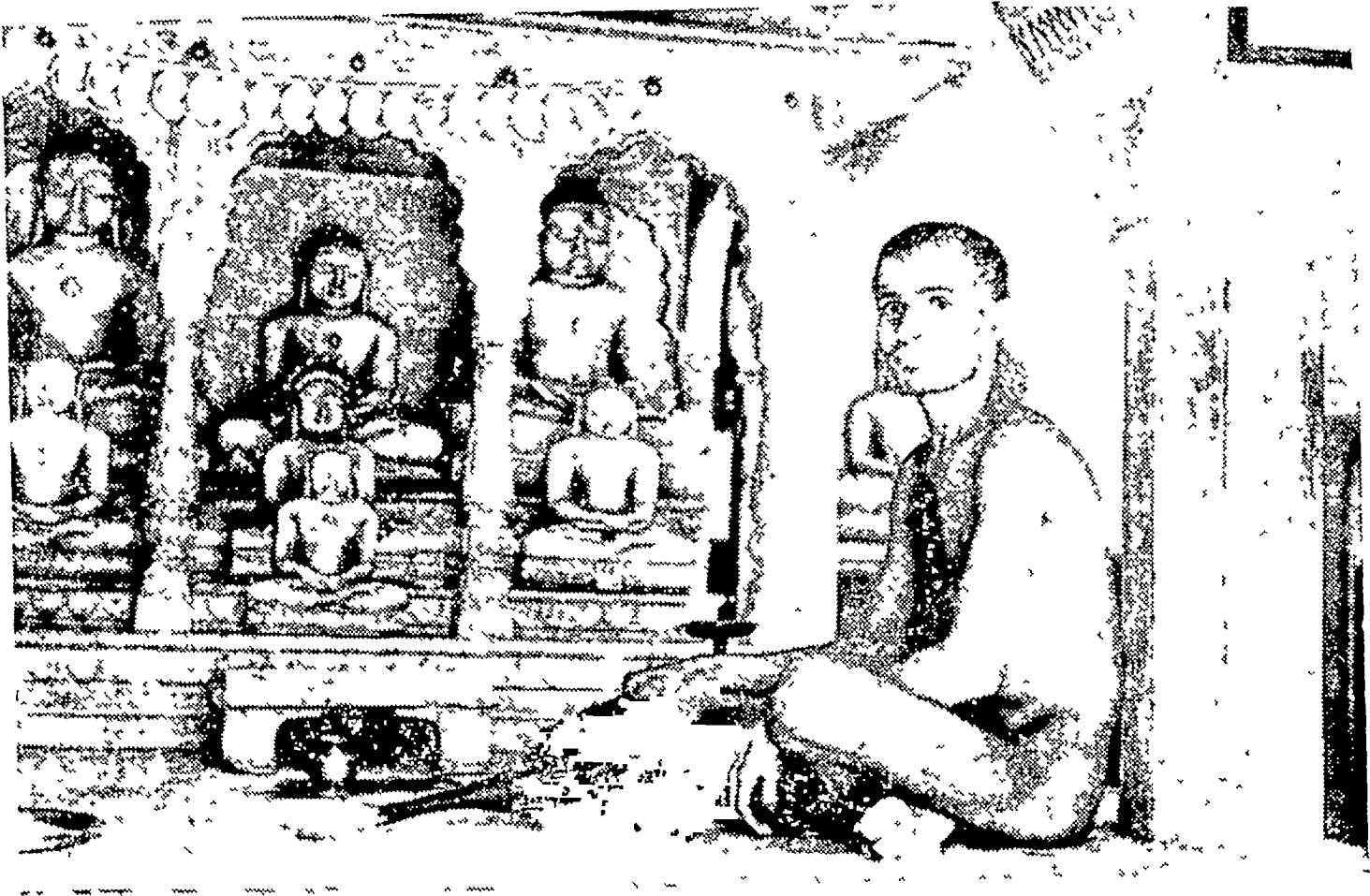
जयसिहपुरा खोर (कानीखोह) के दिगम्बर जैन मन्दिर की मूल वेदी मे —
१०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज

दिगम्बर जैन मन्दिर जयसिंहपुरा खोर पर १०८ आचार्यश्री कुन्थुसागर जी महाराज
व गणनी १०५ आर्यिका श्री विजयमती माताजो आहार लेते हुये, पास मे मन्दिर के
मानद-व्यवस्थापक, श्री लल्लूलाल जैन गोधा, दिखाई दे रहे है।

जयपुर निवासी गुरु भक्त संगीताचार्य श्री शान्तिकुमार गंगवाल आचार्य श्री के चातुर्मास अकलूज जिला सोलापुर (महाराष्ट्र) मे माताजी के केश लोंचन समारोह के बाद अपने परिवार जनो के साथ पिच्छी व ग्रन्थ भेंट करते हुए ।

अर्थ :—जो साधक पहले प्रणव "ॐ" और अन्त में "नमः" मध्य में अनुपम बीज "ह्री" कार का बार बार जाप करता है, उसके सर्व मनवाच्छित कार्य एक वर्नबाही अवश्य और कामधेनु के समान ह्री कार विद्या विस्तारती है, इसको एकाक्षरी विद्या कहते 'हे' ॐ ह्री नमः ।१५।

नोट —ध्यान रहे कि शुक्ल ध्यान का ह्री को छोड कर बाकी पिली, लाल, काली, जो भी वर्ण का ध्यान करने का आया है, उस उस वर्ण के ह्री, को शत्रु के हृदय मे ध्यान करे मारण कर्म के लिये शत्रु के नाभि मे ध्यान करे ।

मालामिमा स्तुतिमयीं सुगुणां त्रिलोकी ।
बीजस्य यः स्दहृदये निधयेत् क्रमात सः ।।
अङ्कुऽष्ट सिद्धिर वशा लुठतीह तस्य
नित्यं महोत्सव पदं लभते क्रमात् सः ।।१६।।

अर्थ :—जो मनुष्य त्रैलोक्य बीज रूप अच्छे गुण वाली स्तुति रूपी इस रूपी इस माला को तीनो काल अपने हृदय मे धारण करता है, उसके गोद मे आठो सिद्धिया अवश्य बन कर नित्य ही आती है और क्रम से मोक्ष पद की प्राप्ति कराती है ।१६।

सोना चांदी बनाने के तन्त्र

(१) स्वर्ण माक्षिक ८ मासा

पारा	४ मासा
ताबा	४ मासा
सुहागा	४ मासा

इन सबको मिला कर 'कुप्पी' मे डाले 'फिर अग्नि मे गलावे' तो शुद्ध चांदी हो ।

(२) गंधक को ओटा कर (गर्म कर) प्याज के रस मे भुजावे १०८ बार, फिर उस गंधक को चादी के साथ गलावे तो सोना होता है ।

(३) हिंगुल शुद्ध १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला को एकत्र करके रूद्रवन्ति के रस मे घोट कर, चादी के पत्रे पर लेप करके पुट देवे, तो सोना हो ।

(४) साग बीज एक जात की बूटी होती है । उसके पत्त की लुगदी में ताबा रख कर अग्नि मे फूके तो स्वर्ण वने ।

(५) गाथा —नाग फणिए मुलं, नागण तोए एणगभनागेण

नागण होइ सूवण धमत पुण्ण जोगेण ।।
समयसार जयसेनाचार्य की टीका मे ।

अर्थ —नागफणी की जड लेना, चादी गलाइ हुई लेना, उसमे सिन्दूर मिला कर घोटना फिर उस द्रव्य को अग्नि मे धोकना तो सोना बनता है, यदि पुण्ययोग हुआ तो ।

(६) शुद्ध हिंगुल का एक तोले का डला लेकर उस हिंगुल के डले को गोल बेगन काला वाला को चीर कर उसमे उस हीगुल को रख कर उपर से कपडा लपेट कर, फिर मिट्टी का उस बेगन पर खुब गाढा लेप करे, फिर उस बेगन को जगली कडो के अन्दर रख रख कर जलावे, जब कण्डो की अग्नि जल कर शात हो जावे तब उस बेगन को निकाले। वेगन के अन्दर से उस हिंगुल के डले को निकाल लेवे। इसी तरह क्रमश १०८ वेगन मे उस हिगुल के डले को फूके। यह रसायन तैयार हो गई। इस रसायन मे से एक रत्ती लेकर एक तोला तावे के साथ मिला कर कुप्पी मे गलावे तो १ तोला सोना तैयार हो जायगा, लेकिन णमोकार मन्त्र का सतत जप करना होगा ।।

(७) लोहे के लुपा चेउधा चेपक्का सेर दुधाचेमा लोल सारख त्याल सेराचा दुधत्या भर मिलउन सख्या समोल तोले ६ आत घालणे धोडयाची चूल करणे वर लोट के ठेव ने शनसेनी अग्नि देवी रुचिक आटवने मगपुरे करने म्हण जे कल्क झाला जतन ठेवणे तोला १ लॉव्या चेपानी करणे रसफिरो लागलाम्हण जे सामध्ये अर्द्ध मासा कल कणे काटकाणे समरस करणे हालवने भुसीस धमकव ने से नाचे मुसील बोलने घड झा ल्यावर काढने म्हण जे शुद्ध धवल होय ।।इति।।

(८) कई होय अर्द्ध मेला होय मागुनो पानी कर ने एक तोल मास दाने तोले रूप मिलविणे धवल शुद्ध होय हा एक तोल्या चा अनुपान ।

(९) लाल फूल वटो लापान वहुत होय है। रानोरान जडभूल का किया थाना। नाथ कहे कथील हुआ रूपा वटोल पान सफेद फूले येफै लोसव ही रान एक थेत्र से पारा मारू नाथ कहे कचन रूप ।

(१०) जस्त तोला १ पाँढया व सूच्या भावना सात देणे मग पत्र करणे कटक वेधनी ताडन रसान सिजवे म्हण जे एक फुट जाले मागु ते लाडन सिजवने म्हण जे पुटि २ झाले मागुते लाडन एसे पुट सात देणे मगपुरे करणे मग एक मुसीत घालोन कोलसा वर ढेऊन कोल से पेटवा वे त्याचे पानी करणे रस वरापि घलला म्हण जे मग काही थोडी

बहुत मुस थोडी वहुत घड झाल्या वर रस जो मुसीर ढले सरल तो त्या मध्ये पारा तोला १ मे लवने पारा व जस्त तत क्षण एक होती मग ते खला मध्ये बारीक करून ठेवणे म्हण जे कलक सिद्ध साध्य झाला एक करून ठेवणे ताब पत्र कटक वेधनी करुन मग रूई चेपाना चा रस काहुन हे वणे मग ताम्र पत्र लाऊन रूई रसात सिजवने एसेपुट ७ देणे मगपूरे करणे मग श्वेत झालीया एक मुसीत घालणे त्याचे पानी करणे ।। इति ।।

शुल्जस्य भाग त्रतय नेकैकं नाग वेगयोः ।। ११ ।।
समावर्त्य विचूरायार्थं सिद्ध चूर्णेन पूर्ववत् ।
नागमेक द्वयंशु ल्वंषट् शुल्वं चैकं पन्नगं ।। १२ ।।
रूघ्वाधियातंतु तच्चू हेमगेरिकं ।। १३ ।।
रूध्वाध्मातं पुनश्चूर्णे सिद्ध चूर्णे न पूर्ववत् ।
गंध केनहतं शुल्वं माक्षि कं कंच समं समं ।। १४ ।।
हंस पाच्यि त्रक द्रायै दिन मेकं विर्मदयेत् ।
तैनैव तार पत्राणिलिप्त्वा रूध्वा पुटेप चेत् ।। १५ ।।
समुद्ध पुटा त्पश्चा त्कृत्वा पत्राणि लेपयेत ।
पूर्वक ल्केन रूध्वाथपुटं दत्वा समुद्धरेत् ।। १६ ।।
इत्येवं सप्तधा कुर्यात्तार मायाति कांचनम् । इति ।
राजावर्त्त च पारापत मलं समं ।। १७ ।।
असित्यसेन कुरू तेस्वर्ण रोप्यं च पूर्ववत् । इति ।
रसै शिर्राष पुष्पस्य आर्द्र कस्य रसै समै ।। १७ ।।
भावयेत्सम वाराणि राजावर्तसु चूर्णितं ।
तेनैव शत स्वर्ण तार द्रुतं समं ।। १६ ।।
वेधयेत् सर्व मांशेन वत्सिद्धं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।
कुंकुमं विमलं ताप्यं रस कंद रदं शिला ।। २० ।।
राजावर्त प्रवालं च राजी गैरिक टंकणं ।
सैंधवं चूर्ण ये त्तुत्यंम शीत्यंशेन वेधयेत ।
काच माच्या द्रवैः समं ।। २१ ।।

णमं मर्धतु तैरूध्वा आरण्योत्पल कै पुटेत् ।

इत्ये वं तुत्रिधा कुर्यान्मर्दितं पुट पाचितं ।। २२ ।।

तद्धं हिंगुलं शुद्ध क्षिप्त्वा तस्मिन्वि मर्दये त्कांजि कै यमि मात्रंहि पुटे नै केन पाचयेत् ।। २३ ।।

अस्य कल्कस्य भागेकं भागा श्चत्वारिहाटकं ।

अंधभुर्वाग तंध्मातं समादाय विचूर्णयेत् ।। २४ ।।

पूर्ववत्पूर्व वत्कल्केन रूध्या दयं पुटे पुनः ।

अनेन षोऽशां शेनसित वर्ण वेध येत ।। २५ ।।

सेचये त्कांगुणी तैलं रक्त वर्णन भावित ।

पुनर्वेध्य पुनः सेच्य षोडशांशेन बुद्धिमानं ।। २६ ।।

एवं वार त्रयं वेध्यं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।

ताम्र तुल्य स्य नागस्य शोध येत् ध्यमनेन च ।

ताम तुल्यं शुद्ध हेम समा वर्त्य लिपत्रयेत् ।। ३२ ।।

इष्टि का तुवरी चैव स्फटिका लवणं तथा ।

गैरिकं भाग वृद्धंशं मारना लेन पेषयेत् ।। ३३ ।।

तेनलिप्तवा पूर्व पत्रं रुध्वा सज पुटे पचेत् ।

एवं पुनः पुनः पाच्यं थावत्स्वर्ण विशेषितं।। ३४ ।।

तत्स्वर्णं ताम्र संयुक्तं समावर्त्या तुपत्रयेत्पूर्व वत्पुट पाकेन पचेत्स्वर्ण विशेषितं ।। ३५ ।।

इत्येवं षड्गुणं ताम्र स्वर्णे वाह्यं क्रमेण तत् ।

तत्स्वर्ण जायते दिव्यं पद्मराग समः प्रभः ।। ३६ ।।

षड्त्रिंशेन ते नैवमष्ट वर्णंतु वेध येत् ।

तत्सर्वं जायते दिव्यं दशवर्णं न संशयः ।। ३७ ।। इति ।

समं ताप्यं ताम्र चूर्ण ताप्यार्द्ध लोह चूर्णकं ।

कन्या द्रावै क्षणं मर्द्य तै रे व मर्दयेत् ।। ३९ ।।

एवं वाराश्च तुषष्टि त तः शुष्कं विचूर्णयेत् ।।
षोऽशां शेन तैनैव मण्ट वर्णं तु वेधयत् ।। ४० ।।
तत्स्वर्णं जायते दिव्यं दश वर्ण न संशयः ।इति ।
गंधकेन हृत स्वाल्वं दर्दार्द्ध युत सुतकम् ।
मन शिले समायुक्तं मातुलिंगेन मर्द ते ।।
नाग पत्र प्रलेपानां त्रिपुटं कुंक मारून सन्नभम् ।।
तार वेदश्य त्रिगुणं ध्मैतं तारामायात कंचनम् ।। १ ।।

गधक लेके वाटे पानी से तावे चे तगड को लेप करे । अग्निदेय ताम्र भरेनतर हिंगुल जस्त मनशिल समभाऽ। लेय वा ताम्र मरलेला एकम् करिनिंबू रस से खरल करे दिन इनतर सीस को पत्र करीते वाट लेली जिनरु तेपत्रास लेप करे मग रान गोविरी की अगार कापुटती न देय । तर ते शीस मरेल नतर ३ भाग चांदी १ भाग ते नाग भस्म मुसमे गलावे वसु थाय ।। इति।।

गन्धकेन हृले सुल्वं दर देन समान मिता ।।
तत समा मनि शिला युक्तं मातु लिंगेन मर्दताम् ।।
त्रिषष्ट पुट नं नागं कु कुमारुन सन्न भम् ।।
पोडशं शतार वेदांत एवं भव तु कांचनम् ।। २ ।।

गधक से ता वामारे हिंगुल क दोई समान मन शिल लेप निंबू रस मे मर्दन करे शीशे पतरा को लेप करे नतर रान गोवि रोके छपुट दे अग्नि की मूतर कु कम सारभस्म होय षोडश भाग चादी एक भाग ते भस्म एक भाग मुसमे गलावे पीत ।। इति ।।

गंधिकं मधु संयुक्तं हरि वीर्येन मर्दताम ।।
भूमिस्ता मास मेकं तारा मयात कंचनम् ।। ३ ।।

गन्धिक मदुपारा एकत्र करी खल करै दिवस २ शीशी मे भरे । उकरडा मे गाढे मास १ मग काठुन तोला चा दीसु मासादेय वसु ।। इति ।।

हार मेकं मयं तीरं तार तीक्षण चतुर्गठां ।।
चतुरष्ट मष्टवंगं च वंगं स्थंभन रौषधंम् ।। ४ ।।

पीतल चादी पौलाद रेत ४ कथील भाग ८ एकत्र मुस मेंगलावे, एक मेक होय जाय

तव निकाल लेय ते जिनस घट होय नतर वारीक वाटी तोला कथीन्द को पानी करी एक मासा कथीला सी देय रजत ॥ इति ॥

हिंगुलक उत्तम लेत्र तोला १ खडा काले बैंगन मे भरे। फिर बैंगन की कपर मिट्टी का लेप करे। अग्नि मे देय जव बैंगन पक जाय, ठड भये काटे। एसे१०८ बैंगनमे पकावे। एप्रमाण करे भस्म होय ते भस्म तोला तावे को गू ज देय वसु ॥

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंताणं रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का जाप्य ४५०० करे ॥ इति ॥

जूनी ई ट लेय १ साचे दल वाटे ४ के सममधी खड्डा करके खड्डी मे पारा भरे तोला २ मग जस्ताची वाटी तो पाच की ऊपर वौधी ढेवे। पारा को ऊपर मग भौताल वाटी की सधी (साठ) गुड चुना ओमू चे मग तीन पत्थर के ऊपर ई ट चढावे। नीचे अगार नर वेर की लकडी की देय प्रहर १६ मगने वाटी ऊपर हजार नीबू को रस लेप चो वादे सोलह प्रहर मग ठंडी भवे निकारे नारियल फोडे।

मन्त्र जप :—ॐ नमो भवावते अर भटे मस रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॥

जप १०,००० नतर ते भस्म पर की तोला तावे को गूज १ देय उत्तम पीत। जस्त भस्म देय तर मध्यम भगार ॥ इति ॥

पारास्तंभन का तंत्र

मन्त्र :—अल वाधो, थल बांधो, बांधो जल का नीरा, सात कोस समुंदर बांधो, बांधो बावन वीरा, लंका ऐसी कोट, समुंदर ऐसा खाइ, पारा तेरा उडना बांधो, शिव तोर वी जाई बंध जा पारवती की दोहाइ ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि – इस मन्त्र को कमलाक्ष की माला से पूर्व की तरफ मुख करके चौरासी हजार जप करे, दशास अग्नि मे आहूति देवे, होम द्रव्य, खोवा, १ सेर, शहद १ सेर, सौप १ सेर, दूध १ सेर, घी १ सेर आम की लकडी। तव मत्र सिद्ध होता है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने के वाद पारा एक रुपया भर से लेकर नोसो भर पारा तक एक पात्र मे धर, छोटा वरि आरी वूटी का दो चार पत्र डारि, इसी मन्त्र को १०८ अथवा तीन, अथवा सात, अथवा एक इस वार मन्त्र पढि २ पारा कु फूक के ढाक ते जाना, मन्त्र पढते जाना, अच्छी भाति ढाको के गोवढे (कडे) सेर २ सेर के अग्नि मे कप रोटी करके डार देना, पारा की चादी हो जायगी। यह सिद्ध सावर मन्त्र हे रसायन का।

(१) गधक एक भाग, पारा दो भाग, हरताल भाग तीन, सिसा भाग चार, पीला वधारी याने पीले नीलवनी उसके रस मे खल कर तावे को पुट देने से सुवर्ण के समान पीत होता है। सिद्धम् इति।

(२) हरगा खुरीताश्वे रस में घुमाना चाहिये। ताबे मे पारा भस्म अथवा शिशभस्म प्रयमत डाले उसके बाद रस मे घुमावे। सिद्धम्।

(३) फन्हेरा मंशिल पतोला उसका रग कनेर के फुल जैसा रहता है। १ तोला कयिल का पानी करना। उसमे एक रती गुज म सिल डालना। उसमें शुद्ध शुभ्र होता है।

(४) कलकपारा सेर ७७२ काले पत्थर के खल मे उसको घोटना। सफेद रिगणी उसके फूल सफेद होते है उसको तोडकर उसके वाद भूजा शाखा पाला घिसकर उसका रस बनाना। २सेर खल में डालकर उसको खलना। पारा मक्खन जैसा बनता है। कुम्भार से एक बेलनी लाना। उसमे खल किया हुआ पारा डालना। एक वीतभर खड्डा खनना। खैरका कोयला भट्टी जलाना। उसपर वेलनी रखना। उसमें रिगणी का रस डालना। वेलणी आटे को पाक करना। पारा और रस ओटने के बाद पूरा पारा पीता है।

(५) समभाग सोना भाग १ सब्जी खार भाग १ फटकडी भाग १ सोरा कलमी भाग १ सख्या समोल १ नगसागर रूनी कौषध कज्जकली ६ वटिका करना। उस पर पुट देते जाना, सात बार पुट देना। ताम्र धवल शुद्ध होता है।

(६) सफेद फुलोक कोहला लेकर उसका ऊपरी हिस्सा निकालना। उसकी शाक पकाना। उसमे कथीफ डालना। पकने बाद ठडा होने के बाद निकालना। शुभ्र धातु होय।

पूज्यपाद स्वामी कृत

सोना बनाने की विधि :—

श्लोक —पारद पलमेक च हरिताल च तत्समम्।
गधक च तयो तुल्यं मर्दनीयं विशेषतः।
दिनेक सूर्य दुग्धेन पश्चात् छाया विशेशतं।
कोपिको दूरे विनिक्षिप्य मुख रूध्वा विपाचित।
रतिमात्र प्रयोगेन दिव्यं भवति काचनम्।

अर्थ —पारद १ पल, हरताल १ पल, और गधक १ पल, इन द्रव्यो को लेकर विशेष रूप से मर्दन करे, आकडे के दूध मे, फिर छाया में सुखा कर उसको साने गलाने को कुप्पी मे डालकर मुख को रूध करे, फिर अग्नि मे फूके तब एक रसायन तैयार हो जायगा, उस रसायन को १ रती, तोला ताबे के ऊपर प्रयोग करे तो शुद्ध सोना होता है।

गधक से ताबा को मारकर हिंगुलक दोई समान, मनशिल लेप नीबू रस मे मर्दन करे, शीमा के पतरा पर लेप करे, फिर रानगोबिरो के ६ पुट देवे अग्नि मे तो कुकुमसार भस्म हो जायगा। सोलह भाग चादी पर वह एक भाग रसायन भस्म, लेकर कुप्पी मे गलावे तो सोना होता है।

श्लोक – गधिक मधु सयुक्त हरी वीर्येन मर्दताम् ।
भूमीस्ता मासमेक तारामायात कचनम् ।

गधक, मद, पारा, एकत्र करके खरल करे, दिवस २ शीशी मे भरे, उकरडा मे गाडे मासा १ निकाल कर एक तोला चादी के साथ गलावे तो सोना होता है ।

पीतल चांदी पौलाद रेत ४ भाग कथील भाग ८ एकत्र मुसल मे गलावे, एक मेक हो जाय, तव निकाल कर, जव जिनस घट्ट हो जाय नन्तर वारीक वाटी तोला कथील को पानी-करी एक मसा कथील देय तो चादी वने ।

चांदी बनाने का तंत्र

तरबूज सेर पाच मे ज्यादा कुछ तौल मे होय ऐसा एक तरबूज ताके तले की तरफ तेचकरी काट के उसमे संमलखार पैसे दो भर चिथरा मे लपेट कर डारि के तव पेदा तरबूजा की लगाय के कपरौटा सात दफे सुखाय २ के करना तवगज पुट का आच देना, जब तरबूज जलने नही पावे तव निकाल लेना, तव तावा तोला १ पर मासा १ उपरोक्त रसायन देना तो शुद्ध चादी वने ।

सोना बनाने का तंत्र

शीशा को प्रहर चार अग्नि मे देना जव ठडा होय तव तोला एक का पत्र बनाय कर, उसके ऊपर हिंगुल तोला १ नीबू के रस मे खरलकर पत्ते पर चुपड कर दो दीए के वीच मे रख कर वद करे ऊपर कपरौटी करे, सुखावे, सेर एक जगली कडे मे उसको फूके, जहां किसी की छाया नही पडे, जव ठंडा हो तव निकालना, इस भात सात वार करे तव शीशा की भस्म वनेगी, वेधक होय सो तोला एक चादी भरे तो एक की मात्रा डालने से शुद्ध सोना वनेगा ।

हीरा बनाने की विधि

मऊ के वीज का तैल तैयार रखे, जव वेनौला आकाश से पडे, तव तुरन्त अग्नि जलाकर, उस तैल को अग्नि पर चढादे, फिर गर्म करे, उस गर्म तैल में विनौला ले, लेके डालते जाना, सव पत्थर हो जायगा जम करके वही कोरा हीरा है। लेकिन मउ की लकडी को ही आच दे । कडाई को जव वे नोला पत्थर हो जाय तव नीचे उतारना । भाग्य अच्छा हो तो यह कार्य अच्छा हो जाय ।

—: समाप्त :—

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में दान दाताओं की सूची

लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में निम्न महानुभाओं से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है :—

६००१) श्रीमान् दानवीर सेठ पन्नालालजी सेठी आसाम (नागालैण्ड)
४००१) गुप्तदान
४००१) गुप्तदान
१५०१) श्री माणकचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज सौलापुर (महाराष्ट्र) वाले
(स्वर्गीय श्री गंगाराम जी दोशी की पुण्य स्मृति में)
२८०९) अकलूज जैन निवासियों से प्राप्त राशि
११५१) श्री जौहरी लालजी मोतीलालजी, छिन्दवाड़ा
१००१) श्री हीराचन्दजी खेमचन्दजी फड़े अकलूज,
१००१) श्री मियाचन्दजी रतुचन्द फडे अकलूज
१००१) श्री ताराचन्दजी जैन कार्य पालन मंत्री पी. डब्लू. डी. भिंड
१००१) श्री दुलचन्दजी देवचन्दजी दोशी अकलूज
१००१) श्री अभयकुमारजी रूपचन्दजी फडे अकलूज
१००१) श्री महावीर मोतीचन्दजी शाह अकलूज
१००१) डा० सुरेशकुमार जैन इलाहबाद
५०१) श्रीमती चतुराबाई सुन्दरलाल चक्रेश्वरा
५०१) श्री शांतिलालजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज
५०१) श्री जयकुमारजी खुशालचन्दजी गांधी अकलूज
५०१) श्री दीपचन्द जी लालचन्द जी फडे अकलूज
५०१) श्री प्रेमचन्दजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज (श्री कांतिलालजी प्रेमचन्दजी कपुनी य स्मृती में)
५०१) श्रीमती चचल बाई हीरचन्द गंगाराम भम्मडूकर अकलूज
५०१) श्री अनंतलालजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१) श्री बापूचन्दजी वीरचन्दजी दोशी अकलूज
५०१) श्री बापूचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज
५०१) श्री प्रेमचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१) श्री नेमीचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१) श्री मान् सेठ सम्पत कुमार जी कटक
५०१) श्रीमान् सेठ विजय कुमार जी कटक
१५०१) श्री भाग चन्दजी छाबडा जयपुर
१००१) श्री हरक चन्दजी पाण्डया (गोहाटी वाले) जयपुर
१००१) श्री मोतीलालजी छाबडा, जयपुर

१००१) श्री मोतीलालजी जौहरीलालजी, खड़गपुर
१००१) श्री महावीर कुमारजी लौंगया, जयपुर
१००१) श्री शांतिकुमारजी गंगवाल जयपुर
५०१) श्री मोतीलालजी हाड़ा जयपुर
५०१) श्री रतनलालजी गिरराज जी राणा
५०१) श्री गुलावचन्दजी चौमू वाले फर्म (रामसुख चुन्नीलाल) जयपुर
५०१) श्री चिरंजी लालजी महावीर कुमारजी सोगाणी जयपुर
५०१) श्री सुन्दर लालजी गप्पूलालजी पापड़ीवाल, जयपुर
५०१) श्री कपूरचन्दजी पाण्डया, जयपुर
५०१) श्री हीरालालजी सेठी जयपुर
५०१) श्री कमल चन्दजी चिंतामणीजी वज जयपुर
५०१) श्री हरिश्चन्द्रजी पाटनी, जयपुर
५०१) श्री प्रेमचन्दजी अनिलकुमारजी काला, जयपुर
५०१) श्री रामअवतारजी राजकुमारजी, जयपुर

"कुंथु विजय ग्रंथ माला" समिति उपरोक्त सभी महानुभाओ का आभार प्रकट करती है। कि समिति के द्वारा भविष्य में जब २ भी इस प्रकार के अद्भुत अलम्य ग्रंथों का प्रकाशन होगा, सहयोग मिलता रहेगा।